श्री अभय जैन ग्रन्थमाला के बहुमूल्य प्रकाशन

१ अभयरत्नसार (पञ्च प्रतिक्रमण, स्तोत्र, स्तवनादिका बृहत्संग्रह) अलभ्य
२ पूजा संग्रह (१६ पूजाएँ, चौबीसी, स्तवनोंका संग्रह) "
३ सती मृगावती ले० भंवरलाल नाहटा "
४ विधवा कर्त्तव्य ले० अगरचन्द नाहटा "
५ स्नात्र-पूजादि संग्रह (दादाजी की अष्टप्रकारी, शान्तिक स्तवन सह) "
६ जिनराज भक्ति आदर्श * (जिन मन्दिरकी आसातना निवारणार्थ विविध लेखों व मूर्त्तिपूजा सिद्धि लेख सह) "
* ७ युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि ले० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा "
८ ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह सं० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा ५।)
* ९ दादाश्री जिनकुशलसूरि " अलभ्य
*१० मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि " अलभ्य
*११ युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि " १)
१२ सघपति सोमजी शाह ले० श्री ताजमलजी बोथरा अलभ्य
१३ जैन दार्शनिक संस्कृति पर एक विहंगम दृष्टि ले० श्री शुभकरणसिंह ।।।)
१४ ज्ञानसार ग्रन्थावली सं० अगरचन्द भंवरलाल नाहटा प्रेसमें
१५ बीकानेर जैन लेख संग्रह " १०)
१६ समयसुन्दर कृति कुसुमाञ्जली " प्रेसमें

राजस्थानी साहित्य परिषदके प्रकाशन

१ राजस्थानी कहावतां भाग १ सचित्र ले० नरोत्तमदास स्वामी, मुरलीधर व्यास ३)
२ राजस्थानी कहावतां भाग २ सचित्र " ३)
३ राजस्थानी भाग १ सं० नरोत्तमदास स्वामी २।।)
४ राजस्थानी भाग २ " २।।)
५ वरसगांठ (राजस्थानी भाषाकी आधुनिक कहानियाँ) ले० मुरलीधर व्यास १।।)

श्रीमद् देवचन्द्रग्रन्थमाला

१ श्रीमद् देवचन्द्र स्तवनावली (चौबीसी, बीसी, संक्षिप्त जीवन चरित्र सह) ।)

प्रस्तुत ग्रन्थ सम्पादकोंके अन्यत्र प्रकाशित ग्रन्थ

१-२ राजस्थान में हिन्दीके हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज भाग २—४
सं० अगरचन्द नाहटा प्र० राजस्थान विश्वविद्यापीठ, उदयपुर
३ जसवन्त उद्योत अनूप संस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर
४ क्यामखां रासा अगरचन्द भंवरलाल नाहटा राजस्थान पुरातत्त्व मंदिर, जयपुर
५ राजगृह ले० भंवरलाल नाहटा जैन सभा, कलकत्ता

कई ग्रन्थ सम्पादन किये हुए प्रकाशनार्थ तैय्यार हैं एवं १४ सामयिक पत्रोंमें प्रकाशित ११११ लेखोंकी सूची राजस्थान भारती वर्ष ४ अंक २ ३ में छप चुकी है।

* इनका गुजराती अनुवाद श्री जिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार ठि० महावीर स्वामीका मंदिर पायधुनी बम्बईसे प्रकाशित हुआ है एवं संक्षेप पद्यानुवाद उपाध्याय श्रीलब्धिमुनिजी महाराजने किया है।

बीकानेर जैन लेख सङ्ग्रह

प्रस्तावना परिशिष्ट

परिशिष्ट

शिलालेखों के काल निर्धारण में उसकी लिपी और उसमें निर्दिष्ट घटनायें व व्यक्तियों के नाम बड़े सहायक होते हैं। अद्यावधि प्राप्त समस्त शिलालेखों में अजमेर म्यूजियममें सुरक्षित "वीराय ८४ वर्ष वाद" संवतोल्लेखवाला जैनलेख सबसे प्राचीन है। ओझाजी ने उसकी लिपि अशोक के शिलालेखों से भी पुरानी मानी है इसके बाद सम्राट अशोक के धर्म विजय सम्बन्धी अभिलेख भारतके अनेक स्थानोंमें मिले हैं। जैन लेखों में खारवेल का उदयगिरि खंडगिरिवाला शिलालेख बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है इसमें भी आदिनाथ की एक जैन मूर्त्ति नंद राजा के ले जाने और उसे खारवेल द्वारा वापिस लाने का उल्लेख भी पाया जाता है। इससे जैन मूर्त्तियों की प्राचीनताका पता चलता है। पर अभी तक प्राप्त जैन मूर्त्तियोंमें सबसे प्राचीन पटना म्यूजियम वाली मस्तकविहीन जिन मूर्त्ति शायद सबसे प्राचीन है जो मौर्यकाल की है यद्यपि उसमें कोई लेख नहीं है। पर उसकी चमक उसी समय का है। इसके बाद मथुरा के जैन पुरातत्त्वका महत्त्व बहुत ही अधिक है उसमें कुशाणकाल के कुछ शिलालेख भी प्राप्त हुए हैं जिनमें सबसे पुराना प्रथम शताब्दी का है। मथुरा के जैन लेखों में जिन कुछ गण आदि के नाम हैं उनका उल्लेख कल्पसूत्र की स्थविरावली में प्राप्त होनेसे वे लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायके सिद्ध हैं। कंकाली टीले में प्राप्त अनेक मूर्त्तियों व शिलालेखों से मथुरा का कई शताब्दियों तक जैन धर्म का केन्द्र रहना सिद्ध है।

गुप्तकाल भारत का स्वर्ण युग है। उस समय साहित्य संस्कृति कलाका चरमोत्कर्ष हुआ। गुप्त सम्राट यद्यपि वैदिक धर्मी थे पर वे सब धर्मों का आदर करनेवाले थे उस समय की एक मूर्त्ति मध्यप्रदेश के उदयगिरि में गुप्त संवत् के उल्लेख वाली प्राप्त हुई है। वैसे उस समय धातु की जैन मूर्त्तियों का प्रचलन हो गया था और सातवीं शताब्दी व उसके कुछ पूर्ववर्ती जैन धातु प्रतिमायें आकोटा (बड़ौदा) आदि से प्राप्त हुई हैं। राजस्थान के वसंतगढ़ में प्राप्त सुन्दर धातु मूर्त्तियां जो अभी पिंडवाड़े के जैन मंदिर में हैं, राजस्थान की सबसे प्राचीन जैन प्रतिमाएं हैं। आठवीं शताब्दी की इन प्रतिमाओं के लेख मुनि कल्याणविजयजी ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित किये थे।

दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रचार श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु से हुआ माना जाता है पर ग्यारह से सातवीं शताब्दी के पहले का कोई जैन लेख प्राप्त नहीं हुआ। दक्षिण के दिगम्बर जैन लेखों का संग्रह डा० हीरालाल जैन संपादित 'जैन शिलालेख संग्रह" प्रथम भाग सन् १६२८ ई० में प्रकाशित हुआ।

श्वे० जैन शिलालेखों की कुछ नकलों के पत्र यद्यपि जैन भण्डारों में प्राप्त हैं पर आधुनिक ढंग से शिलालेखों के संग्रहका काम गत पचास वर्षोंमें हुआ। सन् १९०८ में पेरिसके डा० ए गेरीनेयने जैन लेखों सम्बन्धी Repertoire Depigrephi Jaine नामक ग्रन्थ फ्रान्सीसी भाषामें प्रकाशित किया इसमें ई० पूर्व सन् २४२ से लेकर ईसवी सन् १८८६ तक के ८५० लेखोंका पृथक्करण किया गया जो कि सन् १६०७ तक प्रकाशित हुए थे उन्होंने उन लेखों का संक्षिप्तसार,

वक्तव्य

इतिहास मानव जीवन का एक प्रेरणा सूत्र है जिसके द्वारा मनुष्य को भूतकालीन अनेक तथ्यों की जानकारी मिलने के साथ साथ महान् प्रेरणा भी मिलती है। सत्य की जिज्ञासा मनुष्य की सबसे बडी जिज्ञासा है। इतिहास सत्य को प्रकाश मे लाने का एक विशिष्ट साधन है। इ-ति-हा-स अर्थात् ऐसा ही था इससे भूतकालीन तथ्यों का निर्णय होता है।

इतिहास के साधनों मे सबसे प्रामाणिक साधन शिलालेख, मूर्तिलेख, ताम्रपत्र, सिक्के, ग्रन्थों की रचना व लेखन प्रशस्तियें, भ्रमण वृतान्त, चरित्र, वंशावलियें, पट्टावलियें आदि अनेक हैं उनमे शिलालेख से ग्रन्थ प्रशस्तियों तक के साधन अधिक प्रामाणिक माने जाते है क्योंकि एक तो वे घटना के समकालीन लिखे होते है दूसरे उनमे परिवर्तन करने की गुंजाइश नहीं रहती है और वे बहुत लम्बे समय तक टिकते भी है। भारत का प्राचीन इतिहास पुराणों आदि धार्मिक ग्रन्थों के रूपमे भले ही लिखा गया हो पर जिस संशोधनात्मक पद्धति से लिखे गये ग्रथो को विद्वान लोग आज इतिहास मानते हैं वैसे लिखे लिखाये पुराने भारतीय इतिहास नहीं मिलते। ऐतिहासिक साधनो की कमी नहीं है पर ऐतिहासिक दृष्टि से उनमे से तथ्यग्रहण करने की वृत्ति की कमी है। भारत के प्राचीनतम इतिहास के साधन पुरातत्व के रूप मे है वे खुदाई के द्वारा भूगर्भ से प्राप्त हुए है। मोहनजोदाडो एवं हडप्पा आदि से प्राप्त वस्तुएँ प्राचीन भारत के सामाजिक एवं सास्कृतिक पहलुओं पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है। हर वस्तु अपने समय से प्रभावित होने से उस समय की अनेक बातों का प्रतिनिधित्व करती है। साहित्य मे भी समकालीन समाज का प्रतिनिधित्व रहता है पर उसमे एक तो अतिरंजना और पीछे से होनेवाले सेलभेल व परिवर्तन की सभावना अधिक रहने से उसकी प्रामाणिकता का नम्बर दूसरा है।

हमारे वेद, पुराण, आगम आदि ग्रन्थ अपने समय का इतिहास प्रकट करते हैं पर उनमे प्रयुक्त रूपको व अलंकारो से इतिहास दब जाता है जब कि भूगर्भ से प्राप्त साधन बडे सीधे रूप मे तत्कालीन इतिहास को व्यक्त करते है यद्यपि उनके काल निर्णय की समस्या अवश्य ही कठिन होती है अत काल निर्धारण मे बडी सावधानी की आवश्यकता है अन्यथा एक तथ्य के काल निर्धारण में गडबडी हुई तो उसके आधार से निकाले गये सारे तथ्य भ्रामक एवं गलत हो जावेंगे।

भूगर्भ से प्राप्त वस्तुओं के बाद ऐतिहासिक साधनों मे प्राचीन शिलालेख, मूर्त्तियें एव सिक्कों का स्थान है। ताम्रपत्र इतने प्राचीन नहीं मिलते। कुछ मूर्त्तियें व स्थापत्य अवश्य प्राप्त हैं।

अभीतक जैन लेख संग्रहों की चर्चा की गई है वे सब भिन्न २ स्थानों के लेखों के संग्रह हैं। नाहरजी का तीसरा भाग भी केवल जैसलमेर व उसके निकटवर्ती स्थानों का है। पर उसमें भी वहां के समस्त लेख नहीं दिये गये। एक स्थान के समस्त लेखों का पूरा संग्रह करने का कार्य स्वर्गीय मुनि जयन्तविजय जी ने किया उन्होंने आबू के ६१४ लेखों का संग्रह "अर्बुद प्राचीन लेख सन्दोह' के नाम से संवत् १९९४ में प्रकाशित किया। इसमें आपने उन लेखों का अनुवाद आवश्यक जानकारी व टिप्पणी के साथ दिया जो बड़ा श्रमपूर्ण व महत्व का कार्य है। आपने "अर्बुदाचल प्रदक्षिणा लेख संग्रह" भी इसी ढंगसे संवत् २००५ में प्रकाशित किया है जिसमें आबू प्रदेश के ६६ गांवों के १४५ लेख हैं। सखेश्वर आदि कई अन्य स्थानों के इतिहास व लेख संग्रह आपने निकाले जो उन उन स्थानों की जानकारी के लिये बड़े काम के हैं। इसी प्रकार श्रीविजयेन्द्रसूरिजी ने "देवकुल पाटक" पुस्तिका में वहां के लेख आवश्यक जानकारी के साथ दिये हैं।

आचार्य विजययतीन्द्रसूरिजी ने 'यतीन्द्र विहार दिग्दर्शन' के चार भागों में बहुत से स्थानों के विवरण व तीर्थ यात्रा वर्णन देने के साथ कुछ लेख भी दिये हैं उनके संगृहीत ३७४ लेखों का एक संग्रह दौलतसिंह लोढ़ा संपादित श्री यतीन्द्र साहित्य सदन से सन् १९५१ में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखों के साथ हिन्दी अनुवाद भी छपा है। इससे एक वर्ष पूर्व साहित्यालंकार मुनि कान्तिसागर जी संगृहीत ३६९ लेखों का संवतानुक्रम से संग्रह "जैन धातु प्रतिमा लेख" प्रथम भाग के नाम से जिनदत्तसूरि ज्ञानभण्डार सूरत से छपा। सं० १०८० से सं० १९५० तक के इसमें लेख है परिशिष्ट में शत्रुञ्जय तीर्थ सम्बन्धित हैनिन्सनी भी छपी है।

हमारी प्रेरणा से उपाध्याय मुनि विनयसागरजी ने जैन लेखों का संग्रह किया था। वह संवतानुक्रम से १००० लेखों का संग्रह प्रतिष्ठा लेख संग्रह के नाम से सन् १९५३ ई० में प्रकाशित हुआ जिसकी भूमिका डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल ने लिखी है इसकी प्रधान विशेषता श्रावक श्राविकाओं के नामों की तालिका की है। जो अभी तक किसी भी लेख संग्रह के साथ नहीं छपी।

श्वेताम्बर लेख संग्रह की चर्चा की गई दिगम्बर समाज के लेख दक्षिण में ही अधिक सख्या में व महत्वके मिलते हैं यद्यपि पांचसौ लेखों का संग्रह बहुत ही सुन्दर रूपमें १६२ पेजकी ज्ञानवर्धक भूमिका के साथ श्री नाथूरामजी प्रेमी ने सन् १९२८ में प्रकाशन व सम्पादन डा० हीरालाल जैनने बड़ा ही महत्वपूर्ण किया। इसका दूसरा भाग सन् १९५२ में २४ वर्ष के बाद छपा इसमें ३०२ लेखों का विवरण है श्री प्रेमीजी के प्रयत्न से पं० विजयमूर्ति ने इसका संग्रह किया। दिगम्बर जैन लेख संग्रह सम्बन्धी ये दो ग्रन्थ ही उल्लेखनीय हैं।

छोटे संग्रहों में इतिहास प्रेमी श्री छोटेलालजी जैन ने संवत् १९७१ में जैन प्रतिमा यन्त्र लेख संग्रह के नाम से प्रकाशित किया जिसमें कलकत्ता के लेख हैं। दूसरा संग्रह श्री कामता

कौन सा लेख किस विद्वान ने कहाँ प्रकाशित किया—इसका विवरण दिया है। इन लेखों में श्वे० तथा दिगम्बर दोनों सम्प्रदायों के लेख है।

जैन लेख संग्रह भाग २ की भूमिका में स्वर्गीय श्रीपूरणचन्द नाहर ने लिखा था कि सन् १८६४-६५ से मुझे ऐतिहासिक दृष्टि से जैन लेखों के संग्रह करने की इच्छा हुई थी। तबसे इस संग्रहकार्य में तन, मन एवं धन लगाने मे त्रुटि नहीं रखी। उनका जैन लेख संग्रह प्राथमिक वक्तव्य के अनुसार सन् १९१५ में तैयार हुआ जैनों द्वारा संगृहीत एवं प्रकाशित मूर्ति लेखों का यह सबसे पहला संग्रह है इसमे एक हजार लेख छपे है जो बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, आसाम, काठियावाड आदि अनेक स्थानों के हैं। इसके पश्चात् सन् १९१७ मे मुनि जिनविजय जी ने सुप्रसिद्ध खारवेल का शिलालेख बड़े महत्व की जानकारी के साथ "प्राचीन जैन लेख संग्रह"के नाम से प्रकाशित किया। इसके अन्त मे दिये गये विज्ञापनके अनुसार इसके द्वितीय भागमे मथुराके जैन लेखोंको विस्तृत टीकाके साथ प्रकाशित करनेका आयोजन था जो अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ और विज्ञापित तीसरे भाग को दूसरे भाग के रूप में सन् १९२१ मे प्रकाशित किया गया इसका सम्पादन बडा विद्वतापूर्ण और श्रमपूर्वक हुआ है। इसमे शत्रुञ्जय, आबू, गिरनार आदि अनेक स्थानों के ५५७ लेख छपे हैं जिनका अवलोकन ३४४ पृष्ठों मे लिखा गया है इसीसे इस ग्रन्थ का महत्व व इसके लिये किये गये परिश्रम की जानकारी मिल जाती है। नाहरजी का जैन लेख संग्रह दूसरा भाग सन् १९२७ मे छपा जिसमें न० १००१ से २१११ तक के लेख है। बीकानेर के लेख नं० १३३० से १३६० तक के है जिनमें मोरखाणा, चुरू के लेख भी सम्मिलित है। नाहर जी के इन दोनों लेख संग्रहों मे मूल लेख ही प्रकाशित हुए है विवेचन कुछ भी नहीं।

इसी बीच आचार्य बुद्धिसागरसूरिजीने जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह २ भाग प्रकाशित किये जिनमे पहला भाग सन् १९१७ व दूसरा सन् १९२४ मे अध्यात्मज्ञान प्रसारक मण्डल पादराकी ओर से प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग मे १५२३ लेख और दूसरे मे ११५० लेख। उन्होंने नाहरजी की भाँति ऐतिहासिक अनुक्रमणिका देनेके साथ प्रथम भाग की प्रस्तावना विस्तारसे दी। इनके पश्चात् आचार्य विजयधर्मसूरिजी के संगृहीत पाँचसौ लेखों का संग्रह संवतानुक्रम से संपादित प्राचीन जैन लेख संग्रह के रूप में सन् १९२९ मे प्रकाशित हुआ इसमे संवत् ११२३ से १५४७ तक के लेख हैं। प्रस्तावना मे लिखा गया है कि कई हजार लेखो का संग्रह किया गया है उनके पाँचसौ लेखों के कई भाग निकालने की योजना है पर खेद है कि २६ वर्ष हो जानेपर भी वे हजारों लेख अभी तक अप्रकाशित पड़े है।

इसी समय (सन् १९२९) मे नाहरजी का जैन लेख संग्रह तीसरा भाग "जैसलमेर" के महत्वपूर्ण शिलालेखोंका निकला जिसमे लेखाङ्क २११० से २५८० तकके लेख हैं इसकी भूमिका बहुत ज्ञानवर्धक है। फोटो भी बहुत अधिक संख्या मे व अच्छे दिये है। वास्तव मे नाहर जी ने इस भाग को तैयार करने मे बड़ा श्रम किया है।

उपाश्रयों, ज्ञानभंडारो आदि की जानकारी देने के लिये बहुत अन्वेषण और श्रम करना पड़ा। मन्दिरो से सम्बन्धित शताधिक स्तवनों आदि की प्रेसकापी की और उन समस्त सामग्री के आधार से बहुत ही ज्ञानवर्धक भूमिका लिखी गई जो इस ग्रन्थ म—ग्रन्थ के प्रारम्भ में पाठक पढ़ेंगे। लेख समह बहुत बड़ा हो जाने के कारण उन स्तवना की प्रेसकापी को इच्छा होते हुए भी इसके साथ प्रकाशित नहीं कर पाये। पर उनके ऐतिहासिक तथ्यो का उपयोग भूमिका में कर लिया गया है।

संवत १९९९ में हम जैन ज्ञानभडारों के अवलोकन व जैन मंदिरों के दर्शन के लिये जैसलमेर गये वहाँ स्व० हरिसागरसूरिजी के विराजने से हमें बड़ी अनुकूलता रही। २०-२५ दिन के प्रवास में हमने खूब डटकर काम किया। प्रातःकाल निपट कर महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियों की नकल करते फिर स्नान कर किले के जैन मन्दिरों में जाते पूजा करने के साथ-साथ नाहरजी के प्रकाशित जैन लेख संग्रह भा० ३ में प्रकाशित समस्त लेखों का मिलान करते और जो लेख उसमें नहीं छपे उनकी नकलें करते, वहाँ से आते ही भोजन करके ज्ञानभंडारों को खुलवाकर प्रतियों का निरीक्षण कर नोट्स लेते। नकल योग्य सामग्री को छांट कर साथ लाते, आते ही भोजन कर रात में उस लाई हुई सामग्री का नकल व नोट्स करते। इस तरह के व्यस्त कार्यक्रम में जैसलमेर के अप्रकाशित लेखों की भी नकलें की। इस लेख संग्रह में बीकानेर राज्य के समस्त लेख जो छप गये तो विचार हुआ कि जैसलमेर के अप्रकाशित लेख भी इसके साथ ही प्रकाशित कर दें तो वहाँ का काम भी पूरा हो जाय। प्रारम्भ से ही हमारी यह योजना रही है कि जहाँ का भी काम हाथ में लिया जाय उसे जहाँ तक हो पूरा करके ही विश्राम लें जिससे हमें फिर कभी उस काम को पूरा करने की चिन्ता न रहे साथ साथ किसी दूसरे व्यक्ति को भी फिर उस क्षेत्र में काम करने की चिन्ता न करनी पड़े। इसी दृष्टि से बीकानेर के साथ-साथ जैसलमेर का भी काम निपटा दिया गया है। दूसरी बात यह भी थी कि बीकानेर की भांति जैसलमेर भी खरतरगच्छ का केन्द्र रहा है अत: इन दोनों स्थानों के समस्त लेखों के प्रकाशित हो जाने पर खरतरगच्छ के इतिहास लिखने में बड़ी सुविधा हो जायगी।

इन लेखों के संग्रह में हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है पर उसके फल-स्वरूप हमें विविध प्राचीन लिपियों के अभ्यास व मूर्त्तिकला व जैन इतिहास सम्बन्धी ज्ञान की भी अभिवृद्धि हुई अनेक शिलालेख व मूर्तिलेख ऐसे प्रकाशहीन अंधेरे में हैं जिन्हें पढ़ने में बहुत ही कठिनता हुई। मोमबत्तियें टोर्चलाइट, छाप लेनेके साधन जुटाने पड़े फिर भी कहीं कहीं पूरी सफलता नहीं मिल सकी इसी प्रकार बहुत सी मूर्तियोंके लेख उन्हें पच्ची करते समय दब गये एवं कई प्रतिमाओं के पृष्ठ भागमें उत्कीर्णित हैं उनको लेनेमें बहुत ही श्रम उठाना पड़ा और बहुत से लेख तो लिये भी न जा सके क्योंकि एक तो दीवार और मूर्ति के बीच में अन्तर नहीं था दूसरे मूर्तियों की पच्ची इतनी अधिक हो गई कि उनके लेखको

प्रसाद जैन सम्पादित प्रतिमा लेख संग्रह है जिसमें मैनपुरी के लेख है। संवत १९९४ में जैन सिद्धान्त भवन आरा से यह पुस्तिका निकली।

इस प्रकार यथाज्ञात प्रकाशित जैन लेख संग्रह ग्रंथो की जानकारी देकर अब प्रस्तुत संग्रह के सम्बन्ध मे प्रकाश डाला जा रहा है।

"बीकानेर जैन लेख संग्रह" के तैयार होने का संक्षिप्त इतिहास बतलाते हुए—फिर इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला जायगा। जैसा कि पहले बतलाया गया है इस सग्रह से पूर्व नाहरजी के जैन लेख संग्रह भाग २ मे बीकानेर राज्य के कुल ३२ लेख ही प्रकाशित हुए थे।

सं० १९८४ के माघ शुक्ला ५ को खरतरगच्छ के आचार्य परमगीतार्थ श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी का बीकानेर पधारना हुआ और हमारे पिताजी व बाबाजी के अनुरोध पर उनका चातुर्मास शिष्य मण्डली सहित हमारी ही कोटडी मे हुआ। लगभग ३ वर्ष वे बीकानेर विराजे उनके निकट सम्पर्क से हमे दर्शन, अध्यात्म, साहित्य, इतिहास व कला मे आगे बढाने की प्रेरणा मिली। विविध विषय के ज्यों-ज्यो ग्रन्थ देखते गये उन विषयों का ज्ञान बढ़ने के साथ उन क्षेत्रों मे काम करने की जिज्ञासा भी प्रबल हो उठी। बीकानेर के जैन मन्दिरों के इतिहास लिखने की प्रेरणा भी स्वत. ही जगी और सब मन्दिरों के खास-खास लेखों का संग्रह कर इस सम्बन्ध मे एक निबन्ध लिख डाला जो अंबाला से प्रकाशित होनेवाले पत्र "आत्मानन्द' मे सन् १९३२ मे दानमल शंकरदान नाहटा के नाम से प्रकाशित हुआ। बीकानेर के चिन्तामणिजी के गर्भगृह की मूर्तियाँ उसी समय बाहर निकाली गयी थी उसके बाद श्री हरिसागरसूरिजी के बीकानेर चातुर्मास के समय उन प्रतिमाओ को पुन निकाला गया तब उन ११०० प्रतिमाओं के लेखो की नकल की गई। सूरिजी के पास उस समय एक पण्डित थे उनको उसकी प्रेस कापी करने के लिए कोपीयें दी गई पर उनकी असावधानी के कारण वे कापीयें व उनकी नकल नहीं मिली इस तरह १५-२० दिन का किया हुआ श्रम व्यर्थ गया। इसी बीच अन्य सब मन्दिरों के शिलालेख व मूर्त्तियों की नकल ले ली गई थी पर गर्भगृहस्थ उन मूर्त्तियो के लेखों के बिना वह कार्य अधूरा ही रहता था अतः कई वर्षोंके बाद पुनः प्रेरणा कर उन मूर्त्तियों को बाहर निकलवाया तब उनके लेख सग्रह का काम पूरा हो सका।

कलकत्ते की राजस्थान रिसर्च सोसाइटी की मुख पत्रिका "राजस्थानी"का सम्पादनकार्य स्वामीजी व हमारे जिम्मे पडा तो हमने चिन्तामणिजी के मन्दिर व गर्भगृहस्थ मूर्त्तियों का इतिहास देते हुए उनमेसे चुनी हुई कुछ मूर्त्तियोंके संयुक्त फोटोके साथ संगृहीत लेखोंका प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसका सम्पादन हम एक वर्ष तक ही कर सके अत' चारों अंकों मे मूलनायक प्रतिमा के लेख के साथ गर्भगृहस्थ धातु प्रतिमाओं के सम्वतानुक्रम से सं० १४०० तक के १५६ लेख और अन्य गर्भगृह के २० लेख सन १९३९-४० मे प्रकाशित किये गये। उसके बाद बीकानेर राज्य के जिन मन्दिरों के लेख का कार्य बाकी रहा था उसको पूरा किया गया और सबकी प्रेस कापीयें तैयार हुई। बीकानेर के जैन इतिहास और समस्त राज्य के जैन मन्दिरों

बीकानेर के जैन इतिहास से सम्बन्धित इतनी ज्ञानवर्धक ठोस भूमिका भी इस ग्रन्थ की दूसरी उल्लेखनीय विशेषता है। यद्यपि इसमें जैन स्थापत्य मूर्तिकला व चित्रकला पर कुछ विस्तार से प्रकाश डालने का विचार था पर भूमिका के बहुत बढ़ जाने व अवकाशाभाव से संक्षेप में ही निपटाना पड़ा है। इस सम्बन्ध में कभी स्वतन्त्र रूप से प्रकाश डालने का विचार है।

एक ही स्थान का ही नहीं पर राज्य भर के समस्त लेखों के एकीकरण का प्रयत्न भी इस ग्रन्थ की अन्य विशेषता है। अभी तक ऐसा प्रयत्न कुछ अंश में मुनि जयन्तविजयजी ने किया था। आबू के तो उन्होंने समस्त लेख लिये ही पर आबू प्रदेश के ९९ स्थानों के लेखों का संग्रह "अर्बुदाचलप्रदक्षिणा लेख संग्रह" प्रकाशित किया। संभवतः उन स्थानोंके सभी लेख उसमें आ गये हैं यदि कुछ छूट गये हैं तो भी हमें पता नहीं। आपने शंखेश्वर आदि अन्य कई स्थानों से सम्बन्धित स्वतन्त्र पुस्तकें निकाली हैं जिनमें वहां के लेखों को भी दे दिया गया है।

हमारे इस संग्रह के तैयार हो जाने के बाद मुनिश्री विनयसागरजी को यह प्रेरणा दी थी कि वे जयपुर व कोटा राज्य के समस्त लेखों का संग्रह कर लें उन्होंने उसे प्रारम्भ किया कई स्थानों के लेख लिये भी पर वे उसे पूरा नहीं कर पाये जितने संगृहीत हो सके उन्हें संवता नुक्रम से संकलन कर दो भाग तैयार किये जिसमें से पहला छप चुका है।

आचार्य हरिसागरसूरिजी से भी हमने निवेदन किया था कि वे अपने विहार में समस्त स्थानों के समस्त प्रतिमा लेखों का संग्रह कर लें उन्होंने भी पूर्व देश व मारवाड़ आदि के बहुत से स्थानों के लेख लिये थे जो अभी अप्रकाशित अवस्था में हैं। मारवाड़ प्रदेश जैनधर्म का राजस्थान का सबसे बड़ा केन्द्र प्राचीन काल से रहा है इस प्रदेश में पचासों प्राचीन ग्राम नगर हैं जहाँ जैन धर्म का बहुत अच्छा प्रभाव रहा वहाँ अनेकों विशाल एवं कलामय मंदिर थे और सैकड़ों जिन मूर्त्तियों के प्रतिष्ठित होने का उल्लेख खरतरगच्छ की युगप्रधान गुर्वावली आदि में मिलता है। उनमें से बहुत से मंदिर व मूर्त्तियां अब नष्ट हो चुकी हैं फिर भी मारवाड़ राज्य बहुत बड़ा है। यदि अवशिष्ट समस्त जैन मंदिर व मूर्त्तियोंके लेख लिये जांय तो अवश्य ही राजस्थान के जैन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ेगा।

सिरोही के जैन मन्दिरोंमें भी सैकड़ों प्रतिमायें हैं। वहाँ के लेखोंकी नकल भी अब समलजी मोदी ने लेनी प्रारम्भ की थी वह कार्य शीघ्र ही पूरा होकर प्रकाश में आना चाहिये।

मालवा के जैन लेखो का संग्रह अभी तक बहुत कम प्रकाश में आया है। नन्दलालजी लोढ़ा ने माण्डवगढ़ आदि के लेखो की नकलें की थी हमें भेजे हुए रजिस्टर की नकल हमारे संग्रह में भी है वह कार्य भी पूरा होकर प्रकाश में आना चाहिये। इसी प्रकार मेवाड़ में भी बहुतसे जैन मंदिर हैं उनमें से केसरियानाथजी आदि के कुछ लेख यतिश्री अनूपचन्दजी ने लिये थे पर ये बहुत अशुद्ध थे उन्हें शुद्ध रूपमें पूर्ण संग्रह कर प्रकाशित करना वांछनीय है उनके लिये हुए लेखों की नकलें भी हमारे संग्रह में है।

विना मूर्त्तियोंको वहांसे निकाले पढ़ना संभव नहीं रहा । मूर्त्तियें हटाई नहीं जा सकी अतः उनको छोड देना पडा । कई शिलालेखों मे पीछे से रंग भरा गया है उसमे असावधानीके कारण बहुत से लेख व अंक अस्पष्ट व गलत हो गये । कई शिलालेखों को वडी मेहनत से साफ करना पडा गुलाल आदि भरकर अस्पष्ट अक्षरों को पढने का प्रयत्न किया गया कभी कभी एक लेख के लेने में घंटों वीत गये फिर भी सन्तोष न होने से कई वार उन्हें पढने को शुद्ध करने को जाना पडा। वहुत से लेख खोदने में ठीक नहीं खुदे या अशुद्ध खुदे है। उन संदिग्ध या अस्पष्ट लेखों को यथासंभव ठीक से लेने के लिये वडी माथापच्ची की गई। इस प्रकार वर्षो के श्रम से जो वन पडा है, पाठकों के सन्मुख है। हम केवल ५ कक्षा तक पढ़े हुए है—न संस्कृत-प्राकृत भाषा का ज्ञान व न पुरानी लिपियों का ज्ञान इन सारी समस्याओं को हमे अपने श्रम व अनुभव से सुलझाने में कितना श्रम उठाना पडा है यह भुक्तभोगी ही जान सकता है। कार्य करने की प्रबल जिज्ञासा सच्ची लगन और श्रम से दुसाध्य काम भी सुसाध्य वन जाते हैं इसका थोडा परिचय देने के लिये ही यहां कुछ लिखा गया है।

प्रस्तुत लेख संग्रह में ९ वीं, १० वीं शताब्दी से लेकर आज तक के करीब ११ सौ वर्षो के लगभग ३००० लेख है। वीकानेर मे सवसे प्राचीन मूर्त्ति श्री चिन्तामणिजी के मंदिर में ध्यानस्थ धातु मूर्त्ति है जो गुप्तकाल की मालूम देती है। इसके वाद सिरोही से स० १६३३ मे तुरसमखान द्वारा लूटी गई धातू मूर्त्तियों मे जिसको अकवर के खजानेमें से सं० १६३९ मे मंत्री कर्मचन्दजी बच्छावत की प्रेरणासे लाकर चिन्तामणिजी के भूमिग्रह मे रखी गई थी। उनमे से ३-४ धातु मूर्त्तियां ९ वीं, १० वीं शताब्दी की लगती है जिनमे से दो मे लेख भी है पर उनमे संवत् का उल्लेख नहीं लिपि से ही उनका समय निर्णय किया जा सकता है। संवतोल्लेखवाली प्रतिमा ११ वीं शताब्दी से मिली है १२ वीं शताब्दी के कुछ श्वेत पाषाण के परिकर व मूर्त्तियां जांगलू आदि से वीकानेर मे लाई गई जो चिंतामणिजी व डागों के महावीरजी के मन्दिर में स्थापित है।

वीकानेर राज्य मे ११ वीं शताब्दी की प्रतिमाएं रिणी (तारानगर) मे मिली है एक शिलालेख नौहर मे है और झंझूकी एक धातु प्रतिमा सं० १०२१ की है। १२ वीं १३ वीं शताब्दी के वाद की तो पर्याप्त मूर्त्तियां मिली है। १४ वीं से १६ वीं मे धातु मूर्त्तियां बहुत ही अधिक वनी। १५ वीं शती से पाषाण प्रतिमा भी पर्याप्त संख्या मे मिलने लगती है।

इस लेख संग्रहमे एक विशेष महत्त्वकी वात यह है कि इसमे श्मसानोंके लेख भी खूब लिये गये हैं। बीकानेर के दादाजी आदि के सैकडों चरणपादुकाओं व मूर्त्तियों के लेख अनेकों यति मुनि साध्वियो के स्वर्गवास काल की निश्चित सूचना देते है। जिनकी जानकारी के लिये अन्य कोई साधन नहीं है इसी प्रकार जैन सतियों के लेख तो अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। संभवत. अभी तक ओसवाल समाज के सती स्मारकों के लेखों के संग्रह का यह पहला और ठोस कदम है। जिसके लिये सारे श्मसान छान डाले गये हैं।

बीकानेर के जैन इतिहास से सम्बन्धित इतनी ज्ञानवर्धक ठोस भूमिका भी इस ग्रन्थ की दूसरी उल्लेखनीय विशेषता है। यद्यपि इसमें जैन स्थापत्य मूर्तिकला व चित्रकला पर कुछ विस्तार से प्रकाश डालने का विचार था पर भूमिका के बहुत बढ़ जाने व अवकाशाभाव से संक्षेप में ही निपटाना पड़ा है। इस सम्बन्ध में कभी स्वतन्त्र रूप से प्रकाश डालने का विचार है।

एक ही स्थान के ही नहीं पर राज्य भर के समस्त लेखों के एकीकरण का प्रयत्न भी इस ग्रन्थ की अन्य विशेषता है। अभी तक ऐसा प्रयत्न कुछ अंश में मुनि जयन्तविजयजी ने किया था। आबू के तो उन्होंने समस्त लेख लिये ही पर आबू प्रदेश के ६६ स्थानों के लेखों का संग्रह "अर्बुदाचलप्रदक्षिणा लेख संग्रह" प्रकाशित किया। संभवत उन स्थानोंके सभी लेख उसमें आ गये हैं यदि कुछ छूट गये हैं तो भी हमें पता नहीं। आपने संखेश्वर आदि अन्य कई स्थानों से सम्बन्धित स्वतन्त्र पुस्तकें निकाली है जिनमें वहां के लेखों को भी दे दिया गया है।

हमारे इस संग्रह के तैयार हो जाने के बाद मुनिश्री विनयसागरजी को यह प्रेरणा दी थी कि वे जयपुर व कोटा राज्य के समस्त लेखों का संग्रह कर लें उन्होंने उसे प्रारम्भ किया कई स्थानों के लेख लिये भी पर वे उसे पूरा नहीं कर पाये जितने संगृहीत हो सके उन्हें संवतानुक्रम से संकलन कर दो भाग तैयार किये जिसमें से पहला छप चुका है।

आचार्य हरिसागरसूरिजी से भी हमने निवेदन किया था कि वे अपने विहार में समस्त स्थानों के समस्त प्रतिमा लेखों का संग्रह कर लें उन्होंने भी पूर्व देश व मारवाड़ आदि के बहुत से स्थानों के लेख लिये थे जो अभी अप्रकाशित अवस्था में हैं। मारवाड़ प्रदेश जैनधर्म का राजस्थान का सबसे बड़ा केन्द्र प्राचीन काल से रहा है इस प्रदेश में पचासों प्राचीन ग्राम नगर हैं जहां जैन धर्म का बहुत अच्छा प्रभाव रहा वहां अनेकों विशाल एवं कलामय मंदिर थे और सैकड़ों जिन मूर्तियों के प्रतिष्ठित होने का उल्लेख खरतरगच्छ की युगप्रधान गुर्वावली आदि में मिलता है। उनमें से बहुत से मंदिर व मूर्त्तियाँ अब नष्ट हो चुकी हैं फिर भी मारवाड़ राज्य बहुत बड़ा है। यदि अवशिष्ट समस्त जैन मंदिर व मूर्त्तियोंके लेख लिये जाय तो अवश्य ही राजस्थान के जैन इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ेगा।

सिरोही के जैन मन्दिरोंमें भी सैकड़ों प्रतिमायें हैं। वहां के लेखोंकी नकल श्री अम्बालालजी मास्टी ने उनी प्रारम्भ की थी वह कार्य शीघ्र ही पूरा होकर प्रकाश में आना चाहिये।

मालवा के जैन लेखों का संग्रह अभी तक बहुत कम प्रकाश में आया है। नन्दलालजी लोढ़ा ने माण्डवगढ़ आदि के लेखो की नकलें की थी हमें भेजे हुए रजिस्टर की नकल हमारे संग्रह में भी है वह कार्य भी पूरा होकर प्रकाश में आना चाहिये। इसी प्रकार मेवाड़ में भी बहुतसे जैन मंदिर हैं उनमें से केसरियानाथजी आदि के कुछ लेख यतिश्री अनूपऋषिजी ने लिये थे पर वे बहुत अशुद्ध थे उन्हें शुद्ध रूपमें पूर्ण संग्रह कर प्रकाशित करना वांछनीय है उनके लिये हुए लेखों की नकलें भी हमारे संग्रह में है।

मारवाड के गोढवाड प्रदेशका राणकपुर तीर्थ बहुत ही कलापूर्ण एव महत्व का है। वहाँ के समस्त प्रतिमा लेखो की नकलें प० अंबालाल प्रेमचंदशाह ने की थी, उसकी नकल भी हमारे संग्रह में है। हरिसागरसूरिजी के अधिकाश लेखों की नकलें भी हमारे संग्रह मे है। इसप्रकार अभी तक हजारों जैन प्रतिमा लेख, हमारे संग्रह में तथा अन्य व्यक्तियों के पास अप्रकाशित पडे है। उन्हें और एपिग्राफिया इंडिका आदि ग्रन्थों मे एवं फुटकर रूपसे कई जैन पत्रों में जो लेखछपे है उनका भी सग्रह होना चाहिये। आनन्दजी कल्याणजी पेढी ने साराभाई नवाव को समस्त श्वे० जैन तीर्थो मे वहाँ की प्रतिमाओं की नोंध व कलापूर्ण मंदिरों के फोटो व लेखों के संग्रह के लिए भेजा था। साराभाई ने भी बहुत से लेख लिये थे। उनमें से जैसलमेर के ही कुछ लेख प्रकाश में आये हैं, अवशेष सभी अप्रकाशित पड़े है।

गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ भी जैन धर्म का बहुत विशिष्ट प्रचार केन्द्र है। वहां हजारों जैन मुनि निरंतर विचरते है व हजारों लक्षाधिपति रहते है। उनको भी वहाँ के समस्त प्रतिमा लेखों को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करना चाहिये। खेद है, शत्रुञ्जय जैसे तीर्थ और अहमदावाद जैसे जैन नगर, जहाँ सैकडों छोटे वड़े जैन मन्दिर हैं, सैकडों साधु रहते हैं, हजारों समृद्ध जैन बसते है वहाँ के मन्दिर व मूर्त्तियों के लेख भी अभी तक पूरे संगृहित नहीं हो पाये। इसी प्रकार पाटन में भी शताधिक जैन मन्दिर हैं। गिरनार आदि प्राचीन जैन स्थान है उनके लेख भी शीघ्र ही संग्रहीत होकर प्रकाश में लाना चाहिए।

जैसा की पहले कहा गया है स्व० विजयधर्मसूरिजी ने हजारों प्रतिमा लेख लिये थे उनमें से केवल ५०० लेखही छपे हैं, बाकीके समस्त शीघ्र प्रकाशित होने चाहिये, इसी प्रकार एक और मुनि जिनका नाम हमे स्मरण नहीं, सुना है उन्होंने भी हजारों प्रतिमा लेख संग्रह किये है वे भी उनको प्रकाश मे लावें। आगम-प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी, मुनि दर्शनविजयजी त्रिपुटी, साहित्यप्रेमी मुनि कान्तिसागरजी, मुनिश्री जिनविजयजी व नाहरजी आदि के संग्रह मे जो अप्रकाशित लेख हों उन्हें प्रकाशित किये जा सकें तो जैन इतिहास के लिये ही नहीं, अपितु भारत के इतिहास के लिये भी बड़ी महत्वपूर्ण बात होगी। इतिहास के इन महत्वपूर्ण साधनों की उपेक्षा राष्ट्र के लिये बडी ही अहितकर है।

इन लेखों मे इतनी विविध एतिहासिक सामग्री भरी पडी है कि उन सव वातों के अध्ययन के लिये सैकड़ों व्यक्तियों की जीवन साधना आवश्यक है। इन लेखोंमे राजाओं, स्थानों गच्छों, आचार्यों, मुनियों, श्रावक-श्राविकाओं, जातियों और राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इतनी अधिक सामग्री भरी पडी है कि जिसका पार पाना कठिन है। इसी प्रकार इन मन्दिर व मूर्त्तियों से भारत की शिल्प, स्थापत्य, मूर्त्तिकला व चित्रकला आदि के विकास की जानकारो ही नहीं मिलती पर समय-समय पर लोकमानस मे भक्ति का किस प्रकार विकास हुआ, नये-नये देवी देवता प्रकाश मे आये, उपासना के केन्द्र वने, किस-किस समय भारत के किन-किन व्यक्तियों ने क्या-क्या महत्व के कार्य किये, उन समस्त गौरवशाली इति-

हास की सूचना इन लेखों से पाई जाती है। प्रस्तुत बीकानेर जैन लेख संग्रह के, कतिपय विविध दृष्टियों से महत्व रखनेवाले लेखों की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करना भी आवश्यक है। वक्तव्य बहुत लंबा हो रहा है इसलिये अब संक्षेप में ही उसे सीमित किया जा रहा है।

सबसे महत्व का लेख चिंतामणिजी मन्दिर के मूलनायक मूर्ति के पुनरुद्धार का है। संवत् १३८० में श्री जिनकुशलसूरि द्वारा प्रतिष्ठित, यह चतुर्विंशति पट्ट मंडोवर से बीकानेर बसने के समय लाया गया। संवत् १५६१ में बीकानेर पर कामरां के हुए आक्रमण का सामना राव जैतसी ने बड़ी वीरता पूर्वक किया। बीकानेर आक्रमण के समय इस मूर्ति का परिकर भंग कर दिया गया था, जीर्णोद्धार के लेख में इसका स्पष्ट उल्लेख है।

दूसरे एक लेख में बीकानेर के दो राजाओं—कर्णसिंहजी व अनूपसिंहजी पिता पुत्रों को 'महाराजा' लिखकर दोनों के राज्यकाल का उल्लेख है वह भी एक महत्व की सूचना देता है।

तीसरा लेख सती स्मारकों में से दो स्मारक ऐसे मिले हैं जिनसे स्त्रियां अपने पति के पीछे ही सती नहीं होती थी पर पुत्रों के साथ माता भी मोहवश अग्नि प्रवेशकर मृत्युवरण कर लेती थी इसकी महत्वपूर्ण सूचना मिलती है।

कई प्रतिमाओं में ऐसे स्थानों का निर्देश है जिनके नामों का अब पता नहीं है, या तो उनके नाम अपभ्रंश होकर परिवर्तित हो गये या वे स्थान ही नष्ट हो गये। परिशिष्ट में दी हुई स्थान सूची द्वारा उन स्थानों पर सविशेष विचार किया जा सकता है। ११ वीं शताब्दी के धातु प्रतिमा लेख में किष्किन्ध कूप का उल्लेख है। वह किठवू जैसे किसी गाँव के नाम का संस्कृत रूप होना सूचित करता है। इसी प्रकार १२ वीं शताब्दी के परिकर में अजयपुर का नाम आया है। उसी मिती का एक लेख जांगलू का भी है। यह अजयपुर संभवतः जांगलू का उप नगर था जहां के कुएँ पर अजयपुर के नामोल्लेखवाला एक घिसा हुआ लेख हमारे देखने में आया था। अजयपुर (लेखांक २१) व जांगलू के (नं० १५४१) दोनों लेख सं० ११७६ मि० व० ६ के हैं। ये लेख श्रीजिनदत्तसूरिजी के समय के हैं। इनमें "विधि चैत्य" का उल्लेख होने से वे उन्हीं के करकमलों द्वारा प्रतिष्ठित होने का अनुमान है। इस प्रकार ये लेख बीकानेर जांगलू के प्रतिष्ठा लेखों में सबसे प्राचीन ठहरते हैं।

इस ग्रन्थ में प्रकाशित लेख, विविध उपादानों परसे संग्रहित किये गये हैं। पाषाण व धातु प्रतिमाएं चरण पादुका स्मारक यंत्र एवं ताम्रपत्रादि पर उत्कीर्णित तो है ही पर कतिपय लेख दीवारों एवं काष्ठ पट्टिकाओंपर काली स्याही से लिखे हुए भी इस ग्रन्थमें दे दिये हैं जो साढ़े पांच सौ वर्ष जितने प्राचीन हैं। अब तक काली स्याही के अक्षरों का पाषाण पर ज्यों त्यों रह जाना आश्चर्य का विषय है। इन्होंने कतने समय टूटे हुए व देवल अद्यावधि विद्यमान रहकर प्राचीन स्याही के टिकाऊपनका साक्षी दे रहे हैं। ऐसे लेख लेखांक २५६६, २५२७, २७४६, २७१२ में प्रकाशित हैं।

हमने शास्त्रागारों के भी कतिपय लेख संग्रह किये थे पर वे इसमें नहीं दिये जा सके। ऐसे लेख ग्रन्थ प्रशस्तियों में उपलब्ध हैं। अभिलेखों की भाषा संस्कृत है पर ...

मारवाड के गोढ़वाड प्रदेशका राणकपुर तीर्थ बहुत ही कलापूर्ण एव महत्व का है। वहाँ के समस्त प्रतिमा लेखों की नकले पं० अंबालाल प्रेमचंदशाह ने की थी, उसकी नकल भी हमारे संग्रह में है। हरिसागरसूरिजी के अधिकाश लेखो की नकलें भी हमारे संग्रह मे हैं। इसप्रकार अभी तक हजारों जैन प्रतिमा लेख, हमारे संग्रह में तथा अन्य व्यक्तियों के पास अप्रकाशित पड़े हैं। उन्हें और एपिग्राफिया इंडिका आदि ग्रन्थों मे एवं फुटकर रूपसे कई जैन पत्रों मे जो लेखछपे है उनका भी सग्रह होना चाहिये। आनन्दजी कल्याणजी पेढी ने साराभाई नवाब को समस्त श्वे० जैन तीर्थों में वहाँ की प्रतिमाओं की नोध व कलापूर्ण मंदिरों के फोटो व लेखों के संग्रह के लिए भेजा था। साराभाई ने भी बहुत से लेख लिये थे। उनमें से जैसलमेर के ही कुछ लेख प्रकाश मे आये है, अवशेष सभी अप्रकाशित पड़े है।

गुजरात, सौराष्ट्र, कच्छ भी जैन धर्म का बहुत विशिष्ट प्रचार केन्द्र है। वहाँ हजारो जैन मुनि निरंतर विचरते है व हजारों लक्षाधिपति रहते है। उनको भी वहाँ के समस्त प्रतिमा लेखो को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करना चाहिये। खेद है, शत्रुञ्जय जैसे तीर्थ और अहमदा-वाद जैसे जैन नगर, जहाँ सैकडों छोटे बड़े जैन मन्दिर है, सैकड़ो साधु रहते हैं, हजारों समृद्ध जैन बसते है वहाँ के मन्दिर व मूर्त्तियों के लेख भी अभी तक पूरे संगृहित नहीं हो पाये। इसी प्रकार पाटन मे भी शताधिक जैन मन्दिर हैं। गिरनार आदि प्राचीन जैन स्थान है उनके लेख भी शीघ्र ही संग्रहीत होकर प्रकाश मे लाना चाहिए।

जैसा की पहले कहा गया है स्व० विजयधर्मसूरिजी ने हजारों प्रतिमा लेख लिये थे उनमे से केवल ५०० लेखही छपे हैं, बाकीके समस्त शीघ्र प्रकाशित होने चाहिये, इसी प्रकार एक और मुनि जिनका नाम हमें स्मरण नहीं, सुना है उन्होंने भी हजारों प्रतिमा लेख संग्रह किये है वे भी उनको प्रकाश में लावें। आगम-प्रभाकर मुनिराज श्री पुण्यविजयजी, मुनि दर्शनविजयजी त्रिपुटी, साहित्यप्रेमी मुनि कान्तिसागरजी, मुनिश्री जिनविजयजी व नाहरजी आदि के संग्रह मे जो अप्रकाशित लेख हों उन्हें प्रकाशित किये जा सकें तो जैन इतिहास के लिये ही नहीं, अपितु भारत केइतिहास के लिये भी बडी महत्वपूर्ण बात होगी। इतिहास के इन महत्वपूर्ण साधनों की उपेक्षा राष्ट्र के लिये बडी ही अहितकर है।

इन लेखो मे इतनी विविध एतिहासिक सामग्री भरी पड़ी है कि उन सब बातो के अध्ययन के लिये सैकड़ों व्यक्तियों की जीवन साधना आवश्यक है। इन लेखोंमे राजाओं, स्थानों गच्छों, आचार्यों, मुनियों, श्रावक-श्राविकाओं, जातियों और राजकीय, धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक इतनी अधिक सामग्री भरी पडी है कि जिसका पार पाना कठिन है। इसी प्रकार इन मन्दिर व मूर्त्तियों से भारत की शिल्प, स्थापत्य, मूर्त्तिकला व चित्रकला आदि के विकास की जानकारी ही नहीं मिलती पर समय-समय पर लोकमानस में भक्ति का किस प्रकार विकास हुआ, नये-नये देवी देवता प्रकाश मे आये, उपासना के केन्द्र बने, किस-किस समय भारत के किन-किन

इस ग्रन्थ की प्रस्तावना माननीय डा० वासुदेवशरणजी अग्रवाल ने लिखनेकी कृपा की है इसके लिये हम हृदय से उनके आभारी हैं इस ग्रन्थ के प्रकाशन में श्री मूलचन्दजी नाहटा ने समस्त व्ययभार वहन किया। उनकी उदारता भी स्मरणीय है।

मन्दिरों के फोटो लेने में पहले श्री हीराचन्दजी कोठारी फिर श्री किशनचन्द बोथरा आदि का सहयोग मिला। सुजानगढ़ के फोटो श्री बच्छराजजी सिंघी से प्राप्त हुए। मोरखाना व सरस्वती मूर्तिके कुछ ब्लाक सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीच्यूट से प्राप्त हुए। कुछ अन्य जानकारी भी दूसरे व्यक्तियों से प्राप्त हुई। उन सब सहयोगियों को हम धन्यवाद देते हैं।

बीकानेर राज्य के समस्त दिगम्बर मन्दिरोंके भी लेख साथ ही देने का विचार था। पर सब स्थानोंके लेख संग्रह नहीं किये जा सके अतः बीकानेर व रिणी के दिगम्बर मन्दिरके लेख ही दे सके हैं। बीकानेर में एक नशियाजी भी कुछ वर्ष पूर्व निर्मित हुई है एवं राज्यमें चूरू, लाडनूं, सुजानगढ़ एवं दो तीन अन्य स्थानों में दि० जैन मन्दिर हैं, उनके लेख संग्रह करनेका प्रयत्न किया गया था पर सफलता नहीं मिली। इसी प्रकार श्वेताम्बर जैन मन्दिर विगा सेरुणा, दद रेवा आदि के लेखों का संग्रह नहीं किया जा सका। इस कमी को फिर कभी पूरा किया जायगा।

इस ग्रन्थमें और भी बहुतसे चित्र देनेका विचार था पर कुछ तो छिप हुए चित्र भी अस्त व्यस्त हो गए व कुछ अस्पष्ट आये। अतः उन्हें इच्छा होते हुए भी नहीं दिया जा सका।

ग्रन्थके परिशिष्ट में लेखों की संवतानुक्रमणिका, गच्छ, आचार्य आदि, नगर नामादि की सूची दी गयी है। श्रावक श्राविकाओं के नामों की अनुक्रमणिका देने का विचार था पर उसे बहुत ही विस्तृत होते देखकर उस इच्छा को रोकना पड़ा। इसी प्रकार सम्वत् के साथ तिथी और वार का भी उल्लेख देना प्रारंभ किया था पर उसे भी इसी कारण छोड़ देना पड़ा। इन सब बातों के निर्देश करने का आशय यही है कि हम इस ग्रन्थ को इच्छानुरूप उपस्थित नहीं कर पाये हैं और जो कमी रह गयी हैं वे हमारे ध्यानमें हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ बहुत ही विलम्ब से प्रकाश में आ रहा है इसके अनेक कारण हैं। तीन बार प्रेसों में इसकी छपाई करानी पड़ी। अन्य कार्यों में व्यस्त रहना भी विशेष कारण रहा। करीब ७-८ वर्ष पूर्व इसकी पांडुलिपि तयार की। पहले राजस्थान प्रेस में ही एक फर्मा छपा जो यही पड़ा रहा, फिर सर्वोदय प्रेस तथा अजवाणी प्रेसमें काम करवाया। अन्तमें सुराना प्रेस में छपाया गया। इतने वर्षोंमें बहुतसे फर्मे खराब हो गये, कुछ कागज काले हो गये परिस्थिति ऐसी ही रही। इसके लिये कोई अन्य चारा नहीं। हमारी विवशताओं की यह संक्षिप्त कहानी है।

हमारे इस ग्रन्थ का जैन एवं भारत के इतिहास निर्माण में यत्किंचित् भी उपयोग व अन्य प्रदेशों के जैन लेख संग्रह के तैयार करने की प्रेरणा मिली तो हम अपना श्रम सफल समझेंगे।

ऋषभदेव निर्वाण दिवस
माघकृष्णा १३
कलकत्ता

अगरचन्द नाहटा
भँवरलाल

र्याप्त लेख है। ताम्रशासनों की भाषा राजस्थानी है। राजस्थानी भाषाके प्रस्तर लेखों में श्री महावीर स्वामीके मन्दिर का लेख (नं० १३१३) सर्व प्राचीन है। वह पद्यानुकारी है पर पाषाण भुरभुरा होने से नष्ट प्रायः हो चुका है। संग्रहीत अभिलेखों का विभिन्न ऐतिहासिक महत्त्व है। लेखांक १५७२-७३ मे मन्दिर के लिए भूमि (गजगत सहित) प्रदान करने का उल्लेख है। उपाश्रय लेखा से नाथूसर के उपाश्रय का लेख (नं० २५५५) हस्तलिखितपत्र से उद्धृत किया गया है। पुस्तक पटवेष्टन (कमली परिकर) का एक लेख बड़े उपाश्रय मे मिला है जो सूचिका द्वारा अंकित किया गया है। वस्त्र पर सूचिका द्वारा कढा हुआ कोई लेख अद्यावधि प्रकाश मे नहीं आनेसे नमूने के तौर पर एक लेख यहाँ दिया जा रहा है।

१ श्री गौतम स्वामिने नम. ।। संवत् १७४० वर्ष शाके १६०६ प्रवर्त्तमाने ।। आश्विन मासे कृष्ण पक्षे दशमी तिथौ बृहस्पतिवारे ।।

२ महाराजाधिराज महाराजा श्री ४ श्री अनूपसिंहजी विजय राज्ये ।। श्री नवहर नगर मध्ये ।। श्री बृहत् खरतर गच्छे ।। युग प्रधान श्रीश्रीश्री जिनरत्नसूरि सूरीश्वरान् ।।

३ तत्पट्टे विजयमान युगप्रधान श्रीश्रीश्रीश्रीश्री जिनचन्द्रसूरीश्वराणा विजयराज्ये ।। श्री नवहर वास्तव्य सर्व श्राद्धेन कमली परिकर' ।।

४ वाचनाचार्य श्री सोमहर्ष गणिनां प्रदत्तः स्वपुण्यहेतवे ।। श्री फत्तेपुर मध्ये कृतोयं कमली परिकरः श्री जिनकुशलसूरि प्रसादात् ।। दर्जी मानसिंहेन कृतोयम् ।। श्रीरस्तु' ।।

इस लेख संग्रहको इस रूपमे तैयार व प्रकाशित करनेमे अनेक व्यक्तियोंका सहयोग मिला है। जिनमे से कई तो अपने आत्मीय ही है। उनको धन्यवाद देना—उनके सहयोग के महत्व को कम करना होगा।

स्व० पूरणचंद्रजी नाहर जिनके सम्पर्क व प्रेरणासे हमें संग्रह करने और कलापूर्ण वस्तुओं के मूल्याकन और संग्रहकी महत् प्रेरणा मिली है। उनका पुण्यस्मरण ही इस प्रसंग पर हमे गद्गद् कर देता है। हम जब भी उनके यहाँ जाते वे बडी आत्मीयताके साथ हमे अपने सग्रह को दिखाते, लेखों को पढने के लिये देते और कुछ न कुछ कार्य करने की प्रेरणा करते ही रहते। सचमुच से इस लेख संग्रह मे उनकी परोक्ष प्रेरणा ही प्रधान रही है। उनके लेख सग्रह को देखकर ही हमारे हृदय मे यह कार्य करने की प्रेरणा जगी। इसीलिये हम उनकी पुण्यस्मृति मे इस ग्रन्थ को समर्पित कर अपने को कृतकृत्य अनुभव करते है।

मन्दिरों के व्यवस्थापकों व पुजारियों आदि का भी इस संग्रहमें सहयोग रहा है। लेखों के लेने मे अनेकव्यक्तियों ने यत्किंचित भाग लिया है। जैसे चिंतामणि मन्दिर के गर्भगृहस्थ मूर्तियों के लेखोंके लेनेमे स्व० हरिसागरसूरिजी, उ० कवीन्द्रसागरजी, महो० विनयसागरजी, श्रीताजमलजी बोथरा, रूपचन्दजी सुराना आदि ने साथ दिया है। अन्यथा इतने थोड़े दिनोंमे इतने लेखों को लेना कठिन होता। सती स्मारकों के लेखों के लेने मे हमारे भ्राता मेघराजजी नाहटा का भी सहयोग उल्लेखनीय रहा है। कई दिनों तक वडी लगन के साथ श्मसानो को छानने में उन्होंने कोई कमी नहीं रखी। नौहर व भादरा के लेख भी उन्हींके लाये हुए है।

श्री मूलचंदजी नाहटा
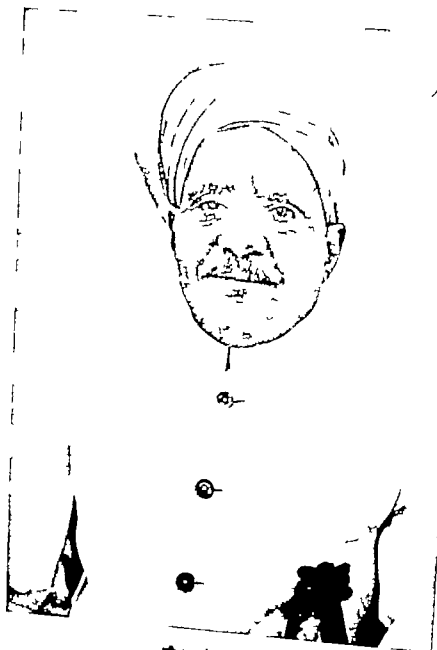
सं० २० ० में बीकानेर की दुकान उठाकर कलकत्ता आये और व्यापार प्रारम्भ किया। सं० १००४ से हमारे नाहटा ब्रदर्स फर्म के साथ व्यापार चालू किया जिससे पर्याप्त लाभ हुआ, आज भी हमारे सीरसामे में व अपनी स्वतन्त्र दुकान चलाते हुए सुखमय व सन्तोषी जीवन बिता रहे हैं। यों आप निःसंतान हैं, एक लड़की हुई जो चल बसी पर 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' के अनुसार अपने कुटुम्बी जनोंके भरण पोषण का सर्वदा लक्ष्य रखा। माणजा माणजी और उनकी संतानादि के विवाह-शादी में आपने हजारों रुपये व्यय किये। आप ऋण को बड़ा पाप समझते हैं और कभी ऋण लेकर काम करना पसन्द नहीं करते। अपना व अपने पूर्वजों का ऋण कानूनन अवधि बीत जानेपर भी अदा करके ही सन्तुष्ट हुए। आपमें संग्रह वृत्ति नहीं है, ज्यों पैदा होता जाय व्यय करते जाना, दलाल, गुमास्तों को बांट देना एवं सुकृत कार्योंमें लगाते रहना यही आपका मुख्य उद्देश्य है। अपने विश्वस्त भाणजा धीरदान पुगलिया को बाल्यकालसे काम काज में होशियार कर अपना साझीदार बना लिया व उसी पर सारा व्यापार निर्भर कर सन्तोषी जीवन यापन कर रहे हैं।

आपको ऋण देना भी पसन्द नहीं, यदि दिया तो सुकृत खाते समझ कर यदि वापस आया तो जमा कर लिया, नहीं तो तकाजा नहीं कर अपनी बपगांठपर उसे माफ कर दिया।

श्री मूलचन्दजी चित्त के उदार हैं उन्हें भाइयों और स्वधर्मियों को उत्तमोत्तम भोजन कराने में आनन्द मिलता है। लोभवृत्तिसे दूर रहकर आयके अनुसार खर्च करते रहते हैं। बीकानेरस्थ नाहटों की बगीची व मन्दिर में ११००० व्यय किये, वहां पानी की प्रपा चालू है। सुकृत कार्यों में महीनेमें सौ दो सौ का तो व्यय करते ही रहते हैं। बीकानेरमें आदीश्वर मण्डल की स्थापना कर प्रथम २० ०) फिर प्रति वर्ष पांच सात सौ देते रहते हैं। कलकत्ता के जैन भवन को ५०१) दिये थे। तीर्थयात्रादि का भी लाभ लेते रहते हैं। प्रस्तुत "बीकानेर जैन लेख संग्रह' के प्रकाशन का अर्थ व्यय वहन कर आपने जैन साहित्य की अपूर्व सेवा की है।

शासनदेव से प्रार्थना है कि आप दीर्घायु होकर चिरकाल तक धर्मोपासना एवं शासनोन्नति के नाना कार्यों में योगदान करते रहें।

श्री मूलचन्दजी नाहटा का जीवन परिचय

श्रीमूलचन्दजी नाहटा कलकत्ता के छत्तों के बाजार मे एक प्रतिष्ठित व्यापारी होनेके साथ-साथ उदार, सरल, धर्मिष्ठ और निश्छल व्यक्ति है। साधारण परिवारमें जन्म लेकर अपनी योग्यताके बलपर संघर्षमय जीवन यापन करते हुए आप अपने पैरोंपर खडे होकर उन्नत हुए, यही इनकी उल्लेखनीय विशेषता है। इन्होंने सं० १९५० मे बीकानेरमें मार्गशीर्ष शुक्ला १ को श्री सैंसकरणजी नाहटा के घर जन्म लिया, इनकी माता का नाम छोटाबाई था। बाल्यकाल मे हिन्दी व लेखा गणितादि की सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के बाद सं० १९५८ मे बावाजी हीरालालजी के साथ कलकत्ता आये पर सं० १९५९ मे पिताजी का स्वर्गवास होनेसे वापस बीकानेर चले गये। पिताजी की आर्थिक स्थिति कमजोर थी, उन्होने सब कुछ सौदेमें स्वाहा कर दिया, यावत् जेवर गिरवी व माथे कर्ज छोड गए थे। अंधी माँ एवं दो दो बहिनें, मामाजो सुगनचदजी कोचरसे आपको सहारा मिला। अजितमलजी कोचर के पास रिणी, सरदारशहर मे तीन वर्ष रह कर लिखापढी व काम काज सीखे। सं० १९६४ में कलकत्ता आये, लालचंद प्रतापचंद फर्म में मगनमलजी कोचर से चलानी व खाता वही का काम सीखा। पहले वासाखर्च पर रहे फिर १२५) की साल और सं० १९६८ तक ४००) तक वृद्धि हुई। सं० १९६९ मे बीकानेर आकर नेमचंदजी सेठिया के साझेदारी से "नेमचंद मूलचंद" नाम से कपड़े की दुकान की। इसी बीच सं० १९६७ मे एक बहिन का ब्याह हुआ सं० १९७० तक कोचरों के यहाँ थे फिर पूर्णत स्वावलंबी होनेपर स० १९७० मे अपना विवाह किया व छोटी बहिन छगनमलजी कातेला को ब्याही। दुकान चलती थी, प्रतिष्ठा जम गई। सं० १९७२ मे युरोपीय महायुद्ध छिडने पर दुकान बंदकर आप कलकत्ता आये। पनालाल किशनचंद बाँठिया के यहाँ ४५०) की साल में रहे ६ मास बाद ६५०) दूसरे वर्ष १०००) की साल हुई। इस प्रकार उन्नति कर ऋण परिशोध किया। फिर श्री अभयराजजी नाहटा के साझे मे एक वर्ष काम किया जिससे १०००) रुपये का लाभ हुआ। गंभीरचंद राठी के साझे मे १॥ वर्ष में ७०००) पैदा किये। सं० १९७६ से चार वर्ष तक प्रेमराज हजारीमल के साझे मे काम किया फिर हमीरमल बहादुरमल के साथ काम कर मूलचंद नाहटा के नाम से स्वतंत्र फर्म खोला। १९९० मे बाबाजी हीरालालजी के गोद गये। सं० १९९९ मे युद्धकालीन परिस्थितिवश बीकानेर जा कर कपड़े की दुकान की।

किया जाता था, कुछ उसी प्रकार का प्रयत्न 'बीकानेर जैन लेख संग्रह' नामक प्रस्तुत ग्रन्थ में नाहटाजी ने किया है। समस्त राजस्थान में फैली हुई जैन प्रतिमाओंके लगभग तीन सहस्र लेख एकत्र करके विद्वान् लेखकों ने भारतीय इतिहास के स्वर्णकणों का सुन्दर चयन किया है। यह देखकर आश्चर्य होता है कि मध्यकालीन परम्परा में विकसित भारतीय नगरों में उस संस्कृति का कितना अधिक उत्तराधिकार अभीतक सुरक्षित रह गया है। उस सामग्री का उचित संग्रह और अध्ययन करनेवाले पारखी कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। अकेले बीकानेर के ज्ञान भण्डारों में लगभग पचास सहस्र हस्तलिखित प्रतियों के संग्रह विद्यमान हैं। यह साहित्य राष्ट्रकी सम्पत्ति है। इसकी नियमित सूची और प्रकाशन की व्यवस्था करना समाज और शासन का कर्तव्य है। बीकानेर के समान ही जोधपुर, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा, बूंदी, आदि बड़े नगरों की सांस्कृतिक छानबीन की जाय तो उन स्थानोंसे भी इसी प्रकार की सामग्री मिलने की सम्भावना है। प्रस्तुत संग्रह के लेखोंसे जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सामग्री प्राप्त होती है, उसका अत्यन्त प्रामाणिक और विस्तृत विवेचन विद्वान लेखकों ने अपनी भूमिका में किया है। उत्तरी राजस्थान और उससे मिला हुआ जांगल प्रदेश प्राचीनकाल में साल्व जनपद के अन्तर्गत था। सरस्वती नदी यहां तक उस समय प्रवाहित थी। पुरातत्त्व विभाग द्वारा नदीके तटोंपर दूर तक फैले हुए प्राचीन टीलोंके अवशेष पाए गए हैं। किन्तु मध्यकालीन इतिहास का पहला सूत्र संवत् १५४५ से आरम्भ होता है, जब जोधपुर नरेश के पुत्र बीकाजी ने जोधपुर से आकर बीकानेर की नींव डाली। कई लेखों में बीकानेर को विक्रम पुर कहा गया है, जो उसके अपभ्रंश नामका संस्कृत रूप है। बीकानेर का राजवंश आरंभ से ही कला और साहित्य को प्रोत्साहन देनेवाला हुआ, फिर भी बीकानेर के सांस्कृतिक जीवन की सविशेष उन्नति मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र ने की। नगर की स्थापना के साथ ही यहां वैभवशाली मन्दिरों का निर्माण आरम्भ हो गया। सर्व प्रथम आदिनाथ के चतुर्विंशति जिनालय की प्रतिष्ठा संवत् १५६१ में हुई। यह बड़ा देवालय इस समय चिन्तामणि मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह विचित्र है कि इस मन्दिर में स्थापना के लिए मूलनायक की जो प्रतिमा चुनी गई वह लगभग पौने दो सौ वर्ष पूर्व संवत् १३८० में स्थापित मन्डोवर से लाई गई थी। इस मन्दिर की दूसरी विशेषता यहांका भूमिगृह है, जिसमें लगभग एक सहस्र से ऊपर धातुमूर्तियां अभी तक सुरक्षित हैं। ये मूर्तियां सिरोही के देवालयों की लूटमें अकबर के किसी सेनानायक ने प्राप्त करके बादशाह के पास आगरे भेज दी थीं। वहां से मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्रने बीकानेर नरेश द्वारा संवत् १६३६ में सम्राट् अकबर से इन्हें प्राप्त किया और इस मन्दिर में सुरक्षित रख दिया। श्रीनाहटाजीने सं २००० में इनके लेखों की प्रतिलिपि बनाई थी जो इस संग्रहमें पहली बार प्रकाशित की गई है (लेख संख्या १६ ११५४।) इनमें सबसे पुराना लेख—संवत् १०२० का है और उसके बाद प्राय: प्रत्येक शताब्दीके लिये लेखों का लगातार सिलसिला पाया जाता है। भारतीय धातुमूर्तियोंके इतिहासमें इस प्रकार की क्रमबद्ध प्रामाणिक सामग्री अत्यन्त दुर्लभ है।

प्राक्कथन

श्री अगरचन्द नाहटा व भंवरलाल नाहटा राजस्थान के अति श्रेष्ठ कर्मठ साहित्यिक है। एक प्रतिष्ठित व्यापारी परिवारमे उनका जन्म हुआ। स्कूल कालेजी शिक्षासे प्रायः बचे रहे। किन्तु अपनी सहज प्रतिभा के बल पर उन्होने साहित्य के वास्तविक क्षेत्रमें प्रवेश किया, और कुशाग्र बुद्धि एवं श्रम दोनों की भरपूर पूंजीसे उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों के उद्धार और इतिहास के अध्ययन मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। पिछली सहस्राब्दी में जिस भव्य और बहुमुखी जैन धार्मिक संस्कृति का राजस्थान और पश्चिमी भारत मे विकास हुआ उसके अनेक सूत्र नाहटाजीके व्यक्तित्वमे मानों बीज रूपसे समाविष्ट हो गए है। उन्हींके फलस्वरूप प्राचीन ग्रन्थ भण्डार, संघ, आचार्य, मन्दिर, श्रावको के गोत्र आदि अनेक विषयों के इतिहास मे नाहटाजी की सहज रुचि है और उस विविध सामग्री के संकलन, अध्ययन और व्याख्या में लगे हुए वे अपने समय का सदुपयोग कर रहे है। लगभग एक सहस्र संख्यक लेख और कितने ही ग्रन्थ* इन विषयों के सम्बन्ध मे वे हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करा चुके है। अभी भी मध्याह्न के सूर्यकी भाति उनके प्रखर ज्ञानकी रश्मिया बराबर फैल रही है। जहाँ पहले कुछ नहीं था, वहाँ अपने परिश्रम से कण-कण जोडकर अर्थका सुमेरु संगृहीत कर लेना, यही कुशल व्यापारिक बुद्धिका लक्षण है। इसका प्रमाण श्री अभय जैन पुस्तकालय के रूपमें प्राप्त है। नाहटाजी ने पिछले तीस वर्षोंसे निरन्तर प्रयत्न करते हुए लगभग पन्द्रह सहस्र हस्त-लिखित प्रतिया वहाँ एकत्र की है एवं पाँच सौ के लगभग गुटकाकार प्रतियों का संग्रह किया है। यह सामग्री राजस्थान एवं देशके साहित्यिक एवं सास्कृतिक इतिहास के लिये अतीव मौलिक और उपयोगी है।

जिस प्रकार नदी प्रवाह मे से बालुका धोकर एक-एक कण के रूपमें पौपीलिक सुवर्ण प्राप्त

---

* हर्ष है कि अनेक पत्र-पत्रिकाओं में बिखरे हुए इन निबन्धों की मुद्रित सूची विद्वानों के उपयोगार्थ नाहटाजी ने प्रकाशित करा दी है।

वर्तमान लक्षण शिल्प ग्रन्थों के किस त्रैलोक्यप्रासाद के साथ ठीक ठीक घटते हैं। भांडासरजी के मंदिर की जगती में बनी हुई वाद्ययन्त्रधारिणी पुत्तलिकाएँ विभिन्न नाट्य मुद्राओं में अति सुन्दर बनी हैं।

बीकानेर अपने सहयोगी नगरों में 'आठ चैत्ये बीकानेरे' इस विरुद से प्रसिद्ध हुआ, मानो नगर की अधिष्ठात्री देवता के लिए इस प्रकार की कीर्ति संपादित करके बीकानेर के श्रीमन्त श्रेष्ठियों ने नगर देवता के प्रति अपने कर्तव्य का उचित पालन किया था। उसके बाद और भी छोटे मोटे मन्दिर यहां बनते रहे, जिनका नाम परिचय प्रस्तुत ग्रन्थमें दिया गया है। यथार्थ में बीकानेर के नागरिकों के कर्तव्य पालन का यह आरम्भ ही है।

जिस दिन हम अपने नगरों के प्रति पर्याप्त रूप में जागरूक होंगे, और उनके सांस्कृतिक उत्तराधिकार के महत्त्व को पहचानेंगे, उस दिन इन देव प्रासादों के सचित्र वर्णन और वास्तु शैली और कोरणी के सूक्ष्म अध्ययन से संयुक्त परिचय ग्रन्थों का निर्माण किया जायगा। पर उस दिन के लिये अभी प्रतीक्षा करनी होगी। प्रासाद निर्माताओंका स्वर्णयुग तो समाप्त हो गया, पर वास्तु और शिल्प के सच्चे अनुरागी और पारखी उनके उत्तराधिकारियोंने अभी जन्म नहीं लिया। पाश्चात्य शिक्षा की लपटोंने जिनके सांस्कृतिक मानसको झुलसा डाला है, ऐसे विरूप प्राणी हम इस समय बन रहे हैं। कला के अमृत जल से प्रोक्षित होकर हमारे सांस्कृतिक जीवन का नवावतार जिस दिन सत्य सिद्ध होगा, उसी दिन इन प्राचीन देव प्रासादों के मध्य में हम सन्तुष्टि स्थिति प्राप्त कर सकेंगे।

लेखकों ने बीकानेर नगर के ११ अन्य मन्दिर एवं राज्य के विभिन्न स्थानों में निर्मित लगभग ८० अन्य जैन मन्दिरों का भी उल्लेख किया है। उनके वास्तु शिल्प का भी विस्तृत अध्ययन उसी प्रकार अपेक्षित है। इनमें सुजानगढ़ में बना हुआ जगवल्लभ पार्श्वनाथका देव सागर प्रासाद उल्लेखनीय है जिसकी प्रतिष्ठा अभी चालीस पचास वर्ष पूर्व सं० १६७१ में हुई थी और जिसका निर्माण साढ़ चार लाख रुपये की लागत से हुआ था। भांडासर के त्रैलोक्यदीपक प्रासाद की भांति यह भी वास्तु प्रासाद का सविशेष उदाहरण है।

मन्दिरों की तरह जैन उपाश्रय भी सांस्कृतिक जीवन के केन्द्र थे। इनमें तपस्वी और ज्ञान-साधक यति एवं आचार्य निवास करते थे। आज तो इस संस्था का मेरुदण्ड झुक गया है। बीकानेर का बड़ा उपाश्रय जहां बड़े भट्टारकों की गद्दी है, विशेष ध्यान देने योग्य है, क्योंकि वर्तमान में इसके अन्तर्गत बृहत् ज्ञानभण्डार नामक हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह है जिसमें हितवल्लभ नामके एक यतिने अपनी प्रेरणा से नौ यतियोंके हस्तलिखित ग्रन्थोंका (संवत् १६६८ में) एकत्र संग्रह करा दिया था। इस संग्रह में १०००० ग्रन्थ हैं, जिनका विशेष विवरण युक्त सूचीपत्र श्री नाहटाजी ने स्वयं तैयार किया है। अवश्य ही यह सूचीग्रन्थ मुद्रित होने योग्य है। इसी प्रसंगमें बीकानेर की अनूप संस्कृत लायब्रेरी की ओर भी ध्यान जाता है, जो संघ प्रवेश से पूर्व बीकानेर का राजकीय पुस्तकालय था किन्तु अब महाराज श्रीके निजी स्वत्व में है।

इन मूर्तियों की सहायता से लगभग पांच शती की कला शैली का साक्षात् परिचय प्राप्त हो सकता है। इस दृष्टिसे इनका पृथक् अध्ययन और सचित्र प्रकाशन आवश्यक है।

विक्रम की सोलहवीं शती में चार बड़े मन्दिर बीकानेर मे बने और फिर चार सत्रहवीं शती मे। इस प्रकार संवत् १५६१ से संवत १६७० तक सौ वर्ष के बीच मे आठ बड़े देवालयों का निर्माण भक्त श्रेष्ठियों द्वारा इस नगर में किया गया। उस समय तक देश में मन्दिरों का वास्तु-शिल्प जीवित अवस्था में था। जगती, मडोवर और शिखर के सूक्ष्म भेद और उपभेद शिल्पियों को भलीभांति ज्ञात थे। जनता भी उनसे परिचित रहती थी और उनके वास्तु का रस लेने की क्षमता रखती थी। आज तो जैसे मन्दिरों का अस्तित्व हमारी आंख से एकदम ओझल हो गया है। उनके वास्तु की जानकारी जैसे हमने बिलकुल खो दी है। भद्र, अनुग, प्रतिरथ, प्रतिकर्ण, कोण, इनमे से प्रत्येक की स्थिति, विस्तार निर्गम और उत्सेध या उदय के किसी समय निश्चित नियम थे। भद्रार्ध और अनुग और कोण के बीच में प्रासाद का स्वरूप और भी अधिक पल्लवित करने के लिये कोणिकाओं के निर्गम बनाए जाते थे, जिन्हें पल्लविका या नन्दिका कहते थे। इन कई भागों के उठान के अनुसार ही ऊपर चलकर शिखरमे रथिका और शृङ्ग एवं उरु शृङ्ग बनाते थे, तथा प्रतिकर्ण और कोण के शिखर भागों को सजाने के लिये कितने ही प्रकार के अण्डक, तिलक और कूट बनाए जाते थे। अण्डकों की सख्या ५ से लेकर ४-४ के क्रम से बढ़ती हुई १०१ तक पहुचती थी। इनमे पाच अंडकवाला प्रासाद केसरी और अन्तिम १०१ अंडकों का प्रासाद देवालयों का राजा मेरु कहलाता था। एक सहस्र अण्डकों से सुशोभित शिखरवाले प्रासाद भी बनाए जाते थे। इस प्रकार के १५० से अधिक प्रासादों के नाम और लक्षण शिल्प-ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। ऐसे प्रासाद जीवन के वास्तविक तथ्य के अंग थे, शिल्पियों की कल्पना नहीं। अतएव यह देखकर प्रसन्नता होती है कि भाडाशाह द्वारा निर्मित सुमतिनाथ के मन्दिर में संवत् १५७१ विक्रमी के लेख में उसे त्रैलोक्यदीपक प्रासाद कहा गया है, जिसका निर्माण सूत्रधार गोदा ने किया था—

१ संवत् १५७१ वर्षे आसो
२ सुदि २ रवौ राजाधिराज
३ श्री लूणकरणजी विजय राज्ये
४ साहभाडा प्रासाद नाम त्रैलो—
५ क्यदीपक करावितं सूत्र०
६ गोदा कारित

शिल्परत्नाकर में त्रैलोक्यतिलक, त्रैलोक्यभूषण और त्रैलोक्यविजय तीन प्रकार के विभिन्न प्रासादों के नाम और लक्षण दिये हुए हैं। इनमे से त्रैलोक्यतिलक प्रासाद में शिखर के चारों ओर ४२५ अंडक और उन अंडकों के साथ २४ तिलक बनाए जाते थे। वास्तुशास्त्र की दृष्टि से यह बात छान बीन करने योग्य है कि सूत्रधार गोदा के त्रैलोक्यदीपक प्रासाद के

गए थे। कहा जाता है कि पीछे मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र ने प्रत्येक जाति और गोत्रों के घरों को एक जगह बसा कर उनकी एक-एक गुवाड़ प्रसिद्ध कर दी। गुवाड़ का अर्थ मुहल्ला है। यह शब्द संस्कृत गोवाट से बना है, जिसका अर्थ था गायोंका बाड़ा। इस शब्दसे संकेत मिलता है कि प्रत्येक मुहल्ले की गाएँ एक-एक बाड़े में रहती थीं। प्रातःकाल वे गाएँ उसी बाड़े से जंगल में चरने के लिए चली जाती और फिर सायंकाल लौटकर वहीं जमा हो जाती थीं। गायों के स्वामी दुहने और खिलाने के लिए उन्हें अपने घर घर ले जाते थे। पुराने समयमें गायों की संख्या अधिक होती थी और प्रायः उन्हें इसी प्रकार बाड़े में इकट्ठा रखते थे। गोवाट, गुवाड़ शब्द की प्राचीनता के विषय में अभी और प्रमाण ढूंढने की आवश्यकता है, किन्तु इस प्रथाके मूलमें वैदिक गोत्र जैसी व्यवस्था का संकेत मिलता है। गोत्रकी निरुक्ति के विषय में भी ऐसा ही मत है कि समान परिवारों की गायों को एक स्थान पर रखने या बांधने की प्रथा से इस शब्द का जन्म हुआ। बीकानेर में ओसवाल समाज की ७५ गुवाड़ें थीं। यह जानकर कुतूहल होता है कि नगरमें प्रत्येक जाति अपने अपने घरों की संख्या का पूरा लेखा जोखा रखती थी। सं० १६०५ के एक बस्तीपत्रक में घरों की संख्या २७०० लिखी है। अपने यहां की समाज-व्यवस्था में इस प्रकार से परिवारों की गणना रखना जातिके सार्वजनिक संगठन के लिए आवश्यक था। प्रत्येक परिवारका प्रतिनिधि व्यक्ति वृद्ध या स्थविर कहलाता था, जिसे आजकल 'बड़ा बूढ़ा' कहते हैं। बिरादरी की पंचायत या जाति सभा में अथवा विवाह आदि अवसरों पर वही कुल वृद्ध या 'बड़ा बूढ़ा' उस परिवार का प्रतिनिधि बनकर बैठता था। इस प्रकार कुल या परिवार जाति की न्यूनतम इकाई थी। कुलोंके समूहसे जाति बनती थी। जातिका सामाजिक या राजनैतिक संगठन नितान्त प्रजातन्त्रीय प्रणाली पर आश्रित था। इसे प्राचीन परिभाषा में 'संघप्रणाली' कहा जाता था। पाणिनिने अष्टाध्यायीमें कुलोंकी इस व्यवस्था और उनके कुलवृद्धों के नामकरण की पद्धति का विशद उल्लेख किया है। व्यक्ति के लिये यह बात महत्वपूर्ण थी कि परिवार के कई पुरुष-सदस्यों में गोत्र-वृद्ध या 'बड़ा बूढ़ा' यह उपाधि किस व्यक्ति विशेषके साथ लागू होती थी, क्योंकि वही उस कुलका प्रतिनिधि समझा जाता था। प्रति परिवार से एक प्रतिनिधि जातिकी पंचायत में सम्मिलित होता था। जातिके इस संघ में प्रत्येक कुलवृद्धका पद बराबर था, केवल-काम निर्वाहके लिये कोई विशिष्ट व्यक्ति सभापति या श्रेष्ठ चुन लिया जाता था। बौद्ध ग्रंथोंसे ज्ञात होता है कि वैशालीके लिच्छवि क्षत्रियोंकी जातिमें ७७०७ कुल या परिवार थे। क्योंकि वे राजनीतिक अधिकार से संपन्न थे इस वास्ते प्रत्येककी उपाधि 'राजा' होती थी। वैश्यों या अन्य जातियों की बिरादरी के संगठनमें राजा की उपाधि तो न थी किन्तु और सब बातोंमें पंचायत या जातीय सभा का ढांचा शुद्ध संघ प्रणाली से संचालित होता था। इस प्रकार के जातीय संगठनमें प्रत्येक जाति आन्तरिक स्वराज्यका अनुभव करती थी और अपने निजी मामलोंको निपटाने में पूर्ण स्वतन्त्र थी। इस प्रकारके स्वायत्त संगठन समाजके अनेक स्तरों पर प्रत्येक जातिमें विद्यमान थे, और वहां वे टूट नहीं गए हैं

इस संग्रह में १२००० ग्रंथ एवं ५०० के लगभग गुटके है तथा अनेक महत्त्वपूर्ण चित्र है। स्वनामधन्य बीकाजी के वर्तमान उत्तराधिकारी से हम इतना निवेदन करना चाहेंगे कि उनके पूर्वजों की यह ग्रन्थराशि भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। संपूर्ण राष्ट्रको और विशेषतः समस्त राजस्थानी प्रजा को इस निधिमे रुचि है। यह उनके पूर्वजोका साहित्य और कला भाण्डार है, अतएव उदार दृष्टिकोण से जनताके लिए इसकी सुरक्षा का प्रबन्ध होना चाहिए। इस संबन्धमें भारतीय शासन से भी निवेदन है कि वे वर्तमान उपेक्षावृत्तिको छोडकर उस ग्रंथ संग्रह की रक्षा के लिये पर्याप्त धन की व्यवस्था करें जिससे ग्रंथोंका प्रकाशन भी आगे हो सके और योग्य पुस्तकपाल की देख-रेख मे ग्रन्थों की रक्षा भी हो सके। विद्वान् लेखकोंने जैन ज्ञान-भाण्डारोका परिचय देते हुए भूमिका रूपमे श्वेताम्बर और दिगम्बर ज्ञानभाण्डारों की उपयोगी सूची दी है। हमारा ध्यान विशेष रूपसे संवत् १५७१ और संवत् १६७८ के बीच मे निर्मित हिन्दीके अनेक रास और चौपाई ग्रन्थो की ओर जाता है, जिनकी संख्या ५० के लगभग है। हिन्दी साहित्य की यह सब अप्रकाशित सामग्री है। संवत् १६०२ की मृगावती चौपाई और सीता चौपाई ध्यान देने योग्य है।

श्री नाहटाजी ने इस सुन्दर ग्रथ में ऐतिहासिक ज्ञान सवर्द्धनके साथ-साथ अत्यन्त सुरभित सास्कृतिक वातावरण प्रस्तुत किया है, जिसके आमोदसे सहृदय पाठकका मन कुछ काल के लिये प्रसन्नतासे भर जाता है। सचित्र विज्ञप्तिपत्रोका उल्लेख करते हुए १८६८ के एक विशिष्ट विज्ञप्ति पत्रका वर्णन किया गया है, जो बीकानेर के जैन संघ की ओर से अजीमगंज बंगाल मे विराजित जैनाचार्य की सेवामे भेजने के लिये लिखा गया था। इसकी लम्बाई ६७ फुट है, जिसमें ५५ फुट मे बीकानेरके मुख्य बाजार और दर्शनीय स्थानोका वास्तविक और कलापूर्ण चित्रण है। लेखकोंने इन सब स्थानों की पहचान दी है। इसी प्रकार पल्लू से प्राप्त सरस्वती देवी की प्राचीन प्रतिमा का भी बहुत समृद्ध काव्यमय वर्णन लेखकोने किया है। सरस्वती की यह प्रतिमा राजस्थानीय शिल्पकला की मुकुटमणि है, वह इस समय दिल्लीके राष्ट्रीय संग्रहालय मे सुरक्षित है। इस मूर्तिमे जिन आभूपणोंका अंकन है उनका वास्तविक वर्णन सोमेश्वरकृत मानसोल्लास मे आया है। सरस्वतीके हाथोंकी अंगुलियों के नख नुकीले और बढ़े हुए है, जो उस समय सुन्दरता का लक्षण समझा जाता था। मानसोल्लास मे इस लक्षणको 'केतकी-नख' कहा गया है (३। ११६२)।

इस पुस्तक में जिस धार्मिक और साहित्यिक संस्कृतिका उल्लेख हुआ है, उसके निर्माण कर्ताओंमे ओसवाल जातिका प्रमुख हाथ था। उन्होंने ही अपने हृदय की श्रद्धा और द्रव्य राशि से इस संस्कृतिका समृद्ध रूप संपादित किया था। यह जाति राजस्थान की बहुत ही धमपरायण और मितव्ययी जाति थी, किन्तु सांस्कृतिक और सार्वजनिक कार्यों मे वह अपने धनका सदुपयोग मुक्तहस्त होकर करती थी। बीकानेर मे ओसवालों के किसी समय ७८ गोत्र थे, जिनमें ३००० परिवारों की गणना थी। आरम्भ में ये परिवार अपने मन से बस

गए थे। कहा जाता है कि पीछे मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र ने प्रत्येक जाति और गोत्रों के घरों को एक जगह बसा कर उनको एक-एक गुवाड़ प्रसिद्ध कर दी। गुवाड़ का अर्थ मुहल्ला है। यह शब्द संस्कृत गोवाट से बना है, जिसका अर्थ था गायोंका बाड़ा। इस शब्दसे संकेत मिलता है कि प्रत्येक कुटुम्ब की गायें एक-एक बाड़े में रहती थीं। प्रातःकाल वे गायें उसी बाड़े से जंगल में चरने के लिए चली जाती और फिर सायंकाल लौटकर वहीं खड़ी हो जाती थीं। गायों के स्वामी दुहने और खिलाने के लिए उन्हें अपने घर पर ले आते थे। पुराने समयमें गायों की संख्या अधिक होती थी और प्रायः उन्हें इसी प्रकार बाड़े में इकट्ठा रखते थे। गोवाट, गुवाड़ शब्द की प्राचीनता के विषय में अभी और प्रमाण ढूँढ़ने की आवश्यकता है, किन्तु इस प्रथाके मूलमें वैदिक गोत्र जैसी व्यवस्था का संकेत मिलता है। गोत्रकी निरुक्ति के विषय में भी ऐसा ही मत है कि समान परिवारों की गायों को एक स्थान पर रखने या बांधने की प्रथा से इस शब्द का जन्म हुआ। बीकानेर में ओसवाल समाज की २७ गुवाड़ें थीं। यह जानकर कुतूहल होता है कि नगरमें प्रत्येक जाति अपने अपने घरों की संख्या का पूरा लेखा जोखा रखती थी। सं० ११०१ के एक पत्रीपत्रक में घरों की संख्या ७५०० लिखी है। अपने यहां की समाज-व्यवस्था में इस प्रकार से परिवारों की गणना रखना जातिके सार्वजनिक संगठन के लिए आवश्यक था। प्रत्येक परिवारका प्रतिनिधि व्यक्ति वृद्ध या स्थविर कहलाता था, जिसे आजकल 'बड़ा बूढ़ा' कहते हैं। बिरादरी की पंचायत या जाति सभा में अथवा विवाह आदि अवसरों पर वही कुल वृद्ध या 'बड़ा बूढ़ा' उस परिवार का प्रतिनिधि बनकर बैठता था। इस प्रकार कुल या परिवार जाति की न्यूनतम इकाई थी। कुलोंके समूहसे जाति बनती थी। जातिका सामाजिक या राजनैतिक संगठन नितान्त प्रजातन्त्रीय प्रणाली पर आश्रित था। इसे प्राचीन परिभाषा में 'संघप्रणाली' कहा जाता था। पाणिनिने अष्टाध्यायीमें कुलोंकी इस व्यवस्था और उनके कुलवृद्धों के नामकरण की पद्धति का विशद उल्लेख किया है। व्यक्ति के लिये यह बात महत्वपूर्ण थी कि परिवार के कई पुरुष सदस्यों में गोत्र-वृद्ध या 'बड़ा बूढ़ा' यह उपाधि किस व्यक्ति विशेषके नाम लागू होती थी, क्योंकि वही उस कुलका प्रतिनिधि समझा जाता था। प्रति परिवार से एक प्रतिनिधि जातिकी पंचायत में सम्मिलित होता था। जातिके इस संघ में प्रत्येक कुलवृद्धका पद बराबर था, केवल-कार्य निर्वाहके लिए कोई विशिष्ट व्यक्ति सभापति या मुख्य चुन लिया जाता था। बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि वैशालीके लिच्छवि क्षत्रियोंकी जातिमें ७७०७ कुल या परिवार थे। क्योंकि वे राजनीतिक अधिकार से सम्पन्न थे इस वास्ते प्रत्येककी उपाधि 'राजा' होती थी। वैश्यों या अन्य जातियों की बिरादरी के संगठनमें राजा की उपाधि न थी किन्तु और सब बातोंमें पंचायत या जातीय सभा का ढांचा शुद्ध संघ प्रणाली से संचालित होता था। इस प्रकार के जातीय संगठनमें प्रत्येक जाति आन्तरिक स्वराज्यका अनुभव करती थी और अपने निजी मामलोंमें निर्णय में पूर्ण स्वतन्त्र थी। इस प्रकारके स्वायत्त संगठन समाजके अनेक स्तरों पर प्रत्येक जातिमें विद्यमान थे, और यहीं वे टूट नहीं गए हैं

वहां अभी तक किसी न किसी रूपमें जीवित हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में परिवारोंकी गिनती लोगोंको कंठ रहती थी। घर-घरसे एक व्यक्ति को निमन्त्रित करने की प्रथा के लिए मेरठ की बोलीमें 'घर पते' यह शब्द अभीतक जीवित रह गया है। श्रीनाहटाजी के उल्लेखसे ज्ञात होता है कि लाहणपत्र के रूपमें भी बिरादरी के घरों की संख्या रखी जाती थी, किन्तु लाहणपत्र* का यथार्थ अभिप्राय हमें स्पष्ट नहीं हुआ।

ग्रन्थ में संगृहीत लेखों को पढ़ते हुए पाठक का ध्यान जैन संघ की ओर भी अवश्य जाता है। विशेषत खरतरगच्छ के साधुओं का अत्यन्त विस्तृत संगठन था। बीकानेर के राजाओं से वे समानता का पद और सम्मान पाते थे। उनके साधु अत्यन्त विद्वान् और साहित्य में निष्ठा रखनेवाले थे। इसी कारण उस समय यह उक्ति प्रसिद्ध हो गई थी कि 'आतम ध्यानी आगरै पण्डित बीकानेर'। इसमें बीकानेर के विद्वान् यतियों का उल्लेख तो ठीक ही है, साथ ही आगरे के 'आध्यातमी' संप्रदाय का उल्लेख भी ध्यान देने योग्य है। यह आगरे के

---

* 'लाहण' शब्द सस्कृत लभ् धातु से बना, लभ् से लाभ सज्ञा हुई। लाभ का प्राकृत और अपभ्रंश रूप 'लाह' है। उसके 'ण' प्रत्यय लगने से 'लाहण' शब्द हो गया। जयपुर, दिल्ली की ओर लाहणा कहते हैं गुजरात आदि में लाहणी शब्द प्रचलित है। महाकवि समयसुन्दर ने अपनी 'कल्पलता' नामक कल्पसूत्र वृत्ति में 'लाहणी' का संस्कृतरूप 'लंभनिका' शब्द लिखा है यत —"गच्छे लभनिका कृता प्रतिपुरे रूक्मादिमेक पुन"। 'लाहण' शब्द की व्युत्पत्ति से फलित हुआ कि लाभ के कार्य में इस शब्द का प्रयोग होना चाहिए अपने नगर, गांव, या समग्र देश में अपने स्वधर्मियों या जाति के घरों में मुहर, रुपया, पैसा मिश्री, गुड़, चीनी, थाली, चुदड़ी इत्यादि वस्तुओंको बाँटने की प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यह लेनेवाले को प्रत्यक्ष लाभ तथा देनेवाले को फलप्राप्तिरूप लाभप्रद होने से इसका नाम लाहण सार्थक है। पूर्वकालके धनी-मानी प्रभावशाली श्रावकों, संघपतियों के जीवनचरित्र, शिलालेख ग्रंथ-प्रशस्तियों में- इसके पर्याप्त उल्लेख पाये जाते हैं। आज भी यह प्रथा सर्वत्र वर्त्तमान है। बीकानेर में इस प्रथा ने अपना एक विशेष रूप धारण कर लिया है। बीकानेर के ओसवाल समाज में प्राय· प्रत्येक व्यक्ति पूर्वकाल में 'लाहण' करना एक पुण्य कर्त्तव्य समझकर यथा शक्ति अवश्य किया करता था। मृत्यु के उपरान्त अन्त्येष्टि के हेतु उसी व्यक्ति की श्मशान यात्रा मंडपिका (मढी युक्त निकाली जाती थी जिसकी लाहण-लावण हो चुकी हो।

लाहण की प्रथा यों है कि जो व्यक्ति अपनी या अपनी पत्नी आदि की 'लाहण' करता हो उसे प्रथम अपनी गुवाड़ व सगे सम्बन्धियोंमें निमंत्रण देना होता है फिर गुवाड़ या घर के दस पाँच सदस्य मिलकर सत्ताइस गुवाड़ में 'टोली' फिरते हैं, तीसरी टोली में रुपयों की कोथली साथ में रहती है। प्रत्येक मुहल्ले की पचायती में जाकर जितने घरों तथा बगीची, मन्दिर आदि की लाहण लगती हो जोड़कर रुपये चुका दिये जाते हैं। इन रुपयों का उपयोग पचायती के बासण-बरतन, सामान इत्यादि में किया जाता है। सध्या समय घर के आगे या चौक में सभी आमन्त्रित व्यक्तियों की उपस्थिति में चौधरी (जाति-पच) के आने पर श्रीनामा डालकर लाहणपत्र लिखा जाता है फिर सगे-सबधियों की पारस्परिक मिलनी होने के बाद 'लाहण' उठ जाती है।

—सम्पादक

ज्ञानियों की मण्डली थी, जिसे शैली कहते थे। 'अध्यात्मी' बनारसीदास इसीके प्रमुख सदस्य थे। ज्ञात होता है अकबर की दीन इलाही प्रवृत्ति इसी प्रकार की आध्यात्मिक खोज का परिणाम थी। बनारस में भी अध्यात्मियों की एक शैली या मण्डली थी। किसी समय राजा टोडरमल के पुत्र गोवर्द्धनदास उसके मुखिया थे। बनारस में आज भी यह उक्ति बच गई है—'सब के गुरु गोवरधनदास'। अवश्य ही अकबर और जहांगीर के काल में आगरा और बीकानेर जैसी राजधानियों के नागरिकों में निजी विशेषताओं के आधार पर कुछ होड़ रहती होगी।

भारत के मध्यकालीन नगर संख्या में अनेक हैं। प्रायः प्रत्येक प्रदेश में अभी तक उनकी परम्परा बची है। सांस्कृतिक दृष्टि से उनकी छानबीन, उनकी संस्थाओं को समझने का प्रयत्न और उनके इतिहास की बिखरी हुई कड़ियों को जोड़कर उनका सचित्र वर्णन करने के प्रयत्न होने चाहिए। वह नगर बड़भागी है, जहाँ के नागरिकों के मन में इस प्रकार की सांस्कृतिक आराधना का संकल्प उत्पन्न हो। बीकानेर के नाहटा की भाँति चांपानेर, माण्डू, सूरत, धोलका, चन्देरी, बीदर, अहमदाबाद, आगरा, दिल्ली, बनारस, लखनऊ आदि कितने ही नगरों को अपने अपने नाहटाओं की आवश्यकता है।

प्रस्तुत संग्रह में जो तीन सहस्र के लगभग लेख हैं उनमें से अधिकांश ११ वीं से सोलहवीं शती के बीचके हैं। उस समय अपभ्रंश भाषा की परम्परा का साहित्य और जीवन पर अत्यधिक प्रभाव था, इसका प्रमाण इन लेखोंमें आये हुए व्यक्तिवाची नामोंमें पाया जाता है। जैन आचार्यों के नाम प्रायः सब संस्कृत में हैं, किन्तु गृहस्थ स्त्री-पुरुषों के नाम जिन्होंने जिनालय और मूर्तियों को प्रतिष्ठापित कराया, अपभ्रंश भाषामें हैं। ऐसे नामों की संख्या इन लेखोंमें लगभग दस सहस्र होगी। यह अपभ्रंश भाषाके अध्ययन की मूल्यवान् सामग्री है। इन नामोंकी अकारादि क्रमसे सूची बनाकर भाषा शास्त्रकी दृष्टिसे इनकी छान बीन होनी आवश्यक है। उदाहरण के लिये 'साधु पासड़ भार्या पाल्हण दे' में 'पासड़' अपभ्रंश रूप है। मूल नाम 'पार्श्वदेव' होना चाहिए। उसके उत्तर पद 'देव' का लोप करके उसका सूचक 'ड' प्रत्यय जोड़ दिया गया, और पार्श्वके स्थान में 'पास' आदेश हुआ। इस प्रकार 'पासड़' यह नाम का रूप हुआ। 'पाल्हण दे' संस्कृत 'पाल्हन देवी' का रूप है। इसी प्रकार जसा, यह मस्तृत यशोदत्त का संक्षिप्त अपभ्रंश रूप था। नामोंको संक्षिप्त करने की प्रवृत्ति अत्यन्त प्राचीन थी। पाणिनि ने भी विस्तार से इसका उल्लेख किया है और उन नियमों का विश्लेषण किया है जिनके अनुसार नामोंको छोटा किया जाता था। इनमें नामके उत्तर पदका लोप सबसे मुख्य बात थी। लुप्त पदको सूचित करने के लिये एक प्रत्यय जोड़ा जाता था, जैसे—'देवदत्त' को छोटा करने के लिये 'दत्त' का लोप करके 'क' प्रत्ययसे 'देवक' रूप बनता था। इस प्रकार के नामोंको अनुकम्पा नाम (दुलारका नाम) कहा जाता था। नामोंको छोटा करने की प्रथा पाणिनि के पीछे भी बराबर जारी रही, जैसा कि भरहुत और सांचीमें आग

वहां अभी तक किसी न किसी रूपमें जीवित हैं। इस प्रकार की व्यवस्था में परिवारोंकी गिनती लोगोंको कंठ रहती थी। घर-घरसे एक व्यक्ति को निमन्त्रित करने की प्रथा के लिए मेरठ की बोलीमें 'घर पते' यह शब्द अभीतक जीवित रह गया है। श्रीनाहटाजी के उल्लेखसे ज्ञात होता है कि लाहणपत्र के रूपमें भी विरादरी के घरों की संख्या रखी जाती थी, किन्तु लाहणपत्र का यथार्थ अभिप्राय हमे स्पष्ट नहीं हुआ।

ग्रन्थ मे संगृहीत लेखो को पढ़ते हुए पाठक का ध्यान जैन संघ की ओर भी अवश्य जाता है। विशेषत खरतरगच्छ के साधुओ का अत्यन्त विस्तृत संगठन था। वीकानेर के राजाओं से वे समानता का पद और सम्मान पाते थे। उनके साधु अत्यन्त विद्वान् और साहित्य मे निष्ठा रखनेवाले थे। इसी कारण उस समय यह उक्ति प्रसिद्ध हो गई थी कि 'आतम ध्यानी आगरै पण्डित वीकानेर'। इसमें वीकानेर के विद्वान् यतियों का उल्लेख तो ठीक ही है, साथ ही आगरे के 'आध्यातमी' संप्रदाय का उल्लेख भी ध्यान देने योग्य है। यह आगरे के

'लाहण' शब्द सस्कृत लभ् धातु से बना, लभ् से लाभ सज्ञा हुई। लाभ का प्राकृत और अपभ्रंश रूप 'लाह' है। उसके 'ण' प्रत्यय लगने से 'लाहण' शब्द हो गया। जयपुर, दिल्ली की ओर लाहणा कहते हैं गुजरात आदि में लाहणी शब्द प्रचलित है। महाकवि समयसुन्दर ने अपनी 'कल्पलता' नामक कल्पसूत्र वृत्ति में 'लाहणी' का संस्कृतरूप 'लंभनिका' शब्द लिखा है यत — "गच्छे लभनिका कृता प्रतिपुरे रुक्मादिमेकं पुन"। 'लाहण' शब्द की व्युत्पत्ति से फलित हुआ कि लाभ के कार्य में इस शब्द का प्रयोग होना चाहिए अपने नगर, गांव, या समग्र देश में अपने स्वधर्मियों या जाति के घरों में मुहर, रुपया, पैसा मिश्री, गुड़, चीनी, थाली, चुदड़ी इत्यादि वस्तुओंको वॉटने की प्रथा प्राचीनकाल से चली आ रही है। यह लेनेवाले को प्रत्यक्ष लाभ तथा देनेवाले को फलप्राप्तिरूप लाभप्रद होने से इसका नाम लाहण सार्थक है। पूर्वकालके धनी-मानी प्रभावशाली श्रावकों, सघपतियों के जीवनचरित्र, शिलालेख ग्रंथ-प्रशस्तियों में इसके पर्याप्त उल्लेख पाये जाते हैं। आज भी यह प्रथा सर्वत्र वर्त्तमान है। वीकानेर में इस प्रथा ने अपना एक विशेष रूप धारण कर लिया है। वीकानेर के ओसवाल समाज में प्राय प्रत्येक व्यक्ति पूर्वकाल में 'लाहण' करना एक पुण्य कर्त्तव्य समझकर यथा शक्ति अवश्य किया करता था। मृत्यु के उपरान्त अन्त्येष्टि के हेतु उसी व्यक्ति की श्मशान यात्रा मंडपिका (मढी युक्त निकाली जाती थी जिसकी लाहण-लावण हो चुकी हो।

लाहण की प्रथा यों है कि जो व्यक्ति अपनी या अपनी पत्नी आदि की 'लाहण' करता हो उसे प्रथम अपनी गुवाड़ व सगे सम्बन्धियोंमें निमत्रण देना होता है फिर गुवाड़ या घर के दस पॉच सदस्य मिलकर सत्ताइस गुवाड़ में 'टोली' फिरते हैं, तीसरी टोली में रुपयों की कोथली साथ में रहती है। प्रत्येक मुहल्ले की पचायती में जाकर जितने घरों तथा वगीची, मन्दिर आदि की लाहण लगती हो जोड़कर रुपये चुका दिये जाते हैं। इन रुपयों का उपयोग पचायती के वासण-वरतन, सामान इत्यादि में किया जाता है। सध्या समय घर के आगे या चौक में सभी आमन्त्रित व्यक्तियों की उपस्थिति में चौधरी (जाति-पच) के आने पर श्रीनामा डालकर लाहणपत्र लिखा जाता है फिर सगे-सबधियों की पारस्परिक मिलनी होने के बाद 'लाहण' उठ जाती है।

—सम्पादक

बड़ा गौरव था। आसाम, बंगाल आदि देशोंके व्यापारकी प्रधान बागडोर यहाँके व्यापारियोंके हाथमें है।

साहित्यिक दृष्टिसे भी बीकानेर राज्य बड़ा गौरवशाली है। अकेले बीकानेर नगरमें ही ६० ७० हजार प्राचीन हस्तलिखित प्रतियां सुरक्षित हैं। इनमें राजकीय अनूप संस्कृत लाइब्रेरी विश्व विश्रुत है, जहाँ सैकड़ोंकी संख्यामें अन्यत्र अप्राप्य विविध विषयक ग्रन्थरत्न विद्यमान हैं। बड़ा उपासरा आदिके जैन ज्ञान भण्डारोंमें भी २० हजारके लगभग हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। हमारे संग्रह—श्री अभय जैन ग्रन्थालयमें अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विविध सामग्री संग्रहीत है ही। राज्यके अन्य स्थानोंमें चूरूकी सुराणा लाइब्रेरी आदि प्रसिद्ध है इन सबका संक्षिप्त परिचय आगे दिया जायगा।

कलाकी दृष्टिसे भी बीकानेर पश्चात्पद नहीं, यहाँकी चित्रकलाकी शैली अपना विशिष्ट स्थान रखती है और बीकानेरी कलम गत तीन शताब्दियोंसे सर्वत्र प्रसिद्ध है। बीकानेर के सचित्र विज्ञप्तिपत्र फुटकर चित्र एवं भित्तिचित्र इस बातके ज्वलन्त उदाहरण हैं। शिल्पकला की दृष्टिसे यहाँका भांडासरजीका मंदिर सर्वत्र प्रसिद्ध है। इस विषयमें "बीकानेर आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर" नामक ग्रन्थ द्रष्टव्य है।

इस प्रकार विविध दृष्टियोंसे गौरवशाली बीकानेर राज्यके जैन अभिलेखोंका संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थमें उपस्थित किया जा रहा है इस प्रसंगसे यहाँके जैन इतिहास सम्बन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें दे देना आवश्यक समझ आगेके पृष्ठोंमें संक्षिप्त प्रकाश डाला जा रहा है।

बीकानेर राज्य-स्थापन एवं व्यवस्थामें जैनोंका हाथ –

जोधपुर नरेश राव जोधाजीने जब अपने प्रतापी पुत्र श्री बीकाजीको नवीन राज्यकी स्थापना करनेके हेतु जांगल देशमें भेजा तब उनके साथ चाचा कांधल, भाई जोगा, बीदा और मामा सांखलाके अतिरिक्त बोथरा वत्सराज एवं वैद लाखणसी आदि राजनीतिज्ञ ओसवाल भी थे। बीकानेर राज्यकी स्थापनामें इन सभी मेधावी व्यक्तियोंका महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। बच्छावत वंशके मूल पुरुष वच्छराजजी—जो राव बीकाजीके प्रधान मंत्री थे—ने अपने बुद्धि वैभवसे शासन तंत्रको सुसंचालित कर राज्यकी बड़ी उन्नति की। राज्य स्थापनासे लगाकर महाराजा रायसिंह के समय पर्य्यन्त शासन प्रबन्धमें बच्छावत वंशका प्रमुख भाग रहा। यहां तक कि सभी राजाओंके प्रधान मंत्री इसी गौरवशाली वंशके ही होनेका उल्लेख "कर्मचन्द्र मंत्रि वंश प्रबन्ध" में पाया जाता है यथा—

राव बीकाजीके मन्त्री वत्सराज, राव लूणकरणजीके मंत्री कर्मसिंह, राव जयतसीजीके मंत्री वरसिंह और नगराज, राव कल्याणमल्लके मंत्री संग्रामसिंह व कर्मचन्द्र तथा राजा रायसिंहके मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र थे।

इन बुद्धिशाली मंत्रियोंने साम, दाम, दण्ड और भेद नीति द्वारा समय-समयपर आनेवाली विपत्तियोंसे राज्यकी रक्षा करनेके साथ-साथ उसकी महत्त्व वृद्धि और सीमा विस्तारके लिये पूर्ण

हुए नामोंसे ज्ञात होता है। गुप्तकालमें नामोंके संस्कृत रूप की प्रधानता हुई। उस समय की जो मिट्टी की मुहरें मिली हैं उनपर अधिकाश नाम शुद्ध संस्कृत में और अविकल रूपमे मिलते हैं, जैसे—'सत्यविष्णु, चन्द्रमित्र, धृतिशर्मा आदि। गुप्तकाल के बाद जब अपभ्रंश भाषा का प्रभाव बढ़ा तब लगभग ८ वीं शतीसे नामोंके स्वरूप ने फिर पलटा खाया। जैसे राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द का नाम 'गोइज्ज' मिलता है। १० वीं शतीके बाद तो प्रायः नामों का अपभ्रंश रूप ही देखा जाता है. जैसे नागभट्ट वाग्भट्ट और त्यागभट्ट जैसे सुन्दर नामोंके लिये नाहड, वाहड और चाहड ये अपभ्रंश रूप शिलालेखोंमें मिलते है। इस प्रकार के मध्यकालीन नामोंकी मूल्यवान सामग्री के चार स्रोत हैं—शिलालेख, मूर्ति प्रतिष्ठा लेख, पुस्तक प्रशस्तियां और साहित्य। चारों ही प्रकार की पर्याप्त सामग्री प्रकाशित हो चुकी है। मुनि पुण्यविजयजी द्वारा प्रकाशित जैन पुस्तक प्रशस्ति संग्रह मे और श्री विनयसागरजी द्वारा प्रकाशित 'प्रतिष्ठा लेख संग्रह' में अपभ्रंश कालीन नामोंकी बृहत् सूचिया दी हुई है।

बीकानेर के प्रतिष्ठा लेखोंमें आए हुए नाम भी उसी श्रृङ्खला की बहुमूल्य कडी प्रस्तुत करते हैं। इनकी भी क्रम बद्धसूची बननी चाहिए। इन नामोसे यह भी ज्ञात होता है कि कुमारी अवस्था मे स्त्रियों का पितृ-नाम भिन्न होता था किन्तु पतिके घरमें आने पर पतिके नाम के अनुसार स्त्री के नाम मे परिवर्तन कर लिया जाता था। जैसे—साहु तेजा के नामके साथ भार्या तेजल दे, अथवा साहु चापा के साथ भार्या चापल दे। फिर भी इस प्रथाका अनिवार्य आग्रह न था, और इसमे व्यक्तिगत रुचिके लिये काफी छूट थी। इन नामोके अध्ययन से न केवल भाषा सम्बन्धी विशेषताएँ ज्ञात हो सकेगी किन्तु धार्मिक लोक प्रथाओं पर भी प्रकाश पड सकता है। जैसे 'साहु दूला पुत्र छीतर' इस नाममें (लेख सख्या १६१६) दुर्लभ राजका पहले दुल्लह अपभ्रंश रूप और पुन देश-भाषासे उसका उच्चारण दूला हुआ। 'छीतर' नामसे ज्ञात होता है कि उसकी माताके पुत्र जीवित न रहते थे। देशी भाषामे 'छीतर' टूटी हुई टोकरी का वाचक था, ऐसा हेमचन्द्र ने लिखा है। जब पुत्रका जन्म हुआ तो माताने उसे छीतरी मे रखकर खींचकर घूरे पर डाल दिया, जहाँ उसे घरकी मेहतरानी ने उठा लिया। इस प्रकार मानों पुत्रको मृत्युके लिये अर्पित कर दिया गया। मृत्युका जो भाग बच्चेमे था उसकी पूर्ति कर दी गई। फिर उस बच्चे को माता-पिता निष्क्रय देकर मोल ले लेते थे, वह मानों मृत्युदेव के घरसे लौटकर नया जीवन आरम्भ करता था। इस प्रकार के बच्चों को 'छीतर' नाम दिया जाता था। अपभ्रंश मे 'सोल्लु' या सुल्ला' नाम भी उसी प्रकार का था। सुल्, धातु फेंकने के अर्थमें प्रयुक्त होती थी। हिन्दी फिक्कू खचेडू आदि नाम उसी परम्परा या लोक विश्वास के सूचक है। मध्यकालीन अपभ्रंश नामों पर स्वतन्त्र अनुसंधान की अत्यन्त आवश्यकता है। उसके लिये नाहटाजी ने इन लेखोमें मूल्यवान् सामग्री

महाराजाने कुपित होकर १००० आदमियोंकी सेनाका घेरा इनकी हवेलीके चारों तरफ डाल दिया जिससे इनका सारा परिवार काम आ गया इस सम्बन्धमें विशेष जाननेके लिए हमारी "युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि" पुस्तक देखनी चाहिए।

इसके पश्चात् महाराजा कर्णसिंहजीके समय कोठारी जीवणदास सं० १७०१ में पूगळ विजयके अनन्तर वहांके प्रबन्धके लिए रहे थे। महाराजा अनूपसिंहजीका मनसब (दिल्ली जाकर) दिलानेका उद्योग कोठारी जीवणदास और वैद् राजसीने ही किया था[1]। कोठारी नैणसीके इनके समयमें मंत्री होनेका उल्लेख विज्ञप्तिपत्रमें[2] आता है। सं० १७३६ में लाभवर्द्धनने लीलावती गणितकी चौपाई इन्हींके पुत्र जयतसीके अनुरोधमें बनाई थी जिसमें इन्हें राज्याधिकारी लिखा है। महाराजा अनूपसिंहजी की मृत्युके अनन्तर स्वरूपसिंहकी बाल्यावस्थाके कारण राज्यव्यवस्थाके सञ्चालनमें मान रामपुरिया, कोठारी नयणसी[3] के सहयोग देनेका उल्लेख बीकानेर राज्यके इतिहासमें पाया जाता है।

महाराजा सूरतसिंहके समय वैदों और सुराणों का सितारा चमक उठा। स० १८६० में चूरू पर दीवान अमरचन्दजी सुराणा व बजाजी मुल्तानमल के नेतृत्वमें सेना भेजी गई। वहां पहुंच कर इन्होंने २१०००) रुपये चूरूके स्वामीसे वसूल किये। सं० १८६१ में जाब्तार खां भट्टीने, जो कि भटनेर का किलेदार था, सर उठाया तो महाराजा ने अमरचन्दजी के नेतृत्व में ४००० सेना भटनेर भेजी। इन्होंने जाते ही अनूपसागर पर अधिकार कर लिया और पांच महीने तक घेरा डाले रहने से जाब्तारखां को स्वयं किला इन्हें सुपुर्द कर चला जाना पड़ा। इस वीरतापूर्ण कार्यके उपलक्ष में महाराजाने इन्हें पालकी की इज्जत देकर दीवानके पदपर नियुक्त किया। स० १८६५ में जोधपुर नरेश मानसिंह ने दीवान इन्द्रचन्द्र सिंघीके नेतृत्व में ८०००० सेनाके साथ बीकानेर पर चढ़ाई की तब राजनीतिज्ञ अमरचन्दजी सेना लेकर उल्टे आक्रमणार्थ जोधपुर गये और बड़ी बुद्धिमानी और वीरतासे जोधपुरी सेनाके माल-असबाव को लेकर बीकानेर लौटे। जोधपुरी सेना २ महीने तक छोटी-छोटी लड़ाइयां लड़ती हुई गजनेर के पास पड़ी रही। इसके बाद ४००० सेनाको लेकर जोधपुर से कोठा कल्याणमल आया। अमरचन्दजी उसका सामना करने के लिये ससैन्य गजनेर गये। उनका आगमन सुनकर जोधाजी कूच करने लगे पर अमरचन्दजीने उनका पीछा करके युद्धके लिए बाध्य किया और बन्दी बना लिया। सं० १८६६ में बागी ठाकुरोंका दमन कर अमरचन्दजी ने इन्हें कठोर दण्ड दिया। एक सांडय के विद्रोही ठाकुर भैरसिंह को पकड़ कर ८००००) रुपये जुर्माना किया। स० १८६६ में मैणासर के बीदावतों पर आक्रमण कर वहांके ठाकुर रतनसिंहको रतनगढ़ में पकड़ कर

१—रा ब पं गौरीशंकर हीराचन्द ओझा लिखित बीकानेर राज्यका इतिहास।

२—यह विज्ञप्तिपत्र सिंघी जैन ग्रन्थमालासे प्रकाशित विज्ञप्ति लेख संग्रहमें छपा है।

३—अनूप संस्कृत लाइब्रेरीमें आपके लिए लिखा हुआ एक गुटका है, जिसमें आपके पुत्रादिकी जन्मपत्रियां व स्वाध्यायार्थ अनेक रचनाओंका संग्रह है।

प्रयत्न किया। बीकानेरके दुर्ग-निर्माण एवं गवाड़ों (मुहल्लों) को मर्यादित कर बसानेमें उन्होंने बडी दूरदर्शितासे काम लिया। इन्होंने संधिविग्राहक और रक्षासचिव व सेनापति आदि पदोंको भी दक्षतासे संभाला। मंत्री कर्मसिंह राव लूणकरणजी के समय नारनौलके युद्धमें काम आये थे। राव जयतसीजीके समय मंत्री नगराजने शेरसाहका आश्रय लेकर खोये हुए बीकानेर राज्यको मालदेव (जोधपुर नरेश) से पुनः प्राप्त किया। उन्होंने अपनी दूरदर्शितासे शत्रुकी चढाईके समय राजकुमार कल्याणमल्लको सपरिवार सरसामें रखा और राज्यको पुनः प्राप्तकर बादशाहके हाथसे राव कल्याणमल्लको राजतिलक करवाया। मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रने राव कल्याणमल्लजीके दुसाध्य मनोरथ—जोधपुरके राजगवाक्षमें बैठकर कमलपूजा (पूर्वजोंको तर्पण) करने—को सम्राट अकबरसे कुछ समयके लिए जोधपुर राज्यको पाकर, पूर्ण किया। राव कल्याणमल्लने सन्तुष्ट होकर मंत्रीश्वरसे मनोवाञ्छित मागनेकी आज्ञा दी तो धर्मप्रिय मंत्रीश्वरने अपने निजी स्वार्थके लिए किसी भी वस्तुकी याचना न कर जीवदयाको प्रधानता दी और बरसातके चार महीनोंमें तेली, कुम्हार और हलवाइयोंका आरंभ वर्जन, "माल" नामक व्यवसायिक कर के छोड़ने एवं भेड़, बकरी आदिका चतुर्थांश कर न लेनेका वचन मागा। राजाने मंत्रीश्वरकी निष्पृहतासे प्रभावित होकर उपर्युक्त मांगको स्वीकार करनेके साथ विना मागे प्रीतिपूर्वक चार गांवोंका पट्टा दिया और फरमाया कि जबतक तुम्हारी और मेरी सतति विद्यमान रहेगी तब तक ये गांव तुम्हारे वशजोंके अधिकृत रहेंगे।

मत्रीश्वर कर्मचन्द्र सन्धि विग्रहादि राजनीतिमे अत्यन्त पटु थे। उन्होंने अपने असाधारण बुद्धि वैभवसे सोजत समियाणाको अधिकृत किया, जालौरके अधिपति को वशवर्त्ती कर अर्बुद-गिरिको अधिकृत कर लिया। महाराजा रायसिंह से निवेदन कर चतुरंगिणी सेनाके साथ हरप्पामें रहे हुए बलोचियों पर आक्रमण कर उन्हें जीता[१]। बच्छावत वंशावलीमें लिखा है कि मन्त्रीश्वरने शहरको उथल कर जाति व गोत्रोंको अलग अलग मुहल्लोंमें बसाकर सुव्यस्थित किया। रायसिंहजीके साथ गुजरातके युद्धमें विजय प्राप्त करके सम्राट् अकबरसे मिले। जब सम्राटने प्रसन्न होकर मनचाहा मागनेका कहा तो इन्होंने स्वयं अपने लिए कुछ भी न माग अपने स्वामी राजा रायसिंहको ५२ परगने दिलाए।

सं० १६४७ के लगभग महाराजा रायसिंहजी की मनोगत अप्रसन्नता जानकर मत्री कर्मचन्द्र अपने परिवारके साथ मेडता चले गए। इसके पश्चात् वैद मुहता लाखणसीजी के वंशज मुहता ठाकुरसीजी दीवान नियुक्त हुए। दक्षिण-विजयमें ये महाराजाके साथ थे, महाराजा ने प्रसन्न होकर इन्हें तलवार दी और भटनेर गांव बख्शीस किया[२]।

महाराजा सूरसिंहजीने मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्रके पुत्र भाग्यचन्द्र लक्ष्मीचन्द्रको बड़े अनुरोधसे बीकानेर लाकर दीवान बनाया, कई वर्ष तक तो वे यहां सकुशल रहे पर सं० १६७६ के फाल्गुनमें

१—कर्मचन्द मन्त्रिवश प्रबन्ध देखिए।

२—"ओसवाल जातिका इतिहास" ग्रन्थमें विशेष ज्ञातव्य देखना चाहिए।

महाराजा साहबने 'राव'का खिताब, गांव ताजीम, सिरोपाव आदि प्रदान किये। राव प्रताप मलजीका केवल बीकानेर में ही नहीं किन्तु जोधपुर, जयपुर और जैसलमेर आदिके दरबारमें भी अच्छा सम्मान था। इनको कई खास रुक्के भी मिले हुए हैं। राव प्रतापमलजी ने प्रताप सागर कुंआ प्रतापेश्वर महादेव, प्रताप बारी आदि बनवाये। महाराजा रतनसिंहजी स्वयं इनके घर पर गोठ अरोगने आते थे। महाराजा ने इनके ललाट पर मोतियों का तिलक किया था, इसीलिये ये 'मोतियों के आखा (चावल) वाले वैद कहलाते हैं'[1]।

महाराजा सरदारसिंहजी व डूंगरसिंहजी के राज्यकालमें मानमलजी राखेचा, शाहमलजी कोचर, मेहता जसवन्तसिंहजी, महाराव हरिसिंहजी वैद, गुमानजी बरड़िया, साह लक्ष्मीचन्दजी सुराणा, साह लालचन्दजी सुराणा, साह फतेहचन्दजी सुराणा, राव गुमानसिंह वैद, धनसुखदासजी कोठारी आदिने सैनिक, आर्थिक राजनैतिक आदि क्षेत्रोंमें अपूर्व सेवाएं की तथा इनमेंसे कई राज्यकी कौंसिलके सदस्य भी रहे। महाराजा गंगासिंहजी के राज्यकालमें मेहता मंगलचन्दजी राखेचाने कौंसिलके सदस्य रहकर राज्यकी सेवायें की। महाराजा डूंगरसिंहजीको महाराजा सरदारसिंहजी के गोद दिलवानेमें गुमानजी बरड़िया का प्रमुख हाथ था। इन्हें भी कई खास रुक्के एवं गांव आदि मिले हुए हैं।

महाराजा गंगासिंहजी के राज्यकालमें मंगलचन्दजी राखेचा के अलावा सेठ चांदमलजी ढढ्ढा सी० आइ० ई० रायबहादुर शाह मेहरचन्दजी कोचरने रेवेन्यु कमिश्नर रहकर, शाह नेमचन्दजी कोचर ने बड़े कारखानेमें अफसर रहकर खजानेमें शाह मेघराजजी खजान्ची मेहता लूणकरणजी कोचरने नाजिम रहकर, मेहता रतनचन्दजी कोचर एम० ए० एल० एल० बी० डिप्यूटी जज हाईकोर्ट ने राज्यकी सेवा की। बीकानेर राज्यकी सेवा करनेमें विद्यमान उल्लेखनीय व्यक्ति ये हैं—मेहता शिवचन्द्रजी कोचर रिटायर्ड अफसर जकातमहकमा, शाह सूजकरणजी कोचर अफसर बड़ा कारखाना, मेहता चम्पालालजी कोचर बी० ए०, एल० एल० बी० नायब अफसर कन्ट्रोलर आफ्प्राइसेज, सरदारमलजी भाटीयाल अफसर खजाना, बहादुरचंदजी सेठिया एम० एल० ए० पुर्णसिंहजी वैद रिटायर्ड अफसर देवस्थान कमेटी आदि इनके अतिरिक्त और भी कई ओसवाल सज्जन तहसीलदार लेजिलेटिव एसेम्बलीके सदस्य आदि हैं[2]।

बीकानेर नरेश और जैनाचार्य

राठौड़ वंशसे खरतर गच्छका सम्पर्क बहुत पुराना है। वे सदासे खरतरगच्छाचार्योंको अपना गुरु मानते आये हैं अत बीकानेर के राजाओं का खरतर गच्छाचार्यों का भक्त होना स्वाभाविक ही है। साधारणतया राजनीति में हरेक धर्म और धर्माचार्यों के प्रति आदर दर्शाना आवश्यक होता है अतः अन्य गच्छोंके श्रीपूज्यों एवं यतियोंके प्रति भी बीकानेर

---

1 राव प्रतापमलजी के वंशजों की बहीमें इसका विस्तृत वर्णन है।

2 अब बीकानेर राज्यका राजस्थान प्रान्तमें विलय हो गया है। इसमें श्रीयुत चम्पालालजी कोचर सिरदारचन्दजी कोचर, मंगलचन्दजी वैद आदि विभिन्न पदोंपर राजस्थान की सेवा कर रहे हैं।

फासी दी। इसी प्रकार सीधमुख आदिके विद्रोही ठाकुरों को भी दमन कर मरवा डाला। सं० १८७१ मे चूरूके ठाकुर के वागी होनेपर अमरचन्दजी ने ससैन्य आक्रमण किया और चूरू पर फतह पाई। इन सब कामोंसे प्रसन्न होकर महाराजा ने इन्हें रावका खिताब, खिलअत और सवारीके लिये हाथी प्रदान किया।

इनके पश्चात् इनके पुत्र केशरीचन्द सुराणाने महाराजा रतनसिंह के समय राज्यकी बड़ी सेवाएं की। इन्होंने भी अपने पिताकी तरह राज्यके बागियों का दमन किया, लुटेरों को गिरफ्तार किया। ये राज्यके दीवान भी रहे थे। महाराजा ने इनकी सेवासे प्रसन्न होकर इन्हें समय समय पर आभूषण, ग्राम आदि देकर सन्मानित किया। अमरचन्दजी के ज्येष्ठ पुत्र माणिकचन्दजी ने भी राज्यकी अच्छी सेवा की और सरदारशहर वसाया। माणकचन्दजी के पुत्र फतहचन्दजी भी दीवानपद पर रहे और राज्यकी अच्छी सेवाएं की।

वैद परिवार में मुहता अवीरचन्दजी ने डाकुओं को वश करनेमें बुद्धिमानी से काम लिया और वीकानेर राज्यकी ओरसे देहली के कामके लिए वकील नियुक्त हुए। सं० १८८४ में डाकुओंके साथ की लड़ाई मे लगे घावोंके खुल जानेसे उनका शरीरान्त हो गया। इसके पश्चात् मेहता हिन्दूमल ने राज्यकी वकालत का काम संभाला और वडी बुद्धिमानीसे समय-समय पर राज्यकी सेवाएं की। इन्होंने सं० १८८८ मे महाराजा रतनसिंहजी को बादशाह से 'नरेन्द्र (शिरोमणि)' का खिताब दिलाया, भारत सरकार को सेनाके लिए जो २२०००) रुपये प्रति वर्ष दिये जाते थे, उन्हे छुडवाया, एवं हनुमानगढ़ और बहावलपुर के सरहदी मामलों को बुद्धिमानी से निपटाया। सं० १८९७ मे महाराजा रतनसिंहजी व महाराणा सरदारसिंहजी ने इनके घरपर दावतमें आकर इनका सम्मान बढाया। स्व० महाराजा श्री गंगासिंहजी ने आपकी सेवाओं की स्मृतिमें 'हिन्दूमल कोट' स्थापित किया है। इनके लघु भ्राता छौगमलजीने सरहदी मामलों को सुलझा कर राज्यकी बड़ी सेवाएं की।

वेदों और सुराणोंमे और भी कई व्यक्तियोंने राज्यके भिन्न-भिन्न पदोंपर रहकर बडी सेवाएं की। जिनके उपलक्ष मे राज्यकी ओरसे उन्हें कई गांवोंकी ताजीमें और पैरोंमे सोनेके कड़े मिलना, राज्यकी ओरसे विवाहादि का खर्च पाना, मातमपुरसी मे महाराजाका स्वयं आना आदि कार्यों द्वारा सम्मानित होना उनके अतुलनीय प्रभावका परिचायक है। हिन्दूमलजीको व उनके पुत्र हरिसिंहजीको भी 'महाराव' का खिताब राज्यकी ओरसे प्रदान किया गया। हरिसिंहजी ने भी राज्यकी ओरसे वकालत आदिका काम किया। इसी वैद परिवारके वंशज राव गोपालसिंहजी कुछ वर्ष पूर्व तक आबूमें बीकानेर की ओरसे वकील रहे हैं। ये हवेलीवाले वैद कहलाते हैं। इस परिवार को ताजीम आदि-गांव मिले हुए है।

बीकानेर के वैद परिवारमे 'मोतियों के आखावाले' वैदोंका भी राज्यकी सुव्यवस्था मे अच्छा हाथ रहा है। इस परिवारके प्रमुख पुरुष राव प्रतापमलजी व उनके पुत्र राव नथमलजी ने महाराजा सूरतसिंहजी व रतनसिंहजी के राज्यकालमे अच्छी सेवायें की। इन पिता-पुत्रको भी

(१)

स्वस्ति श्रीमहाराजाधिराज महाराज श्रीमत्सूर्यसिंहप्रभुवर्याणां श्रीमज्जिनदेवभजनायातसकल जिनेन्द्र ज्ञानवैभवेषु तृणीकृतजगत्सु सकल जैनाभिवंदितचरणेषु श्रीपूज्यजिनचन्द्रसूरषु वंदनावलि-निवेदकमद पत्रं विशेषस्तु पूर्व सर्वदैव भवदीय करिपत् यतिवर अस्माकं सार्धे स्थितः इदानीमत्र भवदीयः कोपि नास्ति भवद्भिरपि तूष्णीं स्थितमस्ति तत्किमिति अत पर एक उपाश्रयः पांचाक्य अथवा अयतसी एतयो मेप्ये य करिष्यदायाति सत्वर प्रेषणीय चातुर्मास्य अत्रागत्य करोति यथा विधेयं अस्मिन्नर्थे विलंबो न विधेय किमधिक मिती पोष शु० ८

(२)

श्री लक्ष्मीनारायणश्री

स्वस्ति श्री मन्महाराजाधिराज महाराज श्रीमत्सूर्यसिंह प्रभुवर्याणां श्रीमत्सकल कार्य करण निपुणता पराङ्मुख वैराग्यपवमान संशोद परावद वशीकार सद्र वैराग्य भोग्य कैवल्येषु विषम विषय दोष दर्शन दूषित प्रपंच रचना चुलुकी करण कुम्भ समय विभवेषु समस्त विद्या विद्योतमान विग्रहेषु श्री भट्टारक जिनचन्द्रसूरिषु वन्दनामणाम सुप्रकोर्य ज्ञापिक । शमिह श्री रमेश करुणा कटाक्ष सन्दोहैः विशेषस्तु माला श्रीमद्भिः प्रेषिता सा अस्मत्करगता समभनि अन्यदपि यत्समीचीनं वस्तु असमद् योग्यं भवति चेद्वश्यं प्रेषणीयं । अन्यच्च श्रीमता प्रावरणाय वस्त्रं वापितमस्ति तदूमाल किं च इन्द्रमाण मुद्रिय भवद्विषयिकोर्त्ता लिखिता संति सोप्य स्मत्पत्रानुसारेण श्रीमता समाधानं करिष्यति । श्रीमता महत्वं मानोन्नतिं च विधास्यति । यथा च श्रीमदीय करिचरकार्म्ये विशेषो ज्ञाप्य । भा० व० ३

महाराजा सुजाणसिंहजी भी श्रीपूज्य श्रीजिनसुखसूरिजी व तत्कालीन विद्वान यतिवर्य्यों को बड़ी श्रद्धासे देखते थे। हमारे संग्रहमें आपके श्री जिनसुखसूरिजी को दिये हुए दो पत्र हैं जिनकी नकल नीचे दी जा रही है :—

श्री लक्ष्मीनारायणो जयति

श्रीमत्तप शाल विशाल पाथ सौजन्य धन्य धृ ति कीर्त्तिभाज । प्रताप संतापितपो विधाता राजन्ति राजपति वृन्द राजाः ॥१॥ पद्मारती सुजिनसौख्यसूरि नामान आत्मसुख शोभमाना । श्री धर्मसिंदे परित पुराणै मुनीशमुख्यैः प्रसरन्मनीषे ॥२॥ श्री राजसागरे विद्वद्हंस सेवित सागरैः । अन्वे सत्कविभि शास्त्र कला संक्रम कोविदे ॥३॥ त्रिभिर्विशेषकम् ।

स्तुवित महिर्त प्रवर्नमुवा मत महीश सुजाणनरेश्वरः ।
सपरिवार सुमन्त्रि सुतैर्हितप्रपति संततपत्तवबधाप्यताम् ॥४॥
आर्या :—सदा स्वीय सुसेवकानां कार्यो परिष्टात्प्रचुरानुकम्पा ।
संभावनीया सरसामुदा सुपत्रस्व हृदि स्नेह सुधा प्रपूर्णैः ॥५॥
कुशल मत्र सदवाहि वर्त्तते शुभवतां भवता मनुकम्पया ।
मनसि कामयते भवतां हित भविक मेव सुसेवक सज्जन ॥६॥

नरेशोंका उचित आदर भी सब समय रहा है। अपनी व्यक्तिगत सुविधाओं एं अन्य कई कारणोंसे भी उन्होंने कई यतियोंको अधिक महत्व दिया है। यहाँ इन सब बातोंका संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

बीकानेर नरेशोंमे सर्वप्रथम महाराजा रायसिंहजी के युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजीके भक्त होनेका उल्लेख पाया जाता है। सं० १६३६ मे मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र की प्रार्थनासे सम्राट अकबरके पाससे सीरोहीकी १०५० जैनमूर्त्तिये आप ही लाए थे। स० १६४१ मे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजीका लाहोरमें मंत्री कर्मचन्द्रजी ने युगप्रधान पदोत्सव आपकी आज्ञा प्राप्त करके किया था इसका उल्लेख आगेके प्रकरणमे किया जायगा। इस उत्सवके समय कुंवर दलपतसिंह के साथ महाराजाने कई ग्रन्थ सूरिजी महाराज को वहरा कर उनके प्रति अपनी आदर्श भक्तिका परिचय दिया था। इनमें से अव भी कई प्रतियां भण्डारोंमे प्राप्त है। कविवर समयसुन्दरजी आचार्यश्री के प्रमुख भक्त नरेशोमे आपका उल्लेख इस प्रकार करते है—

"रायसिंह राजा भीम राउल सूर नइ सुरतान।
वड-वडा भूपति वयण मानै दियै आदर मान। गच्छपति०।"

उनके पट्टधर श्रीजिनसिंहसूरिजी का भी महाराजा से अच्छा सम्बन्ध था। इसके पश्चात् महाराजा करणसिंहजी के दिए हुए बड़े उपासरे आदि के परवाने पाये जाते हैं। विद्याविलासी महाराजा अनूपसिंहजी का तो श्रीजिनचन्द्रसूरिजी एवं कविवर धर्मवर्द्धन आदिसे खासा सम्बन्ध था। कविवर धर्मवर्द्धनजी ने महाराजा के राज्याभिषेक होनेके समय अनूपसिंहजीका राजस्थानी भाषामें गीत बनाया था। श्री जिनचन्द्रसूरिजीने अनूपसिंहजी को कई पत्र दिये थे जिनमें से कुछ पत्रोंकी नकल हमारे संग्रहमे है[1]। महाराजा अनूपसिंहजी के मान्य यतिवर उदयचन्द्रजी का "पाण्डित्य दर्पण" ग्रन्थ उपलब्ध है। महाराजा अनूपसिंहजी के पुत्र राजकुमार आनन्दसिंहजीने बहुत आदरसे खरतर गच्छके यति नयणसीजीसे अनुरोध कर सं० १७८६ विजयादशमीको भर्तृहरिकृत शतकत्रयका हिन्दी गद्य-पद्यानुवाद कराया जिसकी प्रति हमारे संग्रहमें व "अनूप संस्कृत लाइब्रेरी" मे विद्यमान है। स० १७५२ मे महाराजा अनूपसिंहजी ने सगरगढसे खरतर गच्छीय संघको श्रीपूज्यजी की भक्ति करने के प्रेरणात्मक निम्नोक्त पत्र दिया :—

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री अनूपसिंहजी वचनात् महाजन खरतरा ओसवाल जोग्य सुप्रसाद वांचजोजी तथा श्रीपूज्यजी श्री वीकानेर चौमासे छै सो थे घणी सेवा भगत करजो काण कुरब राखजो सं० १७५२ आषाढ़ सुदि १ मुकाम गढ सगर।

महाराजा अनूपसिंहजी समय-समय पर श्री जिनचन्द्रसूरिजी को पत्र दिया करते थे जिनमेंसे ७ पत्र हमारे संग्रहमें विद्यमान है जिनकी नकल यहाँ दी जाती है :—

१—इन पत्रोंकी नकलें हम जैन सिद्धान्त भास्करमें प्रकाशित कर चुके हैं।

खवास थार्णवराम रौ नमस्कार वाचिज्यौ अपरं च पांडे पेमरामजी रौ नमस्कार अवधा रिज्यो। गोसाइ विष्णुगिरि को वन्दन अवधारिजो कृपा स्नेहो राखणीयौ। अत्र भवता मत्र भवतामा लिगिमियेच्छुमिरभिष्यानं विधीयते स्वामिः।

॥ संवत्सरारश शताधिके कोनाशीति (१७७६) समे माघासित पक्ष दुर्गा तिथाविदं लिपि कृतं पत्रम्। श्री : ।

पत्र महाराजान्तिके स्वरयालिखितं तसोत्रा तंत्र निरस्य।

इनके पश्चात् महाराजा जोरावरसिंहजी उत्तराधिकारी हुए. ये भी अपने पूर्वजों की भांति खरतराचार्यों के परम भक्त थे। उन्होंने नवहर से निम्नोक्त पत्र बीकानेर में स्थित यति लक्ष्मी चन्द्रजी को दिया :—

स्वस्ति श्रीमत नियत्तयाऽप्रमित महिमानं परमात्मानमानम्य मनसा श्री मन्महाराजजोरावर सिंहो विक्रमपुर वासस्थ यति लक्ष्मीचन्द्रेषु पत्रमुपढौकयते स्वकुशलोदंतमुदाहरति तत्रत्यं च कामयतेऽथ भवद्भि विसृष्टयति प्रकृष्टोत्कृष्ट गुण निकर सृष्टि शिष्टे सदन मत्करणे मामकीने भवत्संगममिव शर्म समुत्पादय दूप सत्पद्यरलंकृतं शास्त्र शंसि नयन गोचरी कृत्य सत्पद योजन कला कुशलान् भवतोऽत्री गणम् तद्गत रहस्य च दवीयद्गमन सर्व कर्णे माह मानीय चिन्ता पारावारे म मनो निमग्नं तथात्र भवतां स्थिति रभि विरच्येतदि कहि विद्वानयो स्संगममप्यमविरयत् साम्प्रतंतु तद् व्यवधानितं दृश्यते परं पत्र प्रत्यर्पणे दवीयसि स्थिटता निरालस्येन भवतावतितव्यं तथोप प्राप्त समे मत्पाश्वासे वासस्त प्रत्यह भवितव्यं मन्तव्यं मिति च मिति मधु कृष्ण त्रयोदशी कमवाप्या ॥

इन महाराजाने उपर्युक्त यति लक्ष्मीचन्द्रजी के गुरु यति अमरसीजी[1] की सुख सुविधा के लिए जो आज्ञापत्र भेजा उसकी नकल इस प्रकार है :—

छाप—

॥ महाराजाधिराज महाराजा श्री जोरावरसिंहजी वचनात् राठौड़ मीयासिंहजी कुशालसिंहजी मुंहता रघुनाथ योग्य सुप्रसाद वांचजो लिया सरसे में जती अमरसीजी छै सु याने काम काज करै सु कर दीज्यो ऊपर (सरो) घणो राखज्यो फागुण सुदि ४ सं० १७९६

इसके पश्चात् महाराजा गजसिंहजी का भी जैन यतियों से सम्बन्ध रहा है। उपाध्याय हीरानन्दजी के महाराजा को दिये हुए पत्र की नकलका अर्द्धभाग हमारे समक्ष है। उनके पुत्र महाराजकुमार राजसिंह जो पीछे से सं० १८४४ में बीकानेर की राजगद्दी बैठे थे, उन्होंने सं० १८४० में श्रीपूज्य श्रीजिनचन्द्रसूरिजी को एक पत्र दिया जिसकी नकल इस प्रकार है :—

१—ये उदयतिलक जी के शिष्य थे आपका दीक्षा नाम अमरविजय था। आप सुकवि थे, आपकी बड़ी रचनाएं उपलब्ध है। इन्हीं की परम्परामें कुछ वर्ष पूर्व स्वर्गवासी हुए उपाध्याय श्री जयचन्द्रजी यति थे।

अत्रोचित कार्य वरं सु पत्रेऽभिचार्य्य चोत्सार्य्य समग्र शंकाम्।
विलिख्य संप्रेषणतो स्मदीये स्वान्ते भृशंतोष भृतो भवन्तु ॥७॥
अथान्येषा श्रीमतां सेवकाना प्रीतिपूर्वं प्रणति पद्यानि लिख्यन्ते।
खवासः सुपद्येन चानन्दरामोऽलिखत् संनतिं सन्नतः सद्दलेस्मिन्।
पर प्रेम पूरेण पूरेणुकाद्राक्पुनः पाद शुद्वा सु सपादनीया ॥८॥

अतिशय मृदुभावाच्छोभने प्रीति पत्रे लिखति च बुध पाण्डे प्रेमरामः प्रणामम्।
निज हृदि इति कृत्वा सेवकः शोभनस्स्यादयमपि मयि शश्वत्सुप्रसादो विधेयः ॥९॥
नृपमनुगतो जात्या यो सौश्रितः पडिहारता लिखति च दले लक्ष्मीदासोलसल्ललिताक्षरैः।
विमल मनसा प्रह्वी भावो ममाप्यवधार्य्यतां स्वहृदिचमुदाज्ञेयः स्वामिन्सदा निज सेवकः॥१०॥

संवन्नवर्षि स्वर सोम युक्ते मासे शुभे हैमन मार्गशीर्षे।
दलेऽमले पञ्चमके तिथौ सद्दिने रवौ विष्णुगिरि विपश्चित् ॥११॥
नृपाज्ञया काव्य वरैः पलाशं यतीश योग्य सविलासमेतत्।
लिपी चकार क्रमतोत्र पत्रे सर्वैर्हि तत्सनतयोवधार्याः ॥१२॥ युग्मम्।

अन्योपियोमत्स्मारको भवेत्तं प्रति प्रणतिर्वक्तव्या। अत्राहर्दिवमस्मदादिभिर्भवदीय स्मरण मनुष्ठीयतेऽलं विदुषा पुरः प्रचुर जल्पनेन। यतिवर नयनसिंहान् प्रति पुनरभिवादये।

श्रीः। श्रीः। श्रीः।

(२) श्री रामो जयति तराम्म्

स्वस्ति श्रीमत्सकल गुण गण गरिष्ठ विशिष्ट वरिष्ट विद्या विद्योतिताना षद्भारती भाना च्छादिताज्ञान तिमिर विभाताना भ्राजमान भूरि भूमीश पाणि पल्लव सपल्लव पादपद्माना विविधोत्तम मुकुटमणि निकरातप नीराजित चरण कमलानामनेक सेवकलोक वृन्द मौलि स्तवक स्तुतार्चित क्रम युगलानां विविध कीर्ति मूर्त्ति संमोहित भूमडलाखण्ड तलाना विमल कला-कलित ललित मतिमत्पुरःसराणां नाना यतिवर निकर निषेवित पूर्वापर पार्श्व भागाना श्री वंदारु यतीश वृन्द वृन्दारकेन्द्राणाम्म्म् श्री श्री श्री श्री श्री जिनसुखसूरीणां पादपद्मोचितंपत्रमदः श्री विक्रम-पुरतः प्रेषितवंत श्रीमन्महाराजाधिराज महाराज श्रीसुजाणसिंहास्तदनारताहर्दिव प्रणति तयोऽवधार्या परा प्रीतिः पार्या नवरतानुकम्पा सपालित तराग संदोहा कार्या। अत्रत्या. समाचाराः श्रीमता सदा सानुग्रह दृष्ट्या विशिष्ट शुभ युताः श्रीमतास्मदत्र भवता सर्वदा सुख सेवधि भूता भूतयो भवंत्विति नित्यं मन्यामहे। भवंतः पूज्या स्था स्मदुपरि सर्वदा कृपा रक्षणतो-धिका रक्षणीया। अत्रोचितं कार्य जातं पत्रेलिखित्वा प्रेषणीयं। ।श्री.॥

चौपई ॥ सबगुण ज्ञान विशेष विराजै, कविगण ऊपरि घन ज्यों गाजै
धर्मसीह धरणीतल मांही, पंडित योग्य प्रणति दल तांही ॥ १ ॥
दोहा—गुणसागर गणि प्राज्ञ पणि पंडित जोतिष हीर।
अवर कलायुत राज कवि सागर राज गभीर ॥ १ ॥

प्रदर्शित किया जिसका श्रीमद् स्वय अपने पत्रमें—जो कि जेसलमेरमें सुंहता जोरावरमलको दिया गया था—इस प्रकार लिखते हैं—

श्री लालचन्दजी साहिबांरे कथन सु करने म्हांरो पिण मनसोबा हुवो जेसलमेर रो आदेश हुवे पिण सर्वसरे सु करने जेसलमेर रो ठहिरायो इणां रो कहणे सु म्हे पिण इठेहीज आवणो ठहरायो। राजाधिराज काती वदि १ रे दिन को० भीमराज हस्तू मने इसो फुरमायो एक तू हें इने वस्तु मांगसु सो जरूर मने देणी पड़सी। मैं मा कइ मैं कांगे अने आप फर मांगसी पछे काती सुदि १० रे दिन हजूर पधार्या जड़ा रहि गया विराजे नहीं जदमैं अरज कीनी महाराज विराजे क्यूं नहीं जद फुरमायो हुं मांगु सो मने दे तो बेसुं। जद मैं अरज करी साहिब फुरमावो सो हाजर जद फुरमायो तू अठे सुं विहार रा परणाम करे छे सो सर्वथा प्रकार विहार कांई करण देसु नहीं। जद मैं अरज कीनी हूं तो बीकानेर इणहीज कारण आयो छो सो मने बीस बरस उपरंत अठे हुय गया सो म्हांरी चिट्ठी आज तांई कोई नीकली नहीं जद फुरमायो म्हांरो ह पुण्य छे। जिण सुं म्हारा विहारा रा परणाम हुवा छे सो एकवार फलोधी जासु सो मैं आठवार अरज करी पर न मानी उपरत मैं कह्यो साहिबांरी सीख बिना कोई जावूं नहीं जद विराज्या। पछे ओर वातां घड़ी ४ तांई वतलाई उठतां जड़ा रहि गया फेर फुरमायो जो फेर बेठ जाई जद मैं अरज कीती साहिबां री सीख बिना कोई जाऊ नहीं। पछे आप पधार्या। सो माहरो दाणो पाणी बलवान छे तो एकवार तो इण वात में फेर क्येक्युं पछे जिसो दाणो पाणी इति सत्यम्"

इस पत्रसे स्पष्ट है कि महाराजाके आग्रहसे श्रीमद् बीकानेरमें ही रुक गये थे। इस पत्रके लगभग ८ वर्ष पश्चात् श्रीमद्का स्वर्गवास हुआ था। श्रीजिनहर्षसूरिजीके पट्टपर श्रीजिनसौभाग्यसूरिजीको महाराजा रत्नसिंहजीने ही पाट बैठाया था, व जयपुर गादीके श्रीजिनमहेन्द्रसूरिजी से गच्छभेद होने पर आप श्रीजिनसौभाग्यसूरिजीके पक्षमें रहे थे। इन्होंने गद्दी दृढ़ताके साथ अपने पक्षको प्रबल कर श्रीपूज्यजीके मान-महत्त्वको बढ़ाया। महाराजाके एक परवानेकी नकल यहां दी जाती है।

छाप श्री रामजी

"श्री दीवाण वचनात् बड़े उपासरे रे श्रीपूज्यजी श्री श्री १०८ श्री सौभाग्यसूरजीने गुरु पदवी देय दीवी छै सु बड़े उपासरे री पीढी सु मरजाद रा परवाणा वा छाप रा कागद सीव रा वा सामग्री रा भरणे रा कर दिया छै तिके परवाणा मुजब यही छै ओर नया मरजाद मों बांध दीवी छै बड़े उपासरे री साध साधवींमें चूक पड़ जावे जण रो हुसमण मां सु अरज करे ते सुणे नहीं श्रीपूज्यजी उवां ने दण्ड प्रायश्चित देर सुध कर लेसी कवास श्रीपूज्यजी री इच्या नहीं मानसी आप मुराद वेसतां फेर उवां ने परस्पर समझासी समझयां आगसी नहीं तो जद दरबार सुं अरज करासी जे साध साधवी म्हारी इच्यामें नहीं चाले छे आप मुराद वेवे छै थारा दरबार सुं बाने वठाय सिन्ना देसी थार पा श्रीपूज्यजी नै कवासी अम आपरी इच्या जोवंगा नहीं जोवगा तो जिन इच्या रो लोपी हुवां थारां अरज कर जोवासी ओर साध साध्वी सहरमें भगवान रो मींदर

श्री लक्ष्मीनारायणजी भगत राजराजेश्वर महाराजा शिरोमण माहाराजाधिराज माहाराज कुवार श्रीराजसिंहजीस्य मुद्रका ।

श्रीरामजी

॥ स्वस्ति श्री जंगम जुगप्रधान भट्टारक श्री जिणचन्दसूरिजी सूरेश्वरान् महाराजाधिराजा म्हाराज म्हाराज कुंवार श्री राजसिंघजी लिखावतु निमस्कार वांचजो अठारा समाचार श्री जीरे तेज प्रताप कर भला छै थाहरा सदा भला चाहीजै अप्रच थे म्हारे पूज्य छौ था सिवाय और कोई बात न छै सदा म्हासू कृपा राखौ छौ जिणसुं विशेष रखाजो और थे चौमासो ऊतरिया सताब वीकानेर आवजो म्हानुं थासुं मिलणरी चाहा छै अठारी हकीकत सारी गुरजी तेजमाल नाहटै मनसुख रे कागद सुं जाणजो सं० १८४० रौ मिती काती वद १ मुकाम गाव देसणोक ऽ ऽ

१ जंगेम जुगे प्रध... जिणचन्दसूरजी सूरेश्वरान्।

महाराजा सूरतसिंह जैनाचार्यों व साधु-यतियोंके परम भक्त थे। श्रीमद् ज्ञानसारजी को तो आप नारायण-परमात्माका अवतार ही मानते थे। उनको दिये हुए आपके स्वयं लिखित पत्रों में से २० खास रुक्के हमारे संग्रहमे हैं, जिनमें श्रीमद्के प्रति महाराजाकी असीम भक्ति पद पद पर झलक रही है पाठकोंकी जानकारीके लिए दो एक पत्रोंका अवश्यक अश यहां उद्धृत किया जाता है :—

"स्वस्तिश्री सर्व ओपमा विराजमान बावैजी श्री श्री श्री श्री श्री १०८ श्री नारायण देवजी सुं सेवग सूरतसिंहरी कोड़ एक दण्डोत नमोनारायण वन्दणा मालुम हुवै अप्रंच कृपापत्र आपरौ आयौ वाचिया सु बड़ी खुशवखती हुई आपरे पाये लागां दरसण कियां रौ सौ आणंद हुवो आपरी आज्ञा माफक मनसा वाचा कर्मणा कर कही बातमें कसर न पड़सी आपरी इग्या माफ (क) सारी बात रो आणंद खुसी छै। नारायण री आग्यामे फेर सन्देह करसी तौ बाबाजी ऊतो नारायण रे घर रो चोर हराम हुसो जैरो अठे उठै दोयां लोकां बुरो हुसी वैनै पछै त्रिलोकीमें ठौर न छै आपरो सेवग जाण सदा कृपा महरवानी फुरमावै छै जैसु विशेष फुरमावणरो हुकम हुसी दूजी अरज सारी धरमैनुं कही छै सु मालुम करसी सं० १८७० मिती मिगसर सुदि ९"

"आपरो दरसण करसुं पाए लागसुं ऊ दिन परम आणदरो नारायण करसी"

"आप इतरै पहला कठैइ पधारसी नहीं आ अरज छै। दूजी तरह तौ सारा मालम छै सेवगटावररी तो सरम नाराय (ण) नु वा आपनु छै हूतौ आपथका निचिंत छु"

"आपरै उबारिया हमे उबरसु"

महाराजा सूरतसिंहजी की भाति उनके पुत्र महाराजा रतनसिंहजी जैनाचार्यों व यतियोंके परम भक्त थे। एक बार ज्ञानसारजी महाराज जेसलमेरके महारावलजीके बार-बार आग्रह करने पर वहा जानेका विचार करते थे तब महाराजाने उन्हें रोकनेके लिए कितना भक्तिभाव

विशेष प्रकाश नहीं डाला जा सका। कँवला गच्छ और पायचन्द गच्छके श्रीपूज्यादि से राजाभक्ति सम्बन्धके विषयमें भी हमें कोई सामग्री नहीं मिली अत अब केवल लौंका गच्छकी पट्टावली में उनके आचार्यों के साथ राजाओं के सम्बन्ध की जो बातें लिखी है, वे संक्षेप से लिखते हैं —

नागौरी लुंका गच्छके स्थापक आचार्य हीरागररूपजी सं० १५८६ में सर्व प्रथम बीकानेर आये। बोरड़िया श्रीचन्दजी की कोटड़ीमें वे ठहरे। इसके परचात् इस गच्छका यहां प्रभाव जमने लगा। आचार्य मघारंगजीसे महाराजा अनूपसिंह मिले थे। औरङ्गाबाद के मार्गवर्ती ओर ग्राममें मिलने पर महाराजा को सन्तति विषयक चिन्ता देख कर इन्होंने कहा था कि आपके ८ कुंवर होंगे, उनमें दो बड़े प्रतापी होंगे। महाराजा अनूपसिंहजीने अपने कुंवरोंकी जन्मपत्री क सम्बन्धमें सं० १७५२ में खास रुक्का भेज कर पुछवाया। और महाराजाकी मृत्युके सम्बन्धमें पूछने पर इन्होंने स० १७५५ के ज्येष्ठ सुदि ९ को देहपात होनेका पहिले से ही कह दिया था। स० १७५५ में सुजाणसिंहजी को २४ महीनेमें बीकानेर का राजा होनेका कहा था और वैसा ही होने पर इनका राज्यमें प्रभाव पड़ने लगा। महाराजाने इनके प्रवेशके समय राज प्रधान मन्दिर लक्ष्मीनारायणजी से सम्म भेजा था। इनके पट्टधर जीवणदासजीने सं० १७७८ में महाराजा से अपने दोनों उपाश्रयका परवाना प्राप्त किया। सं० १७८४ के आसपास महाराजा सुजाणसिंहजी के रसोली हो गई थी औषधोपचार से ठीक न होने पर श्रीपूज्यजी भटनेरसे बुलाए गए और इन्होंने मन्त्रित भस्म दी जिससे व रोगमुक्त हो गए। महाराजा रत्नसिंहजीने चांदीकी छड़ी व खास रुक्का भेज कर श्रीपूज्य लक्ष्मीचन्दजी को बीकानेर बुलाया। सं० १७८९ ६० में भी महाराजा श्रीपूज्यजीसे मिले और उन्हें खमासमण (विशेष आमन्त्रपूर्वक आहार बहराना) दिया।

बीकानेरमें ओसवाल जातिके गोत्र एवं घरोंकी संख्या

बीकानेर बसनेके साथ साथ ओसवाल समाजकी यहां अभिवृद्धि होने लगी। बच्छावतों की ख्यातके अनुसार पहले जहां जिसे अनुकूलता हुई बस गये और मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्रके समय तक पूर्व यहां की आबादी अच्छे परिमाणमें हो गई थी इससे उन्होंने अपनी दूरदर्शिता से शहरको व्यवस्थित रूपमें बसानेका विचार किया फलतः मन्त्रीश्वरने नवीन विकास योजनाके अनुसार प्रत्येक जाति और गोत्रोंके घरोंको एक जगह पर बसाकर उनकी एक गुवाड़ प्रसिद्ध कर दी। इस प्रकारकी व्यवस्थामें ओसवाल समाज २७ गुवाड़ोंमें विभक्त हुआ जिनमें से १३ गुवाड़ें खरतर गच्छ एवं प्रधान मन्दिर श्रीचिन्तामणिजी को और १४ गुवाड़ें उपकेश (कवला) गच्छ और प्रधान मन्दिर श्रीमहावीरजी को मान्य करती थी इन २७ गुवाड़ोंमें पीछेसे गोत्रों आदि का काफी परिवर्तन हुआ और एक-एक गुवाड़में दूसरे भी कई गोत्र बसने लग गये जिनका पूरा आभास लगभग ५० ६० वर्ष पूर्वको लिखित हमारे संग्रहस्थ १३ १४ गुवाड़के (मोहल्लों को) विगत (ब्योरे) से होता है उसकी नकल यहां दी जा रही है।

करासी वा गावमें करासी तारे श्री दरबार रो हुकम छै फेरु सु अरज करावण रो काम नहीं मास १ रु० १) चनण केसर धूप दीप रो दीया जासी जिके दिन सु मिंदर कराया जिके दिन सुं लेखो कर दिराय देसी और वड़े उपासरे री सीरणी री मरजाद वांध दीवी छै। सो राज रो दोखवारी वा० लणायत सुं डरनो वा और गुनह वालो मुरादी सहूकार और दी कोई दुजो उपासरै शरणै जाय वेठसी तेनै श्री दरवार सु वा० लंणायत न उठासी। उठासी तेनै दरवार खिजा देसी और श्री वीकानेर रो वसीवात सहूकार वा० दुजी पटवा श्रीपूज कीया है ते ने न मानसी जो कोई मानसी तारा श्री दरवार और किसी नै वी मानणो पूरो साबित हुय जासी तो वानै खिजा दी जासी इये मरजाद मेटण री कोई चाकर अरज करसी तो परम हरामखोर हुसी इयैमें कसर नहीं पड़सी म्हारो वचन छै। द० मुंहतो लीलाधर सं० १८ ६७ मीती माघ सुद १३।

महाराजा सूरतसिंहजी और रत्नसिंहजी अनेक वार श्रीमद् ज्ञानसारजी[1] के पास आया करते थे। सं० १८८६ के पत्रमे महाराजा रत्नसिंहजीने श्री पूज्यजीको लिखा है

"थे म्हांहरा शुभचिंतक छो। पीढिया सुं लगाय था सवाय और न छै।"

महाराजा सूरतसिंहजीका जीवराजजीको दिया हुआ खास रुक्का हमारे संग्रहमे है। उन्होंने अमृतसुन्दरजी को उपाश्रय के लिए जमीन और विद्याहेमजी को उपाश्रय वनवाकर दिया था, जिनके शिलालेख यथास्थान छपे है। यति वसतचन्दजी को महाराजा के रोगोपशांति के उपलक्षमे प्रतिदिन ।।) आठ आना देनेका ताम्रपत्र वड़े उपाश्रय के ज्ञानभंडारमे है। महाराजा दादासाहब के परम भक्त थे। उन्होंने नाल ग्राममे दादासाहब की पूजाके लिए ७५० वीघा जमीन दान की थी जिसका ताम्रशासन वड़े उपाश्रयमे विद्यमान है। महाराजा सरदारसिंहजी गौड़ी पार्श्वनाथजी मे नवपद मंडलके दर्शनार्थ स्वयं पधारे और ५०) रुपया प्रति वर्ष देनेका फरमाया जिसका उल्लेख मन्दिरोंके प्रकरणमें किया जायगा। जैन मन्दिरों की पूजाके लिए राजकी ओरसे जो सहायता मिलती है उसका उल्लेख भी आगे किया जायगा।

महाराजा सरदारसिंहजीका भी जैनाचार्यो के साथ सम्बन्ध चालू था। उनके दिया हुआ एक पत्र श्रीपूज्यजीके पास है। महाराजा डूगरसिंहजी ने मुनिराज सुगनजी महाराजके उपदेश से शिवबाड़ीके जैन मन्दिरका निर्माण करवाया था। महाराजा गंगासिंहजीने जुविलीके उपलक्षमे श्री चिन्तामणिजी और श्री महावीरजीमे चाँदीके कल्पवृक्ष बनवाकर भेंट किये थे। खरतर गच्छके श्रीपूज्योंको राजकी ओर से समय-समय पर हाथी, घोडा, पालकी, वाजित्रादि, लवाजमा तथा उदरामसर, नाल, आदि जानेके लिए रथ भेजा जाता है। श्रीपूज्यजीकी गद्दी नशीनीके समय महाराजा स्वयं अपने हाथसे दुशाला भेंट करते रहे है।

खरतर गच्छकी वृहद् भट्टारक शाखाके श्रीपूज्योंका वीकानेर महाराजाओं से सम्बन्ध पर ऊपर विचार किया गया है। खरतर गच्छकी आचार्य शाखाके श्रीपूज्यों एवं यतियोंकी भी राज्यमें मान मर्यादा और अच्छी प्रतिष्ठा थी पर इस विषयकी सामग्री प्राप्त न होनेके कारण

१—आपके सम्बन्धमें हमारी सम्पादित "ज्ञानसार ग्रथावली" में विशेष देखना चाहिए।

१२—गवाड़ आदु घाड़ेवाळ, रामपुरिया, रासेचा, मोणोत अभी है ओर गुवाड़ रामपुरियां रासेचांरी बजे छे।

१३—गुवाड़ वैद धाराधारारी प्रोळ जिण मांयसुं कोचर निकळ के आय गूजरां में वस्या ओर न्यारो कराय के अपनी गुवाड़ बसाई। इण प्रोळमहि सुं नीकस्योड़ा है सो जानना।

१४—गुवाड़ सीगीयां री चोकरी आदु अथ सुराणा, चोरड़िया, सीपाणी इत्यादिक है।

ये सबरे गुवाड़ का नाम जानना

इन सूचियों में ओसवाळ समाज के गोत्रोंकी नामावली संक्षेप से उपलब्ध होती है, इनमें से वर्तमान में भमाणी, वेगड़ा, आंचळिया, छाजाणी, छत्रळाणी, चौधरी, बागचार के एक भी घर अवशेष नहीं है। शिळालेख आदि अन्य साधनों के अनुसार यहां खिमा, रीहड़, फसला आदि गोत्रोंके घर भी थे, पर उनमेंसे अब एक भी नहीं रहा। वर्त्तमान समयके गोत्रोंकी सूची यह है :—

१	भमाणी	२१	झाबक	४०	बांठिया	५६	रामपुरिया
२	भारी	२२	बागा	४१	वेगाणी	६०	लखोक
३	आसाणी	२३	बड़ा	४२	बैद	६१	लूणिया
४	करणावट	२४	बावेड़	४३	बोथरा	६२	लूणावत
५	कातेला	२५	दफ्तरी	४४	बुचा	६३	लोढा
६	कावड़िया	२६	दस्साणी	४५	बोरड़	६४	भीभीमाळ
७	कोचर	२७	दूगड़	४६	भणसाळी	६५	सांड
८	कोठारी	२८	धाड़ीवाळ	४७	भांडावत	६६	सावणसुखा
९	खटोळ	२९	नाहटा	४८	भुगड़ी	६७	सिंघी
१०	खजांची	३०	पटवा	४९	भूरा	६८	सिरोहिया
११	गिड़ीया	३१	पारख	५०	भोपाणी	६९	सीपाणी
१२	गेलड़ा	३२	पुगळिया	५१	मरोटी	७०	सुखलेचा
१३	गुलगुळिया	३३	फलोधिया	५२	माल्ह	७१	सुखाणी
१४	गोलछा	३४	बगसी	५३	मिन्नी	७२	सुराणा
१५	गंग	३५	बच्छावत	५४	मुकीम	७३	सेठी
१६	चोपड़ा कोठारी	३६	बडेर	५५	मुणोत	७४	सेठिया
१७	चोरड़िया	३७	बमाणी	५६	मुसरफ	७५	सोनावत
१८	जालेड़	३८	बरड़िया	५७	रांका	७६	हीरावत
१९	डोरिया	३९	बहुरा	५८	रासेचा	७७	हस्साणी
२०	भंवरी					७८	हुमेकिया

घरोंकी संख्या

ओसवालोंका धम प्रेम शीर्षकमें दिये हुए पौषध आदि धर्मकृत्य करनेवाळे श्रावकों की संख्यासे तत्काळीन जनसंख्या एवं घरोंकी संख्या का कुछ अनुमान किया जा सकता है। निश्चित

अथ चिन्तामणजी खरतर गच्छ की १३ गुवाड़के नाम

१—गोलछा, खजानची, गुलगुलिया, मोणोत, रांका, छाजेड़, खटोल एक गुवाड छै।

२—आदु गुवाड़ भमाणी अव नाहटा, भुगड़ी, कोठारी, सुखानी, राका, गोलछा, खटोल गुवाड़ १

३—रागड़ीमें वोथरा, मालू गुवाड़ १

४—सुखाणी, भदाणी गुवाड़ १

५—पुगलिया, वोथरा, साढ, मिनीया, छोरिया, मुकीम, सीपाणी, वडेर, साह गुवाड़ १

६—मरोटी, बुचा, वडेर, सुखलेचा, सेठी, नाडवेद, साह एक गुवाड वजे छे।

७—आदु गुवाड़ सिरोहिया, वाठिया, मलावत अव सेठिया, पारख, डागा, सीपानी एक गुवाड़ सेठिया री वजै छै।

८—कोठारी, कातेला, सावणसुखा, पारख, ढढा एक गुवाड़ कोठास्यांरी वजै छै।

९—वेगाणी, पारख, कावड़िया, भाबक, मिश्रप गुवाड़ एक वजै वेगाण्यारी।

१०—डागा, राजाणी गुवाड एक ही छै दूसरी जातवी नहीं।

११—आदु गुवाड़ वेगड़ा, वाफणा, अव दसाणी, सुखाणी, लालानी, पटवा, मोणोत, लोढा, सोनावत, तातेड़, ढढा गुवाड़ १ जात ६ भेली वसै।

१२—डागा पूजाणी प्रोलवाला गुवाड १ छै।

१३—वच्छावत, डागा गुवाड़ १ वजै छै। ये तेरह गुवाड का नाम जानवा।

अथ महावीरजी कवलै गच्छकी १४ गुवाड़ां के नामः।

१—गवाड़ आदु छाजेड़, छजलानी, अव सुराणा, चोरडिया, एक गुवाड़ सुराणारी वजै छै

२—जेठावत, गीडी गुवाड एक ही छै और इसी भी केवैछैके पेली अठै भी छजलानी भी रहते थे और अब वजै तो फकत सुराणा की है पिण सब भेलै है और गुवाड़ दो है।

३—गवाड़ दाती सुराणा की।

४—गवाड सुनावत, मलावत, आदु अव अचारज विरामण रहते हैं कई सुनावत भी है।

५—गवाड़ अभाणी, दफतरी, वगसी, भुगड़ी गुवाड़ १ अभाण्यारी।

६—गवाड़ आचलिया की आदु अब कावडिया, वगसी गुवाड़ एक वजैछै वीरामण वहोत है उसमे।

७—गवाड़ वेद मुहता की एक ही गुवाड़ छै।

८—गवाड़ सैसै बावै पासै पुगलिया, सीपाणी, आदु अव कंदोई मेसरी ढूंढनी।

९—सीपाणिया री।

१०—गवाड चोधरी आदु अव बाठिया, वरढिया, पुगलिया और मेसरी कोठारी।

११—गवाड़ आसाणी, भवस्यों की।

बीकानेरमें लिखी हुई प्रतियोंकी संख्या प्रचुर है, वे हजारोंकी संख्यामें होनेके कारण उनकी सूची देना अशक्य है।

रचनाकाल	ग्रंथ नाम	रचयिता	
सं० १५७१	लघुजातक टीका	भक्तिलाभ (ख०)	
सं० १५७७	उत्तमकुमार चरित्र	चारुचन्द्र (ख०) स्वय लिखित प्रति	
सं० १५८२	आचारांग दीपिका	जिनहंससूरि (ख०)	
सं० १५८१ मार्गशिर	आरामशोभा चौपाई	विनयसमुद्र उपकेश	ग०
सं० १६०२ बै० सु० ५ सोम	मृगावती चौपाई	विनयसमुद्र	"
सं० १६०२ फाल्गुन	सीता चौपाई (पद्मचरित्र)	विनयसमुद्र	"
सं० १६०२ लगभग	संग्रामसूरि चौपाई	विनयसमुद्र	"
सं० १६०० लगभग	निश्चय व्यवहार स्तवन	पासचन्द्रसूरि नागपुरी तपा	
सं० १६०४	सुख-दुःख विपाक सन्धि	धर्ममेरु	(ख०)
सं० १६११ दीवाली	समवसरण बालावबोध	साधुकीर्ति[1]	(ख०)
सं० १६१८ माघ वदि ७	मुनिपति चौपाई	हीरकलश	(ख०)
सं० १६२२ चैत्र सुदि १५	छन्दिताग कथा	हर्षकवि[2]	(ख०)
सं० १६२६ का० सु० ५	अमरकुमार चौपाई	हेमरत्न[3] पूर्णिमागच्छ	
सं० १६४०	प्रश्नोत्तर श्रावक वृत्ति आदि	ख० पुण्यसागर	(ख०)
सं० १६४३ मार्गसिर	जीभदांत सम्वाद	हीरकलश	"
,	हीयाली	"	"
सं० १६४३ फा० व० ८	गजभंजन चौपाई	मुनिप्रभ	"
सं० १६४६	वच्छराज देवराज चौपाई	कल्याणदेव	"
सं० १६४४	नेमिदूत वृत्ति	गुणविनय	"
सं० १६४६	रघुवंश वृत्ति	गुणविनय	"
सं० १६४६	बारह भावना संधि	जयसोम	"
सं० १६५१	आरामशोभा चौपाई	समयप्रमोद	"
सं० १६५४	शब्दप्रभेद वृत्ति	ज्ञानविमल	"
सं० १६६४	शीलोंच्छ नाम को० टीका	श्रीवल्लभ	"
सं० १६५५	उपकेश शब्द व्युत्पत्ति	श्रीवल्लभ	"
सं० १६६२ चैत्र	सुकराज चौपाई	सुमतिकल्लोल	"
सं० १६६२ चैत्र सुदि १०	धमसरी चौपाई	समयराज	"

१—बच्छावत मन्त्री संग्रामसिंहके आग्रहसे

२—हीरकलशके अनुरोधसे

३—मन्त्री कर्मचन्द्रके आग्रहसे

रूपसे तो लाहणी-पत्रक से तत्कालीन घरोंकी संख्या ज्ञात होती है लाहण-पत्रकके अनुसार घरोंकी संख्या तीन हजारके लगभग है और वस्तोपत्रक जो कि संवत् १९०५ पोष वदि १ को सोजत निवासी सेवक कस्तूरचन्दने लिखाया है उसमें घरोंकी संख्या २७०० लिखी है पर वर्त्त-मानमें उसका बहुत कुछ ह्रास होकर अब केवल १५०० के लगभग घर ही रह गये हैं।

बीकानेरमें रचित जैन-साहित्य

बीकानेरके बसानेमे ओसवाल--जैन-समाजका बहुत महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है यह बात हम पहले लिख चुके है। ओसवालोंके प्रभुत्वके साथ साथ यहा उनके धर्मगुरुओंका अतिशय प्रभाव होना स्वाभाविक ही था, फलतः यहा खरतर गच्छके दो बड़े उपाश्रय (भट्टारक, आचार्योंकी गद्दी), उपकेश गच्छका उपाश्रय (जिनके माननेवाले वैद होनेके कारण प्रधानतः वैदोंका उपाश्रय भी कहलाता है) एवं कँवला गच्छके नामसे भी इसकी प्रसिद्धि है, पायचन्दगच्छके दो उपाश्रय यहां विद्यमान हैं। जिनमे उस गच्छके श्रीपूज्यों-गच्छनेताओंकी गद्दी है। अब उनमें से केवल खरतर गच्छके श्रीपूज्य ही विद्यमान है अवशेष गद्दियें खाली है, ये सब उपाश्रय संघके हैं जिनमे यतिलोग रहते हैं। सिंघीयोंके चौकमें सीपानियोंके बनवाया हुआ तपा गच्छका उपाश्रय है पर कई वर्षोंसे इसमें कोई यति नहीं रहता। कहनेका तात्पर्य्य यह है कि यहां इन सभी गच्छों का अच्छा प्रभाव रहा है फिर भी साहित्यिक दृष्टिसे यहाके यतियोंमे संख्या और विद्वतामें खरतर गच्छके यति ही विशेष उल्लेखनीय हैं। उनके रचित साहित्य बहुत विशाल है क्योंकि उनका सारा जीवन धर्मप्रचार, परोपकार और साहित्य साधनामे ही व्यतीत होता था, उनके पाण्डित्य की धाक राजदरबारोंमे भी जमी हुई थी। उन्हीं यतियों और कुछ गोस्वामी आदि ब्राह्मण विद्वानोंके विद्याबल पर ही "आतमध्यानी आगरै, पण्डित बीकानेर" लोकोक्ति प्रसिद्ध हुई थी। यद्यपि यहांके जैन यतियोंने बहुत बड़ा साहित्य निर्माण किया है पर हम यहां केवल उन्हीं रच-नाओंकी सूची दे रहे हैं जिनका निर्माण उन रचनाओंमे बीकानेरमे होनेका निर्देश है या निश्चतरूपसे बीकानेरमे रचे जानेका अन्य प्रमाणोंसे सिद्ध है। यह सूची सवतानुक्रमसे दी जा रही है, जिससे शताब्दीबार उनकी साहित्य सेवाका आभास हो जायगा। यद्यपि बीकानेरमे रचे हुए ग्रंथ स० १५७१ से पहलेके संवत् नामोल्लेखवाले नहीं मिलते तो भी यहा जैन साधुओंका आवागमन तो बीकानेर बसनेके साथ साथ हो गया था, निश्चित है। अनूप संस्कृत लायब्रेरीमे सप्तपदार्थी वस्तु प्रकाशिनी वृत्ति पत्र १७ की प्रति है जो कि बीकानेर बसनेके साथ साथ अर्थात् प्राथमिक दुर्ग निर्माणके भी दो वर्ष पूर्व लिखी गई थी, पुष्पिका लेख इस प्रकार है :—

> इति श्री बृहद्गच्छ मण्डन पूज्य वा० श्री श्री विनयसुन्दर शिष्येन वा० मेघरत्नेन लेखि स्व पठनार्थं सप्तपदार्थी वृत्तिः॥ संवत् १५४३ वर्षे आश्विन वदि ११ दिने श्री विक्रमपुरवरे श्री विक्रमादित्य विजयराज्ये॥ ग्रथाग्र सर्व संख्या १८४८ अक्षर ११।

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७१६	आदिनाथ स्तवन	दयातिलक	(ख०)
सं० १७६२ पोष बदि ११	द्रव्यप्रकाश	देवचन्द्र	"
सं० १७६५ चैत्र	बीकानेर गजल	उदयचन्द्र	,
स० १७८४ चौमास	सीता चौढालिया	दौलतकीर्ति	(तपा)
सं० १७८६ विजयदशमी	भर्तृहरि शतकत्रय हिन्दीपद्य	जयपसिंह[1]	(ख०)
सं० १८०८ फाल्गुण ११	चौवीसी	जिनकीर्तिसूरि	"
सं० १८१४ मा० ब० १	चतुर्विंशति जिनपंचाशिका	रामविजय	"
सं० १८१४ पो० सु १०	चित्रसेनपद्मावती चौपाई	रामविजय	"
सं० १८३४ मा० सु० ६	गौतम रास	रायचन्द्र	
	चेलना चौपाई	रायचन्द्र	
सं० १८४० सुदि १०	मौनएकादशी कथा	जीवराम	
सं० १८४३ कार्तिक सुदि १५	अम्मा चौपाई	गुणचन्द्र	
सं० १८४७	मौनएकादशी कथा	जीवराज	
सं० १८५०	१६ स्वप्न चौढालिया	गुणचन्द्र	
सं० १८५० मा० सु० ७	जीवविचार वृत्ति	क्षमाकल्याण	(ख०)
सं० १८५३ बै० ब० १२	प्रश्नोत्तर सार्द्ध शतक	क्षमाकल्याण	"
सं० १८६० फा० सु० ११	मेरुत्रयोदशी व्याख्यान	क्षमाकल्याण	"
सं० १८६७	जिनपालित जिनरक्षित चौपाई	रूपचन्द	"
सं० १८६६ विजयदशमी	श्रीपालचरित्र वृत्ति	क्षमाकल्याण	"
	प्रतिक्रमण हेतव:	क्षमाकल्याण	"
स० १८७१ मा० सुदि १	सुपार्श्वप्रतिष्ठा स्त०	क्षमाकल्याण	"
सं० १८७१ मा० बदि १३	नवपद पूजा	ज्ञानसार	"
सं० १८७५ मार्गसिर सुदि १५	चौवीसी	ज्ञानसार	"
सं० १८७८ कार्तिक शु० १	विहरमानवीसी	ज्ञानसार	"
सं० १८८० आषाढ़ सु० १३	आध्यात्मगीता बालावबोध	ज्ञानसार	"
सं० १८७१ फा० कृ० ६	भाषापिंगल	ज्ञानसार	"
सं० १८८१ मार्ग० कृ० १३	निहालबावनी	ज्ञानसार	"
सं० १८८२ मा० वदि १	राम लक्ष्मण सीता चौ०	शिवलाल	(लों०)
सं० १८६४ मै० व० २	पद्मराज समुद्धपबालावबोध	कस्तूरचंद्र	(ख०)

---

[1]—राजकुमार मानसिंह के नाम से

रचनाकाल	ग्रन्थ नाम	रचयिता	
सं० १६६६ माघ सुदि ४	साधुसमाचारी बालावबोध	धर्मकीर्त्ति	(ख०)
सं० १६७७ वैशाख सुदि ५	रामकृष्ण चौपाई	लावण्यकीर्त्ति[1]	,,
सं० १६७५	सागरसेठ चौपाई	सहजकीर्त्ति	,,
सं० १६७७ लगभग	चन्दनमलयागिरि चौपाई	भद्रसेन	,,
सं० १६८३ मार्गसिर	श्रावक कुलक	समयसुन्दर	,,
	अष्टकत्रय	समयसुन्दर	,,
	आदिनाथ स्तवन	,,	,,
सं० १६८६	पृथ्वीराजकृत कृष्णरुक्मिणीवेलि बालावबोध	जयकीर्ति	,,
सं० १६९२ माघ सुदि ५	नेमिनाथ रास	कनककीर्त्ति	,,
सं० १६९६ कार्तिक सुदि ११	रघुवंश टीका	सुमतिविजय	,,
	मेघदूत टीका	,,	,,
	पच्चक्खाण विचार गर्भित	क्षेम	,,
	पार्श्व स्तवन		,,
सं० १७०३ (७?) माघ सुदि१३ सोम	थावच्चासुकोशल चौपाई	राजहर्ष	,,
स० १७०५	ऋषिमण्डल वृत्ति	हर्षनन्दन	,,
सं० १७०७	दशवैकालिक गीत	जयतसी	,,
सं० १७११	उत्तराध्ययन वृत्ति	हर्षनन्दन	,,
सं० १७२१	कयवन्ना चौपाई	जयतसी	,,
सं० १७२६ विजयदशमी	अजापुत्र चौपाई	भावप्रमोद	,,
सं० १७३६ आषाढ़ बदि ५	लीलावती चौपाई	लाभवर्द्धन[2]	,,
सं० १७३८ वै० सु० १०	रात्रिभोजन चौपाई	लक्ष्मीवल्लभ	,,
सं० १७३९ माघ सु० २	सुमति नागिला चौपाई	धर्ममन्दिर	,,
सं० १७४२	चित्रसंभूति सज्झाय	जीवराज	,,
सं० १७४८	सुबाहु चौढालिया	वच्छराज	(लों०)
	पाण्डित्य-दर्पण	उदयचन्द्र	(ख०)
सं० १७५३ श्रा० सु० १३	छप्पय बावनी	धर्मवर्द्धन	,,
	शीलरास	धर्मवर्द्धन	,,

१—भणशाली करमचर आग्रहसे रचित
२—कोठारी जैतसीके आग्रहसे रचित

(२) लूणकरणसर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १६८५	विशेष शतक	समयसुन्दर	(ख०)
सं० १६८४	संतोष छत्तीसी	,,	,,
सं० १६८४ श्रावण	दुरियर वृत्ति	,,	,,
सं० १६८४	कल्पलता प्रारंभ	,,	,,
सं० १६८५	विसंवाद शतक	,,	,,
सं० १७२२ मेरु तेरस	२८ लब्धिस्तवन	धर्मवर्द्धन	,,
सं० १७३२ मिगसर	३४ अतिशय स्तवन	धर्मवर्द्धन	,,
सं० १७४२	कुलध्वज चौपाई	विनयविलास	,,
सं० १७५० मिगसर	रात्रिभोजन चौपाई	कमलहर्ष	,,
सं० १७८० आश्विन सुदि २ रवि	मानतुंग मानवती रास	पुण्यविलास	,,
सं० १८४०	पार्श्वनाथ सलोका, पार्श्व स्तवन	हीरोल्व	,,
(३) काछू			
सं० १८१६ नेमिजन्म दिन	रत्नपाल चौपाई	रघुपति	,,
(४) घड़सीसर			
सं० १६८२ भाद्रवा सुदि ६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपाई	चन्द्रकीर्ति	,,
सं० १८०१ प्र० भाद्रवा सुदि १५	श्रीपाल चौपाई	रघुपति	,,
(५) नोखा			
सं० १७१०	धामन्नक चौपाई	ज्ञानहर्ष	,,
सं० १७१५	श्रावकाराधना	राजसोम	,,
(६) मढनेर			
सं० १७५० अषाढ़ सुदि १५	वनराजर्षि चौपाई	कुशललाभ	,,
	मेघदूत वृत्ति	लक्ष्मीनिवास	,,
(७) नौहर			
सं० १७११ कार्तिक	मूलदेव चौपाई	रामचन्द्र	,,
(८) महाजन			
सं० १७३७ फा० सु० १०	ऋषभदत्तरूपवती चौपाई	अभयकुशल	,,
(९) नापासर			
सं० १७४० चै० सु० १३	धर्मसेन चौपाई	यशोलाभ	,,
सं० १७८७ द्वि० भा० व० १	रात्रिभोजन चौपाई	अमरविजय	,,
सं० १७९८ मा० सु० ५	सुदर्शन चौपाई	अमरविजय	,,

रचनाकाल	ग्रन्थनाम	रचयिता
सं० १८६८ फा० शु० ७	मदनसेन चौपई	साँवतराम (लौं०)
सं० १६१३ आ० सुदि ५	पंचकल्याणक पूजा	वालचंद्र (ख०)
सं० १६३० आषाढ वदि ११	४५ आगम पूजा	रामलालजी ,,
सं० १६३० ज्येष्ठ सुदि १३	सिद्धाचल पूजा	सुमतिमंडन ,,
सं० १६३६	वारहव्रत पूजा	कपूरचंद ,,
सं० १६४० आ० सु० १२	अष्टप्रवचनमाता पूजा	सुमतिमंडण ,,
सं० १६४० आ० सु० १०	पांचज्ञान पूजा	,, ,,
सं० १६४० मि० सु० ५	सहस्रकूट पूजा	,, ,,
सं० १६४०	वीसस्थानक पूजा	आत्मारामजी (तपा)
सं० १६४०	आबू पूजा	सुमतिमंडण (ख०)
सं० १६४५ लिखित	विविध वोल संग्रह	वलदेव पाटणी दिगम्बर
सं० १६४७	चौवीस जिन पूजा	हर्षचंद्र (पायचंदगच्छीय)
सं० १६५३	चौदहराज लोकपूजा	सुमतिमंडन (ख०)
सं० १६५३ माघ सुदि १४	पंच परमेष्टि पूजा	,, ,,
सं० १६५३ मिगसर सुदि २	दादाजी की पूजा	रामलालजी ,,
सं० १६५५	११ गणधर पूजा	सुमतिमंडन ,,
सं० १६५८ श्रावण वदि १०	जम्बूद्वीप पूजा	सुमतिमंडन ,,
सं० १६६१ माघ वदि ६	संघ पूजा	सुमतिमंडन ,,
सं० १६७८	ज्ञान दर्शन पूजा	विजयवल्लभसूरि (त०)

अब वीकानेर रियासत के भिन्न भिन्न स्थानों में जो साहित्य निर्माण हुआ है, उसकी सूची दी जा रही है :—

(१) रिणी

रचनाकाल	ग्रथका नाम	रचयिता
सं० १६३६	मुनिमालिका	चारित्रसिंघ (ख०)
सं० १६८५	कल्पलता	समयसुन्दर ,,
सं० १६८१	यति आराधना	,, ,,
सं० १७२३	उत्तराध्ययन दीपिका	चारित्रचंद्र ,,
सं० १७२५ का० व० ६	धर्मबावनी	धर्मवर्द्धन ,,
स० १७४६ माघ व० १३	पंचकुमारकथा	लक्ष्मीवल्लभ ,,

बीकानेर के जैन मन्दिरों का इतिहास

बीकानेर के बसने में जैन श्रावकों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। वीरवर बीकाजी के साथ में आए हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों में बोहित्थरा वत्सराज आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, यह बात हम पूर्व लिख चुके हैं। वह समय धार्मिक श्रद्धाका युग था अतः बीकानेर बसने के साथ साथ जैन श्रावकोंका अपने उपास्य[1] जैन तीर्थङ्करोंके मन्दिर निर्माण कराना स्वाभाविक ही है—कहा जाता है कि बीकानेर के पुराने किलेकी नींव जिस शुभ मुहूर्त में डाली गई उसी मुहूर्त्त में श्री आदिनाथ मुख्य चतुर्विंशति जिनालय (चउवीसटा) का शिलान्यास किया गया था। इस मन्दिर के लिए मूलनायक प्रतिमा मण्डोवर से सं० १३८० में श्री जिनकुशलसूरिजी प्रतिष्ठित लायी गई थी। सं० १५६१ में मन्दिर बन कर तैयार हो गया, यह बीकानेर का सब से पहला जैन मन्दिर है और बीकाजी के राज्यकाल में ही बन चुका था। लोकप्रवाद के अनुसार श्री भाण्डासर (सुमतिनाथजी) का मन्दिर पहले बनना प्रारंभ हुआ था पर यह तो स्पष्ट है कि उपर्युक्त मन्दिर श्री चिन्तामणिजी के पीछे प्रसिद्धि में आया है। शिलालेख के अनुसार भांडा साह कारित सुमतिनाथ जी का मन्दिर सं० १५७१ में बन कर तैयार हुआ था यह संभव है कि इतने बड़े विशाल मन्दिर के निर्माण में काफी वर्ष लगे हों पर इसकी पूर्णाहुति तो श्री चिन्तामणि—चौवीसटाजी के पीछे ही हुई है। इसी समय के बीच बीकानेर से शत्रुंजय के लिये एक संघ निकला था जिसमें देवराज—वच्छराज प्रधान थे। उसका वर्णन साधुचंद्र कृत तीर्थराज चैत्य परिपाटी में आता है। उसमें बीकानेर के ऋषभदेव (चौवीसटाजी) मन्दिर के बाद दूसरा मन्दिर वीर भगवान का लिखा है अतः सुमतिनाथ (भांडासर) मन्दिर की प्रतिष्ठा महावीर जी के मन्दिर के बाद होनी चाहिये। मं० वत्सराज के पुत्र कर्मसिंहने नमिनाथ चैत्य बनवाया जिसकी संस्थापना सं० १५५६ में और पूर्णाहुति सं० १५७० में हुई। लौंकागच्छ पट्टावली के अनुसार श्री महावीरजी (बैदों का) के मन्दिर की नींव सं० १५७८ के विजयादशमीको डाली गई थी पर यह संवत् विचारणीय है। श्री नमिनाथ जिनालय के मूलनायक सं० १५६३ में प्रतिष्ठित हैं। सोलहवीं शती में ये चार मन्दिर ही बन पाए थे। स १५९६ में बीकानेर से निकले हुए शत्रुंजय यात्रीसंघ की चैत्यपरिपाटी में गुणरंग गणिने बीकानेर के इन चारों मन्दिरों का ही वर्णन किया है —

> "बीकनयरह तणइ संघि उच्छव रली, यात्रा सेत्रुंजगिरि पंथ कीधी बली।
> ऋषभ जिण सुमति जिण नमवि नमि सुहकरो, वीर सिद्धस्थ वर राय कुल सुन्दरो।"

अत संवत् १५९६ तक ये चार मन्दिर ही थे यह निश्चित है। इसके पश्चात् सं० १६३३ में तुरसमखानने सीरोही लूटी और लूटमें प्राप्त १०५० धातु-मूर्त्तिए फतेपुर सीकरी में सम्राट् अकबरको भेंट की। ८-९ वर्ष तक वे प्रतिमाए शाही खजाने में रखी रही व अंत में बीकानेर नरेश रायसिंहजी के साहाय्यसे मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रजी सम्राटसे प्राप्त कर उन्हें बीकानेर

1—बीकानेरके मन्दिरोंके बननेके [illegible]

रचनाकाल	ग्रंथका नाम	रचयिता	
सं० १८०३ माघ सुदि १५	जैनसार बावनी	रघुपत्ति	(ख०)
(१०) गारबदेसर			
सं० १८०६ विजयादशमी	केशी चौपाई	अमरविजय	,,
(११) रायसर			
स० १७७०	अरहन्ना सज्झाय	अमरविजय	,,
सं० १७७५	मुंछ माखण कथा	,,	,,
सं० १८०३ धनतेरस	धर्मदत्त चौपाई	अमरविजय	,,
(१२) केसरदेसर			
सं० १८०३ प्रथम दिवस	नन्दिषेण चौपाई	रघुपत्ति	,,
(१३) तोलियासर			
सं० १८२५ फाल्गुन	सुभद्रा चौपाई	रघुपत्ति[1]	,,
सं० १८२५ ऋषि पंचमी	प्रस्ताविक छप्पय बावनी	रघुपत्ति	,,
(१४) देशनोक			
सं० १८६१ माघ सुदि ५	सुविधि प्रतिष्ठा स्तवन	क्षमाकल्याण	,,
सं० १८८३	खंदक चौढालिया	उदयरत्न	,,
(१५) देसलसर			
सं० १८०८ लगभग	४२ दोषगर्भित स्तवन	रघुपत्ति	,,
(१६) विगयपुर (विगा)			
सं० १६७६ प्र० आश्विन सुदि १३	गुणावली चौपाई	ज्ञानमेरू	,,
(१७) बापड़ाऊ (बापेऊ)			
सं० १६५० लगभग	विजयतिलककृत आदि स्त०बालावबोध	गुणविनय[2]	,,
(१८) रतनगढ़			
स० १९६५	तेरापन्थी नाटक	यति प्रेमचन्द	,,
(१९) राजलदेसर			
सं० १६२२ भादव सुदि ५	सोलहस्वप्न सज्झाय गा०२०	हर्षप्रभ शि०हीरकलश[3]	,,
(२०) सेरूणा			
सं० १६४७	वैराग्यशतक वृत्ति[4] पत्र २२	गुणविनय	,,
सं० १६५७	विचार रत्न संग्रह हुंडिका	गुणविनय	,,
(२१) पूगल			
सं० १७०७	दुर्जन दमन चौपाई	ज्ञानहर्ष	,,

१—प्रोहितोंके राज्यमें दीपचन्दके आग्रह से २—ज्ञाननन्दनके आग्रह से ३ सघके आग्रह से
४—कविके स्वयं लिखित बीकानेर ज्ञानभण्डारकी प्रतिमें —"सेरुन्नक नाम्निवर नगरे"

(२) लूणकरणसर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १६८५	विशेष शतक	समयसुंदर	(ख०)
सं० १६८४	संतोष छत्तीसी	,,	,,
सं० १६८४ श्रावण	दुरियर वृत्ति	,,	,,
सं० १६८४	कल्पलता प्रारम्भ	,,	,,
सं० १६८५	विसंवाद शतक	,,	,,
सं० १७२२ चैत्र तेरस	२८ लब्धिस्तवन	धर्मवर्द्धन	,,
सं० १७३२ मिगसर	३४ अतिशय स्तवन	जयचंद्रहंस	,,
सं० १७४२	कृतकर्म चौपाई	विद्याविलास	,,
सं० १७५० मिगसर	रात्रिभोजन चौपाई	कमलहर्ष	,,
सं० १७८० आश्विन सुदि ३ रवि	मानतुंग मानवती रास	पुण्यविलास	,,
सं० १८४०	पार्श्वनाथ सलोका, पार्श्व स्तवन चौढ़ाल		,,

(३) कालू

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १८१६ नेमिजन्म दिन	श्रीपाल चौपाई	रघुपति	,,

(४) चंडालीसर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १६८२ भादवा सुदि ६	धर्मबुद्धि पापबुद्धि चौपाई	चन्द्रकीर्ति	,,
सं० १८०६ प्र० भादवा सुदि १५	श्रीपाल चौपाई	रघुपति	,,

(५) मोरखा

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७१०	रामकृष्ण चौपाई	ज्ञानहर्ष	,,
सं० १७१५	श्रावकाराधना	राजसोम	,,

(६) भटनेर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७५० अषाढ सुदि १५	धनराजर्षि चौपाई	कुशललाभ	,,
	मेघदूत वृत्ति	लक्ष्मीनिवास	,,

(७) नोहर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७११ कार्तिक	मूलदेव चौपाई	रामचन्द्र	,,

(८) महाजन

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७३७ फा० सु० १०	रूपसेन रूपवती चौपाई	अभयकुशल	,,

(९) नापासर

रचनाकाल	ग्रन्थका नाम	रचयिता	
सं० १७४० जे० सु० ११	धर्मसेन चौपाई	यशोलाभ	,,
सं० १७८७ द्वि० भा० व० १	रात्रिभोजन चौपाई	अमरविजय	,,
सं० १७६८ मा० म० ८	सुदर्शन चौपाई	अमरविजय	,,

लाये उनमेंसे वासुपूज्य मुख्य चतुर्विंशति प्रतिमाको मूलनायक रूपसे अलग मन्दिरमें स्थापितकी। इस प्रकार पांचवा मन्दिर श्री वासुपूज्य स्वामीका प्रसिद्ध हुआ। सं० १६४४ में बीकानेर से निकले हुए यात्री सघकी गुणविनयजी कृत चैत्य परिपाटी मे इन पाचों मन्दिरोंका उल्लेख इस प्रकार पाया जाता है :—

"पढम जिण वंदि वहु भाव पूरिय मणं, सुमति जिण नमवि नमि वासुपूज्यं जिनं।
वीर जिण धीर गंभीर गुण सुन्दरं, कुसलकर कुसलगुरु भेटि महिमाधरं ॥२॥"

इससे निश्चित होता है कि सं० १६४४ तक बीकानेर मे ये ५ चैत्य थे। इनके बाद सं० १६६२ मिती चैत्र वदि ७ के दिन नाहटों की गवाड़ स्थित विशाल एवं भव्य शत्रुञ्जयावतार ऋषभदेव भगवान्‌के मन्दिरकी प्रतिष्ठा युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजीके कर कमलोंसे हुई। यद्यपि डागोंकी गवाडके श्री महावीर जिनालयकी प्रतिष्ठा कब हुई इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता फिर भी युगप्रधान जिनचन्द्रसूरिजीके विहारपत्रमे सं० १६६३ मे भी बीकानेर मे सूरिजीके द्वारा प्रतिष्ठा होनेका उल्लेख होनेसे इस मन्दिरका प्रति ठा सवत् यही प्रतीत होता है। कविवर समयसुन्दरजी विरचित विक्रमपुर चैत्य परिपाटीमे इन सात मन्दिरोंका ही उल्लेख है। हमारे ख्यालसे यह स्तवन सं० १६६४ ७० के मध्य का होगा। इसी समयके लगभग श्री अजितनाथ जिनालयका निर्माण होना सभव है। नागपुरीतपागच्छके कवि विमलचारित्र, कनककीर्ति, धर्मसिंह और लालखुशाला इन चारो के चैत्य-परिपाटी स्तवनोंमें श्री अजितनाथजीके मन्दिरको अन्तिम मन्दिर के रूपमे निर्देश किया है। समयसुन्दरजी अपने तीर्थमाला स्तवनमें इन आठ चैत्योंका ही निर्देश करते हैं—"बीकानेर ज वदियै चिरनंदियैरे अरिहत देहरा आठ" इस तीर्थमालाका सर्वत्र अधिकाधिक प्रचार होनेके कारण बीकानेरकी इन आठ मन्दिरोंवाले तीर्थके रूपमें बहुत प्रसिद्धि हुई। इसी समय दो गुरु मन्दिरोंका भी निर्माण हुआ जिनमेंसे पार्श्वचंद्रसूरि स्तूप सं० १६६९ और यु० जिनचन्द्रसूरि पादुका—स्तूप सं० १६७३ मे प्रतिष्ठित हुए। उपलब्ध चैत्य परिपाटियोंमे से धर्मसिंह और लालखुशालकी कृतिएं सं० १७५६ के लगभगकी है एवं सं० १७६५ की बनी हुई बीकानेर गजलमे भी इन आठ मन्दिरोंका ही उल्लेख है। सं० १८०१ में राजनगरमें रचित जयसागर कृत तीर्थमाला स्तवन मे "आठ चैत्ये बीकानेरे" उल्लेख है। अतः स० १८०१ तक ये आठ मन्दिर ही थे इसके अनन्तर कविवर रघुपति रचित श्री शान्तिनाथ स्तवन मे ९ वें मन्दिर शान्तिनाथजीका (जो चिन्तामणिजीके गढ में हैं) सं० १८१७ मार्गशीप कृष्णा ५ के दिन पारख जगरूप के द्वारा बनवाकर प्रतिष्ठित होनेका उल्लेख है। अर्थात् लगभग १५० वर्ष तक बीकानेरमें उपर्युक्त ८ चैत्य ही रहे। इसके वाद १९ वीं शतीमें बहुत से मन्दिरोंका निर्माण एवं श्री अजितनाथजी (सं० १८५५) और गौड़ी पार्श्वनाथजी (सं० १८८६) के मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ।

में श्री जिनभद्रसूरि पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिसे प्रतिष्ठा करवाई समवत यह प्रतिमा वे बीकानेरमें आते समय साथ लाए और दर्शन पूजन करते थे। श्री महावीरजी (वैदों) के मन्दिरमें एक धातु प्रतिमा स० १५५५ में विक्रमपुरमें देवगुप्तसूरि प्रतिष्ठित विद्यमान है। बीकानेरमें हुई प्रतिष्ठाओंमें यह उल्लेख सर्व प्रथम है।

बीकानेर के जैन मन्दिरों का इतिहास

बीकानेर के बसने में जैन श्रावकों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। वीरवर बीकाजी के साथ में आए हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों में बोहिथरा वत्सराज आदि के नाम उल्लेखनीय हैं, यह बात हम पूर्व लिख चुके हैं। यह समय धार्मिक श्रद्धाका युग था अतः बीकानेर बसने के साथ साथ जैन श्रावकोंका अपने उपास्य[1] जैन तीर्थङ्करोंके मन्दिर निर्माण कराना स्वाभाविक ही है—कहा जाता है कि बीकानेर के पुराने किलेकी नींव जिस शुभ मुहूर्त में डाली गई उसी मुहूर्त में श्री आदिनाथ मुख्य चतुर्विंशति जिनालय (चउवीसटा) का शिलान्यास किया गया था। इस मन्दिर के लिए मूलनायक प्रतिमा मण्डोवर से सं० १३८० में श्री जिनकुशलसूरिजी प्रतिष्ठित लायी गई थी। सं० १५६१ में मन्दिर बन कर तैयार हो गया, यह बीकानेर का सब से पहला जैन मन्दिर है और बीकाजी के राज्यकाल में ही बन चुका था। लोकप्रवाद के अनुसार श्री भाण्डासर (सुमतिनाथजी) का मन्दिर पहले बनना प्रारंभ हुआ था पर यह तो स्पष्ट है कि उपर्युक्त मन्दिर श्री चिन्तामणिजी के पीछे प्रसिद्धि में आया है। शिलालेख के अनुसार भांडा साह कारित सुमतिनाथ जी का मन्दिर सं० १५७१ में बन कर तैयार हुआ था यह संभव है कि इतने बड़े विशाल मन्दिर के निर्माण में काफी वर्ष लगे हों पर इसकी पूर्णाहुति तो श्री चिन्तामणि—चौवीसटाजी के पीछे ही हुई है। इसी समय के बीच बीकानेर से शत्रुंजय के लिये एक संघ निकला था जिसमें देवराज—वच्छराज प्रधान थे। उसका वर्णन साधुचंद्र कृत तीर्थराज चैत्य परिपाटी में आता है। उसमें बीकानेर के ऋषभदेव (चौवीसटाजी) मन्दिर के बाद दूसरा मन्दिर वीर भगवान का लिखा है अतः सुमतिनाथ (भांडासर) मन्दिर की प्रतिष्ठा महावीर जी के मन्दिर के बाद होनी चाहिये। मं० वत्सराज के पुत्र कर्मसिंहने नमिनाथ चैत्य बनवाया जिसकी संस्थापना सं० १५५६ में और पूर्णाहुति सं० १५७० में हुई। लौंकागच्छ पट्टावली के अनुसार श्री महावीरजी (वैदों का) के मन्दिर की नींव सं० १५७८ के विजयादशमीको डाली गई थी पर यह संवत् विचारणीय है। श्री नमिनाथ जिनालय के मूलनायक सं० १५६३ में प्रतिष्ठित हैं। सोलहवीं शती में ये चार मन्दिर ही बन पाए थे। सं० १६१६ में बीकानेर से निकले हुए शत्रुंजय यात्रीसंघ की चैत्यपरिपाटी में गुणरंग गणिने बीकानेर के इन चारों मन्दिरों का ही वर्णन किया है —

> 'बीकनयरह तणइ संघि उच्छव रली, यात्रा सेत्रुंजगिरि पंथ कीधी वली।
> ऋषभ जिन सुमति जिन नमवि नमि सुहकरो वीर सिद्धस्थ वर राय कुल सुन्दरो।"

अतः संवत् १६१६ तक ये चार मन्दिर ही थे यह निश्चित है। इसके पश्चात् सं० १६३३ में तुरसमखानने सीरोही लूटी और लूटमें प्राप्त १०५० धातु-मूर्त्तियें फतेपुर सीकरी में सम्राट् अकबरको भेंट की। ८-६ वर्ष तक ये प्रतिमाएं शाही खजाने में रखी रहीं व अंत में बीकानेर नरेश रायसिंहजी के साहाय्यसे मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रजी सम्राटसे प्राप्त कर उन्हें बीकानेर

[1]—बीकानेरके मन्दिरोंके बननेके पूर्व बोहिथरा देवराजने श्री शीतलनाथ चतुर्विंशति पट्ट बनवा कर सं० १५१४

रचनाकाल	ग्रंथका नाम	रचयिता	
सं० १८०३ माघ सुदि १५	जैनसार बावनी	रघुपत्ति	(ख०)
(१०) गारबदेसर			
सं० १८०६ विजयादशमी	केशी चौपाई	अमरविजय	,,
(११) रायसर			
स० १७७०	अरहन्ना सज्झाय	अमरविजय	,,
सं० १७७५	मुंछ माखण कथा	,,	,,
सं० १८०३ धनतेरस	धर्मदत्त चौपाई	अमरविजय	,,
(१२) केसरदेसर			
सं० १८०३ प्रथम दिवस	नन्दिषेण चौपाई	रघुपत्ति	,,
(१३) तोलियासर			
सं० १८२५ फाल्गुन	सुभद्रा चौपाई	रघुपत्ति[1]	,,
सं० १८२५ ऋषि पंचमी	प्रस्ताविक छप्पय बावनी	रघुपत्ति	,,
(१४) देशनोक			
सं० १८६१ माघ सुदि ५	सुविधि प्रतिष्ठा स्तवन	क्षमाकल्याण	,,
सं० १८८३	खंदक चौढालिया	उदयरत्न	,,
(१५) देसलसर			
सं० १८०८ लगभग	४२ दोषगर्भित स्तवन	रघुपत्ति	,,
(१६) विगयपुर (विगा)			
सं० १६७६ प्र० आश्विन सुदि १३	गुणावली चौपाई	ज्ञानमेरू	,,
(१७) बापड़ाऊ (बापेऊ)			
सं० १६५० लगभग	विजयतिलककृत आदि स्त०बालावबोध	गुणविनय[2]	,,
(१८) रतनगढ़			
स० १६६५	तेरापन्थी नाटक	यति प्रेमचन्द	,,
(१९) राजलदेसर			
सं० १६२२ भादव सुदि ५	सोलहस्वप्न सज्झाय गा०२०हर्षप्रभ	शि०हीरकलश[3]	,,
(२०) सेरूणा			
सं० १६४७	वैराग्यशतक वृत्ति[4] पत्र २२	गुणविनय	,,
सं० १६५७	विचार रत्न सग्रह हुंडिका	गुणविनय	,,
(२१) पूगल			
सं० १७०७	दुर्जन दमन चौपाई	ज्ञानहर्ष	,,

१—प्रोहितोंके राज्यमें दीपचन्दके आग्रह से २—ज्ञाननन्दनके आग्रह से ३ सघके आग्रह से
४—कविके स्वय लिखित बीकानेर ज्ञानभण्डारकी प्रतिमें —"सेरुन्नक नाम्निवर नगरे"

सं० १५९१ में राव जयतसीके समयमें हुमायुंके भाई, कामरा (जो लाहौरका शासक था) ने भटनेर पर अधिकार कर बीकानेर पर प्रबल आक्रमण किया। उसने गढ़ पर अधिकार कर लिया[1]। उस समय उसके सैन्यने इस मन्दिरके मूलनायक चतुर्विंशति पट्ट के परिकरको भग्न कर डाला, जिसका उद्धार बोहित्थरा गोत्रीय मंत्रीश्वर वच्छराज (जिनके वंशज वच्छावत कहलाए) के पुत्र मंत्री वरसिंह-पुत्र मं० मेघा-पुत्र मं० वयरसिंह और मं० पद्मसिंहने किया। शिलालेखमें उल्लेख है कि मह० वच्छावतोंने इस मन्दिरका परधा बनवाया। मूलनायकजीके परिकरके लेखानुसार संवत् १५९२ मे श्री जिनमाणिक्यसूरिजीने पुनः प्रतिष्ठा की। इसके पश्चात सं० १५९३, १५९५ और १६०६ में श्री जिनमाणिक्यसूरिजीने कई प्रतिमाओं एवं चतुर्विंशति जिन मातृकापट्टकी प्रतिष्ठा की।

इस मन्दिरमें दो भूमिगृह है जिनमेसे एकमे सं० १६३९ मे मंत्रीश्वर कर्मचन्दके लायी हुई १०५० धातु प्रतिमाएँ रखी गई। सम्भवत. इन प्रतिमाओंकी संख्या अधिक होनेके कारण प्रतिदिन पूजा करनेकी व्यवस्थामे असुविधा देखकर इन्हें भण्डारस्थ कर दी होंगी। इन प्रतिमाओंके यहाँ आनेका ऐतिहासिक वर्णन उ० समयराज और कनकसोम विरचित स्तवनोंमे पाया जाता है, जिसका संक्षिप्त सार यह है :—

सं० १६३३ मे तुरसमखानने सिरोही की लूटमे इन १०५० प्रतिमाओंको प्राप्तकर फतहपुर सीकीमें सम्राट अकबरको समर्पण की। वह इन प्रतिमाओंको गालकर उनमेसे स्वर्णका अंश निकालनेके लिए लाया था। पर अकबरने इन्हें गलानेका निषेधकर आदेश दिया जहाँ तक मेरी दूसरी आज्ञा न हो, इन्हें अच्छी तरह रखा जाय। श्रावकलोगोंको बड़ी उत्कंठा थी कि किसी तरह इन्हें प्राप्तकी जाय पर ५-६ वर्ष बीत गये, कोई सम्राटके पास प्रतिमाओंके लानेका साहस न कर सका अन्तमें बीकानेर नरेश महाराजा रायसिंहको मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रने उन प्रतिमाओंको जिस किसी प्रकारसे प्राप्त करनेके लिये निवेदन किया। राजा रायसिंहजी बहुत-सी भेंट लेकर अकबरके पास गये और उसे प्रसन्नकर प्रतिमायें प्राप्त कर लाए। सं० १६३९ आषाढसुदि ११ बृहस्पतिवारके दिन महाराजा, १०५० प्रतिमाओंको अपने डेरेपर लाये, और आते समय उन्हें अपने साथ बीकानेर लाए। जब वे प्रतिमायें बीकानेर आई तो मंत्रीश्वर कर्मचन्दने संघके साथ सामने जाकर बड़े समारोहके साथ प्रवेशोत्सव किया और उनमेंसे श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टको अपने देहरासरमे मूलनायक रूपमे स्थापित किया।

ये प्रतिमायें आज भी उसी गर्भगृहमें सुरक्षित है और खास-खास प्रसगोंमे बाहर निकाल कर अष्टान्हिका महोत्सव, शान्ति-स्नात्रादिके साथ पूजनकर शुभ मुहूर्तमे वापिस विराजमान कर दी जाती हैं। गत वर्षोंमें सं० १९८७ मे जैनाचार्य श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजीके बीकानेर

---

[1] स० १५९१ के मिगसर वदि ४ को रात्रिके समय राव जयतसीने अपने चुने हुये १०९ वीर राजपूत सरदारों और भारी सेनाके साथ मुगलोकी सेना पर आक्रमण किया इससे वे लोग लाहौरकी ओर भाग छूटे और गढ पर राव जैतसी का पुन अधिकार हो गया।

बीकानेर के जैन मन्दिरों का इतिहास

बीकानेर के बसने में जैन श्रावकों का बहुत बड़ा हाथ रहा है। बीरवर बीकाजी के साथ में आए हुए प्रतिष्ठित व्यक्तियों में बोहित्थरा वत्सराज आदि के नाम उल्लेखनीय है, यह बात हम पूर्व लिख चुके हैं। वह समय धार्मिक श्रद्धाका युग था अत बीकानेर बसने के साथ साथ जैन श्रावकोंका अपने उपास्य[1] जैन तीर्थङ्करोंके मन्दिर निर्माण कराना स्वाभाविक ही है—कहा जाता है कि बीकानेर के पुराने किलेकी नींव जिस शुभ मुहूर्त में डाली गई उसी मुहूर्त में श्री आदिनाथ मुख्य चतुर्विशति जिनालय (चउवीसटा) का शिलान्यास किया गया था। इस मन्दिर के लिए मूलनायक प्रतिमा मण्डोवर से सं० १३८० में श्री जिनकुशलसूरिजी प्रतिष्ठित करायी गई थी। सं० १५६१ में मन्दिर बन कर तैयार हो गया, यह बीकानेर का सब से पहला जैन मन्दिर है और बीकाजी के राज्यकाल में ही बन चुका था। लोकप्रवाद के अनुसार श्री भाण्डासर (सुमतिनाथजी) का मन्दिर पहले बनना प्रारम्भ हुआ था पर यह तो स्पष्ट है कि उपर्युक्त मन्दिर भी चिन्तामणिजी के पीछे प्रसिद्धि में आया है। शिलालेख के अनुसार भांडा साह कारित सुमतिनाथ जी का मन्दिर सं० १५७१ में बन कर तैयार हुआ था यह संभव है कि इतने बड़े विशाल मन्दिर के निर्माण में काफी वर्ष लगे हों पर इसकी पूर्णाहुति तो श्री चिन्तामणि—चौवीसटाजी के पीछे ही हुई है। इसी समय के बीच बीकानेर से शत्रुंजय के लिये एक संघ निकला था जिसमें देवराज—वच्छराज प्रधान थे। उसका वर्णन साधुचंद्र कृत तीर्थराज चैत्य परिपाटी में आता है। उसमें बीकानेर के ऋषभदेव (चौवीसटाजी) मन्दिर के बाद दूसरा मन्दिर वीर भगवान का लिखा है अतः सुमतिनाथ (भांडासर) मन्दिर की प्रतिष्ठा महावीर जी के मन्दिर के बाद होनी चाहिये। मं० वत्सराज के पुत्र कर्मसिंहने नमिनाथ चैत्य बनवाया जिसकी संस्थापना सं० १५५६ में और पूर्णाहुति सं० १५७० में हुई। लौंकागच्छ पट्टावली के अनुसार श्री महावीरजी (बेदों का) के मन्दिर की नींव सं० १५७८ के विजयादशमीको डाली गई थी पर यह संवत् विचारणीय है। श्री नमिनाथ जिनालय के मूलनायक सं० १५६३ में प्रतिष्ठित हैं। सोलहवीं शती में ये चार मन्दिर ही बन पाये थे। सं० १५९६ में बीकानेर से निकले हुए शत्रुंजय यात्रीसंघ की चैत्यपरिपाटी में गुणरंग गणिने बीकानेर के इन चारों मन्दिरों का ही वर्णन किया है —

> "बीकानयरह तणइ संघि उच्छव रली, यात्रा सेत्रुंजगिरि पंथ कीधी चली।
> ऋषभ जिण सुमति जिण नमवि नमि सुहकरो, वीर सिद्धत्थ वर राय कुल सुन्दरो।"

अतः संवत् १५९६ तक ये चार मन्दिर ही थे यह निश्चित है। इसके पश्चात् सं० १६३३ में तुरसमखानने सीरोही लूटी और लूटमें प्राप्त १०५० धातु-मूर्त्तियां फतेपुर सीकरी में सम्राट् अकबरको भेंट की। ५६ वर्ष तक ये प्रतिमाएं शाही खजाने में रखी रहीं व अत में बीकानेर नरेश रायसिंहजी के साहाय्यसे मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रजी सम्राटसे प्राप्त कर उन्हें बीकानेर

1—बीकानेर के मन्दिरोंके बनने के पूर्व बोहित्थरा वत्सराजने चिंतामणिपार्श्वनाथ चतुर्विंशति पट्ट बनवा कर सं० १५१४

सं० १५९१ मे राव जयतसीके समयमें हुमायुंके भाई, कामरा (जो लाहौरका शासक था) ने भटनेर पर अधिकार कर बीकानेर पर प्रबल आक्रमण किया। उसने गढ़ पर अधिकार कर लिया[1]। उस समय उसके सैन्यने इस मन्दिरके मूलनायक चतुर्विंशति पट्ट के परिकरको भग्न कर डाला, जिसका उद्धार वोहिथरा गोत्रीय मंत्रीश्वर वच्छराज (जिनके वंशज वच्छावत कहलाए) के पुत्र मंत्री वरसिंह-पुत्र मं० मेघा-पुत्र मं० बयरसिंह और मं० पद्मसिंहने किया। शिलालेखमें उल्लेख है कि मह० वच्छावतोंने इस मन्दिरका परधा बनवाया। मूलनायकजीके परिकरके लेखानुसार संवत् १५९२ मे श्री जिनमाणिक्यसूरिजीने पुनः प्रतिष्ठा की। इसके पश्चात सं० १५९३, १५९५ और १६०६ में श्री जिनमाणिक्यसूरिजीने कई प्रतिमाओं एवं चतुर्विंशति जिन मातृकापट्टकी प्रतिष्ठा की।

इस मन्दिरमे दो भूमिगृह हैं जिनमेंसे एकमें सं० १६३६ मे मंत्रीश्वर कर्मचन्दके लायी हुई १०५० धातु प्रतिमाएँ रखी गईं। सम्भवत: इन प्रतिमाओंकी संख्या अधिक होनेके कारण प्रतिदिन पूजा करनेकी व्यवस्थामें असुविधा देखकर इन्हें भण्डारस्थ कर दी होंगी। इन प्रतिमाओंके यहाँ आनेका ऐतिहासिक वर्णन उ० समयराज और कनकसोम विरचित स्तवनोंमे पाया जाता है, जिसका संक्षिप्त सार यह है :—

सं० १६३३ में तुरसमखानने सिरोही की लूटमें इन १०५० प्रतिमाओंको प्राप्तकर फतहपुर सीकरीमें सम्राट अकबरको समर्पण की। वह इन प्रतिमाओंको गालकर उनमेंसे स्वर्णका अंश निकालनेके लिए लाया था। पर अकबरने इन्हें गलानेका निषेधकर आदेश दिया जहाँ तक मेरी दूसरी आज्ञा न हो, इन्हें अच्छी तरह रखा जाय। श्रावकलोगोंको बड़ी उत्कंठा थी कि किसी तरह इन्हें प्राप्तकी जाय पर ५-६ वर्ष बीत गये, कोई सम्राटके पास प्रतिमाओंके लानेका साहस न कर सका अन्तमें बीकानेर नरेश महाराजा रायसिंहको मंत्रीश्वर कर्मचन्द्रने उन प्रतिमाओंको जिस किसी प्रकारसे प्राप्त करनेके लिये निवेदन किया। राजा रायसिंहजी बहुत-सी भेंट लेकर अकबरके पास गये और उसे प्रसन्नकर प्रतिमायें प्राप्त कर लाए। सं० १६३६ आषाढसुदि ११ बृहस्पतिवारके दिन महाराजा, १०५० प्रतिमाओंको अपने डेरेपर लाये, और आते समय उन्हें अपने साथ बीकानेर लाए। जब वे प्रतिमायें बीकानेर आई तो मंत्रीश्वर कर्मचन्दने संघके साथ सामने जाकर बड़े समारोहके साथ प्रवेशोत्सव किया और उनमेसे श्री वासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टको अपने देहरासरमे मूलनायक रूपमें स्थापित किया।

ये प्रतिमायें आज भी उसी गर्भगृहमे सुरक्षित है और खास-खास प्रसगोंमे बाहर निकाल कर अष्टाह्निका महोत्सव, शान्ति-स्नात्रादिके साथ पूजनकर शुभ मुहूर्त्तमे वापिस विराजमान कर दी जाती हैं। गत वर्षोंमें सं० १९८७ में जैनाचार्य श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजीके बीकानेर

---

[1] स० १५९१ के मिगसर वदि ४ को रात्रिके समय राव जयतसीने अपने चुने हुये १०९ वीर राजपूत सरदारों और भारी सेनाके साथ मुगलोंकी सेना पर आक्रमण किया इससे वे लोग लाहौरकी ओर भाग छूटे और गढ पर राव जैतसी का पुनः अधिकार हो गया।

शिलालेखोंके अनुसार नाहटोंकी गुवाड़ में श्री आदिनाथजीके मन्दिरके अन्तर्गत श्री पार्श्वनाथजी सं० १८२१, नाहटोंकी गुवाड़में श्रीसुपार्श्वनाथजीका मन्दिर सं० १८७१, नाहटोंकी बगीचीमें पार्श्वनाथजीकी गुफा सं० १८७२ से पूर्व कोचरोंकी गुवाड़में पार्श्वनाथजी सं० १८८१, श्री सीमधर स्वामी (भांडासरजीके गढमें) स० १८८७, गौड़ी पार्श्वनाथजीके अन्तर्गत सम्मेतशिखर मन्दिर सं० १८८९ बेगानियोंकी गुवाड़के श्री चंद्रप्रभुजीका सं० १८९३, फाचरोंकी गुवाड़के श्री आदिनाथजी सं० १८९३, नाहटोंकी गुवाड़के श्री शान्तिनाथजी सं० १८९७ में प्रतिष्ठित हुए। अन्य मन्दिर भी जिनका निर्माणकाल शिलालेखादि प्रमाणोंके अभावमें अनिश्चित है, इसी शताब्दीमें बने हैं। २० वीं शताब्दीमें भी यह क्रम जारी रहा और सं० १९०५ में वैदोंके महावीरजीमें संखेश्वर पार्श्वनाथजीकी देहरी और इसी संवत्में इसके पासकी देहरीमें पंचकल्याणक, सिद्धचक्र व गिरनारजीके पट्टादि प्रतिष्ठा, सं १९२३ में गौड़ी पार्श्वनाथजीके अन्तर्गत आदिनाथजी, सं० १९२४ में सेठूजी कारित श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ मन्दिर, सं० १९३१ में रांगड़ीके चौकमें श्री कुंथुनाथजीका मन्दिर, सं० १९६४ में श्री विमलनाथजीका मन्दिर (कोचरोंमें) प्रतिष्ठित हुआ। स० १९९३ में बुगड़ोंकी बगीचीका गुरु मन्दिर, सं० १९९७ महो० रामलालजीका गुरुमन्दिर प्रतिष्ठित हुआ। सं० १९८७ में रेलदादाजीका जीर्णोद्धार हुआ। उपाश्रयादिके अन्य कई मन्दिर भी इसी शताब्दीमें प्रतिष्ठित हुए हैं पर उनके शिलालेखादि न मिलनेसे निश्चित समय नहीं कहा जा सकता। सं० २००१ वै० सुदी ६ को कोचरोंकी बगीचीमें पार्श्वजिनालय और गुरुमन्दिरकी प्रतिष्ठा हुई है। चोरोंकी सेरीमें भी श्री महावीर स्वामी एक नया मन्दिर निर्माण हुआ जिसकी प्रतिष्ठा सं० २००२ मार्गशीर्ष कृष्णा १० को हुई।

अब उपर्युक्त मन्दिरोंका पृथक्-पृथक् रूपसे संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है—

श्री चिन्तामणिजीका मन्दिर

यह मन्दिर बाजारके मध्यमें कन्दोइयोंके दुकानोंके पास है। जैसा कि पूर्व कहा जा चुका है बीकानेर दुर्गके साथ-साथ इसका शिलान्यास होकर सं० १५६१ के आषाढ़ शुक्ला ६ रविवार को पूर्ण हुआ। शिलालेखसे विदित होता है कि इसे भी संघने राव श्रीबीकाजीके राज्यमें बनवाया था। मूलनायक श्री आदिनाथ मुख्य चतुर्विंशति प्रतिमा स० १३८० में श्री जिनकुशलसूरि प्रतिष्ठित और नवलखा गोत्रीय सा० नेमिचन्द्र कारित, जो कि पहले मंडोवरमें मूलनायक रूपमें थी, यहाँ प्रतिष्ठितकी गई। चतुर्विंशति प्रतिमा होनेके कारण इस मन्दिरका नाम "चौवीसटाजी" प्रसिद्ध हुआ। सत्रहवीं शतीमें इसका नाम श्रीसार एवं एक अन्य कविने "चउवीसटा चिन्तामणि" किया है। १८ वीं शताब्दीके चैत्य परिपाटी स्तवनोंमें "चउवीसटाजी" लिखा है किन्तु अब यह नाम विस्मृत होकर श्री चिन्तामणिजीके नामसे ही इस मन्दिरकी प्रसिद्धि है, जब कि "चिन्तामणि" विशेषण साधारणतया श्री पार्श्वनाथ भगवानके सम्बोधनमें ही प्रयुक्त होता है।

जगरूप के वंश में मुहकम, सुरूप, अभयराज और राजरूप ने बनवा कर सं० १८१७ के मिती मिगसर वदि ५ गुरुवार के दिन प्रतिष्ठा करवाई थी किन्तु इस समय श्री पार्श्वनाथ भगवान को बडी धातुमय प्रतिमा विराजमान है जो सं० १५४६ जेष्ठ वदि १ गुरुवार ने दिन श्री जिनसमुद्र सूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है, न मालुम कब और क्यों यह परिवर्त्तन किया गया ? इस मन्दिर मे पाषाण की मूर्तियां बहुत सी है पर उनके प्रायः सभी लेख पच्ची में दबे हुए है।

भांडाशाह कारित सुमतिनाथ मंदिर-भांडासर

यह मन्दिर (भाडासरजी का मन्दिर) सुप्रसिद्ध राजमान्य श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर के पासमें है। वह मन्दिर ऊंचे स्थान पर तीन मंजिला बना हुआ होनेके कारण २०-२५ मीलकी दूरीसे दृश्यमान इसका शिखर भांडासाह की अमरकर्त्ति का परिचय दे रहा है। यह मन्दिर बहुत ही विशाल, भव्य, मनोहर और कलापूर्ण है। मन्दिर में प्रवेश करते ही भक्तिभाव का संचार हो जाता है और भमती के विभिन्न सुन्दर शिल्पको देखकर भाडासाह का कला-प्रेम और विशाल हृदय का सहज परिचय मिलता है। तीसरे मंजिल पर चढ़ने पर सारा बीकानेर नगर और आस-पासके गावोंका सुरम्य अवलोकन हो जाता है। इस मन्दिर के मूलनायक श्री सुमतिनाथ भगवान होने पर भी इसके निर्माता भाडासाह के नामसे इस की प्रसिद्धि भाडासरजी के मन्दिर रूपमें है। शिलालेखसे ज्ञात होता है कि सं० १५७१ के आश्विन शुक्ला २ को राजाधिराज श्री लूणकरणजी के राज्यकाल मे श्रेष्ठी भाडासाह ने इस "त्रैलोक्य-दीपक" नामक प्रासाद को बनवाया और सूत्रधार गोदाने निर्माण किया।

संखवाल गोत्रके इतिहास मे इन भांडासाह को संखवाल गोत्रीय सा० माना के पुत्र लिखा है। साहमाना के ४ पुत्र थे—१ साडा, २ भांडा, ३ तोड़ा, ४ चौंडा। जब ये छोटे थे तो इनके संम्बधियोंने श्री कीर्त्तिरत्नसूरिजी को इन्हें दीक्षित करने की प्रार्थना की, तब उन्होंने फरमाया – ये भाई लाखों रुपये जिनेश्वर के मन्दिर निर्माणादि शुभ कार्योंमे व्यय कर शासनकी बडी प्रभावना करेंगे! वास्तव मे हुआ भी वैसा ही, साहसाडा ने सत्तूकार (दानशाला) खोला, भाडाने बीकानेर मे यह अनुपम मन्दिर बनवाया, तोड़ेने संघ निकाला और चौंड़ाने भी दानशाला खोली। साहभाडा के पुत्र पासवीर पुत्र वीरम, धनराज और धर्मसी थे। वीरम के पुत्र श्रीपाल पुत्र श्रीमलने जोधपुर मे मन्दिर बनवाया। अब इस मन्दिर के विषय मे जो प्रवाद सुनने मे आये है वे लिखते हैं।

साहभाडा घीका व्यापार करते थे। चित्रावेलि या रसकुंपिका मिल जानेसे ये अपार धनराशिके स्वामी हुए। उनका इस मन्दिर को सात मंजिला और बावन जिनालय बनवाने का विचार था पर इसी बीच आपका देहावसान हो जानेसे साहसाडा या इनके पुत्रादि ने पूर्ण कराया। इनके धर्म-प्रेमके सम्बन्ध मे कहा जाता है कि जब मन्दिर की नींव डाली गई तब एक दिन घी मे मक्खीके पड़ जानेसे भाडासाह ने उसे निकाल कर अंगुली के लगे हुए घी को जूती पर

चातुर्मासमें का० सु० ३ को बाहर निकाली गई थी और मिती मिगसर वदि ४ को वापिस विराज मान की गई उसके पश्चात् सं० १९९५ में श्री हरिसागरसूरिजी के पधारने पर भादवा वदि १ को निकाली जाकर सुदि १० को रखी और सं० २००० में श्री मणिसागरसूरिजी के शुभागमनमें उपधान तप के उपलक्ष्य में बाहर निकाली गई थी। हमने इन प्रतिमाओं के लेख सं० १९९४ में लिए थे पर उनमें से आधे लेखों की नकल लोवाने से पुन स० २००० में समस्त लेखोंकी नकल की। मान्यता है कि इन प्रतिमाओं को निकालने से अनावृष्टि महामारी आदि उपद्रव शान्त हो जाते हैं। अभी इन प्रतिमाओं की संख्या ११०१ है। जिसमें जिसमें २ पाषाण की १ स्फटिक की और शेष धातु निर्मित हैं।

दूसरे भूमिगृह में पाषाण की खंडित प्रतिमायें और चरणपादुकायें रखी हुई हैं जिन के लेख भी इस ग्रन्थ में प्रकाशित किये गये हैं।

सं० १६८३ में समयसुन्दरजी ने चौवीसटा स्तवन में इस मन्दिर की खास-खास प्रति माओं के वर्णन में चतुर्विंशति जिन मातृपट्ट, श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिनकुशलसूरि मूर्ति का उल्लेख किया है। सहजकीर्ति ने भी पहले मंडप में वाम पार्श्व में मातृ पट्ट एवं जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि मूर्तियोंका उल्लेख किया है। कनककीर्ति ने पाषाण, पीतल और स्फटिक की प्रति मायें मरुदेवी माता, जिनदत्तसूरि और जिनकुशलसूरि मूर्ति का उल्लेख किया है। स० १७५५ में श्री लक्ष्मीवल्लभोपाध्याय ने सं० ३५ और स० ११ की प्राचीनतम मूर्तियाँ, शत्रुंजय, गिरनार, समेत-शिखर, विहरमान सिद्धचक्र व समवसरण का पट्ट, कटकडे में शांतिनाथ, पार्श्वनाथ, महा-वीर और विमलनाथजी के बिम्ब, प्रवेश करते दाहिनी ओर गौड़ी पार्श्व (सप्त-धातु-मय), संभवनाथजी की श्वेत मूर्ति आदि बांई ओर, दोनों तरफ भरत, बाहुबली की कायसग्ग मुद्रा मूर्ति, सप्त धातुमय सत्तरिसय यंत्र, २४ जिन मातृ पट्ट, स्फटिक पाषाण व धातु प्रतिमायें एवं दोनों दादा गुरुदेवों की मूर्तियों का उल्लेख किया है।

इस मन्दिर के दाहिनी ओर कई देहरियाँ हैं जिनमें श्री जिनहर्षसूरिजी के चरण, श्री जिनदत्तसूरि मूर्ति, मातृपट्ट, नेमिनाथजी की बरात का पट्ट, १४ राजलोक के पट्ट, सहस्रफणा पार्श्वनाथजी आदि की मूर्तियाँ हैं। एक परिकरपर सं० ११७६ मि० व० ६ को अजयपुर में महावीर प्रतिमा को राज समुदाय के द्वारा बनवाने का उल्लेख है। एक देहरी की पाषाणपट्टिका पर सं० १६२४ आषाढ सुदि १० बृहस्पतिवार को लक्ष्मीप्रधानजी के उपदेश से बीकानेर संघ के द्वारा बनवाने का उल्लेख है। मन्दिर के बांयी ओर श्री शांतिनाथजी का मन्दिर है जिसका परिचय इस प्रकार है —

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

बीकानेर के मन्दिरों में यह ६ वां मन्दिर है। इससे पहिले यहाँ आठ मन्दिर ही थे, यह हम आगे लिख चुके हैं। पाठक श्री रघुपतिजी के बनाये हुये स्तवन से ज्ञात होता है कि इसे पारख

श्री महावीर स्वामीका मन्दिर (बैदोंका चौक)

यह मन्दिर वैदों और अचारजोंके चौकके बीचमे हैं। इसके निर्माणके सम्बन्धमें नागौरी लुकागच्छकी पट्टावलीमें इस प्रकार उल्लेख पाया जाता है :—

"सं० १५४५ राव बीकैजी बीकानेर वसायौ तठा पछे सं० १५६६ माघ सुदि ५ रयणुजी बीकानेर आया रावश्री बीकाजी राज्ये घरारी जमीन लीवी। पछै बीकानेरमे रयणुजी आयो च्यार राख्यो। हिवे सं० १५६२ श्री चउवीसटैजी रो मंदिर वच्छावता तथा सर्व पंचा करायौ"'। पछै काती सुदि १५री पूजा करता रयणुजी कह्यौ आज पूजा पहला म्हे करसा तद वच्छावत कह्यौ साहजी म्हारौ करायौ मंदिर छै म्हारी मंडोवर सु लायोड़ी प्रतिमा छै सो आजरी बड़ी पूजा म्हे करसा, काले थे करजो। इणतरै माहोमाह बोलाचाली हुई। तद वच्छावता कह्यौ साहजी इतरो जोर तो नवो देहरो करायनै करो तद रयणुजी देहरैसु निकळनै घरेआया मनमें घणा उदास हुयनै विचार्यौ नवो देहरो कराया विना मूछ रहै नहीं। द्रव्य तो लगावनरी म्हारै गिनती छै नहीं पिण उणा रे मेतफो (?) राखणो नहीं इसो मनमे विचार करने चौइसटैजी जावणो छोड़दियो पछै घणा ही विल्टाला फिर्या पिण रयणुजी गया नहीं तठा पछै रयणुजी नै कमादेनी प्रति मात काल (!) प्राप्त हुआ। तद वले नागोर भाई साडेजी सोहिलजी बुलाय लीना तठा पछे एक दिवस भाया आगै वच्छावता सुं बोलाचाली वार्त्ता कही तद भाया' र वेटा कह्यौ आपरी मर्जी हुवे जितरा दाम खरचो पिण नवोदेहरो करावो इण तरै भाया, वेटा सलाह करीनै रयणुजी नागोरमे रहे छै इणतरै रहता रावश्री लूणकरणजी रा परवाणा रयणुजीनै आया तिवारै रयणुजी भांडैजी कमैजी नै कबीला समेत लारै लाया नगैजीने पिण सागे लाया रूपचदजीने कवीले विना सागै लाया रावश्री लूणकरणजी सुं मिलया रु० ५००) नजरकर्या श्री दरबारस वड़ी दिलासा दीवी और कह्यौ थे बडा साहूकार छौ सु थे तथा थारा टाबरांनै म्हारै शहरमे वसावौ विणज व्यापार करौ थारै अरज हुवै तो किया करौ थारौ मुलायजो रहसी इणभात श्रीदरबार दिलासा देयनै दुसालो दियो पछै घरे आया। इण तरै रहता आषाढ चौमासो आयो तद रूपचंदजी भोगीभंवर कमोजीनुंभाई पौसाक करने देहरै जावणनै तैयारी हुवा तद रयणुजी कह्यौ आपारै वच्छावतांसु मांहोमाहे बोलाचाली हुई सु देहरो नवो करायनै बीकानेरमे देहरै चालसां। इसो रयणुजी कह्या थकां रूपचंदजी कमोजी बोल्या कियोड़ी पौसाक तो उतारां नहीं इण ही पौसाक श्री दरबार चालौ देहरैरी जमी लेवा। तिवारै सिरपेच १ रु० (११००) री किमतरो अर रुपैया हजार एक रोक लेइनै श्री दरबार गया। रुपैया र सिरपेच नजरकीनो तद, रावजी श्री लूणकरणजी फरमायो अरज करौ। तिवारै रयणुजी अरजकरी—महाराज म्हे नवोमंदिर करावसा सो देहरै वास्तै जागांरी परवानगी दिवरावौ तिवारै श्री दरबार फरमायो आछी जागा सो थारी, जावो सैहरमें थारै चहीजे जितरी जमी देहरै वास्तै लेवौ म्हारो हुकम छै पछै रयणुजी आपरै वल पड़ती जमीन लेयनै सं० १५७८ आसोज
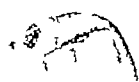
रख दिया यह देखकर कारीगरों ने सोचा जो इतनेसे घीके लिए विचार करता है, वह क्या मन्दिर बनवायेगा परीक्षार्थ कारीगरों ने सेठजी को कहा—इस मन्दिर के निरुपद्रव और सुदृढ़ होनेके लिए इसकी नीवमें घी, खोपरे डालना आवश्यक है। भांडासाह ने तत्काल सैकड़ों मन घी मंगवा कर नीवमें डालना प्रारंभ किया। कारीगरों ने विस्मित होकर घीको नीवमें डलवाना बन्दकर दिया और कहा कि क्षमा कीजिये, हम तो परीक्षा ही करना चाहते थे कि जो अंगुली के लगे घी को भूमिपे रगड़ देते हैं वे मन्दिर कैसे बनवायेंगे? भांडासाह ने कहा—हम लोग व्यर्थकी थोड़ी चीज भी न गमाकर शुभ कार्यमें अपनी विपुल अस्थिर सम्पत्ति को लगाने में नहीं हिचकते। और घीको यत्र-तत्र डालने, गिराने से जीव विराधना की सम्भावना रहती है अब तो यह घी जिस नीवमें डालने के निमित्त आया है उसीमें डाला जायगा। ऐसा कह कर सारा घी नीवमें उंडेल दिया गया। इससे आपकी गहरी मनस्विताका परिचय मिलता है। कहा जाता है कि इस मन्दिरको बनवाने के लिए जल "नाल" गांवसे और पत्थर जेसलमेर से मंगवाते थे। अतएव इस मन्दिर के निर्माण में लाखों रुपये व्यय हुए थे, इसमें कोई शक नहीं। कई वर्ष पूर्व बीकानेर के संघने जीर्णोद्धार, व रंग व सुनहरे बेल पत्तियोंका काम कराके इसकी शोभामें अभिवृद्धि की है।

राजसमुद्रजीकृत स्तवन में इसे त्रिभूमिया और सुमरंग एवं लालचंद ने स्तवन में चौभूमिया और चौमुखी के रूपमें उल्लेख किया है।

श्री सीमंधर स्वामीका मन्दिर

यह मन्दिर भांडासरजी के अहाते में सं० १८८७ में बना था। यहां मिती अषाढ़ शुक्ला १० को २५ जिन बिम्बोंकी प्रतिष्ठा श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा होनेका उल्लेख अप्रकाशित एक स्तवन में पाया जाता है। शिलालेख में इस मन्दिर का निर्माण उ० क्षमाकल्याणजी गणिके शि० धर्मानंदजी के उपदेश से होनेका उल्लेख है। इस मन्दिर की एक देहरी में क्षमाकल्याणोपाध्यायजी की मूर्ति व आलेमें कई साध्वियों की चरणपादुकाएं हैं।

श्री नमिनाथजी का मन्दिर

श्री भांडासरजी के मन्दिर के पीछे जो लक्ष्मीनारायण पार्कमें यह मन्दिर अवस्थित है। मंत्रीश्वर वच्छराज के पुत्र मं० कर्मसिंह ने यह मन्दिर सं० १५७० में बनवाया। मूलनायकजी की प्रतिष्ठा सं० १५६३ माघ वदि १ गुरुवार को श्री जिनमाणिक्यसूरिजी ने की, अन्य प्रतिमाओं के लेख पर्याप्त घस हुए हैं। यह मन्दिर भी विशाल, सुन्दर और कला-पूर्ण है। इस मन्दिर में अवस्थित गुरु पादुका आदि के सभाके द्रव्य सहाय्यसे बोरड़िया सीपानी चुन्नीलाल ने सं० १९२४ में बनवाया। इस मन्दिर के अधिष्ठायक भोमियाजी बड़े चमत्कारी हैं और प्रति गुरुवार को पहुत से लोग दर्शन करने आते हैं। कहा जाता है कि ये भोमियाजी मन्दिर निर्माता मंत्री कर्मसिंहजी स्वयं हैं।

श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर

यह मन्दिर नाहटोंकी गुवाड़ मे है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १६६२ के चैत्र वदि ७ को युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिजीने की थी। इस समय अन्य ४० मूर्त्तियोंके प्रतिष्ठित होनेका उल्लेख सुमतिकल्लोल कृतस्तवन मे है। मूलनायक श्री ऋषभदेवजी की प्रतिमा बडी मनोहर, विशाल (६८ अंगुलकी) और सप्रभाव होनेके कारण प्रतिदिन सैकड़ोंकी संख्यामे नरनारी दर्शनार्थ आते है। इस मंदिरको सुमतिकल्लोलजीने "शत्रुञ्जयावतार" शब्दोंसे संबोधित किया है। सं० १६८६ मिति चैत्र वदि ४ को चोपडा जयमा श्राविकाके बनवाई हुई श्री जिनचन्द्रसूरि मूर्त्ति श्री जिनसिंहसूरि चरण, मरुदेवीमाता व भरत चक्रवर्त्ती (हाथी पर आरूढ) की मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा श्री जिनराजसूरिजीने की थी उसके बाद स० १६८७ ज्येष्ठ सुदि १० भौमवारको भरत-वाहुवलीकी प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा और सं० १६६० फागुण वदि ७ के गणधर श्री गौतमस्वामीके बिम्बकी प्रतिष्ठा श्री जिनराजसूरिजीने की थी। भमतीमे पाच पाडवोंकी देहरी है जिसमे पाच पाडवोंकी मूर्तियां सं० १७१३ आषाढ वदि ६ को स्थापित हुई। कुन्ती और द्रौपदीकी मूर्त्तियों पर लेख देखने मे नहीं आते। इस देहरीके मध्यमे श्री आदीश्वरजीके चरण श्राविका जयतादे कारित व सं० १६८६ मार्गशीर्ष महीनेमे श्री जिनराजसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। उ० श्री धनराजके चरण मूलनायकजी की प्रतिष्ठाके समय के व एक अन्य चरण सं० १६८५ के है।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर श्री ऋषभदेवजीके मन्दिरके अहातेमे है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १८२६ आषाढ़ सुदि ६ गुरुवारको श्री जिनलाभसूरिजीनेकी। यह मदिर वेगाणी अमीचदजीके पुत्र विभारामजी की पत्नी चितरग देवी ओर मुलतानके भणसाली चौथमलजी की पुत्री वनीने बनवाया था।

श्री महावीरजी का मन्दिर (डागोंका)

यह मन्दिर श्री वासुपूज्यजी के पीछे और पुंजाणी डागोंकी पोलके सामने है। इस मन्दिर की प्रतिष्ठा का कोई निश्चित उल्लेख नहीं मिला पर श्रीजिनचद्रसूरिजी के विहारपत्रमे सं० १६६३ मे "तत्र प्रतिष्ठा" लिखा है जिससे संभव है कि यह उल्लेख इसी मन्दिर के प्रतिष्ठा का सूचक है। मूलनायकजीकी पीले पाषाण की प्रतिमा है जिस पर कोई लेख नहीं पाया जाता। मन्दिर के दाहिनी ओर देहरी में सं० ११७६ मिती मिगसर वदि ६ को जागलकूप (जागलू) के वीर-विधि-चैत्यमे स्थापित श्री शातिनाथ भगवान की प्रतिमा का विशाल परिकर है जिसमे इसे श्रावक तिल्हक के निर्माण करवाने का उल्लेख है। विधि चैत्यका सम्बन्ध खरतर गच्छ से है, अतः तत्कालीन प्रभावक युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि प्रतिष्ठित होना विशेष संभव है। लेखका 'गुणरत्न रोहणगिरि' वाक्य श्रीजिनदत्तसूरिजी के गणधर सार्धशतक के "गुण मणि रोहण गिरिणो" आदि पद-से साम्य होनेके कारण भी इस सम्भावना की पुष्टि होती है।

सुदि १० मी महावीरजी रै देहरै री नीवरो पायो भयो वठा पछै वाकीदसुं रूपचंदजी कमोजी नगोजी देहरै रो काम करावै छै रुपया हजार २५ देहरै वास्ते रयणुजी न्यारा राख दीना छै इणतरै देहरै रो काम हुवरेयो छै तिण समाजोगे सोहिलजी रो पुत्र रूपजी रो भाई खेतसीजी रो विवाह नागोरमें मड्यो तिण ऊपरे रयणुजी, रूपचंदजी कमाजी, नागोर गया भांडोजी नगोजी बीकानेर रह्या। रयणुजी नागोर जांवता रूपचंदजीरै कह्यौ सुं देहरै रे कामरीमोलावण नगोजीने सुपी रुपैया हजार १५ सौंप्या भर कह्यौ म्हांने नागोरमें मास १० तथा १२ लागसी सुं देहरैरो काम ताकीद सुं करावजो। इसी मोलावण देने रयणुजी नागोर गया हिवे नगोजी लारै देहरैरे कमठाणे रो काम करावे छै तिण समाजोगे कोडमदेसर रो वासी वेद सोनो घरमें भूखा उण आयने नगोजीने कह्यौ मने देहरै रे कमठाण ऊपर राखो। इसो कह्यां ठिकाणेदार जाण नगोजी कमठाणे ऊपर राख्यो इणतरै राखतां थकां तीन पांती रो देहरो नगोजी सोनै हस्ते करायो तिणरै रुपैया हजार १५ रयणुजी सूंप्या हुंता तिके लाग गया तिणारै सोने नगोजीने कह्यौ कमठाणैने वछे रुपीया देवो तिणारैं नगेजी कह्यौ अवार काम रोजो करौ वावोजी आयां वछे कमठाण्यौ करावसां इण तरै तीन पांतीरो देहरो महावीरजी रो करायो।"

संभव है अवशेष काम वैदोंने करवाके पूर्ण किया हो। समयसुन्दरजीके स्तवनमें "कुंयले चैत्य करावियो भज दंड कलश प्रधान" लिखा है अत इसकी प्रतिष्ठा कंवला (उपकेश) गच्छके आचार्यने ही कराई है। इस मंन्दिरमें ५ देहरियां है जिनमें सहस्रफणा पार्श्वनाथजीकी प्रतिष्ठा सं० १६०५ वैशाख सुदि १५ को खरतर गच्छ नायक श्रीजिनसौभाग्यसूरिजीने की थी। उसके पासकी देहरीमें समस्त वय संघकारित गिरनारतीर्थपट्ट, नेमि पंच-कल्याणकपट्ट आदि की प्रतिष्ठा सं० १६०५ माघ शुक्ला ५ को उपकेश गच्छाचार्य श्री देवगुप्तसूरिजीने की है। इस मंदिरके भूमिगृहमें पहले बहुतसी प्रतिमाएं होनेका कहा जाता है पर अब तो मूल मंदिरसे निकलते पांव ओरकी देहरीमें भगवानके पद्मासनके नीचे ७५ धातु प्रतिमाएं सुरक्षित हैं। जिन्हें सं० २००० में उपधान तपके उपलक्ष्यमें बाहर निकाली गई थी। कहा जाता है कि यह देहरी श्रीयुक्त मुन्नीलालजी वैद (देवावत) ने बनवाई थी। यह मंदिर १४ गुवाड़का प्रधान मंदिर है।

श्री वासुपूज्यजीका मन्दिर

यह मंदिर भी चिन्तामणिजीके पास जहां मत्थरणोंके घर है, अवस्थित है। कहा जाता है कि यह पन्नावतोंका घर-देरासर था। सं० १६३६ में सिरोहीकी लूटसे प्राप्त मूर्तियों में से श्री वासुपूज्य मुख्य चतुर्विंशति पट्टको मूलनायकके रूपमें स्थापित किया। तभी से यह वासुपूज्यजीके मंदिरके नामसे प्रसिद्ध हुआ। गर्भगृहके दाहिनी और बायीं ओर दो देहरियें हैं। इस मंदिरसे सटा हुआ दिगम्बर जैन मंदिर है।

श्री चन्द्रप्रभुजी का मन्दिर

यह मन्दिर वेगाणीयों की पोलके सामने है। शिलापट्ट के लेखमे सं० १८६३ आ० शुक्ला ७ को समस्त वेगाणी संघ द्वारा प्रासादोद्धार करवा कर श्री जिनसौभाग्यसूरिजी से प्रतिष्ठा करवानेका उल्लेख है।

श्री अजितनाथजी का देहरासर

यह रागडी के चौकके पास श्री सुगनजी के उपासरे के ऊपर है। इसके निर्माण का कोई उल्लेख नहीं मिलता। मूलनायक प्रतिमा सं० १६०५ वैशाख शुदी १५ को कोठारी गेवरचंद कारित और श्रीजिनसौभाग्यसूरि प्रतिष्ठित है। इसके पासमें गुरु-मंदिर है जिसमे श्री जिनकुशलसूरिजी को मूर्त्ति सं० १६८८ माघ सुदि १० को नाहटा आसकरणजी कारित और उ० जयचन्द्रजी प्रतिष्ठित है। नीचे की एक देहरी मे उ० श्रीक्षमाकल्याणजी की मूर्त्ति प्रतिष्ठित है।

श्री कुंथुनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर रागडी के चौकके मध्यमें है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १६३१ मिति ज्येष्ठ सुदि १० को श्री जिनहंससूरिजी ने की। मूलनायकजी की प्रतिमा मिती वैशाख वदि ११ प्रतिष्ठित है। यह मंदिर उ० श्री जयचंद्रजी के स्वत्वमे है। इनकी गुरु परम्परा के ६ पादुकाओं की प्रतिष्ठा सं० १६५८ अषाढ सुदि ११ गुरुवार को हुई थी।

श्री महावीर स्वामीका मन्दिर

रागडी के चौकके निकटवर्त्ती बौहरों की सेरीमे स्थित खरतर गच्छीय उपाश्रय के समक्ष यह सुन्दर और कलापूर्ण नूतन जिनालय श्रीमान् भैरूँदानजी हाकिम कोठारी की ओरसे बन कर सं० २००२ मिती मार्गशीर्ष शुक्ला १० के दिन श्रीपूज्य श्री जिनविजयेन्द्रसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित हुआ। बीकानेरमे संगमर्मर के शिखरवाला यह एक ही जिनालय है। भगवान महावीर के २७ भव, श्रीपाल चरित्र, पृथ्वीचन्द्र गुणसागर चरित्र, आदि जैन कथानकों के भित्ति-चित्र बड़े सुन्दर निर्माण किये गये हैं मन्दिर मे प्रवेश करते ही सामने के आलोंमे गौतम स्वामी और दादा साहब श्री जिनकुशलसूरिजी की प्रतिमाएँ विराजमान हैं। पहले यह मंदिर उपाश्रय के ऊपर देहारसर के रूपमें था जहाँ श्रीवासुपूज्य भगवान मूलनायक थे, वे अभी इस मन्दिर के ऊपर तल्लेमें विराजमान हैं।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर नाहटों की गुवाड़ मे छत्तीबाई के उपासरे से संलग्न है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १८७१ माघ सुदि ११ को श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा करने का उल्लेख जीतरंग गणिकृत स्तवन में पाया जाता है मन्दिर के शिलालेख मे भी सं० १८७१ माघ सुदि ११ को श्रीसघके कराने और श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है मूलनायक प्रतिमा युगप्रधान श्रीजिनचंद्र-

श्री अजितनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर कोचरों की गुवाड़ में सिरोहियों के घरोंके पास है। जैसा कि हम आगे लिख चुके हैं इसका निर्माणकाल सं० १६७० के लगभग का है। मूलनायक श्रीअजितनाथजी की मूर्ति सं० १६४१ की प्रतिष्ठित है पर अन्य स्थान से लायी हुई ज्ञात होती है। इसी मंदिर में सं० १६६४ वैशाख शुक्ला ७ को विजयसेनसूरि प्रतिष्ठित हीरविजयसूरि मूर्ति है। सभामण्डप के शिलापट्ट में सं० १८०४ में दीपविजयजीके उपदेशसे श्रीसंघके द्वारा प्रतिमजय करानेका उल्लेख है और एक अन्य लेख में सं० १८५५ में इस मंदिर के जीर्णोद्धार मुक्तिविजय गणि के उपदेश से होनेका उल्लेख है। उसके पश्चात् सं० १९९६ में इसका जिर्णोद्धार हुआ।

बीकानेर के प्राचीन एवं प्रधान ८ मंदिरों का परिचय उनके अन्तर्गत मंदिरों के साथ दिया जा चुका है। अब शहर के अन्य मंदिरों का परिचय देकर फिर बाहर के मंदिरों का परिचय दिया जायगा।

श्री विमलनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर कोचरोंकी गुवाड़में अजितनाथजी के मंदिर के पास है। सं० १९१४ माघ शुक्ला १३ शनिवार को कोचर अमीचंद हजारीमल ने इसकी प्रतिष्ठा करवाई। मूलनायक प्रतिमा सं० १९२१ माघ सुदि ७ का रामनगर में समामाई कारित और शांतिसागरसूरि प्रतिष्ठित है। हीरविजयसूरि और सुधर्मास्वामी की चरणपादुका के लेखमें इस मन्दिर के वास्ते सीरोहिया सेवमालजी ने मेहता मानमलजी कोचरके हस्ते २१४ गज और डागा दूलीचंद ने गज १५।।= डागा पूनमचंद की बहूके द्वारा गज १२८।।= जमीन देनेका उल्लेख मिलता है।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह जिनालय सं० १८८१ मिती जेठ सुदि १३ को इसविजयजी के उपदेश से कोचर—सिरोहिया संघने उपर्युक्त मन्दिर के पास बनवाया।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

उपर्युक्त मन्दिर से संलग्न है इसके निर्माण का कोई शिलालेख नहीं है। मूलनायक जी सं० १८६३ माघ सुदी १० प्रतिष्ठित है।

श्री शांतिनाथजी का देहरासर

यह देहरासर उपर्युक्त मन्दिर के पास कोचरों के उपासरे में है। इसके निर्माण का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसमें सं० १९१४ की प्रतिष्ठित साध्वी चंदनजी की पादुका और सं० १९७२ की प्रतिष्ठित जैनाचार्य श्री विजयानंदसूरिजी की मूर्ति है।

सेठिया का व दूसरा श्री जिनहर्षसूरिजी का है। इस मन्दिर के सन्मुख खरतर गच्छीय मथेन सामीदास की जीवित छतड़ी और उसकी पत्नीकी छतडी स० १७६० की बनी हुई है। इसके आगे गुरु पादुका मन्दिर है। जिसमे दादा श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण और खरतर गच्छाचार्यों का पट्टावली पट्टक है जिसमे ७० चरण है, इसकी प्रतिष्ठा सं० १८६६ वैशाख शुक्ला ७ को उ० क्षमाकल्याणजी ने की थी। इस मन्दिर के दाहिनी ओर श्री आदिनाथजी का मन्दिर है जिसे सं० १९२३ फाल्गुन बदि ७ को खरतर गच्छीय दानसागर गणिके उपदेश से सुश्रावक धर्मचन्द्र सुराणा की पत्नी लाभकुवर बाईने बनवाया। यहा ओलीजीमे नवपद मडल की रचना स० १९१६ से प्रारम्भ हुई, तत्कालीन महाराजा श्री सरदारसिंहजी ने स्वयं समारोह पूर्वक आकर ११) भेंट किये। सं० १९१७ के आश्विन सुदि ७ को पुनः नवपद मंडल रचा गया, महाराजा ने आकर ५०) रु० भेंट किये और प्रति वर्ष पूजाके लिए ५०) देनेका मंत्रीको हुक्म दिया इस मन्दिर के सन्मुख सुन्दर बगीचा लगा हुआ है जिसके कारण मन्दिर की शोभामे अभिवृद्धि हो गई है।

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ (सेढूजीका) मन्दिर

यह मन्दिर उपर्यक्त बगीचे में प्रवेश करते दाहिने हाथकी ओर है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९२४ में समुद्रसोमजी (सेढूजी) ने स्वयं इस मन्दिर को बनवा कर की। यद्यपि यह मन्दिर पार्श्वनाथ भगवान का है पर यतिवर्य्य सेढूजी के बनवाया हुआ होनेसे उन्हींके नामसे प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १९१२ प्रतिष्ठित है। इस मन्दिर के दाहिनी ओर शालामें १ सुमतिविशाल २ सुमतिजय ३ गजविनय और समुद्रसोमजी के चरण प्रतिष्ठित थे जो शालाके भग्न हो जानेसे मन्दिर के पार्श्ववर्त्ती श्रीमद् ज्ञानसारजी के समाधिमंदिर मे रख दिये गये हैं।

श्री ज्ञानसार समाधिमन्दिर

श्रीमद् ज्ञानसारजी १९ वीं शताब्दी के राजमान्य परम योगी, उत्तम कवि और खरतर गच्छके प्रभावशाली मुनिपुङ्गव थे। उन्होंने अपने अंतिम जीवन के वहुत से वर्ष गौडी पार्श्वनाथजी के निकटवर्त्ती ढढोंकी साल आदि मे बिताये थे। सं० १८९८ मे आपका स्वर्गवास हुआ। उनके अग्निसंस्कार स्थल पर यह मन्दिर बना जिसमे आपके चरण सं० १९०२ मे प्रतिष्ठित है।

कोचरोंका गुरु मन्दिर

गौड़ी पार्श्वनाथजीसे स्टेशनकी ओर जाती हुई सड़कपर यह गुरुमदिर हाल ही मे बना है। इसकी प्रतिष्ठा स० २००१ वैशाख सुदि ६ शुक्रवार को तपागच्छीय आ० श्रीविजयवल्लभसूरिजी ने की है इसमे प्रवेश करते ही सामने कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचंद्रसूरि, जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरि और जैनाचार्य श्री विजयानदसूरिजी की मूर्तित्रय स्थापित है। उसके पीछे की ओर श्री पार्श्वनाथ स्वामी का मन्दिर है जिसमें स० २००० वैशाख सुदि ६ को रायकोट

सूरिजीकी प्रतिष्ठित है। यहाँ सं० १६०४, १६०५, १६१६ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी प्रतिष्ठित कई प्रतिमाएँ हैं। दूसरे तल्लेमें दो देहरियां हैं जिनमें एकमें चौमुखजी हैं। खरतर गच्छ पट्टावली के अनुसार ऊपर तल्लेका मन्दिर श्रीसंघने सं० १६०४ माघ सुदि १० को बनाया और यहाँ भी जिनसौभाग्यसूरिजी ने बिम्ब प्रतिष्ठा की। बगल की देहरी व ऊपर की कई प्रतिमाएँ सं० १६०४ ज्येष्ठ कृष्ण ८ शनिवार श्रीजिनसौभाग्यसूरि प्रतिष्ठित है। ये प्रतिमाएं यहीं प्रतिष्ठित हुई जिनका उल्लेख श्रीजिनसौभाग्यसूरि व अभय कृत स्तवनों में पाया जाता है।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर नाहटों की गुवाड़ में खरतराचार्य गच्छके उपाश्रय के सन्मुख है। इसका निर्माण सं० १८६७ वैशाख शुक्ल ६ गुरुवार को श्रीसंघ ने श्रीजिनोदयसूरि के समय में कराया। मूलनायकजी की प्रतिमा गोलछा मानसिंह मोतीलाल कारित और श्री जिनोदयसूरि प्रतिष्ठित है। बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव गोलछा माणकचंदजी ने करवाया। इसके दोनों तरफ दो देहरियां हैं। एक अलग देहरी में गौतमस्वामी की मूर्ति व जिनसागरसूरि के चरण स्थापित हैं।

श्री पद्मप्रभुजी का देहरासर

यह पन्नीबाई के उपाश्रय में है। इसकी प्रतिष्ठा कब हुई यह अज्ञात है।

श्री महावीर स्वामीका मन्दिर

यह मन्दिर आसानियों के चौकमें संखेश्वर पार्श्वनाथजी के मन्दिर के संलग्न है। इसकी प्रतिष्ठा या निर्माणकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

श्री सखेस्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर उपर्युक्त मंदिर और पायचंदगच्छ के उपाश्रय से संलग्न है। यह भी कब बना अज्ञात है।

बीकानेर शहर में परकोटे अन्दर जो मन्दिर हैं उनका परिचय दिया जा चुका है अब परकोट के बाहर के मन्दिरों का परिचय दिया जा रहा है।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर गोगादरवाजा के बाहर बगीचेमें है। सं० १८८६ माघ शुदि ५ को १२०००) रुपये लगकर जैन संघ द्वारा श्रीजिनहर्षसूरिजी के उपदेश से प्रासादोद्धार कराने का उल्लेख शिलालेख में है। मन्दिर के मूलनायकजी सं० १७२३ में आद्यपक्षीय खरतर श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। मन्दिर की दाहिनी ओर श्री समेतशिखरजी का मन्दिर है जिसमें श्री समेतशिखरजी का विशाल पट्ट सं० १८८६ माघ शुक्ला ६ को सेठिया अमीचंद आदिने बनवाया और श्री जिनहर्षसूरिजी के करकमलों से प्रतिष्ठा करवाई। इस मन्दिरमें दोनों ओर दीवाल पर दो चित्र बने हुए हैं, जिनमें एक चित्र मस्तयोगी ज्ञानसारजी और अमीचंदजी

सेठिया का व दूसरा श्री जिनहर्षसूरिजी का है। इस मन्दिर के सन्मुख खरतर गच्छीय मथेन सामीदास की जीवित छतड़ी और उसकी पत्नीकी छतड़ी स० १७६० की बनी हुई है। इसके आगे गुरु पादुका मन्दिर है। जिसमे दादा श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण और खरतर गच्छाचार्योंका पट्टावली पट्टक है जिसमे ७० चरण है, इसकी प्रतिष्ठा सं० १८६६ वैशाख शुक्ला ७ को उ० क्षमाकल्याणजी ने की थी। इस मन्दिर के दाहिनी ओर श्री आदिनाथजी का मन्दिर है जिसे सं० १६२३ फाल्गुन वदि ७ को खरतर गच्छीय दानसागर गणिके उपदेश से सुश्रावक धर्मचन्द्र सुराणा की पत्नी लाभकुवर बाईने बनवाया। यहा ओलीजीमे नवपद मडल की रचना सं० १६१६ से प्रारम्भ हुई, तत्कालीन महाराजा श्री सरदारसिंहजी ने स्वयं समारोह पूर्वक आकर ११) भेंट किये। सं० १६१७ के आश्विन सुदि ७ को पुनः नवपद मंडल रचा गया, महाराजा ने आकर ५०) रु० भेंट किये और प्रति वर्ष पूजाके लिए ५०) देनेका मंत्रीको हुक्म दिया इस मन्दिर के सन्मुख सुन्दर बगीचा लगा हुआ है जिसके कारण मन्दिर की शोभामे अभिवृद्धि हो गई है।

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ (सेढूजीका) मन्दिर

यह मन्दिर उपर्यक्त बगीचे में प्रवेश करते दाहिने हाथकी ओर है। इसकी प्रतिष्ठा स० १६२४ मे समुद्रसोमजी (सेढूजी) ने स्वयं इस मन्दिर को बनवा कर की। यद्यपि यह मन्दिर पार्श्वनाथ भगवान का है पर यतिवर्य्य सेढूजी के बनवाया हुआ होनेसे उन्हींके नामसे प्रसिद्ध है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १६१२ प्रतिष्ठित है। इस मन्दिर के दाहिनी ओर शालामें १ सुमतिविशाल २ सुमतिजय ३ गजविनय और समुद्रसोमजी के चरण प्रतिष्ठित थे जो शालाके भग्न हो जानेसे मन्दिर के पार्श्ववर्त्ती श्रीमद् ज्ञानसारजी के समाधिमंदिर मे रख दिये गये हैं।

श्री ज्ञानसार समाधिमन्दिर

श्रीमद् ज्ञानसारजी १६ वीं शताब्दी के राजमान्य परम योगी, उत्तम कवि और खरतर गच्छके प्रभावशाली मुनिपुङ्गव थे। उन्होंने अपने अंतिम जीवन के वहुत से वर्ष गौड़ी पार्श्वनाथजी के निकटवर्त्ती ढढोंकी साल आदि मे बिताये थे। सं० १८६८ मे आपका स्वर्गवास हुआ। उनके अग्निसंस्कार स्थल पर यह मन्दिर बना जिसमे आपके चरण सं० १६०२ मे प्रतिष्ठित है।

कोचरोंका गुरु मन्दिर

गौड़ी पार्श्वनाथजीसे स्टेशनकी ओर जाती हुई सड़कपर यह गुरुमंदिर हाल ही मे बना है। इसकी प्रतिष्ठा सं० २००१ वैशाख सुदि ६ शुक्रवार को तपागच्छीय आ० श्रीविजयवल्लभसूरिजी ने की है इसमे प्रवेश करते ही सामने कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचंद्रसूरि, जगद्गुरु श्रीहीरविजयसूरि और जैनाचार्य श्री विजयानदसूरिजी की मूर्तित्रय स्थापित है। उसके पीछे की ओर श्री पार्श्वनाथ स्वामी का मन्दिर है जिसमें सं० २००० वैशाख सुदि ६ को रायकोट

सूरिजीकी प्रतिष्ठित है। यहाँ सं० १६०४, १६०५, १६११ में श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी प्रतिष्ठित कई प्रतिमाएं हैं। दूसरे तल्लेमें दो देहरियां हैं जिनमें एकमें चौमुखजी हैं। खरतर गच्छ पट्टावली के अनुसार ऊपर तल्लेका मन्दिर श्रीसंघने सं० १६०४ माघ सुदि १० को बनाया और यहां भी जिनसौभाग्यसूरिजी ने बिम्ब प्रतिष्ठा की। बगल की देहरी व ऊपर की कई प्रतिमाएं सं० ११०४ ज्येष्ठ कृष्ण ८ शनिवार श्रीजिनसौभाग्यसूरि प्रतिष्ठित है। ये प्रतिमाएं यहीं प्रतिष्ठित हुई जिनका उल्लेख श्रीजिनसौभाग्यसूरि व अभय कृत स्तवनों में पाया जाता है।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर नाहटों की गुवाड़ में खरतराचार्य गच्छके उपाश्रय के सन्मुख है। इसका निर्माण सं० १८१७ वैशाख शुक्ल ६ गुरुवार को श्रीसंघ ने श्रीजिनोदयसूरि के समय में कराया। मूलनायकजी की प्रतिमा गोलछा थानसिंह मोतीलाल कारित और श्री जिनोदयसूरि प्रतिष्ठित है। बिम्ब प्रतिष्ठा महोत्सव गोलछा माणकचंदजी ने करवाया। इसके दोनों तरफ दो देहरियां हैं। एक अलग देहरी में गौतमस्वामी की मूर्ति व जिनसागरसूरि के चरण स्थापित हैं।

श्री पद्मप्रभुजी का देहरासर

यह पन्नीबाई के उपाश्रय में है। इसकी प्रतिष्ठा कब हुई यह अज्ञात है।

श्री महावीर स्वामीका मन्दिर

यह मन्दिर आसानियों के चौकमें संखेश्वर पारश्वनाथजी के मन्दिर के संलग्न है। इसकी प्रतिष्ठा या निर्माणकाल का कोई उल्लेख नहीं मिलता।

श्री सखेश्वर पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर उपर्युक्त मंदिर और पायचंदगच्छ के उपाश्रय से संलग्न है। यह भी कब बना अज्ञात है।

बीकानेर शहर में परकोटे अन्दर जो मन्दिर हैं उनका परिचय दिया जा चुका है अब परकोट के बाहर के मन्दिरों का परिचय दिया जा रहा है।

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर गोगादरवाजा के बाहर बगीचेमें है। सं० १८८९ माघ सुदि ५ को १२०००) रुपये खर्चकर जैन संघ द्वारा श्रीजिनहर्षसूरिजी के उपदेश से प्रासादोद्धार कराने का उल्लेख शिलालेख में है। मन्दिर के मूलनायकजी सं० १७२१ में आद्यपक्षीय खरतर श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। मन्दिर की दाहिनी ओर श्री समेतशिखरजी का मन्दिर है जिसमें भी समेतशिखरजी का विशाल पट्ट सं० १८८६ माघ शुक्ला १ को सेठिया अमीचंद आदिने बनवाया और श्री जिनहर्षसूरिजी के करकमलों से प्रतिष्ठा करवाई। इस मन्दिरमें दोनों ओर दीवाल पर दो चित्र बने हुए हैं, जिनमें एक चित्र महायोगी ज्ञानसारजी और अमीचंदजी

रेलदादाजी

यह स्थान वीकानेर से १ मील, गंगाशहर रोड पर है। सं० १६७० मे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी का बिलाड़े मे स्वर्गवास होनेके पश्चात् भक्तिवश बीकानेर के संघ ने गुरुमन्दिर बनवाकर सं० १६७३ को मिती वैशाख सुदि ३ को स्तूपमे चरण पादुकाओं की प्रतिष्ठा करवाई। उसके पश्चात् स० १६७४ (मेडता) मे स्वर्गस्थ श्री जिनसिंहसूरिजी का स्तूप बनवाकर उसमे सं० १६७६ मिती जेठ वदि ११ को चरण स्थापित किए। इसके अनन्तर इसके आसपास यति, श्रीपूज्य, साधु-साध्वियों का अग्निसंस्कार होने लगा और उन स्थानों पर स्तूप, पादुकाएं, चौकिया आदि बनने लगीं। अभी यहा १०० के लगभग स्तूप व चरण पादुकाएं विद्यमान है। प्रतिदिन और विशेष कर सोमवार को यहा सैकडों भक्त लोग दर्शनार्थ आते है। सं० १६८६ मे श्री मोतीलालजी वाठिया की ओर से इसका जीर्णोद्धार हुआ है और सं० १६८७ ज्येष्ठ सुदी ५ रविवार को जिनदत्तसूरि मूर्त्ति, श्रीजिनदत्तसूरि, श्रीजिनचन्द्रसूरि, जिनकुशल सूरि और जिनभद्रसूरि के संयुक्त चरण पादुकाओ की प्रतिष्ठा हो कर युगप्रधान श्री जिनचन्द्र-सूरिजीके स्तूप से संलग्न सुन्दर छत्रियों मे स्थापित किए गए है। यहाके लेखों से बहुत से यति साधुओं के स्वर्गवास का समय निश्चित हो जाता है, इसलिए यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्व का है। बीचके खुले चौकमे संगमरमरका एक विशाल चबूतरा बना है जिसमे आदर्श साध्वीजी श्री स्वर्णश्रीजी की चरण पादुकाएं स्थापित है। चार दीवारी के बाहर आचार्य श्री जयसागरसूरिजी की छतरी भी हाल ही मे बनी है।

शिवबाड़ी

यह सुरम्य स्थान वीकानेरसे ३ मील की दूरीपर है। शिवजी (लालेश्वर महादेव) का मन्दिर होनेसे इस स्थान का नाम शिवबाडी है यहा के बगीचे मे एक सुन्दर तालाव है। श्रावण महीने मे तालाव भरजाता है और यहा कई मेले लगते है। श्रावण सुदि १० को जैन समाज का मेला लगता है उस दिन वहा पूजा पढाने के पश्चात भगवान की रथयात्रा निकालकर बगीचेमे तालाव के तट पर लेजाते है और वहा स्नात्रपूजादि कर वापिस मन्दिर मे ले आते हैं।

श्री पार्श्वनाथजीका मन्दिर—इसे उ० श्री सुमतिमंडनगणि (सुगनजी महाराज) के उपदेश से बीकानेरनरेश श्रीडूगरसिंहजी के बनवाने का उल्लेख मोतीविजयजी कृत स्तवन मे है। दादासाहब के चरणों के लेखके अनुसार इसका निर्माण सं० १६३८ मे हुआ था। मूलनायकजी की प्रतिमा सं० १६३१ मे श्रीजिनहंससूरि द्वारा प्रतिष्ठित है। दादासाहबके चरण व चक्रेश्वरीजी की मूर्त्ति श्री सैंसकरणजी सावणसुखा की ओर से स्थापित है।

ऊदासर

बीकानेर से ६ मील की दूरी पर यह गाव है। यहा ओसवालोंके १०० घर है।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर—इस मन्दिर को श्री सदारामजी गोलछा ने बनवाया था

में प्रतिष्ठित पद्मनाथ प्रतिमा है। गुरु मन्दिर के आगे पार्श्वयक्ष व मणिभद्र व पद्मावती देवी की मूर्तियाँ है।

नयी दादावाड़ी

यह उपर्युक्त मन्दिर के पास मरोठी एवं दूगड़ों की बगीची में है। इसमें श्री जिनेश्वरसूरि, अभयदेवसूरि, श्री जिनकुशलसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि—पांच गुरुदेवों के चरण दूगड़ मंगलचन्द हनुमानमल कारित और सं० १९९३ मिती ज्येष्ठ बदि ६ के दिन श्रीपूज्य श्री जिन—चारित्रसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

महोपाध्याय रामलालजीका स्मृतिमंदिर

यह स्थान भी उपर्युक्त गंगाशहररोड पर श्री पायचन्दसूरिजी के सामने है। इसमें सं० १९९७ ज्ये० सु० ५ प्रतिष्ठित श्री जिनकुशलसूरि मूर्ति व चरण स्थापित है उसके सामने महो० रामलालजी यतिकी मूर्ति स्थापित है। जिसे उनके शिष्य क्षेमचन्द्रजी और प्रशिष्य बालचन्द्रजी यति ने बनवाकर सं० १९९७ मिती ज्येष्ठ सुदि ५ को प्रतिष्ठित की।

यति हिम्मतविजयकी बगीची

यह भी गंगाशहर रोडपर है इसमें भी गौड़ी पार्श्वनाथजी, सिद्धिविजय (सं० १९०२) और सुमतिविजय (सं० १८५३ प्रतिष्ठित) के चरण हैं।

श्रीपायचंदसूरिजी

यह मन्दिर भी गंगाशहर रोडपर है। नागपुरीय तपागच्छ के श्री पार्श्वचन्द्रसूरिजी की स्मृति में सं० १६१२ पोषवदि १ को सा० नथू के पुत्र सा० पोमा ने श्री पार्श्वचन्द्रसूरिजी का स्तूप बनवा कर चरण स्थापित किये। इसके आसपास विवेकचन्द्रसूरि पादुका, लब्धिचन्द्रसूरि, कनकचन्द्रसूरि, नेमिचन्द्रसूरि आदिकी पादुकायें व स्तूप-शालादि हैं। पीछे से यहां भी आदिनाथ भगवान का भव्य और शिखरबद्ध मन्दिर निर्माण किया गया है। इस मन्दिरमें भ्रातृचन्द्रसूरिजी की मूर्ति सं०१९९२ की प्रतिष्ठित है।

श्री पार्श्वनाथ मंदिर (नाहटोंकी बगेची)

यह महावीरों (इमालों) की बारी के बाहर टेकरी के सामने है। यह स्थान पहले स्थानकवासी यति पन्नालालजी आदिका निवास स्थान था। हनुमान गच्छमें जो कि सं०१८७२ में रचित है इस बगीची के बाहर पद्मनाथ गुफा का उल्लेख किया है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी हैं, जिस पर कोई लेख नहीं है। अभी यह बगीची नाहटों की कहलाती है श्री मूलचन्दजी नाहटा ने अभी इसका सुन्दर आर्णोद्धार करवाया है।

उदरामसर

श्री कुंथुनाथजी का मन्दिर

यह ग्राम बीकानेर से ७ मील दक्षिण में है। यहाँ ओसवालों के ३० घर हैं। सं० १६८८ मे बोथरा हजारीमलजी आदि ने खरतर गच्छीय उपाश्रय के ऊपर इस मन्दिर को बनवा कर माघ सुदि १० उ० जयचन्द्रजी गणि से प्रतिष्ठा करवाई।

श्री जिनदत्तसूरि गुरु मन्दिर

यह दादावाडी गाव से १ मील दूरी पर अवस्थित है इसकी चरण पादुकाओं पर सं १७३५ मे बीकानेर के सघके बनवाने का लेख है। इसका जीर्णोद्धार जेसलमेर के सुप्रसिद्ध बाफणा बहादुरमलजी आदि ने श्री जिनहर्षसूरिजी के उपदेश से सं० १६६३ मिति आषाढ सुदि १ को करवाया था। इस मन्दिर के बाहर नवचौकिये के पास महो० रघुपतिजी और उनके शिष्य जगमालजी के स्तूप है कविवर रघुपतिजी यहाँ बहुत समय तक रहे थे उन्होंने उदरामसर के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है :—

प्रथम सुक्ख पोसाल मिष्ट पाणी सुख दूजौ।
तीजौ सुख आदेश पादुका चौथे पूजौ।
पाचमै सुख पारणौ खीर दधि मुगतौ खावौ।
छट्ठै सुख श्री नगर दौडता आवौ जावौ।
गुरु ज्ञान ध्यान श्रावक सको नमण करै सिर नामनै।
रघुपति अठै ए सात सुख क्यू छोडा ए गामनै ॥१॥
वूढापैसुखिया रहौ उदयरामसर आय।
पूरव पुण्य प्रमाणतें रघुपत्ति ऋद्धि सवाय ॥
बाण खितक रूपक्क वास पेलै वरणाया।
सीपाणी श्रावक्क सीखव्या हरख सवाया ॥
आहार पाणी अवल प्रघलि वलि परिपाटी ॥
आदर खाणी मान अपार खूब जसवारा खाटी ॥
पर गच्छ हुता पण प्रेम सु कथन शुद्ध सेवा करी।
इण रीत आठ दस वरसमे श्री रघुपति लीला करी ॥

यहा प्रति वर्ष भाद्रपदशुक्ला १५ को मेला भरता है जिसमें मोटर, गाडी, इक्के, ऊँठ, घोड़े आदि सैकड़ों सवारियों पर यात्री लोग एकत्र होते है। दादासाहब की पूजा, गोठें आदि होती हैं यह मेला सर्व प्रथम सं० १८८४ मे श्रीमद् ज्ञानसारजी के शिष्य सदासुखजी ने चालू किया था जिसका उल्लेख सेवग हंसजी कृत गीतमे पाया जाता है।

मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १६३८ में श्री जिनहंससूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित और बीकानेर संघ कारित है। यह मन्दिर सं० १६३५ के आसपास निर्मित हुआ।

गंगाशहर

यह बीकानेर से १॥ मील दूर है यहां ओसवालोंके ७८० घर हैं।

रामनिवास

यह मन्दिर गंगाशहरमें प्रवेश करते ही सड़क पर स्थित श्रीरामचन्द्रजी बांठिया की बगीचीमें है। इसके मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १९०८ वैशाख सु० १५ को श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। इसका प्रबन्ध श्री रामचन्द्रजी के पौत्र श्रीयुत कौंवरराजजी बांठिया करते हैं।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर गंगाशहर में सड़क के ऊपर है। श्री सुमतिमण्डन गणि (सुगनजी महाराज) कृत स्तवन में प्रभु की प्रतिष्ठा का समय १९०० मि० सु० १५ को होनेका उल्लेख है। पर स्तवन की अशुद्ध प्रति मिलने से संवत् संदिग्ध है। दादासाहब के चरणों पर स० १९७० ज्येष्ठ वदि ८ को सावणसुखा सेसकरणजी ने मूषभमूर्ति, दादासाहब के चरण व चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति को इस मन्दिर में पधराने का लिखा है। इसकी देखरेख श्री सुगनजी के उपाश्रय के कार्यकर्ता करते हैं।

भीनासर

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह विशाल मन्दिर भीनासर के कूएं के पास है। इसे सं० १९३१ मिती चैत्र सुदि १ के स्तवन में मन्त्रीश्वर कोचर साहमलजी ने बनवाया लिखा है। इसके मूलनायक सं० ११८१ श्री जिनदत्तसूरि प्रतिष्ठित हैं। इसका प्रबन्ध कोचरों के हाथ में है। यहां ओसवालों के १०२ घर हैं। यह स्थान बीकानेर से ३ मील और गंगाशहर से संलग्न है।

श्री महावीर सिनोटरियम

भरामसर के धोरों पर वैद्यवर श्री भैरवदत्तजी आसोपाने ये आश्रम स्थापित किया है। हिन्दू मन्दिरों के साथ जैन मन्दिर भी होना आवश्यक समझ कर श्री आसोपाजी ने विदुषी आर्या श्री विचक्षणश्रीजी से प्रेरणा की, उनके उपदेश से जैन संघकी ओर से बीकानेर के चिन्तामणिजी के मन्दिरवर्ती श्री शान्तिनाथ जिनालय से पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति ले जाकर ... स्थापित की गई है।

रेलदादाजी

यह स्थान वीकानेर से १ मील, गंगाशहर रोड पर है। सं० १६७० मे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी का विलाड़े में स्वर्गवास होनेके पश्चात् भक्तिवश वीकानेर के संघ ने गुरुमन्दिर वनवाकर सं० १६७३ को मिती वैशाख सुदि ३ को स्तूपमे चरण पादुकाओं की प्रतिष्ठा करवाई। उसके परचात् सं० १६७४ (मेडता) में स्वर्गस्थ श्री जिनसिंहसूरिजी का स्तूप वनवाकर उसमे सं० १६७६ मिती जेठ वदि ११ को चरण स्थापित किए। इसके अनन्तर इसके आसपास यति, श्रीपूज्य, साधु-साध्वियों का अग्निसंस्कार होने लगा और उन स्थानों पर स्तूप, पदुकाएं, चौकिया आदि वनने लगीं। अभी यहा १०० के लभभग स्तूप व चरण पादुकाएं विद्यमान है। प्रतिदिन और विशेष कर सोमवार को यहा सैकडों भक्त लोग दर्शनार्थ आते हैं। सं० १६८६ मे श्री मोतीलालजी वाठिया की ओर से इसका जीर्णोद्धार हुआ है और सं० १६८७ ज्येष्ठ सुदी ५ रविवार को जिनदत्तसूरि मूर्त्ति, श्रीजिनदत्तसुरि, श्रीजिनचन्द्रसुरि, जिनकुशल सूरि और जिनभद्रसूरि के संयुक्त चरण पादुकाओं की प्रतिष्ठा हो कर युगप्रधान श्री जिनचन्द्र-सूरिजीके स्तूप से संलग्न सुन्दर छत्रियों मे स्थापित किए गए हैं। यहाके लेखों से वहुत से यति साधुओं के स्वर्गवास का समय निश्चित हो जाता है, इसलिए यह स्थान ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्त्व का है। वीचके खुले चौकमे संगमरमरका एक विशाल चवूतरा बना है जिसमे आदर्श साध्वीजी श्री स्वर्णश्रीजी की चरण पादुकाएं स्थापित है। चार दीवारी के वाहर आचार्य श्री जयसागरसूरिजी की छतरी भी हाल ही मे वनी है।

शिवबाड़ी

यह सुरम्य स्थान वीकानेरसे ३ मील की दूरीपर है शिवजी (लालेश्वर महादेव) का मन्दिर होनेसे इस स्थान का नाम शिववाडी है यहा के वगीचे मे एक सुन्दर तालाव है। श्रावण महीने मे तालाव भरजाता है और यहां कई मेले लगते है। श्रावण सुदि १० को जैन समाज का मेला लगता है उस दिन वहा पूजा पढाने के पश्चात् भगवान की रथयात्रा निकालकर वगीचेमे तालाव के तट पर लेजाते है और वहां स्नात्रपूजादि कर वापिस मन्दिर में ले आते हैं।

श्री पाश्वनाथजीका मन्दिर—इसे उ० श्री सुमतिमंडनगणि (सुगनजी महाराज) के उपदेश से बीकानेरनरेश श्रीडूगरसिंहजी के वनवाने का उल्लेख मोतीविजयजी कृत स्तवन मे है। दादासाहव के चरणों के लेखके अनुसार इसका निर्माण सं० १६३८ मे हुआ था। मूलनायकजी की प्रतिमा सं० १६३१ मे श्रीजिनहंससूरि द्वारा प्रतिष्ठित है। दादासाहवके चरण व चक्रेश्वरीजी की मूर्त्ति श्री सैंसकरणजी सावणसुखा की ओर से स्थापित है।

ऊदासर

बीकानेर से ६ मील की दूरी पर यह गाव है। यहा ओसवालोंके १०० घर है।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर—इस मन्दिर को श्री सदारामजी गोलछा ने बनवाया था

में प्रतिष्ठित पारसनाथ प्रतिमा है। गुरु मन्दिर के आगे पार्श्वयक्ष व मणिभद्र व पद्मावती देवी की मूर्त्तियां है।

नयो दादाबाड़ी

यह उपर्युक्त मन्दिर के पास मरोठी एवं दूगड़ों की बगीची में है। इसमें श्री जिनेश्वरसूरि, अभयदेवसूरि, श्री जिनकुशलसूरि और श्री जिनचन्द्रसूरि—पांच गुरुदेवों के चरण दूगड़ मंगलचन्द हनुमानमल कारित और सं० १६६१ मिती ज्येष्ठ बदि ६ के दिन श्रीपूज्य श्री जिन—चारित्रसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

महोपाध्याय रामलालजीका स्मृतिमंदिर

यह स्थान भी उपर्युक्त गंगाशहररोड पर श्री पायचन्दसूरिजी के सामने है। इसमें सं० १६६७ ज्ये० सु ५ प्रतिष्ठित श्री जिनकुशलसूरि मूर्त्ति व चरण स्थापित है उसके सामने महो० रामलालजी यतिकी मूर्त्ति स्थापित है। जिसे उनके शिष्य क्षेमचन्द्रजी और प्रशिष्य बालचन्द्रजी यति ने बनवाकर सं० ११६७ मिती ज्येष्ठ सुदि ५ को प्रतिष्ठित की।

यति हिम्मतविजयकी बगीची

यह भी गंगाशहर रोडपर है इसमें श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी, सिद्धिविजय (सं० १६०२) और सुमतिविजय (सं० १८६३ प्रतिष्ठित) के चरण हैं।

श्रीपायचंदसूरिजी

यह मन्दिर श्री गंगाशहर रोडपर है। नागपुरीय तपागच्छ के श्री पार्श्वचन्द्रसूरिजी की स्मृति में सं० ११६२ पोषवदि १ को मह० नयू के पुत्र मह० पोमा ने श्री पार्श्वचन्द्रसूरिजी का स्तूप बनवा कर चरण स्थापित किये। इसके आसपास विवेकचन्द्रसूरि पादुका, लब्धिचन्द्रसूरि, कनकचन्द्रसूरि, नेमिचन्द्रसूरि आदिकी पादुकाएँ व स्तूप-शालादि हैं। पीछे से यहां श्री आदिनाथ भगवान का भव्य और शिखरबद्ध मन्दिर निर्माण किया गया है। इस मन्दिरमें भातृचन्द्रसूरिजी की मूर्त्ति सं०१६६२ की प्रतिष्ठित है।

श्री पार्श्वनाथ मंदिर (नाहटोंकी बगेची)

यह मंडसावतों (इमारों) की बारी के बाहर टेकरी के सामने है। यह स्थान पहले स्थानकवासी यति पन्नालालजी आदिका निवास स्थान था। हनुमान गजकर्में जो कि सं०१८७२ में रचित है, इस बगीची के बाहर पार्श्वनाथ गुफा का उल्लेख किया है। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी हैं जिस पर कोई लेख नहीं है। अभी यह बगीची नाहटों की कब्जाकी है श्री मूलचन्दजी नाहटा ने अभी इसका सुन्दर जीर्णोद्धार करवाया है।

उदरामसर

श्री कुंथुनाथजी का मन्दिर

यह ग्राम बीकानेर से ७ मील दक्षिण में है। यहाँ ओसवालों के ३० घर हैं। सं० १९८८ मे बोथरा हजारीमलजी आदि ने खरतर गच्छीय उपाश्रय के ऊपर इस मन्दिर को बनवा कर माघ सुदि १० उ० जयचन्द्रजी गणि से प्रतिष्ठा करवाई।

श्री जिनदत्तसूरि गुरु मन्दिर

यह दादावाडी गाव से १ मील दूरी पर अवस्थित है इसकी चरण पादुकाओं पर सं १७३५ मे बीकानेर के सघके बनवाने का लेख है। इसका जीर्णोद्धार जेसलमेर के सुप्रसिद्ध बाफणा बहादुरमलजी आदि ने श्री जिनहर्षसूरिजी के उपदेश से सं० १९९३ मिति आषाढ़ सुदि १ को करवाया था। इस मन्दिर के बाहर नवचौकिये के पास महो० रघुपतिजी और उनके शिष्य जगमालजी के स्तूप है कविवर रघुपतिजी यहाँ बहुत समय तक रहे थे उन्होने उदरामसर के सम्बन्ध में इस प्रकार लिखा है :—

प्रथम सुक्ख पोसाल मिष्ट पाणी सुख दूजौ।
तीजौ सुख आदेश पादुका चौथे पूजौ।
पाचमै सुख पारणौ खीर दधि भुगतौ खावौ।
छट्ठै सुख श्री नगर दौडता आवौ जावौ।
गुरु ज्ञान ध्यान श्रावक सको नमण करै सिर नामनै।
रघुपति अठै ए सात सुख क्यू छोड़ा ए गामनै ॥१॥
वूढापैसुखिया रहाँ उदयरामसर आय।
पूरब पुण्य प्रमाणतें रघुपत्ति ऋद्धि सवाय॥
बाण सितक रूपक्ष वास पेलै वरणाया।
सीपाणी श्रावक्क सीखव्या हरख सवाया॥
आहार पाणी अवल प्रघलि वलि परिपाटी॥
आदर खाणी मान अपार खूब जसवारा खाटी॥
पर गच्छ हुता पण प्रेम सु कथन शुद्ध सेवा करी।
इण रीत आठ दस वरसमे श्री रघुपति लीला करी॥

यहा प्रति वर्ष भाद्रपदशुक्ला १५ को मेला भरता है जिसमे मोटर, गाड़ी, इक्के, ऊँठ, घोड़े आदि सैकड़ों सवारियों पर यात्री लोग एकत्र होते हैं। दादासाहब की पूजा, गोठें आदि होती है यह मेला सर्व प्रथम सं० १८८४ मे श्रीमद् ज्ञानसारजी के शिष्य सदासुखजी ने चालू किया था जिसका उल्लेख सेवग हंसजी कृत गीतमे पाया जाता है।

मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १६३५ में श्री जिनहंससूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित और बीकानेर संघ कारित है। यह मन्दिर सं० १६३५ के आसपास निर्मित हुआ।

गंगाशहर

यह बीकानेर से १॥ मील दूर है यहां ओसवालोंके ७५० घर हैं।

रामनिवास

यह मन्दिर गंगाशहरमें प्रवेश करते ही सड़क पर स्थित श्रीरामचन्द्रजी बांठिया की बगीचीमें है। इसके मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की प्रतिमा सं० १६०५ वैशाख शु० १५ को श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। इसका प्रबन्ध श्री रामचन्द्रजी के पौत्र श्रीयुक्त फौजराजजी बांठिया करते हैं।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर गंगाशहर में सड़क के ऊपर है। श्री सुमतिमण्डन गणि (सुगनजी महाराज) कृत स्तवन में प्रभु की प्रतिष्ठा का समय १६०० मि० सु० १५ को होनेका उल्लेख है। पर स्तवन की अशुद्ध प्रति मिलने से संवत् संदिग्ध है। दादासाहब के चरणों पर सं० १६७० ज्येष्ठ बदि ८ को सावणसुखा संसकरणजी ने ऋषभमूर्ति, दादासाहब के चरण व चक्रेश्वरी देवी की मूर्ति को इस मन्दिर में पधराने का लिखा है। इसकी देखरेख श्री सुगनजी के उपाश्रय के कार्यकर्ता करते हैं।

भीनासर

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह विशाल मन्दिर भीनासर के कुएँ के पास है। इसे सं० १६२१ मिती चैत्र सुदि १ के स्तवन में मनीरदार कोचर साहमलजी ने बनवाया लिखा है। इसके मूलनायक सं० ११८१ श्री जिनदत्तसूरि प्रतिष्ठित हैं। इसका प्रबन्ध कोचरों के हाथ में है। यहां ओसवालों के १७२ घर हैं। यह स्थान बीकानेर से ३ मील और गंगाशहर से संलग्न है।

श्री महावीर सिनोटरियम

उदरामसर के धोरों पर सेठजी श्री भैरूदानजी आसोपाने ने आश्रम स्थापित किया है। हिन्दू मन्दिरों के साथ जैन मन्दिर भी होना आवश्यक समझ कर श्री आसोपाजी ने विदुषी आर्या श्री विचक्षणश्रीजी से प्रेरणा की, उनके उपदेश से जैन संघकी ओर से बीकानेर के चिन्तामणिजी के मन्दिरवर्त्ती श्री शान्तिनाथ जिनालय से पार्श्वनाथ प्रभु की मूर्ति ले जाकर स्वतन्त्र मन्दिर बनवा कर स्थापित की गई है।

कराने का शिलालेख लगा है। इसी समय के प्रतिष्ठित हाथीरामजी के चरण भी स्थापित हैं। इसका प्रबन्ध बीकानेर के उ० श्री जयचन्द्रजी यतिके शिष्य के हस्तगत है।

नाल

यह गांव बीकानेर से ८ मील दूरी पर है। कोलायत रेलवे लाइन का दूसरा स्टेशन है। गाव स्टेशन से लगभग १ मील दूर है, बीकानेर से प्रतिदिन मोटर-बस भी जाती है। पुराने स्तवनो मे इसका नाम गढाला लिखा है। यहाँ अभी २३ घर ओसवालों के है। यहाँ की जलवायु अच्छी है। यहाँ दो जैन मन्दिर और श्री जिनकुशलसूरिजी का प्राचीन स्थान है।

श्री जिनकुशलसूरिजी का मन्दिर

कर्मचन्द्र मंत्रि वंश प्रबन्ध के अनुसार मत्री वरसिंहजी देरावर यात्रा के लिए जाते हुये यहाँ ठहरे। उन्हें आगे जानेंमे असमर्थ देखकर रातके समय गुरुदेव ने स्वप्न मे दर्शन देकर यहीं उनकी यात्रा सफल करदी थी। अतः उन्होंने यहाँ गुरुदेव का स्थान बनवाकर चरण स्थापित किये। ये चरण बड़े चमत्कारी हैं, दूर होने पर भी कई लोग प्रति सोमवार को दर्शन पूजन करने जाते है। यहाँ कार्तिकसुदि १५ को मेला लगता है और फालगुन वदी १५ को भी पूजादि पढाई जाती है। इसका जीर्णोद्धार सं० १९९६ मे श्रीयुक्त भरूदानजी हाकिम कोठारी ने बहुत सुन्दर रूप मे करवाया है। श्री जिनभक्तिसूरिजी और पुण्यशीलकृत स्तवनों में उल्लेख है कि बीकानेर के महाराजा श्री सुजाणसिंहजी की स्वर्गीय गुरुदेव के शत्रुओं के भय से रक्षा की थी। सं० १८७३ के वैशाखसुदि ६ को महाराजा सूरतसिंहजी ने दादासाहब की भक्ति में ७५० बीघा जमीन भेंट की थी जिसका ताम्रशासन बड़े उपाश्रय में विद्यमान है।

दादासाहब के मन्दिर के पास एक चौकी पर चौमुख स्तूप है जिसमे उ० सकलचन्द्रजी और समयसुन्दरजी के चरण प्रतिष्ठित है। अन्य शालाओं मे बहुत से चरण व कीर्तिरत्नसूरिजी के स्तूप आदि है। पास ही खरतराचार्य शाखा की कोटडी मे इस शाखा के श्रीपूज्यादिके चरणादि है।

श्री पद्मप्रभुजी का मन्दिर

यह जिनालय गुरु मन्दिर के अहाते में है। इसकी प्रतिष्ठा पट्टावलीमे सं० १९१६ वैशाख वदि ६ को श्री जिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा होना लिखा है।

श्री मुनि सुव्रतजी का मन्दिर

यह गुरु मंदिर के गढ़ से बाहर है। इसका निर्माण काल अज्ञात है। मूलनायकजी सं०१९०८ मे श्री जिनहेमसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

श्री जिनचारित्रसूरि स्मृति मन्दिर

श्री जिनकुशलसूरिजी के मदिर के बाहर दाहिनी ओर श्री दीपचंदजी गोलछा ने यह मंदिर बनवा कर श्रीपूज्य श्री जिनचारित्रसूरिजी की मूर्ति प्रतिष्ठित करवायी है।

सं० १६४४ की शत्रुञ्जय चैत्यपरिपाटी,में गुणविनय गणि ने लिखा है कि संघने जेठ सुदि ३ को ओसियां पहुँच कर जेठ सुदि १३ को रोहगाम में श्रीजिनदत्तसूरिजी को वन्दन किया फिर जेठ सुदि १५ को भींवासर (वर्तमान भीनासर) में स्वधर्मीवात्सल्यादि कर संघ अपने घर-बीकानेर लौटा। ओसियां से ७ दिन और भीमासर से २ दिन के रास्ते का रोहगाम जिसमें श्री जिनदत्त सूरिजी का स्थान था हमारे खयाल से उपरोक्त उदरामसर के निकटवर्ती दादाबाड़ी वाला स्थान ही रोहगाम होना चाहिए।

देशनोक

यह ग्राम बीकानेर से १६ मील दूरी पर है। बीकानेरसे मेड़ता रोड जानेवाली रेलवे लाइन का यह दूसरा स्टेशन है। यहाँ ओसवालों के ४०० घर हैं। यहाँ राजमान्य करणी माता का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ तीन जैन मन्दिर और एक दादावाड़ी है। परिचय इस प्रकार है।

श्री सम्भवनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर आंचलियों के वासमें है। शिलापट्ट के लेख में इसकी प्रतिष्ठा सं० १८६१ माघ शुक्ला ५ को क्षमाकल्याणजी महाराज ने की लिखा है। वा० श्री कुशलकल्याण गणि के उपदेश से संघ ने इस मन्दिर को बनवाया था। शिलालेख में "पार्श्वनाथ देवगृहकारितं" लिखा है पर इसके मूलनायक सं० १८९६ वैशाख शुक्ला ७ को जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठित श्री संभवनाथ भगवानकी प्रतिमा है। उ० श्री क्षमाकल्याणजी कृत स्तवनमें भी संभवनाथजी का नाम है।

श्री शांतिनाथजी का मदिर

यह मन्दिर भूरोंके वास में है। सं० १८६१ माघ सुदि ५ को श्री अभयविशालजी के उपदेश से श्री संघ के शाला बनवाने का उल्लेख है। क्षमाकल्याण जी के स्तवन में देशनोक के सुविधिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा सं० १८७१ माघ सुदि ५ को होने का उल्लेख है। देशनोक में श्री सुविधिनाथजी का अन्य कोइ मदिर नहीं है अत संभव है इस मंदिर के मूलनायकजी पीछे से परिवर्त्तित किये गये हैं।

श्री केसरियाजी का मदिर

यह मन्दिर लौंकागच्छ के उपाश्रय के पास है। यह मन्दिर थोड़ वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित हुआ है।

दादावाड़ी

यह स्थान स्टेशन के मार्गमें है। इसे सं० १६६८ ज्ये० सुदि १३ को उपाध्याय मोहनलालजीने स्थापित एवंप्रतिष्ठित किया। इसमें श्री अभयदेवसूरिजी, श्री जिनदत्तसूरिजी, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण हैं। दादाबाड़ी की शाला में सं० १८६४ आषाढसुदि १ को मुगुणप्रमोदजी के पीछे विनयचन्द्र और मनसुख के इसे

कराने का शिलालेख लगा है। इसी समय के प्रतिष्ठित हाथीरामजी के चरण भी स्थापित हैं। इसका प्रबन्ध बीकानेर के उ० श्री जयचन्द्रजी यतिके शिष्य के हस्तगत है।

नाल

यह गाँव बीकानेर से ८ मील दूरी पर है। कोलायत रेलवे लाइन का दूसरा स्टेशन है। गाव स्टेशन से लगभग १ मील दूर है, बीकानेर से प्रतिदिन मोटर-वस भी जाती है। पुराने स्तवनों मे इसका नाम गढाला लिखा है। यहाँ अभी २३ घर ओसवालों के हैं। यहाँ की जलवायु अच्छी है। यहाँ दो जैन मन्दिर और श्री जिनकुशलसूरिजी का प्राचीन स्थान है।

श्री जिनकुशलसूरिजी का मन्दिर

कर्मचन्द्र मंत्रि वंश प्रबन्ध के अनुसार मत्री वरसिंहजी देरावर यात्रा के लिए जाते हुये यहाँ ठहरे। उन्हें आगे जानेमें असमर्थ देखकर रातके समय गुरुदेव ने स्वप्न मे दर्शन देकर यहीं उनकी यात्रा सफल करदी थी। अतः उन्होंने यहाँ गुरुदेव का स्थान वनवाकर चरण स्थापित किये। ये चरण बड़े चमत्कारी है, दूर होने पर भी कई लोग प्रति सोमवार को दर्शन पूजन करने जाते है। यहाँ कार्तिकसुदि १५ को मेला लगता है और फाल्गुन वदी १५ को भी पूजादि पढाई जाती है। इसका जीर्णोद्धार सं० १९९६ मे श्रीयुक्त भरूदानजी हाकिम कोठारी ने बहुत सुन्दर रूप मे करवाया है। श्री जिनभक्तिसूरिजी और पुण्यशीलकृत स्तवनों में उल्लेख है कि बीकानेर के महाराजा श्री सुजाणसिंहजी की स्वर्गीय गुरुदेव के शत्रुओं के भय से रक्षा की थी। स० १८७३ के वैशाखसुदि ९ को महाराजा सूरतसिंहजी ने दादासाहब की भक्ति में ७५० बीघा जमीन भेंट की थी जिसका ताम्रशासन बड़े उपाश्रय में विद्यमान है।

दादासाहब के मन्दिर के पास एक चौकी पर चौमुख स्तूप है जिसमें उ० सकलचन्द्रजी और समयसुन्दरजी के चरण प्रतिष्ठित है। अन्य शालाओं मे बहुत से चरण व कीर्तिरत्नसूरि जी के स्तूप आदि हैं। पास ही खरतराचार्य शाखा की कोटडी में इस शाखा के श्रीपूज्यादिके चरणादि है।

श्री पद्मप्रभुजी का मन्दिर

यह जिनालय गुरु मन्दिर के अहाते में है। इसकी प्रतिष्ठा पट्टावलीमें सं० १९१६ वैशाख वदि ६ को श्री जिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा होना लिखा है।

श्री मुनि सुव्रतजी का मन्दिर

यह गुरु मंदिर के गढ़ से वाहर है। इसका निर्माण काल अज्ञात है। मूलनायकजी सं०१९०८ मे श्री जिनहेमसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित हैं।

श्री जिनचारित्रसूरि स्मृति मन्दिर

श्री जिनकुशलसूरिजी के मदिर के वाहर दाहिनी ओर श्री दीपचंदजी गोलछा ने —
मंदिर वनवा कर श्रीपूज्य श्री जि

सं० १६४४ की शत्रुंजय चैत्यपरिपाटी में गुणविनय गणि ने लिखा है कि संघने जेठ सुदि ६ को ओसियां पहुंच कर जेठ सुदि १३ को रोहगाम में श्री जिनदत्तसूरिजी को वन्दन किया फिर जेठ सुदि १५ को भींदासर (वर्त्तमान भीनासर) में स्वधर्मीवात्सल्यादि कर संघ अपने घर-बीकानेर लौटा। ओसियां से ७ दिन और भीनासर से २ दिन के रास्ते का रोहगाम जिसमें श्री जिनदत्त सूरिजी का स्थान था हमारे खयाल से उपरोक्त उदरामसर के निकटवर्ती दादाबाड़ी वाला स्थान ही रोहगाम होना चाहिए।

देशनोक

यह ग्राम बीकानेर से ११ मील दूरी पर है। बीकानेरसे मेड़ता रोड आनेवाली रेलवे लाइन का यह दूसरा स्टेशन है। यहाँ ओसवालों के ४०० घर हैं। यहाँ राज्यमान्य करणी माता का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ तीन जैन मन्दिर और एक दादावाड़ी है। परिचय इस प्रकार है।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर ओसवालों के वासमें है। शिलापट्ट के लेख में इसकी प्रतिष्ठा सं० १८६१ माघ शुक्ला ५ को क्षमाकल्याणजी महाराज ने की लिखा है। वा० श्री कुशलकल्याण गणि के उपदेश से संघ ने इस मन्दिर को बनवाया था। शिलालेख में "पार्श्वनाथ देवगृहकारितं" लिखा है पर इसके मूलनायक सं० १८६ वैशाख शुक्ला ७ को जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठित श्री संभवनाथ भगवानकी प्रतिमा है। उ० श्री क्षमाकल्याणजी कृत स्तवनमें भी संभवनाथजी का नाम है।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर

यह मन्दिर मूलोंके वास में है। सं० १८६१ माघ सुदि ५ को श्री अभयविशालजी के उपदेश से श्री संघ के शाला बनवाने का उल्लेख है। क्षमाकल्याण जी के स्तवन में देशनोक के सुविधिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा सं० १८७१ माघ सुदि ५ को होने का उल्लेख है। देशनोक में श्री सुविधिनाथजी का अन्य कोई मंदिर नहीं है अतः संभव है इस मंदिर के मूलनायकजी पीछे से परिवर्तित किये गये हैं।

श्री केसरियाजी का मंदिर

यह मन्दिर लोंकागच्छ के उपाश्रय के पास है। यह मन्दिर थोड़े वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित हुआ है।

दादावाड़ी

यह स्थान स्टेशन के मार्गमें है। इसे सं० १६६५ ज्ये० सुदि १३ को उपाध्याय मोहनलालजीने स्थापित एवंप्रतिष्ठित किया। इसमें श्री अभयदेवसूरिजी श्री जिनदत्तसूरिजी, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण हैं। दादावाड़ी की शाला में सं० १८६४ आषाढ़सुदि १ को सुगुणप्रमोदजी के पीछे विनयचंद्र और मनसुख के इसे

श्री नेमिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर सेठियों के वासमे लुकागच्छ के उपाश्रय में है। मूलनायक सं० १६१० मे श्रीजिनसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

नापासर

यह बीकानेर से १७ मील है, दिल्ली जानेवाली रेलवे लाइन का दूसरा स्टेशन है। स्टेशन से लगभग १ मील गावमे यहाँ मन्दिर है। यहाँ अभी ओसवालों की वस्ती नहीं है। पूजाका प्रवन्ध वीकानेरके श्री चिन्तामणिजी के मन्दिर की पेढीसे होता है।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर सेठिया अचलदास* ने सं० १७३७ से पूर्व वनवाया था सं० १७३७ मिती चैत वदि १ को प्रतिष्ठित श्रीजिनदत्तसूरिजी, श्रीजिनकुशलसूरिजी और सेठ अचलदास की पादुका इस मन्दिर मे विद्यमान है। कविवर रघुपत्ति के उल्लेखानुसार यहाँ सं० १८०२ मे मूलनायक अजितनाथ भगवान थे। सं० १७४० मे कवि यशोलाभ ने धर्मसेन चौपाई मे अजितनाथ व शातिनाथ लिखा है। पर अभी सं० १५७५ प्रतिष्ठित श्री शातिनाथ भगवान की प्रतिमा मूलनायक है। १६५६ मे हितवल्लभगणि के उपदेश से वीकानेर के सघकी ओरसे इसका जीर्णोद्धार हुआ था। कुछ वर्ष पूर्व इस मन्दिर उपाश्रय और कुण्डका जीर्णोद्धार वीकानेर संघने पुनः करवाया है।

डूंगरगढ़

यह उपर्युक्त रेलवे लाइन का छठा स्टेशन है। बीकानेर से ४६ मील है। स्टेशन से १ मील दूर शहर मे ओसवालों के ४० घर हैं। मन्दिर का प्रबन्ध स्थानीय पंचायती के हाथमे है।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर ऊँचा वना हुआ है। इसके निर्माणकाल का कोई पता नहीं। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की लघु प्रतिमा है।

विगा

यह भी उपर्यक्त रेलवे लाइन का ७ वा स्टेशन तथा डूगरगढ से ८ मील है। यहाँ ओसवालों के ३ घर हैं।

---

* दायय सुख देहरौनगर सखरै नापासर। मा है मोटे मंडाण जागती मूरति जिनवर॥ पासैहिज पौसाल साधतिण वहुसुख पावै। भल श्रावक भावीक दीपता चढ़ते दावै॥ अचलेश सेठ हुवो अमर, जिणे सुत पच जनम्मिया। जीतव्व धन्न रघुपति जियां, कलिनामा अविचल किया॥ १॥

जांगलू

देशनोक से १० मील है, यह गांव बहुत प्राचीन है। सं० ११७६ का जांगलकूप के उल्लेखवाला परिकर बीकानेर के डागों के श्री महावीरजी के मन्दिर में है। यहां अभी ओसवालों का केवल १ घर है।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर

सं० १८९० मिती कार्तिक वदि १३ को बनाये जानेका उल्लेख शिलापट्ट पर है। मूलनायक पार्श्वनाथजी और दादासाहब श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण सं० १८८७ मिती आषाढ़सुदि १० का श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित हैं। सिद्धचक्रजी के यन्त्र पर सं० १८८५ मिती आसोजसुदि ९ को जांगलू के पारख अजयराजजी के पुत्र तिलोकचन्दजी द्वारा बनवाकर श्री जिनहर्षसूरिजी से प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है। यह मन्दिर भी पारखों का बनवाया हुआ है।

पांचू

ये देशनोक से लगभग २० मील की दूरी पर है, यहां भी पार्श्वनाथजी का मन्दिर है जिसका निर्माण काल अज्ञात है।

नोखा-मंडी

यह मंडी बीकानेर से मेड़ता जानेवाली रेल्वे का (४० मील दूरी पर) चौथा स्टेशन है। यहां ओसवालों के ७० घर हैं।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर

इस मन्दिर के मूलनायकजी व गुरुपादुकादि जेसलसर के मन्दिर से लाये गये हैं। सं० १९९७ मिती माघसुदि १४ को श्री विजयलक्ष्मणसूरिजी ने इसकी प्रतिष्ठा की।

बज्जू

यह गांव बीकानेर से २७ मील पश्चिम और कोलायत रेल्वे स्टेशन से ६ मील है। यहां ओसवालों के ७८ घर हैं। यहां १ मन्दिर और दो उपाश्रय हैं।

श्री नेमिनाथजी का मन्दिर

यह यतिनियों के चार्ज में है, इसके निर्माण कालका कोई उल्लेख नहीं मिलता और न मूलनायकजी पर ही कोई लेख है। इस मन्दिर में सप्तफणापार्श्वनाथजी की धातु मूर्ति पर सं० १०२१ "ढिल्लीपुर चैत्य स्नात्र प्रतिमा" का लेख है। श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण भाण्डासर श्री संघ कारित, और सुमतिविशालगणि द्वारा प्रतिष्ठित हैं। पं० सुखरंग मुनिके चरण सं० १९०४ के हैं।

कराने का शिलालेख लगा है। इसी समय के प्रतिष्ठित हाथीरामजी के चरण भी स्थापित है। इसका प्रबन्ध वीकानेर के उ० श्री जयचन्द्रजी यतिके शिष्य के हस्तगत है।

नाल

यह गाँव वीकानेर से ८ मील दूरी पर है। कोलायत रेलवे लाइन का दूसरा स्टेशन है। गाव स्टेशन से लगभग १ मील दूर है, वीकानेर से प्रतिदिन मोटर-वस भी जाती है। पुराने स्तवनों में इसका नाम गढाला लिखा है। यहाँ अभी २३ घर ओसवालों के हैं। यहाँ की जलवायु अच्छी है। यहाँ दो जैन मन्दिर और श्री जिनकुशलसूरिजी का प्राचीन स्थान है।

श्री जिनकुशलसूरिजी का मन्दिर

कर्मचन्द्र मंत्रि वंश प्रवन्ध के अनुसार मत्री वरसिंहजी देरावर यात्रा के लिए जाते हुये यहाँ ठहरे। उन्हें आगे जानेमें असमर्थ देखकर रातके समय गुरुदेव ने स्वप्न मे दर्शन देकर यहीं उनकी यात्रा सफल करदी थी। अतः उन्होंने यहाँ गुरुदेव का स्थान वनवाकर चरण स्थापित किये। ये चरण वड़े चमत्कारी है, दूर होने पर भी कई लोग प्रति सोमवार को दर्शन पूजन करने जाते है। यहाँ कार्तिकसुदि १५ को मेला लगता है और फालगुन वदी १५ को भी पूजादि पढाई जाती है। इसका जीर्णोद्धार सं० १९९६ मे श्रीयुक्त भरूदानजी हाकिम कोठारी ने बहुत सुन्दर रूप मे करवाया है। श्री जिनभक्तिसूरिजी और पुण्यशीलकृत स्तवनों मे उल्लेख है कि वीकानेर के महाराजा श्री सुजाणसिंहजी की स्वर्गीय गुरुदेव के शत्रुओं के भय से रक्षा की थी। सं० १८७३ के वैशाखसुदि ६ को महाराजा सूरतसिंहजी ने दादासाहव की भक्ति मे ७५० बीघा जमीन भेंट की थी जिसका ताम्रशासन वड़े उपाश्रय में विद्यमान है।

दादासाहव के मन्दिर के पास एक चौकी पर चौमुख स्तूप है जिसमे उ० सकलचन्द्रजी और समयसुन्दरजी के चरण प्रतिष्ठित है। अन्य शालाओं मे बहुत से चरण व कीर्तिरत्नसूरि जी के स्तूप आदि है। पास ही खरतराचार्य शाखा की कोटड़ी में इस शाखा के श्रीपूज्यादिके चरणादि है।

श्री पद्मप्रभुजी का मन्दिर

यह जिनालय गुरु मन्दिर के अहाते मे है। इसकी प्रतिष्ठा पट्टावलीमे सं० १६१६ वैशाख बदि ६ को श्री जिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा होना लिखा है।

श्री मुनि सुव्रतजी का मन्दिर

यह गुरु मंदिर के गढ़ से वाहर है। इसका निर्माण काल अज्ञात है। मूलनायकजी सं०१९०८ मे श्री जिनहेमसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

श्री जिनचारित्रसूरि स्मृति मन्दिर

श्री जिनकुशलसूरिजी के मंदिर के वाहर दाहिनी ओर श्री दीपचंदजी गोलछा ने यह मंदिर वनवा कर श्रीपूज्य श्री जिनचारित्रसूरिजी की मूर्ति प्रतिष्ठित करवायी है।

स० १६४४ की शत्रुञ्जय चैत्यपरिपाटी में गुणविनय गणि ने लिखा है कि संघने जेठ सुदि ६ को आसियां पहुंच कर जेठ सुदि १३ को रोहगाम में श्रीजिनदत्तसूरिजी को वन्दन किया फिर जेठ सुदि १५ को भांडासर (वर्त्तमान भीनासर) में स्वधर्मीवात्सल्यादि कर संघ अपने घर-बीकानेर लौटा। आसियां से ७ दिन और भीनासर से २ दिन के रास्ते का रोहगाम जिसमें श्री जिनदत्त सूरिजी का स्थान था हमारे ख्याल से उपरोक्त उदरामसर के निकटवर्ती दादावाड़ी वाला स्थान ही रोहगाम होना चाहिए।

देशनोक

यह ग्राम बीकानेर से १६ मील दूरी पर है। बीकानेरसे मेड़ता रोड आनेवाली रेलवे लाइन का यह दूसरा स्टेशन है। यहाँ ओसवालों के ४०० घर हैं। यहाँ राजमान्य करणी माता का प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ तीन जैन मन्दिर और एक दादावाड़ी है। परिचय इस प्रकार है।

श्री संभवनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर आंचलियों के वासमें है। शिलापट्ट के लेख में इसकी प्रतिष्ठा स० १८११ माघ शुक्ला ५ को क्षमाकल्याणजी महाराज ने की लिखा है। वा० श्री पुण्यशीलकल्याण गणि के उपदेश से संघ ने इस मन्दिर को बनवाया था। शिलालेख में "पार्श्वनाथ देवगृहकारित" लिखा है पर इसके मूलनायक सं० १८१ वैशाख शुक्ला ७ को जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठित श्री संभवनाथ भगवानकी प्रतिमा है। उ० श्री क्षमाकल्याणजी कृत स्तवनमें भी संभवनाथजी का नाम है।

श्री शांतिनाथजी का मंदिर

यह मन्दिर भूरोंके वास में है। स० १८९१ माघ सुदि ५ को श्री अभयविशालजी के उपदेश से श्री संघ के शाला बनवाने का उल्लेख है। क्षमाकल्याण जी के स्तवन में देशनोक के सुविधिनाथ मन्दिर की प्रतिष्ठा स० १८७१ माघ सुदि ५ को होने का उल्लेख है। देशनोक में श्री सुविधिनाथजी का अन्य कोई मंदिर नहीं है अतः संभव है इस मंदिर के मूलनायकजी पीछे से परिवर्तित किये गये हैं।

श्री केसरियाजी का मंदिर

यह मन्दिर लोंकागच्छ के उपाश्रय के पास है। यह मन्दिर थोड़े वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित हुआ है।

दादावाड़ी

यह स्थान स्टेशन के मार्गमें है। इसे सं० १६१५ ज्येष्ठ सुदि १३ को उपाध्याय मोहनलालजीने स्थापित एवंप्रतिष्ठित किया। इसमें श्री अभयदेवसूरिजी, श्री जिनदत्तसूरिजी, मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण हैं। दादावाड़ी की शाला में स० १८६४ आषाढ़सुदि १ को सुगुणप्रमोदजी के पौत्र जिनचन्द्र और मनसुख के इस

श्री नेमिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर सेठियों के वासमे लुकागच्छ के उपाश्रय में है। मूलनायक सं० १६१० में श्रीजिनसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है।

नापासर

यह बीकानेर से १७ मील है, दिल्ली जानेवाली रेलवे लाइन का दूसरा स्टेशन है। स्टेशन से लगभग १ मील गावमें यहाँ मन्दिर है। यहाँ अभी ओसवालों की वस्ती नहीं है। पूजाका प्रबन्ध बीकानेरके श्री चिन्तामणिजी के मन्दिर की पेढीसे होता है।

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर सेठिया अचलदास* ने सं० १७३७ से पूर्व बनवाया था सं० १७३७ मिती चैत बदि १ को प्रतिष्ठित श्रीजिनदत्तसूरिजी, श्रीजिनकुशलसूरिजी और सेठ अचलदास की पादुका इस मन्दिर में विद्यमान है। कविवर रघुपत्ति के उल्लेखानुसार यहाँ सं० १८०२ मे मूलनायक अजितनाथ भगवान थे। सं० १७४० में कवि यशोलाभ ने धर्मसेन चौपाई मे अजितनाथ व शातिनाथ लिखा है। पर अभी सं० १५७५ प्रतिष्ठित श्री शातिनाथ भगवान की प्रतिमा मूलनायक है। १९५६ मे हितवल्लभगणि के उपदेश से बीकानेर के संघकी ओरसे इसका जीर्णोद्धार हुआ था। कुछ वर्ष पूर्व इस मन्दिर उपाश्रय और कुण्डका जीर्णोद्धार बीकानेर संघने पुनः करवाया है।

डूंगरगढ़

यह उपर्युक्त रेलवे लाइन का छठा स्टेशन है। बीकानेर से ४६ मील है। स्टेशन से १ मील दूर शहर मे ओसवालों के ४० घर हैं। मन्दिर का प्रबन्ध स्थानीय पंचायती के हाथमे है।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर ऊँचा वना हुआ है। इसके निर्माणकाल का कोई पता नहीं। मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी की लघु प्रतिमा है।

विगा

यह भी उपर्यक्त रेलवे लाइन का ७ वा स्टेशन तथा डूगरगढ से ८ मील है। यहाँ ओसवालों के ३ घर हैं।

---

* दायय सुख देहरौनगर सखरै नापासर। मा है मोटे मडाण जागती मूरति जिनवर॥ पासैहिज पौसाल साधतिण वहुसुख पावै। मल श्रावक भावीक दीपता चढ़ते दावै॥ अचलेश सेठ हुवो अमर, जिणे सुत पच जनम्मिया। जीतव्व धन्न रघुपति जिया, कलिनामा अविचल किया॥ १॥

जांगलू

देशनोक से १० मील है, यह गाँव बहुत प्राचीन है। सं० ११७६ का जांगलकूप के रहनेवाला परिकर बीकानेर के डागों के श्री महावीरजी के मन्दिर में है। यहां अभी ओसवालों का घर १ घर है।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर

सं० १८८० मिती कार्तिक वदि १३ का बनाये जानेका उल्लेख शिलापट्ट पर है। मूलनायक पार्श्वनाथजी और दादासाहब श्री जिनकुशलसूरिजी के चरण सं० १८८० मिती आषाढसुदि १० का श्री जिनहर्षसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित हैं। सिद्धचक्रजी के यंत्र पर सं० १८८५ मिती आसाढसुदि ८ का जांगलू के पारख अजयराजजी के पुत्र तिलोकचन्दजी द्वारा बनवाकर श्री जिनहर्षसूरिजी से प्रतिष्ठा कराने का उल्लेख है। यह मन्दिर भी पारखों का बनवाया हुआ है।

पाचू

ये देशनोक से लगभग २० मील की दूरी पर है, यहां भी पार्श्वनाथजी का मन्दिर है जिसका निर्माण काल अज्ञात है।

नोखा-मंडी

यह मंडी बीकानेर से मेड़ता जानेवाली रेल्वे का (४० मील दूरी पर) चौथा स्टेशन है। यहां ओसवालों के ५० घर हैं।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर

इस मन्दिर के मूलनायकजी व गुरुपादुकादि जसलसर के मन्दिर से लाये गये हैं। सं० १९९७ मिती मापसुदि १४ को श्री विजयलक्ष्मणसूरिजी ने इसकी प्रतिष्ठा की।

झज्झू

यह गाँव बीकानेर से २७ मील पश्चिम और कोलायत रेलवे स्टेशन से ६ मील है। यहां ओसवालों के २८ घर हैं। यहां दो मन्दिर और दो उपाश्रय हैं।

श्री नेमिनाथजी का मन्दिर

यह ब्राह्मणों के सामने है इसके निर्माण काल का उल्लेख नहीं मिलता और न मूलनायकजी पर ही लेख है। इस मन्दिर में धातुमयी पार्श्वनाथजी की धातु मूर्ति पर सं० १०११ "[illegible] प्रतिमा" का लेख है। श्री जिनदत्तसूरि और श्रीजिनकुशलसूरिजी के चरण सं० [illegible] पौष वदि [illegible] और गुणनिधानगणि द्वारा प्रतिष्ठित हैं। पं० [illegible] गुणि के चरण सं० [illegible] के हैं।

मन्दिर की नींव सं० १९६२ में डाली गई थी, इस मन्दिर के बनवाने में "जेसराज गिरधारीलाल" फर्मकी ओरसे द्रव्य व्यय हुआ जिसके ३ हिस्सेदार थे १ पनाचंदजी २ इन्द्रचंदजी ३ व वच्छराज जी सिंघी। यह मदिर ऊँचे स्थान पर दो मंजिला बना हुआ है। दोनों तरफ श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजी के मन्दिर है जिनमे सं० १९३३ माघ शुक्ला ३ को प्रतिष्ठित चरण पादुकाएँ विराजमान है। इस मन्दिर के पीछे कई मकानात आदि जायदाद है।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

यह खरतर गच्छके उपाश्रय से संलग्न है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १८८४ अषाढ़ सुदि १० बुधवारको होनेका उल्लेख यति दूधेचंदजी के पासकी बही मे पाया जाता है।

दादाबाड़ी

यह सिंघीजी के मन्दिरसे कुछ दूरी पर है। दादा साहब श्रीजिनकुशलसूरिजी के चरणोंकी प्रतिष्ठा सं० १८९० मिती वैशाख सुदि १० को हुई थी। इसी मितीकी प्रतिष्ठित भाव विजयजी की पादुका है।

नई दादावाड़ी

यह स्टेशनके पास है। इसे पनाचंद सिंघी की पुत्री श्रीमती सूरजबाईने बनवाकर इसमें सं० १९९७ मिती आषाढ़ सुदि १० को गुरुदेवके चरण प्रतिष्ठापित कराए है।

सरदार शहर

रतनगढ जंकसन से सरदार शहर जाने वाली रेलवेका अंतिम स्टेशन है। यह रतनगढसे ४१ मील है। बीकानेरके बाद ओसवालों के घरोंकी संख्या सबसे ज्यादा यहीं है। यहां ओसवालों के कुल १०३८ घर है। यहां २ जैन मंदिर और १ दादाबाड़ी है।

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

इसे सं० १८९७ मिती फागुण सुदि ५ को सुराणा माणकचंदजीने बनवाकर प्रतिष्ठित करवाया। इसका जीर्णोद्धार सं० १९४७ मे बीकानेर के मुँहता मानमलजी कोचर के मारफत हुआ। अभी भी स्थानीय पंचायतीकी ओरसे जीर्णोद्धार चालू है।

श्री पार्श्वनाथजी का नया मन्दिर

यह मदिर श्रीमान् वृद्धिचंदजी गधैयाकी हवेलीके पास है। इसका निर्माण काल अज्ञात है। यह मंदिर गोलछोंका बनवाया हुआ है।

दादावाड़ी

इसमें श्रीजिनकुशलसूरिजी और शातिसमुद्रगणिके चरण सं० १९११ अषाढ़ वदि ५ के प्रतिष्ठित हैं। खरतर गच्छ पट्टावलीमे जिनकुशलसूरिजी के चरणरू मंदिरकी प्रतिष्ठा सं० १९१० वैशाखमे वोथरा गुलाबचंदने श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी से करवाई, ऐसा उल्लेख है।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

कुछ वर्ष पूर्व मूलनायक भगवान की मूर्ति सेवक के घरमें थी। अभी बीकानेर के सघ और स्थानीय चतुर्भुजभी डागाने अच्छा मन्दिर बनवा कर इस मूर्तिको स्थापित किया है।

राजलदेसर

यह बिगा से दूसरा स्टेशन है और यहाँ से २१ मील है। यहाँ ओसवालों के ४०० घर हैं। स्टेशन से गाँव १ मील दूर है। बाजार के मध्यमें श्री आदिनाथजी का मन्दिर है।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

यह सं० १५८४ में प्रतिष्ठित है, सं० १७२१ में वैद मुहता शेरसिंह ने इसका जीर्णोद्धार कराया था।

रतनगढ़

यह दिल्ली लाइन का मुख्य जंकसन और बीकानेर से ८५ मील है। यहाँ ओसवालों के २०० घर हैं। बाहर में श्री आदिनाथजी का मन्दिर और बाहर दादाबाड़ी है। मंदिर से संलग्न खरतर गच्छका उपाश्रय है।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

इसका निर्माण समय अज्ञात है। पट्टके अनुसार सं० १९५७ के लगभग मन्दिर का निर्माण हुआ मालूम होता है।

श्री दादाबाड़ी

इसमें श्रीजिनकुशलसूरिजी के चरण सं० १८६६ माघ वदि ५ के प्रतिष्ठित हैं। श्रीजिनदत्तसूरिजी के छोटे चरणों पर कोई लेख नहीं है।

बीदासर

यह रतनगढ़ से सुजानगढ़ जानेवाली रेलवे के छापर स्टेशन से कुछ मील दूर है। इस गाँवमें ओसवालों के ४०० घर हैं। खरतर गच्छके उपाश्रय में देहरासर है जिसमें श्री चन्द्रप्रभुजी की मूर्ति विराजमान है। दादासाहब के चरण सं० १९०३ के प्रतिष्ठित हैं।

सुजानगढ़

यह इस लाइन में बीकानेर रियासत का अन्तिम स्टेशन है। यहाँ ओसवालों के ४५० घर हैं। लौंका गच्छ और खरतर गच्छके २ उपाश्रय, २ मन्दिर और दादाबाड़ी है।

श्री पार्श्वनाथजी का मंदिर

यह चौभमिलाये विशाल जिनालय श्री पनाचन्दजी सिंघीके अमर कीर्ति कलाप का परिचायक है। इसकी प्रतिष्ठा सं० १९७१ माघ सुदि ११ को श्रीजिनचारित्रसूरिजी ने की। इस

गर्भगृहस्थित प्रतिमाएँ
शीतलनाथ जिनालय
रिणी तारानगर
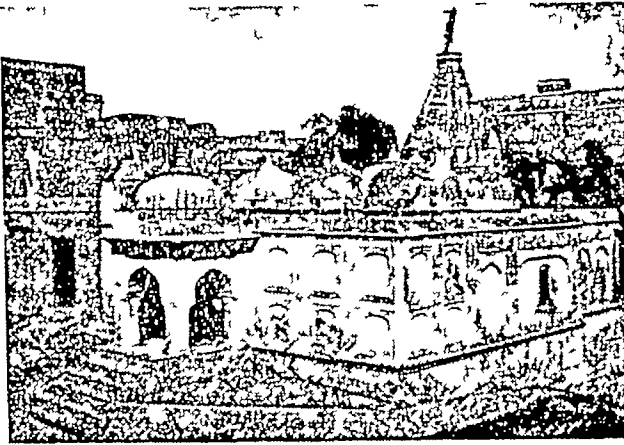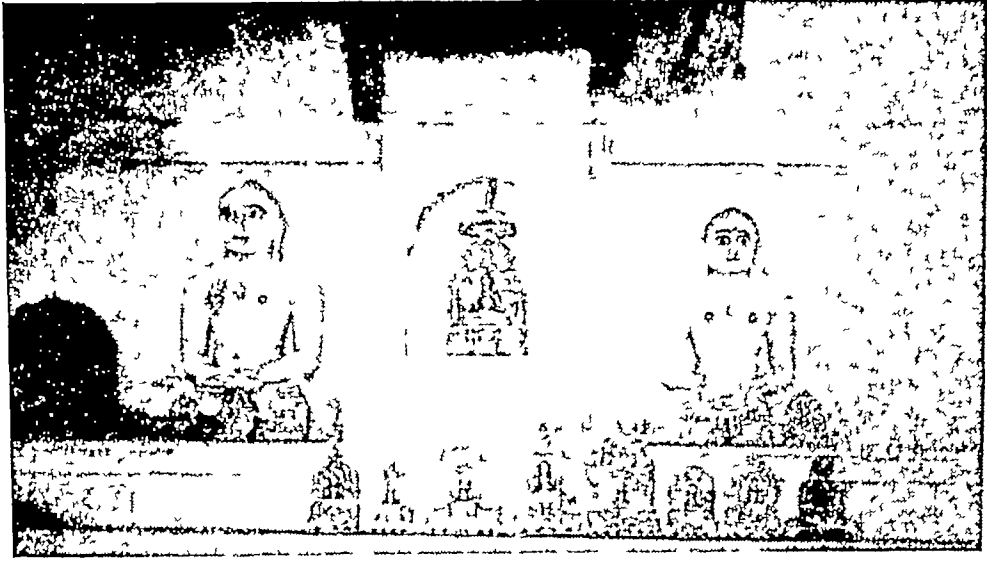
श्री शीतलनाथ जिनालय
रिणी-तारानगर
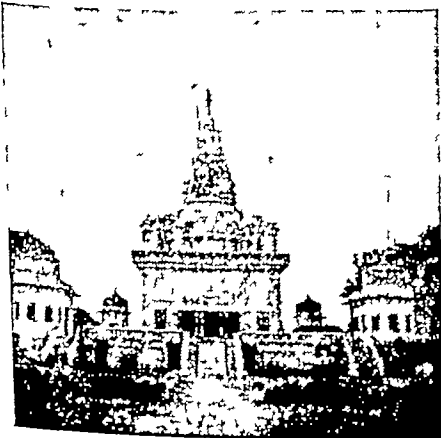
सिंघीजी का देवसागर प्रासाद, सुजानगढ़
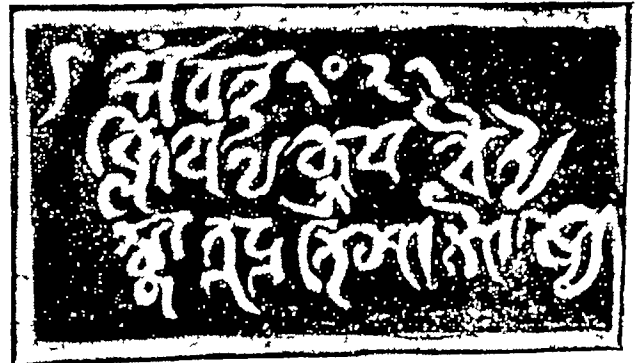
अभिलेख धातुमय पचतीर्थी झज्झ लेखाङ्क २३१७

चूरू

यह शहर बीकानेर से दिल्ली आनेवाली रेलवे लाइनका मुख्य स्टेशन है और रतनगढ़ से २६ मील है। यहां ओसवालोंके २६० घर हैं। यहां खरतरगच्छका बड़ा उपाश्रय, मंदिर और दादावाड़ी है। इन सबकी व्यवस्था यतिवर्य श्री ऋद्धिकरणजी के स्टेट संरक्षक ट्रस्टी गण करते हैं।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

यह मंदिर बाजारमें खरतरगच्छके उपाश्रयसे संलग्न है। इस मन्दिरका निर्माण समय अज्ञात है। जीर्णोद्धार यति ऋद्धिकरणजी ने बहुत सुन्दर (सं० १९८१ से १९९६ तक) प्रचुर द्रव्य व्ययसे करवाया है। मूलनायकजी की प्रतिमा सं० १६८७ में विजयदेवसूरि प्रतिष्ठित है।

दादाबाड़ी

यह भगवानदास बागलाकी धर्मशाला के पास है। इसमें कुआं, बगीचा और कई इमारतें बनी हुई हैं। स्थान बड़ा सुन्दर और विशाल है। इनको कई इमारत आदि भी यति ऋद्धिकरणजी ने बनवाई हैं। इस दादाबाड़ीमें श्रीजिनदत्तसूरिजीके चरण सं० १८५१ और श्री जिनकुशलसूरिजीके चरण सं० १८५०, श्रीजिनचन्द्रसूरिजी के सं० १९४० एवं अन्य भी बहुत से यतियोंके चरणपादुके स्थापित हैं।

राजगढ़

यह सार्दूलपुर स्टेशन नामसे प्रसिद्ध है जोकि चूरूसे १६ मील है। यहां ओसवालोंके १५० घर हैं। उपाश्रय से संलग्न श्रीसुपार्श्वनाथजी का मन्दिर है।

श्री सुपार्श्वनाथजी का मन्दिर

यह मन्दिर कब प्रतिष्ठित हुआ इसका कोई उल्लेख नहीं है परन्तु दादा साहबके चरण सं० १८९० मिती वैशाख सुदि ३ के दिन प्रतिष्ठित हैं।

रिणी (तारानगर)

राजगढ़से लगभग २२ मील है, प्रतिदिन मोटर-बस जाती है। यह नगर बहुत प्राचीन है। यहां ओसवालोंके १७५ घर हैं। खरतरगच्छका उपाश्रय, जैन मन्दिर और दादाबाड़ी है।

श्री शीतलनाथजी का मन्दिर

इस मन्दिरके निर्माणका कोई शिलालेख नहीं मिला। बीकानेर के ज्ञान भंडारके १ पत्रमें इसके निर्माणके सम्बन्धमें इस प्रकार लिखा है :—सं० ९९९ मिती फागुण वदि १२ बुधवार पातसाहे पुहर श्रीरिणीमें जैन रा देहरो तिण री नींव दीवी सेठ छजो जेता छाजावत रो करायो बहु गोत्र बेटी देवे देसावत री देहरे री सोंप भोजग जेता देवे रे जुंबी बसे देपावत रो बेटोरावत जसवंत बाफणो रो गणेश नीबावत रो दाम फोगे देहरे रो चेजारो भीको छमायह महमद बरस मा देहरो समाप थयो देहरो श्रीशीतलनाथजी रो देहनी थापत थापनी।

मूलनायक श्री शीतलनाथजी सं० १०५८ मे प्रतिष्ठित हैं। शासनदेवीकी मूर्त्तिपर सं० १०६५ का लेख है। मन्दिर वहुत सुदृढ विशाल, ऊँचे स्थानपर शिखरवद्ध बना हुआ है। वीकानेर राज्यके समस्त मदिरोंमें यह प्राचीनतम है। हाल ही मे यति पन्नालालजी की देखरेख में इसका जीर्णोद्धार हुआ है।

दादावाड़ी

यह गाव से करीव १ मील दूर है। यहा दादा श्रीजिनदत्तसूरिजीके चरण सं० १८६८ मे प्रतिष्ठित है। यति माणिक्यमूर्त्तिजी के चरण सं० १८२५ और गुणनदनके पादुके सं० १६१४ मे प्रतिष्ठित हैं। सं० १६५२ मे प्रतिष्ठित श्रीजिनकुशलसूरि पादुका, सं० १७८० की श्रीजिनसुख-सूरि पादुका, सं १७७६ की सुखलाभकी और सं० १६७२ हेमधर्मगणिकी पादुकाएं यहीं पर थीं जो अभी शीतलनाथजी के मन्दिर की भमती मे रक्खी हुई है।

नौहर

यह सादूलपुर स्टेशनसे हनुमानगढ़ जानेवाली रेलवे लाइनका स्टेशन है। रिणीके वाद प्राचीन जैन मन्दिरोंमें इसकी गणनाकी जाती है। यहा श्रीपार्श्वनाथजीका मन्दिर है जिनके शिलापट्ट पर सं० १०८४का लेख है। श्रीरत्ननिधानकृत स्तवनमे सं० १६३३ में युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजीके यहाकी यात्रा करनेका उल्लेख है।

भादरा

यह भी नौहरसे २५ मील दूर है। सादूलपुरसे ४० मील है, यहा ओसवालोंके ३० घर हैं। जैन मन्दिर मे पार्श्वनाथ और महावीर स्वामी की प्रतिमाएं विराजमान है। एक उपाश्रय और पुस्तकालय भी है।

लूणकरणसर

यह बीकानेरसे ४१ मील दूर भटिण्डा जानेवाली रेलवेका स्टेशन है। यहा ओसवालोंके ६० घर है। १ मन्दिर, उपाश्रय और दादावाड़ी है। दादावाड़ीके चरण इस समय मन्दिरमे रखे हुए हैं।

सुपार्श्वनाथजीका मन्दिर

साधुकीर्तिजीके स्तवनानुसार सं० १६२०—२५ के लगभग यहा श्रीआदिनाथजीका मन्दिर था, पर वर्तमान मन्दिरके शिलापट्ट पर लेखमे वा० दयाचन्दके सदुपदेशसे सावनसुखा सुजाणमल, बुचाठाकुरसी, बाफणा महीसिंह, गोलछा फूसाराम और बोथरा हीरानंदनें सं० १६०१ के प्रथम श्रावण बदि १४ को यह मन्दिर करवाया लिखा है। संभव है यह जीर्णोद्धारका लेख हो। सं० १६३६के श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजीके चरण व अन्य कई पादुकाऐं

हनुमानगढ़ (भटनेर)

यह भी उपर्युक्त रेलवेका स्टेशन है। बीकानेरसे सं० १४४ माइल है इसका पुराना नाम भटनेर (भट्टिनगर) है यहा बड गच्छकी एक शाखाकी गद्दी थी। यहा किलेके अन्दर एक प्राचीन मन्दिर है। यहाकी कई प्रतिमाएं बीकानेरके गंगा गोल्डन जुबिली म्यूजियममें रखी हुई हैं। कवि उदयहर्षके स्तवनानुसार सं० १७०७ मे यहा श्री मुनिसुव्रत स्वामीका मन्दिर था। इस समय यहां श्री शान्तिनाथजीका मन्दिर है, मूलनायकजीकी सपरिकर प्रतिमा सं० १४८६ मि० मिगसर सुदि ११ को प्रतिष्ठित है, मन्दिरके पास ही उपाश्रय भग्न अवस्थामे पडा है। यहां ओसवालोंके केवल ७ ही घर है।

सतरहवीं शतीके वड़ गच्छीय सुकवि मालदेव के भटनेर आदिनाथादि ६ जिनस्तवन के अनुसार उस समय मूलनायक आदिनाथजी की सपरिकर मूर्त्ति थी। जिसमें दोनों ओर दो काउसग्गिया (कार्योत्सर्ग मुद्रा-खडी खड्गासन) मूर्त्ति थी। अन्य मूर्त्तियों मे अजितनाथ, संभवनाथ, श्रेयासनाथ, शान्तिनाथ एवं महावीर की थी। बीकानेर म्यूजियम मे अजितनाथ, संभवनाथ व महावीर की प्रतिमाएं स० १५०१ मे प्रतिष्ठित है। विशेष संभव है कि वे स्तवनोक्त ही हों। आदिनाथ की मूर्त्ति म्यूजियम मे सं० १५०१ की व भटनेर में सं० १५६६ की है। संभवतः शान्तिनाथजी की मूर्त्ति भटनेर मे अभी मूलनायक है वही हो पर श्रेयासनाथजी की मूर्त्तिका पता नहीं चलता।

अब यहां उन स्थानों का परिचय दिया जा रहा है, जहां पूर्वकाल में जैन मन्दिर थे पर वर्त्तमान में नहीं रहे।

देसलसर

यह ग्राम देशनोक से १४ मील है। यहां मन्दिर अब भी विद्यमान है पर ओसवालों के घर न होनेसे यहां की प्रतिमाएं और पादुकायें नौखामंडीके नव्य निर्मित जैन मन्दिर में प्रतिष्ठित की गई है।

सारूँडा

यह स्थान नोखामंडी से १०-१२ मील है। स० १६१६ और १६४४ की शत्रुजय चैत्य परिपाटी में श्री ऋषभदेव भगवान के मन्दिर होनेका उल्लेख पाया जाता है। पर वर्त्तमान मे उसके कुछ भग्नावशेष ही रहे है।

पूगल

यह बहुत पुराना स्थान है। सं० १६६६ के लगभग कल्याणलाभके शिष्य कमलकीर्ति और सं० १७०७ मे ज्ञानहर्ष विरचित स्तवनों से स्पष्ट है कि यहां श्री अजितनाथस्वामी का मन्दिर था। पर इस समय यहा कोई मन्दिर नहीं है।

मन्दिरमें रखी हुई है। इस समय यहां मूलनायक श्रीसुपार्श्वनाथजीकी प्रतिमा है, पता नहीं यह परिवर्तन कब हुआ।

कालू

यह गांव लूणकरणसरसे १२ मीलकी दूरी पर है बस व ऊंटों पर जाया जा सकता है। यहां पर ओसवालोंके ११० घर हैं। जैन मन्दिर और उपाश्रय भी है।

श्रीचन्द्रप्रभुजीका मन्दिर

इस मन्दिरका निर्माण काल अज्ञात है श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्री जिनकुशलसूरिजीके चरण सं०१८६५ वैशाख वदि ७ को यहां पर श्री जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठित हैं। गारबदेसरकी मूर्तियां भी एक चौबीसीको छोड़ कर यहां मंगवाई हुई हैं।

गारबदेसर

ये गांव कालूसे कुछ मील है। ओसवालोंके घर अब नहीं है इससे यहांके मन्दिरकी मूर्तियां कालूके मन्दिरमें ले आए। एक चतुर्विंशति पट्ट प्रतिमाकी पूजा यहांके श्रीमुरलीधरजीके मन्दिरमें होती है।

महाजन

यह भी भटिण्डा जाने रेलवेका स्टेशन है। बीकानेरसे ७४ मील है गांवमें श्रीचन्द्रप्रभुजी का मन्दिर है। ओसवालोंके घर नहीं है। मन्दिर और उससे संलग्न जैन धर्मशाला है।

श्रीचन्द्रप्रभुजीका मंदिर—शिलापट्टके लेखानुसार खरतरगच्छके उपदेशसे श्री संघने सं० १८८९ मिती फागुन वदि २ शनिवारको बनवाकर इस मंदिरकी प्रतिष्ठा करवाई। मूलनायक जी पर कोई लेख नहीं है। दादा श्री जिनकुशलसूरिजीके चरणों पर १७०२ वैशाख सुदि ७ को महाजन संघके बनवाने और श्रीलब्धिकीर्तिजीके प्रतिष्ठा करनेका उल्लेख है।

सुरतगढ़

यह भी भटिण्डा लाइनका स्टेशन है। और बीकानेर से ११३ मील है यहां ओसवालोंके २०—२२ घर हैं।

श्री पार्श्वनाथजीका मन्दिर

मूलनायकजीकी प्रतिमा सं० १६१५ मिती माघ शुक्ला २ को श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। इस मंदिरकी सं० १९१६ वैशाख वदि ७ को अष्टाह्निका महोत्सव पूर्वक श्रीजिनहंस-सूरिजीने प्रतिष्ठित किया ऐसा खरतरगच्छ पट्टावलीमें लिखा है। मन्दिरमें लकड़ीकी पट्टी पर जो लेख है उसमें वैशाख सुदि ७ तिथि लिखी है जो विशेष ठीक मालूम होती है।

हनुमानगढ़ (भटनेर)

यह भी उपर्युक्त रेलवेका स्टेशन है। बीकानेरसे सं० १४४ माइल है इसका पुराना नाम भटनेर (भट्टिनगर) है यहा बड़ गच्छकी एक शाखाकी गद्दी थी। यहा किलेके अन्दर एक प्राचीन मन्दिर है। यहाकी कई प्रतिमाएं बीकानेरके गंगा गोल्डन जुबिली म्यूजियममें रखी हुई है। कवि उदयहर्षके स्तवनानुसार सं० १७०७ मे यहा श्री मुनिसुव्रत स्वामीका मन्दिर था। इस समय यहां श्री शान्तिनाथजीका मन्दिर है, मूलनायकजीकी सपरिकर प्रतिमा सं० १४८६ मि० मिगसर सुदि ११ को प्रतिष्ठित है, मन्दिरके पास ही उपाश्रय भग्न अवस्थामे पडा है। यहां ओसवालोंके केवल ७ ही घर है।

सतरहवीं शतीके वड गच्छीय सुकवि मालदेव के भटनेर आदिनाथादि ६ जिनस्तवन के अनुसार उस समय मूलनायक आदिनाथजी की सपरिकर मूर्त्ति थी। जिसमे दोनों ओर दो काउसग्गिया (कार्योत्सर्ग मुद्रा-खडी खडगासन) मूर्त्ति थी। अन्य मूर्त्तियों मे अजितनाथ, संभवनाथ, श्रेयासनाथ, शान्तिनाथ एवं महावीर की थी। बीकानेर म्यूजियम मे अजितनाथ, संभवनाथ व महावीर की प्रतिमाएँ स० १५०१ मे प्रतिष्ठित हैं। विशेप संभव है कि वे स्तवनोक्त ही हों। आदिनाथ की मूर्त्ति म्यूजियम मे सं० १५०१ की व भटनेर मे सं० १५६६ की है। संभवतः शान्तिनाथजी की मूर्त्ति भटनेर मे अभी मूलनायक है वही हो पर श्रेयासनाथजी की मूर्त्तिका पता नहीं चलता।

अव यहां उन स्थानो का परिचय दिया जा रहा है, जहां पूर्वकाल मे जैन मन्दिर थे पर वर्त्तमान मे नहीं रहे।

देसलसर

यह ग्राम देशनोक से १४ मील है। यहां मन्दिर अब भी विद्यमान है पर ओसवालों के घर न होनेसे यहां की प्रतिमाएं और पादुकायें नौखामंडीके नव्य निर्मित जेन मन्दिर मे प्रतिष्ठित की गई है।

सारूँडा

यह स्थान नोखामंडी से १०-१२ मील है। स० १६१६ और १६४४ की शत्रुंजय चैत्य परिपाटी मे श्री ऋषभदेव भगवान के मन्दिर होनेका उल्लेख पाया जाता है। पर वर्त्तमान मे उसके कुछ भग्नावशेष ही रहे है।

पूगल

यह बहुत पुराना स्थान है। सं० १६६६ के लगभग कल्याणलाभके शिष्य कमलकीर्ति और सं० १७०७ में ज्ञानहर्प विरचित स्तवनों से स्पष्ट है कि यहां श्री अजितनाथस्वामी का मन्दिर था। पर इस समय यहा कोई मन्दिर नहीं है।

मन्दिरमें रखी हुई है। इस समय यहां मूलनायक श्रीसुपार्श्वनाथजीकी प्रतिमा है, पता नहीं यह परिवर्तन कब हुआ।

कालू

यह गांव लूणकरणसरसे १२ मीलका दूरी पर है बस व ऊंटों पर जाया जा सकता है। यहां पर ओसवालोंके ११० घर हैं। जैन मन्दिर और उपाश्रय भी है।

श्रीचन्द्रप्रभुजीका मन्दिर

इस मन्दिरका निर्माण काल अज्ञात है श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्री जिनकुशलसूरिजीके चरण सं०१८६५ वैशाख वदि ७ को यहां पर श्री जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठित हैं। गारबदेसरकी मूर्तियां भी एक चौबीसीको छोड़ कर यहां मंगवाई हुई हैं।

गारबदेसर

ये गांव कालूसे कुछ मील है। ओसवालोंके घर अब नहीं है इससे यहांके मन्दिरकी मूर्तियां कालूके मन्दिरमें ले आए। एक चतुर्विंशति पट्ट प्रतिमाकी पूजा यहांके श्रीमुरलीधरजीके मन्दिरमें होती है।

महाजन

यह भी भटिण्डा लाइन रेलवेका स्टेशन है। बीकानेरसे ७४ मील है गांवमें श्रीचन्द्रप्रभुजी का मन्दिर है। ओसवालोंके घर नहीं है। मन्दिर और उससे संलग्न जैन धर्मशाला है।

श्रीचन्द्रप्रभुजीका मंदिर—शिलापट्टके लेखानुसार जयचंदजीके उपदेशसे श्री संघने सं० १८८१ मिती फागुन वदि २ शनिवारको बनवाकर इस मंदिरकी प्रतिष्ठा करवाई। मूलनायक जी पर कोई लेख नहीं है। दादा श्री जिनकुशलसूरिजीके चरणों पर १७७२ वैशाख सुदि ७ को महाजन संघके बनवाने और श्रीलब्धिकीर्तिजीके प्रतिष्ठा करनेका उल्लेख है।

सूरतगढ़

यह भी भटिण्डा लाइनका स्टेशन है। और बीकानेर से ११२ मील है यहां ओसवालोंके २०—२१ घर हैं।

श्री पार्श्वनाथजीका मन्दिर

मूलनायकजीकी प्रतिमा सं० १६१५ मिती माघ सुदी २ को श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित है। इस मंदिरको सं० १६१६ वैशाख वदि ७ को अष्टाह्निका महोत्सव पूर्वक श्रीजिनहंस सूरिजीने प्रतिष्ठित किया ऐसा खरतरगच्छ पट्टावलीमें लिखा है। मन्दिरमें लकड़ीकी पाटी पर जो लेख है उसमें वैशाख सुदि ७ तिथि लिखी है जो विशेष ठीक मालूम होती है।

जैन उपाश्रयों का इतिहास

श्रावक समाज के लिए जिस प्रकार देवरूप से जैन तीर्थंकर पूज्य हैं उसी प्रकार गुरुरूप जैन साधु भी तद्वत् उपास्य है। अतः बीकानेर वसने के साथ जैन श्रावकों की वीकानेर में बस्ती बढती गई तब उनके धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न कराने वाले और धर्मोपदेष्टा जैन मुनियों का आना जाना भी प्रचुरता से होने लगा। और उनके ठहरने व श्रावकों को धर्म ध्यान करने के लिए उचित स्थान की आवश्यकता ने ही पौपधशाला या उपाश्रयों को जन्म दिया। इन धर्मस्थानोंका मन्दिरों के निकटवर्त्ती होनेसे विशेष सुविधा रहती है इसलिये श्री चिन्तामणिजी और महावीरजी जो कि १३ और १४ गुवाड़ के प्रमुख मन्दिर हैं, उनके पार्श्ववर्त्ती पौपधशालाएँ बनवाई गईं। उस समय जैन साधुओंके आचार विचारोंमें कुछ शिथिलता प्रविष्ट हो चुकी थी। अतः सं० १६०६ मे उ० कनकतिलक, भावहर्ष आदि खरतर गच्छीय मुनियों ने वीकानेरमे क्रियोद्धार किया और धर्मप्रेमी संग्रामसिंहजी वच्छावत की विज्ञप्ति से सं० १६१३ मे श्रीजिनचन्द्र सूरिजी बीकानेर पधारे। आपश्री ने यहाँ आनेके अनन्तर क्रियोद्धार कर चारित्र पालन कर सकने वाले मुनियों को ही अपना साथी बनाया अवशेष यति लोग इनसे भिन्न महात्मा के नामसे प्रसिद्ध हो गए। पुराने उपाश्रय मे वे लोग रहते थे इसलिए मंत्रीश्वर ने अपनी माताके पुण्य वृद्धिके लिए नवीन बडी पौषधशाला निर्माण करवायी जो अभी वड़े उपाश्रय के नामसे प्रसिद्ध है। वह पौषधशाला सुविहित साधुओं के धर्म ध्यान करने के लिए और इसके पास ही संवने साध्वियों के लिए उपाश्रय बनवाया * इसी प्रकार समय-समय पर कंवलागच्छ, पायचंदगच्छ, व लुकागच्छ व तपागच्छ के उपाश्रय बनवाये। १९ वीं शतीमे फिर यतियों मे शिथिलाचार वढ़ गया और विहार की मर्यादा भी शिथिल हो गई जो यति विशेष कर बीकानेर मे रहने लगे उन्होंने अपने अपने उपाश्रय भी अलग बनवा लिये क्योंकि खरतर गच्छमे यतियों की सख्या उस समय सैकडो पर थी अतः पुराने उपाश्रय में इनकी भीड लगी रहती थी, अत जिन्हें वहाँ रहने मे असुविधा प्रतीत हुई या जिन के पास धन इकट्ठा हो गया अथवा राजदरबार मे उनकी मान्यता होनेसे राजकी ओरसे जमीन मिल गई उन्होंने स्वतंत्र उपाश्रय बनवा लिए। उपाश्रयों के लेखोंसे प्रमाणित है कि इस शताब्दी में बहुत से नवीन उपाश्रय बनकर उनकी संख्या में वृद्धि हुई। अव समस्त उपाश्रयों का संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जा रहा है।

बड़ा उपासरा

यह उपाश्रय रागड़ीके चौकमे है। यह स्थान बहुत विशाल बना हुआ है। इसमे सैकडों यति साधु चातुर्मास करते थे। इस उपाश्रयके श्रीपूज्यजी वृहद् भट्टारक कहलाते हैं। उनके अनु-

---

* इस समय प्राचीन उपाश्रय भी सुविहित साधुओं के व्यवहार में आता था, क्योंकि समयसुन्दरजी ने स १६७४ के लगभग जब बादशाह जहाँगीर का फरमान श्रीजिनसिहसूरिजी को बुलाने के लिए आया तब आचार्यश्रीके उसी चिन्तामणिजी के मन्दिर से सलग्न उपाश्रय मे विराजमान होनेका उल्लेख किया है।

ददरेवा

यह गाँव राजगढ़ से रिणी जाते हुये मार्गमें आता है। वाचक श्री गुणविनय कृतस्तवन के अनुसार सत्तरहवीं शताब्दी में यहां भी शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर था। इस समय यहाँ मन्दिर का नामोनिशान भी नहीं है।

बीकानेर के जैनमन्दिरों को राज्यकी ओर से सहायता

बीकानेर राज्यकी देवस्थान कमेटी से पूजनादि के लिये निम्नोक्त रकम मासिक सहायता मिलती है।

यह सूची पुरानी है, वर्तमान में सहायता की रकममें वृद्धि हो गयी है।

१—नापासर* शान्तिनाथजी	१)
२—रतनगढ़ जैनमन्दिर	||=)
दादाजी	१||≡)
३—चूरू शांतिनाथजी	१||)
दादाजी	१≡)
४—राजगढ़ जैनमन्दिर	२||≡)
५—रिणी× शीतलनाथजी	२||≡)
दादाजी	||-)
६—सुजानगढ़ ऋषभदेवजी	२||≡)
७—सरदारशहर पार्श्वनाथजी	२||≡)
पार्श्वनाथजी नया मन्दिर	२||≡)
दादाजी	१≡)
८—उदरामसर दादाजी	२)
९—देशनोक मन्दिर	१)
१०—लूणकरणसर पार्श्वनाथजी	२||≡)
११—सूरतगढ़ पार्श्वनाथजी	२|-)
१२—ऋषभदेवजी	१≡
१३—हनुमानगढ़	२||≡)
१४—नौहर	२|-)
१५—भादरा	१|||)

रुक्का नकल   छाप   श्री रामजी

* श्री दीवान वचनात् वां नमासर री जमात रा वा स्वामजी री मारफत हुकमदारां जोग। तीमा थी थी देवमन्दिर जैनरो वां नापासरमें छै तैरी सेवा पूजा सेवग करयी करे छै तै मे केसरचन्दन धूपरा मा १ र २) अवरे रावा देव कर दिया दै मुजपाव रो हुकमदार हुवे छो १) वा स्वामजीरी माय रो हुकमदार हुवे छु १) वकू दिया बावयो वा मवारक ठाकरसी सं १९ २ मी फागण वदि ९।

× श्री बीकानेर रा मोजदिया जिनायतु रिणी रा मोजदिया जोग तथा पूज श्री जिनसुखसूरिजी री पालकी पारसअरे पूजा नु टका १५। अवरे पमरै वह भितीया देवो मैं वस्तु मुकाते वां हुवरै परवेश सं १५८१ मगसर सुद ४ हुवा वह दे वार्ई उपासरे भवरकीर देवो।

पौषधशाला स० १८४५ भाद्रवा वदि ८ को वनवाने का लिखा है। जो कि उपाश्रय के वर्त्तमान रूपमे निर्माण होनेका सूचक होगा। खरतराचार्य शाखाके श्री पूज्य श्री जिनचन्द्रसूरिका देहान्त हो गया है। इस उपाश्रय मे भी एक अच्छा ज्ञान भंडार है।

श्री जैनलक्ष्मी मोहनशाला

यह भी रागड़ी के चौक में। सं० १८२२ मे यति लक्ष्मीचन्द्र जी ने यह मकान वनवाया होगा। इस मे श्री जिनरत्नसूरिजी के पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरिजी के शिष्य उ० उदयतिलकजी की परम्परा के उ० जयचन्द्रजी के शिष्य पालचन्द अभी रहते हैं। इनके प्रगुरु मोहनलाल जी ने स० १९५१ विजयदशमी को श्री जैन लक्ष्मी मोहन शाला नाम से पुस्तकालय स्थापित किया। इनके ज्ञानभंडार मे हस्तलिखित ग्रन्थो का अच्छा संग्रह है।

श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि खरतरगच्छ धर्मशाला

यह भी रागड़ी के चौकमें है। श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी कीर्तिरत्नसूरि शाखामें नामाङ्कित विद्वान हो गए हैं जिनके शिष्य शिष्याएं अत्र भी सर्वत्र विचर कर शासन सेवा कर रहे हैं। श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के प्रगुरु सुमतिसोम जी के गुरू सुमतिविशाल जी ने सं० १९२४ ज्येष्ठ सुदि ५ को यह उपाश्रय वनवाया। श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी सं० १९४५ मे क्रियोद्धार करके सं० १९५७ में पुनः वीकानेर आए और अपने इस उपाश्रय को मय अन्य दो उपासरों (जिनमेसे एक इसके संलग्न और दूसरा इसके सामने है) ज्ञानभंडार, सेढूजी का मन्दिर, नाल की शाला इत्यादि अपनी समस्त जायदाद को "व्यवस्थापत्र" वनवा कर खरतर गच्छ संघ को सौंप दी। सं १९८४ मे श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के पुन. पधारने पर निकटवर्ती उपाश्रय का नवीन निर्माण और मूल उपाश्रय का जीर्णोद्धार सं० १९८६ मे लगभग ६०००) रुपये खरच कर श्री संघने करवाया जिसके सारे कामकी देखरेख हमारे पूज्य स्व० श्री शंकरदान जी नाहटा ने बड़े लगनसे की थी। खेद है कि उपासरे का ज्ञानभंडार सूरिजी के यति-शिष्य तिलोकचन्द जी ने जिन्हें कि वड़े विश्वास के साथ सूरिजी ने व्यवस्थापक वनाया था, वेच डाला इस उपाश्रय से संलग्न एक सेवग के मकान को खरीद कर हमारी ओर से उपाश्रय मे दिया गया है। पूज्य श्रीयुत शुभैराज जी नाहटा के सतत् परिश्रमसे एक विशाल व्याख्यान हाल का निर्माण हुआ है उ० श्री सुखसागर जी और साध्वीजी माहमाश्री जी के ग्रन्थों की अलमारियां यहां मंगवाकर ज्ञानभंडार की पुनर्स्थापना की गयी है।

श्री अनोपचन्द्रजी यति का उपासरा

यह उपर्युक्त श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि खरतर गच्छ धर्मशाला के सामने है। इसका ३/४ हिस्सा उपर्युक्त धर्मशाला के तालुके है व १/४ हिस्सा यति अनोपचन्द्रजी का था जिसमे उनके शिष्य प्यारेलाल यति रहते हैं। इस से संलग्न इसी शाखा के यति रामधनजी का उपासरा है।

यातियों की संख्या बीकानेर और बीकानेरके गांवोंमें सबसे अधिक थी। बीकानेर रियासतके प्रायः सभी गांवोंमें यहांकी गद्दीके श्रीपूज्यजी के आज्ञानुयायी यति लोग विचरते रहते थ अर्थात् सब तरहसे यह स्थान अपनी महानता के कारण ही यह बड़ा उपासरा सबसे अधिक देश-देशान्तरोंमें प्रसिद्धि प्राप्त है। इस उपाश्रय के निर्माण के सम्बन्ध में हम आगे लिख चुके हैं कि यह सं० १६१२ के लगभग मन्त्रीश्वर संग्रामसिंह ने अपनी माताके पुण्यार्थ बनवाया था*। इस उपाश्रयके सम्बन्धमें सं० १७०५ का परवाना हमारे संग्रहमें है, जिसकी नकल इस प्रकार है :—

सही—

स्वस्ति श्री महाराजाधिराजा महाराजा श्री करणसिंह जी वचनायते अवास गोपाका लोग सुपरसाद वांचजो तथा उपासरो बड़ो भटारकी महामना रो छै सु भटारकिया—(ने) दीन छै० सु० कोलइ देजो० महाजन भटारकी नु लाग—य छे संवत् १७०५ वैसस वद ५ श्री अघरगाबाद।

इस उपाश्रयमें यतिवर्य्य हितवल्लभ जी (हिमत् जी) की प्रेरणासे कई यतियोंके हस्त लिखित ग्रन्थोंके समहरूप वृहद् ज्ञानभंडार स्थापित हुआ। यद्यपि इससे पहिले सत्तरहवीं शतीमें भी विक्रमपुर ज्ञानकोष का उल्लेख पाया जाता है पर अब वह नहीं है। इस भंडारके अतिरिक्त श्रीपूज्यजी का संग्रह भी महत्त्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है जिसका परिचय ज्ञानभंडारके प्रकरणमें दिया गया है। इस उपाश्रय में वृहत्खरतर गच्छीय श्रीपूज्यों की गद्दी है वर्त्तमान में भट्टारक श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिजी श्रीपूज्य हैं। इसमें १३ गुवाड़ की पंचायती व कई मन्दिरों की वस्तुएं भी रहती हैं। श्री पूज्यजी का वर्त्तमान तख्त व उपाश्रय के सन्मुख का हिस्सा श्रीमद् ज्ञानसार जी के सदुपदेश से जैन-संघ ने बनवाया था।

साध्वियोंका उपासरा

यह बड़े उपाश्रय के पास की गलीमें साध्वियोंके ठहरने व श्राविकाओं के धर्म-ध्यान करने के लिये संघ ने बनवाया था अभी यहाँ कई कमरे हैं जिनमें भट्टारक और आचार्य खरतर शाखा की यतणियें रहती हैं।

खरतराचार्य गच्छका उपासरा

वि० सं० १६८६ में श्रीजिनसिंहसूरिजी के पट्टधर भट्टारक श्री जिनराजसूरि व आचार्य श्रीजिनसागरसूरि किसी कारणवश अलग अलग हो गए। तबसे श्री जिनसागरसूरिजी का समुदाय खरतराचार्य गच्छ कहलाने लगा। यह उपाश्रय बड़े उपाश्रय के ठीक पीछे नाहटों की गुवाड़ में है संभवतः उपर्युक्त गच्छ भेद होनेके कुछ समय बाद ही इसकी स्थापना हुई होगी पर इसमें लगे हुए शिलालेख में यति मलूकचन्द जी के उपदेश से आचार्य गच्छीय संघ द्वारा यह

---

* पौरपक्षाला विपुला विनिर्मिता येन भूरि भाग्येन।
मातुः पुण्याय मनसा मान्या सु धन्यानाम्॥ २५४॥

[कर्मचन्द मन्त्रिवंश प्रबन्ध]

कल्पसूत्रके चित्र—सिद्धार्थ सभा

त्रिशला (कक्षमें) एव स्वप्न पाठक

सिद्धार्थ की राजसभा

देव विमान
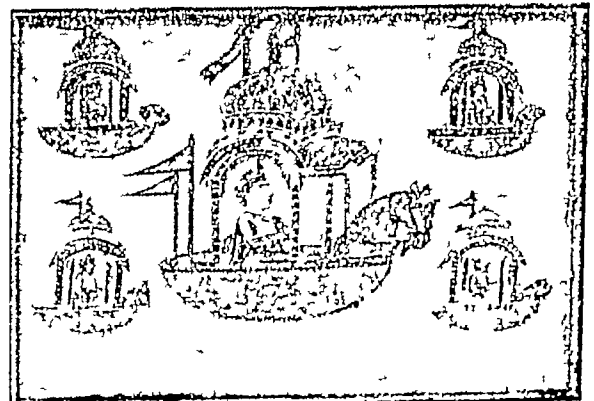
महो० रामलालजी का उपासरा

क्षेम शाखाके महो० रामलालजी इस जमाने के प्रसिद्ध वैद्यों में थे इन्होंने वैद्यक द्वारा अच्छी सम्पत्ति अर्जन कर यह उपाश्रय बनवाया। अभी इसमें इनके प्रशिष्य बालचन्द्रजी रहते हैं।

श्री सुगनजी का उपासरा

यह भी रांघड़ी के चौक के पास है। उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी उन्नीसवीं शती के बड़े गीतार्थ एवं विद्वान थे, अपने गुरु अमृतधर्मजी के साथ इन्होंने क्रियोद्धार किया था। आपके उपदेश से श्री संघ ने सं० १८५८ में यह पौषधशाला बनवाई, इसमें इन्होंने अपना ज्ञान भण्डार स्थापित किया जिसका लेख इस प्रकार है —

"श्री सिद्धचक्राय नमः श्री पुण्डरीकादि गौतम स्वामी प्रमुख गणधरेभ्यो नमः श्री बृहत्खर तरगणाधीश्वर भट्टारक श्री जिनभक्तिसूरि शिष्य श्रीविशागर गणि शिष्य वाचनाचार्य संविग्न श्री अमृतधर्म गणि शिष्योपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणिनामुपदेशात् श्री संघेन पुण्यार्थ श्री बीका नेर नगरे इयं पौषधशाला कारिता सं० १८५८ इस पौषधशाला माहिं शुद्ध समाचारी धारक संवेगी साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका धर्म ध्यान करे और कोई कजर करण पावे नहीं सही सही ॥ लिखितं उपाध्याय श्रीक्षमाकल्याण गणिभिः सं १८६१ मिती मार्गशीर्ष सुदि ३ दिने संघ समक्षम्।

उपाध्याय श्री क्षमाकल्याण गणि स्वनिश्रा को पुस्तक भण्डार स्थापन कियो उसकी विगति लिखी है। भण्डार को पुस्तक कोई चोर लेवे अथवा वेचे सो देव गुरु धर्म को विराधक होय भवो भव महा दुखी होय"।

सं० श्री क्षमाकल्याणजी के प्रशिष्य श्री सुगनजी अच्छे कवि हुए हैं जिनके रचित बहुतसी पूजाएं प्रसिद्ध हैं उन्हीं के नामसे यह सुगनजी का उपासरा कहलाता है। पीछे से इससे संलग्न उपाश्रय को एक यति से खरीद कर शामिल कर लिया गया है। उपाश्रय के ऊपर अजितनाथजी का देहरासर और नीचे क्षमाकल्याण-गुरु-मन्दिर और ज्ञानभण्डार है। इस उपाश्रय का हाल ही में सुन्दर जीर्णोद्धार हुआ है।

बोरों की सेरी का उपासरा

रांगड़ीके चौक के निकटवर्ती बोहरों की सेरीमें होने से यह "बोरों सेरी का उपासरा" कहलाता है। यह उपाश्रय क्षमाकल्याणजी की शिष्याओं एवं श्राविकाओं के धर्मध्यान करनेके लिए बनवाया गया था।

छत्तीबाई का उपासरा

यह भादहों की गुवाड़ में श्री सुपार्श्वनाथजी के मन्दिर से संलग्न है। इसे छत्तीबाई ने बनवाया इससे यह छत्तीबाई का उपासरा कहलाता है। यहां कभी कभी साध्वियों का चौमासा होता है और बाइयां धर्मध्यान करती हैं।

पौषधशाला स० १८४५ भाद्रवा वदि ८ को वनवाने का लिखा है। जो कि उपाश्रय के वर्त्तमान रूपमें निर्माण होनेका सूचक होगा। खरतराचार्य शाखाके श्री पूज्य श्री जिनचन्द्रसूरिका देहान्त हो गया है। इस उपाश्रय में भी एक अच्छा ज्ञान भंडार है।

श्री जैनलक्ष्मी मोहनशाला

यह भी रागडी के चौक में। सं० १८२२ मे यति लक्ष्मीचन्द्र जी ने यह मकान वनवाया होगा। इस मे श्री जिनरत्नसूरिजी के पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरिजी के शिष्य उ० उदयतिलकजी की परम्परा के उ० जयचन्द्रजी के शिष्य पालचन्द अभी रहते हैं। इनके प्रगुरु मोहनलाल जी ने स० १९५१ विजयदशमी को श्री जैन लक्ष्मी मोहन शाला नाम से पुस्तकालय स्थापित किया। इनके ज्ञानभंडार मे हस्तलिखित ग्रन्थों का अच्छा संग्रह है।

श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि खरतरगच्छ धर्मशाला

यह भी रागडी के चौकमे है। श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिजी कीर्तिरत्नसूरि शाखामें नामाङ्कित विद्वान हो गए हैं जिनके शिष्य शिष्याएं अव भी सर्वत्र विचर कर शासन सेवा कर रहे है। श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के प्रगुरु सुमतिसोम जी के गुरू सुमतिविशाल जी ने सं० १९२४ ज्येष्ठ सुदि ५ को यह उपाश्रय वनवाया। श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी सं० १९४५ में क्रियोद्धार करके सं० १९५७ मे पुनः वीकानेर आए और अपने इस उपाश्रय को मय अन्य दो उपासरों (जिनमेसे एक इसके संलग्न और दूसरा इसके सामने है) ज्ञानभंडार, सेढूजी का मन्दिर, नाल की शाला इत्यादि अपनी समस्त जायदाद को "व्यवस्थापत्र" वनवा कर खरतर गच्छ संघ को सौंप दी। सं १९८४ मे श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजी के पुन. पधारने पर निकटवर्ती उपाश्रय का नवीन निर्माण और मूल उपाश्रय का जीर्णोद्धार सं० १९८६ मे लगभग ६०००) रुपये खरच कर श्री संघने करवाया जिसके सारे कामकी देखरेख हमारे पूज्य स्व० श्री शंकरदान जी नाहटा ने बड़े लगनसे की थी। खेद है कि उपासरे का ज्ञानभंडार सूरिजी के यति-शिष्य तिलोकचन्द जी ने जिन्हें कि बड़े विश्वास के साथ सूरिजी ने व्यवस्थापक बनाया था, वेच डाला इस उपाश्रय से संलग्न एक सेवग के मकान को खरीद कर हमारी ओर से उपाश्रय में दिया गया है। पूज्य श्रीयुत शुभैराज जी नाहटा के सतत् परिश्रमसे एक विशाल व्याख्यान हाल का निर्माण हुआ है उ० श्री सुखसागर जी और साध्वीजी माहमाश्री जी के ग्रन्थों की अलमारियाँ यहाँ मंगवाकर ज्ञानभंडार की पुनर्स्थापना की गयी है।

श्री अनोपचन्द्रजी यति का उपासरा

यह उपर्युक्त श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि खरतर गच्छ धर्मशाला के सामने है। इसका ¾ हिस्सा उपर्युक्त धर्मशाला के तालुके हैं व ¼ हिस्सा यति अनोपचन्द्रजी का था जिसमे उनके शिष्य प्यारेलाल यति रहते हैं। इस से संलग्न इसी शाखा के यति रामधनजी का उपासरा है।

यतियों की संख्या बीकानेर और बीकानेरके गांवोंमें सबसे अधिक थी। बीकानेर रियासतके प्राय सभी गांवोंमें यहांकी गद्दीके श्रीपूज्यजी के आज्ञानुयायी यति लोग बिचरते रहते थे अर्थात् सब तरहसे यह स्थान अपनी महानता के कारण ही यह बड़ा उपासरा सबसे अधिक देश-देशान्तरोंमें प्रसिद्धि प्राप्त है। इस उपाश्रय के निर्माण के सम्बन्ध में हम आगे लिख चुके हैं कि यह सं० १६१३ के लगभग मन्त्रीश्वर संग्रामसिंह ने अपनी माताके पुण्यार्थ बनवाया था*। इस उपाश्रयके सम्बन्धमें सं० १७०५ का परवाना हमारे समक्षमें है, जिसकी नकल इस प्रकार है —

सही—

स्वस्ति श्री महाराजाधिराजा महाराजा श्री करणसिंह जी वचनायतं खवास गोपाल जोग सुपरसाद बांचजो तथा उपासरो बड़ो भटारकी महाजना रो छै सु भटारकिया—(ने) दीन छै० सु० सोलह देवो० महाजन भटारकी मु खम—य छे संवत् १७०५ बैसाख बद ५ श्री अवरंगाबाद।

इस उपाश्रयमें यतिवर्य्य हितवल्लभ जी (हिमत् जी) की प्रेरणासे कई यतियोंके हस्त लिखित ग्रन्थोंके समहरूप बृहद् ज्ञानभंडार स्थापित हुआ। यद्यपि इससे पहिले सत्रहवीं शतीमें भी विक्रमपुर ज्ञानकोष का उल्लेख पाया जाता है पर अब वह नहीं है। इस भंडारके अतिरिक्त श्रीपूज्यजी का संग्रह भी महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय है जिसका परिचय ज्ञानभंडारके प्रकरणमें दिया गया है। इस उपाश्रय में बृहत्खरतर गच्छीय श्रीपूज्यों की गद्दी है वर्त्तमान में भट्टारक श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिजी श्रीपूज्य हैं। इसमें १२ गुवाड़ की पंचायती व कई मन्दिरों की चाबुएं भी रहती हैं। श्री पूज्यजी का वर्त्तमान तख्त व उपाश्रय के सन्मुख का हिस्सा श्रीमद् ज्ञानसार जी के सदुपदेश से जैन-संघ ने बनवाया था।

साध्वियोंका उपासरा

यह बड़े उपाश्रय के पास की गलीमें साध्वियोंके ठहरने व श्राविकाओं के धर्म-ध्यान करने के लिये संघ ने बनवाया था अभी यहां कई स्थल हैं जिनमें भट्टारक और आचार्य खरतर शाखा की साध्वियां रहती हैं।

खरतराचार्य गच्छका उपासरा

वि० सं० १६८६ में श्रीजिनसिंहसूरिजी के पट्टधर भट्टारक श्री जिनराजसूरि व आचार्य श्रीजिनसागरसूरि किसी कारणवश अलग अलग हो गए। तबसे श्री जिनसागरसूरिजी का समुदाय खरतराचार्य गच्छ कहलाने लगा। यह उपाश्रय बड़े उपाश्रय के ठीक पीछे नाहटों की गुवाड़ में है संभवतः उपर्युक्त गच्छ भेद होनेके कुछ समय बाद ही इसकी स्थापना हुई होगी पर इसमें लगे हुए शिलालेख में यति मलूकचन्द जी के उपदेश से आचार्य गच्छीय संघ द्वारा यह

* पौषधशाला विपुला विनिर्मिता येन भूरि भाग्येन।
मातुः पुण्याय स्वमाता माम्ना सु मन्त्रानाम्॥ ३५४॥
[कर्मचन्द मन्त्रिवंश प्रबन्ध]

पन्नीबाई का उपासरा

यह आसानियों के चौक के पास गली में है। यह उपाश्रय तपा गच्छ की श्राविकाओं के हस्तगत है। इसमे श्री पद्मप्रभुजी का देहरासर भी है।

पायचन्द गच्छ का उपासरा

यह उपासरा आसानियो के चौक मे है। इसमें नागपुरी तपा गच्छीय श्री पासचन्द्रसूरि जी की गद्दी है। इसके श्रीपूज्य श्री देवचन्द्रसूरिजी का कुछ वर्ष पूर्व स्वर्गवास हो गया, इसका प्रवन्ध उस गच्छ के रामपुरिया आदि श्रावक लोग करते है।

रामपुरियों का उपासरा

यह रामपुरियों की गुवाड मे है। इसमे श्री कुशलचन्द्र गणि पुस्तकालय स्थापित है। स्वर्गीय उदयचन्द्रजी रामपुरिया के प्रयत्न से यहा तीर्थपट्टादि का चित्रकाम बडा सुन्दर हुआ है। इस उपाश्रयमे सं० १९८३ मे उन्होंने श्री पार्श्वचन्द्रसूरिजी और भातृचन्द्रसूरिजी की पादुकाएं स्थापितकी है।

कँवला गच्छ का उपासरा

यह उपासरा सुराणों की गुवाड में है। यहा कँवला गच्छ के श्रीपूज्यों की गद्दी थी। आगे इसमे देहरासर और ज्ञानभण्डार भी था। यति प्रेमसुन्दर ने इस उपाश्रय और इसके समस्त सामान को वेच डाला। अब इस उपाश्रय को खरीद कर यति मुकनसुन्दर रहते है।

लौंका गच्छ का उपासरा

यह उपासरा कँवलोंके उपासरे के पास सुराणों की गुवाड़ मे है। इसमे नागौरी लुका गच्छके श्रीपूज्यों की गद्दी थी। शिलालेखों के अनुसार इस पौपधशाला को (इस रूपमे) इस गच्छ के श्रीपूज्य लक्ष्मीचन्द्रसूरिजी ने सं० १८८७ और १८९५ मे बनवाई। अभी इस उपाश्रय मे यति लच्छीराम जी रहते है।

लौंका गच्छका छोटा उपासरा

यह उपर्युक्त उपासरे के पास ही है। लौंका गच्छका शाखा भेद होनेके बाद छोटी गद्दी वाले इसमे रहने लगे। इसका निर्माण कब हुआ, कोई उल्लेख नहीं मिलता।

लौंका गच्छ की पट्टावली मे लिखा है कि पूज्य जीवणदासजी के समय दोनों उपासरों पर अन्य लोगोंके कब्जा कर लेनेपर उन्होंने सं० १७७८ मे बीकानेर नरेश से अर्जी कर स० १७७८ प्रथम श्रावण बदि ८ को दोनो उपासरों का परवाना प्राप्त किया।

सीपानियों का उपासरा

यह सिंघीयों के चौक मे है। इसे ऋद्धिविजय गणि के उपदेश से सीपानी सघ ने स० १८४६ माघसुदी १५ को बनवाया था।
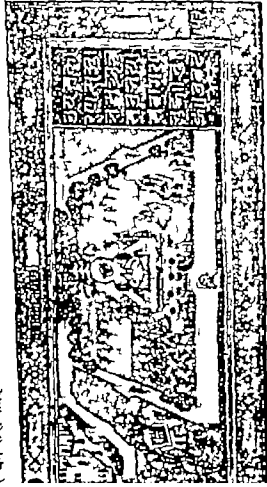
भगवान महावीर का समवसरण (कल्पसूत्र से)
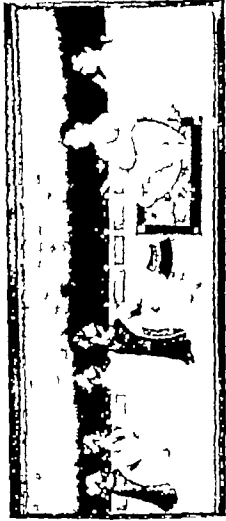
(१०) सुजानगढ—यहाँ खरतर गच्छ और लुका गच्छ के २ उपाश्रय है। खरतर गच्छ के उपाश्रयमे यति दूधेचन्दजी और लुका गच्छके उपाश्रयमे वैद्यवर रामलालजी यति रहते हैं।

(११) चाहड़वास—कहा जाता है कि यहाँ के उपासरे मे देहरासर भी है।

(१२) चूरू—यहाँ खरतर गच्छीय यति ऋद्धिकरणजी का सुप्रसिद्ध वडा उपासरा है। यह उपासरा वडा सुन्दर और विशाल है, इसमे यतिजी का ज्ञानभण्डार, लायब्रेरी और औषधालय है। इससे संलग्न श्री शातिनाथजी का मन्दिर और कुआँ है यहाँ लुका गच्छके यतिजी का भी एक अन्य उपासरा है।

(१३) राजगढ—यहाँ मदिरसे संलग्न खरतर गच्छ का उपाश्रय है।

(१४) रिणी—यहाँ मन्दिर के सामने एक पुराना उपाश्रय है जिसमे खरतर गच्छ के यति पन्नालालजी रहते हैं।

(१५) लूणकरणसर—यहाँ मन्दिरके पास खरतर गच्छ के दो उपाश्रय है जिनमें से एक की देखरेख रिणी के यति पन्नालालजीके व दूसरा पंचायती के हस्तगत है।

(१६) कालू—यहाँ भी मन्दिर के पास उपाश्रय है और वैद्यवर किसनलालजी यति यहाँ रहते हैं।

(१) महाजन—यहा मन्दिर से सलग्न उपाश्रय (धर्मशाला) है।

(२) सूरतगढ—यहा खरतर गच्छीय उपाश्रय हे।

(१६) हनुमानगढ—यहा वड गच्छ की गद्दी प्राचीनकालसे रही है, दुर्गमें मन्दिरके निकट ही एक जीर्ण शीर्ण उपाश्रय अवस्थित है।

वीकानेर रियासत मे खरतर गच्छ का वहुत जवरदस्त प्रभाव रहा है। वड़े उपासरे के आदेशी यति गण रियासत के प्राय सभीगाँवोंमे, जहा ओसवालों की वस्ती थी, विचरते और चातुर्मास किया करते थे। हमारे संग्रह मे ऐसे सैकडों आदेशपत्र हैं जिनमे श्रीपूज्यों ने भिन्न-भिन्न ग्रामों मे यतियो को विचरने का आदेश दिया है। अतः उपर्युक्त स्थानों के अतिरिक्त और भी वहुतसे स्थानों मे पहले उपाश्रय थे जिनमे कई भग्न हो गए और कई अन्य लोगोंके कब्जे में है हमारा सर्वत्र भ्रमण भी नहीं हुआ है अत' जिन उपाश्रयों का परिचय हमे ज्ञात हो सका, लिख दिया है।

हमारे संग्रह के एक हस्तलिखित पत्र मे वा० हस्तरत्न गणि के उद्योग से गांव नाथूसर मे सं० १८११ मिती मिगसर बदि १० को पौषधशाला कराने की प्रशस्ति की नकल मिली जिसे हमने उपाश्रयोंके लेखों के साथ दे दी है।

कोचरों का उपासरा

कोचरों के मुहल्ले में दो उपाश्रय हैं। जिसमें एकमें भी शांतिनाथ जी का देहरासर है।

पौषधशाला

यह रांगड़ी के चौक में है। इसकी व्यवस्था पन्नीबाईके उपाश्रय की बाइयों के आधीन है। तपा गच्छ के मुनिराजों का अधिकांश चातुर्मास यहीं होता है। यह पौषधशाला गुमान मल जी चरड़िया ने बनवाई थी।

साधर्मीशाला

यह स्थान रांगड़ी के चौक में है। सं० १६५८ में उपाध्याय श्रीहितवल्लभजी गणिने यति भीचन्द्र जी से यह स्थान खरीद कर इसे जैन श्वेताम्बर साधर्मीशाला के नाम से स्थापित की। उ० जयचन्द्रजी की प्रेरणा से कलकत्ता और मुर्शिदाबादके संघने इसके खरीदने में सहायता दी थी। इसकी देखरेख बड़े उपाश्रय के ट्रस्टियों के आधीन है। जैन यात्रियों के ठहरने के लिए यह स्थान है। इसमें उ० श्री हितवल्लभजी के चरण सं० १६८१ प्रतिष्ठित हैं। सं० १६६१ में सावणसुखा सुगनचन्दजी भैरूदानजी पगले वालों ने इसकी तिमारी बनवाई।

बीकानेर शहरके उपाश्रयों व साधर्मीशाला का परिचय संक्षेप से ऊपर दिया गया है अब बीकानेर राज्यवर्ती उपाश्रयों की सूची नीचे दी जा रही है —

(१) गंगाशहर—यहाँ मन्दिरजी के पास की जगहमें हाल बना हुआ है जिसमें साधु-साध्वी ठहरते हैं।

(२) भीनासर—यहाँ मन्दिरजी के पास खरतर गच्छ का उपाश्रय है। उ० श्री सुमेरमलजी के शिष्य यहाँ रहते हैं।

(३) उदरामसर—बोथरों के वास में खरतर गच्छ का उपाश्रय है जिसके ऊपर श्री कुंथुनाथ जी का देहरासर है।

(४) देशनोक—यहाँ तीनों मन्दिरोंसे संलग्न ३ उपाश्रय हैं जिनमें २ खरतर गच्छके और एक लुंका गच्छ का है।

(५) जांगलू—यहाँ मन्दिर के पास ही धर्मशाला है।

(६) नाल—यहाँ एक खरतर गच्छ और दूसरा लुंका गच्छका उपाश्रय है।

(७) राजलदेसर—यहाँ कंवला गच्छ का एक उपासरा है।

(८) रतनगढ़—मन्दिर के पास उपाश्रय है, जिसमें धर्मचर्चा-नाटक के रचयिता यति ऋद्धिचन्द्रजी बड़े प्रसिद्ध हुए हैं।

(९) बोरासर—यहाँ खरतर गच्छ के उपाश्रय में यतिजी रहते हैं।

जैन भण्डारों की प्रचुरता

जैन मुनियोंके लिये एक स्थान पर चातुर्मास (आषाढ़ से कार्तिक) के अतिरिक्त, एक स्थान पर एक माससे अधिक रहना निषिद्ध है। अत निरंतर भ्रमणशील जैन मुनियोंने भारतके कोने कोने मे पहुंच कर जैनधर्मका प्रचार किया। परिणाम स्वरूप भारतके सभी प्रान्तों में जैन ज्ञानभण्डार स्थापित है । नीचे प्रात वार उन प्रमुख स्थानों के नामोंकी सूची दी जाती है, जहा ज्ञानभण्डार है।

श्वेताम्बर जैन ज्ञानभण्डार॰

राजपूताना—जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, पीपाड, आहोर, फलोधी, सरदारशहर, चूरू, जयपुर, झूँझणूँ, फतैपुर, लाडणू, सुजाणगढ, पाली, उज्जैन, कोटा, उदयपुर, इन्दौर, रतलाम, बालोतरा, किसनगढ, नागौर, मंदसौर, ब्यावर, लोहावट, मेडता इत्यादि।

गुजरात—पाटण, खंभात, बड़ौदा, छाणी, पादरा, बीजापुर, लींबडी, अहमदाबाद, सूरत, पालनपुर, राधनपुर, डभोई, मागरोल, ईडर, सीनोर, साणंद, वीशनगर, कपडवंज, चाणस्मा, वीरमगांव, बीलीमोरा, झीझुवाडा, खेडा, वढवाण, धौलेरा, पाटड़ी, दशाड़ा, लींबण, पूना, बंम्बई, भरोंच।

काठियावाड—पालीताना, भावनगर, राजकोट, जामनगर
कच्छ—कच्छ कोडाय, माडवी, मोरवी,
दक्षिण—मालेगाव, मैसूर, मद्रास
संयुक्तप्रात—आगरा, वनारस, लखनऊ
वगाल—कलकत्ता, अजीमगज, जीयागंज, राजगृह (विहार)
पंजाब—अम्बाला, जीरा, रोपड़, सामाना, मालेरकोटलु, लुधियाना, होशियारपुर, जालधर, नकोदर, अमृतसर, पट्टी, जडियाला, लाहोर, गुजरावाला, स्यालकोट, रावलपिंडी, जम्मू

दिगम्बर जैन ज्ञानभण्डार

यों तो इनके जहा जहाँ मन्दिर है वहीं पुस्तक संग्रह है। पर प्रमुख स्थानोंके नाम इसप्रकार हैं।

१ आरा २ झालरापाटण, ३ बम्बई, ४ ब्यावर ५ दिल्ली ६ जयपुर, ७ नागौर, ८ कारजा, ९ कलकत्ता, १० नागपुर, ११ ललितपुर, १२ बासौदा, १३ भेलसा, १४ ईडर, १५ करमसद १६ सोजित्रा १७ अजमेर १८ कामा १९ ग्वालियर २० लश्कर २१ सोनगिरि २२ सीकर २३ मूडविद्रि २४ जैनविद्री २५ इन्दौर २६ हूमसपद्मावती २७ प्रतापगढ २८ उदयपुर २९ सागवाडा ३० आगरा ३१ लखनऊ ३२ दरियावाद ३३ चदेरी ३४ सिरोज ३५ कोलहापुर ३६ श्रवणवेलगोला ३७ कारकल ३८ अहम्बुचा ३९ वारंगा ४० आमेर ४१ काची ४२ अलवर ४३ सम्मेतशिखर ४४ सागर ४५ शोलापुर ४६ अजमेर इत्यादि*।

इन स्थानों मे कई कई स्थानों मे तो एक ही नगर मे ५।१० भण्डार तक हैं।

॰ "आपणी ज्ञान परबो" जैन सत्य प्रकाश वर्ष ४ अक १०-११ वर्ष ५ अक १ वर्ष ६ अक ५ में देखना चाहिए।
* विशेष जानने के लिये देखें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन डीरे्‌‌ ‌‌ ‌‌ ‌ी आदि ग्रन्थ।

बीकानेर के जैन ज्ञानभंडार

जैन साहित्य में ज्ञान को आत्मा का विशेष गुण बताया है और इसीलिये ज्ञान को जैनागमोंमें अत्यधिक महत्व दिया गया है। नंदी सूत्र आगम ग्रंथ तो ज्ञान के विवेचन रूपमें ही बनाया गया है। स्वाध्याय अध्ययन को आभ्यन्तर तप माना गया है। उसका फल परम्परा से मोक्ष है। अत जैन मुनियों को स्वाध्याय करते रहने का दैनिक कर्तव्य बतलाया गया है। जैनागमों में प्रतिपादित ज्ञान के इस अपूर्व महत्व ने मुनियों की मेधा का खासा विकास किया। उन्होंने अपने अमूल्य समयको विशेषत विविध ग्रंथोंके अध्ययन अध्यापन एवं प्रणयन में लगाया फलतः साहित्य (वाङ्मय) का कोई ऐसा अंग बच न सका जिसपर जैन विद्वानों की गौरव शालिनी प्रतिभासम्पन्न लेखनी न चली हो। वीर निर्वाण के ९८० वर्ष पश्चात् विशेष रूपसे जैन साहित्य पुस्तकारूढ़ हुआ। उससे पूर्व आगम कंठस्थ रहते थे। अतः अध्ययन अध्यापन ही जैन मुनियों का प्रमुख कार्य था। इसके पश्चात लेखन भी आवश्यक कार्यों में सम्मिलित कर लिया गया। और साधारण मुनियों का समय जो कि शास्त्रों का प्रणयन नहीं कर सकते थे लिखने में व्यतीत होता था। इसी कारण जैन मुनियोंके हस्तलिखित लाखों ग्रंथ यत्र तत्र बिखरे पड़े है। दूसरों की अपेक्षा जैनों की लिखी पुस्तकें शुद्ध पायी जाती है। साहित्य के प्रणयन एवं संरक्षणमें जैन विद्वान विशेषत श्वेताम्बर विद्वान तो बड़े ही उदार रहे है, फलस्वरूप जैनेतर ग्रंथों पर सैकड़ों जैन टीकाएं उपलब्ध हैं, जैन भण्डारों में जैनेतर साहित्य प्रचुर परिमाण में सुरक्षित है उनमें कई ग्रंथों की प्रतियां तो ऐसी भी हैं जिनकी प्रतियां जैनेतर संग्रहालयों में भी नहीं पाई जाती है। अतः उनको बचाये रखने का श्रेय जैनोंको ही प्राप्त है।

जिस प्रकार जैन मुनियोंने लेखन एवं ग्रंथ निर्माण में अपने अपूर्व समय एवं बुद्धि का सदुपयोग किया उसी प्रकार जैन उपासकों (श्रावकों) ने भी लाखों करोड़ों रुपये का सद्व्यय प्रतियाँ लिखाने में, विविध चित्रालेखन में, स्वर्ण व रौप्य की स्याही से लिखाने में किया। आज भी जैन भण्डारों में सुरक्षित हजारों प्रतियां ऐसी हैं जिन्हें श्रावकों ने लाखों रुपये व्यय करके लिखायी थी। उनमें से कल्पसूत्रादि की कई प्रतियां तो लेखन चित्रकला, एवं नाना विविधताओं के कारण ऐसी अद्भुत है कि अपनी सानी नहीं रखती। अहमदाबाद के भण्डार में एक कल्पसूत्र की प्रति ऐसी है जिसका मूल्य लाख रुपयेसे अधिक आंका जाता है कई प्रतियां स्वर्णाक्षरी और कई रौप्याक्षरी लेखनकला में है। इस कला की सुन्दरता एवं विविधता जैसी जैन प्रतियों में है, अन्यत्र दुर्लभ है। त्रिपाठ, पंचपाठ, बीचमें स्थान छोड़कर बनाये हुए विविध चित्र प्रदर्शन नामादि लेखन आदि अनेकानेक विविधताएं जैन भण्डारों की प्रतियों में हैं। लेखक एवं लिखाने वाले की प्रशस्तियां भी जैन प्रतियों में ऐतिहासिक दृष्टि से विशेष महत्व की है।

दिगम्बर संग्रहालयों के सूचीपत्र

१८—जैन सिद्धान्त भवन, आरा का कैटलॉग प्र० जैन सिद्धान्त-भवन, आरा सन् १९१३

१९—प्रशस्ति संग्रह प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा०

२०—एलक पन्नालाल जैन दि० सरस्वती भवन बम्बई की प्रकाशित रिपोर्टों मे।

२१—दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रथ० सं० नाथूराम प्रेमी प्र० जैन हितैषी व ट्रैक्ट रुपमे।

२२—देहली, मूडबिद्री, इन्दौर, आमेर, जयपुर, श्रवणबेलगोला, बम्बई, सोनीपथ नागौर आदि के दिगम्बर भडारों की सूचियें अनेकान्त वर्ष ४-५ मे प्रकाशित है।

२३—कारंजा आदिके दिगम्बर भण्डारो की सूची रा० ब० हीरालाल सपादित मध्य प्रान्त और बरारके सूचीपत्र में सन् १९२६ मे प्रकाशित की गई है।

२४—दिगंबर जैन भाषा ग्रथ नामावली, इसमे हिन्दी के ११० कवियोंकी ३०५ कृतियों की सूची है। प्र० ज्ञानचंद्र जैन, दिगम्बर जैन पुस्तकालय लाहौर सन् १९०१

२५—दिगम्बर जैन ग्रंथ सूची, वीर सेवा मंदिर सरसावा द्वारा तैयार हो रही है।

रिपोर्टो एवं गवर्नमैण्ट संग्रहालयों की सूचियाँ—जिनमे जैन ग्रन्थों का विशेष परिचय प्रकाशित है, इस प्रकार हैं :—

१—भंडारकर ऑरिण्टियल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना के जैन ग्रंथो का विवरण ३ भागोंमे प्रकाशित है। एवं काव्यादि के कैटलॉगों मे भी उन उन विषयों के जैन ग्रथोका विवरण है। ३ भागों के सपादक हीरालाल रसिकदास कापडिया है। संभवतः और भी कई भाग छपेंगे।

२—कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के सग्रह मे जैन ग्रंथ है उनकी सूची भी ३ भागों मे स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित है अवशेष भागो भी उन-उन विषयों के जैन ग्रंथों की सूची होगी।

३—रायल एसियाटिक सोसायटी, कलकत्ता के सग्रह के जैन ग्रन्थो की एक छोटी सूची प्रकाशित है। अन्य विषय के जैन ग्रन्थोंकी सूची भी तद्विषयक सूचीपत्रों मे है।

४—रॉयल एसियाटिक सोसायटी, बम्बई के कैटलॉग मे जैनग्रन्थोका विवरण प्रकाशित है।

५—ऑरिन्टियल मैन्युस्क्रिप्ट लायब्रेरी, उज्जैनके सग्रह के दो भाग प्रकाशित है, जिनमे जैन ग्रन्थ भी बहुत से हैं।

६—इण्डिया आफिस, ७ बर्लिनके कैटलाग, ८ राजेन्द्र मित्रके कैटलाग, ९ ताजोर १० मद्रास, ११ काश्मीर १२ बनारस आदिके राजकीय सग्रहालयों के सूचीपत्रों मे भी जैन-ग्रन्थोंका विवरण है। उसी प्रकार पीटर्सन की ६ रिपोर्टें भंडारकर की ६, किलहार्न की ३, बुलहर के ८, काथवटे की २ रिपोर्टों मे अनेक जैन भंडारों की प्रतियो का विवरण प्रकाशित हुआ है।

प्रकाशित सूचियाँ

उपर्युक्त भण्डारों में से कुछ भण्डारोंकि सूचीपत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। कई भण्डारों के ग्रन्थोंका परिचय रिपोर्टों में प्रकाशित हुआ है। हजारों जैन प्रतियें भारतके बाहर एवं भारत के राजकीय संग्रहालयोंमें पहुँच चुकी है। जिनका विवरण संग्रहालयोंके सूचीपत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है। यहां यथाज्ञात सूचियोंके नाम लिखे जा रहे हैं। जिससे साहित्यप्रेमी विद्वानों को विशेष लाभ हो।

१—*जैन ग्रन्थावली*—प्रकाशित—श्री जैन श्वेताम्बर कान्फरेंस बम्बई, सं० १६६५। इसमें पाटनके ६, अहमदाबादके २ जेसलमेर, लींबड़ी, भावनगर, बम्बई, कोडाय, खमात और पूना डेक्कन कालेज एवं बृहत् टिप्पणिका (५०० वर्ष पूर्व लिखित सूचीपत्र) में आये हुए ग्रन्थों की सूची प्रकाशित है।

२—जैसलमेर भाण्डागारीय ग्रन्थानां सूची-प्रकाशित गायकवाड़ ओरिएन्टीयल सिरीज बड़ौदा सन् १६२३

३—पत्तनस्थ प्राच्य-जैन-भाण्डागारीय-ग्रन्थसूची भाग १ ताड़पत्रीय प्र० गायकवाड़ ओरिएन्टीयल सिरीज, बड़ौदा सन् १६३७

४—लींबड़ी-भण्डार-सूची, सं० मुनि चतुरविजयजी प्र० आगमोदय-समिति बम्बई सं० १६८५

५—*पंजाब के भण्डारों की सूची भा० १ सं० बनारसीदास जैन प्र० पंजाब युनिवर्सिटी* लाहोर सन् १६३६

६—खंभात शांतिनाथ प्राचीन ताड़पत्रीय जैन भंडार सूचीपत्र प्र० यही भंडार, खंभात सन् १६४२

७—सूरत भण्डार सूची सं० केसरीचन्द जौहरी प्र० जैन साहित्य फंड सूरत० सन् १६३८

८—मोहनलालजी जैन भण्डार सूची प्र जवेरचन्द रायचन्द गोपीपुरा (सूरत) सन् १६१८

६—यति प्रेमविजय भण्डार सूची उज्जैन० प्र० यही भंडार उज्जैन

१०—रत्न प्रभाकर ज्ञानभण्डार सूची ओसियां प्र० वीर तीर्थ ओसियां वीर सं० २४५६

११—जैन धर्म प्रसारक सभा संग्रह सूची प्र० जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर

१२—*सुराणा लायब्रेरी चूरू, सूची प्रकाशित होने वाली है।*

१३—*जैन केटलागस् केटलोगराम सं०* H D वेलणकर प्र० भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना से छप रहा है।

१४—जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास स० मोहनलाल दलीचन्द देसाई प्र० जैन श्वे० कान्फ्रेन्स बम्बई।

१५-१६ १७ जैन गूर्जर कविओ भाग १-२ ३ सं०मोहनलाल दलीचन्द देसाई प्र० जैन श्वे० कान्फ्रेंस बम्बई।

५ जिनहर्षसूरि भण्डार—२७ वंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

६ अबीरजी भण्डार—१६ बंडलोंमे ५०० प्रतिया है।

७ भुवनभक्ति भण्डार—१४ वंडलोंमें ५०० प्रतिया है।

८ रामचन्द्र भण्डार—६ वंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

६ महरचन्द्र भण्डार—८ वंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

उपर्युक्त प्रतिया सभी पत्राकार है। इनके अतिरिक्त पुस्तकाकार गुटकोंकी संख्या भी १०० से अधिक होगी। जिनमे छोटी वडी वहुतसी रचनाएँ संग्रहित है। सब मिलाकर १०,००० प्रतिया इस वृहद् ज्ञानभण्डारमे सुरक्षित है। इनका पुराना सूचीपत्र ग्रन्थ नाम एवं पत्र संख्याका ही परिचायक है हमने करीव २० वर्ष पूर्व ६ महीने तक निरन्तर प्रतियोंका निरीक्षण करके विशेष विवरण युक्त सूचीपत्र तैयार किया था।

इस भण्डारका प्रबन्ध ट्रस्टियोंके हाथमे है। जिनमें १ श्रीपूज्यजी २ प्रेमकरणजी खजाञ्ची ३ शंकरदानजी नाहटा। इन तीनोंके यहा अलग अलग चाबिया रहती है और सबकी उपस्थितिमे भण्डार खोला जाता है।

२ श्रीपूज्यजीका भण्डार—यह बड़े उपाश्रयमे वृहत्खरतर गच्छीय भट्टारक शाखाके पट्टधर आचार्योंका संग्रह है। इसकी सूची नहीं थी व संग्रह अस्तव्यस्त था। श्री जिनचारित्रसूरिजीके समयमे विषय विभागसे भली भाति वर्गीकरण कर इसका सूचीपत्र भी आवश्यक विवरणसहमैंने तैयार किया है। इस भण्डार मे श्रीपूज्यजी के परम्परागत संग्रह मे ८५ वडलों मे २४०० पत्राकार प्रतिया एवं १०० के लगभग गुटकोंका संग्रह है। दूसरा संग्रह चतुर्भुजजी यतिका है जिसमे १४ वंडलोंमे ८०० प्रतियोंका संग्रह है। हस्तलिखित प्रतियोंके अतिरिक्त श्रीपूज्यजी महाराजके संग्रहमे २००० के लगभग मुद्रित ग्रन्थोंका भी उत्तम संग्रह है।

३—श्री जैनलक्ष्मी मोहनशाला ज्ञानभंडार—इसे संवत् १६५१ मे उपाध्याय जयचन्दजी के गुरू मोहनलालजीने स्थापित किया था। यह संग्रह बड़े महत्त्वका है। इसकी पुरानी सूची वनी हुई है। मैंने आवश्यक विवरण सहित नई सूची तैयार की है। यह संग्रह भी रागड़ी के चौकमे है। यहाँ १२१ वंडलों मे लगभग २८०० पत्राकार व २०० गुटकाकार पुस्तकें है।

४—क्षमाकल्याणजी का ज्ञानभंडार—यह भंडार सुगनजी के उपाश्रय मे है। इसकी सूची हरिसागरसूरिजी ने वनाई थी। जिसे प्रतियों का भली-भाति निरीक्षण कर मैंने संशोधन कर विशेष ज्ञातव्य नोट कर दिया है। हस्तलिखित प्रतियों की संख्या ७०० के लगभग है जिन मे खरतर गच्छ गुर्वावली की प्रति अन्यत्र अप्राप्त एवं महत्त्वपूर्ण है।

५—वौहरों की सेरीके उपाश्रय का भण्डार—यह संग्रह भी रागडीके निकटवर्ती वोहरों की सेरीमे है। क्षमाकल्याणजी की आज्ञानुवर्त्ती परम्परा की साध्विया इस उपाश्रय मे रहती है।

६—छत्तीब[illegible]

बीकानेरके जैन ज्ञान भण्डार

बीकानेरके जैन भण्डारोंका भारतीय जैन ज्ञान भण्डारोंमें बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है पर अभी तक विद्वत् समाजका इन महत्वपूर्ण भण्डारोंकी ओर विशेष ध्यान नहीं गया इसलिए इनका संक्षिप्त परिचय यहां कराया जा रहा है। यद्यपि बीकानेर की कई प्रतियें पूना आदिके अनेक संग्रहालयोंमें एवं अनेक व्यक्तियोंके पास बाहर जा चुकी हैं और हजारों प्रतियें हमारी उपेक्षा एवं अज्ञानतावश दीमक आदि जन्तुओंका भक्ष्य बन चुकी हैं। बहुतसी प्रतियां वर्षातकी बारवीसे चिपक कर नष्ट हो गई हजारों प्रतियें कूटके काममें और पुड़िया बान्धनेमें खप गयी फिर भी यहांके विविध जैन संग्रहालयोंमें ४० हजारके लगभग प्रतियां विद्यमान हैं। जिनमेंसे सैकड़ों ग्रन्थ दुर्लभ एवं अन्यत्र अप्राप्य हैं। इन संग्रहालयोंमें विविध विषयों एवं संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अपभ्रंश, गुजराती राजस्थानी, उर्दू, फारसी, महाराष्ट्री एवं पैशाची भाषा के ग्रन्थ भी हैं। कई प्रतियें चित्र-कलाकी दृष्टिसे, कई सुन्दर अक्षर, कई प्राचीनता एवं कई पाठ शुद्धिकी दृष्टिसे बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। स्वर्णाक्षरी रौप्याक्षरी सूक्ष्माक्षरी, प्रतियां भी यहांके संग्रहालयोंमें दर्शनीय हैं। बीकानेर एवं उदयपुरके २ सचित्र विज्ञप्तिपत्र एवं अनेकों प्राचीन चित्रादि इन संग्रहालयोंकी शोभामें अभिवृद्धि कर रहे हैं। इन संग्रहालयोंका महत्व इनको बारीकीसे अवलोकन करने पर ही प्रकाशित किया जा सकता है जिसके लिए बहुत समय एवं श्रमकी आवश्यकता है। यहां तो विद्वद् समाजका ध्यान आकर्षित करनेके लिए ही अति संक्षिप्त परिचय देना अभीष्ट है।

बृहद् ज्ञान भण्डार—बड़ा उपाश्रय, रांगड़ीका चौकमें यह संग्रहालय अवस्थित है। संवत् १९५८ में यतिवर्य्य हिमतूजी (हितवल्लभ गणि) के विशेष प्रयत्न एवं प्रेरणासे इसकी स्थापना हुई है। ज्ञानकी असीम भक्ति एवं भावी समयमें होनेवाली दुर्दशाओंका विचार कर इस भण्डार में उन्होंने छोटे बड़े ६ व्यक्तियोंका संग्रह एकत्र कर दिया था। जो दाताओंके नामसे अलग अलग अलमारियोंमें रखा हुआ है।

इन ६ भण्डारोंके नाम इस प्रकार हैं :—

१ महिमाभक्ति भण्डार—खरतर गच्छके प्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणोपाध्यायके प्रशिष्य महिमाभक्तिजीका यह महत्वपूर्ण संग्रह है। इसमें बहुतसे दुर्लभ एवं महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। ८६ बण्डलोंमें करीब ६००० प्रतियें इस संग्रहके अन्तर्गत हैं।

२ दानसागर भण्डार—बृहद ज्ञानभण्डारके संस्थापक हिमतूजीने अपने गुरुजीका स्मरण उनके नामसे किया। इसमें भी बहुतसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। ४८ बंडलोंमें करीब १००० प्रतियें इस संग्रहमें सुरक्षित हैं।

३ वर्द्धमान भण्डार—इसके अन्तर्गत ४१ बंडलोंमें १००० प्रतियां हैं।

४ अभयसिंह भण्डार—इस भण्डारमें २१ बण्डलोंमें ५०० प्रतियां हैं।

दिगम्बर संग्रहालयों के सूचीपत्र

१८—जैन सिद्धान्त भवन, आरा का कैटलॉग प्र० जैन सिद्धान्त-भवन, आरा सन् १६१३

१६—प्रशस्ति संग्रह प्र० जैन सिद्धान्त भवन आरा०

२०—एलक पन्नालाल जैन दि० सरस्वती भवन बम्बई की प्रकाशित रिपोर्टों में।

२१—दिगम्बर जैन ग्रन्थकर्त्ता और उनके ग्रथ० सं० नाथूराम प्रेमी प्र० जैन हितैषी व ट्रैक्ट रूपमें।

२२—देहली, मूडविद्री, इन्दौर, आमेर, जयपुर, श्रवणवेलगोला, बम्बई, सोनीपथ नागौर आदि के दिगम्बर भडारों की सूचियें अनेकान्त वर्ष ४-५ में प्रकाशित है।

२३—कारंजा आदिके दिगम्बर भण्डारों की सूची रा० ब० हीरालाल सपादित मध्य प्रान्त और बरारके सूचीपत्र में सन् १६२६ मे प्रकाशित की गई है।

२४—दिगंबर जैन भाषा ग्रथ नामावली, इसमे हिन्दी के ११० कवियोंकी ३०५ कृतियों की सूची है। प्र० ज्ञानचंद्र जैन, दिगम्बर जैन पुस्तकालय लाहौर सन् १६०१

२५—दिगम्बर जैन ग्रंथ सूची, वीर सेवा मंदिर सरसावा द्वारा तैयार हो रही है।

रिपोर्टों एवं गवर्नमैण्ट संग्रहालयों की सूचियों—जिनमे जैन ग्रंन्थों का विशेष परिचय प्रकाशित है, इस प्रकार हैं :—

१—भंडारकर ओरिण्टियल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, पूना के जैन ग्रंथों का विवरण ३ भागोंमे प्रकाशित है। एवं काव्यादि के कैटलॉगों मे भी उन उन विषयों के जैन ग्रथोंका विवरण है। ३ भागों के सपादक हीरालाल रसिकदास कापडिया हैं। संभवत· और भी कई भाग छपेंगे।

२—कलकत्ता संस्कृत कॉलेज के सग्रह मे जैन ग्रंथ है उनकी सूची भी ३ भागों मे स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित है अवशेष भागों भी उन-उन विषयों के जैन ग्रंथों की सूची होगी।

३—रायल एसियाटिक सोसायटी, कलकत्ता के सग्रह के जैन ग्रन्थों की एक छोटी सूची प्रकाशित है। अन्य विषय के जैन ग्रन्थोंकी सूची भी तद्विषयक सूचीपत्रों मे है।

४—रॉयल-एसियाटिक सोसायटी, बम्बई के कैटलॉग मे जैनग्रन्थोंका विवरण प्रकाशित है।

५—ओरिन्टियल मैन्युस्क्रिप्ट लायब्रेरी, उज्जैनके सग्रह के दो भाग प्रकाशित है, जिनमे जैन ग्रन्थ भी बहुत से है।

६—इण्डिया आफिस, ७ बर्लिनके कैटलाग, ८ राजेन्द्र मित्रके कैटलाग, ६ ताजोर १० मद्रास, ११ काश्मीर १२ बनारस आदिके राजकीय सग्रहालयों के सूचीपत्रों मे भी जैन-ग्रन्थोंका विवरण है। उसी प्रकार पीटर्सन की ६ रिपोर्टें भंडारकर की ६, किलहार्न की ३, बुलहर के ८, काथवटे की २ रिपोर्टों मे अनेक जैन भंडारों की प्रतियों का विवरण प्रकाशित हुआ है।

प्रकाशित सूचियाँ

उपयुक्त भण्डारों में से कुछ भण्डारोंके सूचीपत्र भी प्रकाशित हो चुके हैं। कई भण्डारों के ग्रन्थोंका परिचय रिपोर्टों में प्रकाशित हुआ है। हजारों जैन प्रतियें भारतके बाहर एवं भारत के राजकीय संग्रहालयोंमें पहुंच चुकी है। जिनका विवरण संग्रहालयोंके सूचीपत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है। यहां यथाज्ञात सूचियोंके नाम दिये जा रहे हैं। जिससे साहित्यप्रेमी विद्वानों को विशेष लाभ हो।

१—जैन ग्रन्थावली—प्रकाशित—श्री जैन श्वेताम्बर कान्फरेंस बम्बई, सं० १६६५। इसमें पाटनके ६, अहमदाबादके २ जैसलमेर, लींबड़ी, भावनगर, बम्बई, कड़ाय, खंभात और पूना डक्कन कालेज एवं बृहत टिप्पणिका (५०० वर्ष पूर्व लिखित सूचीपत्र) में आये हुए ग्रन्थों की सूची प्रकाशित है।

२—जैसलमेर भाण्डागारीय ग्रन्थानां सूची-प्रकाशित गायकवाड़ ओरिएण्टीयल सिरीज बड़ोदा सन् १६२३

३—पत्तनस्थ प्राच्य जैन-भाण्डागारीय ग्रन्थसूची भाग १ ताड़पत्रीय प्र० गायकवाड़ ओरिन्टीयल सिरीज, बड़ोदा सन १६३७

४—लींबड़ी-भण्डार-सूची, सं० मुनि चतुरविजयजी प्र० आगमोदय-समिति बम्बई सं० १६८५

५– पंजाब के भण्डारों की सूची भा० १ सं० बनारसीदास जैन प्र० पंजाब युनिवर्सिटी लाहौर सन् १६३६

६—खंभात शांतिनाथ प्राचीन ताड़पत्रीय जैन भंडार सूचीपत्र प्र० यही भंडार, खंभात सन् १६४२

७—सूरत भण्डार सूची सं० केसरीचन्द जौहरी प्र० जैन साहित्य फंड सूरत० सन् १६३८

८—मोहनलालजी जैन भण्डार सूची प्र० जवेरचन्द रायचन्द गोपीपुरा (सूरत) सन् १६१८

६—यति प्रेमविजय भण्डार सूची उज्जैन० प्र० यही भंडार उज्जैन

१०—रत्न प्रभाकर ज्ञानभण्डार सूची ओसियां प्र० वीर तीर्थ ओसियां वीर सं० २४४६

११—जैन धर्म प्रसारक सभा संग्रह सूची प्र० जैन धर्म प्रसारक सभा, भावनगर

१२—सुराणा लायब्रेरी चूरू सूची प्रकाशित होने वाली है।

१३—जैन कैटलागस कैटलोगस सं० H D वेलणकर प्र० भण्डारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना से छप रहा है।

१४—जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास सं० मोहनलाल दलीचन्द देसाई प्र० जैन श्वे० कान्फ्रेन्स बम्बई।

१५-१६ १७ जैन गूर्जर कवियो भाग १ २ ३ सं०मोहनलाल दलीचन्द देसाई प्र जैन श्वे० कान्फ्रेंस बम्बई।

५ जिनहर्षसूरि भण्डार—२७ बंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

६ अबीरजी भण्डार—१६ वंडलोंमें ५०० प्रतिया है।

७ भुवनभक्ति भण्डार—१४ वंडलोंमें ५०० प्रतिया हैं।

८ रामचन्द्र भण्डार—६ वंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

६ महरचन्द्र भण्डार—८ वंडलोंमे ३०० प्रतिया है।

उपर्युक्त प्रतिया सभी पत्राकार है। इनके अतिरिक्त पुस्तकाकार गुटकोंकी संख्या भी १०० से अधिक होगी। जिनमे छोटी बडी बहुतसी रचनाएँ संग्रहित है। सब मिलाकर १०,००० प्रतिया इस वृहद् ज्ञानभण्डारमे सुरक्षित है। इनका पुराना सूचीपत्र ग्रन्थ नाम एवं पत्र संख्याका ही परिचायक है हमने करीव २० वर्ष पूर्व ६ महीने तक निरन्तर प्रतियोंका निरीक्षण करके विशेष विवरण युक्त सूचीपत्र तैयार किया था।

इस भण्डारका प्रबन्ध ट्रस्टियोंके हाथमे है। जिनमें १ श्रीपूज्यजी २ प्रेमकरणजी खजाञ्ची ३ शंकरदानजी नाहटा। इन तीनोंके यहा अलग अलग चाबिया रहती है और सबकी उपस्थितिमें भण्डार खोला जाता है।

२ श्रीपूज्यजीका भण्डार—यह बड़े उपाश्रयमें वृहत्खरतर गच्छीय भट्टारक शाखाके पट्टधर आचार्योंका संग्रह है। इसकी सूची नहीं थी व सग्रह अस्तव्यस्त था। श्री जिनचारित्रसूरिजीके समयमें विषय विभागसे भली भाति वर्गीकरण कर इसका सूचीपत्र भी आवश्यक विवरणसहमैंने तैयार किया है। इस भण्डार मे श्रीपूज्यजी के परम्परागत संग्रह मे ८५ बडलों मे २४०० पत्राकार प्रतिया एवं १०० के लगभग गुटकोंका संग्रह है। दूसरा संग्रह चतुर्भुजजी यतिका है जिसमे १४ वंडलोंमे ८०० प्रतियोंका संग्रह है। हस्तलिखित प्रतियोंके अतिरिक्त श्रीपूज्यजी महाराजके संग्रहमें २००० के लगभग मुद्रित ग्रन्थोंका भी उत्तम सग्रह है।

३—श्री जैनलक्ष्मी मोहनशाला ज्ञानभंडार—इसे संवत् १६५१ मे उपाध्याय जयचन्दजी के गुरू मोहनलालजीने स्थापित किया था। यह संग्रह बड़े महत्वका है। इसकी पुरानी सूची वनी हुई है। मैंने आवश्यक विवरण सहित नई सूची तैयार की है। यह संग्रह भी रागड़ी के चौकमें है। यहाँ १२१ बंडलों मे लगभग २८०० पत्राकार व २०० गुटकाकार पुस्तकें है।

४—क्षमाकल्याणजी का ज्ञानभंडार—यह भंडार सुगनजी के उपाश्रय मे है। इसकी सूची हरिसागरसूरिजी ने वनाई थी। जिसे प्रतियों का भली-भाति निरीक्षण कर मैने संशोधन कर विशेष ज्ञातव्य नोट कर दिया है। हस्तलिखित प्रतियों की संख्या ७०० के लगभग है जिन मे खरतर गच्छ गुर्वावली की प्रति अन्यत्र अप्राप्त एवं महत्त्वपूर्ण है।

५—वोहरो की सेरीके उपाश्रय का भण्डार—यह संग्रह भी रागड़ीके निकटवर्ती बोहरों की सेरीमे है। क्षमाकल्याणजी की आज्ञानुवर्त्ती परम्परा की साध्विया इस उपाश्रय मे रहती है।

६—छत्तीवाईके उपाश्रय का भंडार—नाहटो की गुवाड़ मे अवस्थित छत्ती वाई के उपा-

बीकानेरके जैन ज्ञान-भण्डार

बीकानेरके जैन भण्डारों का भारतीय जैन ज्ञान भण्डारोंमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण स्थान है पर अभी तक विद्वत् समाजका इन महत्त्वपूर्ण भण्डारोंकी ओर विशेष ध्यान नहीं गया इसलिए इनका संक्षिप्त परिचय यहां कराया जा रहा है। यद्यपि बीकानेर की कई प्रतियें पूना आदिके अनेक संग्रहालयोंमें एवं अनेक व्यक्तियोंके पास बाहर आ चुकी हैं और हजारों प्रतियें हमारी उपेक्षा एवं अज्ञानतावश दीमक आदि जन्तुओंका भक्ष्य बन चुकी हैं। बहुतसी प्रतियां वर्षाऋतुकी शरदीसे चिपक कर नष्ट हो गईं हजारों प्रतियें कूटके काममें और पुड़िया बान्धनेमें लाई गयीं फिर भी यहांके विविध जैन संग्रहालयोंमें ६० हजारके लगभग प्रतियां विद्यमान हैं। जिनमेंसे सैकड़ों ग्रंथ दुर्लभ एवं अन्यत्र अप्राप्त हैं। इन संग्रहालयोंमें विविध विषयों एवं संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी, उर्दू, पारसी, महाराष्ट्री एवं बंगला भाषा के ग्रन्थ भी हैं। कई प्रतियें चित्र-कलाकी दृष्टिसे, कई सुन्दर लेखन, कई प्राचीनता एवं कई पाठ शुद्धिकी दृष्टिसे बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। स्वर्णाक्षरी रौप्याक्षरी सूक्ष्माक्षरी, प्रतियां भी यहांके संग्रहालयोंमें दर्शनीय हैं। बीकानेर एवं उदयपुरके २ सचित्र विज्ञप्तिलेख एवं अनेकों प्राचीन चित्रादि इन संग्रहालयोंकी शोभामें अभिवृद्धि कर रहे हैं। इन संग्रहालयोंका महत्त्व इनको बारीकीसे अवलोकन करने पर ही प्रकाशित किया जा सकता है जिसके लिए बहुत समय एवं श्रमकी आवश्यकता है। यहां तो विद्वद् समाजका ध्यान आकर्षित करनेके लिए ही अति संक्षिप्त परिचय देना अभीष्ट है।

बृहद् ज्ञान भण्डार—बड़ा उपाश्रय, रांगड़ीका चौकमें यह संग्रहालय अवस्थित है। संवत् १९५८ में यतिवर्य्य हिमतूजी (हितवल्लभ गणि) के विशेष प्रयत्न एवं प्रेरणासे इसकी स्थापना हुई है। ज्ञानकी असीम भक्ति एवं भावी समयमें होनेवाली दुर्दशाओंका विचार कर इस भण्डार में उन्होंने छोटे बड़े ६ व्यक्तियोंका संग्रह एकत्र कर दिया था। जो दाताओंके नामसे अलग अलग अलमारियोंमें रखा हुआ है।

इन ६ भण्डारोंके नाम इस प्रकार हैं :—

१ महिमाभक्ति भण्डार—खरतर गच्छके प्रसिद्ध विद्वान क्षमाकल्याणोपाध्यायके प्रशिष्य महिमाभक्तिजीका यह महत्त्वपूर्ण संग्रह है। इसमें बहुतसे दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं। ८९ बंडलोंमें करीब ३००० प्रतियें इस संग्रहके अन्तर्गत हैं।

२ दानसागर भण्डार—बृहद ज्ञानभण्डारके संस्थापक हिमतूजीने अपने गुरुजीका संग्रह उनके नामसे दिया। इसमें भी बहुतसे महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। ९८ बंडलोंमें करीब ३००० प्रतियें इस संग्रहमें सुरक्षित हैं।

३ वर्द्धमान भण्डार—इसके अन्तर्गत ४१ बंडलोंमें १००० प्रतियां हैं।

४ अभयसिंह भण्डार—इस भण्डारमें २३ बंडलोंमें ५०० प्रतियां हैं।

संग्रहालय जैन उपाश्रयों में है। जिनमें से नं० १, ४, ५, ६, ७, ६, १०, ११, १४ जैन श्रावको की देखरेख में है अवशेष सग्रह व्यक्तिगत है। जिनके सुरक्षित रहनेका प्रबन्ध अत्यावश्यक है।

उपाश्रयों के अतिरिक्त जैन श्रावकों के निम्नोक्त व्यक्तिगत संग्रह भी उल्लेखनीय है :—

(१) श्री अभय जैन पुस्तकालय—प्रस्तुत संग्रह पूज्यश्री शंकरदानजी नाहटाने अपने द्वितीय पुत्र स्वर्गीय अभयराजजी नाहटाकी स्मृति मे स्थापित किया है। यह हमारे २७ वर्ष के निजी प्रयत्न एवं परिश्रम का सुफल है। इस सग्रहालय मे अद्यावधि पत्राकार हस्तलिखित लगभग १५००० प्रतिया संग्रहित हो चुकी है। ५०० के लगभग गुटकाकार प्रतियों का संग्रह एवं १५००० मुद्रित ग्रन्थोंका संचय है। ऐतिहासिक सामग्रीके संग्रहका विशेष प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक ग्रंथों के अतिरिक्त जैनाचार्यो एवं यतियों के पत्र, राजाओं के पत्र, खासरूक्के, स० १७०१ से अब तक के प्राय सभी वर्षों के पंचांग, ओसवालोंकी वशावली आदि अनेकानेक महत्त्वपूर्ण सामग्री का विरल सग्रह है। ग्रंथ संग्रहालय के साथ साथ "शंकरदान नाहटा कला-भवन" भी सम्बन्धित है जिनमें विविध प्राचीन चित्र, सचित्र विज्ञप्तिपत्र, कपड़े पर आलेखित सचित्र पट, प्राचीन मुद्राएँ, कूटे के पूठे, कलमदान, डब्बियें, हाथी, सिंहासन, ताडपत्रीय, सचित्र व स्वर्णाक्षरी-रौप्याक्षरी-प्रतिया, हाथी दांत व पीतल की विविध वस्तुओंका संग्रह किया गया है। इनमे से सचित्र विज्ञप्तिपत्र, बौद्ध पट आदि कतिपय कलापूर्ण वस्तुएं तो अनोखी है।

इस सग्रहालय मे साहित्य ससार मे अज्ञात विविध विषय एवं भाषाओं के सैकडों महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। बहुत से दुर्लभ ग्रंथोंकी प्रेसकापियां भी तैयार की गई हैं। अनेक सुकवियोंकी लघुकृतियों का संग्रह पाटण, जेसलमेर, कोटा, फलोदी, जयपुर, बीकानेर आदि अनेक ज्ञानभंडारोंकी सूचियें विशेष उल्लेखनीय है।

(२) सेठिया लाइब्रेरी—श्री अगरचन्दजी भैरूंदानजी सेठियाकी परमार्थिक संस्थाओं मे यह भी एक है। इसमे १५०० हस्तलिखित प्रतिएं एवं १०००० मुद्रित ग्रंथों का सुन्दर संग्रह है।

(३) गोविन्द पुस्तकालय—इसे श्री गोविन्दरामजी भीखमचंदजी भणसालीने स्थापित किया है। यह पुस्तकालय नाहटों की गुवाड मे हैं। इसमे लगभग १७०० हस्तलिखित एवं १२०० मुद्रित ग्रंथ है।

(४) मोतीचन्दजी खजाञ्चीका संग्रह—श्रीयुक्त जौहरी प्रेमकरणजी खजाञ्चीके सुपुत्र बाबू मोतीचन्दजी को कुछ वर्षोंसे हस्तलिखित ग्रंथों एवं चित्रादि के संग्रह करने का शौक लगा है। आपने थोडे समयमे लगभग ६००० हस्तलिखित ग्रथों एवं विशिष्ट चित्रादि का सुन्दर सग्रह कर लिया है।

(५) श्री० मानमलजी कोठारी का सग्रह - आपके यहां करीब ३०० हस्तलिखित प्रतिएं एवं २००० मुद्रित ग्रंथोंका संग्रह है। हस्तलिखित ग्रंथोकी सूची अभी तक नहीं बनी। आपके यहाँ कुछ चित्र पत्थर और अस्त्र-शस्त्रादि का भी अच्छा सग्रह है।

भय में यह भंडार है। कई वर्ष पूर्व हमने इसे अवलोकन किया था, सूची नहीं बनी है, प्रतियाँ लगभग १०० होंगी।

७—पन्नी बाई के उपाश्रय का भंडार—उपयुक्त उपाश्रयके पीछे की ओर पन्नी बाई के उपाश्रय में करीब १०० प्रतियाँ हैं। इनकी सूची बनी हुई है। मैंने प्रतियों का अवलोकन कर सूची का आवश्यक संशोधन कर दिया है।

८—महोपाध्याय रामलालजी का संग्रह—रांगड़ी के पास ही वैद्यरत्न महो० रामलालजी यति के मकान में उनका निजी संग्रह है। सूची बनी हुई नहीं है। इसका मैंने एक बार अवलोकन कर आवश्यक नोट्स किये थे, प्रतियाँ करीब ५०० हैं।

९ खरतराचार्य शाखा का भंडार—नाहटों की गुवाड़ में बड़े उपाश्रय के पीछे खरतर गच्छ की लघु आचार्य शाखा का भंडार है। इस भंडार की बहुतसी प्रतियों का अवलोकन हमने किया है। इसकी ग्रन्थ-नाममात्र की सूची बनी हुई है लगभग २००० ग्रन्थ होंगे।

१०—हेमचन्द्रसूरि पुस्तकालय—बांठियों की गुवाड़ में पायचन्द गच्छके उपाश्रय में उस गच्छके श्रीपूज्यों का यह संग्रह है, हस्तलिखित ग्रन्थोंकी संख्या १२०० है। इसकी सूची बनी हुई है।

११—कुशलचन्द्र गणि पुस्तकालय—रामपुरियों की गुवाड़ में अवस्थित इस पुस्तकालय में लगभग ४५० हस्तलिखित प्रतियाँ और मुद्रित ग्रन्थोंका अच्छा संग्रह है।

१२—यति मोहनलालजी का संग्रह—सुराणों की गुवाड़ में लौंका गच्छीय उपाश्रयमें यह संग्रह है। पर हम अभी तक इस संग्रह को नहीं देख सके।

१३—यति लच्छीरामजी का संग्रह—उपर्युक्त लुंका गच्छीय उपाश्रय के पास ही है। जिसमें यति लच्छीराम जी के पास कुछ हस्तलिखित प्रतियां हैं। सूची बनी हुई नहीं है। हमने इसका एकबार अवलोकन किया था।

१४—कोचरों का उपाश्रय—कोचरोंकी गुवाड़में अवस्थित इस उपाश्रय में करीब ३० बस्ता हस्तलिखित ग्रन्थ हैं जिसमें अधिकांश मुद्रित हैं। इनकी साधारण सूची अभी बनी है। हमने भी कुछ प्रतियों का अवलोकन किया है।

१५—यति जयकरणजी का संग्रह—आप बड़े उपाश्रय में रहते हैं इनके पास करीब २०० २५० प्रतियाँ और कुछ गुटके हैं।

खेद है कि श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञानभंडार जिसमें करीब ०००० महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियाँ एवं ८० मुद्रित ग्रन्थ थे। उनके यति शिष्य त्रिलोकचन्द्र जी ने बेच डाला। अभी हाल ही में फिरसे ज्ञानभंडार स्थापित किया है जिसमें मुद्रित ग्रन्थों का संग्रह है इसीप्रकार यति चुन्नीलालजी का संग्रह भी हाल हीमें बिक्री हो गया है। कई वर्षों पहले यहांके कँवला गच्छका भंडार एवं अन्य भंडारों में से भी बहुत से ग्रन्थ कौड़ीके मोलमें बिक गये हैं उपर्युक्त सभी

के मन्दिर मे वड़गच्छके यतिजी का भी अच्छा संग्रह वतलाते हैं। इनमें से पहला संग्रह हमने देखा है, दूसरा अभी तक नहीं देख सके।

(८) राजलदेसर—यहाँ उपकेश गच्छीय यति दौलतसुन्दरजी के पास थोडी प्रतियाँ थीं।

(६) रतनगढ—वैदोंकी लाइब्रेरी एवं सोहनलालजी वैद के पास कुछ हस्तलिखित ग्रन्थहैं।

(१०) बीदासर—यति श्री गणेशचन्दजी के पास १५-२० बंडल हस्तलिखित ग्रन्थ हैं।

(११) छापर—यहाँ श्री मोहनलालजी दुधेरिया के पास कई चुनी हुई प्रतियाँ एवं प्राचीन चित्रोंका अच्छा संग्रह है।

(१२) सुजानगढ़—१ यहाँ लोंका गच्छके प्रसिद्ध वैद्यवर रामलालजी यतिके, २ खरतर गच्छीय यति दूधेचन्दजी के, ३ दानचन्दजी चोपड़ा की लाइब्रेरी मे, ४ पन्नाचन्द्रजी सिंघी के जैन मन्दिरमे हस्तलिखित प्रतियाँ सुरक्षित हैं।

(१३) चूरू—१ यतिवर्य्य ऋृद्धिकरणजी के बड़े उपाश्रयमे २००० के लगभग हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। उनकी सूची वनी हुई नहीं है, हमने अवलोकन किया है। (२) सुराणा लाइब्रेरी—बीकानेर स्टेट की प्रसिद्ध लाइब्रेरियों में हैं। लाइब्रेरी का भवन अलग बना हुआ है उसमे मुद्रित ग्रन्थोंके साथ करीव २५०० हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं जिनमे कुछ ताड़-पत्रीय प्रतियें, चित्रित ग्रन्थ, वौद्ध ग्रथ और चित्रादि विशेष उल्लेखनीय है। सम्मेलनादि अधि-वेशनों के प्रसङ्ग पर इस संग्रहकी विशिष्ट वस्तुओंका प्रदर्शन भी कराया जाता है।

(१४) राजगढ—यहाँ के ओसवाल पुस्तकालय मे यतिजी के ६ बण्डल हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। पर उनमे अधिकाश त्रुटित और फुटकर प्रतियाँ है।

(१५) रिणी—यति पन्नालालजी के पास थोडी प्रतियाँ है। इनके कुछ ग्रंथ लूणकरणसर मे भी पड़े है।

(१६) सरदारशहर—१ यहाँ श्री वृद्धिचन्दजी गधैया के मकान मे अच्छा सग्रह है। इनका बहुत वर्षोसे संग्रह करनेका प्रयत्न रहा है, तेरापंथी सभामें भी आपके भेंटकी हुई बहुतसी प्रतियाँ हैं। २ तेरापंथी सभामे ७३ बण्डल हस्तलिखित ग्रथ है जिनमें अच्छी प्रतियाँ है। सरदारशहर के ये दोनों संग्रह चूरू के दो संग्रहालयों की तरह बीकानेर स्टेट के संग्रहालयों मे अपना महत्त्व-पूर्ण स्थान रखते हैं। श्री दूलीचन्दजी सेठिया के पास भी कई हस्तलिखित प्रतियाँ हैं जिनमे अधिकाश आधुनिक है।

बीकानेर डिवीजन के अन्य भी कई स्थानोंमें तेरापंथी श्रावकों आदि के पास व्यक्तिगत संग्रह सुनने मे आया है, हमे उनका निश्चित पता न होने से यहा यथाज्ञात सग्रहो का परिचय दिया गया है। बीकानेर एवं डिवीजन के ज्ञानभंडारों मे हजारों ग्रंथ अन्यत्र अप्राप्य है उनकी एक विशिष्ट सूची यथासमय प्रकाशित करने का विचार है, पर अभी थोड़े से दुर्लभ ग्रंथों की सूची दी जा रही है।

(६) मगनचन्दजी भाबूका संग्रह—आपके यहां भी जैनागमादि ग्रंथोंका संग्रह है पर अभी तक हम अवलोकन नहीं कर पाये।

(७) भँवरलालजी रामपुरिया का संग्रह—आपके संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं।

(८) मंगलचन्दजी झाबकका संग्रह—आपके यहां भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथोंका संग्रह है।

(६) मीराव गोपालसिंहजी वैद्यका संग्रह—आपके यहां भी हस्तलिखित गुटकों एवं चित्रों का अच्छा संग्रह है।

इन जैन संग्रहालयों के अतिरिक्त बीकानेर महाराजाका अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी जो कि पुराने किले में अवस्थित है, बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थागार है। इसमें वेद, वेदान्तादि सभी विषयकी ११००० हस्तलिखित प्रतियें एवं ८०० के लगभग गुटके हैं। इन प्रतियों में जैन प्रतियों की संख्या भी १५०० के लगभग होगी। राजस्थानी साहित्य पीठमें स्वामी नरोत्तमदासजी प्रदत्त हस्तलिखित ग्रंथोंमें भी कुछ जैन ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत लेखमें केवल हस्तलिखित प्रतियोंके ज्ञानभंडारों का ही परिचय देना अभीष्ट होने से मुद्रित ग्रंथोंके पुस्तकालयों—श्रीमहावीर जैन मण्डल, सुराणा लाइब्रेरी, प्रधान वाचनालय आदिका परिचय नहीं दिया गया है। ऊपर लिखे हस्तलिखित ग्रंथालयों में मुद्रित ग्रंथोंका संग्रह भी है खोज करने पर यति यतिनियों और श्रावकोंके घरोंमें थोड़ी बहुत हस्तलिखित प्रतियां पाई जा सकती है।

उपर्युक्त सभी ज्ञानभण्डार बीकानेर में है। अब बीकानेर राज्यवर्ती जैन ज्ञानभण्डारों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

१ गंगाशहर बीकानेर से २ मील पर है। यहां जैन श्वे० तेरापंथी सभामें लगभग ३०० हस्तलिखित ग्रंथ और मुद्रित ग्रंथोंका भी अच्छा संग्रह है।

२ भीनासर—बीकानेर से ३ मील है। यहां यतिवर्य्य सुमेरमलजी का अच्छा संग्रह है, जिनमें से कुछ प्रतियों का हमने दर्शन किया है। यहां श्रीयुत बहादुरमलजी बांठिया के संग्रह में भी चुनी हुई ७००-८०० अच्छी प्रतियां हैं कई वर्ष पूर्व हमने उनका अवलोकन किया था। श्री चम्पालालजी वैद के यहां भी अच्छा संग्रह सुना जाता है हमने अभी तक देखा नहीं।

३ देशनोक—बीकानेरसे १६ मील दूर है। यहां स्वर्गीय लक्ष्मणजी कोठारी एवं औंकारयति जीके संग्रह में कुछ हस्तलिखित ग्रंथोंका संग्रह है।

४ कालू—भटिण्डा रेलवे लाईन के लूणकरणसर स्टेशन से १२ मील पर यह गांव है। यहां यति किसनलालजीके संग्रहमें हस्तलिखित प्रतियां है पर हम उनका अवलोकन नहीं कर पाये।

५ मोंढर—यहांके श्रावकों के पास यतिजी की कुछ हस्तलिखित प्रतियां हैं।

६ सुरताण—यहां के जैन मन्दिरके पीछेके कमरे में एक पुस्तकालय है जिसमें कुछ हस्तलिखित प्रतियां भी हैं।

७ सुजानगढ़—यहां ताराचन्दजी नाहेड़ के मकान में अच्छा संग्रह है। पर देखी नहीं

संग्रहालय जैन उपाश्रयों मे है। जिनमें से नं० १, ४, ५, ६, ७, ६, १०, ११, १४ जैन श्रावकों की देखरेख में है अवशेष सग्रह व्यक्तिगत है। जिनके सुरक्षित रहनेका प्रबन्ध अत्यावश्यक है।

उपाश्रयों के अतिरिक्त जैन श्रावकों के निम्नोक्त व्यक्तिगत संग्रह भी उल्लेखनीय हैं :—

(१) श्री अभय जैन पुस्तकालय—प्रस्तुत संग्रह पूज्यश्री शंकरदानजी नाहटाने अपने द्वितीय पुत्र स्वर्गीय अभयराजजी नाहटाकी स्मृति मे स्थापित किया है। यह हमारे २७ वर्ष के निजी प्रयत्न एवं परिश्रम का सुफल है। इस सग्रहालय मे अद्यावधि पत्राकार हस्तलिखित लगभग १५००० प्रतिया संग्रहित हो चुकी है। ५०० के लगभग गुटकाकार प्रतियों का संग्रह एवं १५००० मुद्रित ग्रन्थोंका संचय है। ऐतिहासिक सामग्रीके संग्रहका विशेष प्रयत्न किया गया है। ऐतिहासिक ग्रंथों के अतिरिक्त जैनाचार्यों एवं यतियों के पत्र, राजाओं के पत्र, खासरूक्के, सं० १७०१ से अब तक के प्राय सभी वर्षों के पंचांग, ओसवालोंकी वशावली आदि अनेकानेक महत्त्वपूर्ण सामग्री का विरल संग्रह है। ग्रंथ संग्रहालय के साथ साथ "शंकरदान नाहटा कला-भवन" भी सम्बन्धित है जिनमें विविध प्राचीन चित्र, सचित्र विज्ञप्तिपत्र, कपड़े पर आलेखित सचित्र पट, प्राचीन मुद्राएँ, कूटे के पूठे, कलमदान, डब्बियें, हाथी, सिंहासन, ताडपत्रीय, सचित्र व स्वर्णाक्षरी-रौप्याक्षरी-प्रतिया, हाथी दात व पीतल की विविध वस्तुओंका सग्रह किया गया है। इनमे से सचित्र विज्ञप्तिपत्र, बौद्ध पट आदि कतिपय कलापूर्ण वस्तुएं तो अनोखी है।

इस सग्रहालय मे साहित्य संसार मे अज्ञात विविध विषय एवं भाषाओं के सैकडों महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं। बहुत से दुर्लभ ग्रंथोंकी प्रेसकापियां भी तैयार की गई है। अनेक सुकवियोंकी लघुकृतियों का संग्रह पाटण, जेसलमेर, कोटा, फलोदी, जयपुर, बीकानेर आदि अनेक ज्ञानभंडारोंकी सूचियें विशेष उल्लेखनीय है।

(२) सेठिया लाइब्रेरी—श्री अगरचन्दजी भैरूंदानजी सेठियाकी परमार्थिक संस्थाओं मे यह भी एक है। इसमे १५०० हस्तलिखित प्रतिएं एवं १०००० मुद्रित ग्रंथों का सुन्दर संग्रह है।

(३) गोविन्द पुस्तकालय—इसे श्री गोविन्दरामजी भीखमचंदजी भणसालीने स्थापित किया है। यह पुस्तकालय नाहटों की गुवाड मे है। इसमे लगभग १७०० हस्तलिखित एवं १२०० मुद्रित ग्रंथ है।

(४) मोतीचन्दजी खजाञ्चीका संग्रह—श्रीयुक्त जौहरी प्रेमकरणजी खजाञ्चीके सुपुत्र बाबू मोतीचन्दजी को कुछ वर्षोंसे हस्तलिखित ग्रंथों एवं चित्रादि के संग्रह करने का शौक लगा है। आपने थोड़े समयमे लगभग ६००० हस्तलिखित ग्रथों एवं विशिष्ट चित्रादि का सुन्दर संग्रह कर लिया है।

(५) श्री० मानमलजी कोठारी का सग्रह - आपके यहा करीब ३०० हस्तलिखित प्रतिएं एवं २००० मुद्रित ग्रंथोंका संग्रह है। हस्तलिखित ग्रंथोकी सूची अभी तक नहीं बनी। आपके यहाँ कुछ चित्र पत्थर और अस्त्र-शस्त्रादि का भी अच्छा संग्रह है।

भय में यह भंडार है। कई वर्ष पूर्व हमने इसे अवलोकन किया था, सूची नहीं बनी है, प्रतियों लगभग ३०० होंगी।

७—पन्नी बाई के उपाश्रय का भंडार—उपर्युक्त उपाश्रयके पीछे की ओर पनी बाई के उपाश्रय में करीब १०० प्रतियां है। इनकी सूची बनी हुई है। मैंने प्रतियों का अवलोकन कर सूची का आवश्यक संशोधन कर दिया है।

८—महोपाध्याय रामलालजी का संग्रह—रांगड़ी के पास ही वैद्यरत्न महो० रामलालजी यति के मकान में उनका निजी संग्रह है। सूची बनी हुई नहीं है। इसका मैंने एक बार अवलोकन कर आवश्यक नोट्स लिये थे, प्रतियां करीब ५०० है।

६ खरतराचार्य शाखा का भंडार—नाहटों की गुवाड़ में बड़े उपाश्रय के पीछे खरतर गच्छ की लघु आचार्य शाखा का भंडार है। इस भंडार की बहुतसी प्रतियों का अवलोकन हमने किया है। इसकी ग्रन्थ-नाममात्र की सूची बनी हुई है लगभग २००० ग्रन्थ होंगे।

१०—हेमचन्द्रसूरि पुस्तकालय—बांठियों की गुवाड़ में पायचन्द गच्छके उपाश्रय में उस गच्छके श्रीपूज्यों का यह संग्रह है, हस्तलिखित ग्रन्थोंकी संख्या १२०० है। इसकी सूची बनी हुई है।

११—कुशलचन्द्र गणि पुस्तकालय—रामपुरियों की गुवाड़ में अवस्थित इस पुस्तकालय में लगभग ४५० हस्तलिखित प्रतियां और मुद्रित ग्रन्थोंका अच्छा संग्रह है।

१२—यति मोहनलालजी का संग्रह—सुराणों की गुवाड़ में लौंका गच्छीय उपाश्रयमें यह संग्रह है। पर हम अभी तक इस संग्रह को नहीं देख सके।

१३—यति लच्छीरामजी का संग्रह—उपर्युक्त लुंका गच्छीय उपाश्रय के पास ही है। जिसमें यति लच्छीराम जी के पास कुछ हस्तलिखित प्रतियां है। सूची बनी हुई नहीं है। हमने इसका एकबार अवलोकन किया था।

१४—कोचरों का उपाश्रय—कोचरोंकी गुवाड़में अवस्थित इस उपाश्रय में करीब ३० बंडल हस्तलिखित ग्रन्थ है जिनमें अधिकांश मुद्रित है। इनकी साधारण सूची अभी बनी है। हमने भी कुछ प्रतियों का अवलोकन किया है।

१५—यति जयकरणजी का संग्रह—आप बड़े उपाश्रय में रहते हैं इनके पास करीब २०० २५० प्रतियां और कुछ गुटके हैं।

खेद है कि श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञानभंडार जिसमें करीब ०००० महत्वपूर्ण हस्तलिखित प्रतियें एवं ८०० मुद्रित ग्रन्थ थे। उनके यति शिष्य त्रिलोकचन्द्र जी ने बेच डाला। अभी हाल ही में फिरसे ज्ञानभंडार स्थापित किया है जिसमें मुद्रित ग्रन्थों का संग्रह है इसीप्रकार यति चुन्नीलालजी का संग्रह भी हाल हीमें बिक्री हो गया है। कई वर्षों पहले यहांके कँवला गच्छका बड़ा भंडार एवं अन्य भंडारों में से भी बहुत से ग्रन्थ कौड़ीके मोलमें बिक गये हैं उपर्युक्त सभी

के मन्दिर मे वड़गच्छके यतिजी का भी अच्छा संग्रह वतलाते हैं। इनमें से पहला संग्रह हमने देखा है, दूसरा अभी तक नहीं देख सके।

(८) राजलदेसर—यहाँ उपकेश गच्छीय यति दौलतसुन्दरजी के पास थोडी प्रतियाँ थीं।

(६) रतनगढ—वैदोंकी लाइब्रेरी एवं सोहनलालजी वैद के पास कुछ हस्तलिखित ग्रन्थहै।

(१०) बीदासर—यति श्री गणेशचन्दजी के पास १५-२० बंडल हस्तलिखित ग्रन्थ है।

(११) छापर—यहाँ श्री मोहनलालजी दुधेरिया के पास कई चुनी हुई प्रतियाँ एवं प्राचीन चित्रोंका अच्छा संग्रह है।

(१२) सुजानगढ़—१ यहाँ लोंका गच्छके प्रसिद्ध वैद्यवर रामलालजी यतिके, २ खरतर गच्छीय यति दूधेचन्दजी के, ३ दानचन्दजी चोपड़ा की लाइब्रेरी मे, ४ पन्नाचन्द्रजी सिंघी के जैन मन्दिरमें हस्तलिखित प्रतियाँ सुरक्षित है।

(१३) चूरू—१ यतिवर्य्य ऋद्धिकरणजी के बड़े उपाश्रयमे २००० के लगभग हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। उनकी सूची बनी हुई नहीं है, हमने अवलोकन किया है। (२) सुराणा लाइब्रेरी—बीकानेर स्टेट की प्रसिद्ध लाइब्रेरियों मे है। लाइब्रेरी का भवन अलग बना हुआ है उसमे मुद्रित ग्रन्थोंके साथ करीब २५०० हस्तलिखित ग्रन्थ भी है जिनमे कुछ ताड-पत्रीय प्रतियें, चित्रित ग्रन्थ, बौद्ध ग्रथ और चित्रादि विशेष उल्लेखनीय है। सम्मेलनादि अधि-वेशनों के प्रसङ्ग पर इस संग्रहकी विशिष्ट वस्तुओंका प्रदर्शन भी कराया जाता है।

(१४) राजगढ़—यहाँ के ओसवाल पुस्तकालय मे यतिजी के ६ वण्डल हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। पर उनमे अधिकाश त्रुटित और फुटकर प्रतियाँ है।

(१५) रिणी—यति पन्नालालजी के पास थोडी प्रतियाँ है। इनके कुछ ग्रंथ लूणकरणसर में भी पड़े है।

(१६) सरदारशहर—१ यहाँ श्री वृद्धिचन्दजी गधैया के मकान मे अच्छा सग्रह है। इनका वहुत वर्षोंसे संग्रह करनेका प्रयत्न रहा है, तेरापंथी सभामे भी आपके भेंटकी हुई बहुतसी प्रतियाँ हैं। २ तेरापंथी सभामे ७३ बण्डल हस्तलिखित ग्रथ है जिनमें अच्छी प्रतियाँ है। सरदारशहर के ये दोनों संग्रह चूरू के दो संग्रहालयों की तरह बीकानेर स्टेट के संग्रहालयों मे अपना महत्त्व-पूर्ण स्थान रखते है। श्री दूलीचन्दजी सेठिया के पास भी कई हस्तलिखित प्रतियाँ है जिनमे अधिकांश आधुनिक हैं।

बीकानेर डिवीजन के अन्य भी कई स्थानोंमे तेरापंथी श्रावकों आदि के पास व्यक्तिगत संग्रह सुनने मे आया है, हमे उनका निश्चित पता न होने से यहा यथाज्ञात सग्रहों का परिचय दिया गया है। बीकानेर एवं डिवीजन के ज्ञानभंडारो मे हजारों ग्रंथ अन्यत्र अप्राप्य है उनकी एक विशिष्ट सूची यथासमय प्रकाशित करने का विचार है, पर अभी थोड़े से दुर्लभ ग्रंथों की सूची दी जा रही है।

बीकानेर के जैन ज्ञानभंडारों में दुर्लभ ग्रंथ

ताड़पत्रीय प्रतियें

(१) पाशुपताचार्य वामेश्वरध्वज रचित प्रबोधसिद्धि[1] (न्याय ग्रंथ) हमारे संग्रह में

(२) महाकवि मूलक रचित मल्लिका मारुतेय (सचतुर्माटीक कातन्त्र प्रामय) सुराणा लाइब्रेरी

कागज पर लिखित-ऐतिहासिक ग्रन्थ

(३)	सिद्धिचन्द्र रचित	भानुचन्द्र चरित्र	जयचन्दजी के भण्डारमें
(४)	जिनपालोपाध्याय	खरतरगच्छ गुर्वावली[3]	क्षमाकल्याणजी भण्डार
(५)		वादिदेवसूरि चरित्र[4] (अपूर्ण)	हमारे संग्रह में
(६)	अनेक कवियोंकि रचित खरतर, लौंका, बड़ गच्छादि की विविध पट्टावलियें		"
(७)		जयतसी रासो[5] गा० ८० राजस्थानी	"
(८)		रसविलास (अपूर्ण)[6] "	,
(९)		वच्छावत वंशावली "	"
(१०)		जिनभद्रसूरि रास "	"

(११) जिनपतिसूरि रास जिनकुशलसूरि रास, जिनपद्मसूरि रास, जिनराजसूरि रास, जिनरत्नसूरि रास, जिनसागरसूरि रास, विजयसिंहसूरि रास, जिनप्रभसूरिजि नदेवसूरि गीत आदि अनेकों ऐतिहासिक गीत एवं गुर्वावलियें जो कि अन्यत्र अप्राप्य हैं हमने अपने ऐतिहासिक

१—परिचयके लिए देखें राजस्थान भारती व २।

२—इसे हमने श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई को भेजकरसंपादित करवाया जो सिंघी जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित हुआ है।

३—इस अद्वितीय ग्रन्थको श्री मुनि जिनविजयजीको भेजकर सिंघी जैन ग्रन्थमालासे मुद्रित करवाया है। इस ग्रन्थके महत्त्वके सम्बन्ध में मेरा लेख "खरतर गच्छ गुर्वावली और उसका महत्त्व" भारतीय विद्या वर्ष १ अंक ४ में देखना चाहिए।

४—इस काव्यका थोड़ा परिचय मैंने "एक नवीन ऐतिहासिक काव्य" लेखमें दिया है जो कि जैन सत्य प्रकाश वर्ष ५ अंक ८ में प्रकाशित हुआ है।

५—इसका विशद परिचय राजस्थानी वर्ष १ अंक १ में दिया गया है। यह छपा दिया गया है।

६—इसके सम्बन्धमें प्रजासेवक के ता २ १२ ४१ के अंक में एक अप्रसिद्ध राजस्थानी काव्य' शीर्षक लेखमें प्रकाश डाला गया है।

७—इसका परिचय भी राजस्थानी वर्ष १ अंक १ में दिया गया है। उस समय प्रारंभके कुछ पद्य अप्राप्त थे व पीछे उपाध्याय जिनसागरजी प्रेषित २ पत्रोंमें प्राप्त हो गये हैं।

८—इसका ऐतिहासिक सार जैन सत्य प्रकाश वर्ष ३ अंक ८ में प्रकाशित किया है।

जैन काव्य संग्रहमे प्रकाशित किये है। अप्रकाशित ऐतिहासिक साहित्यमे और भी देवचन्द रास[1] जिनसिंहसूरि रास[2] आदि अनेक रास, गीत, नगरवर्णनात्मक गजलें[3] हमारे संग्रहमे हैं।

जैन तीर्थों के सम्बन्धी ऐतिहासिक साहित्यमे जयकीर्ति कृत सम्मेतशिखर रास[4] और अनेक तीर्थमालाएँ, चैत्य परिपाटियों की प्रेसकॉपियाँ हमारे संग्रहित है।

इसी प्रकार वंशावलियो में जैसलमेर वंशावली, वच्छावत वशावलि, राठौडोंकी ख्यात एवं बातें, ओसवाल जाति के अनेक गोत्रों की वंशावलियें, इत्यादि महत्त्वपूर्ण विविध ऐतिहासिक साहित्य हमारे सग्रह मे अप्रकाशित है।

गच्छों के सम्बन्ध मे भी वडगच्छ गुर्वावली[5], तपागच्छ गुर्वावली[6], उपकेश गच्छ गुर्वावली, पल्लीवालगच्छ पट्टावली, राजगच्छ कडवागच्छ आदिकी पट्टावलियोंकी नकलें ओसवाल वंशावलियो, विज्ञप्ति-लेख पत्र सग्रहादि विशेप उल्लेखनीय है।

संस्कृत जैन काव्य

(१) पद्मसुन्दर	कृत	अकवर शाहि शृङ्गार दर्पण[7]	अपूर्ण हमारे सग्रह मे पूर्ण अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरीमे
(२) नंदिरत्न शिष्य	"	सारस्वतोल्लास काव्य	"
(३) विमलकीर्त्ति	"	चन्द्रदूत[8] काव्य	हमारे संग्रह मे
(४) मुनीशसूरि	"	हंसदूत स० १६०० लिखित	"
(५) श्रीवल्लभ	"	विद्वद्प्रबोध[9]	"

१—इसका ऐतिहासिक सार भी सौभाग्यविजय रास सारके साथ जैन सत्यप्रकाश के वर्ष २ अक १२ मे प्रकाशित किया है।

२—इस रासका ऐतिहासिक सार जिनराजसूरि रास सारके साथ जैन सत्यप्रकाश वर्ष ३ अक ४-५ में प्रकाशित हुआ है।

३ राजस्थानमे हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थो की खोज ग्रन्थके दूसरे भागमें विवरण प्रकाशित है इनमें कुछ गजलें मुनि कांतिसागरजीने हिन्दी पद्य संग्रह ग्रन्थमे प्रकाशित हो चुकी है कुछ भारतीय विद्या जैन विद्यादि पत्रोंमें। कान्तिसागरजीका एक लेख भी राष्ट्र-भारती नवम्बर १९५३ मे प्रकाशित हुआ है।

४—इसका सार जैन सत्यप्रकाश वर्ष ७ अक १०-१२ मे प्रकाशित किया है। प्रति मोतीचन्दजी खजाञ्चीके सग्रह में हैं।

५—इसे जैन सत्यप्रकाश वर्ष ७ अक ५ मे प्रकाशित की है।

६—इसे श्री० मोहनलाल द० देसाईने भारतीय विद्या वर्ष १ मे प्रकाशित की है।

७—यह ग्रन्थ गगा ओरिण्टियल सीरीज बीकानेर से प्रकाशित हुआ है। इसके रचयिता पद्मसुन्दरजी के सम्बन्धमें "कवि पद्मसुन्दर और उनके ग्रन्थ" अनेकान्त वर्ष ४ अक ८ में प्रकाशित किया है।

८—इसका कुछ परिचय मैंने "दूत काव्य सबन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें" लेखमें जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ३ किरण १ में प्रकाशित किया है। अभी उ० श्री सुखसागरजीने इस ग्रन्थको प्रकाशित कर दिया है।

९—इसका परिचय "श्रीवल्लभजीके तीन नवीन ग्रन्थ" शीर्षक लेखमे जैन सत्यप्रकाश वर्ष ५ अक ७ मे प्रकाशित है। यह भी उ० सुखसागरजीके द्वारा चन्द्रदूतके साथ प्रकाशित हो चुका है।

(६) मंगलचन्दजी मालूका संग्रह—आपके यहां भी जैनागमादि ग्रंथोंका संग्रह है पर अभी तक हम अवलोकन नहीं कर पाये।

(७) भँवरलालजी रामपुरिया का संग्रह—आपके संग्रह में भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथ हैं।

(८) मंगलचन्दजी झाबकका संग्रह—आपके यहां भी कुछ हस्तलिखित ग्रंथोंका संग्रह है।

(९) श्रीराव गोपालसिंहजी वैद्यका संग्रह—आपके यहां भी हस्तलिखित गुटकों एवं चित्रों का अच्छा संग्रह है।

इन जैन संग्रहालयों के अतिरिक्त बीकानेर महाराजाकी अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी जो कि पुराने किले में अवस्थित है, बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थागार है। इसमें वेद, वेदान्तादि सभी विषयकी १२००० हस्तलिखित प्रतियें एवं ४०० के लगभग गुटके हैं। इन प्रतियों में जैन प्रतियों की संख्या भी १५०० के लगभग होगी। राजस्थानी साहित्य पीठमें स्वामी नरोत्तमदासजी सग्रह हस्तलिखित ग्रंथोंमें भी कुछ जैन ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत लेखमें केवल हस्तलिखित प्रतियोंके ज्ञानभंडारों का ही परिचय देना अभीष्ट होने से मुद्रित ग्रन्थोंके पुस्तकालयों—श्रीमहावीर जैन मण्डल, सुराणा लाइब्रेरी, प्रधान वाचनालय आदिका परिचय नहीं दिया गया है। ऊपर लिखे हस्तलिखित ग्रंथालयों में मुद्रित ग्रंथोंका संग्रह भी है खोज करने पर यति यतिनियों और श्रावकोंके घरोंमें थोड़ी बहुत हस्तलिखित प्रतियां पाई जा सकती हैं।

उपयुक्त सभी ज्ञानभण्डार बीकानेर में हैं। अब बीकानेर राज्यवर्त्ती जैन ज्ञानभण्डारों का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है।

१ गंगाशहर बीकानेर से २ मील पर है। यहां जैन श्वे० तेरापंथी सभामें लगभग ३०० हस्तलिखित ग्रंथ और मुद्रित ग्रंथोंका भी अच्छा संग्रह है।

२ भीनासर—बीकानेर से ३ मील है। यहां यतिवर्य्य सुमेरमलजी का अच्छा संग्रह है, जिनमें से कुछ प्रतियों का हमने दर्शन किया है। यहां श्रीयुक्त बहादूरमलजी बांठिया के संग्रह में भी चुनी हुई ७००-८०० अच्छी प्रतियां हैं कई वर्ष पूर्व हमने उनका अवलोकन किया था। श्री चम्पालालजी वैद के यहां भी अच्छा संग्रह सुना जाता है, हमने अभी तक देखा नहीं।

३ देसनोक—बीकानेरसे १६ मील दूर है। यहां स्वर्गीय वख्तमलजी डोसी एवं लौंकायति जीके संग्रह में कुछ हस्तलिखित प्रतोंका संग्रह है।

४ कालू—भटिण्डा रेल्वे लाईन के लूणकरणसर स्टेशन से १२ मील पर यह गांव है। यहां यति किसनलालजीके संग्रहमें हस्तलिखित प्रतियां है पर हम उनका अवलोकन नहीं कर पाये।

५ नौहर—यहांके श्रावकों के पास यतिजी की कुछ हस्तलिखित प्रतियां हैं।

६ सूरतगढ़—यहां के जैन मन्दिरके पीछेके कमरे में एक पुस्तकालय है जिसमें कुछ हस्त लिखित प्रतियां भी हैं।

७ हनुमानगढ़—यहां ताराचन्दजी ताटेड़ के मकान में अच्छा संग्रह है। एवं देवी जी

के मन्दिर मे वड़गच्छके यतिजी का भी अच्छा संग्रह वतलाते हैं। इनमें से पहला संग्रह हमने देखा है, दूसरा अभी तक नहीं देख सके।

(८) राजलदेसर—यहाँ उपकेश गच्छीय यति दौलतसुन्दरजी के पास थोडी प्रतियाँ थीं।

(६) रतनगढ—वैदोंकी लाइब्रेरी एवं सोहनलालजी वैद के पास कुछ हस्तलिखित ग्रन्थहैं।

(१०) बीदासर—यति श्री गणेशचन्दजी के पास १५-२० वंडल हस्तलिखित ग्रन्थ है।

(११) छापर—यहाँ श्री मोहनलालजी दुधेरिया के पास कई चुनी हुई प्रतियाँ एवं प्राचीन चित्रोंका अच्छा संग्रह है।

(१२) सुजानगढ़—१ यहाँ लोंका गच्छके प्रसिद्ध वैद्यवर रामलालजी यतिके, २ खरतर गच्छीय यति दूधेचन्दजी के, ३ दानचन्दजी चोपड़ा की लाइब्रेरी मे, ४ पन्नाचन्द्रजी सिंघी के जैन मन्दिरमें हस्तलिखित प्रतियां सुरक्षित है।

(१३) चूरू—१ यतिवर्य्य ऋद्धिकरणजी के बड़े उपाश्रयमे २००० के लगभग हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। उनकी सूची बनी हुई नहीं है, हमने अवलोकन किया है। (२) सुराणा लाइब्रेरी—बीकानेर स्टेट की प्रसिद्ध लाइब्रेरियों में है। लाइब्रेरी का भवन अलग बना हुआ है उसमे मुद्रित ग्रन्थोंके साथ करीव २५०० हस्तलिखित ग्रन्थ भी है जिनमे कुछ ताड-पत्रीय प्रतियें, चित्रित ग्रन्थ, वौद्ध ग्रथ और चित्रादि विशेष उल्लेखनीय है। सम्मेलनादि अधि-वेशनों के प्रसङ्ग पर इस संग्रहकी विशिष्ट वस्तुओंका प्रदर्शन भी कराया जाता है।

(१४) राजगढ—यहाँ के ओसवाल पुस्तकालय मे यतिजी के ६ वण्डल हस्तलिखित प्रतियाँ हैं। पर उनमे अधिकाश त्रुटित और फुटकर प्रतियाँ है।

(१५) रिणी—यति पन्नालालजी के पास थोड़ी प्रतियाँ है। इनके कुछ ग्रंथ लूणकरणसर में भी पड़े है।

(१६) सरदारशहर—१ यहाँ श्री वृद्धिचन्दजी गधैया के मकान में अच्छा सग्रह है। इनका वहुत वर्षोंसे संग्रह करनेका प्रयत्न रहा है, तेरापंथी सभामें भी आपके भेंटकी हुई बहुतसी प्रतियाँ है। २ तेरापंथी सभामे ७३ वण्डल हस्तलिखित ग्रथ है जिनमें अच्छी प्रतियाँ है। सरदारशहर के ये दोनों संग्रह चूरू के दो संग्रहालयों की तरह बीकानेर स्टेट के संग्रहालयों मे अपना महत्त्व-पूर्ण स्थान रखते हैं। श्री दूलीचन्दजी सेठिया के पास भी कई हस्तलिखित प्रतियाँ हैं जिनमे अधिकांश आधुनिक है।

बीकानेर डिवीजन के अन्य भी कई स्थानोंमे तेरापंथी श्रावकों आदि के पास व्यक्तिगत संग्रह सुनने मे आया है, हमे उनका निश्चित पता न होने से यहा यथाज्ञात सग्रहों का परिचय दिया गया है। बीकानेर एवं डिवीजन के ज्ञानभंडारों मे हजारों ग्रंथ अन्यत्र अप्राप्य है उनकी एक विशिष्ट सूची यथासमय प्रकाशित करने का विचार है, पर अभी थोड़े से दुर्लभ ग्रंथों की सूची दी जा रही है।

बीकानेर के जैन ज्ञानभंडारों में दुर्लभ ग्रंथ

ताड़पत्रीय प्रतियें

(१) पाशुपताचार्य वामेश्वरध्वज रचित प्रबोधसिद्धि[१] (न्याय ग्रंथ) हमारे संग्रह में
(२) महाकवि मूलक रचित प्रक्रिया गांगेय (सवृत्तटीक कातन्त्र व्याकरण) सुराणा लाइब्रेरी

कागज पर लिखित ऐतिहासिक ग्रन्थ

(३)	सिद्धिचन्द्र रचित	भानुचन्द्र चरित्र[१]	जयचन्द्रजी के भण्डारमें
(४)	जिनपालोपाध्याय	खरतरगच्छ गुर्वावली[२]	क्षमाकल्याणजी भण्डार
(५)		वादिदेवसूरि चरित्र[३] (अपूर्ण)	हमारे संग्रह में
(६)	अनेक कवियोंके रचित खरतर, आंचल, वड़ गच्छादि की विविध पट्टावलियें		"
(७)		जयसङ्घी रासो[४] गा० ८७ राजस्थानी	"
(८)		रसविलास (अपूर्ण)[५] "	"
(९)		वच्छावत वंशावली[६] "	"
(१०)		जिनमद्रसूरि रास[८] "	"

(११) जिनपतिसूरि रास, जिनकुशलसूरि रास, जिनपद्मसूरि रास, जिनराजसूरि रास, जिनरत्नसूरि रास, जिनसागरसूरि रास, विजयसिंहसूरि रास, जिनप्रभसूरि जिनदेवसूरि गीत आदि अनेकों ऐतिहासिक गीत एवं गुर्वावलियें जो कि अन्यत्र अप्राप्य हैं हमने अपने ऐतिहासिक

१—परिचयके लिए देखें राजस्थान भारती व २।

२—इसे हमने श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई को भेजकर संपादित करवाया जो सिंघी जैन ग्रन्थमाला से प्रकाशित हुआ है।

३—इस अद्वितीय ग्रन्थको भी मुनि जिनविजयजीको भेजकर सिंघी जैन ग्रन्थमालासे मुद्रित करवाया है। इस ग्रन्थके महत्त्वके सम्बन्ध में मेरा लेख "खरतर गच्छ गुर्वावली और उसका महत्त्व" भारतीय विद्या वर्ष १ अंक ४ में देखना चाहिए।

४—इस काव्यका थोड़ा परिचय मैंने "एक नवीन ऐतिहासिक काव्य" लेखमें दिया है जो कि जैन सत्य प्रकाश वर्ष ५ अंक ८ में प्रकाशित हुआ है।

५—इसका विशेष परिचय राजस्थानी वर्ष ३ अंक १ में दिया गया है। वह छपा दिया गया है।

६—इसके सम्बन्धमें प्रजासेवक के ता० ३ १२ ४१ के अंक में 'एक अप्रसिद्ध राजस्थानी काव्य' शीर्षक लेखमें प्रकाश डाला गया है।

७—इसका परिचय भी राजस्थानी वर्ष ३ अंक ३ में दिया गया है। उस समय प्रारंभके कुछ पद्य अप्राप्य थे वे पीछेसे उपाध्याय जिनपद्मसागरजी प्रेषित २ पत्रोंमें प्राप्त हो गये हैं।

८—इसका ऐतिहासिक सार जैन सत्य प्रकाश वर्ष ३ अंक ८ में प्रकाशित किया है।

जैन काव्य संग्रहमें प्रकाशित किये है। अप्रकाशित ऐतिहासिक साहित्यमें और भी देवचन्द रास[1] जिनसिंहसूरि रास[2] आदि अनेक रास, गीत, नगरवर्णनात्मक गजलें[3] हमारे संग्रहमे है।

जैन तीर्थों के सम्बन्धी ऐतिहासिक साहित्यमे जयकीर्ति कृत सम्मेतशिखर रास[4] और अनेक तीर्थमालाएँ, चैत्य परिपाटियों की प्रेसकॉपियाँ हमारे संग्रहित है।

इसी प्रकार वंशावलियों मे जैसलमेर वंशावली, वच्छावत वशावलि, राठौडोंकी ख्यात एवं बातें, ओसवाल जाति के अनेक गोत्रों की वंशावलियें, इत्यादि महत्त्वपूर्ण विविध ऐतिहासिक साहित्य हमारे सग्रह में अप्रकाशित है।

गच्छों के सम्बन्ध मे भी वडगच्छ गुर्वावली[5], तपागच्छ गुर्वावली[6], उपकेश गच्छ गुर्वावली, पल्लीवालगच्छ पट्टावली, राजगच्छ कडवागच्छ आदिकी पट्टावलियोंकी नकलें ओसवाल वंशावलियाँ, विज्ञप्ति-लेख पत्र संग्रहादि विशेष उल्लेखनीय है।

संस्कृत जैन काव्य

(१) पद्मसुन्दर	कृत	अकवर शाहि श्रृङ्गार दर्पण[7]	अपूर्ण हमारे सग्रह में पूर्ण अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरीमे
(२) नंदिरत्न शिष्य	"	सारस्वतोल्लास काव्य	"
(३) विमलकीर्त्ति	"	चन्द्रदूत[8] काव्य	हमारे संग्रह में
(४) मुनीशसूरि	"	हंसदूत सं० १६०० लिखित	"
(५) श्रीवल्लभ	"	विद्वद्प्रबोध[9]	"

१—इसका ऐतिहासिक सार भी सौभाग्यविजय रास सारके साथ जैन सत्यप्रकाश के वर्ष २ अक १२ में प्रकाशित किया है।

२—इस रासका ऐतिहासिक सार जिनराजसूरि रास सारके साथ जैन सत्यप्रकाश वर्ष ३ अक ४-५ में प्रकाशित हुआ है।

३ राजस्थानमे हस्तलिखित हिन्दी ग्रन्थों की खोज ग्रन्थके दूसरे भागमें विवरण प्रकाशित है इनमें कुछ गजलें मुनि कांतिसागरजीने हिन्दी पद्य संग्रह ग्रन्थमें प्रकाशित हो चुकी हैं कुछ भारतीय विद्या जैन विद्यादि पत्रोंमें। कांतिसागरजीका एक लेख भी राष्ट्र-भारती नवम्बर १९५३ में प्रकाशित हुआ है।

४—इसका सार जैन सत्यप्रकाश वर्ष ७ अक १०-१२ मे प्रकाशित किया है। प्रति मोतीचन्दजी खजाञ्चीके सग्रह में हैं।

५—इसे जैन सत्यप्रकाश वर्ष ७ अंक ५ मे प्रकाशित की है।

६—इसे श्री० मोहनलाल द० देसाईने भारतीय विद्या वर्ष १ में प्रकाशित की है।

७—यह ग्रन्थ गगा ओरिण्टियल सीरीज बीकानेर से प्रकाशित हुआ है। इसके रचयिता पद्मसुन्दरजी के सम्बन्धमे "कवि पद्मसुन्दर और उनके ग्रन्थ" अनेकान्त वर्ष ४ अक ८ मे प्रकाशित किया है।

८—इसका कुछ परिचय मैंने "दूत काव्य सबन्धी कुछ ज्ञातव्य बातें" लेखमे जैन सिद्धान्त भास्कर भाग ३ किरण १ में प्रकाशित किया है। अभी उ० श्री सुखसागरजीने इस ग्रन्थको प्रकाशित कर दिया है।

९—इसका परिचय "श्रीवल्लभजीके तीन नवीन ग्रन्थ" शीर्षक लेखमे जैन सत्यप्रकाश वर्ष ५ अंक ७ मे प्रकाशित है। यह भी उ० सुखसागरजीके द्वारा चन्द्रदूतके साथ प्रकाशित हो चुका है।

(६) इन्द्रनन्दिसूरिशिष्यकृत	वैराग्य शतक सं० १५६० लिखित	हमारे संग्रहमें
(७) मुनिसोम कृत	रणसिंहचरित्र[1] सं० १५४० रचित	"
(८) सुमतिविजय "	प्रियविलास	श्रीपूज्यजी के संग्रह में
(६) सूरचन्द्रगणि "	पञ्चतीर्थी स्तव[1]	महिमाभक्तिभंडार
(१०) देवानंदसूरि "	अजितप्रभु चरित्र[2]	बृहद् ज्ञानभंडार
(११) प्रतिष्ठासोम "	धर्मदूत	"
(१२) राजवल्लभ "	सिंहासनद्वात्रिंशिका	गोविन्द पुस्तकालय
(१३) समयसुंदर "	जिनसिंह पदोत्सव काव्यादि	प्रतिलिपि हमारे संग्रहमें

संस्कृत टीकाएँ

(१) हर्षनन्दन	उत्तराध्ययन वृत्ति	महिमाभक्ति भण्डार
(२) अजितदेवसूरि	कल्पसूत्र[4] वृत्ति	जयचन्द्रजी भण्डार
(३) जयदयालजी	नन्दीसूत्र वृत्ति-सानुवाद	श्रीपूज्यजी संग्रह
(४) प्रद्युम्नसूरि	कातन्त्रवृत्ति सं० १३६६ लि०	बृहद्ज्ञानभण्डार
(५) समयसुन्दर	वाग्भटालंकार वृत्ति	"
(६) "	माघ काव्य वृत्ति (तृतीय सर्ग)	सुराणा लाइब्रेरी चूरू
(७) गुणविनय	नेमिदूत वृत्ति[5]	रामलालजी संग्रह
(८) कविचक्रवर्ती श्रीपाल	शतार्थी[6]	सेठोंकी लाइब्रेरी, रतनगढ़
(६) श्रीसार	पृथ्वीराजवेलि टीका	गोविन्द पुस्तकालय
(१०) रूपचन्द्र	सिद्धान्तचन्द्रिका वृत्ति	बृहद्ज्ञानभण्डार
(११) समरथ	रसिकप्रियावृत्ति[7]	"
(१२) वीरचन्द्र शि०	बिहारीसतसईवृत्ति	"
(१३) गुणरत्न	सारस्वतप्रक्रियावृत्ति	"
(१४) "	शतपद टिप्पण	अनूप सं० ला०
(१५) विनयरत्न	विदग्ध मुखमण्डनवृत्ति	हमारे संग्रह में

१—यह ग्रन्थ भी जिनदत्तसूरि पुस्तकोद्धार फंड सूरत से प्रकाशित हो चुका है।

२—इसका परिचय 'जैन सिद्धान्त भास्कर' में प्रकाशित किया है।

३—इसका परिचय 'अनेकान्त' में प्रकाशित किया है।

४—इस ग्रन्थका कुछ परिचय मैंने अपने "पल्लीवाल गच्छ पट्टावली" लेखमें दिया है जो कि आत्मानंद शताब्दी स्मारक ग्रन्थ में प्रकाशित है।

५—उपाध्याय विनयसागरजीने इसे कोटासे प्रकाशित कर दिया है।

६—इसका उल्लेख मैंने "जैन अनशन साहित्य" लेखमें जैन सिद्धान्त-भास्कर वर्ष ८ अंक १ में किया है।

७-८—इनका विवरण "राजस्थानमें हिन्दी ग्रन्थोंकी खोज" भाग २ और सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित है।

(१६) गुणरत्न　　　काव्य प्रकाश वृत्ति　　　वृहद् ज्ञानभण्डार

और भी पचासों जैनतर ग्रन्थों पर जैन टीकायें यहांके भण्डारो में अन्यत्र अप्राप्य है। जनका विवरण मैंने अपने "जैनेतर ग्रन्थों पर जैन टीकायें" (प्र० भारतीय विद्या वर्ष २ अं० ३ ४) लेखमें दिया है।

हिन्दी ग्रन्थ

हमारे संग्रह मे व अनूप-संस्कृत-लाइब्रेरी मे हिन्दीके सैकड़ों ऐसे ग्रथ हैं जिनकी दूसरी प्रति अभी तक कहीं भी जानने में नहीं आई। इनमें से कुछ ग्रंथोंका परिचय हमने अपने निम्नोक्त लेखों मे प्रकाशित किया है —

(१) जैनों द्वारा रचित हिन्दी पद्यमे वैद्यक ग्रंथ　प्र० हिन्दुस्तानी भा० ११ अं० २
(२) कवि जटमल नाहर और उनके ग्रन्थ　प्र० „ भा० ८ अं० २
(३) श्रीमद्ज्ञानसारजी और उनका साहित्य　प्र० „ भा० ६ अं० २
(४) हिन्दीमे विविध विषयक जैन साहित्य　प्र० सम्मेलन-पत्रिका भा० २८ अं० ११, १२
(५) हमारे संग्रहके कतिपय अप्रसिद्ध हिन्दी ग्रंथ　प्र० „ „ भा० २६ अ० ६, ७
(६) छिताई वार्त्ता　प्र० विशालभारत मई, सन् १९४५
(७) रत्नपरीक्षा विषयक हिन्दी साहित्य　प्र० राजस्थान-साहित्य वर्ष १ अ० १
(८) विक्रमादित्य संबन्धी हिन्दी ग्रंथ　प्र० „ „ वर्ष १ अं० ३
(९) संगीत विषयक हिन्दी ग्रन्थ　प्र० „ „ वर्ष १ अ० २

और भी अनेकों लेख तैयार हे एव विवरण ग्रथके दो भाग भी तैयार किये है जिनमे से एक हिन्दी विद्यापीठ उदयपुरसे प्रकाशित हो चुका है दूसरा छप रहा है।

इसी प्रकार राजस्थानी और गुजराती मे सैकडों ग्रन्थ यहाके भण्डारों में है जिनका विवरण श्री० मोहनलाल द० देसाई संपादित जैन गुर्जर कविओ भा० ३ मे दिया गया है। इसकी पूर्ति रूपमे हमने एक ग्रथ तैयार किया है।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरीके संस्कृत (कुछ विषयोंको छोड) एव राजस्थानी ग्रन्थोके केटलग तो प्रकाशित हो चुके है जिनमे सैकडो अन्यत्र अप्राप्य ग्रन्थोंका पता चलता है। हिन्दी ग्रन्थोकी सूची भी छपी तो पडी है अभी प्रकाशित नहीं हुई । इसकी भूमिका एव सम्मेलन पत्रिका वर्ष ३६ अंक ४ मे यहाके अलभ्य हिन्दी ग्रन्थोंकी सूची हमने प्रकाशित की है।

बीकानेर के जैन श्रावकों का धर्म-प्रेम

मध्यकाल के जैन समाज में श्रद्धा और भक्ति अत्यधिक मात्रा में थी, इसी कारण उन्होंने जैन मन्दिरोंके कलापूर्ण निर्माण में, जैन ग्रन्थोंके सुन्दर स्वर्णाक्षरों में सचित्र लेखन में एवं तीर्थ यात्रा के विशाल संघ और गुरुभक्ति में असंख्य धन राशि का व्यय कर अपने उत्कट धर्म-प्रेमका परिचय दिया है। बीकानेर के जैन श्रावकोंने यहां के जैन मन्दिरोंके निर्माण में जो महत्त्वपूर्ण भाग लिया है वह तो इस लेख संग्रह से विदित ही है। यहां केवल उनके निकाले हुए संघ, अन्य स्थानों में कारित मन्दिर मूर्त्ति तालाब, एवं गुरुभक्ति आदि विविध धार्मिक कृत्योंका संक्षेप में निदर्शन कराया जा रहा है।

बीकानेर के तीर्थयात्री संघ

सं० १५५०-५२ के लगभग मंत्रीश्वर वच्छराजने संघ सहित शत्रुंजय तीर्थकी यात्रा की जिसका वर्णन साधुचन्द्र कृत तीर्थराज चैत्य परिपाटी में मिलता है और उसके पश्चात् उनके सुपुत्र कर्मसिंहने शत्रुंजय का कर छुड़ाकर संघसह यात्रा करते हुए रैवताचल, अर्बुद और द्वारिका आदि तीर्थोंकी स्थान स्थान पर लंभनिका देते हुए यात्रा की। उनके पुत्र वरसिंहने चांपानेर में बादशाह मुजफ्फरशाह से ६ महीने का शत्रुंजय यात्रा का फरमान प्राप्त किया और शत्रुंजय, अर्बुद, रैवत तीर्थोंकी संघ सहित यात्रा की और तीर्थोंको कर से मुक्त कर लंभनिका वितरण की। इसी प्रकार नगराज संग्रामसिंह आदि ने भी तीर्थाधिराज शत्रुंजय की यात्रा की, तीर्थको कर से मुक्त कर इन्द्रमाला ग्रहण की*।

सं० १६१६ मिती माघ सुदि ११ को बीकानेर से एक विशाल यात्री संघ शत्रुंजय यात्रा के लिए निकला। जिसने सात सरोंमें प्रथम जिन, लीमसर में ३ चैत्य, नासोप के २ मन्दिरोंके दर्शन कर रत्नपुरी होकर फलोदी पार्श्वनाथ की फाल्गुण वदि ८ को यात्रा की। वहां से बाहड़पुरके जिनमन्दिर, पालीके ३, गुंदवच १, लाम्क, नीम्बवाड़ १, वरकाणा-पार्श्व २, नाडुल ५, नाडुलाई में ७, घणउर १ एवं कुंभलमेर फाल्गुण सुदि ५ को १८ मन्दिरोंकी यात्रा की। कमल-वाड़ा १, सादड़ी, राणकपुर में सुदि ६ को आदिनाथ प्रभुकी यात्रा की। फिर मेदाड़ा १ सिंदरु १, नाडुली १, कोरंटा ३, नागसेण १, कोल्ही १, कोलर २ व सीरोहीके ८ चैत्योंकी यात्रा की। आबूके निकटवर्ती ३ मन्दिर, हमीरगढ़ में १ मन्दिरके दर्शनकर चैत्र वदि ५ को आबू-तीर्थकी यात्रा की। देवलवाड़े के ८ मन्दिर व अचलगढ़के २ मन्दिर, तेरवाड़ के ३, रामसणपुरके ३, गोल गाम १ ओसवाड़में संखेसर पार्श्वनाथको वंदन किया वहांसे मांडल, विरमगाम २, मूल २, राण पुर ५, लोलियाणा के मन्दिरोंके दर्शन करते हुए क्रमश पालीताना पहुंचे, चैत्री-पूनम के दिन

* विशेष जानने के लिए कर्मचन्द्र मंत्रिवंश प्रबन्ध कृति देखना चाहिए।

तीर्थाधिराज शत्रुंजयकी यात्रा की। फिर गिरनार पर श्रीनेमिनाथ प्रभुकी यात्रा कर संघ वापस लौटा। वासावाड़, वलदाणइ के २, वड़वाहण १, वडली के २ मन्दिरोंके दर्शन कर संघ पाटण पहुचा। श्रीजिनचन्द्रसूरिजी उस समय पाटण में विराजते थे, गुरु वन्दना कर संघ अहमदावादके मन्दिरोंका दर्शन कर थिरादराके ५, साचोर मे महावीर, राड़द्रह मे २, वीरमपुर, कोटणइ में २, वछ्हही, जोधपुर, तिमरी २, ओसियों मे वोर प्रभु एव वावड़ी ग्राम की चैत्य वन्दना कर वापस वीकानेर लौटा॥।

सं० १६४४ के माघ वदि १ को वीकानेर से शत्रुंजय यात्री संघ निकल कर अहमदावाद गया जिसका वर्णन गुणविनय गणिने शत्रुजय चैत्य परिपाटी मे इस प्रकार है—इस सघके साथ श्रेयासनाथ कुथुनाथ और पार्श्वनाथ प्रभु के देहरासर थे। संघने माह वदि ४ को सारुडइ मे आदिनाथ जिनालयको वंदन किया फिर वावडी १, तिमरी २, जोधपुर मे माह वदि ६ को ५ जिनालयों को वन्दन किया। स्वर्णगिरिके ५ मन्दिर, लासा ग्राममे २, गोवल मे १, और सीरोही के १० जिनालयों मे माघ सुदि ७ को चैत्यवंदनाकी। वहा से माकरड़इ १, नीतोड़ा १, नान-वाडइ १, कथवाड़इ १, संघवाड़इ, खाखरवाडइ १, कास्तरइ २, अंवथल १, मोड़थल १ रोहइ २, पउडवायइ १, सीरोतर १, वड़गाम १, सिद्धपुर ४, लालपुर १, उन्हइ १, मइसाणइ १०, पनसरि १, कलवलि १, ऊनेऊ १, सेरिसइ लोडणपार्श्व, धवलकामे ७ चैत्योंके साथ सपरिवार युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिको वन्दन किया। वहां संघपति जोगी सोमजीका विशाल संघ अहमदावादसे आकर ७०० सिजवालों के साथ इस सघमे सम्मिलित हुआ। वहा से धंधका* में जिनालयका वन्दनकर शत्रुजयका दूर से दर्शन किया। पालीताना पहुँचकर १ जिनालय की वन्दना कर चैत्र वदि ५ को गिरिराज शत्रुजय की यात्रा की। चैत्र वदि ८ को संघने १७ भेदी पूजा कराई। वड़े उत्साह व भक्तिके साथ यात्रा कर सघ वापिस लौटा और अहमदावाद आकर

॥ गुणरग कृत चैत्य परिपाटी स्तवनके आधार से, जो कि परिशिष्ट में छपा है।

* कवि कुशललाभ कृत सघपति सोमजी सघ वर्णन तीर्थमालामे इस यात्राका विशेष वर्णन है उसमें लिखा है कि—धुन्धुकाके पश्चात् खमीधाणा पहुँचने पर आगे चलने पर युद्धसूचक शकुन हुए अत सघपति सोमजीने २ दिन वहीं ठहरने का निश्चय किया। परन्तु वीकानेरके सघने इस निर्णयको अमान्यकर सीरोही सघके साथ वहां से प्रयाण कर दिया ३ कोश जाने पर मुगलोंने सघको चारों ओर से घेर लिया। सघके लोगोंमें बड़ी खल-वली मच गई, नाथा सघवी एव वीकानेरके अन्यलोग वड़ी वीरताके साथ लड़ने लगे। पर मुगलोंके भय से कई लोग भयभीत होकर दादा साहवको स्मरण करने लगे। सघ पर सकट आया हुआ जानकर युगप्रधान श्रीजिन-दत्तसूरिजीने अपने दैवी प्रभावसे संघकी सुरक्षाकी मुगललोग परास्त होकर भाग गए। दादाजी के प्रत्यक्ष चम-त्कारको अनुभवकर सघ बड़ा आनन्दित हुआ। शत्रुजय महातीर्थकी यात्रा करने के पश्चात् जब यह सघ गिरनारजी की यात्राके लिए रवाना हुआ तो जूनागढ़के अधिकारी अमीखानने वहुतसी सेनाके साथ आकर सघको विपत्तिमें डाल दिया। परन्तु जैन सघके पुण्यप्रभावसे सारे विघ्न दूर हो गए।

इस तीर्थ मालाके अपूर्ण मिलने से आगेका वर्णन अज्ञात है।

श्रीजिनसिंहसूरिजी को वन्दन किया। यहाँ मेड़ता के संघपति आसकरण के संघके साथ सामिल हो गए। वहाँसे द्रुणाडइ, खाडप, भमराणी, सोवनगिरि, सीणोद्रह, साणइ, सोधोडइ होकर संघ सिरोही पहुचा फाल्गुन चौमासा कर हणाद्रह होकर आबू, अचलगढ़ तीर्थकी यात्रा की। वहाँसे मिलोडइ, दातीवाड़इ, सिद्धपुर के १० मन्दिर, लालपुर मे शान्तिनाथ, महिसाणा, पानसर, कल्लोल, सेरिसा (लोडणपार्श्व), के जिनालयोंका वन्दन करते हुए अहमदाबाद पहुंचा वहाँ १०१ जिनालयों मे चैत्यवंदना कर वहाँके संघके साथ फतैवाग, चावलकइ, होकर शत्रुंजय पहुंचा। चैत सुदि १४ को तलहटी की यात्रा कर चैत्रीपूनम के दिन गिरिराज पर चढ़े। यात्राके अनन्तर श्रीजिनसिंहसूरिजी ने संघपति आसकरण को 'संघपति' पद देकर माला पहिनाई। वहाँसे संघ त्रंबावती मे स्थंभन पार्श्वप्रभु की यात्रा कर मेड़ता लौटा।

बीकानेर के श्रावकों के बनवाए हुए मन्दिर

बीकानेर निवासी श्रावकों ने तीर्थों पर भी बहुत से मन्दिर बनवाये थे। मंत्रीश्वर संग्रामसिंह ने श्री शत्रुंजय महातीर्थ पर मन्दिर बनवाया, इसका उल्लेख कर्मचन्द्र-मंत्रि-वंश-प्रबन्ध के २५१ वें श्लोकमे है। इसी प्रकार मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र द्वारा शत्रुंजय और मथुरा में जीर्णोद्धार करवाने का श्लोक ३१३ में और श्लोक ३१७ में शत्रुंजय, गिरनार पर नये मंदिर बनवाने के लिए द्रव्य भेजने का उल्लेख है। फलौधी में श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजी के स्तूप बनवाने का उल्लेख ३२७ वें श्लोकमें आता है। मंत्रीश्वर ने दादासाहब के चरण एवं स्तूप मंदिर कई स्थानोंमे बनवाए थे जिनमें अमरसर, सागानेर, सधरनगर, तोसाम, गुरुमुकुट, राणीसर-फलौदी मे दादासाहब के चरण स्थापित करने का और पाटण में मंत्रीश्वर की प्रेरणा से दादासाहब के चरण स्थापित करने का उल्लेख पाया जाता है। फलौदी, अमरसर, पाटण और सागानेर के चरणों के लेख इस प्रकार है—

"सं० १६४४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सोमवासरे फलवर्द्धिनगर्यां श्रीजिनदत्तसूरीणा पादुका मन्त्री संग्राम पुत्रेण मन्त्री कर्मचन्द्रेण सपुत्र परिवारेण श्रेयोर्थं कारापितं"

"सं० १६५३ वर्षे वैशाखाद्य ५ दिने श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणा चरणपादुके कारिते अमरसर वास्तव्य श्रीसंघेन ज्ञाता। मूल स्वूत प्रारेत कप्ता मंत्री कर्मचंद्रः श्री बोम्लः मेचः षंडि श्रांनियाश्च सोण सानं महद्य चेष्ठितम् युगे अक्षेः" *

"स्वस्ति श्री संवत् १६५३ मार्गशीर्ष सित नवमी दिने शुभवासरे। श्री मन्मंत्रिमुकुटोपमान मंत्रि कर्मचन्द्र प्रेरित श्री पत्तन सत्क समस्त श्रीसंघेन कारिता श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां स्तूप प्रतिष्ठितं विजयमान गुरु युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः वंद्यमान पूज्यमान सदा कुशल उदय-कारी भवतु श्रीसंघाय ॥छ॥"

---

*यह लेख गौरीशङ्करसिंह चन्देल ने चांदके सितम्बर १९३५ के अङ्कमें प्रकाशित किया था। तदनुसार यहाँ उद्धृत किया गया है, लेख बहुत अशुद्ध है।

जिनालयों को वन्दन किया। वहां से आसाढ़में २, ब्रह्मापुर १ गोल १ जिनालय के दर्शन कर आबू तीर्थ व अचलगढ़की यात्रा की। वहां से प्रयाणकर ज्येष्ठ सुदि ६ को ओसियां में महावीर भगवान, ज्येष्ठ सुदि १३ को रोह ग्राम में श्री जिनदत्तसूरि स्तूपके दर्शन किये एवं ज्येष्ठ सुदि १५ को स्वधर्मीवात्सल्य करके भीदासर होकर संघ बीकानेर पहुँचा।

इसी प्रकार सं० १६५० में छिंग गोत्रीय संघपति सतीदासने संघ निकाला ज्ञात होता है पर उसके संबन्ध में विशेष जानकारी के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं है। संघपति सतीदासने शत्रुंजय पर्वत पर मूलमन्दिरकी द्वितीय प्रदक्षिणा में जैन मन्दिर बनवाया था जिसका उल्लेख आध्यात्मज्ञानी श्रीमद् देवचन्द्रजीने अपनी शत्रुंजय चैत्य परिपाटीमें इस प्रकार किया है—

"त्रीजी वीजी वार प्रदक्षिणा सघली चैत्य करो जिन वन्दना।
बीकानेरी सतीदास नो चैत्य अति उत्तंग सुवासनो।
आसने चैत्ये पंच जिनवर मूलनायक सोहणा।
तेवीस मुद्रा सिद्धगोनी भविक मन पडिबोहणा।"

इन सतीदासने गिरिराजकी तलहटी में यात्रियोंके आराम के लिए एक सुन्दर वापी बनवाई थी कि 'सतीवाव'[1] नामसे प्रसिद्ध है जिसका शिलालेख इस प्रकार है —

"संवत् १६५० वर्षे। सनि इलाही ४४॥ प्रमास पूर्णिमा दिने सुलन सिरकार सोरठपथि साहे श्री अकबर दे विजयि राज्ये जागीरदार राष्ट्रकूट कुलकुमुद दिवाकर महाराजाधिराज महा राज श्री श्री श्रीरायसिंहजी नरमणि विजयमान तदधिकारि उदा (?) मुख्य कवास श्री तेजाजी उत्कृष्ट धुराधरधरा श्री जलालदीन श्री अकबरशाहि प्रदत्त युगप्रधान पदधारक आषाढाष्टाह्निका सकल सत्त्व निकर मारि निवारक संवत्सरावधि स्तंभ तीर्थीय जलनिधि जलचर जीव जाल मोचक पंचनदी साधकः श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्रीजिनमाणिक्यसूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि चरणकमल सेवक विक्रमपुर वास्तव्य॥ छिंगगोत्रीय सा। खेतसी पुत्ररत्न संघ पति सतीदास सुश्रावकेण भ्रात लखमीदास पु० सं० सूरदासादि परिवार समन्वितेन श्री शत्रुंजय तीर्थे तलहट्टिकायां तीर्थ भक्ति निमित्तं यात्रा गतःसकलमीसदो (?) पकारायच। सतीवापीत्य भिधान वापीरत्नकारित ऊमरठाहीमाला सोहक (?)

कविवर समयसुन्दरके शिष्य वादी हर्षनन्दनकृत शत्रुंजय संघयात्रा स्तवन से विदित होता है कि संवत् १६७१ फाल्गुण कृष्णा २ को श्री बीकानेर से संघ निकला था जिसने प्रथम प्रयाण में देसनोक फिर पारवा, साकुर, खीमसर जाकर वर्द्धमानस्तंभ की यात्रा की। वहांसे पावकी में प्राचीन रूपममूर्ति को वन्दन कर पंचाणी, जोधपुर, होकर गुढा आया वहां

[1] शत्रुंजय तीर्थ सम्बन्धी सतीवाव इसके निर्माता अहमदाबादके सुप्रसिद्ध सेठ शांतिदासको लिखा है पर हमने इस प्रतिहासिक भ्रमका निराकरण अपने "सतीवाव सम्बन्धी गम्भीर भूल" (प्रकाशित जैन वर्ष १५) लेख में कर दिया है।

श्रीजिनसिंहसूरिजी को वन्दन किया। यहाँ मेडता के संघपति आसकरण के संघके साथ सामिल हो गए। वहाँसे दुणाडइ, खाडप, भमराणी, सोवनगिरि, सीणोद्रह, साणइ, सोधोडइ होकर संघ सिरोही पहुंचा फाल्गुन चौमासा कर हणाद्रह होकर आबू, अचलगढ़ तीर्थकी यात्रा की। वहाँसे मिलोडइ, दातीवाड़इ, सिद्धपुर के १० मन्दिर, लालपुर में शान्तिनाथ, महिसाणा, पानसर, कल्लोल, सेरिसा (लोडणपार्श्व), के जिनालयोंका वन्दन करते हुए अहमदावाद पहुंचा वहाँ १०१ जिनालयों मे चैत्यवदना कर वहाँके संघके साथ फतैबाग, चावलकइ, होकर शत्रुजय पहुंचा। चैत सुदि १४ को तलहटी की यात्रा कर चैत्रीपूनम के दिन गिरिराज पर चढ़े। यात्राके अनन्तर श्रीजिनसिंहसूरिजी ने संघपति आसकरण को 'संघपति' पद देकर माला पहिनाई। वहाँसे संघ त्रंबावती में स्थंभन पार्श्वप्रभु की यात्रा कर मेड़ता लौटा।

बीकानेर के श्रावकों के बनवाए हुए मन्दिर

बीकानेर निवासी श्रावकों ने तीर्थों पर भी बहुत से मन्दिर बनवाये थे। मंत्रीश्वर संग्रामसिंह ने श्री शत्रुजय महातीर्थ पर मन्दिर बनवाया, इसका उल्लेख कर्मचन्द्र-मंत्रि-वंश-प्रबन्ध के २५१ वें श्लोकमे है। इसी प्रकार मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र द्वारा शत्रुजय और मथुरा मे जीर्णोद्धार करवाने का श्लोक ३१३ में और श्लोक ३१७ मे शत्रुजय, गिरनार पर नये मंदिर बनवाने के लिए द्रव्य भेजने का उल्लेख है। फलोधी में श्रीजिनदत्तसूरिजी और श्रीजिनकुशलसूरिजी के स्तूप बनवाने का उल्लेख ३२७ वें श्लोकमें आता है। मंत्रीश्वर ने दादासाहब के चरण एवं स्तूप मंदिर कई स्थानोंमे बनवाए थे जिनमें अमरसर, सागानेर, सधरनगर, तोसाम, गुरुमुकुट, राणीसर-फलौदी मे दादासाहब के चरण स्थापित करने का और पाटण मे मंत्रीश्वर की प्रेरणा से दादासाहब के चरण स्थापित करने का उल्लेख पाया जाता है। फलौदी, अमरसर, पाटण और सागानेर के चरणों के लेख इस प्रकार हैं—

"सं० १६४४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने सोमवासरे फलवर्द्धिनगर्यां श्रीजिनदत्तसूरीणा पादुका मन्त्री संग्राम पुत्रेण मन्त्री कर्मचन्द्रेण सपुत्र परिवारेण श्रेयोर्थं कारापितं"

"सं० १६५३ वर्षे वैशाखाद्य ५ दिने श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणा चरणपादुके कारिते अमरसर वास्तव्य श्रीसंघेन ज्ञाता। मूल स्थूत प्रारेत कप्ता मंत्री कर्मचंद्रः श्री बोम्लः मेचः षंडि श्रानियाश्च सोण सानं महद्य चेष्ठितम् युगे अक्षे:" *

"स्वस्ति श्री संवत् १६५३ मार्गशीर्ष सित नवमी दिने शुभवासरे। श्री मन्मंत्रिमुकुटोपमान मंत्रि कर्मचन्द्र प्रेरित श्री पत्तन सत्क समस्त श्रीसंघेन कारिता श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणा स्तूप प्रतिष्ठितं विजयमान गुरु युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः वंद्यमान पूज्यमान सदा कुशल उदय-कारी भवतु श्रीसंघाय ॥छ॥"

---

*यह लेख गौरीशङ्करसिंह चन्देल ने चादके सितम्बर १९३५ के अङ्कमें प्रकाशित किया था। तदनुसार यहाँ उद्धृत किया गया है, लेख बहुत अशुद्ध है।

"सं० १६५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदी द्वादशी दिने शनिवारे श्री श्यामपुरे श्रीमानिसिंह विजयराज्ये खरतर गच्छे युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये महामंत्रिणा कर्मचन्द्रेण श्रीसंघेनापि श्रीजिनकुशलसूरि पादुका कारित प्रतिष्ठित वाचनाचार्य श्रीयशःकुशलैश्चसर्व संघस्य कल्याणाय भवतु शुभं"

इनके अतिरिक्त शत्रुंजय पर बोथरा मन्त्री समरथ ने आदीश्वर बिम्ब बनवा के नेमिनाथ चौरीके ऊपर प्रतिष्ठित कराया। उसकी प्रतिष्ठा युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजी ने की थी। एवं सं० १८८२ फागुन वदि १० को वेद भगनीराम ने श्री आदिनाथ पादुका बनवा कर श्रीजिनहर्षसूरिजी द्वारा खरतरवसहीमें प्रतिष्ठित की*। सं० १६०० में श्री सम्मेतशिखर तीर्थ पर बीकानेर संघ कारित जिन मन्दिर की प्रतिष्ठा श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी ने अष्टाह्निका-महोत्सव पूर्वक की, ऐसा खरतरगच्छ पट्टावली में उल्लेख है।

सं० १६ ४ में शत्रुंजय महातीर्थ पर विमलवसही (मोटी टुक) के बाह्य मण्डपमें दादासाहब श्रीजिनदत्तसूरिजी, श्रीजिनकुशलसूरिजी और श्रीरत्नप्रभसूरिजी की छतरियां बीकानेर के श्रेष्ठिगोत्रीय वैद मुंहता सं० सोना पुत्र मन्ना, भगवान पुत्र ठाकुरसी के पुत्र सं० सांवल ने बनवाई और ज्येष्ठ सुदि ११ रविवार को नं० १ २ खरतर गच्छनायक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजी से और नं० ३ उपकेश गच्छाचार्य श्रीसिद्धसूरिजी द्वारा प्रतिष्ठित करवाई। जिनमें से एक लेख हमारे "युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि" के वक्तव्य पृ० २६ में छपा है।

बीकानेर के जैन-संघ की तपस्वियों की भक्ति, तपाराधना, सूत्र भक्ति एवं पौषधादि धार्मिक अनुष्ठानों में कितना अधिक अनुराग था इसका परिचय तत्कालीन पर्यूषणा समाचार पत्रों से ज्ञात होता है। हमारे संग्रह के ऐसे पत्रों में से उदाहरणार्थ दो पत्रों में से १ की पूरी नकल दूसरेका आवश्यक अंश यहां उद्धृत किया जाता है। पाठकों को सहज ही इससे उस समय की जनसंख्या और उनकी धार्मिकता का अनुमान हो जायगा।

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री आदिनाथो धृत चरण रयराशांति देवाधिदेव । नेमि पार्श्वश्च वीरस्सकल भय हरो नष्ट कष्ट प्रचार । एतान्यर्चापि देवान्नभिक भयरान्भूरि भावेन नत्वा। श्रेयोलेख लिख सकल समाचार वानाय दर्श ॥ १ ॥ श्रीमतो विक्रमपुरात् भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरिवरा व० श्री भावप्रमोद गणि व० श्री विनयप्रमोद गणि वाचनाचार्य रूपहर्षगणि, वाचनाचार्य कल्याणहर्ष गणि पंडित साधुनिधान वाचनाचार्य क्षमालाभ गणि पं० विद्यालाभ पं० विनयलाभ पं० जयचन्द्र पं० कीर्तिसागर पं० उदयसागर पं० भावसागर प० ज्ञानसागर पं० क्षमासमुद्र पं भक्तिविमल पं० सुमतिविमल पं० दयासेन पं० मुनिसौभाग्य चिरं पद्मतिलक प्रमुख साधु २५ साध्वी २७ सपरिकरा श्री नगर यत्र नगरे श्री राजसभा शृंगारक श्री देवगुरु भक्तिकारक

---

* सच्चुका के इन दोनों लेखों की नकल हमारे पास है।

श्री जिनाज्ञा प्रतिपालक श्रीदीन जनोद्धारक श्री जीवदया प्रतिपालक श्री जीवाजीवादि नवतत्त्व विचारक सम्यक्त्वमूल स्थूल द्वादशव्रत धारक श्री पंच (पर) मेष्टि महामंत्र स्मारक सुश्रावक पुण्य प्रभावक संघ मुख्य स श्री समस्त लघु वृद्ध श्री संघ योग्यं सदा धर्मलाभ पूर्वक समादिशंति श्रेयोत्र धर्म्मोपदेशोयथा। धन्नाते जिय लोए गुरु वयणं जे करंति पच्चक्खं। धन्नाणविते धन्ना कुणंति देसतर गयाण॥१॥ इत्यादि धर्म्मोपदेश जाणी चित्त नइ विपे विवेक आणी धर्म्मोद्यम करता लाभ छै॥ तथा प्रथम चौमास करी· मध्ये अत्र थी विहार करता हुता पर श्री संघइ अनइ को० श्री जिणदासजी श्री नयणसी जी घणउ आदर करी बीजी चउमास राख्या॥ हिवइ अत्र सुखइ रहता साधानइ तप प्रमुख करावता श्री जिनालय स्नात्र पूजा अनुमोदता श्री भगवतीसूत्र वृत्ति खणइ वाचता श्री संघनइ धर्म नइ विषइ प्रवर्त्तावता सर्व पर्व राजाधिराज श्री पर्यूषणापर्व आया तत्रोपन्न विवेकातिरेक च्छेक गोलवच्छा साह नयणसी श्री संघ समक्ष क्षमाश्रमण पूर्वक श्री कल्प पुस्तक आपणइ घरे ले जाई रात्रि जागरण करावी प्रभातइ महामहोत्सवइ गजारूढ़ करी अम्हनइ आणी दीधउ। अम्हेपिण नव वाचनायइ स प्रभावनायइ वाच्यउ। तत्र दानाधिकारे आषाढ चौमासा ना पोसहता ८५१ नइ को० भगवानदास नालेर दीया श्रावण वदि १४ ना पोसहता २२५ नइ म० उत्तमचंद नालेर दिया। श्रावण सुदि १४ ना पोसहता ३४२ नइ फलवधिये रामचन्द नालेर दिया। भाद्रवावदि ८ पोसहता ४२५ नइ पा० कपूरचन्द नालेर दिया। अठाइना उपवासीता ५२५ नइ बो० नयणसी नालेर दिया। कल्पनापोसहता ११५१ नइ सा० रायमल्ल नालेर दिया। पोसहीता उपवासीता १२१३ नइ मा० अमृत नालेर दिया बेलाइता ३२५ नइं पाचे श्रावके नालेर दीया तेलाइता २०५ नइ तीने श्रावके नालेर दिया। सवत्सरी ना पोसहता १५५१ नइ पुस्तकग्राही गो० नयणसी मोदके भक्ति कीधी। पाखी सर्व चालइ छइ बीजा ही दान पुण्य घणा थया शील पिण घणे पाल्यउ। तपोऽधिकारे साध्वी अमोला छम्मासी तप १ कीधउ। मासक्षमण ७। पक्षक्षमण १५। अट्ठाइ ४२। छट्ठ अट्ठम घणाथया भावना पिण भावी। इत्यादि पर्वाराधन स्वरूपजाणी अनुमोदिज्यो आपणाजणावेज्यो तथा श्री सघ मोटा श्रावक छउ गुरु गच्छना अंतरंग रागी छउ श्री खरतर गच्छनी मर्यादा ना राखणहार छउ जेहवी धर्म सामग्री चलावउ छउ तिण थी विशेष पणइ चलावेज्यो प्रस्तावइ कागल समाचार देज्यो सवत् १७२८ वर्षे मगसिर सुदि १० शुक्रवासरे॥ श्रीरस्तुः॥ श्री

उपाध्यायाजी रो धर्मलाभ वाचज्यो श्री भावप्रमोद रो धर्म्मलाभ जाणेज्यो। तथा भोजिग शिवदास वाराइत छै सखर छइ आपणाइत इण सेती घणी राखेज्यो।

इसी प्रकार सं० १७७६ के भाद्रवा सुदि १४ को बीकानेर से श्री जिनसुखसूरिजीने फलौदी के संघ को पत्र दिया इसमे यहा के श्रावकोके धर्म कृत्यका निम्नोक्त वर्णन है :—

"हिवै अत्र ठाणै २१ साधु साध्वी १६ सुखै रहतां श्री संघने धर्मकरणी नै विषै प्रवर्त्तावता श्रीजिनालयै स्नात्रपूजा अनुमोदता श्री पन्नवणा सटीक प्रभाते वखाणे वाचता श्रीपर्यूषण पर्व आव्यातत्रोत्पन्न विवेकातिरेक च्छेक छाजहड़ साह कपूरचन्दै श्रीसंघ समक्षै क्षमाश्रमणपूर्वक

श्रीकल्प पुस्तक आपणे घरे छ आई रात्रि जागरणादि करी प्रभाते घणे आडम्बर करी अम्हने आमी दीधो। अम्ह पिणमी संघ समक्षे १३ वाचनायें सम्यग्भावनायें वाच्यो अत्र दानाधिकार श्री आषाढ़ चौमासी थी मांडी सर्व पाखी तथा आठमि रा पोसीहा उपवासीता १५१५२१५ थाये तिणां सब ने नालेर तथा पिणी खांडरी भक्ति कीधी श्री संवत्सरी रा पोसीहता १२५१ थया तिणाने पुस्तकमाहीये मोदके भक्ति कीधी। संवत्सरीदान पा० अर्जनजी गा० धर्मसीये जूआ जूआ नालेर दीधा पड़िकमीया मनुष्य ४५१ थया बीजाही दान पुण्य विशेषे भला थया"

ये दोनों पत्र खरतर गच्छीय भट्टारक शाखाके श्रीपूज्यों के हैं अत इसमें उल्लिखित धर्मानुष्ठान केवल उन्हींके आज्ञानुयायी संघका ही समझना चाहिये इनके अतिरिक्त बीकानेर में जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है खरतर आचार्यशाखा उपकेशगच्छ, लौंकागच्छ, पार्श्वचन्द्र गच्छ और तपागच्छके संघका धर्मानुष्ठान इससे अतिरिक्त समझना चाहिए। कमसे कम इस सभी गच्छोंका भट्टारक शाखाके समकक्ष मानें तो भी सं० १७२८ में पौषध करनेवालों की संख्या ३००० से ऊपर हो जाती है। इससे सांवत्सरिक प्रतिक्रमणादि करनेवालों की संख्या ८-१० गुनी तो अवश्य ही होगी अत उससमय यहां जैनोंकी संख्या बहुत अधिक सिद्ध होती है।

आचार्य पदोत्सवादि

बीकानेर के धर्मानुरागी श्रावकोंने अवसर पाकर गुरुभक्ति में भी अपना सद् द्रव्य-व्यय करने में कसर नहीं रखी। उन्होंने आचार्यों के पदोत्सव, चातुर्मास कराने प्रवेशोत्सव आदि विविध प्रकारके गुरुओं की सेवा एव बहुमानमें लाखों करोड़ों रुपये खर्च किये हैं जिन पर थोड़ी सी बहुती नजर यहां डाली जा रही है।

कर्मचन्द्र वंश प्रबन्धमें लिखा है कि श्रीजिनसमुद्रसूरिजीके पट्टपर श्रीजिनहंससूरिजीको श्री शान्तिसागरसूरिजीके हाथसे आचार्यपद दिलाया। सं० १५५५ ज्येष्ठ शुक्ला ६ को यह उत्सव मन्त्रीश्वर कर्मसिंहने एक लाख रुपया व्यय करके किया। सं० १६१३ मिती चैत्र वदि ७ को मंत्रीश्वर संग्रामसिंह बच्छावतने युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका क्रियोद्धारोत्सव बड़े समारोहसे प्रचुर द्रव्य व्यय कर किया।

सं० १६४९ में युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजीका चातुर्मास लाहोरमें सम्राट अकबरके आमन्त्रण से हुआ। सम्राटने सूरिमहाराजको "युगप्रधान" पद और उनके प्रधान शिष्य वा० महिमराजजीको आचार्य पद देकर उनका नाम श्रीजिनसिंहसूरि रखनेका निर्देश किया और मन्त्रीश्वरको आज्ञा दी कि जैन विधिके अनुसार इस महोत्सवको बड़े समारोहसे संपन्न करो। सम्राटकी आज्ञा पाकर मन्त्रीश्वर बीकानेर नरेश महाराजा रायसिंहजीसे मिले। उनकी सम्मति और जैन संघकी आज्ञा लेकर महोत्सवकी तैयारियां करने लगे। मिती फाल्गुन वदि १० से अष्टान्हिका महोत्सव मनाया गया। रात्रि जागरणमें धार्मिक गीत गाये गए। मन्त्रीश्वर

श्री जिनेश्वरसूरिजी (द्वितीय)
लेखाङ्क १४२–४५ के प्रतिष्ठापक
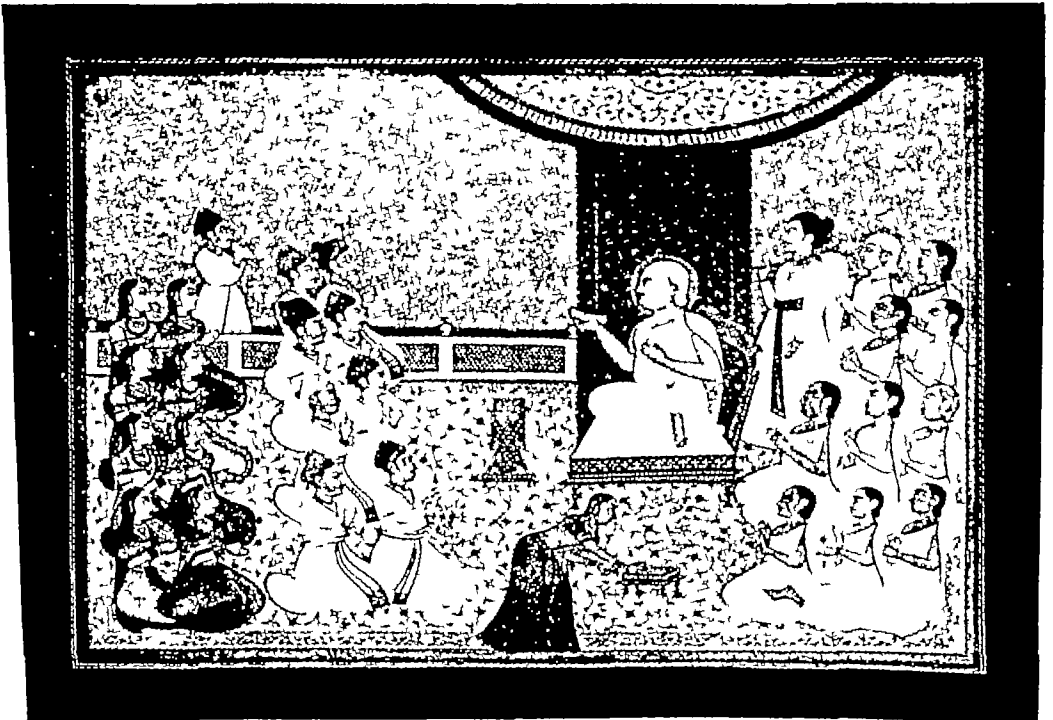
श्री जिनलाभसूरिजी
(प० प्र० पृ० ८

सं १६८१ में शाही चित्रकार शालिवाहन चित्रित
श्री जिनराजसूरिजी
(श्री नरेन्द्रसिंहजी सिंघी के सौजन्य से)
(परिचय पृ ८१ प्र)
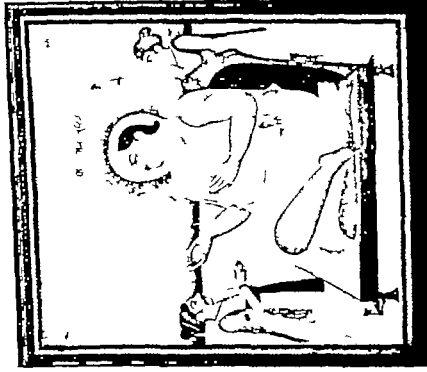
श्री जिनभक्तिसूरिजी
(परिचय पृ ८५ प्र)

ने समस्त साधर्मियोंके घर पुगीफल, १ सेर मिश्री और सुरंगी चुनडिये भेजीं। मिति फाल्गुन शुक्ला २ को युगप्रधान पद और आचार्य पदोत्सवके साथ वा० जयसोम और रत्ननिधानको उपाध्यायपद, पं० गुणविनय व समयसुन्दरको वाचनाचार्य पदसे अलंकृत किया गया। इस समय संखवाल गोत्रीय साधुदेव कारित उपाश्रयको ध्वजा, पताका और मोतियोंसे जड़े हुए चन्द्रवे पूठियोंसे सजाया गया। जनताकी अपार भीड़ आनन्दके हिलोरे लेने लगी। इस उत्सवमे मन्त्रीश्वरने अपने द्रव्यका व्यय करने में कोई कसर न रखी। जिसने जो मागा वही वस्तु देकर प्रसन्न किया गया। इस उत्सवमे मन्त्रीश्वरके ६ हाथी, ५०० घोड़े ६ ग्राम और सवाक्रोड रुपये का दान देनेका उल्लेख सं० १६५० में रचित कर्मचन्द्र मंत्रिवंश प्रबन्ध, सं० १६५४ मे रचित भोजचरित्र चौपाई व जयसोम उपाध्याय कृत प्रश्नोत्तर ग्रन्थ में है, विशेष जाननेके लिए हमारी "युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि" पुस्तक देखना चाहिए।

सं० १६२३ मिगसर बदि ५ को श्री जिनसिंहसूरिजी की बीकानेर मे दीक्षा हुई उस समय दीक्षा महोत्सव मुं० करमचन्द भाडाणी ने किया। सं० १८६२ मिगसर सुदि ७ गुरुवार को श्री जिनसौभाग्यसूरिजी का पदोत्सव खजाञ्ची साह लालचन्द सालिमसिंह ने किया। सं० १६१७ के फागुण बदि ५ को श्रीजिनहंससूरिजी का दीक्षा-महोत्सव चोपडा-कोठारी गेवरचन्द ने किया। सं० १६१७ मे फागुण बदि ११ को बीकानेर मे श्रीजिनहंससूरिजी का पदोत्सव वच्छावत अमरचन्द आदिने किया। इसी प्रकार सं० १६५६ काती बदि ५ को श्री जिनकीर्ति-सूरिजी का और सं० १६६७ माघ कृष्णा ५ को श्रीजिनचारित्रसूरिजी का नंदि-महोत्सव बीकानेर संघने किया था। वर्त्तमान श्रीपूज्य श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिजी का पदोत्सव भी बीकानेर सघने किया।

ऊपर केवल खरतरगच्छ कीं भट्टारक शाखा के पदोत्सवादि का ही उल्लेख किया है। अब क्रमशः खरतराचार्य शाखा, कंवला गच्छ, पायचन्दगच्छ और लौंकागच्छ के कुछ उल्लेखनीय उत्सवोंका वर्णन दिया जा रहा है।

खरतराचार्यशाखा—सं० १६७६ के लगभग श्री जिनसागरसूरिजी के बीकानेर पधारने पर पासाणी ने प्रवेशोत्सव किया। श्री जिनधर्मसूरिजी का भट्टारक पद महोत्सव गोलछा अचलदास ने सं० १७२० मे किया। इनके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसुरिजी के पदोत्सव के समय बीकानेर संघने लूणकरणसर जाकर लाहण की और उन्हें आग्रहपूर्वक बीकानेर बुलाकर डागा परमानन्द ने प्रवेशोत्सव किया। गोलछा रहिदास ने समस्त खरतरगच्छ मे साधर्मीवात्सलय कर नारियल दिये। कचराणी गोलछाने खाड बाँटी। सं० १७६४ मे श्री जिनविजयसूरिजी का भट्टारक पदोत्सव पुंजाणी डागा ने किया और फूलाबाई ने प्रभावना की। श्री जिनयुक्तिसूरिजी का पदोत्सव सं० १८१६ मे गोलछो ने किया। सं० १८६७ मे श्री जिनहेमसूरिजी का भट्टारक पदोत्सव डागा सूरतरामजी ने किया।

कँवलागच्छ—इस गच्छके आचार्य श्री सिद्धसूरिजी का पदोत्सव श्रेष्ठि गोत्रीय मुहताठाकुरसी ने स० १६५५ चैत्र सुदि १३ को किया। इनके पट्टधर श्रीकक्कसूरिजी का पदोत्सव भी

मं० ठाकुरसी के पुत्र म० सावल ने सं० १६८६ फागुण सुदि ३ को किया। इनके पट्टपर देवगुप्त सूरि का पदोत्सव सं० १७२० मिगसर सुदि ३ को म० ईश्वरदास न किया। श्री सिद्धसूरि का पदोत्सव स० १७१७ मि० सु० १० को म० सख्तसिंह न किया। कक्कसूरिजी का पदोत्सव सं० १७८३ आषाढ़ वदि १३ मं० दौलतराम ने किया। देवगुप्तसूरिजी का भी उपर्युक्त म० दौलतरामजी ने सं० १८०० में किया। सिद्धसूरिजी का पदोत्सव मु० खुशालचन्द्र ने सं० १८४७ माघ सुदि १० को, कक्कसूरिजी का मु० ठाकुरसुत सरदारसिंह ने सं० १८६१ मिति चैत सुदि ८ को किया। एवं श्रीसिद्धसूरिजी का पदोत्सव महाराव हरिसिंहजी ने सं० १६१५ माघ वदि ११ को किया।

पायचन्दगच्छ—इस गच्छ के आचार्य मुनिचन्द्रसूरि का पदोत्सव सं० १७४४ में श्री नेमिचन्द्रसूरि की दीक्षा सं० १७४०, कनकचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १७६३ माघ सुदि १४ और भट्टारकपद सं० १७६७ आषाढ़ सुदि २, शिवचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं०१८१० माघ वदि ६, भट्टारकपद सं० १८११ माघ सुदि ५ भानुचन्द्रसूरि की दीक्षा सं० १८१५ माघ सुदि ५, हर्षचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १८८३ काती वदि ७, श्री हेमचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १६१५ में बीकानेर में हुआ था। पर इन पदोत्सव करने वाले श्रावकों के नाम उसकी पट्टावली में नहीं पाये जाते।

लौंकागच्छ—इसके आचार्य कल्याणदासजी की दीक्षा, नेमिदासजी की दीक्षा, और वर्द्धमानजी का प्रवेशोत्सव संवत् १७१० वैशाख सुदि ६ को बीकानेर में बड़े धूमधाम से हुआ। संवत् १७११ में सदारङ्गजी का प्रवेशोत्सव और जीवणदासजी व लक्ष्मीदासजी का प्रवेशोत्सव श्री सुराणा और चोरड़ियों ने बड़े समारोहसे किया।

गुरुवंदनार्थगमन—सं० १६४८ में युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी सम्राट अकबर के आमन्त्रण से लाहौर जाते हुए मार्ग में नागौर पधारे तब यहाँ बीकानेर का संघ आपको वंदन करने को निमित्त ३०० सिजवाले और ४०० प्रवहणों के साथ गया था। वहाँ साधर्मीवात्सल्यादि भक्ति करके वापस आनेका उल्लेख जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास में है।

श्रुतभक्ति

बीकानेर के श्रावकों की देव गुरुभक्ति का कुछ निदर्शन ऊपर किया जा चुका है, अब उनकी श्रुतभक्ति के संबन्ध में दो शब्द लिखे जा रहे हैं। श्रावकों के लिए गुरुओं के पास जाकर आगमादि ग्रन्थोंका श्रवण नित्य आवश्यक कर्तव्य है। सामान्यतया पर्यूषण के दिनोंमें प्रतिवर्ष कल्पसूत्रकेवाचन का महोत्सव यहाँ बड़ी भक्ति पूर्वक किया जाता है। बड़े उपाश्रय से गुरुके पास कल्पसूत्रजी को अपने घर लाकर रात्रिजागरण करके दूसरे दिन राज्य की ओरसे आये हुए हाथी पर सूत्रजी को विराजमान कर वाजित्र और हाथी, घोड़ा, पालकी आदिके साथ बड़े समारोह से उपाश्रय में लाकर सूत्र श्रवण करते हैं। इस प्रसंग के लिए १३ गुवाड़ में क्रमशः प्रत्येक गुवाड़ की वारी निश्चित की हुई है।

कल्पसूत्र के अतिरिक्त भगवतीसूत्र श्रवण का उत्सव भी जैन समाज मे प्रसिद्ध है। मूल जैनागमों में यह सबसे बडा और गम्भीर आगम ग्रन्थ है। इसके सफल वाचक और रहस्य अवगाहक श्रोता थोड़े होनेके कारण इसकी वाचना का सुअवसर वर्षोंसे आता है। इस सूत्रको बहुमान के साथ सुना जाता है और इसकी भक्तिमें मोतियों का स्वस्तिक, प्रतिदिन रौप्य मुद्रा, मुक्ता आदिकी भेंट व धूप दीपादि किया जाता है। इस सूत्रमे ३६००० प्रश्न एवं उनके उत्तर आते है। प्रत्येक उत्तर-गोयमा। नामके सम्बोधन के साथ १-१ मोती चढाते हुए मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र ने ३६००० मोतियोंकी भेंट पूर्वक युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजी से भगवतीसूत्र श्रवण किया था। उन मोतियों में से १६७०० मातियों का चन्द्रवा, ११६०० का पूठिया बनवाया गया अवशेष पूठा, ठवणी, साज, बीटागणा इत्यादि मे लगवाए गए पर अब वे पूठिया, चन्द्रवा आदि नहीं रहे।

मुद्रण युगसे पूर्व जैन श्रावकोंने कल्पसूत्रादि ग्रन्थोंको बड़े सुन्दर सुवाच्य अक्षरों में सुवर्णाक्षरी, रौप्याक्षरी एव कलापूर्ण चित्रों सह लिखानेमे प्रचुर द्रव्य व्यय किया है। बीकानेरके श्रावकों ने भी इस श्रुत भक्तिके कार्यमे अपना सद् द्रव्य व्यय किया था जिनमें से मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र के लिखवाये हुए अत्यन्त मनोहर बेल बूटे एवं चित्रोंवाले कल्पसूत्र की प्रतिका थोड़े वर्ष पूर्व जयपुर में बिकने का सुना गया है। सुगनजी के उपाश्रय मे स्वर्णाक्षरी कल्पसूत्र की प्रति बीकानेर के वैद करणीदान (गिरधर पुत्र) के धर्मविशालजी के उपदेश से लिखवाई हुई एव स० १८६२ मे क्षमाकल्याणजी के उपदेश से पारख जीतमल ने माताके साथ लिखवाई सचित्र कल्पसूत्रकी प्रति विद्यमान है। खोज करने पर अन्य भी विशिष्ट प्रतिएँ बीकानेर के श्रावकों के लिखवाई हुई पाई जा सकती है।

वच्छावत वंशके विशेष धर्म-कृत्य

वच्छावत वंश बीकानेर के ओसवालों मे धर्म कार्योंमें प्रारम्भ से ही सबसे आगे था। इस वशके कतिपय धर्म कार्योंका उल्लेख आगे किया जा चुका है अवशेष कार्योंका कर्मचन्द्र मंत्रि वश प्रबन्ध के अनुसार संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :—

बीकानेर राज्यके स्थापक रावबीकाजी के साथ मत्री वत्सराज आए थे, उन्होंने देरावर से सपरिवार कुशलसूरिजी के स्तूपकी यात्रा की। योगाके पुत्र पचानन आदि की ओरसे कर्मचन्द्र वंश प्रबन्ध के निर्माण तक चौवीसटाजी के मन्दिर के ऊपर ध्वजारोपण हुआ करता था। मन्त्री वरसिंह ने दुष्काल के समय दीन और अनाथों के लिए दानशाला खोली। मन्त्री संग्रामसिंह ने याचकों को अन्न, वस्त्र, स्वर्ण इत्यादि देकर कीर्त्ति प्राप्त की। विद्याभिलाषी मुनियोंको न्यायशास्त्र वेत्ता विद्वानो से पढाने मे प्रचुर द्रव्य व्यय किया। इन्होने दुर्भिक्ष के समय दानशाला भी खोली और माताकी पुण्य-वृद्धिके लिए २४ वार चादीके रुपयो की लाहण की। हाजीखा और हसनकुलीखा से सन्धि कर अपने राज्यके जैनमन्दिर व साधर्मियोके साथ जनसाधारण की रक्षा

म० ठाकुरसी के पुत्र म० सांवल ने स० १६८६ फागुण सुदि ३ को किया। इनके पट्टधर देवगुप्त सूरि का पदोत्सव सं० १७२७ मिगसर सुदि ३ को मं० ईश्वरदास ने किया। श्री सिद्धसूरि का पदोत्सव स० १७१७ मि० सु० १० को मं० सरूपसिंह ने किया। कक्कसूरिजी का पदोत्सव सं० १७८३ आषाढ़ वदि १३ मं० दौलतराम ने किया। देवगुप्तसूरिजी का भी उपर्युक्त म० दौलतरामजी ने सं० १८०७ में किया। सिद्धसूरिजी का पदोत्सव मु० खुशालचन्द्र ने सं० १८४७ माघ सुदि १० को, कक्कसूरिजी का मुं० ठाकुरसुत सरदारसिंह ने सं० १८६१ मिति चैत सुदि ८ को किया। एवं श्रीसिद्धसूरिजी का पदोत्सव महाराज हरिसिंहजी ने सं० १६१५ माघ वदि ११ को किया।

पायचन्दगच्छ—इस गच्छ के आचार्य मुनिचन्द्रसूरि का पदोत्सव सं० १७४४ में श्री नेमिचन्द्रसूरि की दीक्षा सं० १७४०, कनकचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १७६६ माघ सुदि १४ और भट्टारकपद सं० १७६७ आषाढ सुदि २, शिवचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं०१८१० माघ वदि ६, भट्टारकपद सं० १८११ माघ सुदि ५ भानुचन्द्रसूरि की दीक्षा सं० १८१५ माघ सुदि ७, हर्षचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १८८३ काती वदि ७, श्री हेमचन्द्रसूरि का आचार्यपद सं० १६१५ में बीकानेर में हुआ था। पर इन पदोत्सव करने वाले श्रावकों के नाम उसकी पट्टावली में नहीं पाये जाते।

लोंकागच्छ—इनके आचार्य कल्याणदासजी की दीक्षा, नेमिदासजी की दीक्षा, और वर्द्धमानजी का प्रवेशोत्सव संवत् १७१० वैशाख सुदि १ को बीकानेर में बड़े धूमधाम से हुआ। संवत् १७१६ में सदारङ्गजी का प्रवेशोत्सव और जीवणदासजी व लक्ष्मीदासजी का प्रवेशोत्सव भी सुराणा और कोरड़ियों ने बड़े समारोहसे किया।

गुरुवंदनार्थगमन—सं० १६४८ में युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी सम्राट अकबर के आमन्त्रण से लाहोर जाते हुए मार्ग में नागोर पधारे तब यहाँ बीकानेर का संघ आपको वंदन करने को निमित्त ३०० सिजवाले और ४०० मसाहणों के साथ गया था। वहाँ साधर्मीवात्सल्यादि भक्ति करके वापस आनेका उल्लेख जिनचन्द्रसूरि अकबर प्रतिबोध रास में है।

श्रुतभक्ति

बीकानेर के श्रावकों की देव गुरुभक्ति का कुछ निदर्शन ऊपर किया जा चुका है, अब उनकी श्रुतभक्ति के संबन्ध में दो शब्द लिखे जा रहे हैं। श्रावकों के लिए गुरुओं के पास जाकर आगमादि ग्रन्थोंका श्रवण नित्य आवश्यक कर्तव्य है। सामान्यतया पर्यूषण के दिनोंमें प्रतिवर्ष कल्पसूत्रवाचन का महोत्सव यहाँ बड़ी भक्ति पूर्वक किया जाता है। वे उपाश्रय से गुरुके पास कल्पसूत्रजी को अपने घर लाकर रात्रिजागरण करके दूसरे दिन राज्य की ओरसे आये हुए हाथी पर सूत्रजी को विराजमान कर वाजिंत्र और हाथी, घोड़ा, पालकी आदिके साथ बड़े समारोह से उपाश्रय में लाकर सूत्र श्रवण करते हैं। इस उत्सव के लिए १३ गुवाड़ में क्रमशः प्रत्येक गुवाड़ की बारी निश्चित की हुई है।

चलते हैं। सरदारशहरमे नथमलजी कोठारी, सुजानगढ में दानचन्दजी चोपडा, आदिके औषधालय चलते है। भीनासरमे श्री बहादुरमलजी और चंपालालजी के दो औषधालय है।

विद्यालय

शिक्षण कार्य मे भी जैनोंका सहयोग उल्लेखनीय है। बीकानेरमें श्रीयुक्त बहादुरमल जसकरण रामपुरियाका कालेज व बोर्डिंग हाउस, केशरीचन्दजी डागाकी धर्मपत्नी इन्द्रबाईके ट्रृष्टसे कन्या पाठशाला, श्री० अगरचन्द भैरू दान सेठियाकी पाठशाला, संस्कृत पाठशाला, रात्रि कालेज, कन्या पाठशाला, जैन श्वे० सघकी ओरसे जैन श्वे० हाईस्कूल व बोर्डिंग हाउस, श्री गोविन्दरामजी भणसाली की कन्या पाठशाला और पायचन्द गच्छकी रात्रि धार्मिक स्कूल चलती है। गंगाशहरमे श्री० भैरू दानजी चोपड़ाकी हाई स्कूल, भीनासरमे श्रीयुक्त चम्पालालजी बाठिया की कन्या पाठशाला, चूरूमे कोठारियों का विद्यालय, श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारणी संस्थाकी ओरसे नोखामंडी, भज्भू, ऊदासर, सारूंडा, नोखामें प्रारम्भिक शिक्षण शालाएं चल रही है। और भी बीकानेर रियासतके कितने ही स्थानोंमे ओसवालोंकी स्कूलें व व्यायामशालाएं आदि संघ व व्यक्तिगत रूपसे चल रही हैं।

बीकानेर के दीक्षित महापुरुष

बीकानेरके श्रावकों एवं श्राविकाओमे से सैकडों भव्यात्माओंने सर्वविरति एवं देशविरति चारित्रको स्वीकार कर अपने जीवनको सफल बनाया उनमे से कई मुनिगण बड़े ही प्रकाण्ड विद्वान, क्रियापात्र, योगी एवं धर्म प्रचारक हुए है। श्रीमद् देवचन्द्रजी जैसे अध्यात्म तत्त्वानुभवी, श्रीमद् ज्ञानसारजी जैसे मस्तयोगी, श्रीमद् क्षमाकल्याणजी जैसे आगम-विशारद श्री जिनराजसूरि जसे समर्थ आचार्य कवि आदि इसी बीकानेरकी भूमिके उज्वल रत्न थे। यद्यपि बीकानेरके दीक्षित मुनियोंमे से बहुत ही थोड़े व्यक्तियोंका उल्लेख हमे प्राप्त हुआ है, फिर भी यह तो निश्चित है कि बीकानेर राज्यमे उत्पन्न सैकडों ही नहीं किन्तु हजारोंकी संख्यामे दीक्षित एव देशविरति धर्माराधक व्यक्ति हुए हैं। हम यहा केवल उन्हीं व्यक्तियोंका निर्देश कर सकेंगे जिनके विषयमे हमे निश्चित रूपसे ज्ञात हो सका है।

सतरहवीं शताब्दीके शेषार्द्ध के प्रतिभा संपन्न आचार्य श्रीजिनराजसूरिजी प्रथम उल्लेखनीय हैं। आपका जन्म बीकानेरके बोथरा धर्मसिंहकी पत्नी धारलदेवी की कूक्षिसे सं० १६४७ वैशाख सुदि ७ बुधवार को हुआ था और इन्होने श्रीजिनसिंहसूरिजीसे सं० १६५६ मिगसर सुदि १३ को बीकानेर मे दीक्षा ली थी। इनके पट्टधर श्रीजिनरत्नसूरिजी भी बीकानेर राज्यके सेरूणा ग्रामके लूणिया तिलोकसीकी पत्नी तारादेवीके पुत्र थे। आपके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि भी बीकानेरके चोपड़ा सहसमलकी पत्नी सुपियारदेके कुक्षिसे उत्पन्न थे। उनके पट्टधर श्रीजिनसुखसूरिजी फोगपत्तनके और श्रीजिनभक्तिसूरिजी इन्दपालसरके थे ये ग्राम भी बीकानेरके ही संभवित हैं। उनके पट्टधर श्रीजिनलाभसूरिजी बीकानेरके बोथरा पंचायण की भार्या पद्मादेवी

की। आपके पुत्ररत्न मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र अपने वंशमें मुकुटमणि हुए, इन्होंने शत्रुंजय, आबू, गिरनार व खंभात तीर्थोंकी सपरिवार यात्रा की। इन्होंने महाराजा कल्याणसिंहजी को विज्ञप्ति कर वर्षात के चार महीनों में तेली, कुंभार, हलवाई लोगोंसे आरंभ बंध करवाया। नगर के वैश्यों पर जो माल नामक कर था, छुड़वाया व भेड़, बकरी आदिका चतुर्थांश कर माफ करवाया। मुगल सेनाके आबू पर आक्रमण करने पर इन्होंने सम्राट की आज्ञासे जैन मन्दिरोंकी रक्षा की। बन्दियों को अन्न, वस्त्र आदि देकर जीवितदान दिया और उन्हें अपने घर पहुंचा दिया। समियाने (सिमाना) के युद्धमें लुटी हुई लोगोंकी औरतों को छुड़ाया, सं० १६३५ के महान् दुष्काल में १३ मास पर्यन्त दानशाला व औषधालय खुलवाकर जन साधारण का हित-साधन किया। स्वधर्मी बन्धुओं को उनकी आवश्यकतानुसार वार्षिक व्यय देकर सच्चा स्वधर्मी वात्सल्य किया। इन्होंने ठेठ काबुल तक के प्रत्येक ग्राम नगर में लाहण वितीर्ण की। शास्त्र-वेत्ता गुरुओं से ग्यारह अंग श्रवण किये। महीने में ४ पर्वतिथियों में कारू लोगोंसे अगता रखवाया, वर्षात में तेली और कुंभारों से आरंभ छुड़वाया। मरुभूमि में सब वृक्षोंको काटना बंद करवाया। सतलज, इक, रावी, आदि सिन्धुदेश की नदियों में मछली आदि जलचर जीवोंकी रक्षा की। शत्रुओं के देशसे लाए गए बन्दीजनों को अन्न-वस्त्र देकर अपने-अपने घर पहुंचाया समस्त जैन मन्दिरों में अपनी ओरसे प्रतिदिन स्नात्र-पूजा कराने का प्रबन्ध कर दिया। अजमेर में श्रीजिनदत्तसूरिजी के स्तूप की यात्रा की। एक समय द्वारिका के चैत्योंका विनाश सुनकर इन्होंने सम्राट अकबर से जैन तीर्थोंकी रक्षा की प्रार्थना की। सम्राट ने समस्त तीर्थोंको मंत्रीश्वर के आधीन करने का फरमान दे दिया। इन्होंने तुरसमखान के कैद किये हुए बन्दियोंको द्रव्य देकर छुड़वाया।

जैनोंके बनवाये हुए कुए आदि सार्वजनिक कार्य

जैनोंने इस पक्षमें भी सब-जन हितकारी कार्य किए हैं जिनका उल्लेख यहाँ आवश्यक है। बीकानेर नगर एवं रियासत के गांवोंमें बहुत से कुए तालाब आदि बनवाये हैं जिनमें से बीकानेर शहर में व बाहर बैद मुहता प्रतापमलजी का, रतनगढ़ में सुराणा अमरचन्दजी का, सरदारशहर में बाफना हुकमचन्दजी का, उदयकरणसर में मूलचंदजी बोथरा का, डूंगरगढ़ में पुगलियों व पारखोंका, फूलासर में भैरूंदानजी कोठारी का, भीनासर में चंपालालजी बांठिया का, गंगाशहर में सेठ चौरमलजी बरड़ाका, उदासर में हमारे पूर्वजों का, चूरूमें कोठारियों के बनवाए हुए कुए हमारी जानकारी में हैं इनके अतिरिक्त जहां कहीं भी आवश्यकता की मालूम पड़ी है सभी जगह इनके द्वारा कुए बनवाये गए थे।

औषधालय

बीकानेर नगरमें श्री० लक्ष्मीचन्दजी ढागाका औषधालय वर्षों तक था। अभी श्री० भैरूंदानजी कोठारी व ज्ञानचन्दजी डागा, मगनमलजी पारख की ओर से दो फ्री औषधालय

चलते हैं। सरदारशहरमें नथमलजी कोठारी, सुजानगढ़ में दानचन्दजी चोपडा, आदिके औषधालय चलते है। भीनासरमें श्री बहादुरमलजी और चंपालालजी के दो औषधालय हैं।

विद्यालय

शिक्षण कार्य में भी जैनोका सहयोग उल्लेखनीय है। बीकानेरमें श्रीयुक्त बहादुरमल जसकरण रामपुरियाका कालेज व बोर्डिंग हाउस, केशरीचन्दजी डागाकी धर्मपत्नी इन्द्रबाईके ट्रष्टसे कन्या पाठशाला, श्री० अगरचन्द भैरूंदान सेठियाकी पाठशाला, संस्कृत पाठशाला, रात्रि कालेज, कन्या पाठशाला, जैन श्वे० संघकी ओरसे जेन श्वे० हाईस्कूल व बोर्डिंग हाउस, श्री गोविन्दरामजी भणसाली की कन्या पाठशाला और पायचन्द गच्छकी रात्रि धार्मिक स्कूल चलती है। गंगाशहरमे श्री० भैरूंदानजी चोपडाकी हाई स्कूल, भीनासरमे श्रीयुक्त चम्पालालजी बाठिया की कन्या पाठशाला, चूरूमे कोठारियों का विद्यालय, श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारणी संस्थाकी ओरसे नोखामंडी, झज्झू, ऊदासर, सारूंडा, नोखामें प्रारम्भिक शिक्षण शालाएं चल रही है। और भी बीकानेर रियासतके कितने ही स्थानोंमे ओसवालोंकी स्कूलें व व्यायामशालाएं आदि संघ व व्यक्तिगत रूपसे चल रही है।

बीकानेर के दीक्षित महापुरुष

बीकानेरके श्रावकों एवं श्राविकाओंमे से सैकडों भव्यात्माओंने सर्वविरति एवं देशविरति चारित्रको स्वीकार कर अपने जीवनको सफल बनाया उनमे से कई मुनिगण बड़े ही प्रकाण्ड विद्वान, क्रियापात्र, योगी एवं धर्म प्रचारक हुए है। श्रीमद् देवचन्द्रजी जैसे अध्यात्म तत्त्वानुभवी, श्रीमद् ज्ञानसारजी जैसे मस्तयोगी, श्रीमद् क्षमाकल्याणजी जैसे आगम-विशारद श्री जिनराजसूरि जसे समर्थ आचार्य कवि आदि इसी बीकानेरकी भूमिके उज्वल रत्न थे। यद्यपि बीकानेरके दीक्षित मुनियोंमे से बहुत ही थोड़े व्यक्तियोंका उल्लेख हमे प्राप्त हुआ है, फिर भी यह तो निश्चित है कि बीकानेर राज्यमे उत्पन्न सैकडों ही नहीं किन्तु हजारोकी संख्यामे दीक्षित एव देशविरति धर्माराधक व्यक्ति हुए है। हम यहा केवल उन्हीं व्यक्तियोंका निर्देश कर सकेंगे जिनके विषयमे हमे निश्चित रूपसे ज्ञात हो सका है।

सतरहवीं शताब्दीके शेषार्द्ध के प्रतिभा संपन्न आचार्य श्रीजिनराजसूरिजी प्रथम उल्लेखनीय है। आपका जन्म बीकानेरके बोथरा धर्मसिंहकी पत्नी धारलदेवी की कूक्षिसे सं० १६४७ वैशाख सुदि ७ बुधवार को हुआ था और इन्हाने श्रीजिनसिंहसूरिजीसे सं० १६५६ मिगसर सुदि १३ को बीकानेर मे दीक्षा ली थी। इनके पट्टधर श्रीजिनरत्नसूरिजी भी बीकानेर राज्यके सेरूणा ग्रामके लूणिया तिलोकसीकी पत्नी तारादेवीके पुत्र थे। आपके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि भी बीकानेरके चोपड़ा सहसमलकी पत्नी सुपियारदेके कुक्षिसे उत्पन्न थे। उनके पट्टधर श्रीजिनसुखसूरिजी फोगपत्तनके और श्रीजिनभक्तिसूरिजी इन्दपालसरके थे ये ग्राम भी बीकानेरके ही संभवित हैं। उनके पट्टधर श्रीजिनलाभसूरिजी बीकानेरके बोथरा पंचायण की भार्या पद्मादेवी

की। आपके पुत्ररत्न मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र अपने वंशमें मुकुटमणि हुए, इन्होंने शत्रुंजय, आबू, गिरनार व समस्त तीर्थोंकी सपरिवार यात्रा की। इन्होंने महाराजा कल्याणसिंहजी को विज्ञप्ति कर वर्षात के चार महीनों में तेली, कुंभार, हलवाई लोगोंसे आरंभ बंद करवाया। नगर के वैश्यों पर जो माल नामक कर था, छुड़वाया व भेड़, बकरी आदिका चतुर्थांश कर माफ करवाया। मुगल सेनाके आबू पर आक्रमण करने पर इन्होंने सम्राट की आज्ञासे जैन मन्दिरोंकी रक्षा की। बन्दियों को अन्न, वस्त्र आदि देकर जीवितदान दिया और उन्हें अपने घर पहुंचा दिया। समियाने (सिवाना) के युद्धमें लूटी हुई लोगोंकी औरतों को छुड़ाया, सं० १६३५ के महान् दुष्काल में १३ मास पर्यन्त दानशाला व औषधालय खुलवाकर जन साधारण का हित साधन किया। स्वधर्मी बन्धुओं को उनकी आवश्यकतानुसार वार्षिक व्यय देकर सच्चा स्वधर्मी वात्सल्य किया। इन्होंने ठेठ काबुल तक के प्रत्येक ग्राम नगर में लाहण वितीर्ण की। शास्त्र वेत्ता गुरुओं से ग्यारह अंग श्रवण किये। महीने में ४ पर्वतिथियों में कारू लोगोंसे अगता रखवाया, वर्षात में तेली और कुंभारों से आरंभ छुड़वाया। मरुभूमि में सब वृक्षोंको काटना बंद करवाया। सतलज, झेलम, रावी, आदि सिन्धुदेश की नदियों में मछली आदि जलचर जीवोंकी रक्षा की। शत्रुओं के देशसे लाए गए बन्दीजनों को अन्न-वस्त्र देकर अपने-अपने घर पहुंचाया समस्त जैन मन्दिरों में अपनी ओरसे प्रतिदिन स्नात्र-पूजा कराने का प्रबन्ध कर दिया। अजमेर में श्रीजिनदत्तसूरिजी के स्तूप की यात्रा की। एक समय द्वारिका के चैत्योंका विनाश सुनकर उन्होंने सम्राट अकबर से जैन तीर्थोंकी रक्षा की प्रार्थना की। सम्राट ने समस्त तीर्थोंको मंत्रीश्वर के आधीन करने का फरमान दे दिया। उन्होंने तुरसमखान के कैद किये हुए बन्दियोंको द्रव्य देकर छुड़वाया।

जैनोंके बनवाये हुए कुए आदि सार्वजनिक कार्य

जैनोंने कुछ ऐसे भी सर्व-जन हितकारी कार्य किए हैं जिनका उल्लेख यहाँ आवश्यक है। बीकानेर नगर एवं रियासत के गांवोंमें बहुत से कुए तालाब आदि बनवाये हैं जिनमें से बीकानेर शहर में व बाहर वैद मुहता प्रतापमलजी का, रतनगढ़ में सुराणा अमरचंदजी का, सरदारशहर में बोथरा हरखचंदजी का, लूणकरणसर में मूलचंदजी बोथरा का, डूंगरगढ़ में पुगलियों व पारखोंका, फूलेसर में भैरूंदानजी कोठारी का, मीनासर में चंपालालजी बांठिया का, गंगाशहर में सेठ चांदमलजी ढढ्ढा का, उदासर में हमारे पूर्वजों का, नाल में कोठारियों के बनवाए हुए कुए हमारी जानकारी में हैं इनके अतिरिक्त यहाँ कहीं भी ओसवालों की बस्ती थी या है, सभी जगह उनके द्वारा कुए बनवाये गए थे।

औषधालय

बीकानेर नगरमें श्री० लक्ष्मीचन्दजी डागाका औषधालय वर्षों तक था। अभी श्री० भैरूंदानजी कोठारी व ज्ञानचन्दजी कोचर, मगनमलजी पारख की ओर से दो फ्री औषधालय

चलते हैं। सरदारशहरमें नथमलजी कोठारी, सुजानगढ़ में दानचन्दजी चोपड़ा, आदिके औषधालय चलते हैं। भीनासरमें श्री बहादुरमलजी और चंपालालजी के दो औषधालय हैं।

विद्यालय

शिक्षण कार्य मे भी जैनोका सहयोग उल्लेखनीय है। बीकानेरमें श्रीयुक्त बहादुरमल जसकरण रामपुरियाका कालेज व बोर्डिंग हाउस, केशरीचन्दजी डागाकी धर्मपत्नी इन्द्रबाईके ट्रष्टसे कन्या पाठशाला, श्री० अगरचन्द भैरूंदान सेठियाकी पाठशाला, संस्कृत पाठशाला, रात्रि कालेज, कन्या पाठशाला, जैन श्वे० संघकी ओरसे जैन श्वे० हाईस्कूल व बोर्डिंग हाउस, श्री गोविन्दरामजी भणसाली की कन्या पाठशाला और पायचन्द गच्छकी रात्रि धार्मिक स्कूल चलती है। गंगाशहरमे श्री० भैरूंदानजी चोपडाकी हाई स्कूल, भीनासरमे श्रीयुक्त चम्पालालजी बांठिया की कन्या पाठशाला, चूरूमे कोठारियों का विद्यालय, श्री श्वे० साधुमार्गी जैन हितकारणी संस्थाकी ओरसे नोखामंडी, भझ्झू, ऊदासर, सारूंडा, नोखामे प्रारम्भिक शिक्षण शालाएं चल रही हैं। और भी बीकानेर रियासतके कितने ही स्थानोंमे ओसवालोकी स्कूलें व व्यायामशालाएं आदि संघ व व्यक्तिगत रूपसे चल रही हैं।

बीकानेर के दीक्षित महापुरुष

बीकानेरके श्रावको एवं श्राविकाओमे से सैकडों भव्यात्माओने सर्वविरति एवं देशविरति चारित्रको स्वीकार कर अपने जीवनको सफल बनाया उनमे से कई मुनिगण बड़े ही प्रकाण्ड विद्वान, क्रियापात्र, योगी एवं धर्म प्रचारक हुए है। श्रीमद् देवचन्द्रजी जैसे अध्यात्म तत्वानुभवी, श्रीमद् ज्ञानसारजी जैसे मस्तयोगी, श्रीमद् क्षमाकल्याणजी जैसे आगम-विशारद श्री जिनराजसूरि जैसे समर्थ आचार्य कवि आदि इसी बीकानेरकी भूमिके उज्वल रत्न थे। यद्यपि बीकानेरके दीक्षित मुनियोमे से बहुत ही थोडे व्यक्तियोका उल्लेख हमे प्राप्त हुआ है, फिर भी यह तो निश्चित है कि बीकानेर राज्यमे उत्पन्न सैकडो ही नहीं किन्तु हजारोकी संख्यामे दीक्षित एव देशविरति धर्माराधक व्यक्ति हुए हैं। हम यहा केवल उन्हीं व्यक्तियोका निर्देश कर सकेंगे जिनके विषयमे हमे निश्चित रूपसे ज्ञात हो सका है।

सतरहवीं शताब्दीके शेषार्द्ध के प्रतिभा संपन्न आचार्य श्रीजिनराजसूरिजी प्रथम उल्लेखनीय हैं। आपका जन्म बीकानेरके बोथरा धर्मसिंहकी पत्नी धारलदेवी की कूक्षिसे सं० १६४७ वैशाख सुदि ७ बुधवार को हुआ था और इन्होने श्रीजिनसिंहसूरिजीसे सं० १६५६ मिगसर सुदि १३ को बीकानेर मे दीक्षा ली थी। इनके पट्टधर श्रीजिनरत्नसूरिजी भी बीकानेर राज्यके सेरूणा ग्रामके लूणिया तिलोकसीकी पत्नी तारादेवीके पुत्र थे। आपके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरि भी बीकानेरके चोपड़ा सहसमलकी पत्नी सुपियारदेके कुक्षिसे उत्पन्न थे। उनके पट्टधर श्रीजिनसुखसूरिजी फोगपत्तनके और श्रीजिनभक्तिसूरिजी इन्दपालसरके थे ये ग्राम भी बीकानेरके ही संभवित है। उनके पट्टधर श्रीजिनलाभसूरिजी बीकानेरके बोथरा पंचायण की भार्या पद्मादेवी

के पुत्र थे, आपका जन्म वापऊ में सं० १७८४ श्रावण सुदिमें हुआ था। आपके पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरिजी बीकानेरके कुक्कुड़चोपड़ा रूपचन्दजीकी पत्नी केसरदेवी से सं० १८०६ में कल्याणसर में जन्मे थे। खरतरगच्छकी मंडोवरा शाखामें श्रीजिनेश्वरसूरिजी के पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी बीकानेरके बाफणा रूपजीकी पत्नी रूपादेवीके पुत्र थे।

इसी प्रकार खरतराचार्य शाखाके स्थापक श्रीजिनसागरसूरि बीकानेरके बोथरा वच्छराज की पत्नी मृगादेवी की कुक्षीसे सं० १६५२ कार्ती सुदि १४ को जन्मे थे। उनके पट्टधर श्रीजिन धर्मसूरिजी बीकानेरके भणशाली रिणमलकी भार्या रत्नादेवी के पुत्र थे, सं० १६६८ पोष सुदि ८ को इनका जन्म हुआ था। इस शाखामें श्रीजिनयुक्तिसूरिजीके पट्टधर श्रीजिनचन्द्रसूरिजी भण्डारी रीहड़ मागचंदजीकी पत्नी भत्तादेवीके पुत्र थे। वर्तमान श्रीपूज्य श्रीजिनचन्द्रसूरिजी भी बीकानेर रियासत के ही थे।

पायचन्दगच्छके आचार्य जयचन्द्रसूरि बीकानेरके रांका जैतासाहकी पत्नी जयतलदेवी के पुत्र थे, इनकी दीक्षा बीकानेरमें सं० १६६१ माघ सुदि ५ को हुई थी। इस गच्छके कनकचन्द्रसूरि बीकानेर—वहीरमासके मुहणात माईदासकी पत्नी महिमादेके पुत्र थे। भातुचन्द्रसूरि करमावासके भणसाली प्रेमराजकी पत्नी प्रेमादेवीकी कुक्षीसे सं० १८०१ में जन्मे थे उनकी दीक्षा सं० १८१५ वैशाख सुदि ७ को बीकानेर में हुई थी। इसी प्रकार हर्षचन्द्रसूरि भी बीकानेरके छाजेड़ गिरधरकी पत्नी गोरमदेवीके पुत्र थे, इनका जन्म सं० १८३५ श्रावण वदि में हुआ था। अंतिम आचार्यश्री देवचन्द्रसूरि भी बीकानेर राज्यके वेद गोत्रीय थे।

नागौरी लुंका गच्छके कल्याणदासजी राजलदेसरके सुराणा शिवदासजीकी पत्नी कुशलाजी के पुत्र थे और आप बीकानेरमें दीक्षित हुए। नेमिदासजी भी बीकानेरके सुराणा रायचन्दजी की पत्नी सजनांके पुत्र थे। पूज्य महाराजजी कालूके सुराणा मागचन्दकी पत्नी यशोदाके और पूज्य जीवणदासजी पड़िहाराके चोरड़िया चौरपालकी पत्नी रतनादेवीके पुत्र थे। पूज्य भोजराजजी राजलदेसरके बोथरा जीवराजकी धर्मपत्नी कुशलाकी कुक्षीसे उत्पन्न हुए थे। पूज्य लक्ष्मीचन्द्रजी नौहरके कोठारी जीवराजकी स्त्री अपरंगदेवी के पुत्र थे।

कंवलागच्छके कई आचार्य बीकानेरके निवासी थे पर उस गच्छकी पट्टावलीमें उनके जन्म स्थानादिका पता न होने से यहां उल्लेख नहीं किया जा सका।

आचार्योंके अतिरिक्त सैकड़ों यति-मुनियोंकी दीक्षा यहां होनेका श्रीपूज्योंके दफ्तरों आदि से ज्ञात है पर उनके जन्म स्थानादिका निश्चित पता न होनेसे एवं विस्तार भयसे निदिचतरूपसे ज्ञात ४।५ प्रमुख महापुरुषोंका ही यहां निर्देश किया जा रहा है।

युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिजी के प्रथम शिष्य और महोपाध्याय समयसुन्दरजीके गुरु श्रीसकलचन्द्रजी गणि बीकानेरके रीहड़ गोत्रीय थे और उनकी दीक्षा भी सं० १६१३ में बीकानेर में श्रीजिनचन्द्रसूरिजीके क्रियोद्धारके समय हुई थी। इनके गोत्रवालोंके बनवाई हुई आपकी पादुका नालमें विद्यमान है। आत्मार्थी महापुरुष श्रीमद् देवचंद्रजी बीकानेरके निकटवर्ती ग्राम

के निवासी लूणिया तुलसीदासजीकी पत्नी धनबाई के पुत्र थे, इनका जन्म सं० १७४६ और दीक्षा सं० १७५६ में हुई थी। उपाध्याय श्रीक्षमाकल्याणजी भी बीकानेर रियासतके केसरदेसर ग्राम के माल्हू गोत्रीय थे। इसी प्रकार मस्तयोगी ज्ञानसारजी जंगलेवासके साड उदयचन्द्रजीकी पत्नी जीवणदेवीके पुत्र थे। इनका जन्म संवत् १८०१ मे हुआ था दीक्षा और स्वर्गवास भी यहीं हुआ था। आज भी बीकानेरके दीक्षित कई साधु एवं साध्विया विद्यमान है जिनमे श्रीविजय-लक्ष्मणसूरिजी बीकानेरके पारख गोत्रीय है। ध्यान-योगी श्रीमोतीचन्द्रजी भी लूणकरणसरके थे जिनका कुछ वर्ष पूर्व ही स्वर्गवास हुआ है।

सचित्र विज्ञतिपत्र

चातुर्मास के निमित्त आचार्यों को आमन्त्रित करने के लिए संघकी ओर से जो वीनति-पत्र जाता वह भी विद्वतापूर्ण व इतिहास, कला, संस्कृति आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता था। एक तो सावत्सरिक पत्र होता जिससे पर्वाराधन के समाचार होते दूसरा विज्ञप्ति-पत्र। प्रथम के निर्माता मुनिगण होते जो उसे संस्कृत व भाषा के नाना काव्यों मे गुफित कर एक खण्ड-काव्य का रूप दे देते और दूसरा चित्र-समृद्धि से परिपूर्ण होता था। बीकानेर से दिये गये ऐसे कई लेख मिलते हैं। चारसौ वर्ष पूर्व श्रीजिनमाणिक्यसूरिजी को दिया हुआ पत्र प्राचीनता और ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके पश्चात् कतिपय पत्र धर्मवर्द्धन, ज्ञानतिलक आदि के काव्य व गद्यमय उपलब्ध है जो बीकानेर से भेजे गए थे उनमे बीकानेर नगर और तत्कालीन धर्मकृत्योंका सुन्दर वर्णन है जो श्रीजिनविजयजी ने सिंघी जैन ग्रथमाला से प्रकाशित किये हैं।

सावत्सरिक पत्रों मे सर्वप्राचीन हमारे संग्रहस्थ श्रीजिनमाणिक्यसूरिजीको दिया हुआ पत्र है जो दयातिलकगणि, प्रमोदमाणिक्यगणि प्रभृति साधु संघने जैसलमेर भेजा था। इसका आदि भाग जिसमे विभिन्न विद्वत्ता पूर्ण छन्दों मे चित्र काव्य द्वारा जिनस्तुति, गुरुस्तुति नगर वर्णनादि भाव रहे होंगे—४१ श्लोक सर्वथा नष्ट हो गये है। इसका चालीसवा श्लोक बिजोरा चित्र एवं ४२ वा स्वस्तिक चित्र सा प्रतीत होता है। इन उभय श्लोकों के कुछ त्रुटित अक्षर अवशेष है। इसके पश्चात् गद्य में कादम्बरी की रचना छटा को स्मरण कराने वाली ७ पंक्तियाँ उल्लिखित है वे भी प्रायः नष्ट हो चुकी है।

इस पत्र से प्रतीत होता है कि उस समय जैसलमेर मे श्री जिनमाणिक्यसूरि के साथ विजयराजोपाध्याय वा० अमरगिरि गणि, पं० सुखवर्द्धन गणि, पं० विनयसमुद्र गणि, पं० पद्म मन्दिर गणि, पं० हेमरङ्ग मुनि, पं० कल्याणधीर प० सुमतिधीर, पं० भुवनधीर मुनि प्रमुख साधु-मण्डल था। बीकानेर से दयातिलक गणि, प्रमोदमाणिक्य गणि, पं० वस्ताऋषि, पं० सत्यहंस गणि, प० गुणरंग गणि, प० दयारंग गणि, पं० हेमसोम गणि, पं० जयसोम (क्षुल्लक), ऋषि सीपा, भाऊ ऋषि, सहसू प्रमुख साधु संघने विनय संयुक्त वन्दना ज्ञापन करने व कुशल सम्वाद के पश्चात लिखा है कि—

प्रमोदमाणिक्य गणि ने संघ के आग्रह से मेड़ता में चातुर्मास बिताकर फलवर्द्धि पार्श्वनाथ की यात्रा करके सयवारण, बीलाड़ा सूराछा, नारदपुरी, मादड़ी, राणपुर, श्रीरापल्लि, पार्श्वनाथ, कुंभमेरु प्रमुख नगरों में विचरते हुए गोगूंदा नगर संघ के आग्रह से मासकल्प किया। फिर निकटवर्ती नवपल्लव मनावद तीर्थों की यात्रा कर लौटते हुए कुंभमेरु में १५ दिन ठहरे। फिर बहुत से तीर्थों की यात्रा कर नारदपुरी में मासकल्प किया। तदनतर वरकाणा, नवफूल, गुद वच, प्रमुख स्थानों की यात्रा कर के पाली होकर जोधपुर आये। यहां मासकल्प कर विहार करते हुए अषाढ़ शुक्ला ११ के दिन बीकानेर आये। मंत्रिवर आदि सभ्योंके समक्ष प्रात काल प्रमोद माणिक्य गणिने रायपसेनी-सूत्र-वृत्ति व पाक्षिक-सूत्रवृत्ति का व्याख्यान, मध्यान्ह में सत्यहंसगणि को कर्मग्रंथ, गुणरंग, दयारंगगणि आदिको प्रवचनसारोद्धार बृहद्वृत्ति, सकशास्त्रादि एवं पं० हेम सोम, जयसोम मुनि को छन्द अलंकार पढ़ाते हुए स्वय समयानुसार संयमाराधना करते हुए चातुर्मास बिताया। पर्वाधिराज पर्यूषण में बोहिथरा गोत्रीय सा० भांटा, सा० सहसा, सा० नींबा सा० धन्ना सा० जोधा प्रमुख परिवार सह क्षमाश्रमण पूर्वक कल्पसूत्र अपने घर ले जाकर रात्रिजागरणादि कर उत्सवपूर्वक ला कर दिया। ७ वाचनाएं प्रमोदमाणिक्य गणि ने एक एक वाचना पं० सत्यहंस व पं० गुणरंग गणि ने एवं क्षमाव्याख्यान प० दयारंग गणि ने किया। तपागच्छ के उपाश्रय में सं० धनराज मं० अमरा, सा० परबा, सं० गिरू, सं० पोमदत्त, सा० पीथा आदि संघ के आग्रह से प० गुणरंग गणि ने ६ वाचनाओं द्वारा कल्पसूत्र सुनाया। पं० सत्यहंस गणि ने गणि-योग तप किया, गुणरंग गणि ने उपधान तप, मुनि सीवाने अठाई पारणे में एकांतरा, मुनि सहसू ने पांच उपवास, साध्वी लाछां ने अठाई व इतर साध्वियों ने उपधान किया। सा० सारंग ने २१ उपवास, सा० मेघा सा० वीदा ने पक्षक्षमण, श्रे० जिनदास सा० हेमराज, सा० रूपा, प्रमुख ७—८ श्रावकों ने अठाई की। सालूंडा ग्राम से पारख भरवद, मा० रावण, गोलछा हेमराज ने आकर सा० मांडण सं० धन्ना आदि श्रावकों ने उपधान किया। श्रा० देवलदे आदि ११ श्राविकाओं ने पक्षक्षमण, श्राविका लाछां, चन्द्रावलि आदि ११ श्राविकों ने २१ उपवास श्रा० लाछां आदि ११ श्राविकाओं ने अठाई की पर्व लेखे, पंचोले बहुसंख्यक हुए। साध्वी रत्नसिद्धि गणिनी, सा० पुण्यलक्ष्मी, सा० लाछां, सा० लाछां आदि की तरफसे वन्दना एवं जैसलमेरस्थ श्रावकों को अत्रस्थित साधुओं की तरफ से धर्मलाभ लिखा है। जैसलमेरी श्रावकों के नाम—श्रेष्ठि सा० श्रीचन्द, सा० सूदा सा० छाजू, सा० रायमल, स० नरपति, सं० कुराला, स० सुखदा, स० आईदत, स महिरावदास, सं० वहरसी सा० राजा, सा० समू सा० आपू, सा० राजा सा० पंचाइण, मं० छोला, सा० मेला, सा० साहा, षा० डूंगर, म० सज्जा षा० आसू, म० हांसा, श्राविका सीतादे आदि।

बीकानेर के मंत्री डूंगरसी मं० चोपा, म० राणा मं० सांगा, म० पिरवा मं० माला मं० वस्ता, म० मांडण, म० नूरा म० नरबद, मं० चोपा, मं० सीहा, म० अमृत, मं० हमराज, मं० अचला, म० अर्जुन, मं० सीमा, मं० श्रीचन्द, म० जोगा मं० खेतसी, मं० रायचन्द, मं० पदमसी,
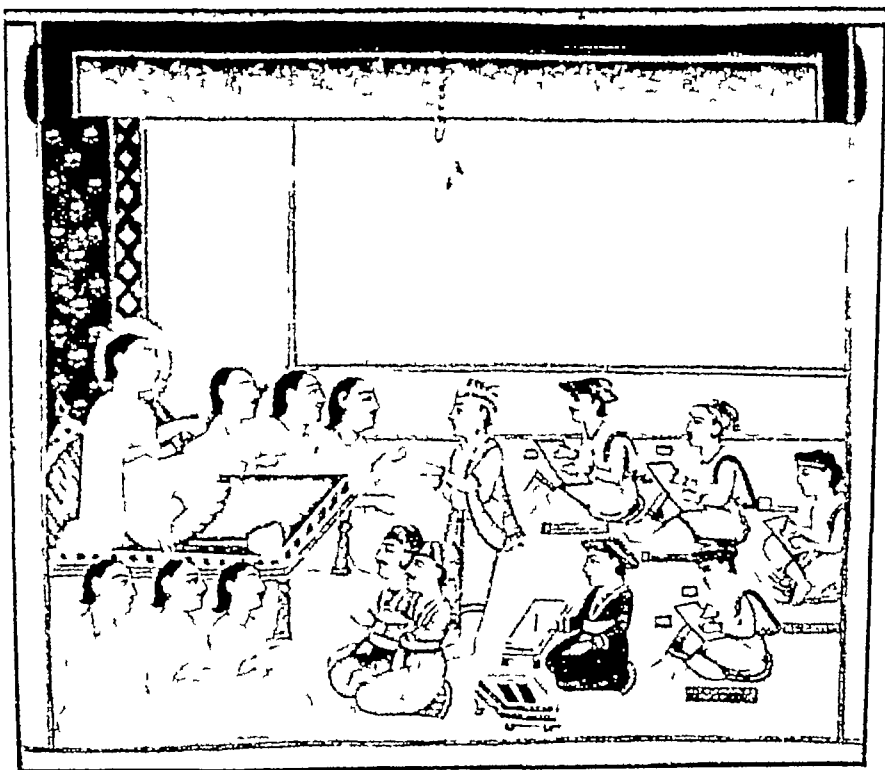
आगमो को लिखाते हुए, देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण
स० १६०० वीकानेर मे चित्रित कल्पसूत्र से
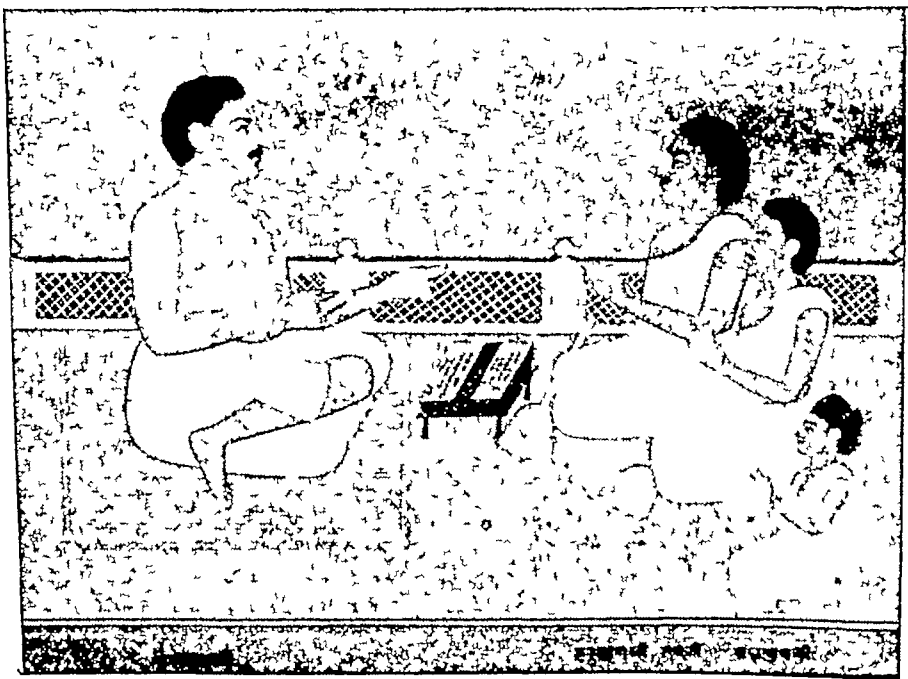
श्रीमद् ज्ञानसारजी और उनके शिष्यगण (परिचय प्र० प० ११)
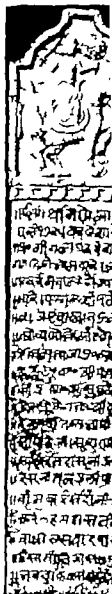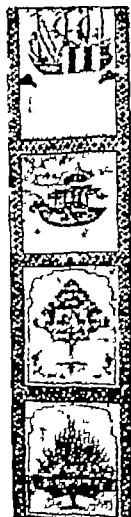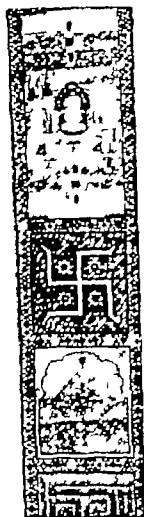
बीकानेर संघ द्वारा सं. १८९८ में श्री जिनसौभाग्यसूरिजी को मकसूदाबाद भेजे गये
६८ फीट लंबे सचित्र विज्ञप्तिपत्र के दृश्य
(परिचय प्र. पृ. ९१)

सती स्मारक
(लेखाङ्क २५८१

मं० सीहा, सं० रत्ता, स० रामा, सं० हर्पा, स० वइरा, स० रावण, को० समरा, को० कउड़ा, को० रूपा, को० हरिचन्द, को० देवसी, को० नाथू, को० अमरसी, सा० चापा, सा० जाटा, सा० धन्ना म० नेता, मं० जगमाल, मं० घडसी, स० जोवा, सा० जेठा, सं० अमरा, सा० ताल्हा, सा० गुन्ना, सा० पासा, सा० सदारंग, भू० सा० रूपा, सा० अक्खा, सा० देढा, सा० मूला, सा० भाडा, भ० वर्द्धन, सा० रत्ता, ना० रामा, सा० कुरा, सा० भल्ला, मा० वीसा, चो० नानिग, छा० वत्ता, सा० भुजबल, धा० पाचा, लू० रूपा, ग० सा० ऊदा, सा० भोजा, सा० राणा, सा० पद्दा, सा० कुपा, सा० पासा, लू० रतना, को० सूजा, सा० पञ्चा, सा० रतना, सा० धन्नू, सा० अमरू, सा० जगू, सा० हेमराज, सा० शिवराज, प० अमीपाल, सा० तेजसी, सा० मोढा, सा० देसल, श्रे० मन्ना, सा० धनराज, से० उदसिंघ, सा० अमीपाल, सा० सहसमल, प० नरबद, सा० हर्षा, सा० हर्पा, सं० धन्ना, सं० राजसी, सा० जगमाल, मं० अमीपाल, सा० हर्पा, सा० धन्ना, सा० डूगर, सा० डीडा, सा० श्रीवंत प्रमुख श्रावकों की भक्तिपूर्वक वन्दना लिखी है। विशेपकर मं० देवा, मं० राणा, मं० सागा, म० सीपा, म० अर्जुन, म० अमृत, मं० अचला, म० मेहाजल, मं० जोगा, म० खेतसी, मं० रायचन्द, मं० पद्मसी, मं० श्रीचन्द प्रमुख मन्त्रि-वर्गों की तरफ से वन्दना अरज की है। वि० प्रमोदमाणिक्य गणि के तरफ से सहर्प वन्दना लिखते हुए सुख समाचारों के पत्र देने का निवेदन करते हुए अन्त मे स० सारणदास व मं० जोगा की वंदना लिखी है। दूसरी तरफ सा० गुन्ना नीवाणी की वन्दना लिखी है।

पत्र मे संवत मिती नहीं है। अतः इसका निश्चित समय नहीं कहा जा सकता फिर भी जिनमाणिक्यसूरिजी का स्वर्गवास स० १६१२ मे हुआ था। एवं इस पत्रमे मुनि सुमतिधीर (श्री जिनचन्द्रसूरि) का नाम है जिनकी दीक्षा स० १६०४ मे हो चुकी थी। अतः सं० १६०४ से सं० १६१२ के बीच मे लिखा होना चाहिए।

इस पत्र मे आये हुए कतिपय श्रावकों का परिचय कर्मचन्द्र मंत्रिवंश प्रबंध एवं रास मे पाया जाता है।

इसके बाद के दो पत्रों का विवरण हम ऊपर दे चुके है। दूसरी प्रकार के विज्ञप्तिपत्र सचित्र हुआ करते थे, जो भारतीय चित्रकला मे अपना वैशिष्ठ्य रखते हैं। इस प्रकार के कई विज्ञप्तिपत्रों का परिचय गायकवाड ओरिण्टियल सिरीज से श्री हीरानन्द शास्त्री ने 'अनिसी-एण्ट विज्ञप्तिपत्राज' मे दिया है। इनके अतिरिक्त और भी बहुत से विज्ञप्तिपत्र पाये जाते हैं। बीकानेर मे भी कई विज्ञप्तिपत्र हैं जिनमें दो सीरोही के हैं जो बड़े उपाश्रय में है एक उदयपुर का ७२ फुट लंवा हमारे संग्रह में है। बीकानेर के दो सचित्र विज्ञप्तिपत्र हैं, जिनका परिचय यहा कराया जाता है।

प्रथम विज्ञप्ति-लेख ६ फीट ७॥ इञ्च लम्बा और ६ इञ्च चौड़ा है। ऊपर का ७॥ इञ्च का भाग विलकुल खाली है, जिसमें मङ्गल-सूचक '॥ श्री ॥' लिखा हुआ है। अवशिष्ट ६ फुट में से

७ फुट में चित्र है और ८ फुट में विज्ञप्ति-लेख लिखा हुआ है। प्रथम चित्रों का विवरण देकर फिर लेख का विवरण दिया जा रहा है—

सब प्रथम नवफण मण्डित पार्श्वनाथ जिनालय का चित्र है। जिसके तीन शिखर हैं। ये उत्तुंग शिखर दंड-गोलाकृति हैं। मध्यवर्ती शिखर ध्वज-दंड सहित है। परवर्ती दूसरे चित्र में सुख-शय्या में सुपुप्त तीर्थंकर माता और वर्णित चतुर्दश महास्वप्न तथा उपरि भाग में अष्ट मांगलिक चित्र बने हुए हैं। तत्पश्चात् महाराजा का चित्र है जो संभवतः बीकानेर नरेश जोरावरसिंहजी होंगे, जिनका वर्णन विज्ञप्तिपत्र में नीचे आता है। महाराज सिंहासन पर बैठे हुए हैं और हाथ में पुष्प धारण किया हुआ है। उनके पृष्ठ भाग में चनुचर चँवर ढोल रहा है और सम्मुख आसन पर दो मुसाहिब हाथ किये बैठे हैं। इसके बाद नगर के चौहटे का संक्षिप्त दृश्य दिखाया गया है। चौहटे के चारों ओर चार चार दुकानें हैं जिनमें से तीन रिक्त हैं। अवशेष में पुरानी बीकानेरी पगड़ीधारी व्यापारी बैठे हैं। जिन सबके लम्बी अंगरखी पहनी हुई है। दुकानदारों में छत्रधारी, तराजूधारी, व गांधी आदि बतलानेवाले दिखाये गये हैं। इसके बाद का चित्र जिन्हें यह विज्ञप्ति-लेख भेजा गया है उन श्रीपूज्य "जिनभक्तिसूरिजी" का है, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, पीछे चवरधारी खड़ा है, श्रीपूज्यजी स्थूलकाय हैं। उनके सामने स्थापनाचार्य तथा हाथ में लिखित पत्र है। वे जरी की बूटियोंवाली चहर ओढ़े हुए व्याख्यान देते हुए दिखाये गये हैं। सामने तीन श्रावक दो साध्वियां व दो श्राविकाएँ स्थित हैं। पूठिये पर चित्रकार ने श्रीपूज्यजी का नाम व इस लेख को चित्रित करानेवाले नन्दलालजी का उल्लेख करते हुए अपना नामोल्लेख इन शब्दों में किया है :—

'सबी भट्टारकजी री पूज्य श्री श्री जिनभक्तिजी री छै। करावतं वणारसजी श्री श्री नन्दलालजी पठनाथ। ॥ पृ० ॥ मथेन अखैराम जोगीदासोत श्री बीकानेर मध्ये चित्र संपूर्णं ॥ श्री श्री ॥'

उपर्युक्त लेख से चित्रकार जोगीदास का पुत्र अखैराम मथेन था और बीकानेर में ही विद्वद्वय नन्दलालजी की प्रेरणा से ये चित्र बनाये गये सिद्ध हैं। तदनन्तर लेख प्रारम्भ होता है:-

प्रारम्भ के संस्कृत श्लोकों में मंगलाचरण के रूप में आदिनाथ, शान्तिनाथ पार्श्वनाथ, नेमिनाथ और महावीर भगवान की स्तुति एवं वन्दना करके १४ श्लोकों में राधनपुर नगर का वर्णन है। फिर ८ श्लोकों में जिनभक्तिसूरिजी का वर्णन करके गद्य में उनके साथ पाठक नयमूर्ति पाठक राजसोम, वाचक पुण्यभक्ति, माणिक्यसागर, प्रीतिसागर, लक्ष्मीविलास, मतिविलास, ज्ञानविलास, और सेवसी आदि १८ मुनियों के होने का उल्लेख किया गया है, फिर बीकानेर का वर्णन कर महाराजा जोरावरसिंह का वर्णन गद्यमें करके दो पद्य दिये हैं। फिर नगर वर्णन के दो श्लोक देकर बीकानेर में स्थित नेमिरंगगणि दानविशाल, हर्षकलश हेमचन्द्र आदि की वंदना सूचित करते हुए उभय ओर के पर्वाधिराज के समारोपन पूर्व मवध व प्राप्त समाचार पत्रों का उल्लेख किया है। तदनन्तर विक्रमपुर के समस्त श्रावकों की वंदना निवेदित करते हुए यहां के प्रधान व्याख्यान ... [illegible]

वाचे जाने का निर्देश है। सं० १८०१ के मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी को लेख तैयार हुआ व भेजा गया है। उपर्युक्त पूरा लेख संस्कृत भाषा मे है। इसके वाद दो सवैये और दो दोहे हिंदी मे हैं। जिसमें जिनभक्तिसूरिजी का गुण वर्णन करते हुए उनके प्रताप बढ़ने का आशीर्वाद दिया गया है। दूसरे सवैये मे उनके नन्दलाल द्वारा कहे जाने का उल्लेख है। विज्ञप्ति लेख टिप्पणाकार है, उसके मुख पृष्ठ पर "वीनती श्रीजिनभक्तिसूरिजी महाराज ने चित्रों समेत" लिखा है।

दूसरा विज्ञप्तिपत्र वीकानेर से सं० १८९८ में आजीमगज—विराजित खरतरगच्छ नायक श्रीजिनसौभाग्यसूरिजी को आमन्त्रणार्थ भेजा गया था। प्रस्तुत विज्ञप्तिपत्र कला और इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है और इसकी लम्बाई ६७ फुट है और चौडाई ११ इंच है। दूसरे सभी विज्ञप्तिपत्रों से इसकी लम्बाई अधिक और कला की दृष्टि से चित्रो का सौन्दर्य, रंग की ताजगी, भौगोलिक महत्व भी कम नहीं है। ११३ वर्ष प्राचीन होने पर भी आज का सा बना हुआ है एवं नीचे बढिया वस्त्रपट चिपका एवं ऊपर लाल वस्त्र लगा कर जन्म-पत्री की तरह गोल लपेटकर उसी समय की बनी सिल्क की थैली में डालकर जिसरूप मे भेजा गया था उसी रूपमे विद्यमान है। इस समय यह विज्ञप्तिलेख वीकानेर के बड़े उपाश्रय के ज्ञानभण्डार मे सुरक्षित है।

इस विज्ञप्तिपत्र मे अंकित चित्रावली हमे १०० वर्ष पूर्व के वीकानेर की अवस्थिति पर अच्छी जानकारी देती है। बड़े उपाश्रय से लगाकर शीतला दरवाजे तक दिए गए गलियों, रास्तों, मदिरों, दुकानों आदि के चित्रों से कुछ परिवर्तन हो जाने पर भी इसे आज काफी प्रामाणिक माना जाता है। श्रीपूज्यों के हदबंधी आदि के मामलों मे कई वार इसके निर्देश स्वीकृत हुए हैं। इस विज्ञप्तिपत्र में शीतला दरवाजे को लक्ष्मी-पोल लिखा है एव राजमण्डी जहा निर्देश की है वहा जगातमण्डी लगलग ३५ वर्ष पूर्व थी एवं धानमण्डी, साग सब्जी इत्यादि कई स्थानों में भी पर्याप्त परिवर्त्तन हो गया है। विज्ञप्तिलेख मे सम्मेतशिखर यात्रादि के उल्लेख महत्त्वपूर्ण हैं। सहियों में श्रावकों के नाम विशेष नहीं पर फिर भी गोत्रों के नाम खरतर गच्छ की व्यापकता के स्पष्ट उदाहरण है। इसकी चित्रकला अत्यन्त सुन्दर और चित्ताकर्षक है। बड़ा उपासरा, भाडासरजी, चिन्तामणिजी आदि के चित्र बड़े रमणीक हुए हैं। आचार्य श्री जिनसौभाग्यसूरिजी का चित्र दो वार आया है जो उनकी विद्यमानता मे बना होने से ऐतिहासिक दृष्टि से मूल्यवान है।

सर्व प्रथम प्लेट की तरह चौडे गमले के ऊपर दोनों किनारे दो छोटे गमलों पर आमफल और मध्यवर्ती घटाकार गमले से निकली हुई फूलपत्तिया दिखायी हैं एवं इस के चारों ओर पुष्पलता है। दूसरा चित्र मगल-कलश का है जिसके उभय पक्षमे पुष्पलता एवं मुख पर पुष्प वृक्ष चित्रित है। तीसरे चित्र मे एक विशाल चित्र है जिसके ऊपरी भागमें दो पक्षी वैठे हुए है एव नीचे दाहिनी ओर नृत्य व बायें तरफ ढोलक बजाती हुई स्त्रिया खडी है छत्र के नीचे चामर युगल शोभायमान है। इसी प्रकार के दो [illegible]

५ फुट में चित्र है और ४ फुट में विज्ञप्ति-लेख लिखा हुआ है। प्रथम चित्रों का विवरण देकर फिर लेख का विवरण दिया जा रहा है—

सर्व प्रथम नवफण सहित पार्श्वनाथ जिनालय का चित्र है। जिसके तीन शिखर हैं। ये उत्तुंग शिखर छत्र-गोलाकृति हैं। मध्यवर्ती शिखर ध्वज-दंड मंडित है। परवर्ती दूसरे चित्र में सुख-शय्या में सुप्त तीर्थंकर माता और तद्दर्शित चतुर्दश महास्वप्न तथा उपरि भाग में अष्ट मांगलिक चित्र बने हुए हैं। तत्पश्चात् महाराजा का चित्र है जो संभवतः बीकानेर नरेश जोरावरसिंहजी होंगे, जिनका वर्णन विज्ञप्तिपत्र में नीचे आता है। महाराज सिंहासन पर बैठे हुए हैं और हाथ में पुष्प धारण किया हुआ है। उनके पृष्ठ भाग में अनुचर चँवर बीज रहा है और सन्मुख आसन पर दो मुसाहिब हाथ जिये बैठे हैं। इसके बाद नगर के चौहटे का संक्षिप्त दृश्य दिखाया गया है। चौरस्ते के चारों ओर चार चार दुकानें हैं जिनमें से तीन रिक्त हैं। अवशेष में पुरानी बीकानेरी पगड़ीधारी व्यापारी बैठे हैं। जिन सबके लम्बी अंगरखी पहनी हुई है। दुकानदारों में लेखधारी, तराजूधारी, व गांधी आदि धन्धेवाले दिखाये गये हैं। इसके बाद का चित्र जिन्हें यह विज्ञप्ति-लेख भेजा गया है उन श्रीपूज्य "जिनभक्तिसूरिजी' का है, जो सिंहासन पर विराजमान हैं, पीछे चँवरधारी खड़ा है, श्रीपूज्यजी स्थूलकाय हैं। उनके सामने स्थापनाचार्य तथा हाथ में लिखित पत्र है। वे जरी की बूटियोंवाली चद्दर ओढ़े हुए व्याख्यान देते हुए दिखाये गये हैं। सामने तीन श्रावक दो साध्वियां व दो श्राविकाएं स्थित हैं। पूठिये पर चित्रकार ने श्रीपूज्यजी का नाम व इस लेख को चित्रित करानेवाले नन्दलालजी का उल्लेख करते हुए अपना नामोल्लेख इन शब्दों में किया है —

'सवी भट्टारकजी री पूज्य श्री श्री जिनभक्तिजी री छै। करावतं वणारसजी श्री श्री नन्दलालजी पठनार्थं। ॥ व० ॥ मथेन अखैराम जोगीदासोत श्री बीकानेर मध्ये चित्र संपुरुते ॥ श्री श्री ॥

उपयुक्त लेख से चित्रकार जोगीदास का पुत्र अखैराम मथेन था और बीकानेर में ही विद्वद्वर्य नन्दलालजी की प्रेरणा से ये चित्र बनाये गये सिद्ध हैं। तदनन्तर लेख प्रारम्भ होता है—

प्रारम्भ के संस्कृत श्लोकों में मंगलाचरण के रूप में आदिनाथ, शान्तिनाथ पार्श्वनाथ, नेमिनाथ और महावीर भगवान की स्तुति एवं वंदना करके १४ श्लोकों में रायनपुर नगर का वर्णन है। फिर ८ श्लोकों में जिनभक्तिसूरिजी का वर्णन करके गद्य में उनके साथ पाठक नयमूर्ति पाठक राजसोम, वाचक पूर्णभक्ति, माणिक्यसागर, प्रीतिसागर, लक्ष्मीविलास, मतिविलास, ज्ञानविलास, और सोलसी आदि १८ मुनियों के होने का उल्लेख किया गया है, फिर बीकानेर का वर्णन कर महाराजा जोरावरसिंह का वर्णन गद्यमें करके दो पद्य दिये हैं। फिर नगर वर्णन के दो श्लोक देकर बीकानेर में स्थित भमिरगणि दानविशाल, हर्षकुशल, हेमचन्द्र आदि की वंदना सूचित करते हुए उभय ओर के पर्वाधिराज के समाराधन पूर्व प्रवृत्त व प्राप्त समाचार पत्रों का उल्लेख किया है। तदनन्तर विक्रमपुर के समस्त श्रावकों की वंदना निवेदित करते हुए वहां के प्रधान व्याख्यान में पञ्चमांग भगवतीसूत्र वृत्ति सहित व लघु व्याख्यान में शत्रुंजय महात्म्य के

दुकान, "दौलो तंबोली" की दुकान एवं कन्दोइयों के बाजार की इतर सभी दुकानें चित्रित है। परन्तु नामोल्लेख नहीं। दाहिनी ओर "रेग्रगारी (ग) ली" फिर दुकानो की पंक्तिया है। आगे जाने पर धानमंडी आती है जहां ऊटों पर आमदानी हुए धान्य की छाटिया भरी हुई है। ग्राहक-व्यापारी क्रय-विक्रय करते दिखाए है। यहां भी सूरिजीके स्वागत मे निर्मित प्रतोली दिखायी है। उभय पक्ष मे दुकान-मकानों की श्रेणी विद्यमान है। आगे चलकर रास्ते के बायी ओर फल-साग आदि बेचती हुई मालिनें, रस्ता पसारी, दाहिने ओर बजाज़ों का रास्ता लिखा है। वहा भी आगे की तरह स्वागत दरवाजा बनाया है। कुछ दुकानों के बाद बांये तरफ "हमालों का रास्ता" फिर दोनों ओर दुकानें फिर "राजमंढी" आती है जहां विशाल मकान मे जकात का दफ्तर बना हुआ है जिसमे राज्याधिकारी लोग कार्य व्यस्त बैठे है। ऊंटों पर आया हुआ माल पड़ा है, कहीं लदे ऊंट खड़े है, कांटे पर वजन हो रहा है, व्यापारी—ग्रामीण आदि खड़े हैं। मंढी के पहिले दाहिनी ओर व्योपारियो का रास्ता एवं आगे चल कर वांये हाथ की ओर नाइयों की गली है। कुछ दुकानों के बाद दाहिनी ओर ऊन के कटले का रास्ता बाये ओर सिंघियोंके चौक का रास्ता एवं आगे जाने पर "कुंडियो मोदियों का" दाहिनी ओर एवं थोड़ा आगे वांयी ओर "घाटी का भैरू" आगे चल कर दाहिनी ओर मसालची नायांरी मंडी फिर दरजियों की गली, खैरातियों की दुकाने, दरजियों की गली के पास "नागोर री गाड्यां रो अड्डु" बतलाया है। खैरातियों की दुकानों के बाद रास्ता बांई ओर से दाहिनी ओर मुड गया है। यहां तक दोनो ओर की दुकानें एव रास्ते में चलते हुये आदमी घुडसवार आदि चित्रित किये गये है। रास्ते के दाहिनी ओर मांडपुरा बांये रास्ते पर भोंडासरजी, लक्ष्मीनाथजी का मन्दिर दिखाते हुए सूरिजी के स्वागतार्थ सवारी का प्रारंभ होता है। सवारी में हाथी, घोडे छडीदार, बंदूकची, नगारा-निसाण, श्रावकवर्ग दिखाते हुए श्री जिनसौभाग्यसूरिजी बहुत से यति एव श्राविका, साध्वियों के साथ बड़े ठाट से पधारते हुए अंकित किए हैं। इसके पश्चात तम्बू डेरा चित्रित कर सूरिजीके पडाव का विशाल दृश्य दिखाया है इसमे सूरि महाराज सिंहासनोपरि विराजमान हैं। आगे श्रावक, यतिनिए श्राविकाए पृष्ठ-भाग मे यति लोग बैठे है, सन्मुख श्राविका गहूली कर रही है। पडाव के बाहर सशस्त्र पहरेदार खड़े है। इसके बाद लक्ष्मीपोल दरवाजा जहां से होकर सूरि महाराज पधारे है—दिखाया गया है। आजकल इसे शीतला दरवाजा कहते है। यहां तक नगर के चित्र ५५ फुटकी लम्बाई मे समाप्त हो गये हैं। इसके पश्चात विज्ञप्ति-लेखका प्रारभ होता है।

विज्ञप्तिलेख संस्कृत भाषा मे हैं प्रारंभ मे ५, ११ श्लोक है फिर गद्य लेख है जिसमे सूरिजी के बगदेशवर्त्ती मुर्शिदाबाद में विराजनेका उल्लेख करते हुए प्राकृत एवं राजस्थानी भाषामे लम्बी विशेषणावली दी गयी है। तदनन्तर संस्कृत गद्यमे पत्र लिखा गया है।

मैनाओं का जोड़ा एवं निम्नभाग में एक-एक कच्छ-वीणा धारिणी और एक-एक नर्तकी अवस्थित है। तदनन्तर चतुर्दश महास्वप्न प्रारंभ होते हैं। समस्तपुष्पधारी श्वेत गजराज, वृषभ, सिंह, गजशुण्डस्थित कलशाभिषिक्त कमलासनविराजित लक्ष्मी देवी, पुष्पमाला, चन्द्र, (हरिणसह) सूर्य पंचवर्णी सिंह चिह्नांकित ध्वज, कलश, हंस-कमल-पुष्प पद्मादि एवं मध्य में संगमर्मर की छतरी युक्त सरोवर, सुन्दर घाट वाला क्षीरसमुद्र जिसके मध्य में तैरता हुआ वाहन, आकाश मण्डल में चलता हुआ विमान, रत्न राशि, निर्धूम अग्नि के चित्र हैं। ये चतुर्दश स्वप्न देखती हुई भगवान् महावीरकी माता सुख शय्या सुसुप्त चित्रित हैं जिनके सिरहाने चामरधारिणी, मध्यमें पंखा-धारिणी, पैरों के पास कलश-धारिणी परिचारिकात्रय खड़ी हैं। तदनन्तर अच्छा महल में राजा सिद्धार्थ को अपने छड़ी-धारी सेवक को स्वप्न फल पाठकों के निमन्त्रण की आज्ञा देते हुए दिखाया है। यहां तक की लम्बाई २० फुट है। इसके पश्चात समवशरण में अशोक वृक्ष के नीचे सिंहासन पर विराजित तीर्थंकर भगवान का चित्र है जिन के उभय पक्षमें तीनगढ़ और तन्मध्यवर्ती द्वादश परिषदायें अत्यन्त सुन्दरता से चित्रित हैं इसके बाद अष्ट मंगलीक के आठ चित्र हैं —स्वस्तिक श्रीवत्स, नंद्यावर्त्त, मंगल-कलश, भद्रासन, मत्स्य-युगल, दर्पण। तदनंतर हंसवाहिनी सरस्वती का चित्र है जिसके सन्मुख हाथ जोड़े पुरुष खड़ा है। दादासाहब श्री जिनदत्तसूरि और श्री जिनकुशलसूरजी के दो मन्दिरों के चित्र हैं जिन में दादासाहब के चरण-पादुके विराजमान हैं। समवशरण से यहाँ तक ११॥ फुट लम्बाई है। इस के पश्चात बीकानेरके चित्र प्रारम्भ होते हैं। उभय पक्ष में बेल पत्तियां की हुई हैं।

पहला चित्र बड़ा उपासरा का है जिसमें कतिपय यति एवं श्रावक श्राविकाएं खड़े हैं। यह आज जिस स्थिति में है सो वर्ष पूर्व भी इसी अवस्था में था। श्रीमद् ज्ञानसारजी के समय में बना दीवानखाना-बारसाली वृक्ष, चौक तीनों ओर शालाएं स्तंभादि युक्त एवं बस्त्र चंदोवे इत्यादि सुशोभित शालाएं तन्मध्यवर्ती सिंहासन भी वही है जो आजकल। ऊपर तल्ले में भी पुष्पकी वाले कमरे एवं यति श्रावकादि सब दिखाए हैं पृष्ठ भागमें दृश्यमान शिखर संभवतः आचार्य शाखाके उपाश्रय या शान्तिनाथ जिनालय का दृश्य होगा। बड़े उपाश्रय के सन्मुख मार्ग में डुंगराणी बोथरों की पोल (जो सूरिजी के स्वागत में बनी) दाहिनी ओर "सेवक मापे रो घर" "रंगरेज कमाल री दुकान" बाय तरफ गाडिया लुहार, गोवे री चौकी, बोलर-हींडा, पं प्र० बखतमल जी री उपासरो, सेवक तारे रो घर, दोनों ओर मकानात हैं जिसमें पुरुष स्त्रियें खड़ी हैं तदनन्तर रास्ते के दाहिनी ओर 'रवाणी बोथरांरी तथा मालूवां री चौकी' है जिसके आगे चंद्रास्थित नटप नृत्य दिखाते हैं, फिर कई मकानों की पंक्तियां हैं फिर श्री चिन्तामणिजी का मन्दिर बड़े ही सुन्दर ढंगसे चित्रित है। उभयपक्ष में हाथी दीवानखाना, नौबतखाना, इत्यादि बड़ी सादगी से अंकित किए हैं। मंदिर के शिखर-गुंबज मूल प्रतिमा इत्यादि एवं शान्तिनाथजी के मन्दिर का भी सुन्दर चित्र है जो इसी मन्दिर के गढ़ में अवस्थित है। इसके सन्मुख सूरिजीके स्वागतार्थ निर्मित प्रतोलीद्वार, पांचे ओर "मथेरण की गली" तंबोली गिरधारीकी

किया है, कभी भुलाया नहीं जा सकता। इतिहासके पृष्ठोंमें इस जातिके ज्योतिर्धरोंके नाम और उनकी महान् सेवाएँ स्वर्णाक्षरोंमें अङ्कित हैं और रहेगी। उनकी वीर महिलाएं देह-मूर्छाको त्यागकर यदि शील रक्षाके निमित्त जीवन-सर्वस्व पतिदेवके वियोगमे अपनी प्रेम भावनाको चिरस्मरणीय एवं चिरस्थायी रखनेके हेतु धधकते हुए वैश्वानरमें पतिदेहके साथ हँसते-हँसते प्राण निछावर करदें तो आश्चर्य ही क्या है ?

जैनधर्मकी दृष्टिसे तो सती-दाह मोह-ग्रथित एव अज्ञान-जन्य आत्मघात* ही है, पर स्वयं क्षत्रिय होनेसे वीरोचित जातीय संस्कार वश, वीर राजपूत जातिके अभिन्न सपर्क एवं घनिष्ट सम्बन्धमें रहनेके कारण यह प्रथा ओसवाल जातिमें भी प्रचलित थी, जिसके प्रमाण स्वरूप यत्र-तत्र अनेक सती देवलिएँ इस जातिकी सतियोंकी पाई जाती है।

बीकानेरमे अन्वेषण करने पर हमे २८ ओसवाल सतियोंका पता चला है जिनमेंसे दोके लेख अस्पष्ट एवं नष्ट हो जानेसे नहीं दिये जा सके। दो स्मारकोंके लेख दिये है जिनकी देवलिया नहीं मिली इस प्रकार २४ देवलियोंके व २ स्मारकोंके कुल २६ लेख प्रकाशित किये है। इन लेखोंमे सर्व प्रथम† लेख सं० १५५७ का और सबसे अंतिम लेख स० १८६६का है जिससे यह पता चलता है कि बीकानेरकी राज्यस्थापनासे प्रारभ होकर जहा तक सती प्रथा थी, वह अविच्छिन्न रूप से जारी थी। ऐसी सती-देवलिएं सैकडोंकी सख्यामें रही होगी पर पीछेसे उनकी देखरेख न रहनेसे नष्ट और इतस्ततः हो गई।

ओसवाल जातिकी सती देवलियोंके अतिरिक्त संग्रह करते समय मोदी, माहेश्वरी, अग्र-वाल, दरजी, सुनार प्रभृति इतर जातियोंके भी बहुतसे सती-देवल दृष्टिगोचर हुए। ओसवाल जातिके इन लेखोंमें कई-कई लेख बहुत विस्तृत और ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्वशाली हैं। कतिपय ओसवाल जातिके गोत्रोंका जो अब नहीं रहे, गोत्रोंकी शाखाओं, वंशावलियों, राजाओंके राज्य-काल आदिका पता लगता है।

---

* युगप्रधान दादासाहब श्री जिनदत्तसूरिजीके समयमें भी सती-प्रथा प्रचलित थी। पट्टावलियोंमें उल्लेख मिलता है कि जब वे झुँझणु पधारे, श्रीमाल जातिकी एक बाल-विधवा सती होनेकी तैयारीमें थी जिसे गुरुदेवने उपदेश द्वारा बचा कर जैन साध्वी बनाई थी। सतरहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध जैन योगिराज श्रीआनन्द-घनजी अपने "श्रीऋषभदेवस्तवन" में लिखते हैं कि—

"केई कत कारण काष्ट भक्षण करैं रे, मिलसु कन नै धाय।
ए मेलो नवि कइयइ समवै रे, मेलो ठाम न ठाय।"

† श्रद्धेय ओझाजी लिखित बीकानेरके इतिहासमें कौड़मदेसरके स० १५२९ माघ सुदि ५ के एक लेखका जिक्र है जिसमें साह रूदाके पुत्र सा० कपाकी मृत्यु होने और उसके साथ उसकी स्त्रीके सती होनेका उल्लेख है। सभवत: यह सती ओसवाल जातिकी ही होगी। वहां पारखोंकी सतीका स्मारक मदिर भी है पर अब उस पर लेख नहीं है।

सती-प्रथा और बीकानेर के जैन सती-स्मारक

सती-दाह की प्रथा भारतवर्षमें बहुत प्राचीन कालसे प्रचलित थी। वेद पुराण और इतिहासके प्राचीन ग्रन्थोंमें इस विषयके पर्य्याप्त प्रमाण मिलते हैं। इसका कारण तो पतिप्रेम और स्त्रियोंका पारलौकिक विश्वास अर्थात् स्वर्गमें अपने पतिसे मिलनेकी आकांक्षा थी। आर्यावर्त्त ही क्या ? चीन, जापान सिथियन्स और द्वीपसमूहमें भी यह प्रथा न्यूनाधिक प्रमाण और प्रवृत्त थी।

मुसलमानोंके शासनकालमें जबकि विधवाओंका पतिके युद्धमें मर जाने पर उसकी अनि यमानतामें शील-पालन महान् कठिन हो गया था, भद्र आर्य्य महिलाएं जबरदस्ती पकड़ कर बाँदियाँ बना ली जाती, उनका ब्रह्मचर्य खण्डन कर दिया जाता था, नाना प्रकारसे त्रास पहुंचाये जाते थे, ऐसी स्थितिमें शील रक्षाका साधन चिता-प्रवेश कर जाना आर्य्यमहिलाओंको बहुत ही प्रिय मालूम हुआ।

अपने पतिदेवके साथ सह-गमन, जौहर या अग्नि-प्रवेशको वीराङ्गनाएं महामाङ्गलिक और आवश्यक कर्त्तव्य समझती थी। वे लेश मात्र भी कायरता, भीरुता और मोह लाए बिना वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित होकर गाजे बाजेके साथ स्मशानको चिता-प्रवेशार्थ जुलूसके साथ जाते समय हाथके केसर-कुंकुमके छापे घरके प्रतोली-द्वार या स्तंभादि पर लगा कर जाती थी जिन्हें शिल्पकार द्वारा उत्कीर्ण करवाकर स्मारक* बना दिया जाता था। और स्मशानोंमें जहां अग्नि संस्कार होता था वहां चौकी, थड़ा देवली छत्री आदि× स्थापित एवं प्रतिष्ठित की जाती थी, जहां उनके गोत्रवाले सेवा-पूजा आदि किया करते हैं।

मूर्त्ति बनानेकी पद्धति भिन्न-भिन्न स्थानोंमें कई प्रकारकी थी। कलकत्ताके म्यूजियममें सती देवलियें अन्य ही तरहकी हैं किन्तु बीकानेरमें जितने भी सती-स्मारक प्राप्त हैं, सबमें घुड़ सवार पति और उसके समक्ष हाथ जोड़े हुए सती खड़ी है। जिसका पति विदेशमें मरा हो वह अपने हाथमें उसकी पगड़ी या नारियल लेकर सती होती थी। मूर्त्ति (देवली) के ऊपर साक्षी स्वरूप चन्द्र और सूर्य्यका आकार भी उत्कीर्ण किया जाता था।

ओसवाल आदि वस्तुतः क्षत्रिय कौम है। उसके पूर्व-पुरुषोंने अपनी स्वामी-भक्ति और वीरता द्वारा गत शताब्दियोंमें राजपूतानाके राजनैतिक क्षेत्रका जिस कुशलताके साथ संचालन

---

* बीकानेरके पुराने किलेमें ऐसे बहुतसे छापे खुदे हुए हैं। पूज्य दानमलजी नाहटा की कोटड़ी में भी एकाएक स्मारक स्तंभ है जिसके सं १६८८ और सं १७१२ के दो लेख सती लेखोंके साथ इसी ग्रन्थमें दिये गये हैं, इन दोनोंकी देवलिए हमें नहीं मिली।

× सती स्मारकोंमें सबसे बड़ा स्मारक हमने झुंझनुमें देखा है जो बहुत विशाल स्थान पर कुआँ बगीचा, मंदिर व कमरोंकी इमारतें बनी हुई हैं। प्रतिदिन सैकड़ोंकी संख्यामें लोग एकत्र होते हैं और हजारों मील से यात्री लोग आया करते हैं। यह रानी सती अग्रवाल जातिकी है।

किया है, कभी भुलाया नहीं जा सकता। इतिहासके पृष्ठोंमें इस जातिके ज्योतिर्धरोंके नाम और उनकी महान् सेवाएँ स्वर्णाक्षरोंमें अङ्कित हैं और रहेगी। उनकी वीर महिलाएं देह-मूर्छाको त्यागकर यदि शील रक्षाके निमित्त जीवन-सर्वस्व पतिदेवके वियोगमे अपनी प्रेम भावनाको चिरस्मरणीय एवं चिरस्थायी रखनेके हेतु धधकते हुए वैश्वानरमे पतिदेहके साथ हँसते-हँसते प्राण निछावर करदें तो आश्चर्य ही क्या है ?

जैनधर्मकी दृष्टिसे तो सती-दाह मोह-ग्रथित एव अज्ञान-जन्य आत्मघात* ही है, पर स्वयं क्षत्रिय होनेसे वीरोचित जातीय संस्कार वश, वीर राजपूत जातिके अभिन्न सपर्क एवं घनिष्ट सम्बन्धमें रहनेके कारण यह प्रथा ओसवाल जातिमे भी प्रचलित थी, जिसके प्रमाण स्वरूप यत्र-तत्र अनेक सती देवलिएँ इस जातिकी सतियोंकी पाई जाती है।

बीकानेरमें अन्वेषण करने पर हमे २८ ओसवाल सतियोंका पता चला है जिनमेंसे दोके लेख अस्पष्ट एवं नष्ट हो जानेसे नहीं दिये जा सके। दो स्मारकोंके लेख दिये है जिनकी देवलिया नहीं मिली इस प्रकार २४ देवलियोंके व २ स्मारकोंके कुल २६ लेख प्रकाशित किये है। इन लेखोंमे सर्व प्रथम† लेख सं० १५५७ का और सबसे अंतिम लेख स० १८६६का है जिससे यह पता चलता है कि बीकानेरकी राज्यस्थापनासे प्रारभ होकर जहा तक सती प्रथा थी, वह अविच्छिन्न रूप से जारी थी। ऐसी सती-देवलिए सैकडोंकी संख्यामे रही होगी पर पीछेसे उनकी देखरेख न रहनेसे नष्ट और इतस्ततः हो गई।

ओसवाल जातिकी सती देवलियोंके अतिरिक्त संग्रह करते समय मोदी, माहेश्वरी, अग्रवाल, दरजी, सुनार प्रभृति इतर जातियोंके भी बहुतसे सती-देवल दृष्टिगोचर हुए। ओसवाल जातिके इन लेखोंमे कई-कई लेख बहुत विस्तृत और ऐतिहासिक दृष्टिसे महत्वशाली हैं। कतिपय ओसवाल जातिके गोत्रोंका जो अब नहीं रहे, गोत्रोंकी शाखाओं, वंशावलियों, राजाओंके राज्य-काल आदिका पता लगता है।

---

* युगप्रधान दादासाहब श्री जिनदत्तसूरिजीके समयमें भी सती-प्रथा प्रचलित थी। पट्टावलियोंमे उल्लेख मिलता है कि जब वे झुंझणु पधारे, श्रीमाल जातिकी एक बाल-विधवा सती होनेकी तैयारीमें थी जिसे गुरुदेवने उपदेश द्वारा बचा कर जैन साध्वी बनाई थी। सतरहवीं शताब्दीके सुप्रसिद्ध जैन योगिराज श्रीआनन्दघनजी अपने "श्रीऋषभदेवस्तवन" में लिखते हैं कि—

"केई कत कारण काष्ट भक्षण करैं रे, मिलसु कन नै धाय।
ए मेलो नवि कइयइ सभवै रे, मेलो ठाम न ठाय।"

† श्रद्धेय ओझाजी लिखित बीकानेरके इतिहासमें कोडमदेसरके स० १५२९ माघ सुदि ५ के एक लेखका जिक्र है जिसमें साह रूदाके पुत्र सा० कपाकी मृत्यु होने और उसके साथ उसकी स्त्रीके सती होनेका उल्लेख है। सभवत यह सती ओसवाल जातिकी ही होगी। वहां पारखोंकी सतीका स्मारक मदिर भी है पर अब उस पर लेख नहीं है।

पतिके पीछे सती होनेकी प्रथा तो प्रसिद्ध ही है पर पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पुत्रके पीछे माता भी सती हुआ करती थी और लोक उसे भी वैसे ही आदरसे देखते और पूजा मान्यतादि करते हैं। बीकानेरके दो लेख इस आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण घटना पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। जिस प्रकार पतिके पीछे सती होनेमें पति प्रेमकी प्रधानता है उसी प्रकार मातसती होनेमें पुत्र-वात्सल्यकी। मजेकी बात तो यह है बीकानेरमें प्राप्त सर्व प्रथम और अंतिम दोनों देवलिए माता—सतियोंकी हैं, अर्थात् प्रारंभ और अंत दोनों माता सतियोंसे है। ऐसी माता सती का एक लेख माहेश्वरी जाति का भी देखने में आया है।

बीकानेर की कई सती देवलियें बड़ी चमत्कारी और प्रभावशाली हैं। उनके सम्बन्ध में अनेकों चमत्कारी प्रवाद सुने जाते हैं। कई सतियों के चमत्कार आज भी प्रत्यक्ष हैं। ओसवाल सतियों की इतर जातिवाले भी श्रद्धापूर्वक मान्यता करते हैं। कई सतियों की जात, मान्यतादि उनके वंशज व गोत्र वाले अब तक करते हैं साधारणतया उनकी व्यवस्था ठीक ही है परन्तु कतिपय देवलियों की अवस्था इतनी सोचनीय है कि लोग उनके चारों तरफ कूड़ा कर्कट और मेहतर लोग विष्ठा तक डाल देते हैं देवलियां अकूड़ियों में गड़ गई है और पैरों तले रौंदी जाती है। उनके गोत्रजों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कई सती-देवलियोंके लेख घिस गए, खंडित हो गए, जमीनमें दब गए और जो अशुद्ध एवं अस्पष्ट हैं उन लेखों की नकल कर संग्रह करने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। किसी किसी लेख को पढ़ने में घण्टों समय लग गया है। मध्याह्न की कड़ी धूप में गड़ी हुई देवलियों के लेखों को खोद कर, धोकर रंगभर कर अविकल नकल करने में जो परिश्रम हुआ है, उसे भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकते हैं। सभी देवलियां एक स्थान में तो हैं ही नहीं कि जिससे थोड़े समय में संग्रह-कार्य सम्पन्न हो जाय अतः इन लेखों को बीकानेर के चारों ओर श्मशानों में, बगीचियों में और ऐसे स्थानों में जहां साधारण व्यक्ति जाने का साहस ही नहीं कर सकता, घूम फिर कर संग्रह किये गये हैं। लेखों को खोज कर संग्रह करने में श्रीयुक्त मेघराजजी नाहटा का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है, उनके सहयोग के बिना यह काम होना अशक्य था।

प्रस्तुत लेखों को संग्रह करते समय दो ओसवाल जोमिया जूझारों की देवलियां दृष्टिगोचर हुई जिनके लेख भी इसी संग्रह में दिये गये हैं।

सती-प्रथाका अवसान

पूर्वकाल में पतिके रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त कर जाने पर उनकी स्त्रियां पतिकी देह या मस्तक और उसकी अविद्यमानता में उसकी पगड़ी के साथ सच्चे प्रेमसे चिता प्रवेश करती थीं और पीछेसे विशेष कर यह एक रूढ़िमात्र रह गई थी। जीते हुए स्वेच्छा से धधकती अग्नि में प्रवेश कर जल मरना साधारण कार्य नहीं है और सती होनेवाली प्रत्येक स्त्रीका हृदय इतना सबल होना संभव नहीं है। पर लोगोंने इसे एक बड़ा महत्वपूर्ण आदर्श और आवश्यक कार्य मान

लिया था, अतः जो इस तरह स्वेच्छा से सती नहीं होती थी उसे हीन दृष्टिसे देखते थे और जबरन सती होनेको बाध्य किया जाता था। यावत् बलपूर्वक शस्त्रादि अनेक प्रयोग द्वारा सह-मरण कराया जाने लगा था। एवं स्त्रिया भी यशाकाक्षा से युद्धमे न मरके स्वाभाविक मौतसे मरे हुए पतिके पीछे भी और कई अनिच्छा होते हुए भी लोक लाज वश सतिया होने लगीं। ऐसी स्थितिमे सती-दाह होनेका दृश्य वड़ा ही दारुण और नेत्रों से न देख सकने योग्य हुआ करता था। इस दशामे उस प्रथाको वंद करने का प्रयत्न होना स्वाभाविक ही था।

मुसलमान सम्राटोंमे सम्राट अकवर स्वभावतः दयालु था। सती प्रथाको रोकनेके लिए उसने पर्याप्त चेष्टाकी पर तत्कालीन वातावरण एव कई कारण-वश उसे सफलता न मिली। इसके वाद सन् १७९० में ईष्ट इण्डिया कम्पनीके गवर्नर मार्क्विस कार्नवालिसने सर्व प्रथम इस प्रथाको रोकनेकी ओर ध्यान दिया। इसके वाद सन् १८१३ मे गवर्नर लार्ड मिण्टोने सरक्यूलर जारी किया, किन्तु इससे इस प्रथाकी किञ्चित् भी कमी न होकर उस वर्ष केवल दक्षिण वगालमे ६०० सतिया हुईं। राजा राममोहनराय और द्वारकानाथ ठाकुर जैसे देशके नेताओंने भी इस प्रथाको रोकनेका प्रयत्न किया। इसके वाद लार्ड विलियम वैंटिकने इस प्रथाको वन्द करनेके लिए सन् १८२९ मे ७ दिसम्बरका कलकत्ता गजटमे १७ रेग्यूलेसन (नियम) वनाकर प्रकाशित किये। इस तरह बंगालके वाद सन् १८३० में मद्रास और वम्बई प्रान्तमे भी यह नियम जारी कर दिया गया। गवर्नर जनरल ऑकलेण्डने सन् १८३६ मे उदयपुर राज्यमे भी यह नियम वनवा दिया, तत्कालीन गवर्नरोंमे न्यायाधीशों और सभ्य लोगोंसे भी इस कार्य्यके लिए पर्याप्त सहाय्य लिया। सन् १८०० मे कोटेमे भी सती प्रथा वंद करा दी गई किन्तु इस प्रथाको रोकनेमे बहुत परिश्रम उठाना पड़ा। कई सतिया जवरदस्ती कर, समझा-बुझाकर रोकी गईं। सन् १८४६ के २३ अगस्तको जयपुर राज्यने भी यह कानून पास कर दिया। वीकानेरमे भी अन्य स्थानोंकी तरह सती-प्रथा और जीवित समाधिका बहुत प्रचार था, वहा भी सन् १९०३ में बन्द करनेकी चेष्टाकी गई। गवर्नरोंके कानून जारी कर देनेपर भी राजालोग इस प्रथाको बन्द करनेमे अपने धर्मकी हानि समझते थे, अतः इस प्रथाको नष्ट करनेमे वे लोग असमर्थता प्रकट करते रहे। तब अंग्रेजी सरकारके पालिटीकल ऑफिसरोंने उनका विशेषरूपसे ध्यान आकर्षित किया, जिससे बीकानेर नरेश महाराजा सरदारसिंहजीने भी स० १९११ (ईस्वी सन् १८५४) मे निम्नोक्त इश्तिहार जारी किया और सती प्रथा एवं जीवित समाधिको बन्द कर दी।

" सती होनेको सरकार अंग्रेजी आत्मघात और हत्याका अपराध समझती है, इसलिए इस प्रथाको बन्द कर देनेके लिए सरकार अंग्रेजीकी बड़ी ताकीद है अस्तु, इसकी रोकके लिए इश्तहार जारी हुआ है किन्तु करनल सर हेनरी लेरेन्सने सती होनेपर उसको न रोकनेवाले व सहायता देने वालेको कठोर दण्ड देनेके लिए खरीता भेजा है अतः सब उमराव, सरदार, अहल-कार, तहसीलदारो, थानेदारों, कोतवालो, भोमियों, साहूकारों, चौधरियों और प्रजाको श्रीजी हजूर आज्ञा देते है कि सती होनेवाली स्त्रीको इस तरह समझाया करे कि वह सती न हो सके

पतिके पीछे सती होनेकी प्रथा तो प्रसिद्ध ही है पर पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि पुत्रके पीछे माता भी सती हुआ करती थी और लोक उसे भी वैसे ही आदरसे देखते और पूजा मान्यतादि करते हैं। बीकानेरके दो लेख इस आश्चर्यजनक और महत्वपूर्ण घटना पर अच्छा प्रकाश डालते हैं। जिस प्रकार पतिके पीछे सती होनेमें पति प्रेमकी प्रधानता है उसी प्रकार मातृसती होनेमें पुत्र-वात्सल्यकी। मजेकी बात तो यह है बीकानेरमें प्राप्त सर्व प्रथम और अंतिम दोनों देवलिये माता—सतियोंकी हैं, अर्थात् प्रारम और अंत दोनों माता-सतियोंसे है। ऐसी माता सती का एक लेख माहेश्वरी जाति का भी देखने में आया है।

बीकानेर की कई सती देवलियें बड़ी चमत्कारी और प्रभावशाली हैं। उनके सम्बन्ध में अनेकों चमत्कारी प्रवाद सुने जाते हैं। कई सतियों के चमत्कार आज भी प्रत्यक्ष हैं। ओसवाल सतियों की इतर जातिवाले भी श्रद्धापूर्वक मान्यता करते हैं। कई सतियों की जात, मान्यतादि उनके वंशज व गोत्र वाले अब तक करते हैं साधारणतया उनकी व्यवस्था ठीक ही है परन्तु कतिपय देवलियों की अवस्था इतनी शोचनीय है कि लोग उनके चारों तरफ कूड़ा कर्कट और मेहतर लोग विष्ठा तक डाल देते हैं, देवलियां अकुड़ियों में गड़ गई है और पैरों तले रौंदी जाती है। उनके गोत्रजों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

कई सती-देवलियोंके लेख घिस गए, खंडित हो गए, जमीनमें दब गए और जो अशुद्ध एवं अस्पष्ट हैं उन लेखों की नकल कर संग्रह करने में बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। किसी किसी लेख को पढ़ने में घण्टों समय लग गया है। मध्याह्न की कड़ी धूप में गड़ी हुई देवलियों के लेखों को खोद कर, धोकर रंगभर कर अविकल नकल करने में जो परिश्रम हुआ है उसे भुक्तभोगी ही अनुभव कर सकते हैं। सभी देवलियां एक स्थान में तो है ही नहीं कि जिससे थोड़े समय में संग्रह-कार्य सम्पन्न हो जाय अतः इन लेखों को बीकानेर के चारों ओर श्मशानों में, बगीचियों में और ऐसे स्थानों में जहां साधारण व्यक्ति जाने का साहस ही नहीं कर सकता, घूम फिर कर संग्रह किये गये हैं। लेखों को खोज कर संग्रह करने में श्रीयुक्त भैंवरलालजी नाहटा का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है, उनके सहयोग के बिना यह काम होना अशक्य था।

प्रस्तुत लेखों को संग्रह करते समय दो ओसवाल भोमिया जूम्झारों की देवलियां दृष्टिगोचर हुई जिनके लेख भी इसी संग्रह में दिये गये हैं।

सती प्रथाका अवसान

पूर्वकाल में पतिके रणक्षेत्र में वीरगति प्राप्त कर जाने पर उनकी स्त्रियां पतिकी देह या मस्तक और उसकी अविद्यमानता में उसकी पगड़ी के साथ सच्चे प्रेमसे चिता प्रवेश करती थीं और पीछेसे विशेष कर यह एक रूढ़िमात्र रह गई थी। जीते हुए स्वेच्छा से धधकती अग्नि में प्रवेश कर जल मरना साधारण कार्य नहीं है और सती होनेवाले प्रत्येक स्त्रीका हृदय इतना सबल होना संभव नहीं है। पर लोगोंने इसे एक बड़ा महत्वपूर्ण आदर्श और आवश्यक कार्य मान

उसे हीन दृष्टिसे देखते थे और
[illegible] जो इस तरह स्वेच्छा से सती नहीं होती थी यातन तत्कालिक शस्त्रादि अनेक प्रयोग द्वारा सह-
गमन करनेको बाध्य किया जाता था। यवन तत्कालिक शस्त्रादि ... युद्धमें न मरके स्वाभाविक मौतसे
[illegible] जाने लगा था। एवं स्त्रियां भी [illegible] सतियां होने लगीं।
[illegible] पीछे भी और कई अनिच्छा होते हुए भी लोक लाज वश ... न देख सकने योग्य हुआ
[illegible] सतीन्दाह होनेका दृश्य बड़ा ही दारुण और नेत्रों से ... स्वाभाविक ही था।
[illegible] इस दशामें इस प्रथाको बंद करने का प्रयत्न होना ... सती प्रथाको रोकनेके लिए
मुसलमान सम्राटोंमे सम्राट अकबर स्वभावतः दयालु था। ... सफलता न मिली। इसके
[illegible] चेष्टाकी पर तत्कालीन वातावरण एवं [illegible] कारण-वश बड़ी सफलता ... इस प्रथाको
बाद सन् १७९० में ईस्ट इण्डिया कम्पनीके गवर्नर मार्क्विस कार्नवालिसने सर्व प्रथम इस प्रथाको
रोकनेकी ओर ध्यान दिया। इसके बाद सन् १८१२ मे गवर्नर लार्ड मिण्टोने सरक्यूलर जारी
किया, किन्तु इससे इस प्रथाकी किञ्चित् भी कमी न होकर उस वर्ष केवल दक्षिण बंगालमें ६००
सतियां हुईं। राजा राममोहनराय और द्वारकानाथ टागुर जैसे देशके नेताओंने भी इस प्रथाको
रोकनेका प्रयत्न किया। इसके बाद लार्ड विलियम बैंटिकने इस प्रथाको बन्द करनेके लिए सन्
१८२९ मे ७ दिसम्बरका कलकत्ता गजटमें १७ रेग्यूलेशन (नियम) बनाकर प्रकाशित किये।
इस तरह बंगालके बाद सन् १८३० मे मद्रास और बम्बई प्रान्तोंमे भी यह नियम जारी कर दिया
गया। गवर्नर जनरल ऑकलेण्डने सन १८३६ मे उदयपुर राज्यमे भी यह नियम बनवा दिया,
तत्कालीन गवर्नरोंमे न्यायाधीशों और सभ्य लोगोंसे भी इस कार्यके लिए पर्याप्त सहायता
लिया। सन् १८०० मे कोटेमे भी सती प्रथा बंद करा दी गई किन्तु इस प्रथाको रोकनेमें बहुत
परिश्रम उठाना पडा। कई सतिया जबरदस्ती कर, समझा-बुझाकर रोकी गईं। सन् १८४६ के
२३ अगस्तको जयपुर राज्यने भी यह कानून पास कर दिया। बीकानेरमें भी अन्य स्थानोंकी
तरह सती-प्रथा और जीवित समाधिका बहुत प्रचार था, यहां भी सन् १६०२ मे बन्द करनेकी
चेष्टाकी गई। गवर्नरोंके कानून जारी कर देनेपर भी राजालोग इस प्रथाको बन्द करनेमे अपने
धर्मकी हानि समझते थे, अत. इस प्रथाको नष्ट करनेमे वे लोग असमर्थता प्रकट करते रहे।
तब अंग्रेजी सरकारके पालिटीकल ऑफिसरोंने उनका विशेषरूपसे ध्यान आकर्षित किया,
जिससे बीकानेर नरेश महाराजा सरदारसिंहजीने भी स० १९११ (ईस्वी सन् १८५४) मे
निम्नोक्त इश्तिहार जारी किया और सती प्रथा एवं जीवित समाधिको बन्द कर दी।

"सती होनेको सरकार अंग्रेजी आत्मघात और हत्याका अपराध समझती है, इसलिए
इस प्रथाको बन्द कर देनेके लिए सरकार अंग्रेजीकी बड़ी ताकीद है अस्तु, इसकी रोकके लिए
इश्तहार जारी हुआ है किन्तु करनल सर हेनरी लेरेन्सने सती होनेपर उसको न रोकनेवाले व
सहायता देने वालेको कठोर दण्ड देनेके लिए खरीता भेजा है अतः सब उमराव, सरदार, अहल-
कार, तहसीलदारों, थानेदारों, कोतवालों, भोमियो, साहूकारो, चौधरियों और प्रजाको श्रीजी
हजूर आज्ञा देते हैं कि सती होनेवाली स्त्रीको इस तरह समझाया करे कि वह सती न हो सके

और उसके घरवालों व सम्बन्धियों आदिको कहा जाय कि वे इस कार्यमें उसके सहायक न हों। स्वामी आदि जीवित समाधि लेते हैं, उस रसमको भी बन्दकी जाती है। अब कदाचित् सती होने व समाधि लेने वालोंको सरदार, जागीरदार, अहलकार, तहसीलदार, थानेदार, कोतवाल और राज्यके नौकर मना न करेंगे तो उनको नौकरीसे पृथक् कर जुर्माना किया जायगा, एवं सहायता देने वालोंको अपराधके अनुसार कैदका कठोर दण्ड दिया जायगा।"

उपर्युक्त बातोंसे स्पष्ट है कि भारतवर्षमें सती प्रथा इन प्रयत्नोंसे बिलकुल बन्द हो गई। जहां वर्षमें हजारों सतीदाह हुआ करते थे, वहां १० २० वर्षमें दो चार सती हो भी जाय तो नगण्य है। मास्टर पारसचन्दके कथनानुसार☉ तो अब भी भारतवर्षमें १ लाख सती चौरे हैं। यह भारतीय महिलाओंके कठोर पातिव्रत धर्म एवं सतीव्रत पालनका ज्वलन्त उदाहरण है। इन लेखोंमें बहुतसे जैन आदियोंको भी होंगे॰। इन्हें संग्रह कर प्रकाशित करनेसे जातीय-इतिहास एवं सती-प्रथाके अनुमान आंकनेमें अच्छी सहायता मिल सकती है। हम आगे लिख चुके हैं कि सतियों की देवलियें स्थानभ्रष्ट होकर यत्र तत्र बिखरी हुई भी बहुत-सी पाई जाती हैं। बड़ा ही अच्छा हो यदि इन्हें समहीत कर एक संग्रहालयमें सुरक्षित रखा जाय। यह कार्य इतिहासमें सहायक होनेके साथ साथ भारतकी एक अतीत संस्कृतिका चिरस्थायी स्मारक होगा।

लेखोंका वर्गीकरण

(संवतानुक्रम)

नं०	संवत् मिती	पतिनाम	गोत्र	सतीनाम	गोत्र	पितृनाम	लेखाङ्क
१	सं० १५२१ मा० सु० ५	रूपा	बहुरा	कउतिगदे			२८
२	सं० १५५७ ज्येष्ठ सु० ६		वैद	माणकदे माताससी			१
३	सं० १६६४ आ० व० ७	भूणा	लूंकड़	जेठी	बाफणा	खीवा	२६
४	सं० १६६६ वै० सु० १४ म०	सचियावदास	"	सुजाणदे			२
५	सं० १६८० आ० प्र० सु० १३	दीपचन्द	बहुरा	दुरगादे	पारख	मेहाजल	२०
६	सं० १६८८ मा० व० १४	पदमसी					२५
७	सं० १६६६ चै० सु० ८	देवीदास		दाडिमदे			४
८	सं० १७०५ ज्ये० व० ७	नारायणदास	पुगलिया (रांसेचा)	मचकादे	मुथा	रूपसी	७
९	सं० १७०५ मि० व० ७	वछमचन्द	बोथरा	कान्हा	रांका		१७

☉ सती प्रथा के सम्बन्ध में आपका एक लेख 'माधुरी' जुलाई सन् १९१७ के अंक में प्रकाशित हुआ था। इस विषय में विशेष जानने के इच्छुकों को यह अंक देखना चाहिए।

॰ श्री नाहरजी के जैन लेख संग्रह लेखांक ७१९ में फारसी का एक लेख प्रकाशित है जिसमें मेवाड़ी टोडर स्वामभूति भाभाशाह के भ्राता ताराचन्द के स्वर्गवासी होनेपर उनकी ४ स्त्रियों के सती होने का उल्लेख है। इसी प्रकार 'गुजरात नो पाटनगर, अहमदाबाद' के पृ० ६१४ में बादशाह जहांगीर के मामास्य ओसवाल कुंअरपाल सोनपाल के पुत्र रूपचन्द के पीछे ३ स्त्रियों के सती होने का लेख छपा है जो वहां दूधेश्वर की टांकी के पास कुएं पर विद्यमान है।

१० सं० १६०७ चै० सु० १३	मानसिंह	चोरवेड़िया महिमादे बोथरा दुर्जनमल		५
११ स० १७१३ आसो० व० ४	देवकरण			२६
१२ सं० १७२३	लखजी	वच्छावत	लखमादे चोरवेड़्या पदम	३०
१३ सं० १७२४ मि० व० ६	पासदत्त	नाहटा	वीरादेवी राजावल लुदा	२३
१४ स० १७२५ वै० व० १३	सुखमल वोहरा (अभोरा)		सोभागदे सुराणा दस्सू	१८
१५ सं० १७२७ ज्ये० व० ६	उत्तमचन्द	कूकड़चोपड़ा	ऊमादे	१६
१६ सं० १७३१ आ० सु० ११	पारस	वहुरा कोचर	पाटमदे संघवी दुर्जनमल	११
१७ सं० १७३७ फा० व० ६	केसरीचन्द	नाहटा	केसरदे	२२
१८ सं० १७४० वै० सु० १२	ईसरदास	बोथरा	अमोलखदे	१२
१६ सं० १७४२ फा० सु० ६	दुलीचन्द	मालू	जगीशादे	१६
२० सं० १७५१ आ० व० १२	विजयमल	संघवी	पीवसुखदे गोलछा	१३
२१ सं० १७५२ फा० सु० ६	गिरधरदास	वैद	मृगा बोथरा गोपालदास	३
२२ सं० १७६४ ज्ये० व० १३	हणूतमल	सिंघवी	सोभागदे घोडावत	१४
२३ सं० १७६४ मि० व० ७	आसकरण	सिंघवी	महिम	८
२४ सं० १७७७ मा० सु० २	मु० भारमल	वैद (?)	विमलादे	६
२५ सं० १७८३ आ० सु० १५	मुकनदास	भंडारी	महासुखदे	२७
२६ सं० १८१० आ० व० ११	श्रीचन्द	राखेचा	जगीसादे	१५
२७ सं० १८५१ आ० व० १५	कानजी	सुराणा	धाई मुहणोत गगाराम	६
२८ स० १८५१ चै० व० १०	गिरधारीलाल	दसाणी	चतरो कावड़त वच्छराज	२४
२६ सं० १८६० आ० सु० ८	सरूपचन्द	छाजेड	गंगा वेगाणी किनीराम	२१
३० स० १८६६ ज्ये० सु० १५	नैनरूप (पुत्र)	सुराणा	सवलादेवी	१०

विशेष ज्ञातव्य

१—लेखाङ्क २१ मे सती होने के १५ वर्ष वाद सं० १८७५ मे छत्री-देवली प्रतिष्ठित हुई।

२—लेख नं० १ और न०२६ में माता सतियों के लेख है।

३—लेखाङ्क १३, १४ और २१ की सतियों के पति क्रमश. नारायणा, आउवा और हैदरावाद मे स्वर्गस्थ हुए जिनकी पत्नियां यहा सती हुई। अंतिम तीन लेख कोडमदेसर, मोटावतो और मोरखाणाके है।

४—इन लेखो मे वैदो के ४, वहुरा कोचर १, वहुरा अभोरा १, सुराणा २, चोरड़िया १, पुगलिया राखेचा १, सिंघवी ३, कोठारी १, छाजेड १, बोथरा २, राखेचा १, मालू १, नाहटा २, दसाणी १, भंडारी १, वहुरा १, वच्छावत१, लूक्कड १, जाति के हैं। लेखाङ्क २५, २६ के स्मारक भी चोपडा कोठारियों के कहे जाते हैं।

५—लेखाङ्क १८ के पूर्वज पहले मेवाड देश के जावर ग्राम निवासी थे।

६—इन लेखों मे ३ कर्णसिंहजी (नं० ४, ५, १७), १ कर्णसिंहजी अनूपसिंहजी (न० २३) और २ सूरतसिंहजी (नं० १०, २१) के राज्यकाल के हैं।

७—यहा जिन लेखाङ्कों का निर्देश किया गया है वे इस ग्रथ के सीरियल नम्बर न होकर केवल सतियों के क्रमिक नम्बर है और उनका स्थान भी वहीं फुटनोट मे लिख दिया गया है।

और उसके परवालों व सम्बन्धियों आदिको कहा जाय कि वे इस कायमें उसके सहायक न हों। स्वामी आदि जीवित समाधि लेते हैं, इस रसमको भी बन्दकी जाती है। अब कदाचित् सती होने व समाधि लेने वालोंको सरदार, जागीरदार, अहलकार, तहसीलदार, थानेदार, कोतवाल और राज्यके नौकर मना न करेंगे तो उनको नौकरीसे पृथक् कर जुर्माना किया जायगा, एवं सहायता देने वालोंको अपराधके अनुसार कैदका कठोर दण्ड दिया जायगा।"

उपर्युक्त बातोंसे स्पष्ट है कि भारतवर्षमें सती प्रथा इन प्रयत्नोंसे बिलकुल बन्द हो गई। जहां वर्षमें हजारों सतीदाह हुआ करते थे, वहां १०-२० वर्षमें दो चार सती हो भी जाय तो नगण्य है। मास्टर पारसचन्दके कथनानुसार⊕ तो अब भी भारतवर्षमें १ लाख सती चौरे हैं। यह भारतीय महिलाशक्ति कठोर पातिव्रत धर्म एवं सतीप्रथा पालनका ज्वलन्त उदाहरण है। इन लेखोंमें बहुतसे जैन जातियोंकी भी होंगी*। इन्हें संग्रह कर प्रकाशित करनेसे जातीय-इतिहास एवं सती-प्रथाके अनुमान आंकनेमें अच्छी सहायता मिल सकती है। हम आगे लिख चुके हैं कि सतियों की देवलियें स्थानभ्रष्ट होकर यत्र तत्र बिखरी हुई भी बहुत-सी पाई जाती हैं। बड़ा ही अच्छा हो यदि इन्हें एकत्रित कर एक संग्रहालयमें सुरक्षित रखा जाय। यह कार्य इतिहासमें सहायक होनेके साथ साथ भारतकी एक अतीत संस्कृतिका चिरस्थायी स्मारक होगा।

लेखोंका वर्गीकरण

(संवतानुक्रम)

नं०	संवत् मिती	पतिनाम	गोत्र	सतीनाम	गोत्र	पितृनाम	लेखाङ्क
१	सं० १५२१ मा० सु० ५	रूपा	बहुरा	रूपसिंगदे			२८
२	सं० १५५७ ज्येष्ठ सु० ६		वैद	माणकदे भाखासती			१
३	सं० १६६४ आ० व० ७	मूणा	कूकड़	जेठी	भाफणा	सीवा	२६
४	सं० १६६६ वै० सु० १४ म०	सचियावदास	"	सुजाणदे			२
५	सं० १६८७ आ० प्र० सु० १३	दीपचन्द	बहुरा	दुरगादे	पारख	मेहाजल	२०
६	सं० १६८८ मा० व० १४	पदमसी					२५
७	सं० १६९६ चै० सु० ५	देवीदास		वाल्हिमदे			५
८	सं० १७०५ ज्ये० व० ७	नारायणदास	पुगलिया (रायसेणा)	नवलादे	मुणा	रूपसी	७
९	सं० १७०५ मि० व० ७	रतनचन्द	बोथरा	कान्हा	रांका		१७

⊕ सती प्रथा के सम्बन्ध में आपका एक लेख 'माधुरी' हाल के सन् १९१७ के अंक में प्रकाशित हुआ था। इस विषय में विशेष जानने के इच्छुकों को वह अंक देखना चाहिए।

* श्री नाहरजी के जैन लेख संग्रह लेखांक ७१९ में सतीकी का एक लेख प्रकाशित है जिसमें मेवाड़ी उद्धारक स्वामिभक्ति भामाशाह के भ्राता कावेड़िया ताराचन्द के स्वर्गवासी होनेपर उनकी ४ स्त्रियों के सती होने का उल्लेख है। इसी प्रकार गुजरात नो पाटनगर अहमदाबाद" के पृ० ११८ में सम्राट जहांगीर के मामास्त कोचर कुंअरपाल सोनपाल के पुत्र रूपचन्द के पीछे १ स्त्रियों के सती होने का लेख छपा है जो वहां दूधेश्वर की टांके के पास स्तूप पर विद्यमान है।

१० सं० १७०७ चै० सु० १३ मानसिंह चोरवेड़िया महिमादे बोथरा दुर्जनमल
११ सं० १७१३ आसो० व० ४ देवकरण ५
१२ सं० १७२३ लखजी २६
१३ स० १७२४ मि० व० ६ पासदत्त बच्छावत लखमादे चोरवेड्या पदम ३०
१४ स० १७२५ वै० ब० १३ नाहटा बोरादेवी राजावल लुंदा २३
१५ सं० १७७७ ज्ये० व० ६ सुखमल बोहरा (अभोरा) सोभागदे सुराणा दस्सू १८
१६ स० १७३१ आ० सु० ११ उत्तमचन्द कुकड़चोपड़ा ऊमादे १६
१७ सं० १७३७ फा० व० ६ पारस बहुरा कोचर पाटमदे संघवी दुर्जनमल ११
१८ सं० १७४० वै० सु० १२ केसरीचन्द नाहटा केसरदे २२
१६ सं० १७४२ फा० सु० ६ ईसरदास बोथरा अमोलखदे १२
२० सं० १७५१ आ० व० १२ दुलीचन्द मालू जगीशादे १६
२१ सं० १७५२ फा० सु० ६ विजयमल संघवी पीवसुखदे गोलछा १३
२२ सं० १७६४ ज्ये० व० १३ गिरधरदास वैद मृगा बोथरा गोपालदास ३
२३ सं० १७६४ मि० व० ७ हणूतमल सिंघवी सोभागदे घोड़ावत १४
२४ सं० १७७७ मा० सु० २ आसकरण सिंघवी महिम ८
२५ सं० १७८३ आ० सु० १५ मु० भारमल वैद (?) विमलादे ४
२६ सं० १८१० श्रा० ब० ११ मुकनदास भंडारी महासुखदे २७
२७ सं० १८५१ आ० व० १५ श्रीचन्द राखेचा जगीसादे १५
२८ सं० १८५१ चै० ब० १० कानजी सुराणा धाई मुहणोत गंगाराम ६
२६ सं० १८६० श्रा० सु० ८ गिरधारीलाल दसाणी चतरो कावड़त बच्छराज २४
३० सं० १८६६ ज्ये० सु० १५ सरूपचन्द छाजेड गंगा वेगाणी किनीराम २१
नैनरूप (पुत्र) सुराणा सबलादेवी १०

विशेष ज्ञातव्य

१—लेखाङ्क २१ मे सती होने के १५ वर्ष बाद सं० १८७५ में छत्री-देवली प्रतिष्ठित हुई।

२—लेख नं० १ और न०२६ में माता सतियो के लेख है।

३—लेखाङ्क १३, १४ और २१ की सतियों के पति क्रमशः नारायणा, आउवा और हैदरा-बाद मे स्वर्गस्थ हुए जिनकी पत्नियां यहां सती हुईं। अंतिम तीन लेख कोडमदेसर, मोटावतो और मोरखाणाके है।

४—इन लेखों में वैदों के ४, बहुरा कोचर १, बहुरा अभोरा १, सुराणा २, चोरड़िया १, पुगलिया राखेचा १ सिंघवी ३, कोठारी १, छाजेड १, बोथरा २, राखेचा १, मालू १, [illegible] २, दसाणी १, भंडारी १, बहुरा १, बच्छावत१, लूकड़ १, जाति के हैं। लेखाङ्क २५, [illegible] भी चोपडा कोठारियों के कहे जाते हैं।

५—लेखाङ्क १८ के पूर्वज पहले मेवाड देश के जावर ग्राम निवासी थे।

६—इन लेखों मे ३ कर्णसिंहजी (नं० ४, ५, १७), १ कर्णसिंहजी [illegible] २३) और २ सूरतसिंहजी (न० १०, २१) के राज्यकाल के हैं।

७—यहां जिन लेखाङ्कों का निर्देश किया गया है वे इस ग्रंथ [illegible] केवल सतियों के क्रमिक नम्बर है और उनका स्थान भी वहीं [illegible]

श्री सुसाणी माताका मन्दिर, मोरखाणा

बीकानेर से लगभग १२ कोश व देशनोक से १२ मील दक्षिण-पूर्वकी ओर मोरखाणा नामक प्राचीन स्थान है। यहाँ सुराणोंकी कुलदेवी सुसाणी माताका मन्दिर पर्याप्त प्रसिद्ध है। यहाँके अभिलेखों से विदित होता है कि विक्रम की बारहवीं शतीमें सुसाणी माताका मन्दिर विद्यमान था और दूर-दूरसे यात्री लोग यहाँ आकर मान्यता करते थे। सं० १५७३ में संघपति शिवराज द्वारा अपनी सम्यग्दृष्टि गोत्र देवीके उत्तुंग शिखरी देव विमान सदृश मन्दिर बनवाने का उल्लेख मन्दिर में लगे हुए श्याम पाषाण की पट्टिका पर उत्कीर्णित लेखमें पाया जाता है। किन्तु मन्दिर का दूसरा लेख सं० १२२६ का है जो लोहलाकोट से आई हुई मोहिलाहिणी के याचकोंप सुसाणीदेवीको आराधन करने का उल्लेख है। अतः उपर्युक्त उल्लेख मन्दिरके जीर्णोद्धार या पुनर्निर्माण का होना सम्भव है। इसकी प्रतिष्ठा (धर्मघोष गच्छनायक) जैनाचार्य श्री पद्मानन्दसूरिके पट्टधर भ० श्री नन्दिवर्द्धनसूरिके करकमलों से हुई थी। सन् १९१६ में डा० एल० पी० टैसीटरी साहब ने मोरखाणा स्थान का निरीक्षण किया और यहाँके प्राचीन शिलालेखों की छापें संग्रहीत की थीं। उन्होंने सन् १९१७ के एसियाटिक सोसाइटी के जर्नल में यहाँके कतिपय अभिलेख तथा सुसाणी माताके मन्दिरका परिचय प्रकाशित किया था जिससे तत्सम्बन्धी कई बातोंकी जानकारी प्राप्त होती है। टैसीटरी साहब की मोरखाणा की फाइल में हमने एक लेख कुटिललिपि का भी देखा था संभवतः वह गोवर्द्धन का लेख होगा। मोरखाणा में मन्दिर व कुएं के आस-पास बीसों सती मूञ्झरादि की देवलियें विद्यमान हैं जिनके लेख सिन्दूरादि की तह जम जानेसे अस्पष्ट हो चुके। यहाँकी एक बच्छावतों की सतीका लेख हमने लेखांक २१०१ में प्रकाशित किया है, जिसके अतिरिक्त सभी देवलियें जैनेतर-राजपूत जातिकी होनी चाहिए।

माताजी का मन्दिर ऊंचा, सुन्दर और जेसलमेरी पत्थर द्वारा निर्मित है। इसके पट पहल तथा भीतर शैलीके स्तंभ एवं प्रवेशद्वारकी कोरणी चूना पुताई होनेसे अवरुद्ध हो गई है। यही हाल मन्दिर की दीवाल पर उत्कीर्णित नर्त्तकियों और देवी देवताओं की मूर्त्तियों का है।

सुसाणी माताके सम्बन्ध में एक प्रचलित प्रवाद को डा० टैसीटरी साहब ने भी प्रकाशित किया है—कि सुसाणी नागौर के सुराणों की लड़की थी जिसके सौन्दर्य से मुग्ध नवाब द्वारा पितासे याचना करने पर वंश व शील रक्षार्थ सुसाणी घरसे निकल भागी और मोरखाणा पहुँचने पर पीछा करते हुए नवाब के सेना सहित बिल्कुल निकट पहुँच जाने पर उसने पृथ्वी माताकी शरण ली। हम नहीं कह सकते कि यह बात कहां तक ठीक है, क्योंकि पृथ्वीराज चौहानके समय के तो सुसाणी माताके अभिलेख प्राप्त होते हैं, इससे पूर्व यहां मुसलमानों का राज्य कहीं नहीं था। हां! सिन्धमें मुसलमानों का शासन इस समय कहीं-कहीं हो गया था। कहा जाता है कि सुसाणी की सगाई दूगड़ों के यहाँ हो चुकी थी अतः सुराणा और दूगड़ दोनों गोत्रों वाले सुसाणी माताको सविशेष मानते हैं। सुसाणी माताके चमत्कार प्रत्यक्ष हैं। उनके वंशज गोत्रवाले आसोज और चैत्रकी नवरात्रि में यहाँ जाते हैं और मेला सा लग जाता है। बीकानेर शहर के बाहर सुराणों की बगीचीमें भी सुसाणी देवीका मन्दिर है जिसका लेख इसी ग्रन्थमें प्रकाशित है।

लौंका गच्छकी पट्टावली से ज्ञात होता है कि धर्मघोषसूरिने धारानगरी के पमारों को प्रतिबोध देकर सुरवंश की स्थापना की थी। उन्हींके वंशज नागौर आकर बसे, जहाँ उनके वंश का खूब विस्तार हुआ। सं० १२१२ में संघपति सतीदास के यहाँ सुसाणी माता हुई। सं० १२६९ में नागोर से मोरखाणा आकर अन्तर्हित हो सं० १२३२ में माताजी के रूपमें प्रकट हुई। माताजी ने सूरवंशी मोलाको स्वप्न में दर्शन दिया उसने देवालय का निर्माण करवाया।

पल्लू से प्राप्त जैन सरस्वती प्रतिमा, बीकानेर म्यूजियम
(परिचय प्रस्तावना पृ० १०३)

हाथों में पुष्पमाला धारी हैं, बाकी के हाथ सबके ऊँचे मस्तक के पास हैं। कवाणी के दूसरे बाजू में अर्थात् बायें ओर भी इसी प्रकार की मूर्त्तियां हैं परन्तु उसका (नीचे से) पहिला पुरुष लंबी दाढ़ी धारण किये हुए है। तीर्थंकरों के आले (गवाक्ष) के दूसरी तरफ मैं जो ग्रास हैं वे बाह्य भाग में है और उनके मुख से निकलते हुए दो पुरुष दोनों ओर दिखाये हैं जिनके एक पर का कुछ भाग मुख के अन्दर है।

परिकर का परिचय करा देने के पश्चात् अब मध्यवर्ती मूल प्रतिमा का परिचय दिया जाता है। इस सर्वांग सुन्दर सरस्वती मूर्त्ति के अंगविन्यास को देखकर हृदय नाचने लग जाता है। राजस्थान के जिस भावुक शिल्पी ने अपनी यह आदर्श साधना जनता को दी, वह अपना अज्ञात नाम सदा के लिये अमर कर गया। भगवती के लावण्य भरे मुखमण्डल पर गम्भीर, शान्त और स्थिर भाव विराजते हैं नेत्रों की सौम्य दृष्टि बड़ी ही भली मालूम देती है। लगता है कि जैसे नेत्रामृत वृष्टि से समस्त जगत् का अज्ञानान्धकार दूर कर हृदय में ज्ञान ज्योति प्रकट कर रही हो। कानों के ऊपरी भाग में मणि मुक्ता की ४ ४ लड़ी विराजित भँवरिया पहना हुआ है, दाहिन कान का यह आभूषण खंडित हो गया है। निम्न भाग में गुड़दे से पहिने हुए हैं जिनकी निर्माणशैली गुड़दे से कुछ भिन्न प्रतीत होती है। केशपाशों को सवार कर मस्तक पर जटाजूट सा दिखलाकर उस पर सुन्दर किरीट सुशोभित किया गया है। चोटी, पीछे बायें तरफ चली गई है जिसकी सूक्ष्म लम्बी चाली डोरी एवं चोटी के ऊपर नीचे, दो फुन्दे से दिखाये गये हैं। सरस्वती के सुन्दर और तीखे नाक पर कांटे, नाथ या किसी अन्य आभूषण का अभाव है जिससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में आर्यावर्त्त में इसकी प्रथा नहीं थी। गलेके सब बड़े सुहावने मालूम होते हैं गले में पहनी हुई हँसली और उसके नीचे झालरा या आड़ पहना हुआ है जिसके लम्बे-लम्बे लटकने हँसली के नीचे फिट हैं, दोनों कन्धों तक गया है। इसके बाद पहना हुआ ३ धगड़ों वाला सांकल का हार सीबीसांकलसे मिलता जुलता है जो उभय पुष्ट और उन्नत पयोधरों के ऊपर से होकर उदर तक आगया है। एक आभूषण न मालूम क्या है जो उभय स्तनों के मध्य से होकर आया है और उसके अन्दर से निकली हुई दो लड़ें स्तनों के नीचे से होकर पृष्ट भाग में चली गई हैं और तीनलड़ा जिजड़नदार सीबीसांकल तक आकर उसमें से निकला हुआ आभूषण कटिमेखला तक आगया है जो शरीर से १ इंच दूर है और खण्डित न हो, इस लिये मध्यवर्ती प्रस्तर खण्ड को संलग्न रहने दिया गया है। उदर, नाभि और कमर का लचीला और सुन्दर विन्यास बड़ा ही प्रेक्षणीय हुआ है। सरस्वती के ४ हाथ हैं सामने वाले हाथों को भुजाओं में तिलड़े, मध्य में त्रिकोण भुजबन्ध के नीचे पहिना हुआ आभरण बड़ा सुभग मालूम होता है। गोल बड़े-बड़े मणियों के बीच पिरोये हुए गुच्छ और लटकते हुए जेवर भाजबन्ध के भालरदार आमलेट को स्मरण कराये बिना नहीं रहते। इसके नीचे उभय हाथों में पीछे से आई हुई वैजयन्ती या दूर्वांकार ठेठ गोडों के नीचे तक चला गया है। हाथों में सांकल में लटकता गूघरा दिखाया है। कलाई में पहनी हुई चूड़ भाजबन्ध देखाय

पल्लू से प्राप्त जैन सरस्वती प्रतिमा, बीकानेर म्यूजियम
(परिचय प्रस्तावना पृ० १०३)

हाथों में पुष्पमाला धारी हैं, बाकी के हाथ सबके ऊँचे मस्तक के पास हैं। कमाणी के दूसरे बाजू में अर्थात् बायें ओर भी इसी प्रकार की मूर्तियाँ हैं परन्तु उसका (नीचे से) पहिला पुरुष छबी दाढ़ी धारण किये हुए है। सीमकर्ता के आले (गवाक्ष) के दूसरी तरफ में जो ग्रास है वे मध्य भाग में है और उनके मुख से निकलते हुए दो पुरुष दोनों ओर दिखाये हैं जिनके एक पैर का कुछ अंश मुख के अन्दर है।

परिकर का परिचय करा देने के पश्चात् अब मध्यवर्ती मूल प्रतिमा का परिचय दिया जाता है। इस सर्वांग सुन्दर सरस्वती मूर्ति के अंगविन्यास को देखकर हृदय नाचने लग जाता है। राजस्थान के जिस वास्तु-शिल्पी ने अपनी यह आदर्श साधना जनता को दी वह अपना अज्ञात नाम सदा के लिये अमर कर गया। भगवती के लावण्य भरे मुखमण्डल पर गम्भीर, शान्त और स्थिर भाव विराजते हैं नेत्रों की सौम्य दृष्टि बड़ी ही भली मालूम देती है। लगता है कि जैसे नेत्रामृत वृष्टि से समस्त जगत् का अज्ञानान्धकार दूर कर हृदय में ज्ञान ज्योति प्रकट कर रही हो। कानों के ऊपरी भाग में मणि मुक्ता की ४ ४ लड़ी विराजित भँवरिया पहना हुआ है, दाहिने कान का यह आभूषण खंडित हो गया है। निम्न भाग में गुड़दे से पहिने हुए हैं जिनकी निर्माणशैली गुड़दे से कुछ भिन्न प्रतीत होती है। केशपाशों को संवार कर मस्तक पर जटाजूट या शिखाकर उस पर सुन्दर किरीट सुशोभित किया गया है। चोटी, पीछे बायें तरफ चली गई है जिसकी सूक्ष्म ग्रन्थी वाली डोरी एवं चोटी के ऊपर नीचे, दो फुन्दे से दिखाये गये हैं। सरस्वती के सुन्दर और सीधे नाक पर कांटे, नाथ या किसी अन्य आभूषण का अभाव है जिससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में आर्यावर्त्त में इसकी प्रथा नहीं थी। गलेके सब बड़े सुहावने मालूम होते हैं गले में पहनी हुई हँसली और उसके नीचे झालरा या आड़ पहना हुआ है जिसके लम्बे-लम्बे लटकने हँसली के नीचे फिट हैं, दोनों कन्धों तक गया है। इसके बाद पहना हुआ २ मेगड़ी बाला साँकल का हार सीबीसाँकलसे मिलता जुलता है जो उभय पुष्ट और उन्नत पयोधरों के ऊपर से होकर उदर तक आगया है। एक आभूषण न मालूम क्या है जो उभय स्तनों के मध्य से होकर आया है और उसके अन्दर से निकली हुई दो लरें स्तनों के नीचे से होकर पृष्ठ भाग में चली गई हैं और तीनलड़ा विजाइनदार सीबीसाँकल तक आकर उसमें से निकला हुआ आभूषण कटिमेखला तक आगया है जो शरीर से १ इंच दूर है और खण्डित न हो, इसलिये मध्यवर्ती प्रस्तर खण्ड को संलग्न रहने दिया गया है। उदर, नाभि और कमर का लचीला और सुन्दर विन्यास बड़ा ही दर्शनीय हुआ है। सरस्वती के ४ हाथ हैं सामने वाले हाथों की मुद्राओं में तिरछे, मध्य में त्रिकोण भुजबन्ध के नीचे पहिना हुआ आभरण बड़ा सुभग मालूम होता है। गोल बड़े-बड़े मणियों के बीच पिरोये हुए वृत्त और लटकते हुए जेवर आजकल के झालरदार बाजूबंद को स्मरण कराये बिना नहीं रहते। इसके नीचे उभय हाथों [illegible] से आई हुई वैजयन्ती या पूर्णालंकार ठेठ गोडों के नीचे तक चला गया है। हाथों में [illegible] दिखाया है। कलाई में पहनी हुई चूड़ आजकल देहात

पल्लू की दो जैन सरस्वती-मूर्तियां

सरस्वती मूर्ति की ऊंचाई ३ फुट ५ इंच और सपरिकर ठीक ४ फुट ८ इंच है। परिकर मे उभयपक्ष मे दो स्तम्भ, तदुपरि तोरण अवस्थित है। परिकर में स्तम्भोपरि कोण, जो तीन श्रेणियों मे विभाजित है, मध्यवर्ती स्तंभ मे चार-चार देविया विराजमान है। जिनकी मूर्तिया भी सपरिकर, उभय पक्ष मे स्तंभ और ऊपर तोरण दिखाया गया है । इन सब के दो-दो हाथ है। मुद्रा लगभग, सबकी एक समान है। वाहन व आयुध भिन्न-भिन्न प्रकार के है। बाया पैर पृथ्वी पर रखा हुआ, दाहिना पैर बाये पैर की पिण्डुली पर रखे हुए वो अपने-अपने वाहन पर विराजमान है। केशपाश सबके संवारे हुए और जूडा बाये तरफ चला गया है। नीचे दाहिने से प्रथम मूर्ति के, साप वाहन और बायें हाथ में कुछ छबडी जेसा पात्र प्रतीत होता है, दाहिने हाथ मे साप सा मालूम होता है। दूसरी के पुरुष का सा वाहन और दाहिने हाथ मे अस्पष्ट वाद्य, बायें हाथ मे गोल ढाल जेसी वस्तु दिखाई देती है। तीसरी मूर्ति का वाहन वृषभ ? और दाहिने हाथ मे गदा, बायें हाथ मे पहले जैसा ढक्कनदार पात्र धारण किया हुआ है। चतुर्थ मूर्ति के शायद भैंसे जेसा वाहन और हाथ मे वज्र धारण किया है इन चारों सतोरण देवियों की बीच-बीच मे बंधनी गोलबंधी हुई है और कनडि मे लंबी पत्तिया बनी है इसके उभय पक्ष मे नीचे दोनों तरफ कतलिएं। ऊपर की खडी हुई परिचारिका स्तंभगत मध्यवर्ती दोनों देवियों के उभय पक्ष मे है जिनके तूर्णालकार कटिबंध व कमर मे लटकता हुआ कंदोला बना हुआ है। हाथों मे कमंडलु, कमलनाल, वज्र इत्यादि धारण किये हुए है। जटाजूट सबके मस्तकोपरि किरीट जैसे शोभायमान है तीसरी देवीके उभय पक्ष मे अलंकृत हाथी बने हुए हैं, जिनका आधा आधा शरीर देखने मे आता है। गण्डस्थलोपरि एक पैर जमा कर सिंह या ग्रास खडा है। दूसरी तरफ के स्तम्भ के ऊपर भी इसी प्रकार की चार बैठी और चार खड़ी हुई मूर्तिया है जिनमे बैठी मूर्तियों का वाहन महिष ? मयूर, वेदिका, हाथी व नीचे से अभय मुद्रा, पात्र, गदा पात्र नागपास ? और उसी प्रकार के आयुध है उभयपक्ष स्थित देविया भी नाना ढाल मुद्गरादि आयुध लिये खडी है।

तोरण के उभय पक्ष मे स्तम्भों के ऊपर कायोत्सर्ग ध्यानस्थ अर्हन्तबिंब खड़े है जिनके पहनी हुई धोती का चिह्न खूब स्पष्ट है इनके सार्दूलसिंह मुख के पास से निकली हुई कबाणी से सेमीसर्किल में तोरण बना है जिसके मध्य मे उभय पक्ष स्थित स्तम्भों वाले आले मे फिर कायो-त्सर्ग मुद्रा मे अर्हन्त प्रतिमा है। कबाणी के ऊपर दोनों तरफ चार-चार पुरुष एवं एक-एक स्त्री की मूर्ति है जिनका एक एक पैर स्पष्ट दिखाई देता है दूसरा पैर जंघा तक है बाकी कबाणी के पृष्ठ भाग मे है। पहला पुरुष दाहिने हाथ की दो अंगुली दिखा रहा है, बायें हाथ को ऊंचा किया हुआ है। दूसरा व्यक्ति हाथ की दो अंगुली जमीन से स्पर्श करता है, तीसरे के हाथ मे प्याले जैसा पात्र है, चौथी स्त्री है जिसके हाथ मे लम्बा दण्ड है, पांचवां पुरुष दोनो

बीकानेर की चित्रकला भी पर्याप्त समृद्ध और स्फूर्तिदायक रही है। यहां के भित्तिचित्र भी बड़े प्रसिद्ध हैं। राजमहलों में भित्तिचित्रों का प्रचुरता से निर्माण हुआ व जनसाधारण के घरों व मन्दिरों में भी सुन्दर कलाभिव्यक्ति हुई। प्राकृतिक एवं लोक जीवन से सम्बन्धित चित्र तथा मनोती काम करनेवाले चित्रकारों की दो विशिष्ट शाखायें थी। जिनमें मुस्लिम उस्त प्रधान थे। दूसर चित्रकार थे मथेरण जो लेखन व चित्रकला दोनों काम किया करते थे, आज भी इन्हीं दोनों जातियों का यह पेशा है। कतिपय जैन प्रतियां एवं विज्ञप्तिपत्र तथा भित्तिचित्र मथेरणों के निर्माण किये हुए उपलब्ध हैं। ये लोग रंग काम के अतिरिक्त विवाहादि में कागजों की सुन्दर बाग बाड़ियां भी निर्माण किया करते हैं। बीकानेर के मन्दिरों तथा उपाश्रयों में चित्र समृद्धि प्रचुरता से उपलब्ध है। उस्तों में भी स्थानवाली चित्रकारी का पेशा था, इनमें मुराद बख्श बड़ा प्रसिद्ध और कुशल चित्रकार था उसने जैनधर्म से सम्बन्धित चित्रकारी में ही अपना अधिकांश जीवन बिताया। बीकानेर के जैन मन्दिरों में महावीरजी में श्रीपाल चरित्र पृथ्वीचन्द्र गुणसागर चरित्र, महावीर चरित्र इत्यादि एवं मोहासरजी के सभामण्डप में सुदर्शनगढ़ मन्दिर, स्थूलिभद्र दीक्षा, सम्भूतिविजय का चातुर्मास आज्ञा-वितरण, भरत बाहुबलि युद्ध, ऋषभदेव १०० पुत्र प्रतिबोध, दादाबाड़ी चला शालिभद्र चरित्र के तीन चित्र, विजय सेठ-विजया सेठानी, इलाचीपुत्र, सुदर्शन सेठ चरित्र के दो चित्र तथा समवशरण कुल १६ विशाल चित्र हैं। इसके नीचे कारनिस में बीकानेर विज्ञप्तिपत्र का संपूर्ण चित्र है। गुम्बज के प्रथम आवर्त्त में बड़े-बड़े चित्रों में नेमिनाथ भगवानका चरित्र है। समुद्र विजयजी, उग्रसेन का महल, गिरनार, राजुल, सहस्राम्रवन, प्रभु का गिरनार गमन, पशुओं का बाड़ा, रथ फिराना कृष्ण बलभद्र इत्यादि। गुंबज के आवर्त्त में दादा साहब के जीवनचरित्र विषयक ११ चित्र हैं जिनमें जिनचन्द्रसूरि अकबर मिलन, अमावस की पूनम, पंचनदी साधन तथा श्रीजिनदत्तसूरि चरित्र सम्बन्धी अवशिष्ट चित्र हैं। गुंबज के सर्वोपरि कक्षमें तीर्थंकर चरित्र के १६ चित्र हैं। इनमें महावीर प्रभु के चण्डकौशिक उपसर्ग, संगम-कृत, कम ठोपसर्ग, नेमि-रथवाहन १४ राजलोक, मेरुपर्वत, केवलज्ञान निर्वाणादि के व प्रवेशद्वार पर जन्माभिषेक चित्र है। बाहरी गुंबज में जैनाचार्यों के चित्र हैं। सभामण्डप व समग्र जैन कथा साहित्य के बहुत से चित्र हैं। गौतम स्वामी की अष्टापद यात्रा, आमलकीक्रीड़ा, नरकयातना, वीर उपसर्ग, कमठोपसर्ग, जम्बू चरित्र, इलापुत्र वंकचूल, रोहणिया चोर, समवशरण, जिनालय, गुवा लियेका उपसर्ग श्रीपाल चरित्र के १० चित्र चंपापुरी, पावापुरी, समेतशिखर तीर्थ, जम्बूद्वीप, इन्द्र इन्द्राणी आदि अनेकों चित्र बीकानेरी चित्रकला के गौरवमय चित्र हैं। चूरू और बीकानेरके दूसरे सभी मंदिरों में भी सुन्दर चित्रकाम उपलब्ध है। सचित्र कल्पसूत्रादि की सैकड़ों सचित्र प्रतियों में कतिपय बीकानेरी कला की चित्रमय प्रतियां भी उपलब्ध हैं। सोनेका मनोती काम, कांच व मीने का काम भी दर्शनीय है। यहां सीमित स्थान में इन सब का विस्तृत परिचय संभव नहीं।

दुर्ग-प्रासाद और भवन निर्माण-कला भी बीकानेर की उन्नत है। बीकानेर का प्राचीन दुर्ग मंत्रीश्वर कर्मचन्द्र के तत्वावधान में निर्मित हुआ था एवं यहां की हवेलियां व पत्थर की कोरणी भी राजस्थान में प्रसिद्ध है। राज्यवर्ती सरदारशहर, रतनगढ़, चूरू इत्यादि नगरों के जैनों के विशाल प्रासाद भी प्रेक्षणीय हैं। अब यहां की सब श्रेष्ठ कलापूर्ण जैन सरस्वती मूर्त्तियों का परिचय कराया जाता है।

पल्लू से प्राप्त जैन सरस्वती प्रतिमा, बीकानेर म्यूजियम
(परिचय प्रस्तावना पृ० १०३)

हाथों में पुष्पमाला धारी हैं, बाकी के हाथ उनके ऊँचे मस्तक के पास हैं। कवाणी के दूसरे बाजू में अर्थात् वायें ओर भी इसी प्रकार की मूर्तियां हैं परन्तु उसका (नीचे से) पहिला पुरुष ऊंची दाढ़ी धारण किये हुए है। सीमकर्रों के बाजे (गवाक्ष) के दूसरी तरफ में जो ग्रास है व बाह्य भाग में है और उनके मुख से निकलते हुए दो पुरुष दोनों ओर दिखाये हैं जिनके एक पर का कुछ अंश मुख के अन्दर है।

परिकर का परिचय करा देने के पश्चात् अब मध्यवर्ती मूल प्रतिमा का परिचय दिया जाता है। इस सर्वांग सुन्दर सरस्वती मूर्ति के अंगविन्यास को देखकर हृदय नाचने लग जाता है। राजस्थान के जिस वास्तु शिल्पी ने अपनी यह आदर्श साधना जनता को दी, वह अपना अज्ञात नाम सदा के लिये अमर कर गया। भगवती के लावण्य भरे मुखमण्डल पर गम्भीर, शान्त और स्थिर भाव विराजते हैं नेत्रों की सौम्य दृष्टि बड़ी ही भली मालूम देती है। लगता है कि जैसे नेत्रामृत वृष्टि से समस्त जगत् का अज्ञानान्धकार दूर कर हृदय में ज्ञान ज्योति प्रकट कर रही हो। कानों के ऊपरी भाग में मणि मुक्ता की ४-४ लड़ी विराजित मँवरिया पहना हुआ है, दाहिने कान का यह आभूषण खंडित हो गया है। निम्न भाग में गुड़दे से पहिने हुए हैं जिनकी निर्माणशैली गुड़दे से कुछ भिन्न प्रतीत होती है। केशपाशों को संवार कर मस्तक पर जटाजूट सा दिखलाकर उस पर सुन्दर किरीट सुशोभित किया गया है। चोटी, पीछे बायें तरफ चली गई है जिसकी सूक्ष्म मन्थी वाली डोरी एवं चोटी के ऊपर नीचे, दो फुन्दे से दिखाये गये हैं। सरस्वती के सुन्दर और तीखे नाक पर काँटे, नाथ या किसी अन्य आभूषण का अभाव है जिससे ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में आर्यावर्त्त में इसकी प्रथा नहीं थी। गलेके सब बड़े सुहावने मालूम होते हैं गले में पहनी हुई हँसली और उसके नीचे झालरा या आड़ पहना हुआ है जिसके लम्बे-लम्बे लटकने हँसली के नीचे फिट हैं, दोनों कन्धों तक गया है। इसके बाद पहना हुआ ३ धगड़ी वाला सांकल का हार सीबीसांकलसे मिलता जुलता है जो उभय पुष्ट और उन्नत पयोधरों के ऊपर से होकर उदर तक आगया है। एक आभूषण न मालूम क्या है जो उभय स्तनों के मध्य से होकर आया है और उसके अन्दर से निकली हुई दो लड़ें स्तनों के नीचे से होकर पृष्ठ भाग में चली गई हैं और सीनलड़ा दिखाऊदार सीबीसांकल तक आकर उसमें से निकला हुआ आभूषण कटिमेखला तक आगया है जो शरीर से १ इंच दूर है और खण्डित न हो, इसलिये मध्यवर्ती प्रस्तर खण्ड को संलग्न रहने दिया गया है। उदर, नाभि और कमर का लचीला और सुन्दर विन्यास बड़ा ही प्रेक्षणीय हुआ है। सरस्वती के ४ हाथ हैं सामने वाले हाथों को भुजाओं में विलक, मध्य में त्रिकोण भुजबन्ध के नीचे पहिना हुआ आभरण बड़ा सुभग मालूम होता है। गोल बड़े-बड़े मणियों के बीच पिरोये हुए फूल और लटकते हुए जेवर आजकल के मालरदार आर्मलेट को स्मरण कराये बिना नहीं रहते। इसके नीचे उभय हाथों में पीछे से आई हुई वैजयन्ती या पुष्पालंकार ठेठ गोडों के नीचे तक चला गया है। हाथों में सांकल में लटकता गूघरा दिखाया है। कलाई में पहनी हुई चूड़ आजकल देहात

पल्लू से प्राप्त जैन सरस्वती प्रतिमा, बीकानेर म्यूजियम
(परिचय प्रस्तावना पृ० १०३)

युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिजी लिखित कर्मस्तव वृत्ति सं. १६११
(आचार्य पद से पूर्व)

शासनप्रभावक श्री जिनभद्र सूरिजी की हस्तलिपि
(सं. १४९१ लि. योगविधि)

मे पहने जाने वाली चाँदी की चूड से सर्वथा अभिन्न है। उसके आगे गूजरी और तीखी वंगडी जैसे कंकण पहिने हुए है। हाथों मे पहने हुए हथमाकला आजकल की तरह विकसित नहीं पर तत्कालीन प्रथा के प्रतीक अवश्य है। हाथ के अंगूठे और सभी अंगुलियोंमें अँगूठिया (मुद्रिकायें) पहनी हुई हैं। अँगुलियों का विन्यास बौद्धकालीन मुद्राओं में चित्रित लम्वी और तीखी अँगुलियों जैसा है, इन्हें देखने से ज्ञात होता है कि नाखूनों को बढ़ाना भी आगे सुन्दरतामें शुमार किया जाता होगा, क्यों कि इन नखों के कारण आई हुई तीखाई सुकुमारता मे अभिनव वृद्धि करने वाली दिखायी है। अगुलियों के विन्यास मे कलाकार ने गजव ढा दिया है। हथेली पर पद्म व सामुद्रिक रेखाएं तक दिखायी गयी है। दाहिने हाथमे माला व वायें हाथमें कमण्डलु धारण किया हुआ है। दोनों का थोडा-थोड़ा अश खण्डित हो गया है। हाथों की मजवूती के लिये पत्थर से संलग्न रखा गया है। दूसरे दोनों हाथ, भुजाओं के पीछे से ऊपर की ओर गये है, जिनमे चूड के अतिरिक्त दूसरे आभूपण विद्यमान है। दाहिने हाथमे वडा ही सुन्दर कलामय कमल-नाल धारण किया हुआ है जिस पर सुन्दर पोड़श दल कमल बना है। वायें हाथमे ६ इंच लम्वी सुन्दर ताड़पत्रीय पुस्तक धारण की हुई है उभय पक्षमे काष्टफलक लगाकर तीन जगह तीन-तीन लड़ी डोरीसे ग्रन्थको वाधा गया है। कमर में स्थित कटिसूत्र खूव भारी व उसके झालर लटकण व गूघरे कई लड़े पुष्ट व मनोहर है जो तत्कालीन आर्थिक स्थितिकी उन्नतावस्था के स्पष्ट प्रतीक है। पहिना हुआ वस्त्र (घाघरा या साड़ी) के सल इत्यादि नहीं है, खूव चुस्त दिखाया है ताकि वस्त्रोंके कारण अङ्गविन्यास मे भद्दापन न आ जाय। कमर पर एवं नीचे, वस्त्र चिह्न स्पष्ट है नीचे घाघरे की कामदार मगजी भी है। वस्त्रको मध्यमे एकत्र कर सटा दिया है। पैरोंमें केवल पाजेब पहने है जो आजकल भी प्रचलित है। इसके अतिरिक्त पैरोंमे कोई आभूषण नहीं, सम्भवतः प्रतिमा के सौन्दर्य को कायम रखने के लिये नूपुर आदिको स्थान न दिया गया हो। पैरोंके अगूठों मे कुछ भी आभरण नहीं है। पैर उन्नत व सुन्दर हैं। अँगुलिएँ कुछ लम्वी है पर हाथोंकी भाति पैरोंके नाखून लम्वे नहीं, प्रत्युत मासल है, क्योंकि ऐसा होनेमे ही उनकी सुन्दरता है। इसप्रकार यह सर्वाङ्ग सुन्दर मूर्ति कमलासन पर खडी है जिसके नीचे दाहिनी ओर गरुड़ और बाये तरफ वाहन रूपमे हंस अवस्थित है। सरस्वती मूर्तिके पृष्ठ भागमे प्रभामण्डल बडा ही सुन्दर बना हुआ है। उसके उपरिभाग में जिनेश्वर भगवान की पद्मासनस्थ प्रतिमा विराजमान है। सरस्वती के स्कन्ध प्रदेश के पास उभयपक्षमे दो पुष्पधारी देव अधरस्थित और अभिवादन करते हुए दिखाये गये हैं। जिनके भी कंकण, हार, भुजबन्द आदि आभूषण पहिने हुए एवं पृष्ठभाग मे केशगुच्छ दिखाया गया है।

सरस्वती मूर्तिके उभय पक्षमे वीणाधारिणी देवियाँ अवस्थित है जिनका अंगविन्यास बड़ा सुन्दर, भावपूर्ण और प्रेक्षणीय है। वे भी ऊपरिवर्णित समस्त अलंकार धारण किये हुए हैं। कमर से पैरों तक लहरदार वस्त्रके चिह्न स्पष्ट है।

सरस्वती के पैरोंके पास दाहिनी ओर पुरुष व बांयी ओर स्त्री है जो सम्भवतः मूर्ति

निर्माणक जोड़ा होगा। एक गोडा ऊँचा और दूसरा नीचा किये बैठे हैं। पुरुष के दाढ़ी मूँछें हैं पुरुष के कानोंमें गुड़ल हार बाजू, कन्दोरा, कंकण एवं पैरोंमें पाजेब तक विद्यमान है स्त्रीके भी सभी आभरण हैं। घाघरा है, पर ओढ़णे को कमर के पीछेसे लाकर हाथोंके बीचसे लटकाया है। इसी प्रकार का उत्तरीय वस्त्र पुरुष के भी है। आश्चर्य है कि कलाकार स्त्री को पाजेब पहिनाना भूल गया इस मूर्तिमें स्थित सभी देवियों के मस्तक पर मुकुट की तरह जटा-जूट, किरीटानुकारी किया हुआ है पर इन भक्तोंकी जोड़ीके वैसा नहीं क्योंकि ऐसा करना अविनय होता। इसी तरह आकाश स्थित पुष्पमालाधारियोंके भी। इन भक्त जोड़ीके केश विन्यास बड़ी ही सुन्दरता से सजावट युक्त बनाकर पीछेकी ओर जूड़ा बाँध दिया है। दोनों सविनय हाथ जोड़े हुए बैठे देवीके वरदानकी प्रतीक्षा में उत्सुक प्रतीत होते हैं।

सरस्वती की दूसरी मूर्ति भी ठीक इससे मिलती जुलती और सुन्दर है। परिकर के बाजू की देवियों में विशेष अन्तर नहीं पर तोरण में खासा फरक है उभयपक्ष व उपरिवर्ती जिनालय में उभयपक्ष में जो दो कायोत्सर्गिए (खड्गासनस्थित जिन प्रतिमा) एवं मध्यस्थित सभी प्रतिमाएं पद्मासनस्थ हैं। कवाणी में तीन-तीन पुरुष व एक-एक स्त्री ही हैं।

सरस्वती प्रतिमा के उभय पक्षमें अधरस्थित देव नहीं हैं पर निम्नभागमें- दोनों तरफ कमलासन पर बैठी हुई देवियाँ वंशी बजाने का उपक्रम कर रही है।

सरस्वती के वाहन स्वरूप मयूर, कमलासन पर बना हुआ है। सरस्वती के पैरों पर इसमें वस्त्र चिह्नके सल भी हैं। दोनों कानोंमें भवरिये तथा दूसरे सभी आभूषण एक जैसे हैं। मुखाकृति इसकी कुछ पुष्ट है एवं गलेमें कालर-कण्ठी पहिनी हुई है, यह विशेषता है। हस्तस्थित कमल द्वादशदल का है खड़े रहने के तरीके व पदविन्यास में किंचित भेद है, कुछ साधारण भेदों के सिवा उभय प्रतिमाएँ राजस्थानी कलाके श्रेष्ठतम नमूने हैं।

उपर्युक्त सरस्वती मूर्त्तियों के अतिरिक्त कुछ जिन प्रतिमाएँ और गुरु मूर्त्तियाँ भी कला की दृष्टि से अति सुन्दर हैं। डागों के महावीरजी में बांगरू बाले परिकर में विराजमान प्रतिमा, शान्तिनाथजी की मूलनायक प्रतिमा, भीनासर मंडन पार्श्वनाथ, ऋषभदेव स्वामी, वैदोंके महावीरजी में सहस्रफणा पार्श्वनाथजी एवं गुरुमूर्त्तियों में युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि एवं क्षमाकल्याणजी की मूर्ति आदि दर्शनीय हैं। बांगरू व अमरपुर के प्राचीन परिकर एवं श्री चिन्तामणिजी में स्थित दूसरे परिकर भी कला की दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं। तीर्थोंके पट्ट, नेमिनाथ बरात चतुर्विंशति मातृपट्ट आदि भी तक्षणकला के सुन्दर नमूने हैं। धातु मूर्त्तियों की विविध कला तो दर्शनीय है ही। भित्तिचित्र गौड़ी पार्श्वनाथजी आदिमें कई प्राचीन भी अब तक सुरक्षित हैं। कुछ स्वतन्त्र चित्र भी मन्दिरों एवं अन्य संग्रहालयोंमें हैं वे बीकानेरी चित्रकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। गौड़ी पार्श्वनाथजी में भीखनसारजी व अमीचन्दजी सेठिया व श्री जिनहर्षसूरिजी के चित्र भी समकालीन होनेसे महत्वपूर्ण हैं।

बीकानेर के कलात्मक अवशेषों पर कभी स्वतन्त्र रूपसे प्रकाश डाला जायगा भूमिका के अति विस्तृत होने के कारण हमने बीकानेर के जैन इतिहास, साहित्य और कलाकी चर्चा यहाँ बहुत ही संक्षेप में की है। यहाँ की कलाभिव्यक्ति करनेवाले कुछ चित्र इस ग्रन्थमें दिये जा रहे हैं जिससे पाठकों को इसका साक्षात् दर्शन हो जायगा।

अगरचन्द नाहटा
भंवरलाल नाहटा

प्रस्तावना-परिशिष्ट

(१) वृहत् ज्ञानभंडार व धर्मशाला की वसीहत

श्री जैन श्री संघ श्वेताम्बरी आम्नाय से श्री बडा उपासरा भट्टारकगच्छ के आचार्यश्री जिनकीर्तिसूरिजी महाराज के विजय राज्य मे उपाध्याय श्री हितवल्लभ गणि अपर नाम हिमतूजी रा धर्मलाभ वंचना तथा श्री वड़े उपासरे मे श्री ज्ञानभडार १ श्री जिनहर्षसूरि २ श्री दानशेखरजी ३ महिमाभक्ति ४ दानसागर ५ अभयसिंह ६ भुवनभक्ति नाम सु किया गया है ते मे घणोसौक सामान पुस्तका वा ज्ञान उपगरण म्हारी तरफ सु भंडार किया गया है तेरी वी दूजो पुस्तकों वगैरा वा चादी सोने तावै पीतल री जिनस्या वा कपडो लकडी वगैरह री जिनस्या है तैरी तपसील ज्ञानभंडार रीं वही-मे मंडी है वा भंडार मे मौजूद है इण तमाम रो मालक श्री संघ है। निगरानी अर्थात् देख रेख म्हारी है और जिस तरह सु इण रो वन्दोवस्त करणो अवै तइं ठीक समझ्यो मैं कर्यो अव कई दिन सु म्हारो शरीर विमार रहवै छै और शरीर रो कइ भरोसौ छै नहीं तैसु मैं नीचे लिखी वाता इयै वावत वसीहत करूं हू कै मने सो वरस पूग्या सु श्री संघ ज्ञानभंडार की देख रेख निगरानी इतरा आदमिया सु करता रहै—

१ पन्नालालजी कोठारी २ गिरधरदास हाकम कोठारी ३ जवानमल नाहटा ४ दानमल नाहटा ५ ईसरदास चोपडा कोठारी, ६ सदाराम गोलछा ७ रेवामल सावणसुखा।

इस श्रावका नै भंडार री देखभाल करणी हुसी और जो कायदो ज्ञानभंडार रो बणाय वही ज्ञानभंडार मे पहेला सु मंडाई हुई है तिके मुजव श्री संघ देख रेख पूरी राखै। और इण सात आदमिया माह सु कोई श्रावग काम ज्ञानभंडार रे लायक न हुवै तो श्री संघ सलाह कर दूजो साधर्मी श्रावक वेरी जगह मुकर्रर कर देवो और ज्ञानभंडार री कूची वा समान विसू नाई रे तालकै छै सो इयै विस्सू खवास नै पुस्तक वा भंडार री साल संभाल याने चाकरी पर राख्यो जावे वा सुक्खे सेवग सुं भाइया रे तालुके रो काम लियो जावै। जो रुपिया ज्ञानभंडार मायजी है मकसुदावाद मे तेरी व्याज री उपज सुं मास १ रुपिया ६ वीस्सु ने वा मास १ रु० २) सुक्खे सेवग नै सर्व मास १ रुपया ८) अखरे आठ दरीजता रहणा चहीजे जमा खर्च सरब ज्ञानभंडार री वही मे हुवतो रहणौ चईजे बाकी व्याज वधतो आसी वा दूजी पैदा हुसी तिका भंडार री बही मे जमा हुता रेहसी और इण आदमीया मासु मोई काम लायक न हुसी तो श्री सघ नै अलाहदा करने का अख्तियार है। और उपासरो न० १ रागड़ी मे है पं० श्रीचन्दजी खनै आथूणमुखो श्री जैन साधर्मीशाला वास्ते श्री संघ खरीद कर्यो तैरी मौखाई रौ कागद सं १९५७ चैत बदी १३ रो हमारे नाम सु करायो तहसील सदर में है तसदीक करायो है तिको भी श्री संघ रै रहसी तिका सिर्फ साधर्मीशाला बावत ही काम मे लाया जासी जात्री वगेरा आसी तिका इणां मे ठहरसी और इण साधर्मीशाला री निगराणी भी उपरमंड्या श्रावक करता रहसी और इण रे तालकै रो काम खवास विस्सू व सेवग सुखो करतो रहसी। ऊपर लिखी तनखा में ही और रु० १०००) हमारे हस्तु साधर्मीशाला री बही मे जमा है जो ए रुपीया हमारो शरीर कायम रहै तरै तो हमे

निर्मापक खोदा होगा। एक गोडा ऊँचा और दूसरा नीचा किये बैठे हैं। पुरुष के दाढ़ी मूछ हैं पुरुष के कानोंमें गुड़ले हार, बाजू, कडोला, कंकण एवं पैरोंमें पाजेब तक विद्यमान है स्त्रीके भी सभी आभरण हैं। घाघरा है, पर ओढणे को कमर के पीछेसे लाकर हाथोंके बीचसे लटकाया है। इसी प्रकार का उत्तरीय वस्त्र पुरुष के भी है। आश्चर्य है कि कलाकार स्त्री को पाजेब पहिनाना भूल गया इस मूर्तिमें स्थित सभी देवियों के मस्तक पर मुकुट को तरह जटा जूट, किरीटानुकारी किया हुआ है पर इन भक्तोंकी जोड़ीके वैसा नहीं क्योंकि ऐसा करना अविनय होता। इसी तरह आकाश स्थित पुष्पमालाधारियोंके भी। इन भक्त जोड़ीके केश विन्यास बड़ी ही सुन्दरता से सजावट युक्त बनाकर पीछेकी ओर जूड़ा बाँध दिया है। दोनों सविनय हाथ जोड़े हुए बैठे देवीके वरदानकी प्रतीक्षा में उत्सुक प्रतीत होते हैं।

सरस्वती की दूसरी मूर्ति भी ठीक इससे मिलती जुलती और सुन्दर है। परिकर के बाजू की देवियों में विशेष अन्तर नहीं पर तोरण में खासा फरक है उभयपक्ष व उपरिवर्ती जिनालय में उभयपक्ष में दो दो कायोत्सर्गिए (खड्गासनस्थित जिन प्रतिमा) एवं मध्यस्थित सभी प्रतिमाएं पद्मासनस्थ हैं। कबाणी में तीन-तीन पुरुष व एक-एक स्त्री ही हैं।

सरस्वती प्रतिमा के उभय पक्षमें चामरधारी देव नहीं हैं पर निम्नभागमें दोनों तरफ कमलासन पर बैठी हुई देवियाँ वंशी बजाने का उपक्रम कर रही हैं।

सरस्वती के वाहन स्वरूप मयूर, कमलासन पर बना हुआ है। सरस्वती के पैरों पर इसमें वस्त्र पिछले तक भी है। दोनों कानोंमें भवरिये तथा दूसरे सभी आभूषण एक जैसे हैं। मुख कृति इसकी कुछ पुष्ट है एवं गलेमें कालर-कण्ठी पहिनी हुई है, यह विशेषता है। हस्तस्थित कमल डाबराबल का है खड़े रहने के तरीके व पदविन्यास में किंचित भेद है, कुछ साधारण भेदों के सिवा उभय प्रतिमाएं राजस्थानी कलाके श्रेष्ठतम नमूने हैं।

उपर्युक्त सरस्वती मूर्तियों के अतिरिक्त कुछ जिन प्रतिमाएँ और गुरु मूर्त्तियाँ भी कला की दृष्टि से अति सुन्दर हैं। डागों के महावीरजी में जांगलू वाले परिकर में विराजमान प्रतिमा, शान्तिनाथजी की मूलनायक प्रतिमा, भीनासर मंडन पार्श्वनाथ, ऋषभदेव स्वामी, वैदोंके महावीरजी में सहस्रफणा पार्श्वनाथजी एवं गुरुमूर्त्तियों में युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि एवं क्षमाकल्याणजी की मूर्ति आदि दर्शनीय हैं। जांगलू व अमरसर के प्राचीन परिकर एवं श्री चिन्तामणिजी में स्थित दूसरे परिकर भी कला की दृष्टिसे महत्त्वपूर्ण हैं। तीर्थोंके पट्ट, नेमिनाथ बरात, चतुर्विंशति मातृपट्ट आदि भी तक्षणकला के सुन्दर नमूने हैं। धातु मूर्त्तियों की विविध कला तो उल्लेखनीय है ही। भित्तिचित्र गौड़ी पार्श्वनाथजी आदिमें कई प्राचीन भी अब तक सुरक्षित हैं। कुछ स्वतन्त्र चित्र भी मन्दिरों एवं अन्य संग्रहालयोंमें हैं वे बीकानेरी चित्रकला के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। गौड़ी पार्श्वनाथजी में श्रीज्ञानसारजी व अमीचन्दजी सेठिया व श्री जिनहर्षसूरिजी के चित्र भी समकालीन होनेसे महत्त्वपूर्ण हैं।

बीकानेर के कलात्मक उपादानों पर कभी स्वतन्त्र रूपसे प्रकाश डाला जायगा भूमिका के अति विस्तृत होने के कारण हमने बीकानेर के जैन इतिहास, साहित्य और कलाकी चर्चा यहाँ बहुत ही संक्षेप में की है। यहाँ की कलाभिव्यक्ति करनेवाले कुछ चित्र इस ग्रन्थमें दिये जा रहे हैं जिससे पाठकों को इसका साक्षात् दर्शन हो जायगा।

अगरचन्द नाहटा
भंवरलाल नाहटा

प्रस्तावना-परिशिष्ट

(१) वृहत् ज्ञानभंडार व धर्मशाला की वसीहत

श्री जैन श्री संघ श्वेताम्बरी आम्नाय से श्री बड़ा उपासरा भट्टारकगच्छ के आचार्यश्री जिनकीर्तिसूरिजी महाराज के विजय राज्य मे उपाध्याय श्री हितवल्लभ गणि अपर नाम हिमतूजी रा धर्मलाभ बंचना तथा श्री वड़े उपासरे मे श्री ज्ञानभंडार १ श्री जिनहर्षसूरि २ श्री दानशेखरजी ३ महिमाभक्ति ४ दानसागर ५ अभयसिंह ६ भुवनभक्ति नाम सु किया गया है ते मे घणोंसौक सामान पुस्तका वा ज्ञान उपगरणम्हारी तरफ सुं भंडार किया गया है तेरी बी दूजो पुस्तकों वगेरा वा चादी सोने तावे पीतल री जिनस्या वा कपडो लकडी वगैरह री जिनस्या है तैरी तपसील ज्ञानभंडार रीं बही-में मंडी है वा भंडार मे मौजूद है इण तमाम रो मालक श्री संघ है। निगरानी अर्थात् देख रेख म्हारी है और जिस तरह सु इण रौ बन्दोवस्त करणौ अबै तइं ठीक समझ्यो मैं कर्यो अब कई दिन सुं म्हारो शरीर बिमार रहवै छै और शरीर रो कइ भरोसौ छै नहीं तैसु मैं नीचे लिखी बाता इयै बाबत वसीहत करूं हू कै मने सौ बरस पूर्यां सुं श्री संघ ज्ञानभंडार की देख रेख निगरानी इतरा आदमिया सु करता रहै—

१ पन्नालालजी कोठारी २ गिरधरदास हाकम कोठारी ३ जवानमल नाहटा ४ दानमल नाहटा ५ ईसरदास चोपडा कोठारी, ६ सदाराम गोलछा ७ रेवामल सावणसुखा।

इस श्रावकां नै भंडार री देखभाल करणी हुसी और जो कायदौ ज्ञानभंडार रो बणाय वही ज्ञानभंडार मे पहेला सु मंडाई हुई है तिके मुजब श्री संघ देख रेख पूरी राखै। और इण सात आदमिया माह सु कोई श्रावग काम ज्ञानभंडार रे लायक न हुवै तो श्री संघ सलाह कर दूजो साधर्मी श्रावक चेरी जगह मुकर्रर कर देवो और ज्ञानभंडार री कूची वा समान विसू नाई रे तालकै छै सो इयै विस्सू खवास नै पुस्तक वा भंडार री साल संभाल याने चाकरी पर राख्यो जावे वा सुक्खे सेवग सुं भाइयां रे तालुके रो काम लियो जावै। जो रुपिया ज्ञानभंडार मायजी है मकसुदावाद मे तेरी व्याज री उपज सु मास १ रुपिया ६ वीस्सु ने वा मास १ रु० २) सुक्खे सेवग नै सर्व मास १ रुपया ८) अखरे आठ दरीजता रहणा चहीजे जमा खर्च सरब ज्ञानभडार री वही मे हुवतो रहणौ चईजे बाकी व्याज वधतो आसी वा दूजी पैदा हुसी तिका भंडार री बही मे जमा हुता रेहसी और इण आदमीया मासु मोई काम लायक न हुसी तो श्री सघ नै अलाहदा करने का अख्तियार है। और उपासरो न० १ रागड़ी मे है पं० श्रीचन्दजी खनै आथूणमुखो श्री जैन साधर्मीशाला वास्ते श्री संघ खरीद कर्यो तैरी मौखाई रौ कागद सं १९५७ चैत वदी १३ रो हमारे नाम सु करायो तहसील सदर मे है तसदीक करायो है तिको भी श्री संघ रै रहसी तिका सिर्फ साधर्मीशाला बावत ही काम मे लाया जासी जात्री वगेरा आसी तिका इणा मे ठहरसी और इण साधर्मीशाला री निगराणी भी उपरमंड्या श्रावक करता रहसी और इण रे तालकै रो काम खवास विस्सू व सेवग सुखो करतो रहसी। ऊपर लिखी तनखा मे ही और रु० १०००) हमारे हस्तु साधर्मीशाला री वही मे जमा है जो ए रुपीया हमारो शरीर कायम रहै तरै तो हमे

सजवीज कराय हमारे प्रशिष्य रतनलाल के लिये कहीं जमा करा देंगे नहीं तो श्री सघ पीछे से इस रु० १०००) की बदोवस्त करके मकसूदाबाद मोतीचंदजी धनेचंदजी व रायमेघराजजी बहादुर जालिमचंदजीके अठे आधा आधा जमा कर देवा और ब्याज आवे सो रतनलाल को दिया जावे अठे जमा रहव अबतक सायमींशाला रे गुमास्ती आमदानी वगेरह सु मास १२ सु रु० ६०) तक रतनलाल ने दे दिया जाया करे और रु० २००) मकसूदाबाद से हमारा आवणा वो टीपों की बाबत है सोइ आणे पर साधारण खाते में जमा किया जावे ज्ञानभंडार री बही में और वव टीप वाला आवे सो मे मांय सु दिया जावे नहीं तो ज्ञानभंडार में रहसी व रु० १००) अन्दाज शुभ खाते जुदा है जिके भी ज्ञानभंडार री बही में शुभ खाते जमा करा दी जावे और आ लिखापढ़ी वसीयत के तरीके पर श्रीसंघ ने हमा होश हुशियारी सु कर दीनी छे हमारे शिष्य प्रशिष्य वगेरह कोइ ने साधर्मीशाला व ज्ञानभंडार व रकम वगेरह बाबत किसी तरे रो ताल्लुक व दावो है नहीं हमने पहले से जुदा ह्मां ने कर दीना था कदास कोई चेला पुस्तक भंडार री दरकार चाहे तो ज्ञानभंडार रे कायदे माफक जिस तरह और लोगांने देखणें वास्ते दी जावे है वे दिया जाया करे कदास कोई हमारे चेला वगैरह किसी तरे रो इये बाबत उजर करसी तो श्रीसंघ रो गुनहगार तथा हमारी आज्ञा रो विराधक समज्यो जासी संवत् १९५८ मिती असाढ़ सुदि ४ वार गुरु ता० १३ जून सन् १९०१ ई०

द० केसरीचंद बेगाणी री हितवल्लभ महाराज रे होकम सुं लिखी

द० उ० हितवल्लभ गणि रे केया सुं कर दीना छे ह्मां रे हाथ सुं लिखीजे नहीं जिके सुं

प० वागमल मुनि री कलम

द० पं० वागमलमुनि री ऊपर लिख्यो सो सही कलम खुद

द० रतनलाल ऊपर लिखियो सो सही—कलम खुद।

साख १ पं० मोहनलाल मुनि री है पू० हितवल्लभजी रे केया सुं क० खुद

" अबीरचंद मुनि री "

" प० रामलाल मुनि री "

" ममल मुनि री "

" पं० पुनमचंद री है "

द० कोठारी गिरधरलाल डाकमरा "

द० पन्नालाल कोठारी "

द० हरदास चोपड़ा कोठारी "

द० रेखामल सावणसुखा "

द० अजानमल नाहटा "

द० दानमल नाहटा का छे " क० संकरदान नाहटा

द० सदाराम गोलछा "

(२) श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि धर्मशाला व्यवस्था पत्र

श्री वृहत्खरतर गच्छीय श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखाया उपाध्याय श्री अमृतसुन्दर गणि स्तच्छिष्य वाचक श्री जयकीर्त्तिजी गणिस्तच्छिष्य श्री प्रतापसौभाग्य मुनिस्तच्छिष्य पं० प्र० श्री सुमतिविशाल मुनिस्तच्छिष्य पं० प्र० समुद्रसोम मुनिस्तच्छिष्य प० प्र० श्री युक्तिअमृत मुनिस्तेषा-मन्तेवासिना सविग्नपक्षीय क्रियाउद्धार कारकेण जैन भिक्षुना पं० प्र० कृपाचन्द्र मुनिना पं० तिलोकचंद्रादि शिष्य प्रशिष्य समन्वितेन इय नवीन धर्मशाला स्थापिता आत्मीय सत्ता व्यावृत्य संघ सात्कृता सघस्य स्वाधीना कृता श्री जिनकीर्त्तिसूरि विजयराज्ये।

इसका अधिकारी संघ है रेख देख सघ रखेगा व्यवस्थापत्र नीचे लिखा है:—

द० पं० कृपाचद्र मुनिका द० तिलोकमुनि सही २।

सं० १६४५ मि० ज्ये० सु० ५ दिने हमने श्री नागपुर में क्रियाउद्धार कर विचरते ४६ साल वीकानेर चतुर्मासा किया तव संभालने के लिए कह दिया था अव इसकी संभाल मर्यादा माफक रखनी होगी विशेष कार्य धर्म सम्बन्धी हमकुं अथवा हमारे शिष्य-प्रशिष्यादि योग्यवर्ग कु प्रश्न-पूर्वक करना होगा। उसके उपदेश माफक कार्य होगा। इसमे उजर कोई नहीं करेगा ज्यादा शुभम्। द० खुद

व्यवस्थापत्र नवी धर्मशाला खरतरगच्छ धर्मशाला सं० १६५७ मिती ज्येष्ठ सुदि १० वार वृहस्पतिवार दिन मुकर्रर हुयोड़ा अगर मैं आनाथा सं०१६४५ में कलयत हो गई थी उसकी व्यवस्था धर्मशाला संवेगपक्षी सर्वगच्छीय श्रावक श्राविकण्या के व्याख्यान पड़िकमणा धर्म करणी करने के वास्ते है सो करेगा तथा सर्वगच्छ का संवेगी साधु तथा साध्वी कंचनकामनी का त्यागी उग्रविहारी नवकल्प विहार करनेवाला पंचमहाव्रत पालनेवाला इसमे उतरेगा और शिथिलाचारी नहीं उतरेगा। शुभार्थ आचरण करनेवाली नारियें वो मुनिराज के वास्ते यह स्थान है। तथा श्रावक श्रावगणी प्रभात तथा संध्या दोनों वखत धर्मकृत्य नित्य करेगा। दोनों वखत धर्मशाला खुलेगा इसमे हरज होगा नहीं तथा उपासरो १ हनुमानजी वालो इस धर्मशाला तालकै है तथा उपासरो एक धर्मशाला के सामने है गुरूजी महाराज सावतेजीरो इणमे पांती २ धर्मशाला रै तालकै है वरसाली तथा छोटी साल दमदमा तथा मालियौ वगैरह दो पांती छै सो धर्मशाला री पातीमे छै अनोपचंद तालुके छै इण उपासरे मे कोई कृपाचन्द्रजी महाराज के संघाडे का वृद्ध तथा ग्लान वगैरह विहार नहीं कर सके जिके हरेक साधु क्रिया करने के वास्ते तथा महाराज श्री संततिवाले नरम गरम के रैणेके वावत औ उपासरो है। देख-देख धर्मशालारी है।

कदास सामलै उपासरै मे कोई साधु कै रैणे मे कोई तरह की असमाधि मालूम हुवे तो हनुमानजीवाले उपासरै मे रहसी तथा धर्मशाला मे साध्वी पहले उतरी है। पीछे साधु आवै तो साधुवों का कम ठाणे हुवे तो साधुवां रो सामलै उपासरे मे अपसवाड़लै उपासरे मे निर्वाह होता रहेगा और साधु नहीं धर्मशाला मे उतरे कदास साधु कम ठाणै हुवै साध्वी वहुत गण हुवै तो साधु सामलै तथा पसवाड़लै उपासरे मे रहेगा, वखाण इधर सालमें आकै वाचेगा।

थावा छा और पेडी ओसवालां री तरफ सु छावण, मीहा में वगेरह में म्हांने मिलतो हो सु अवार इणां वरसां में कम मिलणे लाग गयो जे पर म्हे हरसाल पंचान ओसवालन ने कवता रहा के हमारा बंदोबस्त कर देणा चाहीजै लेकिन वांरी तरफ से बदोबस्त नहीं हुवा स इणे मेनु सीपल कमेटी री मारफत मिती भादवा वदि १२ सु मिती भादवा सुदि ६ तांइरा रु० १००) अखर रुपया एकसो म्हे मास १२ रा साख्येवाना छ करसां और मिती भादवा वदि १२ सु मिती भादवा सुदि ६ तांइ कोई बेपारी जीव हीत्या नहीं करसी और मी रसोवड़े री दुकान १ वा अजट साहब बहादुर री दुकान १ जारी रहसी जै में रसोवड़े री दुकान रो रसोवड़े सिवाय दूजे ने नहीं देसी वा० अजंट री दुकान वालो सवाय हुकाम अंगरेज बहादुर औरां ने नहीं देसी। कइ सालमें भादवा रो दे कारण वा सावण रो दे कारण पमूसण रो होगा तो अगता दोनु पजोसण में बरोबर राखसां रु० १००) सु ज्यादा नहीं मांगसा इंये में कसर नहीं पडसी अगर इये में म्हे कसर घाता तो सिरकार सुं सजा कैद वा जरीवाने री मरजी आवे सु देवे। औ लिखत म्हे म्हारी राजी खुसी सु कीयो छै। इये में म्हे कदी माव कसर नहीं घालसां सं० १९४९ मिती आसोज सुदि ६ ता० ३० सितम्बर सन् १८९२ ईस्वी।

द० मुरादबगस वल्द मीरा बकलम'''   द० पीरबगस

द०   बगस   द० इलाहीबगस

द० मोलाबगस वल्द मदारी बकलम घायमाई लोगो

बत वा० फोजू वल्द गोरु वा० कायमदीन वल्द साहु वा० हामी अजीम वल्द वासक बकलम इलाहीबगस। द० रहीम वल्द इलाईबगस वा० मोलाबगस वल्द नूरा वा० समसु वा० कादर वा० अबदुलो वा० कायमदीन वल्द अजीम बकलम घायमाई लोगो।

द० रैमतल्ला बकलम साजू। द० करमस ल्ला बकलम साजू।

द० साजू वल्द रहीम वा० अल्ला वल्द अजीम वा० इलाईबगस वल्द इमामबगस बकलम इलाईबगस बमुजब केणे म्हारां के द० करीमबगस द० गुलाम रसूल—

सपरिकर पार्श्वनाथ, श्री चिन्तामणिजी

श्री चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर

श्री चिन्तामणिजी का गर्भगृह

गुप्तकालीन धातुमय कायोत्सर्ग प्रतिमा
श्री चिन्तामणिजी

श्री चिन्तामणिजी की जगती का दृश्य

और गोगे दरवाजे बाहर श्री गौड़ीजी के सामने मन्दिरजी ध्लोवरपार्श्वनाथजी रो छै तेरी देख रेख नवी धर्मशालावाला राखसी और मन्दिरजी रे पसवाड़े आपणी तरफ बगेची छे ते में साल १ नारायणजी महाराज री का कुंड़ी १ छै और बगीची रा बारणा बराब सामो छै तिका बगीची धर्मशाला वालके रहसी तथा नाल रे दादेसीमें साल महल दरवाजे रे चिपती पड़ता ने ओवणे पासे पड़ोड़ी सालमें पांती २ में दिखणादे कोठे तथा बीचलो कोठा वगेरह धर्मशाला रा श्रावक देख रेख राखसी तथा कीर्तिरत्नसूरि शाखा वाला का हक धर्मशालावाला श्रीसंघ देखसी निगरानी राखसी तथा इस धर्मशाला में पुस्तक तथा ज्ञान उपगरण तथा साधु लोग उपगरण पातरा झोला वगैरह तथा औषध वगैरह बहुत चीज धर्मशाला में हाजर है और जो हाजर नहीं है सो एकठा रफते रफते कीवी आवेगी तथा पुस्तक वगैरे के कोठारकी कुंची ४ आदमी के ऊपर रहेगी कुंची १ साहगुमान कुंची १ सावणसुखा पूनमचंद कुंची १ नाहटा माणकचंद कुंची १ सेठिया मेघराज तथा ५ आदमी इकट्ठा होनेसे कोठा खुलेगा १ आदमी खोलने पावे नहीं तथा पुस्तक बांचने वगैरह के वास्ते संवेगी साधु तथा शिक्षा पढ़ा लायकवाला गुरां ने आवीपै बन्दाब दी आवेगी और जो नहीं दी आवेगी आनेसे आगे को दी जावेगी। खासी पड़त नहीं दी आवेगी विशेष कारण के वास्ते देनेमें हरज नहीं तथा ज्ञान उपगरण किसी को नहीं दिया आवेगा तथा पातरा वगैरह उपगरण साधु निरपेक्षी आत्मार्थी त्यागी संवेगी को पातरा नग १ तथा २ दिया आवेगा जिस साधुके मगर श्रावक वगैरह बहुत हुवे मै श्रावक लोग वहरावे साधुको पातरा वहराना आपरी तरफसुं चाव सो धर्मशाला मुं पातरा वगैरह उपगरण लेकर साधु ने वहरावगा उनकी निछरावल धर्मशाला में उपगरण खाते जमा करावेगा उस द्रव्यका उपगरण पातरा वगैरह धर्मशाला रे सिलक में खरीद कर रखा जावेगा और जो श्रावक वहराने वाला नहीं हुवे तो ऊपर लिखे मुजब पातरा साधुको दिया जावेगा। औषध्यां संवेगी साधु ऊपर लिखे मुजब के उपयोग चावत है सो दी आवेगी तथा श्रावक वगैरह नकीमत मुं दी आवेगा तथा रकम मावे निगदी वगैरहकी देख रेख खब अच्छी तरह सुं रखेगा। इसमें गफलत करेगा नहीं। नगदी जो रुपया है उसमें ॥) आठ आना धर्मशाला खाते।≈ छव आना ज्ञान खाते तथा ≈ दो आना मंदिरजी खाते इस रकम का ब्याज सूद धर्मशाला तथा ज्ञान तथा मन्दिरजी खाते लागसी ऊपर लिखे हिसाब मुजब लागसी इसमें हरज करेगा नहीं। तथा धर्मशालाके अधिकारी श्रावक वगैरह इसकी देख रेख पूरी-पूरी राखसी मुकरर किया गया श्रावक वगैरह मे जिसकी गफलत मालूम हुवेगा वा विद्यमान नहीं रहेगा उसके ठिकाणे दूसरा मुकरर किया जायगा पक्षपात छोड़के धर्म बुद्धिसे इस लोक परलोकके हितके वास्ते परमार्थ का काम समझ के संघके वेयावच के माफक धर्मशाला तथा ज्ञानकी वेयावच को फल तीर्थंकर नाम कर्मका बन्ध इसीमें समझ के पूरा पूरा उद्योग रखगा सो कल्याण का भागी होगा तथा बारह मासका पर्व आराधन विधियुक्त विधि करके किया जायगा। चैत्रकी ओली अमरातीज आषाढ़ चौमासा, पजूषण, आसोज की ओली, दीवाली ज्ञान पंचमी काती चौमासा, काती पूनम मौन इग्यारस, पोस दशमी, मेरु तेरस, फागुण चौमासा इत्यादि पर्वमें आपणे आपणे पर्वका कर्तव्य विधि माफक किया जायगा।

तथा महाराज श्री कृपाचन्दजी तथा उणाकी संतति में चेला पोता चेलरा वगैरह पुस्तक पाठा पटड़ी वगैरह वाचने के वास्ते दिसावर मंगावेगे तथा इहाँ वाचने वगैरह के वास्ते लेवेगा जद अखी पडत तुरंत भेज दिया जावेगा। बारै दिया जावेगा इसमें देरी हुवेगा नहीं औ वाचके तथा लिखाके पीछी भेजेगा जब जमा कर लिया जायगा नित्य कृत्य पर्व आराधन की पुस्तक पासमे रहेगा १ वोह कोई जरूरत पड़ने वगैरह वास्ते चहियेगा वो भी रहेगा और कोई दिसावर श्रावक तथा साधु मंगावेगा तो उसकी खातरी सु दिया वा भेजा जावेगा।

द० पं० पूनमचंदरा

इस धर्मशाला का मुख्य अधिकारी वगैरह का नाम—

द० सावणसुखा पूनमचंद न की रतनचंद सिरगाणी

द० सा० गुमानमल

द० दानमल नाहटैका क० संकरदान

द० माणकचंद क० रेखचद

द० गोलछा चुनीलाल

द० मेघराज सेठिया

द० सुगनचंद सेठिया घरको कोई रेसी तिका हाजर हुसी

द० पं० कृपाचंद्र मुनि ऊपर लिख्यो सो सही कलम खुद।

(३) पर्यूषणों में कसाईवाड़ा बन्धी के मुचलके की नकल

जैन धर्मका प्रधान सन्देश अहिंसा है। प्राणीहिंसा व आरंभवर्जन के सम्बन्ध में वच्छावत वंश द्वारा किये गये कार्यों का उल्लेख पृ० ८४ मे किया जा चुका है पर्यूषणों के १० दिन कसाईबाड़ा चिरकाल से बंध रहता है। तत्सम्बन्धी कसाइयों के मुचालके की नकल यहाँ दी जा रही है।

नकल मुचालकै कसायान सहैर वीकानेर श्रीरामजी

मसमुलै मीसल मुकदमै वावत इन्तजाम अषतैहाय पजोसण कौम आसवालान लंवर ६६ मरजुऔ १५ अक्टूबर सन् १८६२ ईस्वी

मोहर महकमै मुनिसीपल कमेटी राजश्री वीकानेर स० १६४७

श्री महकमा म्युनिसीपल कमेटी राजश्री वीकानेर महाराव सवाईसिंह

लिखतु वोपारी हाजी अजीम वासल रो वा अलफु कीमै रो वा खुदावगस भीखै रो वा बहादर समसै रो वा इलाहीवगस मोवत रो वा मोलावगस मदे रो वा० कायमदीन अजीम रो वा० जीवण रहीम रो वा० फोजू गोलू रो वा कायमदीन खाजु रो वगेरे समसुता जोग तथा म्हे लोग पजूसणामे अगता मिती भादवा व[illegible] राखला

आवो छो और पेली ओसवालां री तरफ सुं सावण, भीड़ा में पगेरह में म्हांने मिळ्यो जो मु थवार इयां वरसां में कम मिळणे लाग गयो जे पर म्हे हरसाल पंचान ओसवालन ने केवता रहा के हमारा बंदोबस्त कर देणा चाहीजे लेकिन वांरी तरफ से बंदोबस्त नहीं हुवा स इमे मेनु सीपल कमेटी री मारफत मिती भादवा वदि १२ सुं मिती भादवा सुदि ६ तांइरा रु० १००) अखरे रुपया एकसो म्हे मास १२ रा साळीयाना के लसां और मिती भादवा वदि १२ सुं मिती भादवा सुदि ६ तांइ कोई वेपारी सीव हीत्या नहीं करसी और श्री रसोवड़े री दुकान १ वा अजंट साहब बहादुर री दुकान १ जारी रहसी जे में रसोवड़े री दुकान रो रसोवड़े सिवाय दूजे ने नहीं देसी या० अजंट री दुकान वाळो सवाय हुकाम अंगरेज बहादुर औरां ने नहीं देसी। जेह साळमें भादवा दो रै कारण वा सावण दो रे कारण पजूसण वो होगा वो अगला दोनुं पजोसण में बरोबर रासलां रु० १००) सु जादा नहीं मांगसां इयें में कसर नहीं पड़सी अगर इयें में म्हे कसर पावां तो सिरकार सुं सजा केद वा जरीवाने री मरजी आवे सु देवे। ओ लिखत म्हे म्हांरी राजी खुसी सु कीयो छे। इयें में म्हे कदीं भाव कसर नहीं पावसां सं० १९४९ मिती आसोज सुदि ६ ता० ३० सितम्बर सन् १८९२ ईस्वी।

द० खुदाबगस वल्द मीसा बकलम "द० पीरबगस

द० धगस द० इलाहीबगस

द० मोलाबगस वल्द मदारी बकलम घायमाई जोगो

अत वा० फोजू वल्द गोलु वा० कायमदीन वल्द लालु वा० हाजी अजीम वल्द वासल बकलम इलाहीबगस। द० रहीम वल्द इलाहबगस वा० मोलाबगस वल्द नूरा वा० समसु वा० कादर वा० अबदुलो वा० कायमदीन वल्द अजीम बकलम घायमाई जोगो।

द० रेमतबख्श बकलम लालू। द० करमस वल्द बकलम लालू।

द० लालू वल्द रहेम वा० लखा वल्द अजीम वा० इलाहीबगस वल्द इमामबगस बकलम इलाहीबगस बमुजब केणे च्यारां के द० करीमबगस द० गुलाम रसूल—
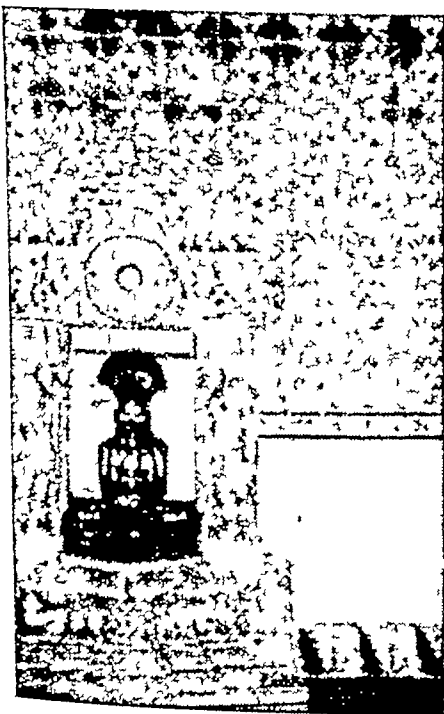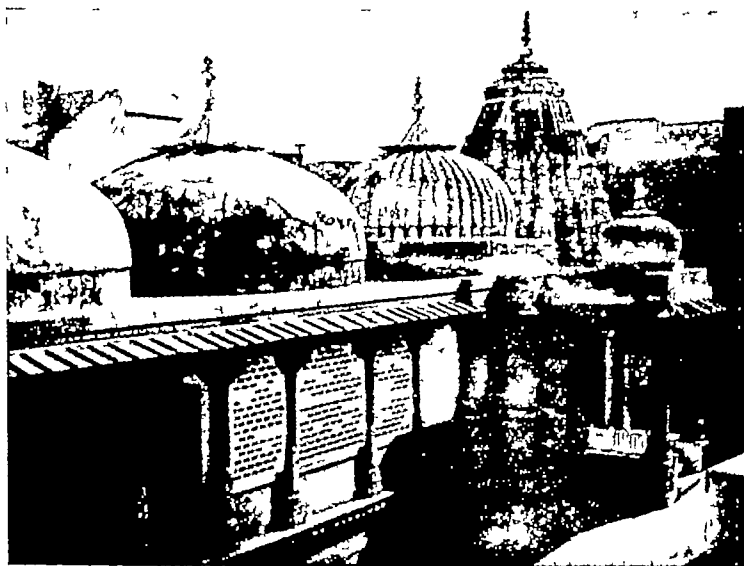
सपरिकर पार्श्वनाथ, श्री चिन्तामणिजी

श्री चिन्तामणिजी का मन्दिर, बीकानेर
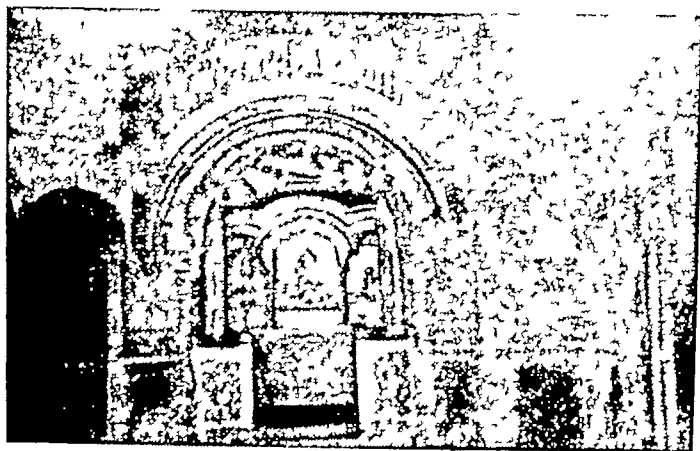
श्री चिन्तामणिजी का गर्भगृह
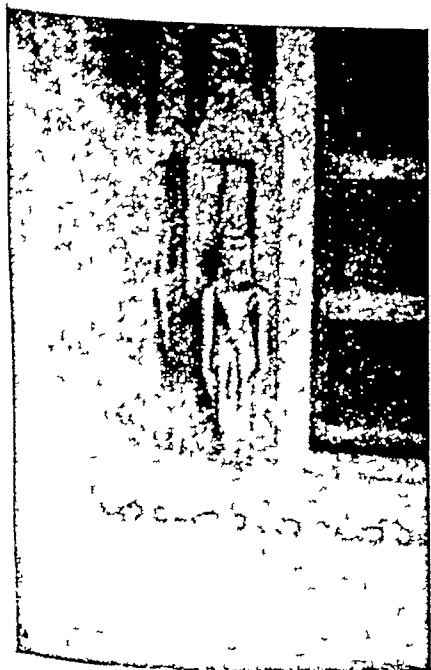
गुप्तकालीन धातुमय कायोत्सर्ग प्रतिमा
श्री चिन्तामणिजी
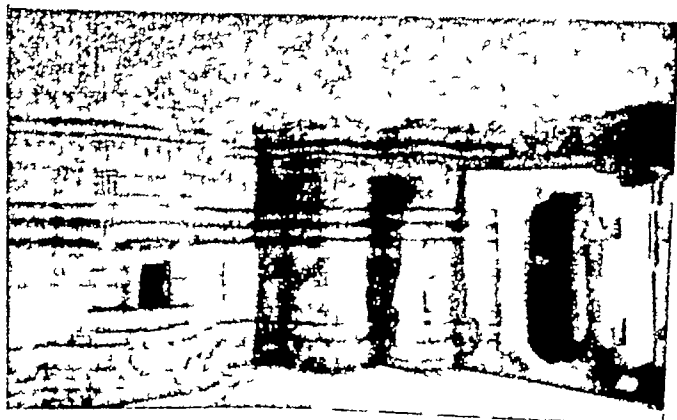
श्री चिन्तामणिजी की जगती का दृश्य
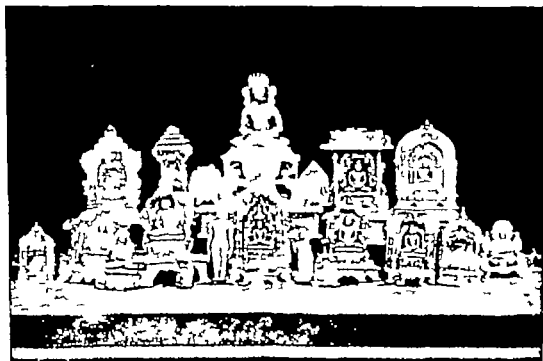
श्री चिन्तामणिजी के भूमिगृह की प्राचीन धातु-प्रतिमाएं
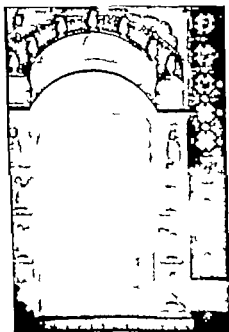
चौदह राजलोक पट्ट श्री चिन्तामणिजी

मूलनायक—धातुमय चौबीसी
श्री चिन्तामणिजी

बीकानेर जैन लेख संग्रह

बीकानेर

श्री चिन्तामणिजी (चउवीसटा) का मन्दिर

(कन्दोइयों का बाजार)

(१)

शिलालेख-प्रशस्ति

१ ॥ संवत् १५६१ वर्षे आषाढ (? वैसाख) सुदि ६ दिने वार रवि । श्री बीकानेर मध्ये ॥
२ महाराजा राव श्री श्री श्री बीकाजी विजय राज्ये देहरौ करायौ श्री संघ ॥
३ संवत् १३८० वर्षे श्रीजिनकुशलसूरि प्रतिष्ठितम् श्री मंडोवर मूलनायकस्य ।
४ श्री श्री आदिनाथ चतुर्विंशति पट्टस्यः। नवलक्षक रासल पुत्र नवलक्षक
५ राजपाल पुत्र से नवलक्षक सा० नेमिचंद्र सुश्रावकेण साह० वीरम
६ दुसाऊ देवचंद्र कान्हड महं० ॥ ॥ संवत् १५६१ वर्षे श्री श्री
७ श्री चउवीसठइजी रो परघो महं वच्छावते भरायौ छै ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख (गर्भगृह)

(२)

मूलनायक श्रीआदिनाथादि चतुर्विंशति

(क) नवलक्षक रासल पुत्र नवलक्षक राजपाल पुत्ररत्नेन नवलक्षक सा० नेमिचंद्र सुश्रावकेण सा० वीरम दुसाऊ देवचंद्र कान्हड़ महं

(ख) १ ॥ ६० ॥ संवत १५६२ वर्षे श्री बीकानेयर महादुर्गे। पूर्व स० १३८० वर्षे श्रीजिनकुशल सूरिभिः प्रतिष्ठितम्

२ श्री मंडोवर मूलनायकस्य श्री आदिनाथादि चतुर्विंशति पट्टस्य । स० १५६१ वर्षे सुरताणिप कम्मरा पातसाहि समा—

३ गमे विनाशित परिकरस्य उद्ध (द्ध) रित श्री आदिनाथ मूलनायकस्य बोहिथहरा गोत्रे म० वच्छा पुत्र मं० वरसिंह भार्या

४ भा० ठीकू (१ वीम्ह) दे पुत्र मं० मेघा भार्या महिगलदे पुत्र मं० वमरसिंह ।म० पदमसीहा (सीहा ?) म्यां पुत्र मं० श्रीचंद म० महमादि ॥

५ सपरिवाराभ्यां खरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरीश्वराणां पट्टालंकार

६ श्री जिनमाणिक्यसूरिभि

श्रीजयतसीह विजयराज्ये ॥ श्री ॥

(३)

श्री शीतलनाथादि चतुर्विंशति

॥ ६० ॥ संवत् १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि ९ दिने श्रीऊकेशवंशे बोहित्थरागोत्रेसा० जेसल भार्या सूवी पुत्र म० देवराज वच्छराज म० दशराजेन भा० रुपइ लखमादे पु० वसू सिवराज लेखपाल म० वसू भार्या दूल्हादे पुत्र हीरा प्रमुख परिवार सहितेन स्वभार्या लखमाई पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ चतुर्विंशति पट्टः का० म० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि

(४)

श्री अजितनाथादि चौवीसी

सवत् १५११ वर्षे फागुण सुदि ३ सोमवारे ऊकेशवंश बोहित्थरा गोत्रे श्रीविक्रमनगरे म० वच्छा भार्या वील्हादे पुत्र मं० रत्नाकेन भार्या रत्नादे हर्षु पुत्रेन श्रीअजितनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठि श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः ॥ छ ॥

(५)

श्री अभिनन्दनादिचौवीसी

॥ ६० ॥ स० १५६५ वर्षे जेठ सुदि ३ दिने। बो० गोत्रे म० वच्छापुत्र मं० वरसिंह भार्या वीमलदे तत्पुत्र मंत्रि हराकेन भार्या हीरादे पुत्र मं० जोधा पुत्र म० विमलदास अमरचदासादि युतेन स्वपुण्यार्थं श्रीअभिनंदन बिंबकारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरि प० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(६)

सपरिकर पार्श्वनाथ

सं० १३६१ वर्षे माह वदि ११ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० आमन भार्या अमीदे सुत नागसाकेन पितृ श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः

(७)

शीतलनाथादि पचतीर्थी

सं० १४८८ वर्षे ज्येष्ट सुदि १० शुक्रे मं० गागा भा० घरथति (?) सुतांदेकावाड़ा वास्तव्य श्री वायड़ ज्ञातीय मं० देवा भा० बा० धारू तया आत्मश्रेयसे श्रीशीतलनाथादि पंचतीर्थी श्रीमदागमगच्छेश श्री हेमरत्नसूरि गुरूपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिताच विधिना।

(८)

श्री नमिनाथजी

(क) सं० १ (१६१) ५२ वर्षे वै० सु० १४ दिने सीरोही वास्तव्य ऊकेश सा० धास भा० सीतु पु० सेत्राकेन भा० जाणी सुत टाहल टालादि कुटुंबेन स्व श्रेयोर्थं का० श्री नमिबिंबं प्रतिष्ठितं त० गच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः

(ख) श्री नमिनाथ बिंबं व्य० काजा कारिता

(९)

श्री नमि थजी की बड़ी प्रतिमा पर

नमिनाथ बिंबं व्य० खेता कारिता

(१०) Page 3

धातु के सिद्धचक्र यंत्र पर

संवत् १८३६ आश्विन शुक्ल १५ दिने कौटिकगण चंद्रकुलाधिराज श्रीजिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं सिद्धचक्रयंत्रमिदं कारापितम् कोठारी प्रतापसिंहेन स्वश्रेयसे वा० लावण्यकमल गणिनामुपदेशात

(११)

श्री शत्रुंजय आबू, गिरनार, नवपद, समौशरण, चौवीसी, बीस विहरमानादि यन्त्रपट्ट ॥ पर

॥ स्वस्ति श्री संवत् १५८० वर्षे चैत्र सुदि १३ गुरौ स्तंभतीर्थ वास्तव्य ऊकेश ज्ञातीय सा० देवा भा० देवलदे पु० सा० राजा भा० रमाई पु० सा० हेमा खीमा लाखा भा० गोई पु० जयतपालकेन ॥ भ्रातृ पु०सा० जगमाल जिणपाल महीपाल उदयड

विद्याधर रत्नसी जगसी पदमसी पुत्री लाली भमरघाइ प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री तपगच्छनायक श्री हेमविमलसूरीणामुपदेशेन ॥

॥ यह लेख पट्ट के चारों ओर लगी हुई ३ चीपों पर खुदा हुआ है एक चीप उतर जाने से लेख त्रुटक रह गया।

पाषाण प्रतिमाओं और पादुकाओं के लेख

॥ सभामण्डप ॥

(१२)

श्री महावीर स्वामी और दोनों तरफ खड़ी दो मूर्तियों पर

संवत् १६१६ फागुण सुदि १३ ओसवाल ज्ञातीय चोपड़ा गोत्रे कोठारी जिणदास भार्या सरूपादेव्या श्रीमहावीर बिंब कारितं ॥

॥ श्री गौतम स्वामी ॥ मूर्ति ब्रह्मचारी सा० धरउराज ॥

(१३)

श्रीपार्श्वनाथजी

सं० १६३१ व। मि। वैशाख सुदि ११ तिथौ श्रीपार्श्व जिन बिं। प्र। भ० श्रीजिनहंस-सूरिभिः ॥ कारितं श्रीसंघेन श्रीबीकानेर नगरे ॥

(१४)

पीले पाषाण की गुरु मूर्ति पर

श्रीजिनकुशलसूरि

(१५)

पाषाण के चरणों पर

॥ ६० ॥ संवत् १६४० वर्षे माद्रवा सुदि १३ दिने श्रीखरतरगच्छे श्रीविक्रमनगरे भा० अमरमाणिक्य (?) नां पादुका ॥

(१६)

पाषाण के चरणों पर

संवत १५६७ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्रीकमलसंयम महोपाध्याय पादुके भव्यार्थं कारिते ॥

॥ भमती की देहरियों के लेख ॥

(१७)

चरण पादुकाओं पर

संवत् १९०५ वर्षे शाके १७७० प्रमिते माघव मासे शुक्ल पक्षे पौर्णिमास्यां तिथौ गुरुवारे बृहत्खरतर गणाधीश्वर भ। जं। युगप्र। श्री १०८ श्री जिनहर्षसूरिजित्पादुके श्रीसंघेन कारापित प्रतिष्ठितं च भ। जं। यु। प्र। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः ॥ श्रीविक्रमपुरवरे ॥ श्री ॥

(१८)

पीले पाषाण की मातृ पट्टिका पर

१ ॥ संवत् १६०६ वर्षे फागुण वदि ७ दिने। श्रीवृहत्खरतरगच्छे। श्री जिनभद्रसूरि संताने श्रीजिनचंद्रसूरि श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टे।

२ ॥ श्रीजिनहंससूरि तत्पट्टालंकार श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीचतुर्विंशति जिनमातृणा पट्टिका ॥ कारिता श्रीविक्रमनगर संघेन ॥

(१९)

श्याम पाषाण के सप्तफणा पार्श्वनाथजी

श्रीबीकानेर नगरे। वृहत्खरतर भट्टारक गच्छेश। जं। यु। प्र। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं च। सुश्रावक। पूग। श्रीलछमणदासजी कारापितं स्वश्रेयोर्थं

(२०)

संवत १६ (१४) ७३ वर्षे माघ सुद ६ मूल सींघ भटारिषजी श्रीधरमचंद द्रव साहजी श्री भखरराम पाटणी नीत परणमंत सहा अमरराजे श्री अमायसिंघजी।

(२१)

परिकर पर

—१ ६० संवतु ११७६ मार्ग-
२ सिर वदि ६ पुगेरी (?) अ-
३ जयपुरे विधि कारि-
४ ते सामुदायिक प्रति-
५ ष्ठाः ॥ राण समुदायेन-
६ श्री महावीर प्रतिमा का-
७ रिता ॥ मंगलं भवतु ॥

(२२)

देहरी पर पाषाण पट्टिका

संवत १९२४ रा मिती आषाढ सुदि १० वृहस्पतिवार दिने जं। यु० ।प्र। श्री जिनहंस-सूरिजी विजय राज्ये पं० प्र० विद्याविशाल मुनि तत्शिष्य पं० लक्ष्मीप्रधान मुनि उपदेशात् समस्त श्री संघेन कारापितं ॥

(२३)

श्री अजितनाथ जी

संवत १४५७ वैसाख सुदि ७ श्रीमुल संसीघे भटारीषजी श्रीधरमचंदर दवे साह वेपतरामे पाटणी नीते परणमंते सहर गव गागदुणीरा

(२४)

स्तम्भ पर (बाह्य मंडप में)

संवत् १७०८ वर्षे मिती जेठ सुदि ६ ।। मथेन माऊ लिखतं मोखादेव्य लिखतं ।।

(२५)

मन्दी में

।। ६० ।। संवत् १६८४ वर्षे आषाढ सुदि ५ दिने वार सोम मथेन सदारंग लिखित ।।

भूमिगृहस्थ खण्डित मूर्तियों व पादुकाओं के लेख

(२६)

संवत् १८५७ वर्षे वैसाख सुदि ७ श्रीमूल संघे भट्टारकजी श्रीधरमचंद्र साह बखतराम पाटणी

(२७)

।।६०।। संवत् १५६३ वर्षे माहवदि १ दिने गुरु [पुष्य (व्य) योगे श्री ऊकेश वंशे श्री बोथिरा गोत्रे म० वच्छा भार्या वील्हादे पुत्र म०कर्मसीहभार्याकउतिगदेपुत्र मं०राजा, भार्या रयणादे अमृतदे पुत्र मं० पेथा मं० फाला मं० वयसमाला मं० वीरमदे मं० जगमाल मं० मानसिंघ स्वपितामह श्रेयसे श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(२८)

।। ६०।। संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे ऊकेशवंशे बोहित्थरा गोत्रे म० कर्मसी भार्या कउतिगदे पुत्र मं० सूजा भार्या सूरजदेव्या स्वसपत्न्या सुरताणदेव्या पुण्यार्थ श्रीशीतलनाथ बिंबं का प्रतिष्ठितं च श्री ख० जिनमाणिक्यसूरिभि

(२९)

सं० ११५५ जेठ वदि ५ सोम श्री देवसेन संघ देव हने म अवदात पासनाथ बिंब कारितं

(३०)

संघ।१६१४ रा वर्षे मिती आषाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्रीसुमतिनाथ जिन बिंबं प्रति।भा श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि बृहत्खरतर गच्छे।

(३१)

स।१६११ पै० सु० ७ नमिजिन बिंबं भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि प्र। बाह मुनी खरतर गच्छ

(३२)

संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ गुरु पुष्य योगे ऊकेश वंशे मं० राजा पुत्र मं०
... श्रीसुमति जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(३३)

॥संवत् १५६३ वर्षे मं० केल्हण तत्पुत्र पेथड भार्या रिडाइ पुत्र समरथ भार्या पात्रा पु

(३४)

॥सं० १५६३ वर्षे॥ सकतादे पुण्यार्थ श्री आदिनाथ बिंबं प्र० श्री जिनमाणिक्यसूरिभि ।

(३५)

संवत् १५७६ वर्षे माह वदि १५ दिने श्रा० सामलदे पुण्यार्थं कारित श्री
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहंससूरिभिः

(३६) Page 7

संवत् १५६३ वर्षे माह व० १ दिने बोहित्थरा गोत्रे सा० जाणा भार्या सकता दे पुत्र सा० केल्हण भार्या कपूर दे पुत्र वच्छा नेता जयवंत जगमाल घडसी जोधादि युतेन स्वस्मापु पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(३७)

सं० १५६३ वर्षे माह व० १ दिने मं० राजा पु० मं० केन स्व भार्या पाटिमदे पुण्यार्थं
श्रीसु नाथ बिंबं कारित प्र० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(३८)

॥संवत् १५६३ व० केल्हण तत्पुत्र पेथड भार्या रेडाई पुत्र समरथ भार्या पावा पुन्नू भार्या दा-लक्खू अमरा वाहड़ सपरिवारेण श्री आदिनाथ बिंबं का। प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि.

(३९)

॥संवत् १५६३ वर्षे॥ सोहगदेव्या स्वपुण्यार्थं श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं

(४०)

॥संवत १ ६३ वर्षे लाणी स्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(४१)

संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने मं० डूंगरसी पुत्र नरवद भा० लालमदेव्या स्वपुण्यार्थं कारितं विमलनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(२४)

स्तम्भ पर (बाह्य मंडप में)

सवत् १७७८ विर्षे मिती जेठ सुदि ६ ॥ मयेन माहू छिखत मोक्षदेव्य लिखतं ॥

(२५)

मढ़ती में

॥ ६० ॥ सवत् १६८४ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ दिने वार सोम मथन सदारंग लिखितं ॥

भूमिगृहस्थ खण्डित मूर्तियों व पादुकाओं के लेख

(२६)

सवत १४५७ वर्षे वैसाख सुदि ७ श्रीमूल सघे भट्टारकजी श्रीधरमचदर साह बखतराम पाटणी

(२७)

॥६०॥ सवत् १५६३ वर्षे माहवदि १ दिने गुरु [पुष्य (ष्य) योगे श्री ऊकेस वंशे श्री बोहिथिरा गोत्रे मं० धन्ना भार्या बील्हा दे पुत्र मं०करमसीहभार्याकवलगदेपुत्र म०राजा, भार्या रयणादे अमृतदे पुत्र मं० पेथा म० काला म० अयतमाला म० वीरमदे म० जगमाल मं० मानसिंघ स्वपितामह श्रेयसे श्री नेमिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि·

(२८)

॥ ६०॥ सवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने गुरु पुष्य योगे ऊकेशवंशे बोहिथरा गोत्रे म० कर्मसी भार्या कवलिगदे पुत्र मं० सूजा भार्या सूरजदेव्या स्वसपत्न्या सुरताणदेव्या पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं का प्रतिष्ठितं च श्री ख० जिनमाणिक्यसूरिभि·

(२६)

स० १५५५ जेठ वदि ५ सोम श्री देवसेन सघ देव दसे म अचवात पासनाथ बिंब कारितं

(३०)

सव ।१६१४ रा वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्रीसुमतिनाथ जिन बिंब प्रति ।भा श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि बृहत्खरतर गच्छे ।

(३१)

सं। १६१६ वै० सु० ७ नमिजिन बिंबं म। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः म । चार्य मुनी खरतर गच्छे

(३२)

संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ गुरु पुष्य योगे ऊकेश वंशे मं० राजा पुत्र मं०
. . . . . . श्रीसुमति जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(३३)

॥संवत् १५६३ वर्षे मं० केल्हण तत्पुत्र पेथड भार्या रिडाइ पुत्र समरथ भार्या पावा पु

(३४)

॥सं० १५६३ वर्षे॥ सकतादे पुण्यार्थ श्री आदिनाथ बिंब प्र० श्री जिनमाणिक्यसूरिभि ।

(३५)

संवत् १५७६ वर्षे माह वदि १५ दिने श्रा० सामलदे पुण्यार्थं कारित श्री
नाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनहंससूरिभिः

(३६) Page 7

संवत् १५६३ वर्षे माह व० १ दिने बोहित्थरा गोत्रे सा० जाणा भार्या सकता दे पुत्र सा० केल्हण भार्या कपूर दे पुत्र वच्छा नेता जयवंत जगमाल घडसी जोगादि युतेन स्वसमापु पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि·

(३७)

सं० १५६३ वर्षे माह व० १ दिने मं० राजा पु० मं० केन स्व भार्या पाटिमदे पुण्यार्थं
श्रीसु नाथ बिंबं कारित प्र० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि.

(३८)

॥संवत् १५६३ व० केल्हण तत्पुत्र पेथड भार्या रेडाई पुत्र समरथ भार्या पावा पुत्र भार्या दा-लक्खू अमरा वाहड़ सपरिवारेण श्री आदिनाथ बिंबं का। प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि.

(३९)

॥संवत १५६३ वर्षे॥ सोहगदेव्या स्वपुण्यार्थं श्रीविमलनाथ बिंब कारितं

(४०)

॥संवत १ ६३ वर्षे लाणी स्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि·

(४१)

सवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने मं० डूगरसी पुत्र नरबद भा० लालमदेव्या स्वपुण्यार्थं कारितं विमलनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि·

(४२)

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने बोहिथरा गोत्रे मं० रत्नाकेन स्वभार्या सरूपादेव्या पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरि पट्टे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(४३) Page 8

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ श्री भणसाली गोत्रे मं० डामर पुत्र मं० खीवा भार्या बाल्ही पुत्र राजपाल म० रायपालेन कारितं प्र० श्री

(४४) Page 8

॥ सवत् १५६३ वर्षे साह हर्षा भार्या सुहागदेव्या स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः ॥ सांखला गोत्र श्री

(४५)

॥ सवत् १५६३ वर्षे स० रामण भा० पद्मादेव्या स्वपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारित प्र। श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः ॥

(४६)

सं० १५७३ ज्येष्ठ सुदि गोत्रे सा० कान्ह हांसू वस्तू भोजा श्रावकैः श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्रीजिनवर्द्धनसूरिभि

(४७)

प्र० श्री जयसिंह सूरिभि

(४८)

पुगलिया गोत्रे सा असा भा। पुण्यार्थ श्री आदिनाथ।

(४६)

स० १६१४ रा वर्षे। मि आषाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्री सभव जिन बिंबं म। ति। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः बृहत्खरतर गच्छे।

(५०)

श्याम पाषाण की प्रतिमा पर

सं० १६३१ व। मि। वै। सु। ११। ति। प्र। भ। श्रीजिनहंससूरिभिः को। गो। धरासुत भार्या अच्छे का

चरण-पादुकाओं के लेख

(५१)

.. खरतर गच्छे भट्टारक श्री जिनधर्मसूरि राज्ये साध्वी भावसिद्धि पादुके। शिष्यणी जयसिद्धि कारापितं। श्रेयसे।

(५२)

संवत् १७४० वर्षे माघ मासे शुक्ल पक्षे ५ तिथौ भृगुवासरे पूर्वभाद्रपद नक्षत्रे पंचाग शुद्धौ .... त् शिष्यणी साध्वी चन्दनमाला पादुके कारिते सा० सौभाग्यमाला

(५३)

॥ ए० ॥ १६४० वर्षे भाद्रवा १३ दिने। श्री खरतर गच्छे वा० श्रीदे पादुका श्री विक्रमनगरे।

(५४)

दो गोल पादुकाओं पर

संवत् १७३० वर्षे माह वदि ५ शुक्रवार शुभयोगे श्री खरतर गच्छे भट्टारक श्रीजिनधर्मसूरि राज्ये साध्वी विनयमाला शिष्यणी सव छा ॥ १३ ॥ लनी पुष्पमाला प्रेममाला पादुके कारापिते ॥

॥ पुष्पमाला पादुके १ ॥ ॥ साध्वी प्रेममाला पादुके २ ॥

(५५)

पीले पाषाण के चरणों पर

संवत् १७४६ वर्षे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि संताने श्री समयसुदरोपाध्याय शिष्य वा० महिमासमुद्र तत्शिष्य पंडित विद्याविजय गणि तत् शिष्य नाचनाचारिज श्री विनयविशाल गणि पादुके ॥ शुभं भवतु ॥

भूमिगृहस्थ धातु-मूर्तियोंके लेख

(५६)

लाटह्रद गच्छे पूर्णभद्रेण

(५७)

सं० १२२ (? १०२२)

६ ॥ गच्छे श्री नृवितके तते संताने पारस्वदत्तसूरीणांसिभ पुत्र्या सरस्वत्याचतुर्विंशति पट्टकं मुक्त्यथ चकारे ॥

(४२)

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने बोहित्थरा गोत्रे म० रत्नाकेन स्वभार्या सक्तादेव्या पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छ श्रीजिनहंससूरि पट्टे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(४३) Page 8

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ श्री भणसाली गोत्रे म० वामर पुत्र मं० श्रीवा भार्या वाल्ही पुत्र रायपाल म० रायपालेन कारितं प्र० श्री

(४४) Page 8

॥ संवत् १५६१ वर्षे साह हर्षा भार्या सुहागदेव्या स्वपुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः ॥ साउंसाख गोत्र श्री

(४५)

॥ संवत् १५६१ वर्षे सं० काहण भा० पद्मादेव्या स्वपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारित प्र। श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः ॥

(४६)

स० १५७३ ज्येष्ठ सुदि गोत्रे सा० कालू हासू वस्तू मोला भावके श्री अजितनाथ बिंबं का० प्र० श्रीजिनवर्द्धमसूरिभिः

(४७)

प्र० श्री जयसिंह सूरिभिः

(४८)

सुराणा गोत्रे सा वसा भा। पुण्याय श्री आदिनाथ।

(४९)

सं० १६१४ रा वर्षे। मि आषाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्री समस्त जिन बिंब प्र। ति। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः वृहत्खरतर गच्छे।

(५०)

श्याम पाषाण की प्रतिमा पर

स० १६११ व। मि। वै। सु। ११। ति। प्र। भ। श्रीजिनहंससूरिभिः को। गो। सदारङ्ग भार्या अच्छे का

(७०)

स० ११५७ वैशाख सुदि १० जसदेव सुतेन वाहुरेन श्री पारस्यर्श्वनाथ प्रतिमा श्रेयोर्थं कारिता

(७१)

संवत् ११६३ ज्येष्ठ सुदि १० सोमदेवेन स्वमातृ सलूणिका । प्रतिमा कारितेति

(७२)

संवत् ११६६ आपाढ वदि ६ अल्लदेव पत्न्या वीरिकया कारिता ॥

(७३)

सं० ११६६ आपाढ सुदि २ जाखंदेन आत्म श्रेयोर्थं कारिता ॥ ९

(७४)

॥ संवत् ११८८ विंवं कारितं रिगच्छीय श्री नयचंद्रसूरिभिः

(७५)

सं० ११८६ (६६?) वर्षे माघ वदि ४ घलि का व राल सा (?) ।

(७६)

६०॥ संवत् ११६५ वैसा सुदि ३ शुक्रे उद्योतन पुत्र पाहर भार्या अभयसिरि महावीर विंवं कारिता. ॥

(७७)

संवत् १२१२ वर्षे येष्ट सुदि ६ गुरौ श्रे०-धणदेव तत्पुत्र सुमा श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं हरिप्रभसूरिभि. ।-

(७८)

धणदेव प्रतिमा संवत् १२०६ जेठ वदि ३

(७९)

स० १२०६ वर्षे माह वदि ११ प्रा०वम्र भा० राजलदे पुत्र रामसीहेन पित्रोः भ्रातृ जयतसींह श्रेयसे श्री ऋषभदेव विंवं श्री शालिभद्रसूरिणा प्र० भरे (?)

(८०)

सं० १२११ वै० सु० ८ भीजल संबु महिवस्तयाणल

(८१)

१२१२० (?१२१२) माग सु ६ रवौ श्री नाण गच्छे शुभंकर सुत सालिग

(५८)

श्री देवचन्द्राचार्य नागेन्द्र गच्छे प्रणशासे सत्याका   त परत्तीकसा   (?)

(५६)

श्री   य (? ब्रह्माणीय) गच्छे श्री वच्छेन कारिता ।

(६०)

॥६०॥ श्री थारापद्रीयगच्छे वीम ? श्रेयोर्थं अम्रदेवेन कारिता ।

(६१)

६ स० ८१ श्री थारापद्रगच्छे म्नाकेन आत्मश्रेयसे कारिता ।

(६२)

बड़ी प्राचीन प्रतिमा पर

८ (ॐ) सन्ति गणि ।

(६३)

सं० १०२० वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे०   लखणदे पु० कर्मसीह पूना मेहधी पित्रोः श्रेयसे शांतिनाथ बिंबं का० प्र० सनपुरीय श्रीधर्मघोषसूरिभि ।

(६४)

संवत् १०३३ वैशाख वदी ६

(६५)

६ स० १०६८ फाल्गु सुदि ३ गच्छे श्रीपार्श्वसूरीणां श्रेयसे देवड़िकाख्यया चतुर्विं शति पट्टोर्य कारितो देव ज्यसया ॥

(६६)

६॥ संवत् १०८० ज्येष्ठ वदि ७ लं   श्रावक दुहिता सावीक   माय जिनदेवीति गु   कथियस०

(६७)

संवत् ११   वैशाख व० २। पूना सुता मधी आत्म श्रेयोर्थ प्रतिमा कारितेति

(६८)

सं० ११४१   आदिकम्य (? आदिनाथ) प्रतिमा कारिता ॥

(६६)

६॥ थारा० साधा निमित्त कोचिकेन कारिता स० ११४३

(९३)

१ संवत १२३४ फागुण सुदि २ सोमे श्रेष्ठि आमदेव स आसधर श्रेयोर्थं बिंबं कारितं।

(९४)

सं० १२३५ आपाढ सुदि पारस्व पार्श्व)नाथ प्रतिमा कारिता

(९५)

६ सं० १२३६ फागुण वदि ४ गुरौ श्री वीरप्रभसू रि) पार्श्व बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं व्रतो सुत वीरभद्रेण श्री देव हमेतेन (?)॥

(९६)

संवत १२३७ फागुण वदि ९ देसल पुत्रिकया पुनिणि श्राविकया दीहुली सहितया श्री महावीर प्रतिमा कारिता ॥

(९७)

६ सं० १२३७ आपाढ़ सुदि ६ सोमे हयकपुरीयगच्छे उलिग्राम आसचंद्र सुत भावदत्त भार्या सह भ्या प्रतिमा कारिता।

(९८)

सं० १२३९ द्वि० वैशाख सुदि ५ गुरौ पासणागपुत्रेण कीयमा पु० चाहिण्या श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री प्रभाणंद सूरिभि.

(९९)

सं० १२३९ पोष वदि ३ रवौ लखमण पुत्रेण वीराकेन नेमि प्रतिमा कारिता श्रीपद्मप्रभ (? यश) सूरि प्रतिष्ठिता।

(१००)

१ सं० १२३९ वै० सुदि ५ गुरौ श्री नाणक गच्छे से० सुभकर भार्या धणदेवि पुत्र गोसल वाहिर साजण सेगल जिणदेव पूनदेवाद्यै भ्रातृ धणदेव पुण्यार्थं श्री शान्तिसूरि

(१०१)

संवत् १२४४ माघ सुदि २ शनौ साहरण पुत्र जसचन्द्रेन भातृ ॥

(१०२)

६॥ संवत् १२४८ वैशाख सुदि ५ रवौ महिधा पुत्रिकया ऊदिणि श्राविकया आत्म श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ बिंबकारितं महिधाभार्या सावदेवि श्रीदेवचन्द्रसूरि शिष्यै श्रीमा

(८२)

सं० १२१३ पासय प्रति० कुल पौत्र जिस.

(८३)

संवत् १२१७ वैशाख सुदि ५ रवौ ॥ श्रावेरपालान्वय भव्य पाल्हा पुत्र धीसहणेन स्वभ्रातृ कुलचन्द्र श्रेयसे जिनचतुर्विंशतिका कारिता ।

(८४)

६॥ संवत् १२२० आषाढ़ सुदि १० श्री बृहद्गच्छे श्रे० असदेव पुत्र दूसळेन माता प्रियमति श्रेयार्थ शांतिनाथ प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता सूरिभि

(८५)

सं० १ २२ आषा० सु० ४ मातृ भामा श्रेयार्थ शांतिनाथ बिंब कारितं ॥

(८६)

सं० १ २२ माघ सुदि १३ आसपालेन कारिता प्रतिष्ठिता श्री मदनचन्द्रसूरिभिः ॥

(८७)

सं० १२ .८ वर्षे श्री महाणीय गच्छ श्री प्रद्युम्नसूरि प्रारि हाटपदाय (?) चना सुत पमोरि गाता माऊ श्रेयार्थ महावीर प्रतिमा कारिता ।

(८८)

६ सं १२२६ माघ सुदि ४ सालिग पोदित्य करापित

(८९)

सं १ ७ (?) ८०   बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री धनेश्वरसूरिभि

(९०)

सं० १ २७ धार प्रतिमा देवा कारिता ।

(९१)

१ संवत् १२३४ गाल्हा भत मायद तत्पुत्र धिराल्हन गायद श्रेयार्थं प्रतिमा कारिता बृहद्गच्छीये श्री धना रसूरिभिः प्रतिष्ठिता ।

(९२)

सं १२३७ वैशाख सुदि ११ श्रे० आसग मति पुत्र्या पाह आदि श्या बिंब कारितं । प्रतिष्ठित श्री च द्रसिंहसूरिभि

(९३)

१ संवत् १२३४ फागुण सुदि २ सोमे श्रेष्ठि आमदेव स आसधर श्रेयोर्थं बिंबं कारितं।

(९४)

सं० १२३५ आषाढ़ सुदि पारस्व पार्श्व)नाथ प्रतिमा कारिता

(९५)

६ सं० १२३६ फागुण वदि ४ गुरौ श्री वीरप्रभसू रि) पार्श्व बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं व्रतो सुत वीरभद्रेण श्री देव हमेतेन (?)॥

(९६)

संवत् १२३७ फागुण वदि ६ देसल पुत्रिकया पुनिणि श्राविकया दीहुली सहितया श्री महावीर प्रतिमा कारिता ॥

(९७)

६ सं० १२३७ आषाढ सुदि ६ सोमे हयकपुरीयगच्छे उलिग्राम आसचंद्र सुत भावदत्त भार्या सह भ्यां प्रतिमा कारिता।

(९८)

सं० १२३६ द्वि० वैशाख सुदि ५ गुरौ पासणागपुत्रेण कीयमा पु० चाहिण्या श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री प्रभाणंद सूरिभि.

(९९)

सं० १२३६ पोष वदि ३ रवौ लखमण पुत्रेण वीराकेन नेमि प्रतिमा कारिता श्रीपद्मप्रभ (? यश) सूरि प्रतिष्ठिता।

(१००)

१ सं० १२३६ वै० सुदि ५ गुरौ श्री नाणक गच्छे से० सुभकर भार्या धणदेवि पुत्र गोसल वाहिर साजण सेगल जिणदेव पूनदेवाद्यै भ्रातृ धणदेव पुण्यार्थं श्री शान्तिसूरि

(१०१)

संवत् १२४४ माघ सुदि २ शनौ साहरण पुत्र जसचन्द्रेन भातृ ॥

(१०२)

६॥ संवत् १२४८ वैशाख सुदि ५ रवौ महिधा पुत्रिकया ऊदिणि श्राविकया आत्म श्रेयोर्थं पार्श्वनाथ बिंबकारितं महिधाभार्या सावदेवि श्रीदेवचन्द्रसूरि शिष्यैः श्रीमा

(१०३)

सं०१२५१ वर्षे थारापद्रीय गच्छे नागड़ भार्या प्रियमति श्रेयोथ पुत्र देयजसेन श्री शांति नाथ प्रतिमा कारिता।

(१०४)

स० १२५८ आषाढ़ सुदि १० बुधे श्रे० वीरू भार्या माऊ तत्पुत्र सामंत सावकुमार वीरजस दूषजस आंबड़ प्रभृतिभि सम्नी (? भगिनी) धांधी श्रेयसे बिंबं कारिता प्रतिष्ठित च श्रीपद्मदेवसूरिभि

(१०५)

१ स० १२६० वर्षे आषाढ़ वदि २ सोमे बृहद्गच्छे श्रे० राणिगेन पुत्र पाल्हण देल्हण जाल्हण आल्हण सहितेन भार्या वासलो श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं हरिभद्रसूरि शिष्यैः श्री धनेश्वरसूरिभिः ॥

(१०६)

संवत् १२६२ माघ सुदि १३ आशापालेन कारिता प्रतिष्ठिता श्री मदनचन्द्रसूरिभि

(१०७)

६ सं० १२६२ फागुण वीसल भार्या सुखमिणि पुत्रिका बवाऊ (?) शांता स्वश्रेयसे श्री महावीर प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री बुद्धिसागरसूरि संताने पं० पद्मप्रभ गणि शिष्येन

(१०८)

१०॥ संवत् १२६६ वैशाख सु० ५ बुधे मल्लवीय भाहड़ धासदेवि सुत जसधरेण पुत्र पद्मसीह सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्री देवचीरसूरिभिः ।छ॥

(१०९)

स० १२६८ वैशाख सुद ३ श्री भावदेवाचार्य गच्छ श्रे० पुत्र धन्न सुतेन आमदत्तेन पु० नागर्म-गुरुस्याण (?) ।श्री वीर बिंब कारितं ॥ प्रति० श्री जिनदेवसूरिभिः

(११०)

६ स० १२६६ ज्येष्ठ सुदि २ बुधे श्री नाणकीय गच्छ श्रे० जेसल भार्या यशोमति पुत्र हरिच न्द्रेण भ्रातृ निमित्त हरिचन्द्र भार्या नाऊ पुत्र आसू पाहड़ गुणदेव सुतेन स्वश्रेयार्थ बिम्बं (१ बं) कारित श्री सिद्धसेनाचार्य प्रति।

(१११)

स० १२७२ (?) ज्येष्ठ सुदि १३ श्रे० आसराज सोवि पुन्या पो भ्रातिकया बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री चन्द्रसिंहसूरिभि

(११२)

संवत १२७२ वर्षे माघ सुदि चतुदश्या सोमे श्री नाणक गच्छीय श्रे० राणा सुत सामंत भा० धाना श्रेयसे सुत विजयसीहेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेनसूरिभिः ।।

(११३)

।। संवत १२७३ वर्षे ज्येष्ट सुदि ११ गुरु दिने माणिक सुत श्री धउणात्म श्रेयोर्थं सहितेन श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता ।। प्रतिष्ठिता श्री रत्नप्रभसूरिभिः उंबु गामे ।।

(११४)

६ सं० १२७३ ठ ‥ थ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धनेश्वरसूरिभिः

(११५)

।। ६० ।। सं० १२७६ वर्षे तेजा श्रेयोर्थं आसधर ' कारितं प्रतिष्ठितं श्री परमाणंदसूरिभिः

(११६)

१ सं० १२७६ वैशाख सुदि ३ बुधे श्रे० आसधर पुत्र बहुदेव वोडाभ्या भगिनी भूमिणि सहिताभ्या स्व श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता प्रतिठिता श्री हरिभद्रसूरि शिष्यैः श्री धनेश्वरसूरिभिः

(११७)

सं० १२८० वर्षे आसाढ वदि ३ बुधे ठ० वींजा तद्भार्या विजयमेत श्रेयोर्थं ठ० लक्तधर (?) पुत्र मूलदेवेन प्रतिमा कारिता

(११८)

संवत् १२८० ज्येष्ट वदि ३ बुधे यशोधरेण जयता श्रेयोर्थं प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठितं। श्री-श्रीचंद्रसूरभि.

(११९)

संवत् १२८१ वर्षे वैशाख सुदि नवम्या शुक्रे पु० त्रातसा जाल्हतया । न सदसत त (?) पितृ मातृ श्रे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री शील (?) सूरिभि

(१२०)

सं० १२८२ वर्षे ज्येष्ट सुदि १० शुक्रे श्री भावदेवाचार्य गच्छे ताडकान्त्रा पत्या वाढ जमहेड आरात देवड़ शालिभि. श्रीरा श्रेयसे पार्श्वं बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जि (न) देवसूरिभि·

(१२१)

स १२८२ ज्येष्ठ सु ६ गुरौ नाणक गच्छे धासला सुत लक्ष्मण स० देवाभ्यां पितृ मातृ श्रेयार्थं कारिता

(१२२)

ई० स० १२८३ ज्येष्ठ सुदि ४ गुरौ मातृ रायवइ श्रेयोर्थं व्यव० मलक्षण सुत नाइाकेन श्री पार्श्वनाथ बिंब कारित ॥ छ ॥ प्रतिष्ठता श्री शीलसूरिभि

(१२३)

स० १२८४ वैशाख वदि सोमे श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० असवीरण जीवित स्वामी श्री आदिनाथ कारापित बृहद्गच्छे श्री धर्मसूरि शिष्य श्री धनेश्वरसूरिभि प्रतिष्ठित ॥

(१२४)

स० १२८६ वैशाख सुदि ५ शुक्रे गोगा पुनदेव सुमदेव बोरीभि मातृ रतनिणि श्रियोर्थं श्री महावीर बिंब कारित प्रतिष्ठित श्री रत्नप्रभसूरिभि ।

(१२५)

स० १२८८ माह शुक्रे श्री धारापद्रीय गच्छे श्रे० जस संताने ठ० देसलेन पुत्र मरापाल सहितेन स्वपूर्वज श्रेयोर्थ शांतिनाथ बिंबं कारित । प्रति श्री सर्वदेवसूरिभि

(१२६)

८ १२८८ वर्ष आषाढ सुदि १० शुक्रे चैत्र गच्छे ॥ आचा प्रद्युम्न सूरिभि

(१ ७)

संवत् १२८८ ? माघ सुदि ६ सोमे श्रे० धामदेव पुत्र कामदेव माया पद्मिणि पुत्र सारा ग्न श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री देवेन्द्रसूरि संताने श्री नेमिचन्द्रसूरिभि

(१२८)

स० १२६० (?) मा० सु० १० श्रे० पुनचंद्र भार्या मल्हू पु० प्रतिष्ठित श्री उद्योतन सूरिभि

(१२६)

सं० १ ६० फागुण सुदि ११ शाके समे । धास्तम्य पगरया पिइला भार्या पुत्रिका आत्मज श्री पार्श्वनाथ बिंब कारिता प्रतिष्ठित श्री शांतिसूरिभि

(१३०)

॥सं० १२६३ माघ वदि १० श्रे प्रतिष्ठितं श्री नरसिंहसूरि शिष्यैः श्री पूर्णचंद्रसूरिभिः

(१३१)

संवत् १२६३ ज्येष्ठ सुदि ६ गुरौ श्री नाणक गच्छे श्रे० सेहड़ जिसह पु० जसधरेण मातृ जेसिरि श्रेयसे कारिता प्रति० श्री सिद्धसेनसूरिभिः

(१३२)

सं• १२६३ फाल्गुन सुदि ११ शनौ चंद्र गच्छ··· ·····पालसुत ठकुर श्रेयोर्थं भार्या जयाटा सुत धरगलं? कारापितं प्रतिष्ठितं श्री समुद्रघोषसूरि शिष्य श्री महेन्द्रसूरिभिः

(१३३)

सं० १२६४ वर्षे वैशाख सुदि ८ शुक्रे मजाहर वास्तव्य थारापद्रीय गच्छे श्रे० नीमचंद्र पुत्र माल्हा श्रेयोर्थं श्रे० मोहण पुत्र जल्हणेन बिंबं कारापितं········· ··· ············ ··

(१३४)

संवत् १२६५ वर्षे चैत्र वदि ६ ···· विजपालेन मातृ · · ······श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं

(१३५)

सं० १२६५ पौष वदि ८ गुरौ ब्रह्माण गच्छे सं० यशोवीर भार्यया स० सलखणदेव्या सोनासिंह श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वादीन्द्र श्री देवसूरि प्रतिशिष्य माणिक्यचंद्रसूरिभिः ॥

(१३६)

१ सं० १२-७ वर्षे चैत्र सुदि ५ सोमे चूंमण सुखमिनि सुतेन यसवड़ेन मातृ पितृ श्रियोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं।

(१३७)

सं० १२६७ आ० सुदि ६ रवौ श्रे० मोहणेन स्व श्रेयोर्थं पूर्व रत्नल श्रेयोर्थं च श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोषसूरि पट्ट क्रमायात श्री रत्नचंद्रसूरि पट्टस्थ श्री आनंदसूरिभि.

(१३८)

॥ ६० ॥ सं० १२६८ वैशाख वदि ३ शनौ पितृ जसणाता (?) मातृ जसवद्द श्रेयोर्थं पुत्र धूपा रुणा भोभा बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नरचंद्रसूरिभिः ॥ ०॥

(१३९)

नोहरी प्रतिमा कारिता श्री बृहद्गच्छीय श्री मानदेवसूरिभिः प्रतिष्ठित।

(१४०)

सं० १३०० (?) ५ नायल गच्छे श्रे० पद्मः पितुः श्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० देवचंद्रसूरिभि· ॥ छः ॥

(१४१)

सं० १३०२ - साह श्री (?) जीवदेव भो॰ यंता ?

(१४२)[1]

सं० १३०५ आषाढ़ सुदि १० श्री जिनपतिसूरि शिष्यैः श्री जिनेश्वरसूरिभिः सुमतिनाथ (?) प्रतिमा प्रतिष्ठिता कारिता सा० छोलू श्रावकेण ॥

(१४३)

स० १३०५ आषाढ़ सुदि १३ श्री जिनपतिसूरि शिष्य श्री जिनेश्वरसूरिभि श्री अमरनाथ प्रतिष्ठिता सा० छोलू श्रावकेण कारिता।

(१४४)

सं० १३०५ आषाढ़ सु० १० श्री जिनपतिसूरि शिष्यैः श्रीजिनेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठिता सा० सुवणपाल भार्यया त्रिभुवणपालश्री श्राविकया कारिता।

(१४५)

सं० १३०५ आषाढ़ सुदि १३ श्री जिनपतिसूरि शिष्य श्री जिनेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठिता सा० सुवणपाल भार्यया त्रिभुवणपालश्री श्राविकया कारिता।

(१४६)

सं० १३०६ (?) वर्षे आषाढ़ सुदि शनौ गच्छ श्रे० देवाकेन निज पितृ पीथा श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेश्वरसूरिभिः

(१४७)

सं० १३०६ फागुण वदि ५ गुरौ सवा -कांति तस्या पौत्र आसधर तयोः श्रेयसे साढ़णपालेन श्री आदिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीविजयसेनसूरिभिः

(१४८)

सं० १३११ मा० श्रे० पाल्हण मा० चाहिणि पु० हांपथ छूमत इवारेण पितृ भ्रातृ श्रेयसे श्री आदि बिं० का० प्रति० श्री सर्व्वदेवसूरिभिः ॥

(१४९)

संवत् १३११ (? वर्षे देव बिंब सूरिभिः

(१५०)

१ सं० १३११ श्री नाणकीय गच्छे व्यवहारक न्याल्हण भार्या राल्हया आत्म-श्रेयसे बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धनेश्वरसूरिभिः ॥

(१५१)

सं० १३११ फागुण सुदि १० श्रे० महिपाल श्रीपार्श्व वाक्मसीह कारापितं॥

[1] नं० १४२ से १४५ तक ४ लेखों में १ ही लेख संकलित है।

(१७२)

सं० १३२६ वै० .. ताम्र .. हीरा मीरा श्रेयोर्थं भांमण .. ..
श्री महावीर बिंबं प्र० श्री रत्नप्रभसूरिभिः

(१७३)

संवत् १३३० (?) . गच्छे श्रे० रत्नाकेन श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं
प्रतिष्ठितं श्री महेशाचंद्रसूरिभि·

(१७४)

संवत् १३३० (?) वर्षे माघ सुदि ६ सोमे दोसी मूजा भार्या मूजल पुत्र सहजाकेन पितृ
श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री गुणचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥ छ ॥

(१७५)

संवत् १३३० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनौ श्री . छ अरिसीह भा० लींबा ताच्प
अनोय लीलाकेन कारितं श्रेयसे प्रतिष्ठि। श्री शांतिसूरीणा। श्री शातिनाथ बिंबं

(१७६)

संवत् १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शनौ श्रे० वयरा श्रेयोर्थं सुत जगसीहेन चतुर्विंशति बिंबं
प्रतिष्ठितं भार्या हासल प्रणमति नित्यं ॥

(१७७)

सं० १३३१ माघ सुदि ११ बुधे व्य० सहदा भा आत्म श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ
बिंब करितं प्र० भ० संप (?) चंद्रेण

(१७८)

सं० १३३१ वर्षे चित्रा गच्छे पासडस्यार्थं श्री पार्श्वनाथ करितं से० धिणा कर्मण

(१७९)

संवत् १३३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ बुधे ठ० पेथड भार्या वडलादेवि पुण्यार्थं पुत्र आंबड़
आजडाभ्यां श्री पार्श्व बिंबं कारितं चंद्र गच्छीय श्रीपद्मप्रभसूरि शिष्यैः श्री गुणाकरसूरिभि. ॥

(१८०)

सं० १३३२ वर्षे . माणदेव भा० मूगल पुत्र . . . .

(१८१)

सं० १३३२ वर्षे येष्ट सुदि १३ बुधे व्य० पूनसीह भार्या पातू पुत्र विजयपालेन भार्या पूनिणि
सहितेन पितृव्य व्य० षोडसीह भार्या सोहग श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारायितं श्री परमानंदसूरि

(१६२)

सं० १३२२ वर्षे वैशाख सु० ८ गु० श्रे० बोहाय भार्या मा ~ श्रेयोथ पुत्र रासड़ गागकेन श्री पारस्वनाथ बिंबं कारित।

(१६३)

॥ सं० १३२३ माघ सुदि ३ सोमे श्रे० जसधर भार्या पूनिणि पुत्र सं० अभयसीहेन पित श्रेयसे बिंबं कारि प्र० श्री परमानंदसूरिभिः।

(१६४)

स० १३२४ वैशाख सुदि ७ शनौ प्राग्वाट ठ० सनामकेन आत्मश्रेयोथ आदि बिंब कारित प्रतिष्ठापितच

(१६५)

स० १३२४ (?) वै० सु० १० कमा सुत

(१६६)

तीन कायोत्सर्ग ध्यानस्थ प्रतिमापर

स० १३२४ वैशाख सुदि १३ शुक्रे साबो मूल्ल पुत्र पद्म

(१६७)

स० १३२५ फा० सुदि ८ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० पद्मा पुत्र धीणा ऊका मांम्हा धूटा ऊधाकेन भार्या कमसिरि पुत्र धारसीह सहितेन आत्म श्रेयोर्थ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धनेस्वरसूरिभिः

(१६८)

सं० १३२६ वदि ३ बुधे श्री श्रीमालज्ञातीय माता हेमाई श्रेयसे भीखा कालाभ्यां बिंबं कारिता प्रति० चित्र गच्छीय श्री पद्मप्रभसूरिभिः

(१६९)

स० १३२७ श्री मधूकेरा ज्ञातीय सा० छोला सुत सा० हेमा तत्तनयाभ्यां माहड़ पद्मदेवाभ्यां स्वपितुः श्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित च (१चं) ब्रह्मपल्लीय श्री श्रीचंद्रसूरिभिः

(१७०)

१ स० १३२७ वर्षे माघ सुदि ५ श्रे० छाड़ा भा० तेज पु० गांगाकेन भा० धवजू पु० साजण बिंबं कारित प्रति० श्रीविजयप्रभसूरिभिः

(१७१)

सं० १३२७ माह सुदि ७ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री सिद्धसूरि संताने मह० भीमा पु० नायक पाजड़ादिभिः पमव जिन करा० प्रतिष्ठितं श्रीचंद्रसूरिभिः

(१७२)

सं० १३२६ वै० ... ता ... हीरा मीरा ... श्रेयोर्थं झामण ... श्री महावीर बिंबं प्र० श्री रत्नप्रभसूरिभिः

(१७३)

संवत् १३३० (?) . गच्छे श्रे० रत्नाकेन श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेशचंद्रसूरिभि.

(१७४)

संवत् १३३० (?) वर्षे माघ सुदि ६ सोमे दोसी मूजा भार्या मूजल पुत्र सहजाकेन पितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री गुणचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥ छ ॥

(१७५)

संवत् १३३० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनौ श्री छ अरिसीह भा० लींबा ताउप अनोप लीलाकेन कारितं श्रेयसे प्रतिष्ठि। श्री शांतिसूरीणा। श्री शातिनाथ बिंबं

(१७६)

संवत् १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शनौ श्रे० वयरा श्रेयोर्थं सुत जगसीहेन चतुर्विंशति बिंबं प्रतिष्ठितं भार्या हासल प्रणमति नित्यं ॥

(१७७)

सं० १३३१ माघ सुदि ११ बुधे व्य० सहदा भा . . आत्म श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० भ० संप (?) चंद्रेण

(१७८)

सं० १३३१ वर्षे चित्रा गच्छे पासडस्यार्थं श्री पार्श्वनाथ करितं से० धिणा कर्मण

(१७९)

संवत् १३३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ बुधे ठ० पेथड़ भार्या वउलादेवि पुण्यार्थं पुत्र आंबड़ आजडाभ्या श्री पार्श्व बिंबं कारितं चंद्र गच्छीय श्रीपद्मप्रभसूरि शिष्यै. श्री गुणाकरसूरिभि. ॥

(१८०)

सं० १३३२ वर्षे . माणदेव भा० मूगल पुत्र . .

(१८१)

सं० १३३२ वर्षे येष्ट सुदि १३ बुधे व्य० पूनसीह भार्या पातू पुत्र विजयपालेन भार्या पूनिणि सहितेन पितृव्य व्य० षोडसीह भार्या सोहग श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारायितं श्री परमानंदसूरि

(१६२)

सं० १३२२ वर्षे वैशाख सु० ८ गु० श्रे० बोहाथ भार्या पा श्रेयोथ पुत्र राजड़ गाङ्गकेन श्री पारस्वनाथ बिंबं कारितं।

(१६३)

॥ सं० १३२३ माघ सुदि ६ सोमे श्रे० आसधर भार्या पूनिणि पुत्र सं लखमणसीहेन पितृ श्रेयसे बिंबं कारि प्र० श्री परमानंदसूरिभिः।

(१६४)

स० १३२४ वैशाख सुदि ७ शनौ प्राग्वाट ठ० समामकेन आत्मनं पोर्वं आदि बिंबं कारि० प्रतिष्ठापितश्च

(१६५)

सं० १३२४ (?) वै० सु० १० क्षा सुत

(१६६)

तीन कायउसग्ग ध्यानस्थ प्रतिमापर

सं० १३२४ वैशाख सुदि १२ शुक्रे सावौ मूल्म पुत्र पद्मम्

(१६७)

सं० १३२५ फा० सुदि ८ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० पद्मा पुत्र भीणा रत्ना मांभा पूहा छाजाकेन भार्या लखमसिरि पुत्र भारसीह सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री धनेश्वरसूरिभिः

(१६८)

सं० १३२६ वदि ३ बुधे श्री श्रीमालज्ञातीय मातृ हेमाई श्रेयसे मीला छाजाभ्यां बिंबं कारिता प्रति० पिप्प गच्छीय श्री पद्मप्रभसूरिभिः

(१६९)

स० १३२७ श्री मदूकेश ज्ञातीय सा० छोला सुत सा० हेमा वचनयाभ्यां बाहड़ पद्मदेवाभ्यां स्वपितुः श्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च (त्र) रुद्रपल्लीय श्री श्रीचंद्रसूरिभिः

(१७०)

१ सं० १३२७ वर्षे माघ सुदि ५ श्रे० छाडा भा० तेज पु० गांगाकेन भा० बपम् पु० सालम बिंबं कारित प्रति० श्रीविजयप्रभसूरिभि

(१७१)

सं० १३२७ माह सुदि ७ श्री ब्रह्माण गच्छे श्री सिद्धसूरि संताने मह० पीपा पु० नायक पीजड़प्रभृतिभिः पार्स्व जिन करा० प्रतिष्ठितं श्रीचन्द्रसूरिभिः

(१७२)

सं० १३२६ वै० · · · ताभं · · · · हीरा मीरा श्रेयोर्थं कामण· श्री महावीर बिंबं प्र० श्री रत्नप्रभसूरिभिः

(१७३)

संवत् १३३० (?) · गच्छे श्रे० रत्नाकेन ·श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री महेशचंद्रसूरिभि·

(१७४) ना।२८८।२।।बीकाने

संवत् १३३० (?) वर्षे माघ सुदि ६ सोमे दोसी मूजा भार्या मूजल पुत्र सहजाकेन पितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री गुणचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥ छ॥

(१७५)

सवत् १३३० वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शनौ श्री · · छ अरिसीह भा० लींबा तापप अनोय लीलाकेन कारितं श्रेयसे प्रतिष्ठि। श्री शांतिसूरीणा। श्री शांतिनाथ बिंबं

(१७६)

संवत् १३३० वर्षे चैत्र वदि ७ शनौ श्रे० वयरा श्रेयोर्थं सुत जगसीहेन चतुर्विंशति बिंबं प्रतिष्ठितं भार्या हासल प्रणमति नित्यं॥

(१७७)

सं० १३३१ माघ सुदि ११ बुधे व्य० सहदा भा आत्म श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब करितं प्र० भ० संप (?) चंद्रेण

(१७८)

सं० १३३१ वर्षे चित्रा गच्छे पासडस्यार्थं श्री पार्श्वनाथ करितं से० धिणा कर्मण

(१७९)

संवत् १३३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ बुधे ठ० पेथड भार्या वउलादेवि पुण्यार्थं पुत्र आंबड़ आजडाभ्या श्री पार्श्व बिंबं कारितं चंद्र गच्छीय श्रीपद्मप्रभसूरि शिष्यै· श्री गुणाकरसूरिभि.॥

(१८०)

सं० १३३२ वर्षे माणदेव भा० मूगल पुत्र ·

(१८१)

सं० १३३२ वर्षे येष्ट सुदि १३ बुधे व्य० पूनसीह भार्या पातू पुत्र विजयपालेन भार्या पूनिणि सहितेन पितृव्य व्य० घोडसीह भार्या सोहग श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारायितं श्री परमानंदसूरि

(२१७)

६० ॥ स १३५४ माह वदि ४ शुक्रे श्री उपकेश गच्छ श्री ककुदाचार्य संताने छिगा गो० मुळ देवाणी पेळा भार्या माऊ श्रेयोर्थं पासकेन श्रीअरिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धसूरिभि ॥

(२१८)

सं० १३५६ (?) वर्षे वैसाख सुदि ६ चित्रवा(ल) गच्छ प्रतिष्ठित श्रीधर्मसिंह सूरिभि

(२१९)

सं० १३५६ सा० शु० ६ पत्री० आंबवीर सुत साजण भार्या सोमसिरि तत्पुत्र सा० कुमारपाळा भ्यां निज मातृ पितृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्ममंगलसूरि शिष्यैः श्रीअमरचंद्रसूरिभि

(२२)

सं १३५६ फा० सु २ सा० धांध पितृ पदम छाडी श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० माणिक्यसूरि शिष्य श्रीउदयप्रभसूरिभि

(२२१)

सं० १३६० (?) वैशाख सुदि ६ सह कर्मसीह भार्या गोरल पुत्र नेनधरण बिं० कारित प्र श्रीधर्मदेवसूरिभि प्रतिष्ठित॥

(२२२)

सं० १३६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ रवौ मा० सु० वयरसीह सु० श्रे० रामा श्रेयोर्थ पु० छाखण महड़ाऊ श्रीआदिनाथ बिंब श्रीकमलप्रभसूरीणां पट्टे श्रीगुणाकरसूरिणामुपदेशेन प्र० सूरिभि

(२२३)

सं० १३६१ वर्षे श्रे० राजा प्र० श्रीकमलाकरसूरिभि

(२२४) नाटरा | मुंदे | सोलंकी ... | बी० २

सं० १३६१ वर्षे वैशाख वदि ५ गुरौ भ्रातृ कर्मसिंह श्रेयसे ठ० कुरसीहेन श्रीनेमिनाथ बिंबं कारापित रत्नसागरसूरय आचप श्री।

(२२५)

सं० १३६१ वैशा सुद ६ श्रीमहावीर बिंबं श्रीजिनप्रबोधसूरि शिष्य श्रीजिनचन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठित। कारितंच श्रे० पद्मसी सुत कम्मासीह पुत्र सोहड़ सलखण पौत्र सोमपालेन सव कुटुंब श्रेयोर्थ॥

(२२६)

सं० १३६१ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे श्रे० माल्हण भार्या जासलि सु० अरसीह पुत्र गारा पुत्र साह सा० माल्हण श्रेयसे श्रीऋषभ बिंबं कारितं

(२२७)

संवत १३६१ वर्षे आषाढ (सुदि) ३ पल्लीवाल गच्छे श्रे० तेजाकेन भ्रातृ वील्हा श्रेयार्थं श्री-पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमहेश्वरसूरिभिः

(२२८)

९ सं० १३६२ वर्षे श्रीमाल ज्ञातीय महं वीरपालेन आत्म पुण्यार्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० मानतुंगसूरिभिः

(२२९)

सं० १३६२ श्रे० वाहड भार्या आल्ह सुत कूराकेन निज भ्रातृ महिपाल श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मचन्द्रसूरिभि

(२३०)

१ संवत् १३) ५७ फागुण सुदि ७ गुरौ गूर्जर ज्ञातीय श्रे० पद्मसीह भार्या पद्मश्री श्रेयोर्थं पुत्र जयताकेन श्रीमहावीर बिंबं कारितं वादि श्रीदेवसूरि संताने श्रीधर्मदेवसूरिभि. ।।

(२३१)

।। सं १३६३ चैत्र वदि ७ शुक्रे श्रे० अजयसीह तेज पुत्र चयशात भार्या माहिणि पुत्र पद्म सोढेन पितृ श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीशांतिसूरिभि ।।

(२३२)

सं० १३६३ माघ वदि १० बुध प्राग्वाट कर्मसींह भार्या रूपा श्रेयसे पुत्र सुहड़ेन श्रीपार्श्वनाथ श्रीमेरुप्रभसूरि श्रीजिनसिंहसूरिणा उपदेशेन कारि०

(२३३)

सं० १३६४ (?) वर्षे कवलाकरसूरिभिः

(२३४)

सं० १३६७ व० श्रीमाल जातीय श्रे० सोम सुत तेजाकेन भ्रातृ हरिपाल श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० ।। श्री आमदे । (व) सूरिभि ।।

(२३५)

स० १३६६ श्रे० पदमसीह भा० सेतू पुत्र भटारनयोकेन भा० वेल्हणदे पुत्र जगसीह विंब प्र० महाहड़ीय श्रीभानदप्रभसूरिभिः

(२३६)

सं० १३६७ श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० वेजा सुत आजा भार्या अमीदेवि श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं

(२३७)

संवत् १३६७ वर्षे आषाढ़ सुदि ३ रवौ श्रे० सांवदेन भार्या लूणा युतेन श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० महाहड़ीय श्री० आर्णंदप्रभसूरिभिः

(२३८)

सं० १३६७ वर्षे माघ वदि ६ गुरु श्रे० अजयसीह पुत्र धीकम भार्या वाल्हू पुत्र धणपाल भ्रा० हरपाल सहितेन पिता माता टा श्रेयोर्थं वीर बिंबं कारित प्रति० श्रीबृहद्गच्छे श्रीयशोभद्रसूरिभिः ॥

(२३९)

संवत् १३६८ वर्षे चैत्र वदि ७ शुक्रे श्रे० अजसिंह सत्पुत्र वयजल भार्या मोहणी पुत्र पद्मसीहेन पितृ श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः

(२४०)

संवत् १३६८ वर्षे चैत्र वदि ८ शुक्रे श्रे० अजयसीह भार्या खीमिणी पुत्र खीमाकेन मातृ पित्रो श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंब कारितं श्रीकल्लिदेवसूरि शिष्य श्रीदेवचन्द्रसूरि उपदेशेन श्रीपूर्णिमा पक्षे चतुर्थ शाखायां

(२४१)

संवत् १३६८ व धणदास श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारित प्र (? प्र) श्रीमदनसूरि पट्टे श्रीभद्रेश्वरसूरिभिः ।

(२४२)

स० १३६८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ भामे श्रे० पयरसीह सु० श्रे० रामा श्रेयोर्थ पु० खाम्पण सहसा श्रीआदिनाथ बिंबं श्रीकमलप्रभसूरीणां पट्टे श्रीगुणाकरसूरीणा उपदेशेन प्र० सूरिभि

(२४३)

स० १३६८ वर्षे माघ सुदि ६ श्रे० पाहण सुत धांधल श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारित प्र० चान्द्र भद्रसूरि गच्छे श्रीपद्मदेवसूरिभिः

(२४४)

सं० १३६६ वर्षे उपकेश ज्ञातीय श्रे० नरपाल सुतया कपूरदेव्या पितु श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्र गच्छीय आमदेवसूरिभिः ॥ २

(२४५)

संवत् १३६६ वर्षे वैशाख सुदि ११ रवौ श्रीमाल ज्ञातीय भा० जसधर जसमल पुत्रेण गजसीहेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीभदेसुरसूरिभि· ॥

(२४६)

सं० १३६६ (?) माघ (?) सुदि ६ सोमे डोसी मूजा भा० मूजल पुत्र सुहडाकेन श्री आदि-नाथ बिंबं कारितं श्रीगुणचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ॥ छः ॥

(२४७)

संवत् १३६६ वर्षे फागुण वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० हावीया भार्या सूहवदेवि सुत व्य० श्रे० अरसिंह मातृ सलल श्रेष्ठि महा सुत ५ व्य० पितृव्य सोमा भार्या सोमलदेवि समस्त पूर्वजाना श्रेयोर्थं व्यव० अर्जुनेन भार्या नायिकदेवि सहितेन चतुर्विंशति पट्ट कारित. मंगलं शुभंभवतु ॥ वृहद्‌गच्छीय प्रभु श्रीपद्मदेवसूरि शिष्य श्रीवीरदेवसूरिभिः प्रतिष्ठित चतुर्विंशति पट्ट. ॥ ७४ ॥

(२४८)

सं० १३७० फागु० सु० २ प्राग्वा० सा० श्रीदेवसींह भार्या मीणलदेव्या आत्म श्रेयसो श्रीमहावीर बिंबं का० प्रति० श्रीवर्द्धमानसूरि शिष्य श्रीरत्नाकरसूरिभि ॥ छ ॥

(२४९)

सं० १३७१ व्य० समरा पु० सातसीहेन भा० लखमादे पु० साडा श्रेयसे श्रीआदिनाथ का० प्र० श्रीआनंदसूरि पट्टे श्रीहेमप्रभसूरिभिः मड्डाहडीय ग०

(२५०)

सं० १३७१ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोमे साहू त्रावड भा० चापल सु० सोढ़ा कर्माभ्या मातृ पितृ श्रेयसे श्रीअजितनाथ कारि ॥ प्र० श्रीसुमतिसूरिभि संडेर गच्छे ॥

(२५१)

सं० १३७२ माघ वदि ५ सोमे श्री नाणकीय गच्छे जाखड पुत्र रामदेव भार्या राणी आत्मा श्रेयोर्थं श्रीपासनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभि

(२५२)

सं० १३७३ चैत्र ब० ७ सामे श्रीमाल ज्ञा० अमीपाल सांगण भा० सूहवदे आदिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीमाणिक्यसूरिभिः ।

(२५३)

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ७ सामे श्री पल्लीवाल ज्ञातीय सें० नरदेव श्रेयोथ सा० पासदवेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीचैत्र गच्छे श्रीपद्मदेवसूरिभिः

(२५४)

सं० १३७३ ज्येष्ठ सुदि ८ प्रा० श्रे० आमड़ भार्या धीठी पुत्र रूपाकेन आत्म श्रेयसे श्रीऋषभ नाथ बिंब का० प्रतिष्ठित श्रीविनयचन्द्रसूरिभिः

(२५५)

सं० १३७३ वर्ष ज्येष्ठ सुदि १२ श्रीकोरंटकीय गच्छे श्रे० वीसल भा० हांसू पुत्र मामाकेन मातृ पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ कारिता प्रतिष्ठित श्रीनन्नसूरिभिः

(२५६)

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्रीमूलसंघ भट्टा० श्रीपद्मनंदि गुरूपदेशेन देवासुर भीमा श्रेयोथ अजनन प्रतिष्ठापित ॥

(२५७)

॥ ६० ॥ संवत् १३७३ वर्षे माघ वदि ८ माने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सिरिधर भार्या पाल्हू श्रेयसे पुत्र जयतसी सीहड़ वसड़ मलस्वामिभिः श्रीजिनसिंहसूरीणामुपदेशेन

(२५८)

सं० १३७३ पौष वदि ८ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० गादह भातृव्य नायकु सोमसीह जगसीहाभ्यां स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं करापित प्र० श्रीमदनचन्द्रसूरिभिः ॥

(२५६)

सं० १३७३ माह वदि ८ माने श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० धना भा० सांतिणि पुत्र लखमसीह आत्म श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब का० प्रति० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः

(६०)

सं० १३७३ वर्षे माह वदि ८ माने प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० आपर भार्या आहिणि तया श्रेयसे पु० भाजन श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारिता प्र० श्रीसूरिभिः

(२६१)

सं० १३७३ माघ वदि ५ श्रे० धणपाल भा० पूनम पु० सलखणेन पित्रो श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ विंबं श्रीसागरचन्द्रसूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठिता ॥

(२६२)

सं० १३७३ वर्षे माह वदि ५ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय पितृ श्रे० सोमा मातृ रूपिणि श्रेयसे सुत श्रे० नरसिंहेन श्रीपार्श्वनाथ विंबं कारितः। प्रति० श्रीसूरिभि. ॥

(२६३)

सं० १३७३ फागुन वदि ७ वुध दिने प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० यशोवीर भा० यशमई सुत व्य० पद्मसीह भार्या वयजलदेवि सहितेन पिता माता श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीरत्ना-करसूरिभिः ॥

(२६४)

सं० १३७३ वर्षे फागुन सुदि ८ श्रीमाल ज्ञातीय पितृ सीहड भार्या सापइ श्रेयोर्थं सुत आसाई तेन श्रीआदिनाथ कारित. प्रतिष्ठितं श्रीवालचंद्रसूरिभि· ॥ ७४ ॥

(२६५)

सं० १३७३ (?) वर्ष फागुन सु० ६ श्रे० लला भा० सिरादे पु० आल्हाकेन श्रीपार्श्व विंबं कारितं प्रति० श्रीपद्मदेवसूरिभिः ।

(२६६)

सं० १३७४ वैशाख सुदि ७ शनौ प्राग्वाट ठ० सलखाकेन आत्म श्रेयसे श्रीआदिविंबं कारितं प्रतिष्ठापितं च ।

(२६७)

सं० १३७४ ज्येष्ठ (?) सु० १३ शनौ (?) प्राग्वाट ठ० नामि पर सुत रामा भा० गरी श्रीआदि-नाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं ।

(२६८)

सं० १३७५ वर्षे श्रीकोरंटक गच्छीय श्रा० मोहण भार्या मोखल पु० माला उदयणलाभ्यां श्रीआदि विंबं कारितं प्र० श्रीनन्नसूरिभिः ।

(२६९)

॥ ६० ॥ सं० १३७५ वर्षे आषा ३ गुरौ उकेश ज्ञा० श्रे० सावड सं० वीरांगजेन महणेन पितृव्य भ्रातृणा महादेव अरिसीह वरदेवाना श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्रीचै० गच्छे श्रीहेमप्रभसूरिभिः ॥

(२५२)

सं० १३७३ चैत्र ब० ७ सोमे श्रीमाल ज्ञा० अमीपाल सोगण भा० सूहवदे आदिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीमाणिक्यसूरिभिः ।

(२५३)

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ७ सोमे श्री पल्लीवाल ज्ञातीय से० नरदेव श्रेयोर्थ सा० पासदत्तेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित मा(चै)त्र गच्छ श्रीपद्मदेवसूरिभि

(२५४)

सं० १३७३ ज्येष्ठ सुदि ५ प्रा० श्रे० आमड़ भार्या धीठी पुत्र रूपाकेन आत्म श्रेयसे श्रीसुपभ नाथ बिंब का० प्रतिष्ठित श्रीविनयचन्द्रसूरिभि

(२५५)

सं० १३७३ वष जेष्ठ सुदि १२ श्रीकोरंटकीय गच्छे श्रे० वीसल भा० हीसू पुत्र महणाकेन मात पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ कारिता प्रतिष्ठितं श्रीनन्नसूरिभिः

(२५६)

सं० १३७३ वर्षे वैशाख सुदि ११ शुक्रे श्रीमूलसंघ भट्टा० श्रीपद्मनंदि गुरूपदेशेन खेजासुरे भामा श्रेयार्थ अजनेन प्रतिष्ठापित ॥

(२५७)

॥ ६० ॥ संवत् १३७३ वर्षे माग वदि ८ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सिरिधर भाया पासू श्रेयसे पुत्र जयसमी सीहड़ पसड़ सहस्राभिधः श्रीजिनसिंहसूरीणामुपदेशेन

(२५८)

सं० १३७३ पौष वदि ८ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० गाहड़ भ्रातृव्य नायक सोमसीह जगसीहाभ्यां स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं करापितं प्र० श्रीमदनचन्द्रसूरिभिः ॥

(२५९)

सं० १३७३ माह वदि ८ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० धमा भा० सांतिणि पुत्र छाजाजल आत्म श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीसिद्धसेनसूरिभि

(२६०)

सं० १३७३ वर्षे माघ वदि ८ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय ठ० आपर भार्या आहिणि तया श्रेयसे पु० भीमेन श्रीपद्मनाभ बिंबं कारिता प्र० श्रीसूरिभिः

(२७९)

सं० १३७८ व० जेठ व० ६ सोम उ० गो '' भा०वसतिणि पु० वाहड़ कालाभ्या मदन निमित्त कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीमुनिप्रभसूरि पट्टे श्रीजयप्रभसूरि उपदेशेन श्री।

(२८०)

सं० १३७८ ज्येष्ठ सुदि ६ सोमे पितृ सोमा भार्या मोहिणिदे पुत्र उदयरा श्रीपार्श्वनाथ बिंबं प्र० श्रीधर्मचंद्रसूरिभिः ॥

(२८१)

सं १३७९ मडाहड़ीय श्रे० साजण भा० तोल्हणदे पु० आजड़ेन भा० पूजल पु० भाना युतेन पितु' निमित्त' श्रीआदिनाथ का० प्र० ''

(२८२)

सं० १३७९ वैशाख वदि माकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशाति बिंबं का० प्रतिष्ठि० श्रीविनयचंद्रसूरिभिः।

(२८३)

सं० १३७९ वैशाख सु० भावड़ार गच्छे उपकेश ज्ञा० पितृ कर्म्मा भा० ललतू भ्रातृ सही ' महं० भउणाकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीजिनदेवसूरिभि. ॥

(२८४)

सं० १३८० वर्षे जेष्ठ सुदि १० रवौ श्रे० रतन भार्या वीरी पुत्र गोजाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारापितं ॥

(२८५)

सं० १३८० (?) वैशाख वदि ११ (?) श्रेष्ठि रतनसी भार्या जयतसिरि पु० खेता। अरसी-हाभ्या स्व श्रेयसे पिप्फलाचार्य प्रतिष्ठितं श्रीधर्मरत्नसूरिभि.

(२८६)

सं० १३८१ वर्षे वैशाख वदि ३ श्रीनाणकीय गच्छे ऊकेश वंशे श्रे० आसल पु० राजड भार्या सूमल श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभि.

(२८७)

सं० १३८१ वर्षे वैशाख वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धारा भार्या ललतादे आत्म श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंबं का० श्रीसोमतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥ छ

(२९६)

॥ सं० १३८३ माघवदि ५ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे जाल्हड़ पु० रामदेव भार्या राणी आत्म श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरि ॥

(२९७)

सं० १३८३ वर्षे माघ वदि ११ बुधे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृ श्रे० साजण मातृ कपूरदेवि श्रेयोर्थं सुत झांझणेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० पिप्पलाचार्य श्रीविबुधप्रभसूरिभिः ॥

(२९८)

सं० १३८४ ज्येष्ठ वदि ११ सोम दिने श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० राघ० भा० टहकू पु० सामलेन पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः ॥

(२९९)

॥सं० १३८४ माघ सु० ५ श्रीजिनकुशलसूरिभिः श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं कारितं च सा० सोमण पुत्र सा० लाखण श्रावकेन भावग हरिपाल युतेन ।

(३००)

॥६०॥ सं० १३८४ वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री (उ) पकेश गच्छे श्रीककुदाचार्य संताने लिगा गोत्रीय सा० फमण पुत्र सा० छाजू सउधिलयोः भ्रात लूणा नाथू श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरिभिः ॥ शुभमस्तु ॥ छः ॥

(३०१)

सं० १३८४ माघ सुदि ५ सोमे प्रावा ज्ञा० व्य० जसपाल भार्या संसारदेवि तयो श्रेयोर्थं सुत लखमसीहेन श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठि सिद्धा० श्रीशुभचंद्रसूरि शिष्यै श्रीज्ञानचंद्रसूरिभि. ॥ छ ॥

(३०२)

सं० १३८४ वर्षे माघ सुदि ५ श्रीकोरंटक गच्छे ओसवाल ज्ञातीय श्रावक रतन भार्या रूपा-देवि सुत मोहण महणपाद्यै· श्रीपार्श्व बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनन्नसूरिभि· ।

(३०३)

सं० १३८५ वर्षे प्राग्वाट श्रे० रामा भा० रयणादे पितृ मातृ श्रेयसे पुत्र तिहुणसाहेन महावीर संडेर गच्छ यशोदेवसूरि ।

(३०४)

सं० १३८५ फागुण सु० ८ श्रे० वयजा भार्या वयजलदे पुत्र कडुआकेन पित्रो· श्रेयसे श्रीमहावीर बिं० का० प्र० वृहद्गच्छीय श्रीभद्रेश्वरसूरि पट्टे श्रीविजयसेनसूरिभि. ॥ माहरउलि गोष्ठिक ॥

R२२३४ (२८८)

॥ सं० १३८१ वर्षे वैशाख सुदि १५ सोमे उपकेश ज्ञातीय कोरंण्ट गोत्रे सा० महादेव पुत्र आसा भार्या चिहुळी तत्पुत्र आगाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीवीर बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीदेवसूरि गच्छे श्रीपासचंद्रसूरिभि ॥ छः॥

(२८६)

स० १३८२ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ प्राग्वाट श्रे० भावा भार्या आसल पु० आमाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीसूरिभिः

(२६०)

६ ॥ स० १३८२ वर्षे वैशाख सुदि २ श० श्रीमदुपकेशीय गच्छे भाद्र गोत्रे छिगा सा० मोखा भार्या तिहुणाही पुत्र लासू मयभूम्यां निजपितुः श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० ककुदाचार्य संताने श्रीककसूरिभिः ।

(२६१)

सं० १३८ वर्षे वैशाख सुदि २ शनौ ठ० श्रे० नागड़ भार्या साजणि पु सोमाकेन भ्रातृ कर्मा भीमा सहितेन श्रीशांति बिंबं का प्र० वृ० श्रीमाणदेवसूरिभिः ।

(२६२)

सं० १३८२ वर्षे वैशाख सुदि ४ (१२) शनौ श्रे० वस्ता भार्या कपूरदे सुत खेताकेन पित्रो श्रेयसे श्रीअजितस्वामि बिंब [illegible] शाखायां श्रीसागरचंद्रसूरीणामुपदेशेन कारितं प्र० सूरिभिः ।

(२६३)

॥ ६० ॥ स० १३८२ वर्षे वैशाख सुदि ५ (१) नाडपेरा श्रा० महं० मूलदेव श्रेयसे महं० सामंतेन श्रीआदिनाथ बिंब का० प्र० श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नसूरिभिः ।

(२६४)

स १३८२ (१) ज्ये० सु० ६ गुरौ नाणक गच्छे आल्हा सुत लखमण सहिताभ्यां पितृ मातृ श्रेयोर्थं कारिता ॥

(२६५)

स० १३८२ आषाढ वदि ८ रवौ खजूरिया गोत्रे पितृ देवा श्रेयसे तोलाकेन पार्श्वनाथ कारितं श्रीपद्मदेवसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(३१३) /

॥ ६० ॥ सं० १३८६ माघ व० २ श्रीमाल ठ० पाल्हण पुत्र्या वा० सूहडया स्वभर्तु धरणाग-जम्य ठ० भाऊकस्य स्वस्यच श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंवं कारिता प्रति० मलधारि गच्छे श्रीश्रीतिलक-सूरि शिष्यैः राजशेखरसूरिभिः ॥ छः ॥

(३१४)

सं० १३८६ माघ सुदि ६ सोमे श्रीनाणकीय गच्छ उसभ गोत्रे श्रे० महणा ता० सूहव काल्हू सोमा मातृ पितृ श्रेयसे बिंवं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः।

(३१५)

सं० १३८६ फागुन वदि १ सोम महं जयता भार्या जयतलदे पु० विक्रमेण भा० विजयसिरि सहितेन श्रीआदिनाथ बिंवं का० प्रति० श्रीनाणगच्छे श्रीसिद्धसेनसूरिभि ।

(३१६)

सं० १३८६ उपकेश ज्ञातीय श्रे० सिंधण भा० सिंगारदेवि पु० लटाकेन पित्रो श्रेयसे पंचतीर्थी बिं० श्रीआदिनाथ प्रति० श्रीसर्वदेवसूरि मडाहडीय।

(३१७)

सं० १३८७ ज्येष्ठ सु० १० शुक्रे उपक ट श्रे० कूडसिल भार्या क्राकी तयो श्रेयोर्थं सुत कडूआकेन श्रीशातिनाथ बिंवं का० प्रति० सैद्धांतिक श्रीसुभचंद्रसूरि शिष्य श्रीज्ञानचंद्रसूरिभि ।

(३१८)

संवत् १३८७ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेव गुरुपदेशेन हुंवड ज्ञातीय श्रे० आना सुत व्य० नायक भार्या सूहवदेवि श्रेयोर्थं सुत सलखाकेन श्रीआदिनाथ चतुर्विंशति कारिता।

(३१९)

सं० १३८७ फागुण सुदि ४ सोम कोल्हण गोत्रे सा० मोहण श्रेयोर्थं सुत मींभाकेन श्रीपार्श्व-नाथ बिंवं कारितं प्र० वृहद्गच्छे श्रीमुनिशेखरसूरिभि ।

(३२०)

संवत् १३८७ वर्षे फागुण सुदि ८ बुधे व्य० जगपाल पु० सीहाकेन भा० भावल पु० कर्मसीह रामादि युतेन पित्रो निमित्तं श्रीआदिनाथ प्र० का० प्र० श्रीशालिभद्रसूरि पट्टे श्रीहरिप्रभसूरिभि ।

(३०५)

सं० १३८६ व० ज्येष्ठ वदि ४ सोमे श्रे० केल्हा भार्या नाल्हू पुत्र सहजाकेन पितामह कानू श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० बृहद् गच्छे श्रीमद् रत्नसूरि पट्टे श्रीविजयसेणसूरिभिः ।

(३०६)

सं० १३८६ वर्ष वैशाख वदि १ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० धारा भार्या छाडलादे श्रात्म श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंब का० श्रीसोमतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥ छ ॥

(३०७)

सं० १३८॥ (५) वैशाख व० ५ बु० मरा ज्ञा० पितृ म सहजा मातृ मावल श्रेयसे सुत नरसिंहेन श्रीमहावीर बिंब कारि० प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः ।

(३०८)

सं० १३८५ ज्येष्ठ वदि ४ बुधे श्रीमालीय पितामह पाल्हण भार्या लखमा सिरोपाभ्राग पदेन श्रीसुमतिनाथचतुर्विंशति पट्टक कारित प्र० श्रीनागेन्द्र गच्छे श्रीमेगार्णवसूरिभिः प्रपौत्र कम्म पौत्री बमाही प्रपौत्री श्रीमा प्रपितामह पेपाल प्रपौत्रा तरपान प्रपौत्र मायद श्रीमेश कर्मणा मा वत्रि प्रपौत्री पौत्री।

(३०९)

सं० १३८५ वर्षे फागुण सुदि ८ श्रीमदूकेश श्रीकक्काचार्य संताने सुचिंतित-गोत्रे सा० आह मा० पापड पु० कडूया श्रेयोर्थं पुत्र ऊसिमेन पितृव्य रामिग वीकम सहितेन श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीककसूरिभिः ॥ छ ॥

(३१०)

सं० १३८६ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे श्रे० बीमा भार्या फूलम सुत जोला भार्या नामल सहितेन मातृ पितृ श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

(३११)

सं० १३८६ (?) वैशाख वदि १२ (?) श्रेष्ठि रतनसी भार्या नयणसीह पु० आसोदाभ्यां स्वश्रेयसे पिप्पलाचार्य प्रतिष्ठितं श्रीधर्मदेवसूरिभि ।

(३१२)

सं० १३८६ वैशाख वदि ११ सोमे श्रे० पूना भार्या सहजू पुत्र केसाकेन भ्रातृ तेजा स्वसा आसल निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं श्रीदेवेन्द्रसूरीणामुपदेशेन ॥

(३२९)

सं० १३८६ वैशाख वदि ७ बुधे व्य० वसता भा० वउलदे पु० जयतसी रत्नसिंहाभ्या श्रीपार्श्व बिं० का० प्र० श्रीकमलाकरसूरि माल्यवनी ॥

(३३०)

सं० १३८६ वैशाख सुदि ८ श्रीब्रह्माण गच्छे ... सलीय भ्रातृ केन
बिंबं कारिता प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

(३३१)

सं० १३८६ ज्येष्ट वदि ११ सोम दिने श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० राघव भा० टहकू पु० सामलेन पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः ।

(३३२)

सं० १३८६ वर्षे येष्ट वदि २ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृ वाल्हण मा० सहजल पि० टाघटा ? वीक श्रेयसे त धणपालेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं पिप्पलाचार्य श्रीपद्मचंद्रसूरिभिः प्रति० ।

(३३३)

सं० १३८६ जे० सुदि ८ पंडेरका गच्छे श्रे० देहड भा० राजलदे पु० पथा पितृ श्रेय० श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

(३३४)

सं० १३८६ ज्ये० सुदि ६ रवौ व्य० वेरहुल भा० गउरी पु० पद्मेन भा० विझल भ्रातृ आका मोषट कडूआ कुटंब युतेन भ्रातृ सुहडसीह निमितं श्रीपार्श्वनाथः कारितः प्र० श्रीशालिभद्रसूरि पट्टे श्रीहरिप्रभसूरिभि. ॥ रत्नपुरीयै. ॥ श्रीः ॥

(३३५)

सं० १३८६ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ मूलसंघे व० मंडलिक भार्या सूहव श्रेयोर्थं
हरपालेन बिंबं भरापितं ॥

(३३६)

सं० १३८६ व० फागुण सु० ८ श्रीकोरण्टकीय गच्छे श्रा० सीहाभा० पोयणि पु० झाझाकेन पि० भीमा निमितं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीनन्नसूरिभि ।

(३३७)

सं० १३८६ फागुन सुदि ८ सो स० श्रे० तेजाभार्या सीती आसघर सोमा मंडलिक करउ निमितं वीराकेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवभद्रसूरिभिः ॥

(३२१)

सं० १३८७ वर्षे मडाहडीय गच्छे उपकेश ज्ञातीय मं० धणसीह भा० पूना पु० भीकम भा   पित्रा श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्र० श्रीहेमप्रभसूरीणां पट्टे श्रीसर्वदेवसूरिभिः ।

(३२२) P.4534

सं० १३८८ वै० सु० ५ संडेरक गच्छे उपकेश ज्ञातीय महं० श्रीपा भार्या धणसिरि पुत्र गामड़ पौत्र महीपा चांपलाभ्यां पूर्वज श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीसुमतिसूरिभि ।

(३२३)

सं० १३८८ वैशाख सु० १५   ज्ञातीय भा० विनयण श्रेयसे भ्रातृ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित ॥ प्र० श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः ।

(३२४)

सं० १३८८ वर्षे वै० सुदि १५ श्रीम ज्ञीय मं० ऊदा भार्या ऋषिमदेवि पुत्र देसल पद्माभ्यां पित्रा श्रेयसे श्री चतुर्विंशतिकः कारितं प्र० सत्यपुरीये श्रं सूरिभिः वाभरडा ग्रामे ।

(३२५)

सं० १३८८ वैशाख सुदि १५ शनौ व्य० भाषापुत्र मं० सागर संतानीय मं० महणसीह पुत्र महं० वीरपाल पु० महं रूपा भार्या कूरी पुत्र देवसीहेन भा० मुगतासहितेन पित्रो श्रेयसे श्रीपार्श्व बिं० कारितं प्र० महाणेस श्रीमन्त्रे मानसूरि पट्टे श्रीविजयसेनसूरिभिः वृहद्गच्छीय ।

(३२६)

सं० १३८८ वर्षे मार्ग सुदि ६ शनौ उपकेश ज्ञातीय मं० जीवा भार्या मणगी पुत्र कलपाल गजराज पितृ मातृ भ्रातृ श्रेयसे श्रीमहावीर प्रतिमा कारिता प्र० श्री चैत्रगच्छे श्रीमदनसूरि शिष्य श्रीधर्मसिंहसूरिभिः ॥

(३२७)

सं० १३८८ श्रीमाल ज्ञातीय मं० सलखा भार्या सलखणदेवि पुत्र भामा भ्रातृ सजना पुत्र भा   अर्जुनाभ्यां पितृव्य श्रीकण सोमसिंह पुत्रे पूर्वज निमित्तं श्रीपार्श्वनाथ का० प्र० श्रीमहेन्द्रसूरि वचनात् प्र० श्रीपासदेवसूरि सत्यपुरीयैः ।

(३२८)

सं० १३८९ व० वै० सुदि १४ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय महं० पदम भार्या रयणादेवी मातृ पितृ श्रेयोर्थं सुत म० सुहडापेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः शंखेसर वास्तव्य ॥ ४ ॥

(३२६)

सं० १३८६ वैशाख वदि ७ बुधे व्य० वसता भा० वउलदे पु० जयतसी रत्नसिंहाभ्या श्रीपार्श्व विं० का० प्र० श्रीकमलाकरसूरि माल्यवनी ॥

(३३०)

सं० १३८६ वैशाख सुदि ८ श्रीब्रह्माण गच्छे ·· ·· सलीय भ्रातृ · · · केन विंवं कारिता प्र० श्रीवीरसूरिभिः ।

(३३१)

सं० १३८६ ज्येष्ट वदि ११ सोम दिने श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० राघव भा० टहकू पु० सामलेन पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभि. ।

(३३२)

सं० १३८६ वर्षे येष्ट वदि २ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृ वाल्हण मा० सहजल पि० टाघटा ? वीक श्रेयसे त धणपालेन श्रीपार्श्वनाथ विंवं कारितं पिप्पलाचार्य श्रीपद्मचंद्रसूरिभिः प्रति० ।

(३३३)

सं० १३८६ जे० सुदि ८ पंडेरका गच्छे श्रे० देहड भा० राजलदे पु० पथा पितृ श्रेय० श्रीपार्श्वनाथ विंवं का० प्र० श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

(३३४)

सं० १३८६ ज्ये० सुदि ६ रवौ व्य० वेरहुल भा० गउरी पु० पद्मेन भा० विंझल भ्रातृ आका मोषट कडूआ कुटंव युतेन भ्रातृ सुहडसीह निमितं श्रीपार्श्वनाथ. कारितः प्र० श्रीशालिभद्रसूरि पट्टे श्रीहरिप्रभसूरिभि. ॥ रत्नपुरीयैः ॥ श्रीः ॥

(३३५)

सं० १३८६ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ मूलसंघे व० मंडलिक भार्या सूहव श्रेयोर्थं हरपालेन बिंबं भरापितं ॥

(३३६)

सं० १३८६ व० फागुण सु० ८ श्रीकोरण्टकीय गच्छे श्रा० सीहाभा० पोयणि पु० झाझाकेन पि० भीमा निमितं श्रीआदिनाथ बिंवं कारितं प्र० श्रीनन्नसूरिभि ।

(३३७)

सं० १३८६ फागुन सुदि ८ सो स० श्रे० तेजाभार्या सीती आसघर सोमा मंडलिक करउ निमितं वीराकेन श्रीशातिनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवभद्रसूरिभिः ॥

(३३८)

स० १३६० श्रीकोरंटकीय गच्छे गो० भरसी भा० आल्हू पु० पोला पासड़ आत्म पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीशांति बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं नन्नसूरिभिः ।

(३३९)

सं० १३६० वर्षे वैशाख श्रीमालज्ञातीय ठ० देवाकेन पितृ ठ० आल्हा पितृव्य धीरा मल्हा मुंजा काला मडलिक श्रेयोर्थं श्रीचतुर्विंशति बिंब पट्ट कारित' प्रतिष्ठित सूरिभिः ॥ श्रे० बीकम श्रेयसे श्रीरत्नसागरसूरीणामुपदेशेन ॥

(३४०)

स० १३६० वर्षे वैशाख वदि ११ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय ठकुर करकर राणाकेन भार्या कामलदे भार्या कीलहणदे श्रेयोर्थं श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्रति० श्रीबृहद्गच्छे पिप्पलाचार्य श्रीगुणाकरसूरि शिष्य श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥

(३४१) P. g. ५०

संवत् १३६० मागसिर व० ७ बुध० साखला गोत्रे सोम पुत्रेन गयपति भार्या नाथू गाढिवि श्रेयोय श्रीमहावीर बिंबं प्र श्रीधर्म्मसूरि श्रीगुणभद्रसूरि ।

(३४२)

संवत् १३६० मागसिर सु० १ वीहू गोत्रे रत्न पुत्र सा०.ऊदा लखमण माता लाछी श्रेयोर्थं चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्रीगल्पभद्र (?) सूरिभि ।

(३४३)

सं० १३६० फाल्गु वदि १ शुक्रे फूलचंद्र भार्या मालही पु० मोहड़ पु० केल्हन प्रतिष्ठित श्रीज्योतनसूरिभिः ।

(३४४)

सं० १३६१ माघ वदि ११ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय कसमरा भा० कामल सुत भूचाके मगा स्वपितृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं सूरिभिः

(३४५)

स० १३६१ माघ सु० ६ रवौ श्रे विजयसिंह भा० मेलन पु० पेथड़ेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिं० का० प्र चन्द्रगच्छेय श्रीमाणिक्यसूरि पट्टे श्रीवयरसेनसूरिभिः ।

(३४६)

सं० १३६१ फा० व० ११ शनौ श्रीनाणकीय महं० वयरसीह पुत्र लूणसिंह तिहुणसीहाभ्यां सिरकुमर निमित्तं श्रीशाति बिंबं कारितं प्रति० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः ॥ छ ॥

(३४७)

सं० १३६१ (?) फा० सुदि · ·· · पु० तेजा भा० तेजलदे पु० झाझण गोसलेन पित्रोः श्रे० श्रीवीर बिं० का० प्र० सदान (?) श्रीसर्वदेवसूरि ·· · ··

(३४८)

संवत् १३६२ वर्षे उपकेश ज्ञा० श्रे० भीम भा० कसमीरदे पु० रणसीह अर्जुन पूनाकेन पितृ श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० मडाहड़ीय गच्छे श्रीसर्वदेवसूरिभिः ॥

(३४६)

सं० १३६२ मा० सु० ४ श्री० ठ० ठाडाकेन पितृ वैरा मातृ वउलदे भ्रा० लख्मसींहस्य सर्व पूर्वजानां श्रेय पचा (?) श्रीपार्श्व बिंबं का० प्र० मलधारी गच्छे श्रीराजशेखरसूरिभि.

(३५०)

सं० १३६२ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ श्रे० जगधर भा० मेघी पुत्र पद्मसीहेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदि बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीसमतसूरिभिः

(३५१)

सं० १३६२ माह सु० १५ प्राग्वाट व्य० पूनम भा० देवलदे सुत तिहुणाकेन श्रीमहावीर बिंबं श्रीअभयचंद्रसूरीणामुपदेशेन

(३५२) Page 41

सं० १३६३ वर्षे वापणा गोत्रे सोमलियान्वये सा० भोजाकेन पित्रो हेमल विमलिकयोः पुत्र मूचकोदयपालयौ स्व श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीवृ० (ग) च्छीय श्रीमुनिशेखरसूरिभि.

(३५३) Page 41

॥ ६० ॥ संवत् १३६३ वर्षे उपकेश गच्छे श्रीककुदाचार्य संताने आदित्यनाग गोत्रीय श्रे० धीना पुत्र धा ····देवेन भार्या विजयश्री सहितेन स्वश्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंबं का० प्र० श्रीकक्क-सूरिभिः

(३५४)

सं० १३६३ वर्षे प्रा० ज्ञातीय बाई वीझी आत्म श्रेयसे श्रीपार्श्व का० प्र० श्रीसूरिभि.

६

(३५५)

संवत १३६३ - भार्या मीरा पुत्र रूपाकेन आत्मश्रेयसे श्रीऋषभनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठित श्रीविनयचंद्र (सू) रिभिः ।

(३५६)

सं० १३६३ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ शुक्रे प्राग्वा० श्रे० सिरपाल भार्या सहजलदे पुत्र बीकमेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमड़ाहड़ीय गच्छे श्रीसोमतिलकसूरिभिः ।

(३५७)

सं० १३६३ माघ सु० १० सोमे प्रा० म० सलखा भा० सलखणदेवि पु० देवराकेन सु० भा० मुजा श्रेयार्थं श्रीसोमचंद्रसूरीणा मु० श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ।

(३५८)

॥ ६० ॥ संवत् १३६३ फा० सु० २ सुरसलखा गोत्र—महं० साजणकेन पिता मई भारा माढ़ि कया श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ कारित प्र० श्रीमलधारि श्रीराजशेखरसूरिभिः ॥

(३५९)

स० १३६३ वर्षे फागुन सुदि २ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० कर्मण भा० श्रीमणी पुत्री देवल आत्म श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसिद्धसेनसूरिभि ॥

(३६०)

स० १३६३ फागु० सु० ८ व्य० फुरा भार्या कपूरदे पुत्र पूनाकेन पित्रोः पितृव्य धना श्रेयसे श्रीऋषभदेव बिंबं प्र० श्रीदेवेन्द्रसूरिणा ।

(३६१)

स० १३६३ वर्षे फा० सु० ८ भार्या कपूरदे पुत्र पुनपालेन पित्रोः श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब श्रीनरचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ।

(३६२)

स० १३६३ सु० ८ रवौ श्रीमाणभद्वार गच्छे गोत्रे श्रे० भा० रूपम पुत्र महणसिंहेन पिता श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्रीजिणदेवसूरिभि ।

(३६३)

स० १३६४ चैत्र वदि ६ शनौ प्राग्वाट ज्ञा० माल्‍ह कपूरदेवि श्रेयसे रामा सुत मुदुपाकेन श्रीमहावीर बिंब कारित प्रतिष्ठितं सैद्धान्तिक श्रीनागचन्द्रसूरिभिः ॥

(३६४) Page 47

सं० १३६४ वर्षे वैशाख वदि ६ श्रीउपकेश गच्छे वपणाग गोत्रीय रामतात्मज जे० सा० तारतिमीया। मापल सुतेन मातु पितु श्रेयसे श्रीशातिनाथ विंबं कारितं प्रति० पानशालि (?) सूरिभि.।

(३६५)

सं० १३६४ वर्षे वैशाख वदि ७ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोल्हा भा० सीतू पु० लूणा भा० रयणादे पुत्र रणसींह भा० नयणादे पित्रो. श्रेयसे श्रीआदि विंबं कारितं प्र० श्रीसर्वदेवसूरिभिः।

(३६६)

सं० १३६४ वैशाख सुदि १० शुक्र उपकेश ज्ञातीय व्य० मदन भा० धाधलदे पुत्र लालाकेन (प्र?)लखमण निमित्त श्रीपार्श्व विंबं का० प्र० श्रीदेवसूरिस श्रीधर्मदेवसूरिशि० श्रीवयरसेणसूरिभिः।

(३६७) Page 47

सं० १३६४ वर्षे ज्येष्ठ वदि उपकेश ज्ञातीय महं० धाधल भा० राजलदे पु० महं० जयता भा० चापलदे पुत्र कर्ण श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ विंबं कारि० प्र० श्रीवयरसेणसूरिभिः।

(३६८)

सं० १३६४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे श्रे० अभयसींह अहिवदे पु० कुरसीह भा० माल्हिणि पितुः श्रेयसे श्रीमहावीर विंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभिः।

(३६९)

सं० १३६६ माघ सु० ६ बुधे हुवड ज्ञातीय ठ० झाझू भा० चापल श्रेयसे सुत विजयसींहेन श्रीवासुपूज्य विंबं कारापितं प्र० श्रीपासडसूरिभिः।

(३७०)

सं० १३६६ (?) वदि ९ तेजपालेन मातृ श्रेयोर्थं श्रीपाश्वनाथ विंबं कारितं।

(३७१)

सं० १३६७ श्रेष्ठि गोत्रे सा० कर्मसींह ऊदाभ्या श्रीपार्श्वनाथ विंबं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभि।

(३७२)

सं० १३६७ वर्षे माहवदि ११ व्य० वडपाल भा० राजलदे पु० रायसिंह पित्रो भ्रातृ जयतसी श्रेयसे श्री ऋषभदेव विंबं श्रीशालिभद्रसूरीणा(सु पदे०।

(३७३)

सं० १३६७ वर्षे माघ सुदि मातकेन श्रीअजितनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं सूरिभि ।

(३७४)

सं० १३६७ वर्षे ५ दिने प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० धना भार्या बिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(३७५)

सं० १३६६ वर्षे माघ वदि ५ गुरौ मूल संघे पिता सारा भ्रातपुत्रेण सुत अभयसिंहेन संभव बिंबं कारापिता ।

(३७६)

सं० १३६ ( ) वैशा० सु० ३ शुभे प्राग्वाट ज्ञातीय महं० ससुपाल श्रेयोथ सुत महं० कवि राजेन श्रीपार्श्व बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं राजगच्छीय श्रीमाणिक्यसूरि शिष्य श्रीहेमचन्द्रसूरिभिः ।

(३७७)

सं० भा० सालक पु० थामा ठाकुरसीहाभ्यां पित्रो श्रेयसे श्रीधमनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसर्वाणंदसूरीणामुपदेशेन

(३७८)

सं० १३ ज्ञातीय श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिं० का० प्रति० गुणाकरसूरिभि

(३७६)

संवत् १३ वर्षे मा संभवनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारित प्रतिष्ठितं श्री ब० श्रीनन्नसूरिभिः ॥

(३८०)

सं० १३ वर्षे ज्येष्ठ सु० १० श्रीवृहद्गच्छ ऊपके० ज्ञातीय सा० मदा भार्या चांपल पुत्र सामत भा पूनी पु० रायथ जता सहितेन माता श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब कारापित प्रतिष्ठितं अजितभद्रसूरि शिष्यैः श्रीअमरप्रभसूरिभिः ॥ छ ॥

(३८१)

सं० १३ फागुण सुदि ८ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृ ठ० पाता श्रेयोथ सुत सेढाकेन श्रीपद्मप्रभनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्री चैत्र गच्छे श्रीमानदेवसूरिभिः

(३८२)

संघत् १३ ( ) ३ वर्षे वैशाख सुदि ३ शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० खेतसिंह सुत साल्हाकेन श्रीआदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

(३८३)

संवत् १३ ( ) ६ वर्षे . . उदणा भार्या पूनिणि तत्पुत्र कुमारपालेन पित्रो श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं श्रो श्रीचंद्रसूरीणामुपदेशेन

(३८४)

. . श्रेयसे

श्रीवीर विंबं कारितं श्रीचंद्रसूरिणामुपदेशेन ॥ छ ॥

(३८५)

संवत् . दि ४ शुक्रे पितृ आसल मातृ तिहुणादेवि तत्तपुत्र रेणात्म श्रेयोर्थं संभवनाथ प्रतिमा कारिता प्रति० थारापद्रीय गच्छे पूर्णचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितमिति

(३८६)

सं० १४।०० वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ ाग्वाट वंशे सा० रतना भा० भरमी सुत धीणाकेन भा० धरमा वीसा भीमादि युतेन स्वभ्रातृ देला भा० देल्हणदे श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्री सोमसुंदरसूरिभिः

(३८७)

सं० महाह पु० पराकेन श्रीआदिनाथ का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ।

(३८८)

खराकेन श्रीअनंतनाथ का० प्र० श्रीशांतिसूरिभि ॥

(३८९)

श्री श्रीअजितसिंहसूरिभि

(३९०)

तिष्ठिताच श्रीविजयचंद्रसूरिभि

(३९१)

बं० का० प्र० श्री था० श्रीदेवभद्रसूरिभि.

(३६२)

गोसलेन पित्रो श्रेयसे वीर बिंब का० प्र० महा०
श्रीसर्वदेवसूरिभिः

(३६३)

सं० १ सिधाम्या श्रीअजितनाथ बिंबं कारित प्रति० ब्रह्माण गच्छे
श्रीमुणिचंद्रसूरिभि ॥

(३६४)

सु० १ सोमे भातृ पातू श्रेयोर्थं भा० श्रीजल्हेन बिंब
कारित। प्रतिष्ठितं श्रीवीरसूरिभि

(३६५)

६ प्राग्वाट व्य० नरसीह भार्या कारित प्रतिष्ठितं
श्रीचैत्र श्रीहेमतिलकसूरिभिः

(३६६)

नायक गच्छे श० पद्यो० पितु श्रेयाय श्रीशांतिनाथ बिंब
कारितं प्र देवचंद्रसूरिभि

(३ ७)

सं० ५ व० वैशाख वदि २ ज्ञातीय हानूजी श्रेयसे
श्री बिंब कारितं प्र० पल्लीय श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥ श्री ॥

(३६८)

ज्ञातीय गोठिक गोष्ठिक मं० आका भा० आल्हणदे पुत्र हंसराज
भार्या मनकू पित्रो श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ॥

(३६६)

वैशाख सुदि २ शनौ श्रीकोरण्टक गच्छे भा० हांसाकिके गा स्व श्रेयोर्थं
श्रीशांति बिंबं कारित प्र० श्रीसर्वदेवसूरिभिः

(४००)

॥ संवत १४०१ वर्षे चइत्र सुदि ७ बुधे बृहद्गच्छे नायनटके व्य० टगारा ?
गोत्रे प्र॥ मम्म भा० नामूना पु० लेता भा लेतलदेव्या अभिनंदन कारित प्र० श्रीधर्मचन्द्र
सूरिभिः ॥

(४०१)

सं० १४०५ वर्षे वैशाख सुदि २ सोमे श्रीश्री० ज्ञातीय श्रे० सातसी भार्या लूणादे श्रेयोर्थं सुराण गच्छ बिंबं श्रीपार्श्वनाथ प्र० श्रीमलचंद्रसूरि शि० श्रीवनेश्वरसूरिभिः।

(४०२)

सं० १४०५ वर्षे वैशाख णदे पु० धरणिकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं का० श्रीमाणिक्यसूरिभिः।

(४०३)

सं० १४०५ वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे श्रीब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय द्रोआ (?) वास्तव्य व० माला भार्या कोमलदे पुत्र मूजाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं।

(४०४)

सं० १४०६ व० वैशाख वदि १ शनौ ऊ० ज्ञा० सा० तोला भा० सींगारदे पु० जाणाकेन भा० कस्मीरदे सहि० पित्रोः श्रेय० श्रीधर्म्मनाथ बिं० का० प्र० मड्डा० श्रीमुनिप्रभसूरिभि.।

(४०५)

संवत् १४०६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ रवौ उपकेश ज्ञा० दो साह भा० सिंगारदेव्या पुत्र साजणेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीरामचंद्रसूरिभिः वृहद्गच्छीयैः॥

(४०६)

सं० १४०६ वर्षे आषाढ सुदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय पितृ आल्हा मातृ सूहव भ्रातृ काला श्रेयसे पनोपाकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं ब्रह्माण गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः॥

(४०७)

सं० १४०६ फागुन व० ११ गु० गूर्जर ज्ञातीय सा० देउधर पुत्र सा० तिहुणासूरा तिहुणा भार्या तिहुण श्री पु० भावड मातृ पितृ श्रे० श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष श्रीज्ञानचंद्रसूरि शिष्यै श्रीसागरचंद्रसूरिभिः॥

(४०८)

सं० १४०६ वर्षे फागुण सु० ८ श्रीकोरंटक गच्छे श्रीनन्नाचार्य संताने श्रीनरसिंह भा० पाल्हणदे पुत्र माहड़ेन भा० वस्तिणि सहितेन श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभि।

(४०९)

सं० १४०६ फागु० सु० ११ गुरो गोत्रे सा० हेमा (?) भा० हातू पुत्र तेजपालेन स्व पित्रो० श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं कारितं प्रति श्रीकक्कसूरिभिः।

(४१०)

स० १४०६ फागुण सुदि ११ श्रीऊकेश ज्ञातीय लिषाड़ गोत्रीय सा० गयधर भा० छमुही पु० सा० मेसळेन पुत्र ऊधरादि युतेन स० पितृ श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्रति० श्रीसिद्धसूरि पट्टे श्रीककसूरिभि ॥

(४११)

सं० १४०८ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ श्रीनाणकीय गच्छे भंबिका गोत्रे श्रेष्ठि नयणा भा० खीलु पुत्र पाताकेन पितृमध्य मूलू निमित्त श्रीवासुपूज्य बिंब कारित प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि

(४१२)

सं० १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ उपकेश सा० कडूया का० मेहिणि पु० पेथाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीआदि बिंबं का० प्र० श्रीसंघेन ।।छ ॥

(४१३)

सं० १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ श्रे० अमयसीह भा० गवरदे सुत शाका भा० श्राही मर्द श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं भा।सोमदेवसूरीणामुपदेशे०

(४१४)

स० १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सोमनपाल भार्या वास्तू सुत आसधरेण भ्रातृ आल्हणसीह श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० बृहद्गच्छीय श्रीसर्वदेवसूरिभिः

(४१५)

सं० १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ ओसवाल व्य० कर्मसीह भार्या नाठी पु० मोहनराम्या पितृ पितृव्य भ्रातृ निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीविजयसेणसूरि पट्टे श्रीरत्नाकर सूरिभि

(४१६)

सं० १४०८ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरु श्रीमाल ज्ञातीय ठ० बरसिंह सुरा वूहय टाहा भ्रातृ विरपाल श्रेयोर्थं सु साहणेन पंचतीर्थी श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्रीनागेन्द्र गच्छे श्री श्रीनागेन्द्रसूरि शिष्य गुणाकरसूरिभि

(४१७)

सं० १४०८ वैशाख सुदि ५ उपकेश साधु पेथड़ भार्या बीजू सुत महं० वाहकेन पूर्वज निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(४१८)

संवत् १४०८ वैशाख सुदि ५ श्रीनाणकीय गच्छे। सल गोत्रे श्रे० भीमा भा० राल्हू पु० सागाकेन पु० कर्मसीह महणसीह नि० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभिः

(४१६)

सं० १४०८ वैशाख सुदि ५ प्रा० अहरपाल भार्या सीतादे पु० कालाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीअरप्रभु बिंबं कारितं प्र० श्रीअभयचंद्रसूरि

(४२०)

सं० १४०८ व० ज्ये० सु० ५ उपकेश पा। रगहटपाल सुतेन साटाणेन पित्रोः श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० वृ० श्रीधर्मतिलकसूरिभि·

(४२१)

सं० १४०६ वैशाख सुदि १० सोमे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० भद्रा भार्या सामिणि पुत्र खीमा-स्वपित्रो श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वर (सूरि)।

(४२२)

सं० १४०६ ज्येष्ट सुदि १० सोमे श्रे० नरपाल भा० नामल पुत्र रिणसिंहेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० अत्रढंबीय (?) श्रीवयरसेणसूरिभिः ॥

(४२३) Page 48

स० १४०६ वर्षे फागुण वदि ५ सोमे उप० तेलहर गोत्रे सं० रतन भा० रतनादे पु० वीरम भा० हासलदे आत्म श्रे० श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीशातिसूरिभिः ज्ञानकीय गच्छे।

(४२४)

सं० १४०६ फागु० सु० ११ गुरौ श्रीपल्लिकीय गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० वीरिम भा० विजय-सिरि पु० सामलसिंहाभ्या पि० श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीअभयदेवसूरिभिः ॥

(४२५)

सं० १४११ ज्ये० सु० १३ गुरौ व्यव०सा भार्या वइजलदे पुत्र कर्मसीहेन पित्रो श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं का० श्रीमाणिक्यसूरिणामुपदेशेन।

(४२६)

सं० १४११ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० यूह भा० रामी पुत्र सगाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीमुणिचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

(४२७)

सं० १४११ ज्येष्ट सुदि १२ श्रीकोरंटक ग। मोहण भार्या मोकलदे पुत्र माडाकेन पितृव्य आल्हण नयणा सहजा माला भा० चांपल निमित्त श्रीशांति बिंब कारित प्रति० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(४२८),

सं० १४११ वर्षे ज्येष्ट सुदि १२ शनौ छजा सुत मोखा भार्या मकमलदे मे० सामकेन श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीसूरिभि ।

(४२९)

सं० १४११ आसा० सु० ३ स० श्र० श्रे० गांगा भार्या झीवी पुत्र छूणा ल्खीवाभ्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीहेमतिलकसूरिभिः ।

(४३०)

सं० १४१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ मडं० मेहा भा० हीमादेवि पुत्र मङ्गमलेन पित्रो श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ का० प्रति० श्रीसूरिभिः ।

(४३१)

सं० १४१३ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० सा० तेजा भा० देवल पु० सालहा भा० छाबी पु० सुडा भा० साजू पु० निमित्त श्रीमहावीर का० प्र० मडाह० श्रीपासदेवसूरिभि

(४३२) बी०७५५०

संवत् १४१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीअग्रवाल वंशे सा० पाल्हा पौत्र ९ सा० हिमपाल तनुजेन श्राव० धर्मसिंह पुत्री हेमादे कुक्षि संभवेन से० डूंगरसिंहानुजेन सं० डराकेन भ्रातृ जस० हीरा जयतसिंह गु (१ यु) तेन स्वपितृ गगाजा पितृ हिमपाल मातृ हेमादे श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ चतु विंशतिपट्टा कारि० प्रति श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीगुणभद्रसूरि शि० सर्वाणंदसूरिभिः ॥

(४३३)

सं० १४१४ वैशाख सुदि १० श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नाचार्य सताने वाराही ग्राम वास्तव्य श्रा० धारसिंह मा० वाल्ह पु० बोकम भा० मडणी सुवरूपा सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीअजितस्वामि बिंबं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ।

(४३४)

सं० १४१५ वर्षे ज्येष्ठ वदि १३ रवौ ऊकेश ज्ञा० अरसी भा० रूपिणी पु० विकमाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीशांतिबिंब का० प्र० मडाहडीय गच्छे श्री मानदेवसूरिभिः ॥

(४३५)

सं० १४१५ वर्षे जेठ वदि १३ वाम (?) गोत्रे सा० विल्हा ह्लाभ्या पितुर्महिराजस्य श्रेयसे विंबं का० प्र० मलधारी श्रीराजशेखरसूरिभिः

(४३६)

सं० १४१५ आसा० व० १३ जाइलवाल गोत्रे सा० सुरा पु० सा० नीहा भार्या माणिक पुत्र राजादि युतेन स्व श्रेयसे चंद्रप्रभ विंबं का० प्र० श्रीधर्मसूरि पट्टे श्रीसर्वाणंदसूरिभिः ॥

(४३७)

सं० १४१७ ज्येष्ठ सु० ६ शुक्रे श्रीसंडेर गच्छे ओसवाल सा० पु० वस्ताकेन पित्रोः श्रे० श्रीवासुपूज्याना का० प्रतिष्ठितं श्रीईश्वरसूरिभिः ॥

(४३८)

सं० १४१७ ज्येष्ठ सु० ६ उसवाल व्य० सोनपाल भा० धरणू पु० सीहड़ वाहड़ सागण पितामह श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० वृहद्गच्छे ब्रह्माणीय श्रीविजयसेनसूरि पट्टे श्रीरत्नाकरसूरिभिः

(४३९)

सं० १४१८ वैशाख सु० ३ बुधे श्रीमाल ज्ञा० पाविला वास्तव्य व्य० साहा भा० रालभद सुत सागा भ्रातृ वला सुत मेहा कान्हा श्रे० व्य० वयजाकेन श्रीशातिनाथ विंबं का० प्र० श्रीउदयाणंद-सूरीणामुपदेशेन

(४४०)

सं० १४१८ वैशाख सु० ३ खटेड़ गो० महं सामंत भा० सीतादे पु० महं भामा तेजाभ्या भ्रा० मेघा श्रे० श्री आ० प्र० श्रीज्ञानचंद्रसूरि शिष्य श्रीसागरचंद्रसूरिभि ॥ शुभंभवतुः ॥

(४४१)

सं० १४२० वर्षे वैशाख सु० १० शुक्रे प्रा० व्य० ममणा भार्या नागल सुत वयरसी निमित्त भा० धरणाकेन श्रीपर्श्वनाथ विंबं कारितं प्र० भेरंडीयक श्रीविजयचंद्रसूरिभि ।

(४४२)

सं० १४२० वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० कीका भा० कील्हणदे पु० कर्म-सीह पूना मेहाद्यैः पित्रो श्रेयसे श्रीशातिनाथ विंबं का० प्र० रत्नपुरीय श्रीधर्मघोषसूरिभिः ॥ १

(४२७)

सं० १४११ ज्येष्ठ सुदि १२ श्रीकोरंटक ग। सोहण भार्या सारुलदे पुत्र माळाकेन पितृव्य आल्हण नयणा सहजा माळा भा० चांपळ निमित्त श्रीशांति बिंबं कारित प्रति० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(४२८),

स० १४११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ शनौ　　　　छजा सुत मोखा भार्या चक्कमदे श्रे० सामकेन श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीसूरिभिः ।

(४२९)

सं० १४११ आसा० सु० ३ स० ज्ञा० श्रे० गांगा भार्या जीवी पुत्र छूणा छखीबाम्यां पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीहेमतिलकसूरिभिः ।

(४३०)

स० १४१२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ मह० मेहा भा० हीमादेवि पुत्र कडुमकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ का० प्रति० श्रीसूरिभिः।

(४३१)

स० १४१३ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० सा० लेखा भा० देवल पु० साल्हण भा० कामी पु० सुहा भा० सामू पु० निमित्त श्रीमहावीर का० प्र० मडाह० श्रीपासदेवसूरिभिः

(४३२) B॰ ५४५०

संवत् १४१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ शुक्रे श्रीउकेशवंशे सा० पासड़ा पौत्र २ सा० हिमपाला त्मजेन व्यव० धर्मसिंह पुत्री हेमादे कुक्षि संभवेन से० डूंगरसिंहानुजेन स० नराकेन भ्रातृ जस० हीरा जयतसिंह गु (? यु) तेन स्वपितृ गमला पितृ हिमपाल मातृ हेमादे श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ चतु र्विंशतिपट्ट कारि० प्रति श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीगुणभद्रसूरि शि० सर्वाणंदसूरिभिः ॥

(४३३)

स० १४१४ वैशाख सुदि १० श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नाचार्य संताने वारसड़ी ग्राम वास्तव्य भा० धारसिंह भा० वाल्ह पु० वोकम भा० महणी सुलखणा सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीअजितस्वामि बिंबं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ।

(४३४)

स० १४१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ रवौ उपकेश ज्ञा० धरसी भा० रूपिणी पु० विरूआकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिबिंबं का० प्र० मडाहड़ीय गच्छे श्री मानदेवसूरिभिः ॥

(४३५)

सं० १४१५ वर्षे जेठ वदि १३ वाम (?) गोत्रे सा० विल्हा हलाभ्या पितुर्महिराजस्य श्रेयसे बिंबं का० प्र० मलधारी श्रीराजशेखरसूरिभिः

(४३६)

सं० १४१५ आसा० व० १३ जाइलवाल गोत्रे सा० सुरा पु० सा० नीहा भार्या माणिक पुत्र राजादि युतेन स्व श्रेयसे चंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मसूरि पट्टे श्रीसर्वाणंदसूरिभिः ॥

(४३७)

सं० १४१७ ज्येष्ठ सु० ६ शुक्रे श्रीसंडेर गच्छे ओसवाल सा० पु० वस्ताकेन पित्रोः श्रे० श्रीवासुपूज्यानां का० प्रतिष्ठितं श्रीईश्वरसूरिभिः ॥

(४३८)

सं० १४१७ ज्येष्ठ सु० ६ उसवाल व्य० सोनपाल भा० धरणू पु० सीहड वाहड़ सागण पितामह श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० वृहद्गच्छे ब्रह्माणीय श्रीविजयसेनसूरि पट्टे श्रीरत्नाकरसूरिभिः

(४३९)

सं० १४१८ वैशाख सु० ३ बुधे श्रीमाल ज्ञा० पाविला वास्तव्य व्य० साहा भा० रालभद सुत सागा भ्रातृ वला सुत मेहा कान्हा श्रे० व्य० वयजाकेन श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीउदयाणंद-सूरीणामुपदेशेन

(४४०) नाहटा।५१। बीकानेर

सं० १४१८ वैशाख सु० ३ खटेड़ गो० महं सामंत भा० सीतादे पु० महं भामा तेजाभ्या भ्रा० मेघा श्रे० श्री आ० प्र० श्रीज्ञानचंद्रसूरि शिष्य श्रीसागरचंद्रसूरिभि. ॥ शुभंभवतु ॥

(४४१)

सं० १४२० वर्षे वैशाख सु० १० शुक्रे प्रा० व्य० ममणा भार्या नागल सुत वयरसी निमित्त भा० धरणाकेन श्रीपर्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० मेहरंडीयक श्रीविजयचंद्रसूरिभि० ।

(४४२)

सं० १४२० वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० कीका भा० कील्हणदे पु० कर्म-सीह पूना मेहाद्यैः पित्रो श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० रत्नपुरीय श्रीधर्मघोपसूरिभिः ॥ १

(४४३)

सं० १४२० वैशाख सु० १० श्रीश्रीमाल ज्ञा० पितृव्य श्रेष्ठि मना श्रेयसे श्रेष्ठि फम्ला माणिकाभ्यां श्रीआदिनाथ बिंब कारितं प्रति० पिप्पलाचार्य श्रीगुणसमुद्रसूरिभि ॥

(४४४)

सं० १४२० वर्षे वैशाख सु० १० शुक्रे प्रा० व्य० नरपाल भा० वील्हू पु० विहुणाकेन पितृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीरत्नप्रभसूरि रूप०

(४४५) १४५२

सं १३२० वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्रीउपकेशगच्छे लिगा गोत्रे सा० सोढा सुत सा० कडुया केन पितृ श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीककुदाचार्य संताने श्रीदेवगुप्तसूरिभि ।

(४४६)

सं० १४२१ वर्षे माघ वदि ११ सोमे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० पासचन्द भार्या आल्हणदे सु० गांगा केन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंब श्रीअभयसिंहसूरीणा उ० प्र० श्रीसूरिभि ।

(४४७)

सं० १४२२ वैशाख सुदि ५ गुरौ श्रीमाल श्रे० सलखा भार्या सळखणदे सुत भीमासोमेकीराणा प्रभृति श्रेयसे सु० जोलाकेन कारि० श्रीसत्यपुरीय बृहद्गच्छे श्रीअमरचंद्रसूरिभि ॥

(४४८)

सं० १४२२ वैशाख सु० ११ श्रीकोरंटक ज्ञाशास्नायां व्य पीकम भार्या भावक पुत्र झामा भा० झूणादे सहितेन श्रियोर्थं श्रीमहावीर बिंब का० प्र० धवसूरि (?)

(४४९) १४५२

सं० १४२२ वैशाख सुदि १२ बुधे उप० रोटागोत्र व्य० कसाधु रूपा भा रूपादे पुत्र वोलाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित प्रति श्रीचैत्रगच्छे श्रीमुनिरत्नसूरिभि ।

(४५०)

सं० १४२२ वर्षे वैशाख सुदि १२ बुधे श्रीनाणकीय गच्छे ओस० व्य० नरपाल भ्रातृ नरा भा० नयणादे पुत्र पूना जेसाभ्यां पितृ पितृव्य भ्रातृ सर्व निमित्त श्रीविमलनाथ बिंब पंच० का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि ।

(४५१)

सं० १४२२ वैशाख सुदि १२ भावडारगच्छे श्रीमाल ज्ञा० व्य० तेजा भा० तेजलदे पु० पासोकेन पित्रोः भ्रातृ सहजपालस्य च श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंब का० प्र० श्रीजिनदेवसूरिभि ।

(४५२) Pg 53

॥ सं० १ (४)२३ व० माह सुदि ८ रवौ उप० नाहर गोत्रे सा० लखमा भा० लखमादे पु० देवा सहिया धामा पितृ मातृ पुण्यार्थं आत्म श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः

(४५३)

सं० १४२३ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे प्रा० व्य० वीकम भार्या वील्हणदे श्रा० मूलउ सीहोका पितृ मातृ पोत्राकेन पूनाकेन कारापित्तं श्रीशातिनाथ बिंबं श्रीदेवेन्द्रसूरीणामुपदेशेन ।

(४५४)

सं० १४२३ वर्षे फागुण सु० ८ सोमे प्राग्वाट जातीय व्य० जसा भार्या रमादे पु० आसपालेन पितृ निमित्तं बिंबं का० प्र० श्रीरत्नप्रभसूरिभिः

(४५५)

सं० १४२३ फागुण सु० ६ सोम उ० सो० महण नयणल पु० भीमाकेन मातृ निमित्तं श्रीपार्श्व बिंबं का० श्री० प्र० नाण० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ।

(४५६)

सं० १४२३ वर्षे फागु० सु० ६ श्रीमाल ज्ञा० पितृ राणा मातृ अपर भ्रातृ काला भा० देल्हणदे युतेन श्रेयोर्थं ददाकेन श्रीमहावीर पंचतीर्थी का० श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन ।

(४५७)

सं० १४२३ वर्षे फागुण सुदि८ सोमे उके० ज्ञाती० व्य० विजयड़ भा० वइजलदे पु० थेरा खेता निमित्तं सुत जाणाकेन श्रीपार्श्व पंचतीर्थी कारापिता श्रीजिनचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

(४५८)

सं० १४२३ फागु० सु० ६ प्राग्वाट पितृव्य उला भा० धाधलदे तथा पितृ अभयसी भा० रूपल अमी श्रे० सुत हीरायाकेन श्रीशातिनाथ का० प्र० कूचदे (?) श्रीजिनदेवसूरिभिः ॥

(४५९)

सं० १४२३ वर्षे फागुन सुदि ६ सोमे प्रा० ज्ञा० श्रे० पाल्हा भा० पद्मलदे श्रेयोर्थं सुत कडुयाकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं पू० श्रीनेमचंद्रसूरि पट्टे श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन ।

(४६०)

सं० १४२३ फा० सु० ८ सोमे उपकेश ज्ञातीय व्यव० देपाल भा० देल्हणदे पुत्र मेघा तेजा सुतेन कोचरेण पितामह पितृव्य श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० देवाचार्यैः ॥ श्रीहरिदेवसूरि शिष्यै. श्रीवयरसेनसूरिभि·

(४६१)

सं० १४२३ व० फागुण सुदि ६ सो० उप० व्यव० वानर पुत्र भाजू सकुटुंबेन पितृ महि० पाल मांकड़ सोनाना निमित्त श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० कोरंटीयागच्छे श्रीधर्म्मदेवसूरिभि ।

(४६२)

संवत् १४२३ फागुण सुदि ६ उपकेश ज्ञाति व्य० मूंजाल भार्या माल्हणदे पुत्र पदमेन श्रीऋषभ बिंबं कारितं प्रति० मडाहडीय गच्छे श्रीजयप्रभसूरिभिः

(४६३)

संवत् १४२४ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ गुरौ उपकेश वंशे श्रे० वीरा भार्या टक्कसिरि पुत्र चांपण मांडणाभ्यां मातृ श्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभि

(४६४)

स० १४२४ आषाढ सु० ६ गुरौ भा० ज्ञा० व्य० नरपाल भा० नाल्हदे पुत्र भोजाकेन पु० व्य० रतन निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं साधपूर्णि० श्रीधर्मचंद्रसूरि पट्टे श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन ॥

(४६५)

सं० १४ (१५) २४वर्षे २ दिने क० राखेचा गोत्रे सा० अका सुत सा० गोवा श्रावकेण श्रीपार्श्व बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः

(४६६)

स० १४२४ आसा सु० ६ गु० प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० सद्यनसीह भार्या गउरा पुत्र काल्ह पील्ह पाड भार्या छाछि पुत्र वा श्रेयसे श्रीवीर बिंब का० प्र० श्रीविजयचंद्रसूरिभिः ॥

(४६७)

स० १४२४ आसा० सुदि ६ उपके० ज्ञा० व्य० सलखण भा० सलखणदे पुत्र मोकल भावाभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंब कारि० प्र० रत्नपुरीय श्रीधर्मघोषसूरिभिः ॥

(४६८)

स० १४२४ आषाढ सु० ६ गुरौ ऊकेश वंशे व्यव जगसीह भा० देवलदे पुत्रपाता भार्या धामादेवि सकुटुंबेन निज मातृ पुण्यार्थं श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(४६९)

स० १४२४ आषा० सु० ६ गु० श्रीश्रीमाल ज्ञा० श्रे० जसकुमार भार्या जासलदे पुत्र सामसेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्र० नागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नाकरसूरिभिः

(४७०)

सं० १४२४ आषा० सु० ६ गु० श्रीगूर्जर ज्ञा० पितृ महं छाडा मातृ ताल्हणदे श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं महं० भीमाकेन का० प्रति० श्रीचै० गच्छे श्रीधर्मदेवसूरिभिः

(४७१)

सं० १४२५ वर्षे वैशाख सुदि १० भोमे श्रीश्रीवलगच्छे श्रीश्रीमाल श्रे० नागपाल भा० नलदे श्रे० वानर भार्या संभल सुत नयण। श्रेयसे श्रे० थागू श्रा० श्रीआदिनाथ पंचतीर्थी कारिता प्र० सूरिभिः ॥

(४७२)

सं० १४२५ वर्षे वैशाख सु० उपकेश ज्ञातीय साहु गाटा भार्या चाहिणदेवि पुत्र इलाकेन मातृ-पित्रोरात्मन श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० छो (बो ?) कड़ावाल गच्छे श्रीधर्मदेवसूरिभिः

(४७३)

सं० १४२५ वर्षे वैशाख सु० ११ शु० श्रीमहावीर बिंबं पिता मं० झाझण माता धाधलदे पुण्यार्थं कारिता महं वेराके श्री खरतर गच्छीय श्रीजिनचंद्रसूरि शिष्यैः श्रीजिनेश्वरसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

(४७४)

संवत् १४२५ वै० सु० ११ शु० श्रीपल्लीवाल गच्छे उपकेश ज्ञा० सा० कउंरा भार्या रूदी पुत्र भारस श्रेय श्रीआदिनाथ कारितः प्र० श्रीआमदेवसूरिभिः॥

(४७५)

सं० १४२६ वर्षे वैशाख सुदि १० रवौ श्रीब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय पितृव्य रणसी तद् भार्या रणादे श्रेयसे भ्रातृव्य धागाकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः।

(४७६)

संवत् १४२६ वर्षे द्वितीय वैशाख सु० सोमे श्रीनाणकीय आल्हा भार्या नागल पुत्र उतमसीहेन पित्रो' श्रे० श्रीपार्श्वनाथ बिं० का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि

(४७७)

सं० १४२६ वर्षे द्वि० वैशाख सुदि ६ रवौ उसवाल ज्ञा० श्रे० झडसिल भा० झाम्कू पुत्र कडुआ भा० तामादे पुत्र हेमाकेन आत्म श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीब्राह्माणीय श्रीविजयसेनसूरि शिष्यै. श्रीरत्नाकरसूरिभि. ॥

(४६१)

सं० १४२१ व० फागुण सुदि ६ सो० उप० ज्ञा० व्यव० धानर पुत्र माजू सकुटुंबेन पितृ मद्दि० पाख मोकव सोनाना निमित्त श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० कोरंटकीयगच्छे श्रीधर्म्मदेवसूरिभिः।

(४६२)

सवत् १४२३ फागुण सुदि ६ उपकेश ज्ञाति व्य० मूंजाक भार्या माल्हणदे पुत्र पदमेन श्रीऋषभ बिंबं कारित प्रति० मडाहडीय गच्छे श्रीउदयप्रभसूरिभिः

(४६३)

सवत् १४२४ वर्षे आषाढ सुदि ५ गुरौ ऊकेश वशे भं० बीरा भार्या हरूसिरि पुत्र चांदण मांडणाभ्यां मातृ श्रेयार्थं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभि

(४६४)

सं० १४२४ आषाढ सु० ६ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्य० नरपाल भा० नाल्हदे पुत्र मोजाकेन पु० व्य० रतन निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारित साधपूर्णि० श्रीधर्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन ॥

(४६५)

सं० १४ (१५) २४वर्षे   २ दिने क० राखेचा गोत्रे सा० भका सुत सा० गोदा श्रावकेण श्रीपार्श्व बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभि

(४६६)

स० १४२४ आशा सु० ६ गु० माम्भाट ज्ञातीय भं० सज्जनसीह भार्या गजरा पुत्र कान्ह मील्ह पात भार्या अमरि पुत्र धा   श्रेयसे श्रीवीर बिंब का० प्र० श्रीविजयचन्द्रसूरिभिः ॥

(४६७)

स० १४२४ आसा० सुदि ६ उपके० ज्ञा० व्य० सज्जन मा० जालणदे पुत्र मोकल भ्रातृभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारि० प्र० रत्नपुरीय श्रीधर्मघोषसूरिभि ॥

(४६८)

सं० १४२४ आषाढ सु० ६ गुरौ ऊकेश वंशे व्यव जगसीह भा० देवलदे पुत्रराता भार्या सोभादेवि सकुटुंबेन निज मातृ पुण्याय श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(४६९)

सं० १४२४ आषा० सु० ६ गु० श्रीश्रीमाल ज्ञा० श्रे० वसकुमार भार्या जासलदे पुत्र सामकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांति बिंबं का० प्र० नागेन्द्र गच्छे श्रीरत्नाकरसूरिभिः

(४८७)

सं० १४२८ वैशाख वदि १ सोमे श्रीमाल श्र० पाल्हू भार्या पदमलदे सु० आसा जसा नरपाल श्रेयोर्थं मंडलकेन श्री चंद्रप्रभ पंचतीर्थी कारितं हर्षतिलक (? देव) सूरिणा मुपदेशेन।

(४८८)

सं० १४२८ वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा० शालिभद्र सुत लखमसी श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं मोका नरवराण श्रेयसे

(४८९)

सं० १४२८ वर्षे ज्ये० वदि १ शुक्रे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० कुरसी भार्या चत्रू पुत्र धणपालेन पित्रो. श्रेयसे श्रीपार्श्व बिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि ॥ छः ॥

(४९०)

सं० १४२८ पोष वदि ७ रवौ श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेश ज्ञा० मं० देवसीह भा० देल्हणदे पु० पिंचा भा० लखमादे पु० लापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीवासुपूज्य पंचतीर्थी का० प्र० श्रीककसूरिभि· ॥

(४९१)

सं० १४२९ माह वदि ७ सोमे श्रीमाल व्यव० मालदेव भा० माधलदे श्रेयसे सु० वेरियाकेन श्रीवासुपूज्य· कारित. प्र० त्रिभवि० श्रीधर्मतिलकसूरिभि·

(४९२)

सं० १४२९ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितामह काऊण भार्या मालू जाल्हणदे वदे पितृ श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारित श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं।

(४९३)

सं० १४२९ माह वदि ७ सोमे ओसवाल ज्ञा० व्यव० कलुआ भार्या ठाणी पुत्र कुवरसी कगडाभ्या सुतेन डूंगरेण भा० देल्हणदे युतेन श्रीशातिनाथ का० प्र० ब्रह्माण श्रीविजयसेनसूरि शि० श्रीरत्नाकरसूरिभि ॥

(४९४)

सं० १४३० वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्रा० मंत्रि वरसिंह भा० तेजलदे पुत्र झराकेन पितामह सलखा पूर्वज निमि० श्रीआदिनाथ का० प्र० श्रीसोमचंद्रसूरिभि. ।

(४७८)

सं० १४२६ द्वि० वै० सुदि १० रवौ श्रीश्रीमालज्ञातीय गच्छे व्य० डूमरण भा० रतनिणि पुत्र फूलसीहेन भा० कर्मसी मदन जगसी निमित्त श्रीसुविधि बिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभिः ॥

(४७९)

सं० १४२६ वैशाख सुदि १० रवि ऊकेशवंश ज्ञातीय व्यव रामसीह सा० खीमा भा० खेतलदे पु० पंचायण सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

(४८०)

सं० १४२६ वर्षे वैशाख सुदि १० (५ ?) गुरौ प्रा० व्यव० सुहड़सीह भा० रयणादे पुत्र महणी पति बीकझम असरा व्या० श्रीशांति बिंबं श्रीपासदेवसूरि ।

(४८१)

स० १४२६ वर्षे माघ सुदि श्रीमाल ज्ञा० पितृ पितृव्य मूर्त्त पितृ मोकल पितृव्य सरवण करमण भ्रातृ गजा श्रयसे हापाकेन श्रीशांतिनाथ पचतीर्थी का० प्र० पिप्पलके श्रीरत्नप्रभसूरि शिष्य श्रीगुणसमुद्र (सुंदर ?) सूरिभिः ।

(४८२)

६० ॥ संवत् १४२७ वर्ष ज्येष्ठ सुदि २१ (? ११) सोमवारे श्रीपार्श्वनाथ देव बिंब मं० रामदेव पुत्र मं   इन मं० मूलराज सुश्रावकेण कारिता प्रतिष्ठिता श्रीखरतर गच्छे श्रीजिन कुशलसूरि शिष्य श्रीजिनोदयसूरिभि ॥

(४८३)

सं० १४२७ ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्रीभावडार गच्छे उपकेश ज्ञा० मं० रत्नु पुत्रेण हीराकेन भ्रातृ कान्हू सा० कुंरपाल नरपाल श्रीकुन्थुनाथ पंचतीर्थी का० प्र० श्रीजिनदेवसूरिभि

(४८४)

स० १४२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्रीउपकेश गच्छे छिगा गोत्रे सा० सोढा सुत कडुआकेन पितु श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ श्रीककुदाचार्य संताने श्रीदेवगुप्तसूरिभि ॥

(४८५)

सं० १४२८ वैशाख वदि २ सोमे प्रा० ज्ञा० व्यव० पूनपाल भार्या मदू पुत्र देल्हाकेन पितृ मातृ पितृव्य राजा सेढा श्रेयसे श्रीपार्श्व बिंब का० साधु पू० श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ।

(४८६)

संवत् १४२८ वर्षे मागसर सुदि १८ रवू श्रीमाल ज्ञातीय व्य रूपा भार्या नीभलदेनमत् पुत्र गदा भार्या देवलदे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्रीजयानंदसूरिभिः

(४८७)

सं० १४२८ वैशाख वदि १ सोमे श्रीमाल श्र० पाल्हू भार्या पदमलदे सु० आसा जसा नरपाल श्रेयोर्थं मंडलकेन श्री चंद्रप्रभ पचतीर्थी कारितं हर्षतिलक (? देव) सूरिणा मुपदेशेन।

(४८८)

सं० १४२८ वैशाख सुदि ३ बुधे श्रीश्रीमालज्ञा शालिभद्र सुत लखमसी श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं मोका नरवराण श्रेयसे

(४८९)

सं० १४२८ वर्षे ज्ये० वदि १ शुक्रे श्रीनाणकीय गच्छे श्रे० कुरमी भार्या चत्रू पुत्र धणपालेन पित्रोः श्रेयसे श्रीपार्श्व बिंब का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि ॥ छ ॥

(४९०)

सं० १४२८ पोष वदि ७ रवौ श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नाचार्यसंताने उपकेश ज्ञा० म० देवसींह भा० देल्हणदे पु० पिंचा भा० लखमादे पु० लापा सहितेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीवासुपूज्य पंचतीर्थी का० प्र० श्रीककसूरिभि ॥

(४९१)

सं० १४२९ माह वदि ७ सोमे श्रीमाल व्यव० मालदेव भा० माधलदे श्रेयसे सु० वेरियाकेन श्रीवासुपूज्य कारित प्र० त्रिभवि० श्रीधर्मतिलकसूरिभि.

(४९२)

सं० १४२९ वर्षे माघ वदि ७ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितामह काऊण भार्या मालू ' जाल्हणदे वदे पितृ श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारित श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं।

(४९३)

सं० १४२९ माह वदि ७ सोमे ओसवाल ज्ञा० व्यव० कलुआ भार्या ठाणी पुत्र कुवरसी कगडाभ्या सुतेन डूंगरेण भा० देल्हणदे युतेन श्रीशांतिनाथ का० प्र० ब्रह्माण श्रीविजयसेनसूरि शि० श्रीरत्नाकरसूरिभि ॥

(४९४)

सं० १४३० वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्रा० मंत्रि वरसिंह भा० तेजलदे पुत्र भाराकेन पितामह सलखा पूर्वज निमि० श्रीआदिनाथ का० प्र० श्रीसोमचंद्रसूरिभि ।

(४९५)

स० १४३० वर्षे माह वदि २ सोमे चक्रजा भार्या मइजल्दे पुत्र नींबाकेन भा० धीहीमादे सहितेन श्रीमहावीर बिंब का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीरत्नाकरसूरिभिः ।

(४९६) P.R. 58

स० १४३० वर्षे फा० सु० १० नाहर गोत्रे सा० मेर पुत्र सा० मइणसाह पुत्र सा० इसर सा० भापति भा० धानिणि मेहिणि श्रे० पंचतीर्थी कारिता प्रति० श्रीधर्मघोषगच्छे ॥ श्रीसागरचंद्र सूरिभिः ॥

(४९७)

स० १४३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ प्राग्वा० ज्ञा० व्यव० रिणमल पुत्र भा० राजलदे पुत्र गोयन्द भा० सुंदरी सहितेन श्रीश्रीकुंथुनाथ बिंबं कारि० पूर्णिमापक्षे द्विती० कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥ श्री ॥

(४९८)

स १४३२ वर्षे द्वि० वैशाख वदि ११ सोमे व्यव म० सामपाल भा० सुहडादेवि पु० अमर सीहेन पित्रो: श्रेयसे पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीहेमतिलकसूरिभि ।

(४९९)

सं० १४३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० व्य० गहा भार्या देवलदे पुत्र कीताकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारिता सार्धपूर्णिमा प० श्रीधर्मचन्द्रसूरि पट्टे श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन ।

(५००) 46

सं० १४३२ (?) व० माह सु० ८ रवौ उप० नाहर गोत्रे सा० लखमादे पुत्र वत्ता महिपा भामा पितृ मातृ पुण्याय आत्म श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं कारापित प्रतिष्ठित श्रीधम (घो) पगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ।

(५०१) 50

स० १४३२ वर्षे फागुण सुदि २ श्रीसुविधि सीहेन पितृ पितृव्य सा० झांझण श्रेयसे श्रीशान्तिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारित प्र० श्रीककुदाचार्य सताने भावदेवसूरिभि ॥

(५०२) 46

स० १४३२ फागु० सु ३ शुक्रे उ० डांगी गोत्रे व्य० झांगा भा० वल्हादे पु० चाहुताकेन पितृव्य पूता श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब कारितं श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीसिद्धसूरिभि

(५०३)

सं० १४३३ चै० सु० १० सोमे श्रीषंडेरकीय गच्छे श्रीयशोभद्रसूरि संताने सा० पदम भा० हासी पु० हापा महणा राइधरकेन पितृ श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीशालिसूरिभिः ॥

(५ ४)

सं० १४३३ वर्षे वैशाख सुदि ६ शनौ प्राग्वा० व्य० वीरा पुत्र सेगा भार्या कसमीरदे पुत्र झगडाकेन भार्या पूसी सहितेन श्रीपद्मप्रभ बिं कारा० प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः

(५०५)

स० १४३३ वर्षे वैशाख सुदि ६ शनौ प्राग्वाट ज्ञा० व्यव। गेहा भार्या देवलदे पुत्र कीता केन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं साधु पूर्णिमा प० श्रीधर्मचंद्रसूरि पट्टे श्रीधर्मतिलक सूरिणा मुपदेशेन ॥

(५०६)

सं० १४३३ वर्षे वैशाख सुदि ६ शनौ प्रा० ज्ञा० मालाकेन मातृल ल्हाशभ्या निमित्तं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं पूर्णिमा प० श्रीउदयप्रभसूरिणा मुपदेशेन ॥

(५०७)

संवत १४३३ वर्षे फागुण सुदि १० व्य० सिरपाल भा० पुरसाहा बाहड पु० मार्व पि० ना० श्रे० श्रीमहावीर बिंबं प्र० श्रीसोमदेवसूरिभि

(५०८)

संवत् १४३३ वर्षे फागुण सुदि १३ शनौ प्रा० व्यव० भउणसींह भार्या वीझलदे पु० मोपा भा० सुहडादे पुत्र राटावरन (?) मातृ पित्रो श्रेयसे श्रीमहावीर चतुर्विंशति जिणालय का० प्र० श्रीकमलाकरसूरिभि०।

(५०९)

सं० १४३४ व० वैशाख वदि २ बुधे ऊकेश ज्ञा० श्रेष्ठि तिहुणा पु० मामट भा० मुक्ती पु० जाणा सहितेन पित्रो श्रेयसे श्रीसंभव बिं० का० प्र० श्रीवृहद्गच्छीय श्रीमहेन्द्रसूरि पट्टे श्रीकमल-चंद्रसूरिभि. ॥

(५१०)

सं० १४३४ व० वैशाख व० २ बुधे प्राग्वाट ज्ञा० दो० झांझा भार्या हीमादे पु० थेराकेन पितृ भ्रातृ श्रेयो० श्रीसंभवनाथ पंचती० का० प्र० श्रीवृहद्० श्रीमहेन्द्रसूरि पट्टे श्रीकमलचंद्रसूरिभि ॥

(४९५)

सं० १४३० वर्षे माह वदि २ सोमे माल्हा भार्या चाझलदे पुत्र नींबाकेन भा० वीहीमादे सहितेन श्रीमहावीर बिंब का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीरत्नाकरसूरिभिः ।

(४९६)

सं० १४३० वर्षे फा० सु० १० नाहर गोत्रे सा रूदू पुत्र सा महणसाह पुत्र सा० इसर सा० भापति मा० मानिणि मेहिणि श्रे० पंचतीर्थी कारिता प्रति० श्रीधमघोषगच्छे ॥ श्रीसागरचन्द्र सूरिभि ॥

(४९७)

सं० १४३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ प्राग्वा० ज्ञा० व्यव० रिणमल पुत्र भा० राजलदे पुत्र गोवन्द भा० सुन्दरी सहितेन श्रीश्रीकुंथुनाथ बिंबं कारि० पूर्णिमापक्षे द्विती० कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥ श्री ॥

(४९८)

स १४३२ वर्षे द्वि० वैशाख वदि ११ सोमे व्यव म० सोमपाल भा० सुहवादेवि पु० जयत साहन पित्रो श्रेयसे पार्श्वनाथ बिंब का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीहेमतिलकसूरिभि ।

(४९९)

सं० १४३२ वर्षे वैशाख सुदि ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० व्य० गहा भार्या देवलदे पुत्र कीलाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब कारिता साधुपूर्णिमा प० श्रीधमचन्द्रसूरि पट्टे श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन ।

(५००)

सं० १४३२ (?) व० माह सु० ८ रवौ व्य० नाहर गोत्रे सा० प्रतमादे पुत्र वया महिया धामा पितृ मातृ पुण्यार्थं आत्म श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंब कारापित प्रतिष्ठित श्रीधम (घो) षगच्छ श्रीमहेन्द्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ।

(५०१)

सं० १४३२ वर्षे फागुण सुदि २ श्रीसुर्पि साहन पितृ पितृव्य सा० सोमल श्रेयसे श्रीशांतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्र श्रीउपकेशगच्छे सिद्धाचार्य संताने श्रीदेवगुप्तसूरिभि ॥

(५०२)

सं० १४३२ फागु० सु० ३ शुक्रे व० दांगी गोत्र व्य० सांगा भा० मलावे पु० चाहुलाकेन पितृव्य पूना श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारित श्रीसिद्धाचार्य संताने म० श्रीसिद्धसूरिभि

(५२०)

सं० १४३६ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० पितृ श्रे० साल्हा मातृ सिरिआदे सुत रुदाकेन भार्या सलखणदे सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशातिनाथ कारितः गूदाऊआ श्रीसिरचंद्रसूरिभिः । शुभं० ॥

(५२१)

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ सो० श्रीनाणकीय गच्छे व्यव० वंचा भार्या रत्नादे आत्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्रीमहेन्द्रसूरिभिः ।

(५२२)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख व० ११ भौ० श्रीभावडार गच्छे उपकेश ज्ञा० पितृ देवसी भा० सहजू पितृव्य भीमा मलयसींह भ्रा० खेताएतेषा नि० व्य० हेमाकेन श्रीशातिनाथ पंच० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः ।

(५२३)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ भोमे प्राग्वाट ज्ञा० पितृ श्र० साल्हा मातृ सिरिणादे सुत रुदाकेन भार्या सलखणदे सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ कारि० प्र० गुदाउआ श्रीसिरचंद्र-सूरिभि ॥ शुभं ॥

(५२४)

सं० १४३६ वैशाख बदि ११ वापणाग गोत्रे सं० देवराज भार्या पूनादेव्या आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभि ॥ ७४ ॥

(५२५)

संवत् १४३६ वैशाख वदि ११ आइच्चनाग गोत्रे सा० हरदा पुत्र करमाकेन भ्रातृ सहणू श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ पंचतीर्थी कारिता प्रतिष्ठिता श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥ ७४ ॥

(५२६)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ भौमे प्राग्वाट ज्ञातीय दादू भार्या सास पुत्र गीहनेन पितृ पितृव्य तिहुणा निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीरत्नप्रभसूरीणा मुपदेशेन ॥ १

(५२७)

सं० १४३६ (?) श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं श्रीदेवप्रभसूरीणा मुपदेशेन ।

(४११)

स० १४३४ वैशाख ब० २ बुध प० ज्ञा० पितृकाज व मातृ पूजी श्रेयसे सुत पासचेन पित्रो श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंब कारित प्र ह्य (गु ?) शाक ग० श्रीसिंरचन्द्रसूरिभि ॥

(४१२)

स० १४३४ (?) वर्षे वैशाख वदि ३ (१२) बुधे श्रीनाणकीय गच्छे ठक्कुर गोत्रे श्रे० ठाला भा० फूंनादे पु० खेताकेन मातृ पितृ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभस्वामि बिंबं का० प्र० श्रीधनेश्वरसूरिभि ॥

(४१३)

स० १४३४ व० वै० व० ११ भौमे प्रा० व्य० सोहड़ भा० कड्अड़ पु० जाणाकेन स० पू० त० पित्रा श्रे० श्रीपार्श्वनाथ मुख्य पंचतीर्थी का० सा० पू ग श्रीधर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥

(४१४) ८०

स० १४३४ ज्येष्ठ मासे ७ दिने श्रीपार्श्व बिंब उकेशवंशे मालू शाखायां सा० गोपाल पुत्र सा० देवराज भार्यया साधु० कीको श्राविकया स्वस्य पुण्यार्थं कारित प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरिभि ।

(४१५)

स० १४३४ (?)　　　　मालवि[illegible]　　　　ह पुत्र सा०
न्यां श्रीशांतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीधर्मघोष श्रीसागरचन्द्रसूरिभि ।

(४१६)

सं० १४३८ वर्षे माघ वदि १३ सोमे प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० रतनसी भा० रुनादे पितृव्य पारसी श्रेयोर्थं व्य० मेघाकेन श्रीपार्श्वनाथ पंचतीर्थी कारित श्रीचैत्रगच्छे प्र० श्रीगुणदेवसूरिभि ।

(४१७)

स० १४३८ माघ वदि १ सोम उपकेश ज्ञातीय व्य० रतनसीह भा० रतादे सु० मेघाकेन भा० मेघादे भार्या युतेन　　गी युतेन श्रीऋषभ कारित प्र० रत्नपुरी० श्रीधर्मघोषसूरिभि ॥

(४१८) ८०

स० १४३८ माघ वदि १२ सोम उपकेशवंश ज्ञातीय सा० नूमला पुत्र लाला भार्यया श्राविका मू　ल्हाम्ना भत्त　श्रेयार्थ श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० धर्मघोष० श्रीवीरभद्रसूरिभि ।

(४१९)

संवत् १४३८ वर्षे फागुण वदि १० सोम उपकेश ज्ञातीय सा० लखा भार्या लाखादे पुत्राभ्यां सा० माडा[illegible]भ्यां पित्रा पितृव्य श्रेयार्थ श्रीविमलनाथ पंचतीर्थी का० प्र० मडाहडीय श्रीहेम तिलकसूरिभि ।

(५२०)

सं० १४३६ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा॰ पितृ श्रे० साल्हा मातृ सिरिआदे सुत रुदाकेन भार्या सलखणदे सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशातिनाथ कारितः गूदाऊआ श्रीसिरचंद्रसूरिभिः । शुभं० ॥

(५२१)

सं० १४३६ वैशाख वदि ११ सो० श्रीनाणकीय गच्छे व्यव० बंचा भार्या रत्नादे आत्मश्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्रतिष्ठितं श्रीमहेन्द्रसूरिभिः ।

(५२२)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख व० ११ भौ० श्रीभावडार गच्छे उपकेश ज्ञा० पितृ देवसी भा० सहजू पितृव्य भीमा मलयसींह भ्रा० खेताएतेषा नि० व्य० हेमाकेन श्रीशातिनाथ पंच० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभि ।

(५२३)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ भोमे प्राग्वाट ज्ञा० पितृ श्र० साल्हा मातृ सिरिणादे सुत रुदाकेन भार्या सलखणदे सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ कारि० प्र० गुदाउआ श्रीसिरचंद्रसूरिभिः ॥ शुभं ॥

(५२४)

सं० १४३६ वैशाख बदि ११ वापणाग गोत्रे सं० देवराज भार्या पूनादेव्या आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥ ७४ ॥

(५२५)

संवत् १४३६ वैशाख वदि ११ आइच्चनाग गोत्रे सा० हरदा पुत्र करमाकेन भ्रातृ सहणु श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ पंचतीर्थी कारिता प्रतिष्ठिता श्रीदेवगुप्तसूरिभि. ॥ ७४ ॥

(५२६)

सं० १४३६ वर्षे वैशाख वदि ११ भौमे प्राग्वाट ज्ञातीय दादू भार्या सास पुत्र गीहनेन पितृ पितृव्य तिहुणा निमित्तं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीरत्नप्रभसूरीणा मुपदेशेन ॥ १

(५२७)

सं० १४३६ (?) श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं श्रीदेवप्रभसूरीणा मुपदेशेन ।

(५२८)

सं० १४३७ व० फा० सुदि ७ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० सोम भा० धीमलदे पितृव्य हरिचंद निमित्त रातमकेन श्रीपार्श्वबिंब का० का० प्र० सू० श्रीमाणदेवसूरिभिः ।

(५२९)

सं० १४३७ वर्षे वैशाख वदि ११ सोमे प्रा० व्यव० हेमा भार्या हीरादे पुत्र देवचंद्रेण पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० मडाह० श्रीसोमचन्द्रसूरिभिः ।

(५३०)

सं० १४३८ वर्षे प्रा० ग० मृ० थिरपाल भार्या होमादे पुत्र वइसकेन भ्रातृव्य सोना सहितेन हमात (?) श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीशालिभद्रसूरीणा मुपदेशेन ।

(५३१)

सं० १४३८ वर्षे चैत्र वदि ४ शनौ श्रीमाणकार गच्छे उपकेश ज्ञातीय पितृव्य म० परदेष श्रे० भ्रातृव्य म० लखमाकेन श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीमाणदेवसूरिभि ।

(५३२)

स० १४३८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शनौ प्राग्वाट व्य० नरसिंह भार्या नयणादे पु० अमरेण भार्या लखादे सहितेन पित्रोः श्रे० प्रति० श्रीरापल्लीय श्रीवीरचन्द्र (भद्र ?) सूरिभिः

(५३३)

स० १४३८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शनौ माम्भ गा० सा० सीकूआ पु० सा० व्रो
मथाकेन लूणावाहड़ सुतेन श्रीपार्श्वनाथ पंचतीर्थी पितृव्य अमरा श्रे० का प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीसागरचंद्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(५३४) 62

स० १४३८ ज्येष्ठ वदि ४ शनो लालाहड़ वंशे पितृ मई लाखा मातृ लाखणदे पुण्यार्थं सुत लखाकेन श्रीअभिनंदननाथ बिंबं कारित प्र० श्रीजिनेश्वरसूरि पट्टे श्रीसोमचन्द्रसूरिभिः ।

(५३५)

॥ ६० ॥ स० १४३८ वर्षे माघ वदि ब० प्रतापसिंह सुत वीरभद्र तत्पुत्र सा० लाखा सा० मोजाभ्यां लखमणादि पुत्र सपरिकराभ्यां पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरिभिः ॥

(५३६)

सं० १४३६ वर्षे पोष वदि ६ रवौ ओसवाल ज्ञा० व्य० सलखण भार्या नोडी पुत्र धीराकेन भ्रातृ युतेन स्वपितृ श्रेयसे श्रीशातिः कारित प्रतिष्ठितं रत्नपुरीय श्रीहरिप्रभसूरि पट्टे श्रीधर्म्मघोष-सूरिभि. ॥ श्री. ॥

(५३७)

संवत् १४३६ वर्षे माघ वदि ६ रवौ श्रीकोरंट गच्छे उपकेश ज्ञा० मह० जसपाल भार्या देवलदे पुत्र थाहरूकेन पितृ मातृ श्रे० श्रीपद्मप्रभ विंवं का० प्र० श्रीसावदेवसुरिभि ।

(५३८)

सं० १४४० पौष सुदि १२ बुधे श्रीभावडार गच्छे उपकेश ज्ञा० खाटहड गोत्रे मं० देदा भा० मीणल पु० म० नरपालेन भ्रातृ रिणसींह श्रे० श्रीवासुपूज्य पंच० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः ।

(५३९)

संवत् १४४० वर्षे पोष सुदि १२ बुधे श्रीभावडार गच्छे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० मलउसींह भा० वाल्हणदे पु० मेघाकेन पित्रो श्रे० श्रीवासुपूज्य पंच० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभि. ॥

(५४०)

सं० १४४० वर्षे पौष वदि १२ बु० प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० हापा भार्या गुरल पुत्र देवसीह कालु पितृ भ्रातृ श्रेयसे विजसीहेन श्रीसुमतिनाथ पंचतीर्थी का० श्रीजयप्रभसुरीणा मुप० प्र० श्रीसूरिभि ।

(५४१)

संव० १४४० पो० सु० १२ बुधे प्रा० श्रे० नयणा भा० नयणादे पु० वील्हाकेन भगिनी हीमल निमित्तं श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० उ० गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने श्रीसिद्धसूरिभि. ॥

(५४२)

सं० १४४० पोष सुदि १२ बुध प्रा० ज्ञा० व्यव लोला भार्या कील्हणदेवि पुत्र सामलेन पिता निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं गुदाऊआ श्रीसिरचंद्रसूरिभि शुभं ॥

(५४३)

संवत् १४४० वर्षे माघ सुदि ४ भौमे श्रीवृहद्गच्छे ऊकेश ज्ञा० सा० तिहुण पु० पद्मसी पूना भा० हरखिणि पु० चापा रत्नना केन पितृ पितामह श्रेयोर्थं श्रीशाति-नाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीसागरचंद्रसूरिभि ॥

(५४४)

सं० १४४१ वर्ष फागण वदि २ रवौ प्राग्वा० मं० भावड़ पु० ऊदा स्वा स पितृव्य सा० पितृव्य सा० हमा पु० सुम श्रेयोनिमित्त श्रीशांति प्र० का० मडा० श्रीमुनिप्रभसूरिभि

(५४५)

सं० १४४१ वर्षे फागुण सुदि १० सोमे श्रीश्रीमा० श्रीऊकेश वंशे बहकरा साधु कर्मण सुत साधु हरप स भार्या सा० नाइकदे सुतेन साधु केल्हणेन। पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि ॥

(५४६)

सं० १४४२ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे ओसवाल ज्ञा० महाजनी मुंजा टाका मायणदे पु० बीका भा० लखमणदे सुत पूनमाना श्रेयोर्थं सुत सूरेन पुत्र पौत्र सहितेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं श्रीदेवचंद्रसूरीणा मुपदेशेन श्रीसूरिभि ॥ १

(५४७)

सं० १४४२ वर्षे वैशा० सु० १५ उपकेश ज्ञाती० गोष्ठिक पासड़ भा० वयजलदे सुत छींबाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ पंचतीर्थी का० प्रति० जीरापल्लीय गच्छे श्रीवीरभद्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभि

(५४८)

संवत् १४४५ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शुक्रे उपकेश ज्ञा० मं० कान्ह भार्या मोली पुत्र नींबाकेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छे श्रीधर्मदेवसूरिभि

(५४९)

सं० १४४५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० सुमण भा० कडू पुत्र सुधाकेन भा० प्रियादेवि श्रीसंभवनाथ बिंब का० प्र० श्रीसंडेरकीय गच्छे श्रीसोमप्रभसूरिभि

(५५०)

संवत् १४४५ वर्षे आषाढ़ सु० ६ गुरौ गातोरा मं० रतन भा० रतनादे पु० सोढा भा० श्रीयादि श्रेयोर्थ श्रीआदि बिंब का० पू० नागेन्द्र गच्छे भावडेरा गच्छे सिद्ध कक्कस्

(५५१)

सं० १४४६ वैशाख वदि ३ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय मं० भावठ भार्या पाल्हू श्रेयार्थं सुत कोलाकेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रति० ब्रह्म गच्छे श्रीकमलचन्द्रसूरिभिः ॥

(५५२)

॥ संवत् १४४७ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे उपकेश ज्ञा० हींगड़ गोत्रे सा० पाहट भा० पाल्हणदे पुत्र गोविंद ऊदाभ्या मिलित्वा पितृव्य मटकू निमित्तं श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद् गच्छे श्रीरत्न-शेखरसूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्रीपूर्णचंद्रसूरिभिः ॥

(५५३)

सं० १४४७ फागुण सुदि १० सोमे प्रा० ठ० मुहणसी भार्या माल्हणदे ठ० नरसिंह ठ० कुरसी ठ० अर्जुन अमीषा श्रेयः श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षीय श्रीसोमप्रभसूरीणामुपदेशेन ॥

(५५४)

सं० १४४६ वर्षे वैशाख सुदि ३ (? ६) शुक्रे उशवाल ज्ञातीय व्य० झगड़ा भा० जाल्हणदे सुत विजेसी पित्रि· श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं गूदाऊ गच्छे श्रीसिरचंद्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(५५५)

सं० १४४६ वर्षे वैशाख सुदि ६ शुक्रे उसवा० ज्ञा० व्यव० छाहड भा० चाहिणिदे पुत्र आनु भा० मनू पुत्र वियरसी श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीवृह० श्रीअभयदेवसूरिभिः श्रीअमरचंद्रसूरि स ...

(५५६)

सं० १४४६ वर्षे वैशाख सुदि ६ शुक्रे श्रीभावडार गच्छे ओसीवाल ज्ञा० व्य० धरथा भा० राणी पु० भाखर डूगराभ्या पित्रोः श्रे० श्रीवासुपूज्य बिं० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः ॥

(५५७)

सं० १४४६ वैशाख सुदि ६ शुक्रे श्रीमाल ज्ञा० पितामह मह० झाटा० पितामही नीतादेवी पितृ भीम मातृ भावलदेवी भ्रातृ गोदा श्रेयसे सुत केल्हाकेन श्रीपद्मप्रभ पंचतीर्थी कारितं कच्छो-इया गच्छे प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(५५८)

॥ सं० १४५० व० माह वदि ६ सोमे श्रीउपकेश ज्ञातौ सा० मोहण भा० यउधी पु० कुरा पितृ मातृ श्रियोर्थं पंचतीर्थी पद्मप्रभ बिंबं का० प्रतिष्ठितं तपा कंनरिस गच्छे श्रीपुण्य-प्रभसूरिभि. ॥

(५५८)

सवत् १४५१ फागुण वदि २ रवौ श्रीकोरंटक गच्छे श्रीउपकेश ज्ञातीय श्रेष्ठि मुधु भा० माल्हणदे पुत्र मेघाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीनन्नसूरिभिः ॥

(५६०)

सवत् १४५१ वर्षे फागुण वदि ३ रवौ प्रा० व्य० झांझा भा० वासीह पु० पुसलाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिं० का० प्रति० रत्न० श्रीधर्मघोषसूरि प० श्रीसोमदेवसूरिभिः ।

(५६१)

सं० १४५३ वैशाख सु० २ शनौ उपकेश चोपड़ा केल्हण भार्या कील्हणदे द्वि० भा० रूपिणि श्रेयोर्थं सुत धनाकेन श्रीआदिनाथ बिंब कारित प्रति० खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरिभि ॥

(५६२)

सवत् १४५३ वर्षे वैशाख सुदि ५ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वोढ़ा भार्या वासल सुत वीराकेन निज पित्रो श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ओत्रबी (?) गच्छे श्रीसूरिभिः ।

(५६३)

स० १४५३ स मासे प्राग्वाट " भा० चांपलदे सुत भुवनपालेन निज मातु श्रेयोर्थं श्रीमहावीर बिंबं कारापितं प्र० श्रीवीरापल्लीय श्रीवीरचंद्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ।

(५६४)

संवत् १४५४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ बुधे गोखरू गोत्रे ऊकेश ज्ञातीय सा० काल्हू भार्या गोराही सुत देपाल भार्या वीरिणि स्व श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारित श्रीमेरुतुंगसूरीणा मुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

(५६५)

सं० १४५४ वर्षे मा० सुदि ८ शनौ ओस० ज्ञा० व्यव चाहड़ भा० वखालदे पु० प नानुआकेन पित्रोरात्म श्रे० श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय ग० श्रीहेमतिलकसूरिभिः ।

(५६६)

सं० १४५४ वर्षे माह सुदि ८ शनौ उपकेश ज्ञा० श्रे० कर्मा भा० आसल्हणदे पुत्र भराकेन भा० सोमलदे स० आत्म श्रेय श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छीय रामसेनीयावटंक श्रीधर्मदेव सूरिभिः ॥

(५६७)

सं० (१) ४५४ माघ सुदि ६ शनौ ऊकेश काला पुत्र व्य० चाहड़ सुश्रावकेन श्रीअंचल गच्छेश श्रीमेरुतुगसूरीन्द्राणामुपदेशेन मातृ पितृ स्व श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

(५६८)

सं० १४५४ माघ वदि ६ शनौ ऊकेश व्य० कउंता भा० की··· ········ त व्य० थाहरू-श्रावकेन श्रीअंचलगच्छेश श्रीमेरुतुगसूरीणामुपदेशेन मातृ पितृ ········· ······

(५६९)

सं० १४५६ वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातौ । सा० लूण सु० देवसिंह भा० वा० भीफी सु० काजलेन पित्रोः श्रेय श्रीपद्मप्रभु बिंबं का० प्रति० कोरंट गच्छे श्रीनन्नसूरिभिः ॥

(५७०)

सं० १४५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ शनौ प्रा० ज्ञा० व्य० लाला भा० लाखणदे सुत पालाकेन भा० राजलदे सहितेन पित्रो. श्रे० श्रीकुथुनाथ बिंबं का० प्र० कक्कसूरि शिष्य भ० प्रा० गच्छे श्रीउदयाणंदसूरिभिः

(५७१)

संवत् १४५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० माला भार्या माणिकि पुत्र चापाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रतस्वामी बिंबं कारितं । श्रीमलयचंद्रसूरि पट्टे श्रीशीलचंद्रसूरीणामुपदेशेन ॥

(५७२)

सं० १४५६ वर्षे आषाढ सुदि ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय पितृ आल्ह मातृ सूहव भ्रातृ काला श्रेयसे धपनाखाकेन (?) श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं ब्रह्माण गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभिः ॥

(५७३)

सं० १४५६ माघ सुदि २ शनौ उप० ज्ञा० व्यव० आसपाल पुत्र सामंत तस्य पुत्र रामसी भार्या माऊ पुत्र मुजा चउद्‌थ जोलाकेन पितृ मातृ श्रे० श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारापि० श्रीजयप्रभसूरीणा मु० श्रीपूर्णि०

(५७४)

संवत् १४५६ वर्षे माघ सुदि १३ शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्यव० पूवा भा० वील्हणदे द्वि० भा० वउलदे सुत माढणेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० पिप्पल गच्छे श्रीराज-शेखरसूरिभि. ॥

(५७५) 68

सं० १४५७ व० वैशाख सु० ३ शनौ उपके० ज्ञा० भण्डसाल गोत्रे सा० जइता भा० जइतलदे पुत्र भूठाके भा० सिरियादे सहितेन भ्रातृ सेवा निमित्त श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं का० प्रतिष्ठि रामसेनीय श्रीधर्मदेवसूरिभि

(५७६)

सं० १४५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीओसवाल ज्ञातीय सा० मण्डलिक पुत्र सा० कर्मसीहेन श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीमेरुतुंगसूरीणामुपदेशेन श्रेयसे श्रीसम्भवनाथ बिंबं कारितं ।

(५७७)

सं० १४५७ वैशाख सु० ३ शनौ श्रीउपकेश ज्ञातौ मणिभार सुरहा भा० सिगारदे पु० धरणी धराभ्यां पित्रो भणसीह श्रेय से० श्रीधर्म बिंब का० उपकेशग० ककुदाचार्य सं० प्र० श्रीदेवगुप्त सूरिभिः ॥

(५७८)

सं० १४५७ वै० वदि ३ शनौ श्रीश्रीमालीय व्य० मंडलिक पु० झाझा भा० मोहिणि पु० जसाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिं० का० प्र० श्रीरत्नाक ? श्रीरान (? म) देवसूरिभि ॥

(५७९)

सं० १४५७ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ नागर ज्ञातीय श्रे० भाभा भा० मेघू सुत कालाकेन मातृ पितृ निमित्त श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० नागर गच्छे श्रीप्रद्युम्नसूरिभिः ॥

(५८०)

॥ सं १४५७ वर्षे आषाढ सुदि ५ गुरौ उपकेश ज्ञातीय सा० पूंभा भा० रूमादे पुत्र पूनासूरा भ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्रस श्रीमलधारीय गच्छे श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ॥

(५८१)

१ सं० (१४) ५७ फागुण सु ७ गुरौ गूर्जर ज्ञातीय से० पदमसीह भार्या पदमसिरि श्रेयोर्थ पुत्र जयसाकेन श्रीमहावीर बिंबं कारितं वादीदेवसूरि संताने श्रीधर्मदेवसूरिभि ।

(५८२) —

सं० १४५८ वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञा० व्य० पता भा० सामलदे पु० धणराजेन मा० श्रीरुपादे पु० गुणपाल सामंतयुतेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित रुद्रपुरीय श्रीसोमदेव सूरि पट्टे श्रीधर्मचन्द्रसूरिभिः ।

(५८३)

सं० १४५८ व० वैशाख वदि २ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० मउसा भार्या कर्मादे पुत्र सींहाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ विंबं कारितं प्र० साधुपूर्णिमा श्रीअभयचंद्रसूरिभिः ॥

(५८४)

सं० १४५८ वर्षे वैशाख वदि २ बुधे उपकेश ज्ञा० व्य० तेजसी भा० पउमादे पु० देवसीहेन भा० देवलदे पुत्र महिराज सविराज सारंग युतेन आत्म श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं रत्नपुरीय श्रीधनचंद्रसूरिभिः ।

(५८५)

सं० १४५८ वर्षे फागुण वदि १ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय सा० रामा भा० वाल्ह पु० पूना वीसलकेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीचैत्रगच्छे श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ॥

(५८६)

सं० १४५९ चैत्र वदि १ शनौ प्राग्वाट ज्ञाती० व्यष्टि लूणसीह भार्या भेथू पुत्र खेताकेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीभावदेवसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(५८७)

सं० १४५९ चैत्र वदि १५ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० झगडा भा० ऊमादे पुत्र झाडणेन पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ब्रह्माणीय श्रीहेमतिलकसूरि पट्टे श्रीउदयाणदसूरिभिः ॥

(५८८)

सं० १४५९ वर्षे चैत्र सुदि १५ शनौ प्रा० व्यव० लखा भार्या सदी पुत्र मेहा भार्या हासलदेव्या भर्त्तार श्रे० श्रीआदिनाथ बिं० प्र० मडाहडीय श्रीमानदेवसूरि श्रीसोमचंद्रसूरि. ॥

(५८९)

संवत् १४५९ वर्षे चैत्र सुदि १५ सोमे प्रा० व्य० साजण भार्या देवलदे पुत्र चापाकेन भ्रा० डूगरण (सा ?) दानि० श्रीपद्मप्रभ मडाहड़ ग० श्रीसोमचंद्रसूरिभिः

(५९०)

सं० १४५९ वर्षे ज्येष्ठ वदि १० शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० लाला भार्या लखमादे पुत्र तिहुणाकेन पित्रो भ्रंतृ महणा निमित्तं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माण गच्छे श्रीउदयाणदसूरिभिः

(५६१) ७०

सं० १४५६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शनौ श्रीउपकेश ज्ञातौ वपणाग गोत्रे साह सीधण भार्या गुणश्री सुतव साहु महिपालेन पित्रोः श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभस्वामी बिंबं कारितं श्रीउपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । विरतव ?

(५६२) ७०

सं० १४५६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शनौ उपकेश ज्ञातौ वप्पणागा गोत्रे सह वस्ता भार्या पुमी सुत धीरमन पित्रोः श्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंब कारित उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(५६३)

॥ सं० १४५६ वर्षे पो० वदि ६ रवौ प्रहा सीवपाल गा० म० पाल्हा सु० पोमा भातृ हादामि धाने आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठापित प० जयमूर्त्ति गणि उपदेशेन ॥

(५६४)

स० १४५६ वर्षे माघ सुदि १ उपकेश ज्ञातीय व्य० आपा भा० देवलदे पु० पोमाकेन भा० हासी सहि० पितृ आजा नि० श्रीपद्मप्रभ पंच० का० प्र० श्रीनाण गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(५६५)

स० १४६० वैशाख वदि ४ शुक्रे उप०   दे सुत धर्मसी कर्मसी निमित्त सुत महाकेन श्रीमहावीर पंचतीर्थी कारिता प्र श्रीसूरिभिः

(५६६)

सवत् १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ शुक्रे वसवाल ज्ञातीय व्य० तुलसी भा० मावलदे द्वि० भा० हमीरदे श्रेयसे सुत वाहडेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्र० श्रीपासचंद्रसूरीणा मुपदेशेन ॥ प्र०

(५६७)

॥ संवत् १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय पितृ रता मातृ रतादे पितृव्य गासल वोसल श्रेयसे सुत पूनाकेन श्रीपद्मप्रभ मुख्य चतुर्विंशति पट्ट कारित ॥ श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीदेवचंद्रसूरि पट्टे श्रीपासचंद्रसूरीणा मुपदेशेन प्रति० श्रीसूरिभिः

(५६८)

स० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे प्रा० गोसल पु० अमरा भा० चतु पु० लखमणेन पितृ निमित्तं श्रीआदि बिंबं का० प्र० पिप्प० श्रीवीरप्रभसूरिभिः

(५९९)

संवत् १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रेष्ठि सिरपाल भा० रतनादे सुत पधाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभिः।

(६००)

सं० १४६१ व० ज्येष्ठ सु० १० शुक्रे उपकेशज्ञातौ आदित्यनाग गोत्रे सा० लूणा भा० चापल सुत तेजा भोजाभ्या पित्रोः श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं का० श्रीऊकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(६०१)

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे प्रा० श्रे० सांगण भा० लखमी पुत्र महीपाके (?ले) न पितृ श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्र० पूर्णिमा पक्षी श्रीपद्माकरसूरिभिः ॥

(६०२)

सं० १४६१ वर्षे माघ सुदि १० सुराणा गोत्रे सा० केल्हण पु० ३ सा० पातु सा० तीडा भार्या सकुमति पुत्र सोमाकेन पितृ मातृ भ्रातृ सोढा श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीमलयचंद्रसूरिभिः ॥

(६०३)

सं० १४६२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे ककत्र (ऊकेश ?) म्हो० देश्रा भा० देवलदे सत पुत्राकेन पितृ मातृ श्रे० श्रीसंभवनाथ उदद (ऊकेश) गच्छे श्रीरतनप्रभसूरिभि.

(६०४)

सं० १४६२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे उपके० भं० मंजुल सुत हीरराज भार्या जदू पु० सींघाकेन भार्या हीरादे सहितेन पित्रोः पितामह निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० संडेरकीय श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

(६०५)

संवत् १४६२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय व्य० सोनपाल भार्या सुहडादे पुत्र जयतसीहेन पित्रो सा० पूनसी फाफण निमित्तं श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीउद-याणंदसूरि

(६०६)

॥ संवत् १४६३ वर्षे मार्ग सुदि ६ से० डूआ भार्या कर्णू सुत सा० आसाकेन कारितं श्रीपारस्वनाथ बिंबं श्रीसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(५६१)

सं० १४५६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शनौ श्रीउपकेश ज्ञातौ बपणाग गोत्रे साह सीधण भार्या गुणश्री सुत साह मण्डिपालेन पित्रो श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभस्वामी बिंबं कारित श्रीउपकेश गच्छे ककुदा चार्य संताने प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः । विरतद् ?

(५६२)

स० १४५६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ शनौ उपकेश ज्ञातौ बप्पणागा गोत्रे मह वस्ता भार्या पुमी सुत वीरसम पित्रो श्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंबं कारित उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने प्रतिष्ठित श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(५६३)

॥ स० १४५६ वर्षे पो० वदि ६ रवौ प्रह्रा सीखपाल गा० म० पाल्हा सु० पोमा भ्रातृ हरदामि धाने आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठापित पं० जयमूर्ति गणि उपदेशेन ॥

(५६४)

सं० १४५६ वर्षे माघ सुदि १ उपकेश ज्ञातीय व्य० आपा भा० देवलदे पु० पोमाकेन भा० हासी सहि० पितृ आपा नि० श्रीपद्मप्रभ पंच० का० प्र० श्रीनाण गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(५६५)

स० १४६० वैशाख वदि ४ शुक्रे बप० दे सुत धर्मसी कर्मसी निमित्त सुत महाकेन श्रीमहावीर पंचतीर्थी कारिता प्र० श्रीसूरिभिः

(५६६)

सवत् १४६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शुक्रे उसवाल ज्ञातीय व्य० ऊणसी भा० भावलदे द्वि० भा० हमीरदे श्रेयसे सुत बाहड़ेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्र० श्रीपासचंद्रसूरीणा मुपदेशेन ॥ प्र०

(५६७)

॥ संवत् १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय पितृ रता मातृ रताद्रे पितृव्य गोसल बीसल श्रेयसे सुत पूनाकेन श्रीपद्मप्रभ मुख्य चतुर्विंशति पट्टः कारित ॥ श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीदेवचद्रसूरि पट्टे श्रीपासचंद्रसूरीणा मुपदेशेन प्रति० श्रीसूरिभिः

(५६८)

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे प्रा० गोसल पु० जयता भा० चम्र पु० लखमणेन पितृ निमित्तं श्रीशांति बिंबं का० प्र० पिप्प० श्रीवीरप्रभसूरिभिः

(६१६)

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु उपकेश ज्ञातीय महं कडुआ भार्या कमलादे सुत रणसी पद्माभ्या श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० नाणकीय गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(६१७)

संवत् १४६५ व० वै० सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० बापणा गोत्रे सा० सोहड़ भा० पदमलदे पुत्र डुगा भा० तारी पुत्र नेमाकेन पितृ पितृव्य भडा निमित्तं श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः

(६१८)

सं० १४६५ वर्षे कार्तिक सुदि १३ गुरु प्रा० ज्ञा० खेतसी भा० खेतलदे पु० चहथ भा० चाहिणि पित्रो. श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं गूदाऊ गच्छ श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं ॥

(६१९)

॥ सं० १४६५ माघ वदि १३ ऊकेश वंशे । सा० गागण पुत्रैः तिहुणा रणसीह धणसीहाख्यै मेला खेला खरहथादि युतै. स्वपूर्वज श्रेयसे सुविधि बिंबं का० प्र० तपा० श्रीपूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्रीहेमहंससूरिभिः

(६२०)

संवत् १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ उपकेश ज्ञा० व्य० धीरा भार्या धारलदे पुत्र अकाकेन मातृ धारलदे निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पू० उदयाणंदसूरिभिः

(६२१)

सं० १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ प्रा० व्य० हीरा भार्या रूदी स्व श्रे० श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीदेवसुंदरसूरिभिः ॥

(६२२)

सं० १४६५ माघ सु० ३ शनौ उपकेश ज्ञातौ श्रे० मोकल भा० मोहणदे सु० हीरा वाछाभ्यां पित्रोः श्रे श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(६२३)

सं० १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि जेसल भा० रूपादे पुत्र तिहुणाकेन श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा गच्छीय श्रीहरिभद्रसूरिभि. ॥

(६०७)

सं० १४६४ वै० सुदि ४ शनौ सिद्धपुर० ओसवाल ज्ञातीय मे० भीमा भा० रूपी सु० धर्म्मसीह श्रीआदिनाथ बिंबं आत्म श्रेयसे तपा गच्छे भ० श्री रत्नसागरसूरिभिः ॥ प्र ॥

(६०८)

सं० १४६३ (?) फागु० सु० ८ बरापी १ भा० पाटक गोत्रे सा० वाडा सु० रेल्हा मा० साहअल्दे भ्रातृ करमा गहिराम नयसीह श्रेयोर्थं श्रीशांतिना० बिं० का० प्र० श्रीधर्मघोष ग० श्रीसागर चंद्रसूरिभिः ।

(६०९)

सं० १४६४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे श्रीसांगा भा० भुक्ति पुत्र सूरा सावड़ा सोढा सायरकेन माता पिता श्रेयोर्थं कारापितं बिंबं श्रीआदिनाथ प्रतिष्ठितं श्रीमहेन्द्रसूरिभिः ॥

(६१०)

संवत् १४६४ वर्षे पौष वदि ११ शुक्रे प्राग्वा० श्रे० सोहड़ भा० सुहड़ादे पु० निवाकेन भ्रातृव्य सहितेन भ्रातृ कुम्प निमित्तं श्रीपार्श्व बिंबं का० प्र० श्रीवीरप्रभसूरिभिः ।

(६११)

सं १४६४ वर्षे पौष वदि ११ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय सा० सालण भा० रोमादे पु० नाहकेन श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० पिप्प० श्रीवीरप्रभसूरिभिः

(६१२)

॥ सं० १४६४ वर्षे ऊसवाल ज्ञातीय व्यव मांमट भार्या सुगवी सुतबाला भार्या सोहणदे तेन साढा देपादि पुत्रैः सहितेन श्रीमुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः

(६१३)

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरौ प्रा० पासड़ मा० कील्हणदे पु० बाहा पित्रो मा० देवी श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीसूरिभिः

(६१४)

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातौ सा० सूमा सु० देवसीह मा० बा० श्रीमदी सु० कालाकेन पित्रोः श्रे० श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्रति० कोरंट गच्छे श्रीनन्नसूरिभिः ॥ श्रीः ॥

(६१५)

सं० १४६५ वैशाख सु० ३ गुरौ प्रा० व्य० मेघा मा० मेघादे पु० कर्मात्मजा मा० कर्मादे पु० भीमा सूटा स० मा० कर्मो निमित्तं श्रीवासुपूज्यनाथ बिंबं का० प्र० श्रीकमलचंद्रसूरिभिः ॥

(६१६)

सं० १४६५ वर्षे वैशाख सुदि ३ गुरु उपकेश ज्ञातीय महं कडुआ भार्या कमलादे सुत रणसी पद्माभ्या श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० नाणकीय गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(६१७)

संवत् १४६५ व० वै० सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० वापणा गोत्रे सा० सोहड भा० पदमलदे पुत्र डुगा भा० तारी पुत्र नेमाकेन पितृ पितृव्य भडा निमित्तं श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः

(६१८)

सं० १४६५ वर्षे कार्तिक सुदि १३ गुरु प्रा० ज्ञा० खेतसी भा० खेतलदे पु० चहथ भा० चाहिणि पित्रो· श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं गूदाऊ गच्छ श्रीरत्नप्रभसूरिभिः ॥ प्रतिष्ठितं ॥

(६१९)

॥ सं० १४६५ माघ वदि १३ ऊकेश वंशे। सा० गागण पुत्रै· तिहुणा रणसीह धणसीहाख्यै मैला खेला खरहथादि युतै. स्वपूर्वज श्रेयसे सुविधि बिंबं का० प्र० तपा० श्रीपूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्रीहेमहंससूरिभिः

(६२०)

संवत् १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ उपकेश ज्ञा० व्य० धीरा भार्या धारलदे पुत्र अकाकेन मातृ धारलदे निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पू० उदयाणंदसूरिभिः

(६२१)

सं० १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ प्रा० व्य० हीरा भार्या रूदी स्व श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीदेवसुदरसूरिभिः ॥

(६२२)

सं० १४६५ माघ सु० ३ शनौ उपकेश ज्ञातौ श्रे० मोकल भा० मोहणदे सु० हीरा वाछाभ्यां पित्रोः श्रे श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(६२३)

सं० १४६५ वर्षे माघ सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि जेसल भा० रूपादे पुत्र तिहुणाकेन श्रीशातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पूर्णिमा गच्छीय श्रीहरिभद्रसूरिभि. ॥

(६२४)

सं० १४६५ वर्षे फागुण सुदि १ रवौ प्रा० व्य० केल्हा भा० कील्हणदे पुत्र राणाकेन आत्म श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीसर्वाणंदसूरिभिः

(६२५)

सं० १४६५ ... जा भा० रत्ना सहितेन कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसडेर गच्छे श्रीसुमतिसूरिभिः ॥

(६२६)

सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनि प्राग्वाट ज्ञा० श्रेष्ठि धणसी भा० फनू पु० जेसाकेन मातृ पितृ श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० श्रीउपकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(६२७)

सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उप० ज्ञा० व्यव० नीना भार्या नयणादे सुत वुरयाकेन स० पूर्वज निमित्त श्रीमल्लिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं महोकराचार्य श्रीगुणप्रभसूरिभिः ॥

(६२८)

सं० १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे प्राग्वाट व्यव० हरपाल भा० पोमादे पुत्र सामंत भा० प्रियादे आत्म श्रेयोर्थं श्रीआदिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं गूडाऊ० श्रीरत्नप्रभसूरिभिः

(६२९)

सं० १४६६ वर्षे मार्गसिर सुदि १० बुधे श्रीचैत्र गच्छे सामूला भा० धर्मिणि पु० भीमसी पित्रोः श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं प्र० श्रीवीरचन्द्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(६३०)

॥ सं० १४६६ वर्षे माघ व० १२ गुरौ ऊ० सा० लख (म) ण भा० लखी पु० मदुपाल भा० कील्हणदे पु० जइताकेन भा० जसमादे सहितेन स्व श्रे० श्रीवासुपूज्य बिं० का० प्र० श्रीसुमति सूरिभिः ॥

(६३१)

सं० १४६६ वर्षे माघ वदि १२ गुरौ उप० ज्ञा० महं० डूगर भा० पदमलदे पुत्र राजू आत्म श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिं० का० प्र० मह्रा० श्रीउदयाणंदसूरिभिः ॥

(६३२)

॥ सं० १४६६ वर्षे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० खेता भार्या जाणी सुत व्य० सुमण छाड़ाभ्या भार्या सीतादे कपूरदे सुत मूधा युताभ्या स्व श्रेयसे श्रीकुथनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पक्षीय श्रीदेवसुंदरसूरि गच्छाधिराजैः ।

(६३३)

सं० १४६६ व ५ शुक्रे उप० व्य० जेसल भार्या रयणादे पु० पूनाकेन श्रीआदि विंवं का० प्र० श्रीतिवद्धर (?) सूरिभिः ।

(६३४)

सं० १४६७ (?) वर्षे वै० सु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय उ० मंडलिक भार्या सारु पुत्र व्य० वलावल ? भार्या मेलादे पुत्र कान्हा वा ल हेमा युतेन स्व श्रेयसे श्रीशातिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा-गच्छे श्रीदेवसुदरसूरिभिः ॥ भद्रम् ॥

(६३५)

प्राग्वाट ज्ञातीय चुहथ सा० साल्ह भार्यया श्रीसुपार्श्व विंवं कारितं सं० १४६८ वर्षे प्रतिष्ठितं तपा गणेश श्रीदेवसुदरसूरिभिः ॥ भद्रं भवतु ॥

(६३६)

सं० १४६८ वैशाख वदि ३ उपकेश ज्ञातौ वप्पणाग गोत्रे मं० वस्ता भा० पोमी सु० नरपालेन पित्रो. श्रे० श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० ऊकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।

(६३७)

सं० १४६८ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातौ श्रे० पुनसिंह भा० पोमादेवि सु० भरमा लींबाभ्या भा० सारू स० पित्रो. श्रे० श्रीविमलनाथ विंवं का० भ० श्रीपार्श्वचंद्रसूरिणा मुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभि· ॥

(६३८)

सं० १४६८ वर्षे वैशाख वदि ४ शुक्रे उप ... .. जसी भा० सलूण पु० आसलेन भ्रातृ वीरुआ निमित्तं श्रीवासुपूज्य पंचतीर्थी का० प्र० ऊएस गच्छे भ० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।

(६३९)

सं० १४६८ वैशाख वदि ४ शुक्रे उप · ·लदे सुत धर्म्मसी कर्म्मसी निमित्तं सुत भडाकेन श्रीमहावीर पंचतीर्थी कारिता प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(६४०)

सं० १४६६ वैशाख सुदि ३ श्रीकाष्टा सघे भट्टारक श्रीगुणकीर्तिदेवा । भार्या रीळमी रिाखणी बाहुपुनि नित्य प्रणमति ॥

(६४१)

सं० १४६६ वर्षे कार्तिक सु० १५ आरख्या गोत्रे सा० राघव पुत्राभ्यां सहिजा शिवराजाभ्यां श्रीसुमति बिंब कारितं तपा गच्छे श्रीसूर्यचंद्रसूरि पट्टे श्रीहेमहंससूरिभिः

(६४२)

सं १४६६ वर्षे माघ सुदि १ उपकेश ज्ञातीय षा आपा भा० देवलदे सु० कोल्हाकेन भा० हांसी सहि० पितृ आपा नि० श्रीपद्मप्रभ पंच० का० प्र० श्रीनाण गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभिः

(६४३)

सं० १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ प्रा० व्यव० कडुआ भा० कमदि पु० पता भा० निंबा पु० देवराजेन पितुः श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० पिप्पल गच्छे श्रीवीरप्रभसूरिभिः ।

(६४४)

सं० १४६६ वर्षे माघ सु० ६ रवौ टप गोत्रे सा० लाखण पु० महपाल भा० श्रीलखणदे पु० नाथा भा० नायिकदे पु० कडूयाकेन पित्रोः निमित्त आदिनाथ बिं० का० प्र० श्रीसुमतिसूरिभिः

(६४५)

॥ सं० १४६६ मा० सु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वाल्हा भा० वाल्हणदे सुतेन श्रे० धनदेवादि सुतेन स्व पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीगुणरत्नसूरिभिः

(६४६)

संवत् १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ उकेश ज्ञातीय सा वस्ता भार्या वसतणी तत्पुत्रेण सा० नीबाके श्रीअंचल गच्छेश श्रीमेरुतुंगसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः

(६४७)

संवत १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ मं० कुमरसिंह सुत मं० अर्जुन पुत्र म० सारंग श्रावकेन पुत्र जयसिंह ईसर सुतेन श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनवर्द्धन सूरिगुरुभिः ॥

(६४८)

सं १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ दिने श्रीउकेश वशे सा० वाछ पताकेन श्रीशांति बिंब का० प्र० श्रीजिनवर्द्धनसूरिभि

(६४६)

सं० १४६६ माघ सु० ६ आंकू भार्या वीरो प्र०

(६५०)

॥ सं० १४६६ वर्षे माघ सु० ६ श्रीभावडार गच्छे। प्राह्मेरुत्य सा० नरदे भा० भरमी पु० जसवीरेण मातृ पित्रो श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिं० कारितं। प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंघसूरिभिः ॥ श्री ॥

(६५१)

सं० १४६६ मा० सु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० ताल्हा भा० ताल्हणदे सुतेन श्रे० धनाकेन भा० मोहणदेव्यादि युतेन स्व पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीगुणरत्नसूरिभिः ॥

(६५२)

सं० १४६६ वर्षे .. ... दि ३ साह सहदे पुत्रेण सा० तोल्हाकेन पुत्र . श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनवर्द्धनसूरिभिः।

(६५३)

सं० १४७० वर्षे वैशाख सुदि १० शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृव्य ऊधा कलत्रि प्रीमलदे हासलदे . .. या धारा वीरा श्रेयसे सु० पासदेन श्रीपार्श्वनाथ पंचतीर्थी कारापिता। प्रतिष्ठिता श्रीसूरिभि.।

(६५४)

॥ सं० १४७१ वर्षे श्रीश्रीमाल ज्ञा० श्रे० पापस भार्या प्रीमलदेवि सुत श्रे० सूटा भार्या सोहगदेवि सुत पूना भार्या पूनादेवि आत्म श्रेयसे श्रीसुमतिनाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः तपागच्छे श्रीसोमसुदर सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

(६५५)

संवत् १४७१ . . श्रीअंचल गच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुप० श्रीआदिनाथ बिंबं का०

(६५६)

सं० १४७१ माह सुदि १३ बुधे श्रीभावडार गच्छे उपकेश ज्ञातीय खांटड गोत्रे सा० लीवा भा० पाती पु० सामतेन मातृ पित्रो श्रेयसे आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीविजयसिंहसूरिभिः ॥श्री॥

(६५७)

सं० १४७२ ज्येष्ठ वदि १२ सोमे प्रा० व्य० लाखा भार्या सूहवदे पुत्र कडुआकेन भार्या सोमी युतेन पितृव्य काला सींगा निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० बायड़ गच्छे श्रीरासिलसूरिभिः ॥

(६४०)

सं० १४६६ वैशाख सुदि ३ श्रीकाष्टा संघे भट्टारक श्रीगुणकीर्तिदेवा। भार्या शीलश्री सिखणी बावपुनि नित्य प्रणमति ॥

(६४१)

सं० १४६६ वर्षे कार्तिक सु० १५ आरउद्धया गोत्रे सा० राघव पुत्राभ्यां सहिजा रिणराजाभ्यां श्रीसुमति बिंब कारितं तपा गच्छे श्रीपूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्रीहेमहंससूरिभि

(६४२)

सं १४६६ वर्षे माघ सुदि १ ऊपकेश ज्ञातीय वा वाणा भा० देवलदे सु० फोलाकेन भा० हांसी सहि० पितृ जाणा नि० श्रीपद्मप्रभ पंच० का० प्र० श्रीनाण गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभि

(६४३)

सं० १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ प्रा० व्यव० कडुआ भा० कमादि पु० पदा भा० निंबा पु० देवराजेन पितु श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब का० प्र० पिप्पल गच्छे श्रीवीरप्रभसूरिभि ।

(६४४)

सं० १४६६ वर्षे माघ सु० ६ रवौ टप गोत्रे सा० आसण पु० महपाल भा० वील्हणदे पु० नावा भा० नायिकदे पु० कडुयाकेन पित्रोः निमित्तं आदिनाथ बिं० का० प्र० श्रीसुमतिसूरिभि

(६४५)

॥ सं० १४६६ मा० सु० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० वस्ता भा० वाल्हणदे सुतेन श्रे० धणदेवादि सुतेन स्व पितृ श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीगुणरत्नसूरिभिः

(६४६)

सम्वत् १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ ऊकेश ज्ञातीय सा० वस्ता भार्या वसतणी तत्पुत्रेण सा० नीवाके श्रीअचल गच्छेश श्रीमेरुतुंगसूरीणामुपदेशेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीसूरिभि

(६४७)

सम्वत् १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ रवौ मं० कुमरसिंह सुत मं० अर्जुन पुत्र मं० मांडण श्रावकेन पुत्र जयसिंह हुसर सुतेन श्रेयोर्थ श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनवर्द्धन सूरिगुरुभिः ॥

(६४८)

सं० १४६६ वर्षे माघ सुदि ६ दिने श्रीऊकेश वंशे सा० हल्लू पदाकेन श्रीशांति बिंबं का० प्र० श्रीजिनवर्द्धनसूरिभि

(६६६)

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीउपकेश गच्छे श्रेष्ठ गोत्रीय सा० ठाकरु भा० सुहागदे पु० साऊण श्रीआदिनाथ बिंबं करा० पिता माता पुण्या । आत्म श्रे । प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।

(६६७)

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ बुधे श्रीज्ञानकीय गच्छे उपकेश ज्ञातौ नाहर गोत्र सा० पूनपाल पु० आघट भा० कील्हणदे पुत्र सोमा सहसाभ्या श्रीसंभवनाथ का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ।

(६६८)

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ बुधे श्रीज्ञानकीयगच्छे उपकेश ज्ञातीय तेलहर गोत्रे सा० पूनपाल पुत्र मदन भा० माणिकदे पु० वीढामाडण सहितेन श्रीसुमतिनाथ विं० का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(६६९)

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० झांझण भा० श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० पूर्णिमा पक्षीय श्रीजिनभद्रसूरीणामुप०

(६७०)

सं० १४७३ ··· दि १३ बदे प्रा० व्य० धीरा भा० तुगा वादाकेन महावीर का० प्र० तगें ···· (नगेन्द्र ?) सूरिभि. ।

(६७१)

सं० १४७३ वर्षे फागुण सुदि ६ सोमे प्रा० जा० श्रे० पाल्हा भा० पद्मलदे श्रेयोर्थं सुत धाडूआकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं पूर्णिमा प० श्रीनेमिचंद्रसूरि पट्टे श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन ।

(६७२)

सं० १४७४ आषा० सु० ६ गुरौ श्रीनाणकीयगच्छ श्रे० विजया भा० वाल्हू पुत्र खीदा निमित्तं श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीधनेश्वरसूरिभिः ।

(६७३)

सं० १४७४ वर्षे मार्ग सुदि ८ सोमवारे प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० राम भा० सेरी पुत्र नरपति पांचा मांडणेन आत्म श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्रीसोमसुंदरसूरि ।

(६७४)

सं० १४७४ फा० सु० ८ प्रा० ज्ञा० सा० केल्हण सुत मोल्हा सा० वणसी धीना भा० धारश्री पुत्र सा० खीधर रतन चांपा भोजा कान्हा खेटा भ्रातृ खीमधर भा० खिमसिरी सु० सा० साल्हाकेन वणसी निमित्तं श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(६५८)

॥ संवत् १४७२ वर्षे फा० वदि ९ शुक्रे हुंवड़ ज्ञातीय ऊवरेश्वर गोत्र व्य० वीरम भा० कमल पुत्र हादा भा० सेगु सु० माला भा० हरखू सु० सा० भा० गदा श्रीमूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्रीपद्मनन्दि उपदेशात् श्रीनेमिचन्द्र शिष्य मुनिसुव्रत बिंब प्रतिमा नित्यं प्रणमति ॥

(६५६)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सुदि ६ शुक्रे प्रा० व्य० धारसी भा० वाल्हू पुत्र मोकल हीमा कोहाके (न) पितृ मातृ श्रे० श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० कछोली पू० श्रीसर्वाणंदसूरीणामुपदे० ।

(६६०)

सं० १४७२ फा० सु० ६ शु० ऊ० सा० देपाल पु० नाला भा० देवल पु० नरसी भा० धरा पु० चगसीहेन श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरिभिः ।

(६६१)

सं० १४७२ वर्षे फा० ६ सु० श्रीकासद्रगच्छे उएस ज्ञा० मोटिला गोत्रे श्रे० जवता पु० रत्ना भा० रत्नसिरि पु० धणसीहेन पित्रो श्रेयसे श्रीधर्मनाथ कारितं प्रति० श्रीउद्योअणसूरिभिः ॥ श्री ॥

(६६२)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सुदि ६ शुक्रे श्रीवृहद्गच्छे उपकेश वंशे सा० सोढा भा० मोहणदे पु० सा० हाबाकेन पितृ श्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारित प्रति० श्रीगुणसागरसूरिभि ।

(६६३)

सं० १४७२ वर्षे फागुण सुदि ६ शुक्रे कोरंटकीय गच्छे व्य० आला भा० वाल्हणदे पु० सहजा केन भ्रातृ साजिग बाला सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ का० प्र० श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(६६४)

सं० १४७२ वर्षे सुदि ३ बुधे ...मांमण पाता श्रीपुभव निमित्तं श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० ...म० श्रीवीरप्रभसूरिभि ।

(६६५) नाहटा पि० 78 प्राइवेट

॥ ६० ॥ संवत् १४७३ वर्षे चैत्र सुदि १५ श्रीऊकेश वंशे लुणिया गोत्रे सा ठाकुरसी पुत्राभ्यां हेमा देपाभ्यां श्रीमहावीर बिंबं कारितं । भ्रातृ जेठा पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं खरतर श्रीजिनवर्द्धमसूरिभिः ॥

(६६६) 1-८८ 79

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ श्रीउपकेश गच्छे श्रेष्ठ गोत्रीय सा० ठाकरु भा० सुहागदे पु० साऊण श्रीआदिनाथ विंबं करा० पिता माता पुण्या । आत्म श्रे । प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभि. ।

(६६७) 1-८८ 79

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ बुधे श्रीज्ञानकीय गच्छे उपकेश ज्ञातौ नाहर गोत्र सा० पूनपाल पु० आघट भा० कील्हणदे पुत्र सोमा सहसाभ्यां श्रीसंभवनाथ का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ।

(६६८) 1-८८ 79

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ बुधे श्रीज्ञानकीयगच्छे उपकेश ज्ञातीय तेलहर गोत्रे सा० पूनपाल पुत्र मदन भा० माणिकदे पु० वीढामांडण सहितेन श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(६६९)

सं० १४७३ वर्षे ज्येष्ठ सु० ५ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० व्यव० झांझण भा० श्रेयसे श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्र० पूर्णिमा पक्षीय श्रीजिनभद्रसूरीणामुप०

(६७०)

सं० १४७३ ... दि १३ वदे प्रा० व्य० वीरा भा० तुगा वादाकेन महावीर का० प्र० तगं... (नगेन्द्र ?) सूरिभि. ।

(६७१)

सं० १४७३ वर्षे फागुण सुदि ९ सोमे प्रा० जा० श्रे० पाल्हा भा० पद्मलदे श्रेयोर्थं सुत धाडूआकेन श्रीपार्श्वनाथ विंबं कारितं पूर्णिमा प० श्रीनेमिचंद्रसूरि पट्टे श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन ।

(६७२)

सं० १४७४ आषा० सु० ६ गुरौ श्रीनाणकीयगच्छ श्रे० विजया भा० वाल्हू पुत्र खीदा निमित्तं श्रीशांतिनाथ विंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीधनेश्वरसूरिभि. ।

(६७३)

सं० १४७४ वर्षे मार्ग सुदि ८ सोमवारे प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० राम भा० सेरी पुत्र नरपति पांचा मांडणेन आत्म श्रेयसे श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्रति० श्रीसोमसुंदरसूरि ।

(६७४)

सं० १४७४ फा० सु० ८ प्रा० ज्ञा० सा० केल्हण सुत मोल्हा सा० वणसी धीना भा० धारश्री पुत्र सा० खीधर रतन चापा भोजा कान्हा खेटा भ्रातृ खीमधर भा० खिमसिरी सु० सा० साल्हाकेन वणसी निमित्तं श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(१७५)

सं० १४७४ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे प्रा० कोला भा० धारलदे पु० पूना हरियाभ्यां पितृव्य रत्ना निमित्तं श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० कच्छोलीवाल श्रीसर्वाणंदसूरीणामुपदेशेन ।

(१७६)

सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ कोरंटगच्छे उप० ज्ञातौ सा० धूना भा० लखमी पु० पीचा भा० रत्नी पु० डूगर पितृ मातृ श्रे० श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्रीककसूरिभिः ।

(१७७)

सं० १४७५ वर्षे ज्येष्ठ सु० ९ शुक्रे उ० ज्ञा० सा० नरपाल पु० तिहुणा भा० २ तिहुणश्री महणश्री पु० सोमाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरिः ।

(१७८)

सं० १४७५ व० ज्ये० सुदि ९ बु० प्रा० व्य० धधरसी भा० धीरुणदे पु० भूरणसंग सपूर्वज श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्रति स । व प्र० श्रीधर्मतिलकसूरि पट्टे श्रीहीराणंदसूरीणामुपदेशेन ॥

(१७९)

संवत् १४७६ वर्षे वैशाख वदि १ शनौ ऊकेश वंशे व्यव० चाहड़ सुत आसपालसुतपूना सुतमं० चरडा भार्या पाल्हणदे तयोः पुत्रैः मं० कोला मं० नोला मं० लोला नामभिः अंचलगच्छे श्रीजयकीर्त्तिसूरीणामुपदेशेन मातृ पितृ श्रेयोर्थं चतुर्विंशति जिन पट्टः कारितः ॥

(१८०)

सं० १४७६ वर्षे वैशाख वदि १ शनौ ऊकेश ज्ञातीय व्य० धारा भा० लखमी सु० गुणराजेन भा० रूपादे धीरी पु० लोला लोलादि कुटुंब प्रावृतेनात्मनः श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिप श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

(१८१)

संवत् १४७६ व० वैशाख सु १० रवौ प्रा० व्य० लीवा भार्या हीरादे पु० जि [illegible] सीह निम० तद्भार्यया पूर्णदेव्या शांतिनाथ बिं० कारितं श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः

(१८२)

संवत् १४७६ वर्षे मार्ग सु० ३ ऊके० ज्ञा० सा० देव पु० कान्हा पु० करमा भा० करणू पु० डूगर देल्हा पद्मा प्रमुखैः पुत्रैः पूर्वज निमित्त श्रीशांतिनाथ बिंबं का० श्रीसंडेर गच्छे श्रीयशोभद्र सूरि संताने प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(६८३) Page 81

सं० १४७६ फागुण सुदि ११ उएश गच्छीय वप्पणाग गोत्रे सा० पद्र पुत्र सा० वामदेव भा० लाछि पुत्र सा० सवदेव सज्जनाभ्या पितु श्रेयसे श्रीआदिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसिद्धसूरि शिष्य १ श्रीकक्कसूरिभिः ॥

(६८४)

सं० १४७६ वर्षे चैत्र वदि १ शनौ श्रीभावडार गच्छे श्रीमा० भरमा भा० रतनादे पु० रूपाकेन मातृ पितृ श्रेयसे श्रीशातिनाथ विंवं का० प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभि.

(६८५)

सं० १४७७ वर्षे वैशाख वदि १ शनौ प्रा० व्यव० राणा भा० राणादे पुत्र तेजा भा० तेजलदे पित्रो श्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथ विंवं प्र० श्रीगूदाऊ गच्छे भ० श्रीरत्नप्रभसूरि

(६८६)

सं० १४७७ वर्षे चैत्र सु० ५ सोमे प्राग्वाट व्य० ठाकुरसीहेन श्रीआदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्रीसोमसुदरसूरिभिः ॥ भद्र ॥

(६८७)

सं० १४७७ व० वैशाख सुदि बुधे ऊ० ज्ञा० व्य० अजयसी भा० आल्हणदे पु० महणकेन पित्रो. श्रेयसे श्रीशाति विंवं कारितं श्रोजयप्र (भ ?)सूरिभि·

(६८८)

सं० १४७७ मार्ग वदि ३ हु० व्या० हरिया सुत व्या० देपा भार्या देवलदे पुत्र सामंत कर्मसीहेन पुत्र भ्रातृ लला श्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रत विंवं कारितं प्र० श्रीसोमसुदरसूरिभिः ॥

(६८९)

सं० १४७७ वर्षे माघ सु० ६ गुरौ उ० सोहिलवाल गोत्रे सा० ऊदा भार्या उदयसिरि पुत्र षेढा भार्या खेतसिरि आत्म श्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभ विंवं कारितं प्र० धर्मघोष गच्छे पूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्रीमहेन्द्रसूरिभि ॥

(६९०)

सं० १४७७ वर्षे मा० सुदि १० सोमे प्रा० व्यव० जीदा पुत्र कोहा भा० रामादे पु० आबाकेन भ्रा० सारंग निमि० श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्र० प० कच्छोलीवाल गच्छे श्रीसर्वाणंदसूरिभि

(१७५)

सं० १४७४ वर्षे फागुण सुदि १० बुधे प्रा० कोला भा० धारलदे पु० पूजा हरियाभ्यां पितृम्य दला निमित्त श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० कच्छोलीवाल श्रीसर्वाणंदसूरीणामुपदेशेन।

(१७६)

स० १४७८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ कोरंटगच्छ उप० ज्ञातौ सा० छूणा भा० लक्ष्मी प्र० पीथा भा० रती पु० डूगर पितृ मातृ श्रे० श्रीपद्मप्रभ बिंब कारित प्र० श्रीककसूरिभिः।

(१७७)

स० १४७८ वर्षे ज्येष्ठ सु० ६ शुक्रे उ० ज्ञा० सा० नरपाल पु० तिहुणा भा० २ तिहुणश्री महणश्री पु० सोमाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीमंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरि।

(१७८)

स० १४७८ प० ज्ये० सुदि ६ शु० प्रा० व्य० पचरसी भा० पील्हणदे पु० भूरणसरा सपूर्वज श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्रति स। व प्र० श्रीधर्मतिलकसूरि पट्टे श्रीहीराणंदसूरीणामुपदेशेन॥

(१७९)

सवत् १४७१ वर्षे वैशाख वदि १ शनौ ऊकेश वंशे व्यव० चाहड़ सुत भासपाल्हसुतचूंथा सुतम० भरहा भार्या पाल्हणदे तयोः पुत्रै मं० कोहा मं० नोडा मं० सोढा नामभिः अचलगच्छे श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन मातृ पितृ श्रेयार्थ चतुर्विंशति जिन पट्ट कारितः॥

(१८०)

सं० १४७१ वर्षे वैशाख वदि १ शनौ ऊकेश ज्ञातीय व्य० धारा भा० लक्ष्मी सु० पुरुषाकेन भा० रूपादे योगे पु० नारदा प्रमुख कुटुंब सहितेनात्मनः श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छाधिप श्रीसोमसुंदरसूरिभिः॥

(१८१)

सवत् १४७१ व० वैशाख सु० १० रवौ प्रा० व्य० सोढा भार्या हीरादे पु० जि　　सोढ निम० वडगच्छ पूनादेव्या शांतिनाथ बिं० कारित श्रीधर्मतिलकसूरीणा मुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः

(१८२)

सवत् १४७१ वर्षे माघ सु० ३ ऊके० ज्ञा० सा० देद पु० कान्हा पु० करमा भा० करणू पु० डूगर स्वहा पद्मा प्रमुखै पुत्रैः पूर्वज निमित्त श्रीशांतिनाथ बिंबं का० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनवर्धनसूरि पद्दे प्र० श्रीजिनचंद्रसूरिभिः॥

(६९९)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्रीकोरंटक गच्छे श्रीनन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय सा० कुरसी भा० कपूरदे आत्म श्रेयोर्थं श्रीसुमति बिंबं कारितं प्र० श्रीककसूरिभि

(७००)

संवत् १४८० वर्षे फागुण सुदि १० बुधे उपकेश ज्ञातीय सा० टीटा भार्या पाती पु० नरपाल भा० पूरी पु० देल्ही सहितेः श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० मड्डाहडीय श्रीमुनिप्रभसूरिभिः

(७०१)

सं० १४८० वर्षे फागुण सु० १० बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव सहजा भार्या सोनलदे पुत्र कूता-केन भार्या कपूरदे सपरिकरेण निज पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीवृद्ध गच्छे भीन-वाला। भ० श्रीरामदेवसूरिभिः ॥

(७०२)

सं० १४८० वर्षे प्राग्वाट वंशे सा० करमसी भा० खेदी द्वि० भा० लाढू प्रथम भार्या पुत सखणत जेसा० भ्रातृ नरसी गोयंद जेसा डूगर सुतेन स्व मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिप श्रीसोमसुंदरसूरिभि ।

(७०३)

स० १४८१ वैशाख वदि १२ श्रीभावडार गच्छ हमे गोत्रे सा० भावदे भा० भावलदे पु० खेताकेन मातृ पितृ श्रे० धर्मनाथ बिं० का० प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

(७०४)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० व्य० भीमसिंह भार्या वूल्ही पुत्र भादा भा० साल्ह पुत्र जेसाकेन पि० नि० श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भ० श्रीसर्वाणंदसूरिभि ॥

(७०५)

स० १४८१ वर्षे वैशाख व० १३ अद्य उप० चउराधारा भा० सोनी पु० चाभाकेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं पितृ श्रेयसे प्र० पूर्णिमा पक्षे श्रीजिनभद्रसूरिभि ॥

(७०६)

॥ संव० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सामल भार्या संपूरि सुत रूपाकेन भार्या लींबी युतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥ श्री॥

(६६१)

सं० १४७८ वर्षे फागुण व० ८ रविदिने उ० ज्ञातीय मे० माइड भा० कस्मीरदे पु० मेघाकेन श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीपू० श्रीनरचंद्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(६६२)

सं० १४७८ वर्षे फागुण वदि ८ रवौ उप० ज्ञातीय व्य० ऊधरण भार्या सेतलदे पुत्र थाहरू पितृ पितृव्य भ्रातृ पेथा श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब कारितं प्र० श्रीमाल गच्छ भ० श्रीधर्मरत्नसूरि पट्टे भ० श्रीरामदेवसूरिभिः ॥

(६६३)

सं० १४७६ वर्षे वैशाख सुदि ३ शुक्रे उ० ज्ञातीय श्रे० रा द्र पुत्र सोमा भा० रूपी श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबंकारित प्रतिष्ठितं श्रीवृहद्गच्छ श्रीश्रीमुनीश्वरसूरिभिः ॥ शुभं भवतु

(६६४)

सं० १४७६ वैशाख सुदि ३ ओसवाल साविग सीप-पेथा जगा नू

(६६५)

स० १४७६ वैशाखे सू(?) भा० वील्हू सुत हरपालेन स्वश्रेयोर्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीसर्वाणंदसूरिभि तत्पट्टे भ० श्री (?)

(६६६)

सं० १४७६ वर्षे प्रा० ज्ञा० व्य० रामसि भा० हांसु सुत धीराकेन भ्रातृभार्या पूनादे श्रेयोर्थ श्रीशांति बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(६६७)

सं० १४८० वर्षे वैशाख सु० ३ उपकेश ज्ञातौ दूगड़ गोत्रे सा० रूपा भा० मोहिणि पु० वीरधवलेन स्वभार्या वामहि श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे श्रीहर्षसुंदर सूरिभिः ॥

(६६८)

सं० १४८० वर्षे फागुण व० १० बुधे उप० ज्ञा० मं० मण्डलिक भार्या माल्हणदे पुत्र ऊदा नीबा आका श्रोमम नीबा भार्या तारादे पुत्र सहसाकेन भार्या कपूरदे पुत्र देवा स० पितृ पितृव्य श्रेयसे श्रीचतुर्बिं० का० प्र० खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः

(६९९)

सं० १४८० वर्षे फागुण सुदि १० बुधे श्रीकोरंटक गच्छे श्रीनन्नाचार्य संताने उपकेश ज्ञातीय सा० कुरसी भा० कपूरदे आत्म श्रेयोर्थं श्रीसुमति बिंबं कारितं प्र० श्रीककसूरिभि.

(७००)

संवत् १४८० वर्षे फागुण सुदि १० बुधे उपकेश ज्ञातीय सा० डीडा भार्या पाती पु० नरपाल भा० पूरी पु० देल्ही सहिते० श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० मड्डाहडीय श्रीमुनिप्रभसूरिभि·

(७०१)

सं० १४८० वर्षे फागुण सु० १० बुधे उपकेश ज्ञातीय व्यव सहजा भार्या सोनलदे पुत्र कूता-केन भार्या कपूरदे सपरिकरेण निज पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीवृद्ध गच्छे भीन-वाला। भ० श्रीरामदेवसूरिभि· ॥

(७०२)

सं० १४८० वर्षे प्राग्वाट वंशे सा० करमसी भा० खेदी द्वि० भा० लाढ़् प्रथम भार्या पुत सखणत जेसा० भ्रातृ नरसी गोयंद जेसा डूगर सुतेन स्व मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिप श्रीसोमसुंदरसूरिभि ।

(७०३)

सं० १४८१ वैशाख वदि १२ श्रीभावडार गच्छे हमे गोत्रे सा० भावदे भा० भावलदे पु० खेताकेन मातृ पितृ श्रे० धर्मनाथ बिं० का० प्र० श्रीविजयसिंहसूरिभिः ।

(७०४)

सं० १४८१ वर्षे वैशाख वदि १२ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० व्य० भीमसिंह भार्या वूल्ही पुत्र भादा भा० साल्हू पुत्र जेसाकेन पि० नि० श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमापक्षे भ० श्रीसर्वाणंदसूरिभि ॥

(७०५)

स० १४८१ वर्षे वैशाख व० १३ अद्य उप० चउराधारा भा० सोनी पु० चाभाकेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं पितृ श्रेयसे प्र० पूर्णिमा पक्षे श्रीजिनभद्रसूरिभि ॥

(७०६)

॥ संव० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सामल भार्या संपूरि सुत रूपाकेन भार्या लींबी युतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥ श्री॥

(७०७)

स० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि १५ यू दिने ऊ० ज्ञात भार्या सुत सीहदेन पितृव्य सूरा निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीजीरापल्लीय गच्छे श्रीवीरचन्द्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभि ॥

(७०८)

॥ स्वस्ति श्रीजयोऽभ्युदयश्च स० १४८१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीनागर ज्ञातीय गो० वयरसीह भार्या वाल्हणदे तयोः सुत गो० पाल्हाकेन श्रीश्रेयांस श्रीजीवितस्वामि बिंब कारापित निजश्रेयसे प्रतिष्ठितं ॥ वृद्ध तपा गच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभि ॥ श्री ॥

(७०९)

॥ संवत् १४८२ वर्षे वैशाख वदि ८ दिने रोयगण गोत्र सा० भीमसीह पु० भूठिल भा० महगल पु० तेजाकेन पित्रो श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरिभि ।

७१०)

संवत् १४८२ वर्षे वैशाख वदि ८ दिने अजयमेरा ब्राह्मण गोत्र सं० गांगा भा० गंगादे पु० डूंगर आत्म श्रे० श्रीनमिनाथ बिंबं कारित प्रति० श्रीधर्मघोष गच्छे भ० श्रीमलयचन्द्रसूरि पट्टे श्रीपद्मशेखरसूरिभि ॥ छ ॥

(७११)

स० १४८२ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ ऊकेश० वृद्ध सन पूनादे पु० लेगा ससारदे स न० श्री नाथ बिंबं का० प्र० गच्छे भ० श्री प्रभ सूरिभि ।

(७१२)

स० १४८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ गुरे उपकेश ज्ञातीय बापणा गोत्रे सा करमण भार्या रामादे पुत्र देवराजेन भार्या जेसलदे सहितेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० उपके० गच्छे श्रीसिद्धसूरिभिः ॥ स्वश्रेय पू० श्रा ३ महिण (?)

(७१३)

स १४८२ वर्षे माघ वदि ५ उपकेश ज्ञा० करणाट गोत्रे सा० वेरुआ सुत लखमा भा० लाखी पु० माहण अजिसिंह बोल्हा ईसरकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं का० पूर्व० नि० पुण्या० आत्म श्रे० श्रीउपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं प्र० श्रीसिद्धसूरिभि ।

(७१४)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उ० ललता भा० ललतादे सुत अरजण भा० राकू सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीवासुपूज्य विंबं का० प्र० श्रीजीरापल्लीय गच्छे श्रीशालिभद्रसूरिभि. ।

(७१५)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० व्य० ईला भा० लखम पुत्र हापाकेन भा० हासलदे सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० मडाहडीय श्रीनाणचंद्रसूरिभि ॥

(७१६)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उ० व्य० ऊदा भा० ऊमादे पु० देपाकेन भा० सहजु सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ विंबं का० प्र० मडाहडीय श्रीनाणचंद्रसूरिभि. ॥

(७१७)

॥ सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० व्य० धन्ना भा० झणकू पुत्र ऊटाकेन भा० मानु सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ विंबं का० प्र० मडाहडीय भ० श्रीनाणचंद्रसूरिभि ॥

(७१८)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय श्रे० लूणपाल भा० पूजी पु० गागाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीनमिनाथ विं० कारितं श्रीवृहद्गच्छे 'श्रीनरचंद्रसूरि पट्टे प्र० श्रीवीरचंद्रसूरिभि' ।

(७१९)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० इ   पु० वेलाक सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीविमलनाथ विंबं कारितं प्र० मड्डाहडीय गच्छे भ० श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ।

(७२०)

संवत् १४८२ वर्षे फागुण सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० राणिग भार्या राजलदे सुता बाई कहू स्वश्रेयोर्थं श्रीमहावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गच्छे श्रीसोमसुदरसूरिभि ।

(७२१)

सं० १४८२ वर्षे प्राग्वाट व्य० दूंडा भा० कस्मीरदे सुत० व्य० केल्हाकेन भा० कील्हणदे पुत्र जयता लोला वाहड चउहथ भ्रातृ तिससा ऊटप विरम्म आत्म श्रेयसे श्रीधर्मनाथ विंबं कारितं पिप्पलगच्छीय श्रीवीरप्रभसूरिभि ।

(७२२)

सं० १४८३ वर्षे वैशाख सु० ५ गुरौ प्रा० ज्ञातीय महं० तिहुणसी पु० नींबा भा० काऊ पु० धूताकेन सकुटंवेन समस्त पूर्वज तथा आत्म पुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत का० प्रति० साधुपूर्णिमा श्रीधर्मतिलकसूरि पट्टे श्रीहीराणदसूरि उपदेशेन श्रीसूरिभि ॥

(७०७)

स० १४८१ वर्षे वैशाख सुदि १५ बु दिने ध० ज्ञात भार्या सुत सीहडेन पितृव्य सूरा निमित्त श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीत्रीगपक्षीय गच्छ श्रीवीरचंद्रसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥

(७०८)

॥ स्वस्ति श्रीजयोऽभ्युदयश्च स० १४८१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्रीनागर ज्ञातीय गो० पमरसीह भार्या पाल्हणदे तयो सुत गो० पाल्हाकेन श्रीश्रेयांस श्रीजीवितस्वामि बिंब कारापित निजश्रेयसे प्रतिष्ठितं ॥ वृद्ध तपा गच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥ श्री ॥

(७०९)

॥ संवत् १४८२ वर्षे वैशाख वदि ८ दिने रायगण गोत्रे सा० भीमसीह पु० गूठिल भा० महगल पु० संसाकेन पित्रो श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरिभिः।

(७१०)

संवत् १४८२ वर्षे वैशाख वदि ८ दिने अजयमेरा ज्ञातीय गोत्र स० गांगा भा० गंगादे पु० डूंगर आत्म श्रे० श्रीनमिनाथ बिंब कारित प्रति० श्रीधर्मघोष गच्छे भ० श्रीमलयचंद्रसूरि पट्टे श्रीपद्मशेखरसूरिभि ॥ श्र ॥

(७११)

स० १४८२ वर्षे वैशाख सुदि ७ रवौ उकेश० वृद्ध सन पूतादे पु० खेमा ससारदे स न० श्री नाथ बिंब का० प्र० गच्छे भ० श्री प्रभ सूरिभिः।

(७१२)

स० १४८२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ गुरे उपकेश ज्ञातीय बापणा गोत्रे सा० करणा भार्या रामादे पुत्र देवराजेन भार्या जेसलदे सहितेन श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० उपके० गच्छे श्रीसिद्धसूरिभिः ॥ लखम पू० श्रा ३ महिण (?)

(७१३)

स० १४८२ वर्षे माघ वदि ६ उपकेश सा० करणाउ गोत्रे सा० वेलण सुत लखमा भा० भावी पु० मोहण अजितसिंह डीला ईसरकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं का० पूर्व नि० पुण्या० आत्म श्रे० श्रीउपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० भ० श्रीसिद्धसूरिभिः।

(७१४)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उ० ललता भा० ललतादे सुत अरजण भा० राकू सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्रीजीरापल्लीय गच्छे श्रीशालिभद्रसूरिभिः ।

(७१५)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० व्य० ईला भा० लखम पुत्र हापाकेन भा० हांसलदे सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० मडाहडीय श्रीनाणचंद्रसूरिभि ॥

(७१६)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उ० व्य० ऊदा भा० ऊमादे पु० देपाकेन भा० सहजु सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहडीय श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ॥

(७१७)

॥ सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० व्य० धन्ना भा० झणकू पुत्र ऊदाकेन भा० मानु सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० मडाहडीय भ० श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ॥

(७१८)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय श्रे० लूणपाल भा० पूजो पु० गागाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिं० कारितं श्रीवृहद्गच्छे श्रीनरचंद्रसूरि पट्टे प्र० श्रीवीरचंद्रसूरिभिः ।

(७१९)

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे प्रा० इ पु० वेलाक सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं प्र० मड्डाहडीय गच्छे भ० श्रीनाणचंद्रसूरिभि ।

(७२०)

संवत् १४८२ वर्षे फागुण सुदि ३ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० राणिग भार्या राजलदे सुता वाई कड्ड स्वश्रेयोर्थं श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीतपा गच्छे श्रीसोमसुदरसूरिभि ।

(७२१)

सं० १४८२ वर्षे प्राग्वाट व्य० दूंडा भा० कश्मीरदे सुत० व्य० केल्हाकेन भा० कील्हणदे पुत्र जयता लोला वाहड चउहथ भ्रातृ तिससा ऊटप विरम्म आत्म श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं पिप्पलगच्छीय श्रीवीरप्रभसूरिभि ।

(७२२)

सं० १४८३ वर्षे बैशाख सु० ५ गुरौ प्रा० ज्ञातीय महं० तिहुणसी पु० नींबा भा० काऊ पु० धूताकेन सकुटंबेन समस्त पूर्वज तथा आत्म पुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत का० प्रति० साधुपूर्णिमा श्रीधर्मतिलकसूरि पट्टे श्रीहीराणंदसूरि उपदेशेन श्रीसूरिभि ॥

(७२३)

स० १४८३ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे व्य० ढोला भा० बीरी पु० मेरा भा० मेघादे पित्रो श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० पू‍र्ण० भ० श्रीसिद्धचंद्रसूरि पट्टे भ० श्रीरत्नप्रभसूरिभि ।

(७२४)

सं० १४८३ वर्षे माघ सुदि ५ गुरुवारे उपकेश वंशे वांम गोत्रे सा० रत्न भा० पमादे पु० जिनदेव राइदेवेन पितृ मातृ श्रेयसे आत्म पुण्याय श्रीआदिनाथ बिंब कारित प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे श्रीप्रसन्नचंद्रसूरि पट्टे श्रीनयचंद्रसूरिभिः ॥

(७२५) ✓ Page 86

स० १४८३ व० फा० व० ११ ऊ० ज्ञातीय गुंगलिया गोत्रे सा० धूना पु० अर्जुन भा० मानु पु० ढीया धोरम खामपरा देल्हा श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीयशोभद्र सूरि सताने श्रीशांतिसूरिभिः ।

+ (७२६)

स० १४८३ वर्षे फा० व० ११ गुरौ ऊ० ज्ञा० सराला गोत्रे सा० पथा भार्या पु० ओल्हाकेन भ्रातृ हापा निमित्तं श्रीपद्मप्रभ बिंब का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरिभि ।

(७२७)

स० १४८५ वर्षे वैशाख सुदि सोमे श्रीनाणकीय गच्छे शाह गोत्रे मं० रतन भा० मंदोयरि पुत्र गासल भोला मातृ पितृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधनेश्वरसूरिभिः ।

(७२८)

स० १४८५ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितामह सं० आंबड पि० सलखणदेवि पितृ सं० वस्ता मातृ सं० वील्हणदे सुत वीरा पत्नाभ्यां पित्रोः श्रेयसे श्रीविमलनाथमुख्यचतुर्विंशति पट्ट कारित श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभिः पूर्व कन्हाड़ा सांप्रतं मांडलि वास्तव्य ॥ श्री ॥

(७२९)

स० १४८८ वर्षे वदि ५ आरखदिया गोत्रे सा० लीमपाल पुत्रेण पितृ पुण्यार्थ सा० सान पालेन श्रीआदिनाथ प्र० कारिता प्र० श्रीहेमहंससूरिभि ।

(७३०

स० १४८६ वै० सु० १० उकेश सा० मोकल पुत्र सा० देवा भार्या देल्हणदे पुत्र मांडण भार्यया भा० आनि नाम्न्या श्रीकुंथुनाथ बिंबं स्व श्रेयसे कारिता प्रतिष्ठितं श्रीतपागच्छे सोमसुंदर सूरिभि ।

(७३१)

संवत् १४८६ वर्षे वैशाख सुदि १३ शनौ उ० ज्ञा० व्य० अमई भा० चापलदे पुत्र सागाकेन मूमण निमित्तं श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसत्यपुरीय गच्छे भ० श्रीललतप्रभसूरिभिः

(७३२)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे श्रीनाइल गच्छे उप० साह तोला पुत्र मूजाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशातिनाथ बिं० का० प्र० श्रीरत्नसिंहसूरि पट्टे श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥

(७३३)

सं० १४८६ ज्येष्ठ व० ६ शनौ श्रीकोरंट गच्छे ऊकेश ज्ञा० धर्कट गोत्रे सा० करमा पु० रामा भा० नाऊ पु० वीसल साला काल्हा चापाकैः पित्रोः श्रे० सुमति बिंबं का० प्र० श्रीनन्नसूरि पट्टे श्रीकक्कसूरि

(७३४)

सं० १४८६ ज्येष्ठ वदि की विडीसीह भार्या भीमिणि पुत्र अर्जुणेन भार्या रयणादे सहितेन पितृव्य भ्रातृ निमित्तं श्रीआदि बिंबं का० प्र० श्रीनरदेवसूरिभि.

(७३५)

सं० १४८६ वष ज्येष्ठ सुदि १३ सोमे केल्हण गोत्रे सा० शिवराज भार्या नल्थि पुत्रेण साह आसुकेन स्व पित्रो श्रेयसे श्रीसुमतिजिन बिंबं प्र० वृहद्गच्छे श्रीमुनीश्वरसूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः

(७३६) Page 87

सं० १४८७ वर्षे आषाढ सु० ६ सुराणा गोत्रे सा० नाथू भा० नयणादे पु० जानिगेन। आ० श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरिभि ॥

(७३७) Page 87

सं० १४८७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे तेलहर गोत्रे सं० जतन भा० रतनादे पुत्र कान्हाकेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीशातिसूरिभि ।

(७३८) Page 87

सं० १४८८ वर्षे मार्गसिर सुदि ११ गुरौ माल्हाउत गोत्रे सा० धाल्हा पु० रील्हण पु० चाहड पुत्र सेऊ देवराजाभ्यां निज पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारी गच्छे श्रीविद्यासागरसूरिभि· ।

(७२३)

स० १४८३ वर्षे माघ सु० ५ शुक्रे व्य० ओला भा० गौरी पु० मेरा भा० मेघादे पित्रो श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० मू१२१० म० श्रीजिनचन्द्रसूरि पट्टे भ० श्रीरत्नप्रभसूरिभि ।

(७२४)

स० १४८३ वर्षे माघ सुदि ५ गुरुवार उपकेश यशे बांभ गोत्रे सा० रत्न भा० पमादे पु० जिनदेव राहदेवेन पितृ मातृ श्रेयसे आत्म पुण्याय श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्र० श्रीकृष्णर्षि गच्छे श्रीप्रसन्नचन्द्रसूरि पट्टे श्रीनयचन्द्रसूरिभि ॥

(७२५)

स० १४८३ प० फा० व० ११ उ० ज्ञातीय गुंगलिया गोत्रे सा० पूंपा पु० अर्जुन भा० आसु पु० श्रीमा धोरम सामयरा देल्हा श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीयशोभद्र सूरि संताने श्रीशांतिसूरिभि ।

(७२६)

स १४८३ वर्षे फा० व० ११ गुरौ ऊ० ज्ञा० बडाला गोत्रे सा० पेथा पाहड़ पु० जोगाकेन भ्रातृ हापा निमित्त श्रीपद्मप्रभ बिंब का० प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरिभिः ।

(७२७)

स० १४८८ वर्षे वैशाख सुदि मासे श्रीनाणकीय गच्छे शल गोत्रे श्रे० रतन भा० मंदोअरि पुत्र गासल भोजा मातृ पितृ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीधनेश्वरसूरिभि ।

(७२८)

स० १४८८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितामह सं० आंबड़ पि० सलखणदेवि पितृ सं० पत्ता मातृ स० श्रील्हणदे सुत वीरा पद्माभ्यां पित्रो श्रेयसे श्रीविमलनाथमुख्यचतुर्विंशति पट्ट कारित श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीसाधुरत्नसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभि पूज्य कल्हाड़ा सांप्रत मांडलि वास्तव्य ॥ श्री ॥

(७२९)

स० १४८८ वर्षे वदि ५ आदचडिया गोत्रे सा० सीमपाल पुत्रेण पितृ पुण्याय सा० सान पाल्हेन श्रीआदिनाथ प्र० कारिता प्र० श्रीहेमहंससूरिभि ।

(७३०)

स० १४८९ वै० सु १ ऊकेश सा० सोमा पुत्र सा० हदा भार्या देल्हणदे पुत्र मांडण भार्यया भा जानि मान्या श्रीकुंथुनाथ बिंब स्व श्रेयसे कारिता प्रतिष्ठित श्रीतपागच्छ सामसुंदर सूरिभि ।

(७३१)

संवत् १४८६ वर्षे वैशाख सुदि १३ शनौ उ० ज्ञा० व्य० अमई भा० चापलदे पुत्र सागाकेन मूमण निमित्तं श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसत्यपुरीय गच्छे भ० श्रीललतप्रभसूरिभि.

(७३२)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ५ शुक्रे श्रीनाइल गच्छे उप० साह तोला पुत्र मूजाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीशातिनाथ विं० का० प्र० श्रीरत्नसिंहसूरि पट्टे श्रीपद्माणंदसूरिभि ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥

(७३३)

सं० १४८६ ज्येष्ठ व० ६ शनौ श्रीकोरंट गच्छे ऊकेश ज्ञा० धर्कट गोत्रे सा० करमा पु० रामा भा० नाऊ पु० वीसल साला काल्हा चापाकैः पित्रो' श्रे० सुमति बिंबं का० प्र० श्रीनन्नसूरि पट्टे श्रीकक्कसूरि

(७३४)

सं० १४८६ ज्येष्ठ वदि की विडीसीह भार्या भीमिणि पुत्र अर्जुणेन भार्या रयणादे सहितेन पितृव्य भ्रातृ निमित्तं श्रीआदि बिंबं का० प्र० श्रीनरदेवसूरिभि.

(७३५)

सं० १४८६ वष ज्येष्ठ सुदि १३ सोमे केल्हण गोत्रे सा० शिवराज भार्या नथि पुत्रेण साह आसुकेन स्व पित्रो श्रेयसे श्रीसुमतिजिन बिंबं प्र० वृहद्गच्छे श्रीमुनीश्वरसूरि पट्टे श्रीरत्नप्रभसूरिभिः

(७३६) Page 87

सं० १४८७ वर्षे आषाढ सु० ६ सुराणा गोत्रे सा० नाथू भा० नयणादे पु० जानिगेन। आ० श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरिभि. ॥

(७३७) Page 87

सं० १४८७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे तेलहर गोत्रे स० जतन भा० रतनादे पुत्र कान्हाकेन श्रीकुथुनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीशातिसूरिभि ।

(७३८) Page 87

सं० १४८८ वर्षे मार्गसिर सुदि ११ गुरौ माल्हाउत गोत्र सा० धाल्हा पु० रील्हण पु० चाहड़ पुत्र सेऊ देवराजाभ्या निज पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारी गच्छे श्रीविद्यासागरसूरिभि ।

(७३६)

स० १४८८ फागुण सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञा० सांगण भा० सलखणदे पुत्र सादा भा० ढालू सुदेश्रा मूलू तया स्वपूर्वज श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसुरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धै

(७४०)

स० १४८६ वैशाख वदि ७ बुध व्य० वसता भा० वनुकदे पु० जयसिंह रत्नसिंहाभ्यां श्रीपार्श्व बिंबं का० प्र० श्रीकमलाकरसूरि मालणवनी

(७४१)

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ वदि सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पितृ विलहण मातृ भमपाकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंब कारितं पिप्पलाचार्य श्रीपद्मचन्द्रसूरिभिः प्रति०

(७४२)

सं० १४८६ वर्षे पोष सुदि १२ शनौ ब० ज्ञा० सं० मंडलीक पु० मांकण भा० मोहणदे पु० नीसल भा० नायकदे श्रीअंचल गच्छ श्रीजयकीर्त्तिसूरि उपदेशेन श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं श्रे का० श्रीसूरिभिः

(७४३)

स० १४८६ पोष सुदि १२ शनौ ऊ० बलाहगी गोत्रे सा० पूना भा० पूनादे पुत्र श्रीछाजोता भाका जीवितदे श्रे० श्रीमुनिसुव्रत बिंब का० प्र० मलधारगच्छे श्रीधर्मदेवसूरि पट्टे श्रीधर्मसिंह सूरिभिः ॥ श्री

(७४४)

॥ सम्वत् १४८६ वर्षेत्र माघ वदि ६ रवौ उपकेश ज्ञा० बाबही गोत्रे सा० कडू पु० ऊमसीह भा० लखमदे कर्मसी धर्मसी चवाके स्व पु० श्रीआदिनाथ बिंबं कारि० प्र० श्रीकृष्णर्षि गच्छे तपा पक्षे श्रीजयसिंहसूरिभिः शुभं भवतु ॥

(७४५)

स० १४८६ व० फागुण वदि २ गुरौ श्रीमालवाल गच्छे ध० बाछी० पाषा भा० बाबुकदे पु० काला भा० गउरदे पु० धन्ना सहे० मातृ पितृ श्रे० श्रीनमिनाथ बिं० प्र० श्रीवीरसूरिभिः ॥

(७४६)

स १४८६ वर्षे फागुण वदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय लेखुर गोत्रे सं० रतन भा० रतनादे पु० देपा भा देवलदे आत्म श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं ज्ञानकीय गच्छे श्रीशांति सूरिभि ॥

(७४७) Page 89

॥ सं० १४८६ व० फा० सु० २ सोमे उ० ज्ञा० सुचिंतिया गो० सा० साल्हा भा० डीडी पु० माला भा० मोवलदे श्रे० श्रीशातिनाथ विं० का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्रीजयभद्रसूरिभिः

(७४८)

सं० १४६० वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय सं० नरसिंह भा० पोमी भ्रातृ मेलिघाभ्या सं० वस्ताकेन उभौ भ्रातृ निमि(त्तं) श्रीविमलनाथ विंवं कारापितं श्रीब्रह्माण गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीवीरसूरिभि. ।

(७४९) Page 89

सं० १४६० वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उपकेश ज्ञातीय जीराउलि गोष्टिक वीरा भा० वामादे पुत्र सीहड़ेन भार्या सामलदे सहितेन पित्रोः स्वस्य

(७५०)

॥ सं० १४६० वर्षे वैशाख सु० ३ प्राग्वाट ज्ञाती व्यु० विरूयाकेन सुत-व्यु० भुभव काला युतेन पुत्री धर्मिणि श्रेयसे श्रीअजितनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरि शुभम् ॥

(७५१)

सं० १४६१ प्राग्वाट व्य० कुपा वाल्हू पुत्र पेथाकेन भा० राभू पुत्र चापा नापा चउंडा चाचादि युतेन श्रीसुविधि विंवं का० स्व श्रेयसे प्र० श्रीश्रीसूरिभिः ॥ श्री ॥

(७५२)

सं० १४६१ प्राग्वाट व्य० तोहा भा० पाची पुत्र व्य० लूणा राणा भा० लूणादे पुत्र मढा सरजणादि कुटुंब युजा श्रीपार्श्व विंवं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

(७५३)

सं० १४६१ प्राग्वाट व्य० धाधु भा० जइतलदे पुत्र सं० खीमा भ्राता व्य० कुराकेन भा० कपूरदे युतेन आत्म श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत विंवं कारितं प्र० त० श्रीसोमसुदरसूरिभिः ॥

(७५४)

॥ सं० १४६१ वर्षे आषाढ सुदि २ व्य। पुजा भा० चिरमादेवी तत्पुत्र वीराकेन भा० भरमादे स्व श्रेयसे श्रीश्रेयासनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्रीसोमसुदरसूरिभिः चिरंनंदतात् ॥ श्री ॥

(७५५)

सं० १४६१ वर्षे फागण वदि ३ दिने मन्त्रिदलीय वंशे मडवाडाभिधाननात्र सा० रत्नसींह पुत्र सा० खेताकेन श्रीआदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनसागरसूरिभिः श्रीखरतर गच्छे ।

(७४६)

सं० १४६२ वर्षे चैत्र वदि ५ शुक्रे उपकेश वंशे सा० बिरा भा० श्रीमल्लदे पु० नाथू भा० निताढे आत्म श्रेयसे श्रीश्रेयांस बिंबं कारितं उपकेश गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

(७४७)

सं० १४६२ वैशाख वदि ११ शुक्रे हुंबड़ ज्ञातीय खीरज गोत्रे सा० सोवा भा० रूपी पुत्र मेघा भार्या ठाँव भ्रातृ हापा भार्या गांगी पुत्र दे हर मा० फरणु नाल्हा पासा श्रीकाष्ठासंघ बागड़ गच्छे भ० श्रीहेमकीर्त्ति श्रीनरेन्द्रकीर्त्तिदेवा सा० मेघा प्रा० संभवनाथ कारापितं।

(७४८)

सं० १४६२ वर्षे वैशाख सुदि २ बुधे प्रा० देपा भा० नीतादे पु० वस्ताकेन भा० वीमलदे सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं मडाहड़ गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीनाणचंद्रसूरिभिः ॥

(७४९)

सं० १४६२ वर्षे वैशाख सुदि २ बु श्रीउपकेश ज्ञातीय सा० साल्हा भा० चांपल पु० सामंत आत्म श्रेयोर्थं श्रीशीतलनाथ बिंब का० श्रीबृहद्गच्छे भ० श्रीगुणसागरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(७५०) ७0

सं० १४६२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे ऊगमण गोष्ठी स० हेमा भार्या हमीरदे पु० कर्मा भा० कामलदे पु० गोपा नापा सहितेन श्रीमुनिसुव्रत बिंब का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(७५१)

सं० १४६२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे व्य० व्य० सूदा भा० रुदलदे पुत्र सारंगेन भार्या जइतु सहितेन पितृ भ्रातृ श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(७५२) ७0

सं० १४६२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे उ० ज्ञाती भेऊ गोष्टिक कम्मुसा गोत्रे सा० धमा भा० धारलदे पु० कान्हा भा० कपूरदे पु० नोल्हा कामण सहितेन भ्रा० मोल्हा निमित्त श्रीमुनिसुव्रत बिंब का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(७५३)

सं० १४६२ वर्षे ज्येष्ठ व० वेकावाड़ा वास्तव्य वायड़ ज्ञातीय म० असा भार्या आसू सुत तिहुणाकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं आगमगच्छे श्रीहेमरत्नसूरि गुरूपदेशेन पितृ मं० असा श्रेयोर्थं कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना ॥

(७६४) Page ९)

॥ सं० १४६२ वर्षे मार्ग्ग वदि ५ गुरुवारे ओसवंशे नक्षत्र गोत्रे सा० काला भा० पूरी पु० सा० भाऊ खीमा श्रवणै. भ्रातृ नानिग ताल्हण श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छे श्रीसागर-चंद्रसूरिभिः।

(७६५)

सं० १४६३ वर्षे वैशाख वदि १३ शुक्रे माडलि वा० श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० वेला भार्या लूणादे सुत चापा श्रेयसे भ्रातृ० हापा ठाकुरसी सहदे राजपाल वयरसिंह श्रीसंभवनाथ पंचतीर्थी का० पूर्णिमा० श्रीमुनितिलकसूरीणामु० प्र० सूरिभि ।

(७६६) ९।

॥ सं० १४६३ वर्षे वैशाख सुदि ५ बुधे श्रीसुराणा गोत्रे सं० शिखर भार्या सिरियादे पु० सं० गिरिपति श्रीपाल सहसवीर सहसराज भारमल्लै मातृ पितृ श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्म-घोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरि पट्टे भ० श्रीविनयचंद्रसूरिभि. ॥

(७६७)

संवत् १४६३ वर्षे वैशाख सुदि ६ धनेला गो० सा० सुमण पु० महिराज भा० रतनादे पु० पीथा नींवाभ्यां पितु श्रे० श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० श्रीयशोदेवसूरिभि· ॥ पली गच्छे ॥

(७६८)

सं० १४६३ वर्षे माघ वदि २ बुधे ओसवाल ज्ञातीय व्यव० मोकल भार्या वा० हासलदे पुत्र देपाकेन आत्म श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्र० मड्डाहडी गच्छे रत्नपुरीय भ० श्रोधर्म्मचंद्र-सूरिभि ॥ श्री ॥

(७६९)

॥ सं० १४६३ वर्षे माघ सुदि ७ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय पितृव्य जयता भा० सारू श्रेयोर्थं सुत आसाकेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पू० खीमाण श्रीमेरुतुगसूरीणामुपदेशेन।

(७७०)

सं० १४६३ वर्षे माघ सुदि १० भोमे व्यव० वीका भा० वील्हणदे पु० महिपा सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीवासुपुज्य बिंबं का० प्रति० कच्छोलीवाल गच्छे पूर्णिमा पक्षे भट्टार श्रीसर्वाणंद-सूरीणामुपदेशेन ॥

(७७१)

॥ सं० १४९३ वर्षे फा० व० १ दिने ऊकेश मरो संकट गोत्रीय सा० जीवा सुत आंबाकेन शोभा मडलीक रूपसी धयरसीह महिराजणादि कुटुंब सहितेन निज पितृ पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(७७२)

सं० १४९४ प्राग्वाट व्य० मगाड़ा भा० मेघादे पुत्र अजाहरिवासी व्य० मांडणेन भा० माणिकदे पुत्र करणा कान्हादि युतेन श्रीसुमतिनाथ समवशरणं चतु रूपं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ।

(७७३)

सं० १४९४ वर्षे प्रा० व्य० धरणिग भा० हेमी सुत व्यव वाछाकेन भा० मरूही सुत झाझादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्रीवर्द्धमान बिंब कारित प्र० श्रीतपागच्छाधिराज श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥ श्री ॥

(७७४)

॥ संवत् १४९४ वर्षे वैशाख सुदि उपकेश ज्ञातीय मंडोरा गोत्रीय सा० सहसमल भा० हीराइ पुत्र सा० राजपालेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारित धर्मघोष गच्छे प्र० श्रीविजयचंद्रसूरिभि ॥ श्री ॥

(७७५)

सं० १४९४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे उपकेश ज्ञातीय सा० थामथा भा० थ आल्हा देवा महिरा पितृ मातृ श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभि

(७७६)

सं० १४९४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सोमे व० ज्ञातीय पाल्हाउत गोत्रे भा० जगसीह पु० म्हांम्मण भा० म्हांम्हो पुत्र धणराज भा० धण्णा पु० नगराज धाम्का वीझा सहितेन पित्रो श्रे० श्रीनेमिनाथ बिं० का० प्र० रुद्रपल्लीय गच्छ श्रीजिनहससूरिभिः ॥ १ ॥

(७७७)

॥ सं० १४९४ वर्षे माघ सुदि ५ गु० श्रीभावडार गच्छे उ० ज्ञा० बाठिया गो० सा० जेसा भा० हिरी पु० धन्ना भा० धुरजदे सहितेन पितृ निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंब कारिता प्रतिष्ठित श्रीवीरसूरिभिः । शुभम् ।

(७७८)

सं० १४६४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरु दिने वहुरप गोत्रे र० भीमा पु० साल्हा तत्पुत्र गउल हीरा आत्म श्रेयोर्थं श्रीअ (भिनं ?) दन विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छेश श्रीजिनसागर-सूरिभिः ॥

(७७६)

॥ सं० १४६४ वर्षे माह सुदि ११ गुरौ उ० ज्ञा० लिगा गो० सहजा भा० ऊमादे पु० मेल्हा गेला ईसर सहितै: मूलू निमित्तं श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे जयहंससूरिभिः ॥

(७८०)

सं० १४६४ वर्षे फागुण वदि ११ गुरौ प्रा० व्य० पातलेन भा० पोमादे पु० सामंत सहितेन पितृव्य सादा निमि० श्रीशीतल विंवं का० प्र० कच्छोली० श्रीसर्वाणदसूरिभिः ॥

(७८१)

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ दिने श्रीकोरंटकीय गच्छे उ० पोसालिया गोत्रे सा० लूणा भा० लखणी पुत्र वामण भा० वामादे आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंवं का० प्र० श्रीसावदेव-सूरिभि. ॥

(७८२)

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञा० राका गोत्रे सा० नरपाल भा० ललति पु० सादुल भा० सुहागदे पु० देल्हा सुहडा ईसर गोयंद सहि० श्रीसुमतिनाथ बिं० का० श्रीउपकेश ग० ककुदा० प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः श्रेयोर्थं ॥

(७८३)

सं० १४६५ ज्ये० सु० १४ प्राग्वाट व्य० मेहा भा० जमणादे पु० वयराकेन भा० सारू पुत्र कालादि युतेन श्रीसंभव विंवं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरिभि ।

(७८४)

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे उप० ज्ञा० श्रे० कूपा भा० कुतादे पु० माडण मोकलाभ्या पित्रो श्रेयसे श्रीसंभवनाथ विंवं का० प्र० नाणकीय ग० श्रीशातिसूरिभि ॥

(७८५)

सं० १४६५ वर्षे ५ दिने प्राग्वाट ज्ञा० व्य० दूदा भार्या श्रेयसे श्रीविमलनाथ विंवं का० प्र० श्रीसोमसुदरसूरि (?)

(५८६)

सं० १४६६ वर्षे प्रा० ज्ञा० साजा भार्या मरमादे सुत सिधाकेन भा० सिगारदे सु० साडा वस्ता राजा भोजादि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्रीअनन्तनाथ बिंबं का० प्रति० तपागच्छ नायक श्रीसोमसुंदर सूरिभिः श्री ॥

(५८७)

॥ सं० १४६६ वर्षे वै० व० ४ गुरौ ऊकेश ज्ञा० सा० पोपा भा० पाल्हणदे पु० सा० पूणाकेन भा० हांसी सु० नेठा फांगादि कुटुंब युतेन स्व भ्रातृ वृद्धा श्रेयसे श्रीमल्लिनाथ बिंब का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(५८८) ९५

॥ ६० ॥ संवत् १४६६ वर्षे वैशाख सु० ६ श्रीउपकेश वंशे साधुशाखीय सा० मेठा पुत्र सा० केल्हाकेन पुत्र कम्मा रिणमल भड्णा देवा युतेन श्रीश्रेयांस बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीश्रीश्रीजिनभद्रसूरिभिः।

(५८६)

संवत् १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० ऊदा भार्या आल्हणदे पित्रोः श्रेयसे सुत आसाकेन श्रीश्रीवासुपूज्य मुख्य पंचतीर्थी कारिता। श्रीमपक्षीय श्री पु० श्रीपासचंद्र सूरि पट्टे श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्री ॥

(५६०)

सं० १४६६ ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रे उप० ज्ञा० व्य० मगर भा० सुगणादे पु० सोमाकेन भा० जसमादे पु० लखमण सहितेन श्रीआदिनाथ बिंब का० प्र० पिप्पल गच्छे श्रीवीरप्रभसूरिभि

(५६१) नाहटा/९५ कोटी

सं० १४६६ वर्षे फागुण वदि १० सोमे श्रीउसवालान्वये ष्याटड़ गोत्रे सा० हीरा भा० देल्हणदे पु० नराकेन आत्म श्रियोर्थं श्रीमुनिसुव्रतनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे भ० श्रीविजयचंद्रसूरिभि

(५६२)

१४६७ प्राग्वाट व्य० पूना पुत्र व्य० हापराज भार्या ऊदी पुत्र गासलादि युतेन श्रीकुंथु बिंब कारितं प्र० श्रीसूरिभि

(७७८)

सं० १४६४ वर्षे माघ सुदि ११ गुरु दिने वहुरप गोत्रे र० भीमा पु० साल्हा तत्पुत्र गउल हीरा आत्म श्रेयोर्थं श्रीअ (भिनं ?) दन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छेश श्रीजिनसागरसूरिभिः ॥

(७७९) ९३

॥ सं० १४६४ वर्षे माह सुदि ११ गुरौ उ० ज्ञा० लिगा गो० सहजा भा० ऊमादे पु० मेल्हा गेला ईसर सहिणे मूल्ह निमित्तं श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे जयहंससूरिभिः ॥

(७८०)

सं० १४६४ वर्षे फागुण वदि ११ गुरौ प्रा० व्य० पातलेन भा० पोमादे पु० सामंत सहितेन पितृव्य सादा निमि० श्रीशीतल बिंबं का० प्र० कच्छोली० श्रीसर्वाणदसूरिभिः ॥

(७८१) ९३

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ दिने श्रीकोरंटकीय गच्छे उ० पोसालिया गोत्रे सा० लूणा भा० लखणी पुत्र वामण भा० वामादे आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसावदेवसूरिभि. ॥

(७८२) ९३

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सु० १३ उप० ज्ञा० राका गोत्रे सा० नरपाल भा० ललति पु० सादुल भा० सुहागदे पु० देल्हा सुहडा ईसर गोयंद सहि० श्रीसुमतिनाथ बिं० का० श्रीउपकेश ग० ककुदा० प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः श्रेयोर्थं ॥

(७८३)

सं० १४६५ ज्ये० सु० १४ प्राग्वाट व्य० मेहा भा० जमणादे पु० वयराकेन भा० सारू पुत्र कालादि युतेन श्रीसंभव बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरिभिः।

(७८४)

सं० १४६५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १४ बुधे उप० ज्ञा० श्रे० कूपा भा० कुतादे पु० माडण मोकलाभ्या पित्रो. श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० नाणकीय ग० श्रीशांतिसूरिभि ॥

(७८५)

सं० १४६५ वर्षे ५ दिने प्राग्वाट ज्ञा० व्य० दूदा भार्या श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसोमसुदरसूरि (?)

(८०१) ९६

॥ ६० ॥ संवत् १४९८ मागसिर वदि ३ बुधे उपकेश । नाहटा गोत्रे सा० जयता भार्या जय लछे पुत्र देपाकेन श्रीमुनिसुव्रत बिंबं पुण्यार्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे भ० श्रीजिनभद्रसूरि।

(८०२)

स० १४९८ वर्षे पोष सुदि १२ शनौ ऊ० ज्ञा० स० मंडलीक पु० मांझण भा० मोहणदे पु० निसल भा० नायकदे श्रीअंचल गच्छे श्रीजयकीर्तिसूरि उपदेशेन श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं श्रे० का० श्रीसूरिभिः॥

(८०३) ९६

स० १४९८ वर्षे माघ सु० ५ गुरौ ऊस० लांटड गोत्रे सा० मेघा भा० मेघादे गुणराज सदा-सहसे हांसादि सहितैः श्रीसुमतिनाथ बिंब पितृभ्य सदा निमि० का० प्रति० धर्मघोष गच्छे श्रीविज यचन्द्रसूरिभिः ॥

(८०४)

सं० १४९८ व० फा० वदि १२ बुधे ऊप० ज्ञाती० भारसो भा० भारमदे पु० देपाकेन भा० देल्हणदे सहितेन भ्रा० लखा निमित्तं श्रीमहावीर बिंब का० प्र० मडाह० श्रीनयचन्द्रसूरिभिः॥

(८०५)

॥ ६० ॥ संवत् १४९८ फा० सुदि ५ दिने उपकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० जयता भा० जयत लदे पु० हापाकेन श्रीनमिनाथ बिंबं पुण्यार्थं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे भ० श्रीजिनभद्रसूरिभिः॥

(८०६)

सं १४९८ वर्षे फागुण सुदि १० बुहाणिया गोत्रे सा० नरसी पु० सा० माकड भा० माणि कदे मान्या आत्म श्रे० आदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीमलधारी श्रीगुणसुन्दरसूरिभिः॥

(८०७)

॥ स० १४९९ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ रवौ ओसवाल ज्ञातीय सा० सीहा पु० समरा पु० समरथ भा० रूड़ा (रूपा) पु० साद्या भ्रा० पु० श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० पू० ग० श्रीभावदेवसूरिभिः।

(८०८)

संव १४९९ वर्षे माघ वदि ६ गुरु ऊप० नवहा रेजम (?) भा० राम्पो पु० मावमल (?) भार्या करणू पुत्र कर्मा सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिप्पलाचार्य श्रीवीर प्रभसूरिभिः।

(७९३)

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे श्रीनाणकीय गच्छे उपकेश ज्ञातीय सा० आल्हा भा० जोला देपा महिरा पितृ मातृ श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीशांति-सूरिभिः ॥

७९४)

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ व्य० पर्वत सुत व पुरप सामल पु० भादा भा० हासादे पु० देवसीकेन भा० हीरादे सहितेन स्व श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं का० वृह भ० श्रीअमरचंद्र-सूरिभिः

(७९५) ९५

सं० १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ सोमे छाजहड गोत्र आसधर पु० नोडा भा० नामलदे पु० गोइन्द भा० सपूरदे पु० मेघा वेला सहितेन आ० श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिं० का० प्रति० श्रीपल्ली-वालीय गच्छे श्रीयशोदेवसूरिभिः ।

(७९६)

सं० १४९७ आषाढ व मेजा पुत्र व्य० मायराज भार्या हरा पुत्र गोसलादि युतेन श्रीजिन बिंबं कारित प्र० श्रीसूरिभि.

७९७) ९५

॥ ६० ॥ सं० १४९७ व० माह सु० ५ शुक्रे दूगड़ गोत्रे सा० देल्हा संताने सा० आसा पु० सा० सोमा भा० सोहिणी पु० देवाकेन पितृ श्रेयसे श्रीअनन्तनाथ बिंबं कारितं प्र० रुद्रपल्लीय भ० श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे भ० श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥

(७ ८)

सं० १४९७ वर्षे माह सुदि ५ शु नापा भा० चाहिणिदे सु० पीपाकेन पित्रो तथात्म श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० श्रीहेमतिलकसूरि पट्टे श्रीहीराणंदसूरिभि ॥

(७९९)

सं० १४९७ माह सुदि ८ सोमवारे नाहर गोत्रे सा० नेना भार्या खेतू पु० धर्माकेन पितृ सोपति श्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० धर्मघोष गच्छे भ० श्रीविजयचंद्रसूरिभि. प्रतिष्ठितं ॥

(८००)

॥ सं० १४९८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ खटवड गोत्रे सा० तहुणा भा० तिहु श्री पु० रेडाकेन पित्रो श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० मलधारि श्रीगुणसुंदरसूरिभि ॥

(८१७)

संवत् १४ वर्षे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० महिवड़ भा० कमलदे पुत्र नापाकेन पित्रो श्रेयसे आत्म श्रेयसे श्रीमहावीर बिंब कारितं प्रति० मड्डाहड़ीय श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ।

(८१८)

संवत् १४ पु० पदमल श्री भार्या

कारित प्रतिष्ठित श्रीअभयचन्द्रसूरिभिः

(८१६)

स० १४ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय भ्रातृ आघा नामकश्रेष्ठी

श्रेयोथ मणिपदमेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजयचन्द्रसूरिभिः ।

(८२०)

स० १५०० मि० वैशाख सु० २ श्रीमूल संघे भ० श्रीसकलकीर्ति देवा: मल भ० श्रीभुवनकीर्तिदेवा

(८२१)

संवत् १५०० वर्षे वैशाख सुदि २ रवौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीसकलकीर्ति देवा: तत्पट्टे भ० श्रीभुवनकीर्ति देवा: हुमड़ा० अहरा भार्या करमी सुत अर्जुन सा० मातृ मा० भाषा पुरोराजी प्रतिष्ठापितयत् श्रेष्ठि प्रणमति ॥

(८२२)

स० १५०० माघ व० ६ प्राग्वाट व्य० जयता भा० देवलदे पुत्र मोखा भाजा वाछू भ्रातृ नरसिंह नरसिंहादि युतेन श्रीशांतिबिंबं प्रति० तपागच्छ श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीजयचंद्रसूरिभिः

(८२३)

बिंब कारितं नरचंद्रसूरीणामुपदेशेन

(८२४)

स० १५८ (? १४५०) वर्षे वैशाख वदि ५ गुरो भ्रातृ कर्मसीह श्रेयसे ठ० कूर सहितेन श्रीनेमिनाथ बिंबं कारापित श्री य श्रीरत्नसागरसूरयः

(८२५)

स से भ० भार्या नयणी पुत्र धुम्मण उदरण अभयराय युतेन स्व० पु० श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० रुद्रपल्लीय गुणसुंदरसूरिभि ॥

(८०९)

सं० १४९९ वर्षे माघ सुदि १० श्रीमूल संघे भ० श्रीपद्मनंदिन्वये भ० श्रीसकलकीर्त्ति त० भुवनकीर्त्ति खं० वाल पाटणी सा० भावदे सुत लक्ष्मण सा० धानी सा० रामण भा० रणादे सा० कर्णा रत्न सा० छाहड ॥ श्रीशांतिनाथ प्रणमति ॥

(८१०) ९७

सं० १४९९ फागुण वदि १३ खटवड गोत्रे सा० ऊदा० भा० उदयश्री पु० खीमा भा० खीवसिरी द्विती० भा० लाछि सहितेन निज पितृ मातृ पुण्यार्थं श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छ श्रीमहेन्द्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(८११)

॥ सं० १४९९ व० फागुण व० २ गुरौ श्रीकोरंट गच्छे नन्नाचा० सं० उ० ज्ञा० पोसालिया गोत्रे सा० वीसा भा० माधु पु० मुज भा० पाचु पुत्र हीरा सहितेन श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीभावदेवसूरिभि

(८१२) नाहटा ९७ बीकानेर

सं० १४९९ व० फागुण वदि २ गुरौ श्रीभावडार गच्छे उप० वाठी० चापा भा० राहणदे पु० काला भा० तुउरदे पु० ऊजल सहे ०मातृ पितृ श्रे० श्रीनमिनाथ बिंबं प्र० श्रीवीरसूरिभि.

(८१३)

॥ सं० १४९९ वर्षे फागु० २ दिन भ० श्रीसंडेर गच्छे भं० हरीया पु० सोना भा० सोनलदे पु० जेसा खेता फला पाता राउलाभ्यां स्व श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीशांतिसूरिभि.

(८१४) ९७

संवत् १४९९ वर्षे फागुण वदि ४ सोमे ऊ० खाटड गो० सा० मोहण पु० वीजड वि० भावलदे पति निमित्तं श्रीअरनाथ । प्र० ध० श्रीविजयचंद्रसूरिभिः ॥

(८१५)

सं० १४ वर्षे सुदि १२ श सुत मोपा भार्या श्रे० सागणेन श्रीसुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्रीसूरिभि

(८१६)

सं० १४ ज्येष्ठ वदि ९ ··· ··· भार्या मिणि पुत्र सहितेन पितृव्य निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीजित (? जिन) देवसूरिभि

(८३६)

भार्या पोइणि पुत्रेण छूणसीकेन पितृ पक्ष
भातृ वि श्रेयसे बिंब प्र० गुणसूरिभिः
(श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ?)॥

(८३७)

सं० १५०१ वर्षे प्राग्वाट व्य० सांगा भार्या सुल्ही पुत्रीकया भा० मनकू नाम्न्या स्व श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(८३८)

स० १५०१ वर्षे ओस व्य० महिपा भार्या मघोभरि सुत व्य० वाहिकेन भा० कुंरी सुत पद्मा सीमा हीरादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयोर्थ श्रीमुनिसुव्रतनाथ बिंब का० प्र० तपा श्रीमुनिसुंदर सूरिभिः॥

(८३९)

स० १५०१ वैशाख सुदि ३ शनौ चाडुयाण गोत्रे श्रीमा (? ना) गर ज्ञातीय० श्रे० अर्जुन भा० सुल्ही पु० कान्हा गांगा चांगा भा० नामल्दे पु० मेघा श्रे० खेता भा० जसमादे मांका खेता भा० मेघा श्रेयोर्थे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित श्रीजयशेखरसूरिपट्टे श्रीजिनरत्नसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥

(८४०)

स० १५०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ उपकेश ज्ञातीय व्यव सा० चांपा भा० चामल्दे पुत्र मांडा भा० मांडल्दे पुत्र आमड युतेन मांडाकेन श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारित प्र० मडाहड गच्छे श्रीगुणसागरसूरिभि

(८४१) \७०

सं० १५०१ वर्षे वै० सु० ३ उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने उप० ज्ञातौ ता० गोत्रे सा० दशरथ। भा० पंजूही पु। सालिगेन पु० रंगू साहण रिणमल सहितेन पित्रोः श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंब कारित प्र० श्रीसीकक्कसूरिभि ॥

(८४२)

स० १५०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्यव० ऊदा भा० रुमादे पुत्र हेमाकेन स्वपितृ मातृ श्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं श्रीपूर्णिमापक्षीय श्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० विधिना

(८२६)

सुदि रेण निज पित्रोः पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनसागरसूरिभिः ॥

(८२७)

सं० सु० ११ भौ० प्रा० व्य० कगसा भा० सिरियादे पु० को पित्रोः वीरा म० श्रीमुनिसुव्रत पंचतीर्थी का० साधु० पू० ग० श्रीधर्मतिलकसूरिणामुपदेशेन ॥

(८२८)

सं० महावीर विंबं का० प्र० खंडेर गच्छे श्रीयशोभद्रसूरि संताने श्रीसुमति सूरिभि

(८२९)

सं० वर्षे वैशाख सुदि श्रेष्ठि अरिसीह भार्या विणि पु० प्रतिष्ठितं सूरिभिः

(८३०)

वर्षे देछु वा० प्रा० ज्ञा० व्य० खीमा भा० लाछलदे सु० व्य० लोलाकेन भा० पूगी पु० खेता भूणादि कुटुंब युतेन श्रीआदिनाथ विंबं का० श्री

(८३१)

व श्रेयसे भार्यया विंबं कारितं प्र० श्रीसिद्ध

(८३२)

सं० बं कारितं प्र० श्रीसूरिभि

(८३३)

संवत् वैशाख सुदि ३ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० खेता नाल्हाकेन

(८३४)

त्म श्रेयोर्थं शांतिनाथ कारितं।

(८३५)

सं० १ प्रभु तृ पितृ श्रेयोर्थं श्रीकुंथनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि

(८४१) १०२

॥ सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे खटवड़ गोत्रे स० पेथा सताने सं० मोल्हा पुत्र बावा तत्पुत्रेण सा। सहसाकेन केसराजादि पुत्र युतेन निज पुण्याय श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० खरपल्ली गच्छे श्रीजिनराजसूरिभिः ।

(८४२)

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे श्रे० काजा भार्या सद (?) पुत्र करणाकेन भ्रातृ मरा हीवा (?) युतेन स्व श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० तपा श्रीमुनिसुंदरसूरिभिः ।

(८४३)

॥ सं० १५०१ वर्षे माह सुदि ५ बुधे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० तिहुणा भा० २ तिहुणदे प्र० मा० वाल्हणदे पु० देपाल भा० कमणादे पु० सायर सगर आत्म श्रे० श्रीचन्द्रप्रभस्वामि बिं० का प्र श्रीब्रह्माणी गच्छे श्रीउदयप्रभसूरिभि ॥ ७४ ॥

(८४४) १५०१ १०२ [illegible]

सं० १५०१ वर्षे फागुण सुदि ७ बुधे उप० ठा० शाणा भा० फूरी पुत्र पापाकेन भ्रातृ हीदा सहितेन श्रीमहावीर बिंबं कारित प्रतिष्ठितं पिप्पल गच्छीय भ० श्रीवीरप्रभसूरिभिः शुभमभूयात् ।

(८४५)

सं० १५०१ वर्षे फाल्गुन सुदि १० गुरौ श्रीअंचल गच्छेश श्रीजयकीर्तिसूरीणामुपदेशेन श्रीश्रीमालि श्रे० धर्मा भार्या डाही पुत्रेण श्रे० पेथा अमीपासूरा भ्रातृ सहितेन श्रे सालाकेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

(८४६) १०२

संवत् १५०१ फागुण सुदि १२ तिथौ शनिवारे सुराणा गोत्रे सं० सोमसा पु० फीका पुत्र स० सानाकेन कमसी निमित्तं पितु श्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीविजयचंद्रसूरिभि ॥

(८४७) १०२

॥ सं १५०१ वर्षे फागुण सुदि १३ तिथौ शनिवारे। श्रीऊकेश ज्ञातीय श्रीफूलपगा गोत्रे साह सावूल भार्या सूहवदे पु० सा० रोला सालाभ्यां पि० श्रेयसेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्रीउस गच्छे। श्रीककसूरिभि ।

(८४८)

संवत् १५०२ वर्षे वैशाख सुदि १ भ० श्रीजिनचंद्र सह समनिमेने दि गोत्रे वष्टे मू। कहार्या ह

(८४३)

॥ सं० १५०१ वर्षे वैशाख सुदि ५ सोमे श्रा० ज्ञातीय सा० भादा भा० सोहिणि पु० वीसल भा० नाल्हू सहितेन पित्रो श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० तु० गच्छे श्रीअमरचंद्रसूरिभिः

(८४४)

सं० १५०१ वैशाख सुदि ६ शुक्रे (?) श्रीकाष्टासंघे भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेव वसाधपति प्रणमति

(८४५) 101

॥ संवत् १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ सोमे उप० चिंचट गोत्रे सा० वीजा भा० विजयश्री पु० गोइन्द भा० गुणश्री पु० सारंग सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री उपके० गच्छे ककुदाचार्य संताने प्र० श्रीकक्कसूरिभि

(८४६) 101

सं० १५०१ वर्षे ज्येष्ठ वदि १२ सोमे उ० आदित्यनाग गोत्रे सा० मीहा पु० हरिराज भा० गूजरि पु० पाल्हू सोमाभ्या पितु. श्रे० सुविधिनाथ बिंबं का० उ० श्रीकुक्कदाचार्य सं० श्रीकक्कसूरिभि

(८४७)

॥ ६० ॥ संवत् १५०१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ६ शनौ ऊकेश वंशे वीणायग गोत्रे सा० लूणा पुत्र सा० हीरा भार्या राजो तत्पुत्र सा० लूणा सुश्रावकेन पुत्र आसादि परिवार युतेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥ १

(८४८)

सं० १५०१ वर्षे आषाढ सुदि २ सोमे उपकेश ज्ञातीय व्यव० नीना भार्या नागलदे पुत्र सुहणा भार्या माणकदे सहितेन पितृ पितृव्य भ्रातृ श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं ब्र० गच्छे श्रीउदयप्रभसूरिभि. ॥

(८४९)

स० १५०१ वर्ष माघ व० ६ प्रा० सा० सायर भार्या सुहागदे सुतया भोजीनाम्न्या स्व श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरि शिष्य श्रीमुनिसुदरसूरिभि ।

(८५०)

सं० १५०१ वर्षे माघ व० ६ प्राग्वाट श्रे० चंद्र पुत्र दडाकेन शिवा कुभा कमसी सहल्ल पुत्र सा० देल्हण युतेन स्व श्रेयसे विमलनाथ बिं० का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरि शिष्य श्रीश्रीश्रीमुनिसुदरसूरिभि. ।

(८६७)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ श्रीउप० श्रीककुदाचार्य सं० आदित्यणाग गोत्रे प्रमत सा वापा महावरि सवरा भा० संवरश्री पु० टडू भार्या हर्षू पु० गुणराज भ्रा० माचरल श्रीअजित बिंबं का० प्र० श्रीककसूरिभि ॥

(८६८)

॥ सवत् १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे श्रीकोरंट गच्छे श्रीनन्नाचार्य सताने उपकेश ज्ञातीय कांकरिया गोत्रे सा० नयणा पु० भाजा भार्या सालू पुत्र सायर गोधा सामत फीदू प्रमुखिभि पित्रो श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारित श्रीककसूरि पट्टे प्रतिष्ठित श्रीसावदेवसूरिभि ॥

(८६६)

स० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे उप० सस्यक शाखायां पु० सोढा पु० देपा भा० मेघी पु० गेहा भा० गवरदे पु० चाम्पा, चापाकेन पि० मा० निमित्तं श्रीविमलनाथ बिं० का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्रीजयप्रभसूरिभि

(८७०) १०५

स० १५०३ वर्षे ज्ये० सु० ११ शुक्र उ० मापरा गोत्रे सा० गांगा भार्या सुहो पुत्र काजकेन पितृ मातृ आत्म श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं का० उ० श्रीसिद्धाचार्य सताने श्रीककसूरिभि

(८७१) १०५

सवत् १५०३ आषाढ सुदि ६ गुरौ दिने श्रीउपकेश गच्छे ककुदा० स० आदित्यनाग गो० सा० जसीपो पु० समरा भा० समरश्री पु० देऊ भा० हर्षमदे पु० गुणराज सहितेन स्व श्रे० श्रीआदि नाथ बिंबं कारा० प्रति० श्रीककसूरिभि ॥

(८७२) ना(१२१/१०५/दी का/ सोलस्वी

स० १५०३ वर्षे माग वदि १० सामे श्रीनाणकीय गच्छ। ठाकुर गोत्रे साह जेगमाल भार्या जसमादे पुत्र सहितेन धर्मनाथ बिंबं कारित ॥ श्री ॥

(८७३)

॥ सवत् १५ ३ वर्षे मगसिर सुदि रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय स० जाणा भार्या जयणादे पु० वयधण भा० साल्हू भ्रातृ हादाकेन भ्रातृ नि० बिंब श्रीआदिनाथ कारापितः प्र० श्रीजयप्रभ सूरि पट्टे श्रीपूर्णि० श्रीजयभद्रसूरिभिः ।शुभं।।

(८७४) १०५

सवत् १५०३ वर्षे माह वदि ४ शुक्रे श्रीनाणकीय गच्छ शीमेरा गोत्रिक सा० धना भा० रांहिणि पु० वरसा वीरम पु० सहितेन श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री

(८५९)

सं० १५०२ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ प्राग्वा० वृद्ध० व्यव० लक्ष्मण भार्या तेजू सुत कीहन भार्या वाल्ही पुत्र सहितेन स्व श्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रतनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीउढव ग० श्रीश्रीवीरचंद्र-सूरिभिः ॥

(८६०)

सं० १५०२ म० व० ४ प्रा० व्य० महणसी माल्हणदे सुत दादू लघु भ्रातृ सूराकेन स पितृ श्रेयसे श्रीकुंथु बिंबं कारितं प्र० श्रीतपागच्छेश श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीजयचंद्रसूरिभिः ।

(८६१)

॥ सं० १५०२ (३१) पोष वदि १० बुधे श्रीश्रीमाली श्रे० सहसाकेन काराप्य वा० श्रीराजमेर राजवलभाभ्या प्रदत्तं श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीसाधुरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं । माता पिता ।

(८६२)

संवत् १५०२ वर्षे माघ सुदि १३ रवौ उपकेश ज्ञातीय वृति जागा भा० वानू पित्रोः भ्रातृ पद्मा श्रेयसे सुत पीना जसाभ्या श्रीसंभवनाथ मुख्य पंचतीर्थी कारिता पूर्णिमा पक्षे भीमपल्लीय भ० श्रीपासचंद्रसूरि पट्टे भट्टारक श्रीश्रीजयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं शुभंभवतु ॥

(८६३)

॥ ६० ॥ सं० १५०२ वर्षे फाल्गुण वदि २ दिने ऊकेश वंशे घुसला गोत्रे देवचंद्र पु० आका भार्या मचकू पु० सोता सहजा रूवा खाना धनपा भ्रातृ युते सहजाकेन स्व श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनसागरसूरिभि ॥

(८६४)

सं० १५०३ वर्षे जागड गोत्रे नरदेव पुत्र हेमाकेन सुरा साजा सादा भादा प्रमुतेन कारिता श्रीशांति बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीजिनभद्रसूरिभि श्रीखरतर गच्छे ॥

(८६५)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे पीपाडा गोत्रे मं० सीमा भा। भावलदे पुत्र मं० सारंगेन स्वमातृ पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ करा० प्रतिष्ठि श्रीतपा श्रीहेमहंससूरिभिः ॥

(८६६)

सं० १५०३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ श्रीसुराणा गोत्रे सं० नान्नू भा० नारिंगदे पु० सा० बेरा थाहरू रामा भीमाकैः सकुटंबेन श्रीअजितनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरि पट्टे भ० श्रीविजयचंद्रसूरिभि ॥

(८८२)

॥ संवत् १५०४ वर्षे आषाढ सुदि १० बुधे वास० भृगा० ज्ञा० सा० ऊदा भा० चांपलदे पु० नीमा भा० सहजलदे पु० भारमलेन आत्म श्रे० श्रीसुविधिनाथ बिं० का० प्र० पूर्णि० श्रीजयभद्र सूरिभिः ।

(८८३) १०६

॥ सं० १५०४ वर्षे मागसिर सुदि ५ बु० भूरि गोत्रे सा० धमा भार्या सांपाई पुत्र नाथू भार्या अमरी नाल्हकेन पितृ मातृ पुण्यार्थं श्रेयांस बिंब का० प्रति धर्मघोष गच्छे भ० श्रीपूर्णचंद्रसूरि पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रसूरिभि ॥ शुभम् ॥

(८८४)

सं० १५०४ वर्षे माह वदि ३ उपकेश ज्ञातीय सा० जयता भा० तालहणदे सुत महिपालेन स्व श्रेयसे भ्रातृ थांपा निमित्तं श्रीमंचलगच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीसुमतिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि ॥

(८८५)

सं० १५०४ वर्षे माघ सु० २ शुक्रे श्रीज्ञानकीय गच्छे उपकेश ज्ञातीय सा० डूगर भार्या रत्नादे पु० हराकेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीशांतिसूरिभि ॥ श्री ॥

(८८६)

॥ सं० १५०४ वर्षे फा० सुदि ८ गुरौ उप० ज्ञा० पालड़ गो० सा० धूदा पुत्र नयणा भा० धासू पु० जइता सहितेन मा० श्रेयसे श्रीश्रेयांस बिंबं का० प्र० मडा० गच्छ श्रीवीरभद्रसूरि पट्टे श्रीनयचंद्रसूरिभिः ॥

(८८७) १०६

॥ सं० १५०४ वर्षे फागुण सुदि ११ ओसवाल लड (? ठ) वड़ गोत्रे सा० राणा भा० रयण सिरि । पु० सा० गाईदनाम्ना पित्रा पुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० मलधारी श्रीविद्यासागर सूरि पट्टे श्रीगुणसुंदरसूरिभिः ।

(८८८) १०६

संवत १५ ४ वर्षे फागुण सुदि ११ उपकेश ज्ञा० उच्छित्रवाल गोत्रे सा पदा भा० भानाई पु० भादा भा० पाल्हणदे युतेन मातृ पितृ नि० शीतलनाथ बिंब का प्र० श्रीरुद्र० भ० श्रीअमर चंद्रसूरिभि

(८७५)

सं० १५०३ मा० व० ४ पींडरवाडा वा० प्रा० सा० पोपन भा० पूनी सुत खीमाकेन भा० सहजू सुत नाथू युतेन श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीश्रीजयचंद्र-सूरिभिः ॥

(८७६)

सं० १५०३ माघ व० ५ प्राग्वाट व्य० लखमण भा० चापल पुत्र साजणेन भा० वाल्ही पुत्र सिंहादि युतेन श्रीकुंथु बिंबं स्वश्रेयसे कारितं प्रति० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीजयचंद्र-सूरिभिः ।

(८७७)

सं० १५०३ मा० सु० २ प्राग्वाट व्य० धागा भा० धाधलदे पुत्र्या व्य० महिपाल भगिन्या श्रा० हीरूनाम्न्या स्व श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरि शिष्य पूज्ये श्रीजयचंद्र-सूरिभि॰ ॥ श्री ॥

(८७८)

सं० १५०३ वर्षे माघ सु० ४ गुरु श्रीश्रीमाल ज्ञातीय श्रे० गणपति भा० टीबू सुत सीहाकेन स्व पितृ श्रेयसे श्रीकुथुनाथ बिंबं आगम गच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं सोलग्राम वास्तव्य॰ शुभं भवतु ॥ श्री ॥

(८७९)

सं० १५०४ वर्षे वै० वदि ६ भौमे प्रा० व्यव० देपा भार्या हासलदे पुत्री वयजू नाम्न्या आत्म श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं कारापितं प्रति० श्रीसर्वानंदसूरीणामुपदेशेन ।

(८८०)

॥ सं० १५०४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ दिन उपकेश ज्ञातौ भ पद्माकेन भा० माई पुत्र जसधवल युतेन पित्रो॰ श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीउपकेश गच्छे ककुदा-चार्य संताने श्रीकक्कसूरिभि. ॥

(८८१)

संवत् १५०४ वर्षे आषाढ वदि २ सोमे प्राग्वाट वंशे झांझण भार्या कपूरदे पुत्र अजा भार्या सीपू सहितेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनधर्मसूरिभि॰ ॥

(८९७)

॥ सं० १५०६ प्राग्वाट प० सारग भा० सुगम सुत सीहाकेन स्व पितामह श्र्य० पांचा श्रेयोर्थं श्रीकुंथु बिंबं कारित प्रतिष्ठित तपापक्षे श्रीश्रीश्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीश्रीश्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ मद्र ॥

(८९८)

॥ स० १५०६ वर्षे वै० व० ५ गुरौ मा० सा० समरा मा० चटी पुत्र सा० गोवलेन भा० चापू पु० वाघादि सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्रीनेमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ।

(८९९) नाहटों की गवाड़ १०८

सं० १५०६ वैशा सु० ८ भूमे व० सखलेचा-गोत्रे सा० भूवा भा० रंगादे पु० सपुता वासर जइता भा० जिणमादे स्वे भा० तारादे पु० समरा श्रे० सुमतिनाथ बिं० का० प्र० पू० ग० पुण्यप्रभसूरिभि ।

(९००)

संव० १५०६ वर्षे माह वदि ३ गुरु दिने ऊर० देपू गोष्ठि० सा० देपा भा० देवलदे पु० देवा भा० सेजलदे आत्म श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारित श्रीचित्रगच्छे प्रति० श्रीमुणितिलकसूरिभि ॥

(९०१) १०८

॥ सं० १५०६ व० मा० वदि ६ पल्लिवाल गो० सा० सिंघसी भा० रूपी पु० आल्हा भा० जमणादे पु० वीम्हा माल्हा स्व पु० श्रीवासुपूज्य बिं० का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्रीमहीतिलक-सूरिभि ।

(९०२) १०८

॥ संवत १५०६ वर्षे माह सुदि ५ रवौ व ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० सेता पु० झाझा भा० साहिणि पु० मोल्हाकेन आत्म पुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथ बिंबं का० धर्मघोष गच्छे श्रीविजयचंद्रसूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्रीसाधुरत्नसूरिभिः ॥

(९०३) १०८

सं० १५ ६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ उसवाल ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० हासा भा हासलदे पु० नरपालेन श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्रीसाधुरत्नसूरिभि ।

(८८९)

॥ सं० १५०५ वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे उ० ह० गो० सा० जेसल भा० जाल्हणदे पु० सिवा भा० हरषू पु० खेता आत्म पु० श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० नागेन्द्र ग० श्रीगुणसमुद्रसूरिभि

(८९०) १०७

सं० १५०५ वर्षे वैशाख सुदि ६ सोम। श्रीऊकेश ज्ञातीय वरहड्या गोत्रे सा० खेमु भार्या खीमादे पु० हरिपाल भा० माल्ही पु० रा० गा० वील्ही निज पुण्यु० श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीकृष्णर्षि गच्छे श्रीजयसिंहसूरि प० नयशेखरसूरिभि ॥

(८९१)

संवत् १५०५ वर्षे पौष वदि ७ गुरौ श्रीउपकेश ज्ञातीय सा० अमरा भार्या मदु सुत कसला भार्या जीविणि सुत पोमाकेन श्रीनमिनाथ पंचतीर्थिका बिंबं कारापिता श्रीनागेन्द्र गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीगुणसमुद्रसूरिभि हरीअड गोत्रे

(८९२)

सं० १५०५ वर्षे पौष सुदि १५ गुरौ प्रा० ज्ञा० व्य० पिचन पु० काजा भा० माल्हणदे पु० सलखाकेन भा० सुहडादे सहितेन स्वश्रयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीपिप्पलाचार्य श्रीवीर-प्रभसूरि पट्टे श्रीहीरानंदसूरिभि ॥ श्री ॥

(८९३)

संवत् १५०५ वर्षे माघ वदि ७ बंभ गोत्रे सा० सहजपाल पुत्र सहसाकेन पुत्र जेसा पुण्यार्थं पुत्र सहितेन खरतर गच्छे श्रीआदिनाथ बिंब कारिता प्रतिष्ठितं श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(८९४)

सं० १५०५ माघ व० ६ प्राग्वाट व्य० जयता भा० देवलदे पुत्र भोजा भाजा वाघू भ्रातृ वरसिंह नरसिंहादि युतेन श्रीशांतिक प्रति० तपा गच्छे श्रीसोमसुन्दरसूरि शिष्य श्रीजयचंद्रसूरिभि ।

(८९५)

सं० १५०५ वर्षे फागु० वदि ७ बुध दिने उप० सा० धागा भार्या सुहागदे ध भा० सूमलदे पुत्र उलल भा० मूलसिरि सहि० पित्रो श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्रीअमरचंद्रसूरिभि ॥

(८९६)

॥ सं० १५०५ वर्षे फागुण वदि ६ सोमे प्रा० ज्ञा० व्य० मोहण भा० मोहणदे पु० नरा भा० पूनिमाई पुत्र देपाल यशपाल वीधा सहितेन श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० मडाहडीय गच्छे श्रीवीर-भद्रसूरि। प० नयचंद्रसूरि।

(६११) \\0

संवत् १५०७ वर्षे वैशाख सु० २ ऊकेश ज्ञातीय गादहीया गोत्रे सा० भइसा वरा सा० हीरा सुत महिप भार्या वीरणि सुत बोव्हा भा० लेतू पुत्र सा० मांडाकेन भार्या भावळदे भ्रा० व्य० शाह युतेन श्रीपार्श्वनाथ बिंब का० प्र० सूरिभि ॥ सादुर वात्सल्य

(६१२)

संवत् १५०७ वैशाख सुदि शुक्रे श्रीकाष्ठा संघे भट्टारक मलयकीर्त्ति देवा म० साधपति नित्य प्रणमति

(६१३)

स० १५०७ वर्षे वैशाख सुदि ११ बुधे श्रीश्रीमाल श्रेष्ठि साणा सुत हषा भार्या नाथिणि पितृ मातृ श्रेयोर्थं सुत नरबदकेन श्रीश्रीश्रेयांसनाथ बिंबं का० पूर्णिमा पक्षीय श्रीराजतिलकसूरीणा-मुपदेशे० प्रतिष्ठितं ॥

(६१४) \\0

॥ संवत् १५०७ वर्षे वैशाख सुदि १२ शुक्रे रेवती नक्षत्रे बुगड़ गोत्रे साह ऊदा संताने सा० समरा पुत्र सोहिल भार्या सिंगारदे स्व पितृ श्रेयसे स्व पुण्याहेतवेच श्रीआदिनाथ बिंब कारितं श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे भट्टारक श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥

(६१५)

॥ ६० ॥ संवत् १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने श्रीऊकेश वंशे बोथिरा गोत्रे सा० श्रेसल भार्या सूरी पुत्र सा० देवराज सा० वच्छा भावकाभ्यां श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनराजसूरि पट्टालंकार श्रीजिनभद्रसूरिभि श्रीखरतर गच्छे ॥ शुभम् ॥

(६१६) \\0

। सं १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे गणधर गोत्रे सायर पुत्र शिखरा भाल्हनदेव दशरथ प्रमुख परिवार युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छ श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्रीश्रीजिनभद्रसूरिभि

(६१७)

॥ स० १५०७ वर्षे जेठ सु० १० मामे उ० ज्ञा० स० साता भा० माल्हणदे पु० नइणा भा० मेहिणि पु० हांसा नापु स० पितृ श्रे० श्रीमुनिसुव्रत बिं० का० प्र० श्रीवृद्धगच्छे म० श्रीवीरचन्द्र सूरिभिः

(६०४)

संवत् १५०६ वर्षे माह सुदि ५ रवौ श्रीचैत्र गच्छे उप सा० केल्हा भा० कुतादे पु० नरा हीरा कोहा भार्या सहितेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीमनितिलकसूरिभि श्रीआचार्य श्रीगुणाकरसूरि सहितेन ॥ श्री ॥

(६०५) 108

॥ सं० १५०६ वर्षे फागुण सुदि ३ रवौ ओसवाल ज्ञातीय श्रीदूगड गोत्रे सा० खेतात्मज सं० सुहड़ा पुत्रेण स० सहजाकेन। सा० खिल्लण पुत्र सा० खिमराज युतेन पितामही माथुरही पुण्यार्थं श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० बृ० गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरि श्रीरत्नाकरसूरिभिः।

(६०६)

सं० १५०६ फागुण सुदि ६ उ० ज्ञा० धीरा भा० देहि पु० आका भा० आल्हणदे पु० भोजा काजाभ्या सह भाई कीका निमित्तं चंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय श्रीउदयप्रभसूरिभि ।

(६०७)

सं० १५०६ वर्षे फागुण सुदि ६ शुक्रे श्रीपंडेरकीय गच्छे उपकेश ज्ञातीय साह वयरा भार्या विजलदे द्विती० भा० केल्हू पुत्र साजण खोखा जागात्रिभिः श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीशातिसूरिभिः।

(६०८)

सं० १५०६ वर्षे फागुण सुदि ६ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय सा० मेघा भार्या हीरादे पुत्र लेला भार्या पूरी सहितै भ्रातृ फरमानिमितं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० ब्रह्माणीय गच्छे श्रीउदयप्रभसूरिभि. ॥ श्री ॥

(६०६) 109

सं० १५०७ जावालपुरवासि ऊकेश परी० उदयसी आल्हणदे पुत्र पांचाकेन भार्या छितू पुत्र देवदत्तादि कुटुंब युतेन श्रीश्रेयांस बिंबं का० प्र० श्रीसाधु पूर्णिमा श्रीश्रीपुण्यचंद्रसूरिभि विधिना श्रावकै

(६१०)

॥ सं० १५०७ वर्षे चैत्र वदि ५ शनौ श्रीकोरंट गच्छे उप० कुमरा पु० खेतसीहेन मांडण ऊधरण चापादि निमित्त श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र०

(९२६)

॥ सं० १५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुधे सा ओएस वंशे म० चीदा भार्या मं० संपूरि सुश्राविकया पुत्र मं० मोकल नाल्हा पौत्र सांडण मांजा हर्षा सहितया श्रीअंचल गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरिगुरूपदेशेन स्व श्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिंब का० प्र० श्रीसंघ ॥ श्री ॥

(९२७)

॥ सं० १५०८ वर्षे मार्गसिर वदि २ बुधवारे मृगसिर नक्षत्रे सिद्धि नाम्नियोगे छाजेड़ा गोत्रे सा० बुधर संताने सा० हंबो पुत्र सा० भरकूकेन स्व पुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथ बिंब कारितं श्रीपल्लीय गच्छे श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे प्रतिष्ठितं सोमसुंदरसूरिभिः शुभमभूयात् ॥

(९२८)

सं० १५०९ व० वदि ५ म० श्रीजिणचंद्रदेवा प्र० गलणा गोत्र स० रूपा सुत राजा प्रणमति ।

(९२९)

सं० १५०९ वर्षे वैशाख मासे श्रीओएसवंशे सा० सिंहा भार्या सूहवदे पुत्र जयताकेन श्रीअंचल गच्छेश श्रीश्रीजयकेसरिसूरि उपदेशात् पितृ श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री ॥

(९३०)

॥ संवत् १५०९ वर्षे आषाढ व० ६ शुक्रे उप० ज्ञा० पा० गोत्रे सा० रासल भा० रामादे पुत्र मका स० पुत्र बाहरा सहसा कुरा निमित्तं श्रीसुविधिनाथ बिंबं का० प्र० मड्डाहड़ीय गच्छे श्रीनयण चंद्रसूरिभिः ।

(९३१)

संवत् १५०९ वर्षे आषाढ वदि ६ गुरौ श्रीउसवंशे सा देवराज भार्या मनी पु० सा० रत्ना भार्या माणकदे आत्म श्रेयोर्थं श्रीअंचलगच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ।

(९३२)

सं० १५०९ वर्षे माह सु० प्रा० सा० समरा भा० सलखदे सुत सा वहरकेन पितृ भा० अर्गु पु० धांपादि पुत्र युतेन स्व श्रेयसे श्रीसंभव कारितं प्रति० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ श्रेयोस्तु ॥

(९३३)

संवत् १५०९ वर्षे माघ मासे सु० ५ शुक्रे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य ईंडा पु० वस्ता भा० कोई पु० चाहडेन पितृ श्रे विमलनाथ बिंबं श्रीपूर्णिमा० सत्यपुरी श्रीपासचंद्रसूरिभि ॥

(६१८)

॥ सं० १५०७ वर्षे मा० सु० ५ श्रीसंडेर गच्छे ऊ० ज्ञा० विदाणा गोत्रे सा० झाझा भा० कपूरदे पु० दूला भा० देवलदे पु० वीका भाखराभ्यां श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीशांतिसूरिभिः ॥

(६१९)

सं० १५०७ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय व्य० गोपा भा० गुरूदे सु० भावडेन भा० मेघू सहितेन पितृ मातृ निमित्तं श्रीशीतलनाथ बिं० का० प्र० श्रीपिप्पल गच्छे भ० श्रीसोमचंद्रसूरि पट्टे श्रीउदयदेवसूरिभिः ॥

(६२०) \\\

सं० १५०७ वर्षे फागुण वदि ३ बुधवारे उस० ज्ञा० श्रेष्टि गोत्रे सं० दूदा भा० झबकू पु० मूधा गेधाहादा मेघा भा० करू पु० पोमा गोवर्दिव सहितैः पूर्वज निमित्तं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० मल्लाहड गच्छे रत्नपुरीय शाखायां श्रीधणचंद्रसूरि पट्टालंकार श्रीधर्म्मचंद्रसूरिभिः। सा० मेघाकेन काराप०

(६२१) (कुलकिपा) \\\

॥ सं० १५०७ वर्षे फा० वदि ३ बुधे ऊकेश० बु० गोत्रे सा० गोविंद भार्या मोहणदे तत्पुत्र सा० पर्वत डूगर युतेन स्व पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि ॥

(६२२)

॥ संव० १५०७ वर्षे फागुण वदि ३ गुरौ। श्री कोरंट गच्छे। उपकेश ज्ञातीय साह भोजा भा० जइतलदे सुत नेडा रामा सालिग सहितेन पितृव्य थाहरो निमित्तं। श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं। श्रीसोमदेवसूरिभि ॥

(६२३)

॥ संव० १५०८ वर्षे वैशा   साजण भार्या मेघी आत्म पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारा० प्रति० वृहद्गच्छे भ० श्रीमहेन्द्रसूरिभिः।

(६२४) \\\

॥ सं० १५०८ वर्षे वैशाख वदि ४ शनौ श्रीसडेर गच्छे ऊ० ज्ञा० संखवालेचा गोत्री पाल्हू दाउड केअरसी पु० लाखा भा० काकू पु० कीमाकेन स्व श्रेयसे नमिनाथ बिं० का० प्र० श्रीशांतिसूरिभि ।

(६२५)

॥ सं० १५०८ वर्षे वै० सु० ५ सोमे प्रा० कोसुरा भा० धारू पु० सा० देवाकेन भ्रातृ देवा देल्हा चापा चाचादि कुटुंब सहितेन श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिं० का० ऊकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संता० प्र० कक्कसूरिभि.।

(६४१)

सं० १५१० वर्षे फा० सु० ५ कासवासी प्रा० ज्ञा० व्य० पिथाकेन भा० पोमी पुत्र व्य० गोपा गेल्हा पेथादि कुटुंब युतेन श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छाधिराज श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(६४२)

सं० १५११ (०) वर्षे चै० सु० ५ प्रा० सा० भाका भार्या भाल्हणदे पुत्र सा० गोपाकेन भा० फलणू पुत्र रेल्हा जावड नो आणाना पद्देरादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे० श्रीपार्श्व बिंब कारित प्रति० तपा श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

(६४३)

सं० १५११ वर्षे प्राग्वाट मं० पूना भार्या करमादे पुत्र नरसिंहेन भार्या नामलदे चामलदे पुत्र भोजा राजा सोमा गांगादि युतेन श्रीश्रेयांस बिंब प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

(६४४)

सं० १५११ ज्ये० व० प्रा० कच्छोली वासी व्य० धमसीह भा० झिमी सुत व्य० वाछाकेन स्व ज्येष्ठबंधु श्रेयसे श्रीविमल बिंबं का० प्र० तपा श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ।

(६४५)

सं० १५११ वर्षे आसा० वदि ८ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय सघ० गोपा भा० गोमति सलखणदे पु० हेमा वाछा गुणराज देवराज प्रमि० श्रीअभिनन्दन बिंबं काराप० पूर्णि० द्वितीय भ० श्रीसर्वाणंदसूरि श्रीगुणसागरसूरिभिः । मंगलं । श्री ॥

(६४६)

सं० १५११ वर्षे आषाढ वदि ८ श्रीज्ञानकीय गच्छे उ० तल्डर गोत्रे सा० पामू भा० पौमादे पुत्र मांडा भा० भावलदे आत्म श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्य बिंब का० प्रतिष्ठितं श्रीसिद्धसेनसूरिभिः ॥

(६४७)

सं० १५११ वर्षे आ० व० ६ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० हापा भा० हमीरदे पु० वाहडकेन भा० रामड़ भ्रा० जागादि युतेन स्व श्रेयसे श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य तत्पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

(६३४)

सं० १५०६ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे प्राग्वाट वंशे सा० मोकल भा० मेलादे पु० मेहाकेन पु० तोला सहितेन श्रीअंचल गच्छेश श्रीजयकेशरिसूरि उपदेशात् श्रीवासुपूज्य बिंबं स्व श्रेयसे कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥

(६३५)

सं० १५१० वर्ष मंत्रीदलीय गोत्रे सा० पाल्हा पुत्र गुणा पुत्र घोया सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनभद्रसूरिभि. श्रीखरतर गच्छे ॥

(६३६)

स० १५१० वर्ष ज्येष्ठ सुदि ३ गुरौ प्राग्वाट वशे सं० हरिया भार्या जमणादे पुत्र सं० हीलाकेन स्व पुण्यार्थं श्रीअजितनाथ बिंबं श्रीअंचल गच्छेश जयकेसरिसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च

(६३७) ११३

सं० १५१० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञातीय वृति सा० धीरा भा० हासलदे पितृ मातृ श्रेयसे सुत देताकेन श्रीशीतलनाथ मुख्य पंचतीर्थी बिंबं कारितं श्रीभीमपल्लीय श्रीपूर्णिमा पक्ष मुख्य श्रीचंद्रसूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(६३८) ११३

सं० १५१० वर्षे आषाढ सुदि ६ सोम दिने उप० ज्ञातीय काकलिया गोत्रे सा० सोढा भार्या धर्मिणि पुत्र हासा भार्या हासलदे सहितेन भ्रातृ निमित्तं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र। श्रीसावदेसूरिभि ।

(६३९)

सं० १५१० वर्षे कार्तिक वदि ४ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० वयरा भार्या कील्हणदे सुत चौहथ सालिगाभ्या श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीपि० श्रीगुणदेवसूरि पट्टे श्रीचंद्रप्रभसूरिभि हम्मीरकुल वास्तव्य ।

(६४०)

सं० १५१० मार्ग सुदि १० रवौ श्रीमूलसंघे भ० श्रीजिनचंद्रदेव · गोत्रे भवसा सा० डूगर भाज्या हकौव तत्पुत्र भोपा सरडण खोवटा हेमा तेजा शुभं भवतु

(६५५)

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमाली गोत्रे। सा० मोहण पुत्र कामा भार्या भरमादे पु० वेगा आत्म श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंब का० प्र० धर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरि प० श्रीपद्माणंद सूरिभिः।

(६५६)

॥ ६० ॥ संवत् १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ३ वापणा गोत्रे सा० कमा भार्या धरमिणि पुत्र रावळ भार्या सीता आत्म पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारापितं श्रीधर्मघोष ग० श्रीपद्मशेखरसूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥

(६५७)

सं० १५१२ वर्षे फा० मासे ओसवशे वरहरा सा देवा भा० सुगतादे पुत्र सेता जयता पाता सहसाकैः कुसल सहितैः श्रीअंचल गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरिसूरिउपदेशेन पितृव्यादि नागमण श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीसंघेन ॥ श्री ॥

(६५८)

संवत् १५१२ वर्षे माघ ७ बुधे उपकेश ज्ञा० मांमण भावकेन भार्या सुरिंगदे पुत्र साधु आढा सहितेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिन भद्रसूरिभि ॥ श्री ॥

(६५९)

संवत् १५१२ फागुण सु० ८ शनौ उपकेश ज्ञा० व्य० चयथा भा० रूपी पौमलदे श्रोवाकेन भ्रातृ नाल्हा बोसा कोहा भा० राणी नायकदे कुटुंब युतेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्र० तपा० श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ आवहर वास्तव्य ॥ श्री ॥

(६६०)

सं १५१२ वर्ष फाग० सु० १२ पछाडवा गोत्रे सा० डीडा भा० पूजी पु० चयथ भा० चाहि णिदे पु सेतादि स्व पितृ मातृ भ्रातृ पितृव्य श्रेयसे सा चयथाकेन श्रीनमिनाथ बिंबं का प्रति उपकेश गच्छे श्रीश्रीसिद्धाचार्य सताने भट्टा० श्रीश्रीश्रीककसूरिभिः ॥

(६६१)

संवत् १५१३ प्राग्वाट व्य० कमरण भा० सहजलदे पुत्र व्य० श्रीमाकेन भा० कपूरदे पुत्र कूटा झगा मेरादि कुटुंब युतेन श्रीसुमत बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(६४८)

सं० १५११ पोष वदि ५ श्रीश्रीमाली श्रे० भरमसी साऊ सुत भादाकेन भा० वीभू सरवण गहगा हेमादि कुटंब युतेन भ्रातृ सादा श्रेयोर्थं श्रीसुमतिनाथ बिंब का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्रीजय-चंद्रसूरिभि. ॥

(६४६)

सं० १५११ वर्षे माघ व० ५ प्रा० व्य० कूपा भार्या कामलदे सुत व्य० केल्हाकेन भा० कौतिगदे सुत देवसो जयता जोसादि कुटंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभि·

(६५०)

स० १५११ वर्षे माघ सु० १३ प्राग्वाट व्य० मेला भा० नहणी पुत्र ताल्हकेन भा० सारी पुत्र नरसिंह खेता भ्रातृ डूंगरादि युतेन श्रीश्रेयास बिंबं का० प्र० तपा श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि श्रीसोमदेवसूरिभि ॥ श्री ॥

(६५१)

सं० १५११ वर्षे फागुण वदि ७ सोमे उपकेश ज्ञातीय व्य० देव अम् भा० वयजलदे पुत्र पचनाकेन भा० लखमादे युतेन आत्म श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं कारित प्र० ब्रह्मीय गच्छे भ० श्रीउदयप्रभसूरिभि शुभं भवतु

(६५२)

॥ सवत् १५११ वर्षे फागुण सुदि १ दिने ऊकेश वंशे माल्हू गोत्रे सा० पेता पुत्र सा० लींबा भा० नयणादे पुत्र सा० खरहत भार्या सहजलदे निज श्रेयोर्थं श्रीमुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनसागरसूरि पट्टे श्रीजिनसुंदरसूरिभि· ॥

(६५३)

संवत् १५१२ वर्षे सा० जेसिंग भार्या सुंदरि सुतेन सा० राजाकेन भा० वाल्ही सुत काला भा० सा० सूरा नींबा सा० पाचादि कुटंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं मह्रा सुदि ५ दिने सोमे प्रतिष्ठितं तपा श्रीरत्नशेखरसूरिभि ।

(६५४)

॥ संवत् १५१२ व० चैत्र व० ८ सोमे श्रीभावडार गच्छे श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० सजना भा० टहकू पु० सापरसोपा सूपा पोपट सहितेन स्व पुण्यार्थं ॥ श्रीकुंथुनाथ बिं० का० प्र० श्रीकालिकाचार्य सं० ग० श्रीश्रीवीरसू...

(६६६)

॥ सं० १५१३ वर्षे आषाढ वदि ६ गुरौ सुराणा गोत्रे सं० धनराज पु० सं० भीम्हा भार्या पाम्हलदे आत्म पुण्यार्थ श्रीचंद्रप्रभ स्वामि बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्माणंदसूरिभि ।

(६७०)

॥ ६० ॥ संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० समरा भार्या ऊलू पुत्र सबूकेन पुत्र ऊदा युतेन शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छेश श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(६७१)

॥ ६० ॥ १५१३ वर्षे आषाढ सु० २ दिने ऊकेश वंशे बापणा गोत्रे सा० हरभम भार्या हलालदे पुत्र डूंगरण भा० मेलादे पुत्र मेरा नवराज हेमराज युतेन श्रीवासुपूज्य बिंब कारित श्रीजिनभद्रसूरिभि प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छ ।

(६७२)

॥ ६० ॥ संवत् १५१३ वर्षे आषाढ सु० २ दिने ऊकेश वंशे ॥ फूकड़ा गोत्रे सा० मेहा भार्या माजी पुत्र सा० गामल्हन भ्रातृ भादा पुत्र हीरा नयणा नरसिंह युतेन । श्रीशांतिनाथ बिंबं का० श्रीजिनभद्रसूरिभि प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छ ।

(६७३)

सं० १५१३ वर्षे मार्गसिर सुदि १० सोमे श्रीवरहुड़ गोत्रे सा० दाधा पुत्र सा० हमराजेन पद्मा (?) हमादे पुत्र पाछू धनू सहसू अळणा युतेन श्रीअजितजिन बिंब कारित प्रतिष्ठित वृहद्गच्छे श्रीमलयभसूरि पट्टे श्रीराजरत्नसूरिभिः ॥

(६७४)

६ संवत् १५१३ वर्षे पौष सुदि १३ रवौ श्रीश्रीमाली श्रे० ऊमा भार्या मांकू सुत सहिसा प्रमुख पुत्रा निद्धनाम्न्या स्वगुरु श्रे० हापा सुत काळा मत्ता युतया स्वश्रयसे श्रीपास्व बिंबं कारित प्रतिष्ठित वृद्ध तपा पक्षे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ॥ छ ॥

(६७५)

॥ श्री० १५१३ वर्षे माह वदि ५ उ० प्राग्वाट बोहरा गोत्रे सा० पउहथ भा० पाल्हणदे पु० पाल्हा भा० पाल्हणदे पु० मागल्हाज युतेन स्व भ्रयार्थ श्रीसंभवनाथ बिंबं कारापित प्र० श्रीधर्मघोष श्रीगुणाकरसूरिभिः ॥ छ ॥

(९६२)

सं० १५१३ वर्षे ओसवाल मं० वेला भा० सुहागदेव्या पु० मं० राजा सींघा शिवा वाघा धना सवरण व० हीरादे सूहवदे श्रियादे वझादे धन्नादे लाडो पो सोढा हाथी यु० श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि शि० श्रीरत्नशेखरसूरि श्रीउदयनंदिसूरिभि. ॥ इलद्रंगे

(९६३) 117

॥ सवत् १५१३ वर्षे ऊकेश वंशे कटारिया गोत्रे सा० तेजसी पुत्र तिहुणा भार्या कील्हणदे पुत्र कुलचंदेन भार्या कुतिगदे प्रभृति पुत्र पौत्रादि परिवार युतेन श्रीनेमिनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(९६४)

स० १५१३ वर्षे ऊकेश वंशे सा० गोसल भा० संगादे पुत्र पान्हाकेन भा० अपू पुत्र रत्ना काला गोपादि कुटुंब युतेन श्रीश्रेयास जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छेश श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥ लूंकड गोत्रे

(९६५)

संवत् १५१३ वर्षे उपकेश वंशे बोथरा गोत्रे सा० नगराज भा० मदू पुत्र सा० महिराजेन स्व पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनसुद (रसूरिभि)

(९६६) नाहटा / 117 / बीकानेर

॥ ६० ॥ सं० वर्षे वै० व० ४ दिने ऊकेश ज्ञातीय दरडा शाखीय सा० कान्हड भार्या कपूरदे सुत सा० भावदेवेन सभा० गिजक्षिजात पुत्र भोला रणधीर प्रमुख कुटुंब सहितेन श्रीविमल-नाथ बिंबं कारिता प्र० खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभि ॥ पित्रो श्रेयोर्थं भोलाकेन का०

(९६७)

सं० १५१३ वै० सु० ३ दिने प्राग्वाट व्य मेही भा० दूजी पुत्र वीटाकेन भा० हास पुत्र वरणादि कुटुंब युतेन श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीसोमसुंदरसूरि पट्टे श्रीमुनिसुंदर सूरि श्रीजयचंद्रसूरि तत्पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभि मावाल ग्रामे

(९६८)

सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ शुक्रे उप० ज्ञातीय व्य० नरपाल पु० कोका भा० कुतगदे पु० ४ मोकल भा० माणिकदे पु० देवराज युतेन आत्म श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० वृह० श्रीन (? उ) दयप्रभसूरिभि

(९८४)

॥ सम० १५१५ वर्षे आषा० ब० १ ऊकेश वंशे नाहटा गोत्रे सा० पाल्हा भार्या पाल्हणदे सुत सा० देपाकेन भा० देल्हणदे भ्रातृ खसा पुत्र देवा पेथराज नगराजादि युतेन श्रीश्रेयांस बिंबं स्वपुण्यार्थं कारित प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभि ॥ श्रीरस्तु ॥

(९८५)

॥ स० १५१५ मार्गसिर वदि ११ बु० ऊ० ज्ञा० वडूरा वंशे। भरसी भा० भरलणदे पु० देपाकेन भा० देवलदे पु० शिवराज जगा सहं स्व श्रे० संभवनाथ का० प्रति० श्रीचित्रवाल गच्छ श्रीमुनितिलकसूरि पट्टे श्रीगुणाकरसूरिभि ॥

(९८६)

सं० १५१५ वर्षे मागसिर सुदि १ दिने ऊकेश वंश बाकुलिया गोत्र सा० संग्राम पुत्र सा० सहसाकेन भार्या मयणलदे पुत्र साधारण प्रमुख परिवार सहितेन श्रीसुमतिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि ॥

(९८७)

॥ स० १५१५ वर्षे माघ शुक्ल १ दिने श्रीऊकेश वंशे परि० भन्ना पुत्र परिख छुडा सुमाकेन भार्या ढूनादे पुत्र सा० वारस भा० गुणदत्त प्रमुख परिवार युतेन स्वपुण्यार्थ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः।

(९८८)

सं० १५१५ वर्षे माघ सुदि १४ बुध प्राग्वाट वंशे पचाणचा गोत्रे सा० कान्हा भार्या करमादे पुत्र सा० सांगाकेन भा० चापलदे पु० सा० रणधीर पदमादि सहितेन स्व पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारित प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनसुन्दरसूरिभि

(९८९)

॥ स १५१५ वर्षे फागुण सुदि १२ बुधे श्रीश्रीवंशे सा० भूपा (सोढसा) कुले श्रे० मोला भा० मुटी सा० राजाकेन भा० राजलदे भ्रा० साजण प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन श्रीअंचल गच्छे गुरु श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन स्व श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीसंघेन ॥ श्री ॥

(९९)

सं० १५१८ म० शमी वासी श्रीश्रीमाल ज्य० नोना भा० पची श्रेयोर्थं ज्य० गहणा माला गजा चापादिभिः श्रीकुंथुनाथ बिंब का० प्र श्रीमुनितिलकसूरि पट्टा

13 लंकार श्रीराजतिलकसूरीणामुप प्र० शुभं ॥ पूर्णिमा पक्षे

। अंको के मध्य का फिगर 13 भिन्न लिखा गया है व लिव्यन्तरों में व १९१ लिखा है।

(९७६)

सं० १५१३ वर्षे माघ वदि ६ गुरुवारे उपकेश ज्ञातीय सा० पाचा भार्या विल्ही सुत खामा मातृ निमित्तं श्रीसंभवनाथ कारितं प्र० श्रीसंडेर गच्छे श्रीशांतिसूरि।

(९७७)

संवत् १५१३ वर्षे माह वदि ६ गुरु उ० व्य० सीहा भा० सुल्ही पुत्र भूठाकेन भा० सहजू सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० भावडार गच्छे भट्टा० श्रीवीरसूरिभि. ॥

(९७८)

सं० १५१३ वर्षे माह वदि ६ गुरु उप० व्य० साजण भा० धारू पुत्र भाडाकेन भा० हासू युतेन आत्म श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ विंवं का० प्र० भावडार गच्छे भ० श्रीवीरसूरिभि ।

(९७९)

॥ संवत् १५१३ वर्षे भा० वदि १२ बु० सधरो भा० पूज्रा पुत्र करणाकेन स्व श्रेयसे श्रीअंचल गच्छेश श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीनेमिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं।

(९८०) ११९

सं० १५१३ वर्षे फा० वदि १२ श्रीउपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने भाद्र गोत्रे लिगा जडके सं० तेरूपुत्र सं० साहू भा० संदी पु० महणा भा० मेघी पु० सालिग भा० सुहागदे द्विती० भा० सालगदे पु० सहजपालादि आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीकक्कसूरिभि ॥ कोडीजधना ॥

(९८१)

संवत् १५१४ वर्षे वै० सु० १० बुधे श्रीकाष्ठा संघे पदार्य (?) श्रीकमलकी पातक । विकौसिरि पुत्र अर्जुन खउरपत खीमधरे सा० लखमाप्रतिष्ठाप्य नित्यं प्रणमति ॥

(९८२)

॥ सं० १५१५ जालउर वासी ऊकेश० मं० चापा भार्यया सा० धारा भा० धारलदे सुतया सहजूनाम्न्या श्रीकुंथुनाथ विंवं का० प्र० तपा गच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभि ॥

(९८३)

संवत् १५१५ ज्ये० सु० १५ प्रा० सा० धर्मा भा० धारलदे पुत्र सा० महिराकेन भा० मुक्तादे पुत्र अर्जुनादि कुटुंव युतेन स्व श्रेयसे श्री ॥ सुमतिनाथ विंवं का० प्र० श्रीसूरिभि. ॥ श्री ॥

(६६८)

संवत् १५१६ वर्षे म०२ वदि ८ सोमे उपकेश ज्ञा० व्य० सावा भा० रतनू पु० नर भम डूगर सहितेन आत्म श्रेयाय श्रीवासुपूज्य बिं० का० श्रीसाधुपूर्णिमा पक्षे श्रीहीराणंद सूरि पट्टे श्रीदेवचंद्रसूरीणामुपदेशेन गोत्र ग्गस्तम्य ॥

(६६६)

॥ सं० १५१७ वर्षे चैत्र वदि ७ उकेश वंशे साखाटू गोत्रे सा० आंबा भा० माहीचदे सुत सा० भूनाकेन भा० पद्मदे तथा भ्रातृ समधरा समरा शिखरा प्रमुख परिवार सहितेन श्रीसंभवनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतर श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(१०००)

सं० १५१७ वर्षे वैशाख सु० ४ गुरौ उपकेश ज्ञातीय सूराणा गोत्रे सा० जिणराज पु० हरिचंद निज मातृ पितृ पुण्यार्थे आत्म श्रेयोय श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीधर्मघोष गच्छ श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥ शुभं ॥

(१००१)

॥ सं० १५१७ ज्ये० सु० १४ प्रा० व्य० लखमण भा० लखमादे पुत्र्या व्य० वछा पुत्र व्य० चाचा भार्यया असमी नाम्न्या निज श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छे भट्टारक प्रभु श्रीसोमसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरि शिष्य श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि ॥

(१००२)

॥ ६० ॥ संवत् १५१७ वर्षे माह वदि ८ रविवारे प्राहुर गोत्रे साह लोला भार्या गांगी पुत्र साह राजू नापू सहितेन पितर भ्रातृ गोयंद पुण्यार्थे श्रीआदिनाथ बिंबं कारापित प्र० धर्मघोष गच्छे भ० श्रीविजयचंद्रसूरि पट्टे साधुरत्नसूरिभि ॥

(१००३)

सं० १५१७ वर्षे माह वदि १२ गुरु दिने ऊ० वेठू व्य० केसा० नपा भा० नायकदे पु० केसा भा० विमलादे स्व श्रेयसे श्रेयांसनाथ बिं० का० प्र० चैत्र गच्छ भ० श्रीगुणाकरसूरिभिः ॥

१००४)

॥ संवत १५१७ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे पूगड़ गोत्रे सा० जयसिंघ पुत्र सधारण भार्या महिराजही पुत्र नथाकेन स्व पितृ श्रेयसे श्रीचंद्रप्र० बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीउपकेशीय गच्छे श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे श्रीसोमसुंदरसूरिभिः ॥

(९९१)

॥ सं० १५१६ वर्षे फलवधि वासी प्राग्वाट व्य० सोहण भा० पूंजी पु० नेलाकेन भा० मेलादे पु० धन्ना वना देवादि कुटुंब युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंब कारितं प्र० तपा श्रीमुनिसुंदरसूरि पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरि प्रवरैः ॥

(९९२)

॥ सं० १५१६ वर्षे सिरोही वासी श्रे० गेहा भार्या हजी नाम्न्या पु० पदा मदा भा० मंकु गउरी पु० भाखर खेतसी जीवा कुटुंब युतया श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे श्रीसोमसुंदरसूरि श्रीमुनिसुंदरसूरि पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

(९९३)

सं० १५१६ चैत्र वदि ४ ऊकेश वंशे सा० श्रे० धन्ना भार्या तारू पु० शिवाकेन भ्रा० भापा पु० उदा तारा ीका ४ भ्रा० सादा पु० सोभा ५ त्रासरवण २ भ्रा० सूरा पु० दूल्हादिक परिवार युतेन स्व श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं श्रीखरतर श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं राका भूया ।

(९९४)

सं० १५१६ वर्षे चैत्र वदि ५ गुरौ श्रीश्रीमाल ज्ञा० पितृ आसा मातृ चांपू श्रेयसे पुत्र झांझण घसता ठाकुर एतैः भ्रातृ गोला निमित्तं श्रीविमलनाथ बिंबं पंचतीर्थि का० प्र० पिप्पलगच्छेश त्रिभु० श्रीधर्मसागरसूरिभिः वावडियाः ॥

(९९५)

सं० १५१६ वै० व० १ ऊकेश म० कडूआ पाल्हू पुत्र सं० चांपाकेन भा० चांपलदे पुत्र रूपा कुटुंब युतेन श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० ब्र० गच्छे सूरिभि. तपा श्रीरत्नशेखरसूरिणां उपदेशात् सीरोही नगरे ॥

(९९६)

संवत् १५१६ व० वैशाख वदि १३ रवौ उसवाल ज्ञातौ पाल्हाउत गोत्रे देल्हा पुत्र साढू गणी नगराज श्रेयसे श्रीमल्लिनाथ बिंबं कारापितं श्रीमलधारि गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीश्रीमुनिसुंदरसूरिभि. ॥

(९९७)

संवत् १५१६ वर्षे आषाढ सुदि ९ शुक्रे ऊकेश ज्ञातौ भाभू गोत्रे सा० सूजू पुत्र सिरिआ तस्य भार्यया वलिनाम्न्या श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं निज श्रेयसे प्रतिष्ठितं श्रीसर्वसूरिभि. ॥

(१०१२)

॥ सं० १५१८ वर्षे माह सुदि १० ऊकेश वंशे गोलवच्छा गोत्रे । पुनर्जिया वास्तव्यम सा० डूंगर भा० फर्मी पुत्र सा० डामरेण भार्या दाडमदे पुत्र कीहट देवराजादि परिवारेण श्रेयोर्थं श्रीपद्मप्रभ बिंबं का० प्र० खरतर श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१०१३)

सं० १५१८ वर्षे फा० वदि ७ शनौ ऊ० भाद्र गो० छिंगा शा० सा० छाजा भा० छाजलदे पु० थाहरूकेन भा० मीरिणी पु० बांबा मांडण सहितेन श्रीशीतलनाथ बिं० प्र० श्रीकक्कुदा० उप श्रीकक्कसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१०१४)

सं० १५१९ वैशाख वदि ११ भृगु रेवत्यां मठोवा वासी प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० नोड भार्या धारूही सुत श्रे० वनाकेन भा० हीरू लघु भ्रातृ रामादि बहुकुटुंब युतेन स्व श्रेयो श्रीसम्भवनाथ बिंब कारित प्र० तपा श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ पं० पुण्यनंदिगणिनामुपदेशेन

(१०१५)

सं० १५१९ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ शनौ प्राग्वा० व्यव० छाजा भा० आल्हणदे पु० भारमल भार्या भरमादे पु० मोकल सहितेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० कच्छोलीवाल गच्छे पूर्णिम पक्षे भ० श्रीगुणसागरसूरीणामुपदेशेन ।

(१०१६)

। सं० १५१९ वर्षे ज्ये० सु० ६ शुक्रे श्रीश्रीमाली ज्ञा० व्य० रूपा भा० कीलू पु० देव भा० सुहग पु० जीवा सहितेन निज मातृ श्रेयसे श्रे० श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठि श्रीवृ० गच्छे श्रीवीरदेवसूरि पट्टे श्रीअमरप्रभसूरिभिः ॥

(१०१७)

स० १५१९ वर्षे आषाढ वदि ५ सोमे ऊकेशवंशे सं० शूरा भा० सीतादे पु० हरराजे भा० अमकू पु० देवादि सहितेन श्रेयसे अभि नन बिं० का० प्र उप० सिद्धाचार्य संताने श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥

(१०१८)

सं० १५१९ वर्षे माघ वदि ५ सोमे श्रीश्रीमाल गा० साढण पु० गां०समामसी भार्या कुंअरे सु० राजा भा० बाछू भ्रातृ गया पु सोमा सहितेन मातृ पितृ निमित्तं आत्मश्रेयोर्थं श्री नाथ बिंबं का० प्र० श्रीजयसिंहसूरि पट्टे श्रीजयप्रभसूरीणामुपदेशेन । पिडवाण वास्तव्य ।

(१००५)

॥ संवतु १५१७ वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्रीउपकेश गच्छे श्रीकक्कुदाचार्य श्रीउपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गो० सा० सहदे पु० समधर भा० वामा पु० सारंग भा० सिंगारदे यु० आत्म श्रे० श्रीकुंथु बिंबं कारिता प्रतिष्ठितं श्रीश्रीकक्कसूरिभिः ॥

(१००६)

॥ सं० १५१७ वर्षे माघ सुदि १० सोमे श्रीओसिवाल अ० भिगा गोत्रे सा० हाला भा० रूपाहि पु० सा० रणमल्ल भा० देल्हाई पुत्र सा० सुदा मेहा पितृ मातृ श्रेयसे श्रीश्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्रतिष्ठितं । सर्वसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१००७)

॥ संवत् १५१८ वर्षे फा० सु० २ प्रा० व्य० राणा भा० सहजू पुत्र व्य० लखमणेन पु० हाजा युतेन निज श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीरत्नशेखरसूरि शि० भट्टारक श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

(१००८)

॥ संवत् १५१८ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने ऊकेश वंशे बोथिरा गोत्रे मं० मयर भार्या सिंगारदे पुत्र सा० थिभा भार्या सुदरी पुत्र सा० मेला जिणदत्त सहितेन श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं स्व पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

(१००९)

सं० १५१८ वै० व० १ गुरौ प्रा० श्रे० सोभा भार्या ढूसी पुत्र श्रे० साधाकेन भार्या टमी प्रमुख कुटुंब युतेन निज श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरि संताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि. ।

(१०१०)

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ६ बुधे श्रीकोरंट गच्छे उपकेश ज्ञा० मडाहड़ वा० सा० श्रवण भा० राऊ पु० सोमाकेन भा० वयजू पु० सोभा अमरा जावड सहितेन स्व पित्रोः श्रेयसे श्रीकुंथु-नाथ बिंबं का० प्रति० श्रीसावदेवसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१०११)

सं० १५१८ वर्षे माघ सु० ५ बुधे नागर ज्ञा० श्रे० राम भा० शाणी पु० धर्मण मोटा नगा सालिग हरराजादिभि. स्व कुटुंब सहितै स्व श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं का० श्रीअंचल गच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन ॥ तच्च प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

(१०२६)

सं० १५२१ वर्षे फा० सु० ८ प्राग्वाटान्वये व्यव० खेता भा० सापू पु० मोकल भा० पाल्ही सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्रीमल्लिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा० द्वितीय० कच्छोली० श्रीविजय प्रभसूरिभिः।

(१०२७)

सं० १५२१ वर्षे फागुण सुदि ८ शनौ प्राग्वाटान्वये साह कर्मा भा० सलखू पु० कूपा भा० कामला सहितेन श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा० द्वितीय० कच्छोली० गच्छे श्रीविजय प्रभसूरि।

(१०२८)

सं० १५२२ वर्षे वैशाख सुदि ३ रवौ ओसवंशे व्यव० मांभण भा० कस्मीरदे पु जो पुण्यार्थं भातृ सूरा मोकलकेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० ज्ञानकीय गच्छ श्रीधनेश्वरसूरिभि।

(१०२६)

सं० १५२३ वर्षे वैशाख वदि १ सोमे श्रीहारीज गच्छे ओसवाल ज्ञातीय श्रेष्ठि चांपा भार्या सुखी पुत्र गांगा भार्या कुअरी मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्रीनमिनाथ बिंबं कारापितं। प्रतिष्ठितं श्रीमहेश्वरसूरिभिः॥ वहीसरावास्तव्यः॥

(१०३०)

॥ सं० १५२३ वर्षे वै० सु० १३ शुक्र ऊकेश ज्ञा० श्रेष्ठि सलखा पुत्र मांभण सुत भाराकेन पत्नी भावलदेवसराही भ्राता कुरसिंह युतेन स्व श्रेयसे श्रीसुपार्श्व बिंबं कारित प्रति कोरंट गच्छे श्रीसावदेवसूरिभिः । श्रीवीक्कम ग्रामे।

(१०३१)

॥ ६० ॥ सं० १५२३ वर्षे मार्गसिर सुदि १० सोमे श्रीवरहुड़ गोत्रे। सा० पोपा पुत्र सा० हेमराजेन पत्रा हेमादे पुत्र वासू धनू सहसू डाकण युतेन श्रीअजितजिन बिंबं कारित प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छे श्रीमेरुप्रभसूरि पट्टे श्रीराजरत्नसूरिभिः।

(१०३२)

सं० १५२३ माघ सु० ६ प्रा० व्य० पत्रापसी भा० वानु पुत्र व्य० मिघाकेन भा० वासू भ्रा० राजा सहसादि कुटुंब युतेन निज श्रेयोर्थं श्रीअभिनंदन बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीरत्न शेखरसूरि पदे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः॥

(१०१६)

संवत् १५२० वर्षे फागुण सुदि ११ रवि
आह्णदे पु० सा० दत्ता सा० जीदा भार्या सहितेन पितृ निमित्तं चतुर्विंशतु जिन मूल० श्रीशीतलनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीपूर्णिमा० भ० श्रीजयभद्रसूरिणामुपदेशेन ॥ शुभं भवतु ॥

(१०२०)

सं० १५२१ (?) वैशाख सुदि ३ रवौ ओसवंशे व्यव० झाझण भा० कश्मीरदे पु० लो ? पुण्यार्थं भ्रातृ सूरा मोकलेन श्रीकुंथुनाथ विंबं का० प्र० ज्ञानकीय गच्छे श्रीधनेश्वरसूरिभिः।

(१०२१)

सं० १५२१ वै० सु० ३ झाडउली ग्रामे प्रा० सा० धन्ना भा० वजू नाम्ना पु० टाहल भा० देमती पुत्र नाल्हादि युतया श्रीसंभव चिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

(१०२२)

संवत् १५२१ वर्षे आषाढ सु० १ गुरौ श्रीवायड़ ज्ञा० मं० जसा भा० जासू सु० तहुणाकेन भा० झबकू युतेन सुत जानू श्रेयसे आगम गच्छे श्रीहेमरत्नसूरीणामुपदेशेन श्रीशीतलनाथादि पंचतीर्थी कारिता प्रतिष्ठिता वदेकावाडा वास्तव्यः ॥ ।

(१०२३)

सं० १५२१ वर्षे माघ सुदि १३ शुक्रे प्राग्वंश सा० नरसी भा० हमीरदे पु० टाहुल पु० नीसलादि सहितेन श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा कच्छोलीवाल गच्छे श्रीविजयप्रभसूरिभिः।

(१०२४)

सं० १५ १ वर्षे माघ सुदि १३ गुरु दिने उपकेश ज्ञा० व्यव० केलहा भा० नौड़ी सुत पाता भा० दाखीदा युतेन सुड़ी पुण्यार्थं श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० ब्रह्माणीय गच्छे भ० श्रीउदयप्रभसूरिभि ॥ लोहीआणा ग्रामे

(१०२५)

सं० १५२१ वर्षे माघ सु० १३ प्राग्वाट व्य० मेला भा० नइणि पुत्र नाल्हाकेन भा० सारि पु० नरसिंह खेता भ्रातृ डगरादि युतेन श्रीश्रेयास बिंबं का० प्र० तपा० श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि श्रीसोमदेवसूरिभिः ॥

(१०४०)

सं० १५२५ ज्येष्ठ वदि ७ गुरौ काष्ठा संघे नंदियड़ गच्छे भ० श्रीसामकीर्त्तिदेवा प्रतिष्ठित ॥ हुंबड़ ज्ञातीय मंत्रीसर गोत्रे सोनापान भार्या सोहग। सुत भोटा निमित्तं श्रीचन्द्रप्रभस्वामि बिंबं कारा०॥

(१०४१)

॥संवत् १५२५ (?) वर्षे पोष वदि श्री माल ज्ञातीय मं० बहुआ भा० रंगाई सुत मं० चभा भार्या पूतलि सु० भोरपाल राजादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ अहम्मदावाद नगरे ॥

(१०४२)

सं० १५२५ वर्षे माघ वदि ६ प्राग्वाट स० वाछा भार्या बीजलदे पुत्र सं० मेहाकेन भा० माणिकदे पुत्र मेरा वना वीरम सोढादि युतेन श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्र० तपा ग० श्रीलक्ष्मी सागरसूरिशिष्य श्रीसुधानंदसूरिभिः ॥

(१०४३)

सं० १५२५ मा० व० ६ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० प्रतापसी भा० सिरियादे पुत्र सा० देवाकेन भा० दयछदे पुत्र विजयादयादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरि

(१०४४)

सं १५२५ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे प्रा० ज्ञातौ व्यव वाहड़ पु० धामदा भा० महघी पुत्र सहितेन श्रीअभिनन्दन बिंबं का० प्र० पूर्णि० कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्रीविजयप्रभसूरिभि ॥

(१०४५)

सं० १५२५ वर्षे फागुण सुदी ७ शनौ नागर ज्ञातीय श्रे० रामा भा० राणी पुत्र नगाकेन भा० धनो पु० नाथा युतेन श्रीमंथल गच्छे श्रीजयकेसरिसूरीणामुपदेशेन श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः ॥

(१०४६) १२९

॥सं० १५२६ व० ज्येष्ठ सुदि १३ गु० श्रीसवेर गच्छे तप गोत्रे सा० पल्हा पु० सोढा भा० कपूरा प्र देल्हा भा०२ साह पुत्र आंबा आसा द्वि० पूरो पु० भ्रदा अमराभ्यां पित्रा श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंब कारापित श्रीयशोदे (व) सूरि संताने प्र० श्रीशालिसूरिभिः ॥

(१०३३)

सं० १५२३ वर्षे माघ सुदि ६ प्रा० ज्ञातय त० ऊदा भार्या आल्हणदे पुत्र केदाकेन भा० कपूरदे पुत्र नेमादि युतेन श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० तपागच्छेश श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः सीरोही वा० ॥

(१०३४)

सं० १५२४ वर्षे वैशाख सुदि २ उपकेशज्ञातीय सोनी सजना भा० हीरादे पुत्र हेमाकेन भा० देऊ पुत्र डूगर सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीज्ञानसागरसूरिभिः ॥

(१०३५)

स० १५२४ वैशा० सु० ६ गुरौ ऊकेश ज्ञाती मंडवेचा गोत्रे सा० नाल्हा भा० नींबू पु० सहसा भा० संसारदे पु० वीरम सहितेन आ० श्रे० श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्रीवृद्गच्छे श्रीजय-मंगलसूरि संताने भ० श्रीकमलप्रभसूरिभिः ॥

(१०३६)

सं० १५२४ वर्षे मार्ग व० २ ऊकेश वंशे तातहड गोत्रे सा० ठाकुर रयणादे पुत्रैः सा० महिराजा-दिभिः भ्रातृडपा श्रेयोर्थं श्रीश्रेयासनाथः कारितः प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(१०३७)

॥६०॥ सं० १५२४ वर्षे मार्गसिर वदि १२ सोमे श्रीनाहर गोत्रे सा० राजा पुत्र सा० पुनपाल भार्या चोखी नाम्न्या पुत्र डाल्हू धणपाल देवसीह युतया श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीवृहद्गच्छीय श्रीमेरुप्रभसूरिपट्टे श्रीराजरत्नसूरिभि· ॥

(१०३८)

॥सं० १५२४ वर्षे मार्ग० सु० १० शुक्रे श्री सुराणा गोत्रे सा० छाजू भा० वाल्हदे पु० सा० साहण भा० साहणदे स्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं करितं प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्माणंदसूरिभिः ॥

(१०३९)

॥स० १५२५ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने सोमे सींदरसीवासि प्रा० सा० सरवण भा० झबकू सुत सा० कर्मोकेन भा० खादू प्र० कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिंबं कारितं प्रथितं तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि ॥

(१०५४)

सं० १५२७ वर्षे माह सुदि ६ बुधे ऊ० ज्ञा० श्रीमाला गोत्रे सा० सारंगा भा० धरमा पु० सा० लीमा हमीरी पु० साना सहितेन हेमा माल्ही निमित्त श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० श्रीचैत्र गच्छे श्रीसाधुकीर्तिसूरि आ० श्रीचारुचंद्रसूरिभिः ।

(१०५५)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख वदि १ शुक्रे ऊसवाल ज्ञा० सा० मरसा भा० नीणादे पु० सपाकेन भा० ससारी पु० सोभा भा० भा० मानू द्वि० पु० नामादि युतेन श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं ऊकेस गच्छे श्रीसिद्धाचार्य संताने भरावणा भ० श्रीसिद्धसेनसूरिभिः ॥

(१०५६)

॥ संव० १५२८ व० वैशाख व० २ गुरौ ऊप० ज्ञा० सुंघा गो० सा० वेहट भा० धाइ पु० सा० पासा भा० पाल्हणदे पु० जिणदत्त श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीकोरंट गच्छ श्रीनन्नाचार्य संताने ककसूरि पट्टे श्रीसावदेवसूरिभि ।

(१०५७)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख सुदि ४ बुधे ऊ० ज्ञा० व्यव० देवसी भार्या देवलदे पुत्र पोपा भार्या पाल्हणदे पुत्र रूमा मोका धन्ना सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीब्रह्माणीय (ग) च्छे भ० श्रीविमलप्रभसूरिभि ॥

(१०५८)

संवत् १५२८ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे कुकड़ागोत्रे सा० पदमा सुत सा० राणा सुश्रावकेण भा० रयणादे पुत्र सा० कर्मण प्रमुख पुत्र पौत्रादि युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीखरतर गच्छ श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(१०५९)

सं १५२८ वर्षे माघ वदि ४ बुधे । ऊसकेश ज्ञा० वपणा गोत्रे सा० तेजा भा० मेलादे पु० देपा भा० बारू पु० योगा पितृ निमित्तं आ० श्रेयोर्थे श्रीसुविधिनाथ बिंब का० प्र भ० श्रीदेवगुप्तसूरिभि ॥

(१०६०)

॥ सं० १५२६ वर्षे वैशाख वदि ६ सोम ऊपकेश वंशे जालड़िया गोत्रे सं० सहसा पुत्र सं० हिमराज भार्या हर्षमदे पुत्र हीरा हरिचंद रणधीर युतेन श्रीश्रेयांस बिंबं कारितं प्र० श्रीतपागच्छे भ श्रीहेमहंससूरि पट्टे श्रीहेमसमर (?) सूरिभिः ।

(१०४७) | 129

संवत् १५२६ वर्षे आषा सु० २ रवौ । श्रीउपकेश ज्ञातौ श्रीसुचिंती गोत्रे सा० शिवदेव भा० खिन्नधरही पु० सिंघाकेन भा० पद्मिणि पु० पिन्नण जेल्हा युतेन स्व श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीऊकेश गच्छे श्रीककुदाचार्य संताने श्रीकक्कसूरिभि. ।।श्रीभट्टनगरे ।।

(१०४८)

सं॰ १५२६ वर्षे फा० सा० पदमा पु० भोलाकेन श्रीशं···· · ···

(१०४६)

संवत् १५२७ वर्षे श्रीऊकेशवंशे कानइडा गोत्रे सा० ताल्हा पुत्र सा० पोमाके। भा० पोगीदे पुत्र सा० लखमण लोला सहितेन निज पूर्वज निमित्तं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं श्रीखरतर गच्छे प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्षसूरिभिः ।।

(१०५०)

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठ मुडाडा वासि प्रा० सा० जाणा भा० जइतलदे पु० सा० रणमल्लेन भा० खीमणि भ्रातृ चूडादि कुटुंब युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छनायक श्रीश्रीश्री-लक्ष्मीसागरसू० ।।

(१०५१)

।।सं० १५२७ वर्षे पौ० व० १ सोमे माल्हूराणी वासी प्राग्वाटज्ञातीय व्य० राउल भा० वाल्हू पुत्र व्य० देपाकेन भा० देवलदे पुत्र सोमादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयस श्रीविमलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभि. ।।श्री।।

(१०५२)

।।सं० १५२७ पौष सुदि १२ आंबड़थला वासी प्राग्वाट व्य० पीचा पुत्र सा० चउथाकेन भा० चाहिणदे पुत्र जाणा वधुना कु० युतेन श्रीनमिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः ।।

(१०५३)

।। सं० १५२७ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे श्रीनागेन्द्र गच्छे उ० साह मेरा भा० ललतादे पु० देवराज भा० डाही पुत्र नाथा सहितेन आत्म श्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं का० श्रीविनयप्रभसूरि प० प्र० श्रीसोमरत्नसूरिभि ।।

(१०६८)

सं० १५३१ माघ व० ८ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय मे० समरा भा० मनु सुत श्रीवाकेन भा० झाझू सुत गजा राजड टीकादि कुटुंब युतेन आत्म श्रेयसे कारित श्रीधर्मनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं तपा गच्छेश श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥

(१०६९)

संवत् १५३१ फागुण सुदि ५ श्रीकाष्ठा संघे। भ० गुण भद्र प्राप सवसे० सवाच भिस्पं प्रणमति।

(१०७०)

सं० १५३२ वर्षे फा० सु०८ शनौ ऊकेश ज्ञा० व्य० गो० सा० महिपा भा० मोहणदे पु० मेसा-भा० जयतलदे स० पित्रो' श्रे० श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० मड्डा० ग० श्रीनयचंद्रसूरिभिः ।।माहोवा०।।

(१०७१)

सं० १५३२ व० चैत्र सु० ४ श० ओसवा० सा० महणा भा० माणिकदे पु० वरजांकेन भा० चांपलदे सु० जगा गांगा गोइन्द प्रमृति मातृ पितृ स्वश्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे श्रीसिद्धाचार्य सं० भासिद्धसूरिभिः ।।गावहि।।

(१०७२)

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवि दिने वस० ज्ञा० गो० वरमण भा० रोडू सुत चाहड भा० चाहिणदे सु० असवीर रणवीर जुगा परवत पांचा युतेन आ० श्रेयसे धर्मनाथ मुं (१ बिं) कारितं प्र० श्रीजीरापल्ली ग। भ० श्रीउदयचंद्रसूरि पट्टे भासागरचंद्रसूरिभिः शुभंभवतु ।।समीयाणा वास्तव्य ।।

(१०७३)

सं० १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ ओस० सा० गाल्हा भार्या कुंरादे पुत्र सोमा भार्या सिंगारदे युतेन पुण्यार्थ श्रीश्रीकुंथुनाथ बिंब कारितं प्रति० मडाहडी गच्छे श्रीपार्श्वेश्वरसूरि सताने श्रीकमलप्रभसूरि शिष्येन भासोत् शुभं भवतु श्रेयस्त ॥

(१०७४)

।।स १५३२ वर्षे वैशाख वदि ५ रवौ प्राग्वा० ज्ञा० व्यव० रिणमल भा० राजलदे पुत्र गोइन्द भा० गसुदरि सहितेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारि० पूर्णिमा पक्षे द्वितीo कच्छोलीवाल गच्छे श्रीविजय प्रभसूरीणामुपदेशेन ।।श्या।।

(१०६१)

।। सं० १५२६ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ ऊकेश ज्ञातीय सा० पूना सुत भीमा सुदा श्रीवंत नामभिः पितृ श्रेयसे श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः। सरसा पत्तन वास्तव्य.।। छ ।।

(१०६२)

सं० १५२६ वर्षे द्वि ज्येष्ठ सु० ३ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञा० व्य० जूठा भा० सामल सरवण रूपाधर पितृ मातृ जीवित स्वामि श्रीकुंथुनाथ मुख्य पंचतीर्थी कारापितं श्रीपूर्णिमा पक्षे श्रीराजतिलकसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं सूरिभिः समायेचा वहुरा।

(१०६३)

।। सं० १५२६ वर्ष माघ सु० ५ रवौ उपकेश ज्ञातीय साखुला गोत्रे सोना भा० सोनलदे पु० सा० धर्मा भा० धीरलदे आत्म श्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे। श्रीपद्मशेखरसूरि प० भ० श्रीपद्माणंदसूरिभि.।।

(१०६४)

।। संव० १५२६ वर्षे फागुण वदि १ श्रीउपकेश गच्छे कुकदा० संता उपकेश ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे सा० सीहदे भा० सूहवदे पु० सा० सिवरं सिखा सीधर भा० सारंगदे सिखा भा० लख्मादे आत्म श्रेयसे श्रीकुंथु बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।।

(१०६५)

।। ६० ।। सं० १५३० वर्षे उपकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे को० सायर भार्या कपूरदे पुत्र सरवण साइणाभ्या पुत्र जयतसींह हेमादि सपरिकराभ्या निज पितृ पुण्यार्थं श्रीसुमति बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभिः।

(१०६६)

सं० १५३० वर्षे फागुण सुदि २ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० ककाड भा० सलखु पु० जोला भा० मटी पु० केल्हण फगन गेहा सहितेन श्रीधर्मनाथ बिंब का० प्र० पूर्णिमा पक्षीय कच्छोलीवाल गच्छे श्रीविजयप्रभसूरिभि.।। श्री ।।

(१०६७)

सं० १५३० वर्षे फा० सु० ७ प्रा० वजा भा० गेलू वा० सना भ्रा० वेला सोजादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीमहावीर बिंबं का० प्र० तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि.। लासनगरे

(१०८२)

स० १५३४ वर्षे आषाढ़ वदि ६ कोटीमड़ा वासी प्रा० मं०नागा भार्या पातु पुत्र थांपाकेन भा० सीतू पुत्र नगादि युतेन स्वश्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं का० प्र तपा गच्छेश श्रीलक्ष्मीसागरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।।श्री।।

(१०८३)

।।सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि १ बृहस्पतिवारे चण्डालिया गोत्रे सा० मेहापुत्र सा० सूरा भार्या भूरमदेव्या पुत्र वस्ता देजायुत मा० पु० श्रेयसे श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि गच्छीय श्रीगुणसुंदरसूरि श्रीगुणनिधानसूरिभिः ।।

(१०८४)

।।संवत् १५३४ आषाढ़ सुदि १ गुरौ पटवड़ गोत्रे सा० सारंग संताने सा० नापा भार्यानारिं गदे पुत्रेन पुंजोकेन भ्रातृ लाखा युतेन पितृ पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीमलधारि गच्छे श्रीगुणसुंदरसूरि पट्टे श्रीगुणनिधानसूरिभिः ।।

(१०८५) १३५

।।संवत् १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ दिने ऊकेश रांका गोत्रे सा० जगमाल भा० हिमे पु० सा० धेरू भ्रा० पेरू सुश्रावकेण भा० रमाई पु० सा० देवराज सहितेन भ्रातृ रूपायितदस् सा० वच्छा प्रमुख परिवारेण श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।।श्री।।

(१०८६) १३५

।।६०।। संवत् १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि २ दिने ऊकेश वंश सेठि गोत्रे से० पदा । भार्या कपूरदे पुत्र साधु सुश्रावकेण भा० नारंगदे पुत्र ऊदा कमसी प्रमुख प्रमुख परिवार युतेन श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।।

(१०८७) १३५

।।६०।। संवत् १५३४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंश लूणिया गोत्रे सा० पूना भार्या पूनादे पुत्र रणधीर सुश्रावकेण भा० नयणादे पु नान्दू सा० वाछू धीरदा वीरमादि परिवार युतेन श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।।श्री।।

(१०७५) 133

सं० १५३२ वर्षे आषाढ़ सुदि २ सोमे पुनर्वसु नक्षत्रे सुचिंती गोत्रे सं० सहसा भा० राणी पुत्र सा० संसारचंद्र कन्हाई पुत्र सं० सुललित शिवदास सहितेन स्वश्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० कृष्ण। गच्छे श्रीजयसिंहसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१०७६)

॥संवत् १५३३ वर्षे शाके १३६८ मार्गसिर सुदी ६ शुक्रवारे श्री उस ज्ञातीय भंडारी गोत्रे सा० जाटा तत्पुत्र सा० वींदा स्वमातु जसमादे पुण्यार्थं श्रीधर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंडेर गच्छे श्री ईसरसूरि पट्टे श्रीशालिभद्रसूरिभि· ॥

(१०७७)

सं० १५३३ वै० सु० १२ गुरौ प्र० व्य० पना भा० चादू पुत्र सोभा भा० मानू भ्रातृव्य० रहिआकेन भ्रातृ धरणू युत नायक नरवदादि कुटंब युतेन श्रीविमलनाथ बिंबं का०प्र० श्रीसोम सुंदर-सूरि संताने श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः नादिया ग्रामे ॥

(१०७८)

सं० १५३४ वर्षे च० व० ६ शनौ भसुडी वासी प्रा० व्य० भटा भार्या मोहिणदे पुत्र व्य० पर्वतेन भा० ढाकू भ्रातृ भोमादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीरत्नशेखर सूरि पट्टे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि. ॥

(१०७९)

॥सं० १५३४ वर्षे वै० व० ८ प्राग्वा० सा० माला भा० मोहिणि पुत्र आसाकेन भार्या कपूरदे पु० भोजादि कु० स्वश्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि. वेहल्या वासे ॥

(१०८०)

सं० १५३४ वर्षे वैशाख सु० ३ सोमे उ० सोपतवा भा० अगणी पुत्र नापा सादा नापल पणदे सूरमदे पुजसवानाथ तेजा नाल्हा स० श्रीशांतिनाथ बिंबं आत्म श्रेयसे का० प्र० बृहद्गच्छे भ० श्रीकमलचंद्रसूरिभि. ॥

(१०८१)

। सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० सो० ओस० पूर्व सा० ईसर भा० सुमलदे सुत चाचाकेन भा० हरसु पु० रणमल्ल सहितेन श्री धर्मनाथ बिंबं पूर्वजनिमित्तं प्रति० मडाहड गच्छे जाखड़िया धर्मचंद्रसूरि पट्टे श्रीकमलचंद्रसूरिभि· ॥

(११११०)

सं० १५४५ वर्षे ज्येष्ठ व (? व) दि ११ रवौ उ० ज्ञा० पालड़ेचा गो० पम्हा भार्या रत्नर पुत्र रत्नू पु० अगमाल भार्या लखतादे स० पूर्पलमित्तं (? पूर्वजनिमित्तं) श्रीसमव बिंबं का० प्र० श्रीनयचन्द्रसूरिभि भ० गच्छे ।

(११११)

स० १५४५ वर्षे ज्येष्ठ व० ११ रवौ ओ० सा० श्रेना भार्या जीवणी पु० वीसा पुत्रा नरसिंह वरसिंह सहिते (न) पित्र श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारापितं प्रति० श्रीबृहद्गच्छे सत्यपुरी। श्रीहेमहंससूरि प० श्रीसोमसुंदरसूरिभि ॥

(११११२)

सं० १५४७ वर्षे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे २ सोमे ऊ० सा० धीमू भा० पोमी सु० अमका मद्दिपा लाखा मा० मनकू पद्दिपा भा० हेमी पित्र मातृ श्रेयोर्थं श्रीधर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चासहिया गच्छे भ० श्रीकमलचंद्रसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ शुभं भवतु ॥

(११११३) 1384

स० १५४७ व० ज्ये० सु० २ सोमे वस० बहेरा गोत्रे सं० राख्ल भार्या वोरजी पुत्र देपा भार्या जीवादे पुत्र सीमा मंडलिकादि सहितेन स्वपुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्रीबृहद्गच्छ सत्यपुरी सोमसुंदरसूरि पट्टे श्रीचारुचंद्रसूरिभि ॥ सिरोही ॥

(११११४)

समत १५४८ वरष बैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघ भट्टारीकजी श्रीपापाण प्रतिमा

(११११५) 1284

संवत् १५४६ वर्षे ज्येष्ठ वदि १ दिन ऊकेश वंशे साधु शाखा परीक्ष गोत्रे प० बेला भार्या विमलादे पुत्र नोडाकेन भार्या हीरादे पुत्र बाघा लाल्हा अमरा पाचादि प० युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छ श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः ॥

(११११६)

सं० १५५० माह वदि ६ व श्रीश्रीमाल ज्ञा० श्रे० लुका भा० सुंदरि सुत पासडेन पितृ मातृ श्रेयाथ श्रीपद्मप्रभस्वामी बिंबं कारितं प्रति० श्रीपूर्णिमापक्षीय गच्छे श्रीगुणिचंद्रसूरिभिः ॥ शुभं ॥

(१०८८) 135

संवत् १५३४ आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० आवा भा० अहवदे तत्पुत्र सा० ऊधरण भ्रातृ सा० सधारणेन भार्या सुगुणादे पुत्र फलकू कीतादि परिवार युतेन श्रीकुंथुनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं खरतर गच्छेश श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(१०८९) 135

॥ सं० १५३४ वर्षे माघ सु० ६ उ० ज्ञा० राका गोत्रे साह कोहा भा० कपूरी पु० पासड भा० रपु पु० पेथा द्वि० भा० सालहणदे पु० वीसलनरभ० तालहादि युतेन स्वतो श्रेयसे श्रीसंभव-नाथ विंवं का० उपकेश (ग) च्छे ककुदाचार्य सं० प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।

(१०९०)

सं० १५३४ वप फागुण वदि ३ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० को० धर्मा भा० धर्मादे पु० को० पेथा भा० हर्षू द्वि० प्रेमलदे सकुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्रीसुविधिनाथ विंवं का० प्र० ऊ० श्रीसिद्धाचार्य संताने भ० श्रीसिद्धसूरिभिः ॥

(१०९१)

सं० १५३५ वर्षे आषाढ सुदि ५ गुरौ । ऊ० सा० पाल्हा सुत जेसा भा० खेतऊदे पु० खीमा भा० हरखू पुत्र मेरा नाल्हा सहितेन श्रीधर्मनाथ विंवं कारा० प्रति० मडाहडी (य ग) च्छे माखडिया भ० श्रीश्रीधर्मचंद्रसूरि पट्टे श्रीकमलचंद्रसूरिभि· ॥ ७४ ॥

(१०९२)

सं० १५३५ वर्षे मा० सु० ५ गु० डीसा० श्रे० भूठा भार्या अमकू सुत मं० भोजाकेन भार्या मवकू सुत नाथा भ्रा० वडयादि श्रेयसे श्रीअर विं० का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरि प्र० श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१०९३) 135

॥ सं० १५३५ व० मा० सु० ५ उ० भंडारी गोत्रे महं० सायर पु० मं० सादुल भा० जयतु पु० सींहा संदा समरादि युतेन स्व श्रेयसे श्रीसुपार्श्व बिंवं का० प्र० संडेर ग० श्रीसालसूरिभि. ॥

(१०९४)

सं० १५३५ वर्षे माघ सुदि दशम्यां प्राग्वाट व्य० वाहड भार्या सलखणदे पुत्र्या व्य० धन्ना भार्यया पातु नाम्न्या मितातततोदि कुटुब युतया श्रीशीतलनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि· ।

(११२४) १५०

संवत् १५५४ वर्षे माघ वदि २ गरू (?) ओसवाल सा० पुनीशाखायां सा० कला भा० ऊमादे पु० खेतसीकेन भा० खेतलदे पु० रमा माकादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभस्वामि मुख्य पंचतीर्थी बिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय श्रीचारित्रचंद्रसूरि पट्टे श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

(११२५) १५०

स० १५५६ वर्षे वै० सु० ८ वाल ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० खेता भा० पदमादे पु० होला भा० हांसलदे पु० नाल्हा घोला लाखा छोहट सोमा धारम श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपुण्यवर्द्धनसूरिभिः ॥

(११२६) १५०

॥ संवत् १५५६ वर्षे जेठ सुदि ९ रवौ उपकेश ज्ञातीय श्रीनाहर गोत्रे सा० साधू सताने सा० वाछा भार्या पाल्हो पुत्र सा० वर्द्धमान भार्या पुत्र सहितेन श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे भ श्रीदेवसुंदरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(११२७)

॥ संवत् १५५७ वर्षे पौष सुदि १५ सोम उपकेश पु० डूंगर भार्या वूलादे पु० जिणा द्वि० भार्या वाल्हमदे पु० वना मंडलिकादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे ॥ श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्र० सर्वसूरिभिः भ० श्रीजयमंगलसूरिपे । कमलप्रभ सू०

(११२८) १५०

॥ सं० १५५७ वर्षे माघ सुदि १० शनौ ऊकेश वंशे मेष्टि गोत्रे सा० सहसा भा० सीरू पुत्र सा० चाहडेन भा० चापलदे पु० साधारण रायव रायमल्ल प्रमुख परिवार युतेन श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं स्वश्रेयोर्थ प्रति श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभिः ॥

(११२९) १५०

॥ ई० ॥ सं० १५५९ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ५ गुरौ ऊकेश वंशे सणगाणी गोत्रे सं० मोला भा० कन्हाई सत्पुत्र म० श्रीतेजसिंहेन भा कोडमदेव्यादि परिवार युतेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्रीजिनहर्षसूरिभिः ॥

(११३०

संवत् १५६१ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने मामधम ज्ञातीय सा० चौसल भा० नारिंगदे पु० भोजा भरमा वजल डूंगर पु० सहितम् मांगू नाम्नीम्यां श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

(११०३)

।।ऍ।। संवत् १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिन ऊकेश वंशे तिलहरा गोत्रे सामरा भार्या सूहव पु० देवराजेन भा० रूपादे पु० गांगा रतना राज खरमा परिवार युतेन श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभि. ।।

(११०४)

।।सं० १५३६ फा० सु० ३ ऊकेश वंशे वंबोडी गोत्रे सा० देपा भा० कपूरदे पुत्र जसा पद्मा जेल्हाद्यैः पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्र सूरिभिः ।।

(११०५)

सं० १५३ ( ) वर्षे ज्येष्ठ सु० ११ शुक्रे ऊ० बाघरा गोत्रे सा० गागा भार्या रूदी पुत्र काजलेन पितृ मातृ आत्म श्रेयसे श्रीनमिनाथ बिंबं का०प्र० श्रीसिद्धाचार्य सन्ताने प्र० श्रीककसूरिभि.

(११०६)

सं० १५४० वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे श्रीकाष्टा संघ नदी तट गच्छे विद्या गणे भट्टा० श्रीसोमकीर्ति प्रतिष्ठितं आचार्य श्रीवीरसेन युक्त हुवड ज्ञातीय पंखीसर गोत्रे सं० राणा भार्या वाछा पुत्र वसा भार्या रुक्मणी पु० श्रीपाल वीरपाल कुरपाल सुपास प्रणमति ।

(११०७)

संवत् १५४२ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने उप० काकरिआ गोत्रे सा० नरदे भा० सापू पु० धन्नाकेन ।। सा० धन्ना भा० म्यापुरि पुत्र हीरा सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनहर्षसूरिभि. ।।

(११०८)

दे युतेन श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनहर्षसूरिभिः ।।

(११०९)

सं० १५४३ वर्षे मार्ग सु० २ सोमे उ० ज्ञातीय भेटोचा गोत्रे सा० तेजा भा० तेजलदे पु० नगा लाखा भोजा भा० तागोदर सकुटुबेन सीहा पुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीज्ञानकीय गच्छे भट्टारक श्रीश्रीश्रीधनेश्वरसूरिभि सिंहा निमित्तं बिंबं बिजापुर वा० ।

(११२४) १५०

संवत् १५५४ वर्षे माघ वदि २ गत् (?) ओसवाल ज्ञा० पृथ्वीशाखायां सा० रूखा भा० रूखमादे पु० खेतसीकेन भा० खेतलदे पु० दमा माकादि युतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीचंद्रप्रभस्वामि मुख्य पंचतीर्थी बिंबं का० श्रीपूर्णिमापक्षे भीमपल्लीय श्रीचारित्रचंद्रसूरि पट्टे श्रीमुनिचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥

(११२५) १५०

सं० १५५६ वर्षे वै० सु० / पाल्ह ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० खेता भा० पदमादे पु० होला भा० हासलदे पु० नाल्हा वोला छाला छोहट सोमा आत्म श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपुण्यवर्द्धनसूरिभिः ॥

(११२६) १५०

॥ संवत् १५५६ वर्षे जेठ सुदि ६ रवौउपकेश ज्ञातीय श्रीनाहर गोत्रे सा० सावा सन्ताने सा० वाल्ह भार्या पाल्ही पुत्र सा० दर्सरम भार्या पुत्र सहितेन श्रीशीतलनाथ बिंबं कारित प्र० श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे भ० श्रीदेवसुंदरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(११२७)

॥ संवत् १५५७ वर्षे पौष सुदि १५ सामवपकेश पु० डूंगर भार्या वूजादे पु० जिणा द्वि० भार्या दाडिमदे पु० दधा मंडलिकादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे ॥ श्रीसुविधिनाथ बिंबं कारापितं प्र० सर्वसूरिभिः भ० श्रीजयमंगलसूरिपे । कमलप्रभ सू०

(११२८) १५०

॥ सं० १५५७ वर्षे माह सुदि १० शनौ ऊकेश वंशे भोपि गोत्रे सा० सहसा भा० सीरू पुत्र सा० थाहडेन भा० थापलदे पु० साभाराव्या राघव रायमल्ल प्रमुख परिवार युतेन श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं स्वश्रेयोर्थं प्रति० श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभिः ॥

(११२९) १५०

॥ ६० ॥ सं० १५५६ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ५ गुरौ ऊकेश वंशे भणशाली गोत्रे सं० मोका भा० कन्हाई तत्पुत्र सं० श्रीवैरसिंहेन भा० लीलादेव्यादि परिवार युतेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्रीजिनहर्षसूरिभिः ॥

(११३०)

संवत् १५६१ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने माम्वाड ज्ञातीय सा० वीसल भा० नारिंगदे पु मोढा भरमा कजस डूंगर पु० सहितू मांगू नाम्नीभ्यां श्रेयोर्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छे श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

(११२७) 139

सं० १५५० वर्षे माघ वदि १२ शनौ ऊसवाल श्रीआइचणा गोत्रे सा० नत्थू भा० भरहणि पु० साजण भा० चाऊ पु० खेताकेन भा० खेतलदे पु० देवदत्त थेनड युतेनात्मपुण्यार्थं श्रीसुविधि-नाथ बिं० का० प्र० उपकेश० कक्कु० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ।

(११२८)

सं० १५५१ वै० सु० झाडउली ग्रामे प्रा० सा० धन्ना भा० वसु नाम्न्या पु० टाहल भा० देयति पुत्र नाल्हादि युतया श्रीसंभव बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्रीलक्ष्मी-सागरसूरिभिः ।

(११२९) 139

सं० १५५१ वर्षे वैशाख सुदि १३ ऊकेश वंशे बइताला गोत्रे सा० मूल पुत्र साधा भा० पूनी पु० सा० जयसिंहेन भा० जसमादे पु० जयता जोधादि परिवारयुतेन स्वपुण्यार्थं श्रीशाति-नाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनहर्षसूरिभिः ॥

(११३०)

सं० १५५१ वर्षे जे० सु० ८ रवौ प्रा० व्य० देपा भा० देसलदे पु० टाहा व० देवसी पु० थ० लाला भा० डाहा लापादि कुटुंब युतेन स्व श्रेय० श्रीशातिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभि ।

(११३१)

सं० १५५१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ प्रा० व्यव० आला भार्या गुरी पु० चुडा भार्या सूरम ॥ साह चूडा निमित्तं ॥ श्री ॥ श्री कुंथनाथ बिंबं कारिता प्र० पूर्णिमा कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्रीविजयराजसूरिभि ॥ द्वितीय शाखाया ॥

(११३२)

॥ संवत् १५५२ वर्षे माघ सुदि १२ बुध दिने खुवहाडा वा० प्राग्वाट ज्ञाती० वुमुचण्ड भा० करणु पु० जेतल भार्या जसमादे श्रीधर्मनाथ बिं० ब्रह्माणीय गच्छेभ० गुण सुंदरसूरिभि ॥ व्य० धागार्थे ।

(११३३) 139

॥ संवत् १५५४ व० पौष व० २ बुधे सुराणा गोत्रे सा० चीचा भा० कुंती पु० मेघा भा० रंगी पु० सूर्यमल्ल स्वपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्र० सूराणा गच्छे श्रीपद्माणंदसूरि पट्टे श्रीनंदिवर्द्धनसूरिभि जालुर वास्तव्य

(११३८)

सं० १५ ५ वर्षे भा० व० ७ रवौ भा० ज्ञातीय मा० मोखण भा० लखू सुत सा० महा पोपटेन भा० पाल्हणदे सकुजने (?) राजा महीपति युतेन स्वश्रयोथ पद्मप्रभ बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्री हेमविमलसूरिभि ॥ थारवल्लिग्रामे

(११३९)

सं० १ ७५ वर्षे फा० ब० ४ दिने प्रा० ज्ञा० स्वसमी भा० सालूपुत्र सा० मवाकन। भा० राणी पुत्र ठाकुर गोविंद युतेन श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० तपागच्छे श्रीसूरिभिः ॥

(११४०)

सं० १५७५ वर्षे फा० व० ४ दिने प्रा० स० मुड़ा भा० दाडिमदे पुत्र स० सूरदासेन भा० श्रीमलदे भगिनी बालादे श्रीकुंथुनाथ बिंबं का०प्रतिष्ठितं तपा श्रीजयकल्याणसूरिभिः।

(११४१)

सं० १५७५ वर्षे फागण वदि ४ गुरौ उपकेशवंशे सुखसुचीया गोत्रे सा० पन्ना भार्या श्रीमण स० भूणा भार्या भावलदे भमदि पुत्र सा० पहुराधिररासापद्म मेहाजेपरासाने भार्या कमलादे पुत्र भांडासहितं श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः।

(११४२)

॥संवत् १५७६ आषाढसुदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय भालारिया श्रीमल पुत्र ककू सांगो स० गोपा मा० देजू पुत्र नरपाल भा० मल्हादे पु० वावड दसरथमर्मसीसहि० मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० श्रीबृहद्पिप्पलगच्छे भ० श्रीपद्मतिलकसूरिभि ॥ सीरोही नगर वास्तव्यः ॥

(११४३)

सं० १५८२ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवार उकेशवंश मेटिवाड़ भार्या शोवादेव्या पुत्र साह्लीवा हीरा सगु मुख्यादि परिवारपरिवृतैः स्वपुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(११४४)

सं १५६० वर्षे वैशाख पुत्र खेता भ्रातृ वता वडा सिरादवा मा० भरमलदे पु० समभर सीहा प्रथा आसी पंचायण रामा कोकापुतेम श्रीधर्मनाथ बिंबं का० ज्ञा राड गच्छे श्रीसिद्धसेनसूरि प्रतिष्ठि० प्रसादात।

(११३१)

सं० १५६३ वर्षे माह सु० १५ गरा ना ववे गोत्रे सा० गेल्हा पु० सा० जयितकेन भा० जसमादे पुत्र नमण नगा पयसल पंचायण यु० निज पितृ श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीपिप्पल गच्छे भ० श्रीदेवप्रभसूरिभि.।

(११३२) ।५।

॥ सं० १५६७ वर्षे वैशाख सु० १० बु० ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सं० वस्ता भा० चंपाई पुत्रकेन सं० वीजा लाच्छी पु० अमपाल श्रीवंत रत्नपाल खीमपाल युते श्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्र० अं० गच्छे श्रीभावसंग (?) सूरि।

(११३३)

सं० १५६८ वर्षे माघ सु० ४ गुरौ प्रा० दो० कर्मा भा० करणू पुत्र अखाकेन भा० हर्षू भ्रा० दो० अदा भा० अनपमदे पु० दो० सिवा सहसा स० प्र० कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीहेमविमलसूरिभिः ॥

(११३४)

॥ संवत् १५६८ वर्षे शाके १४३३ प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्ल पुष्य ५ शुक्रे श्रीविराट्ट नगरे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय ॥ वृद्धि शाखाया सो० साभा भा० तेयु सुत सहिसा विणा ठाकर भा० वहलादे सु०। श्रीराजमांडण प्रतिष्ठितं श्रीधर्मरत्नसूरिभि श्रीसुपारिस्वनाथ बिंबं मंगलार्थं ॥

(११३५) ।५।

सं० १५७१ वर्षे आषाढ सुदि २ श्रीउपकेश गच्छे। बापणा गोत्रे। सा० राजा पु० वीरम भा० विमलादे पु० महिपाकेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीकक्कसूरिभिः।

(११३६)

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ठ। र (?) भारद्वाज गोत्रे ऊ० ज्ञा० सा० भीमा भा० धन्नी पु० मेरा भा० शीतू श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रियोर्थं श्रीजीरापल्ली गच्छे भ० श्रीदेवरत्नसूरिभिः ॥

(११३७)

॥ सं० १५७२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शनौ प्रा० लाबा सा० साधर भा० सूरमदे पु० मोकल देमा हीरादि स० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा भ० श्रीविद्यासागरसूरीणां शिष्य श्रीश्रीलक्ष्मीतिलकसूरि सुपदेशेन साधर पुण्यार्थं।

(११५३)

संवत् १६५२ वर्षे वैशाख सुदि १० बुधवारे। श्रीऊकेश वंशे बोथरा गोत्रे सा० मेहा पुत्र रत्न सा० मतिकरणन माता सा० आदित्यादि युतेन श्रीशांति बिंबं का० प्र० श्रीखरतर गच्छ युगप्र० श्रीश्रीश्रीजिनचंद्रसूरिभि ॥

(११५४)

॥ सं० १६६४ प्रमिते वैशाख सुदि ७ गुरु पुष्ये राजा श्रीरायसिंह विजयराज्ये श्रीविक्रमनगर वास्तव्य श्री ओसवाल ज्ञातीय गोलछा गोत्रीय सा० रूपा भार्या रूपादे पुत्र मिन्ना भार्या माणिकदे पुत्ररत्न सा० चन्नाकेन भार्या चम्पादे पुत्र नथमल्ल कपूरचंद्र प्रमुख परिवार सहितेन श्रीश्रेयांस बिंब कारितं प्रतिष्ठितं च। श्रीबृहत्खरतर गच्छाधिराज श्रीजिन-माणिक्यसूरि पट्टालंकार (हार) श्रीसाहि प्रतिबोधक॥ युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिभिः॥ पूज्यमानं चिरं नन्दतु ॥ श्रेयः ॥

(११५५)

श्रीपार्श्व बिं। प्र। श्रीविजयसेनसूर।

(११३१)

सं० १५६३ वर्षे माह सु० १५ गरा ना ववे गोत्रे सा० गेल्हा पु० सा० जयितकेन भा० जसमादे पुत्र नमण नगा पयसल पंचायण यु० निज पितृ श्रेयसे श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीपिप्पल गच्छे भ० श्रीदेवप्रभसूरिभिः।

(११३२) ।५।

॥ सं० १५६७ वर्षे वैशाख सु० १० बु० ऊकेश ज्ञातीय गांधी गोत्रे सं० वस्ता भा० चंपाई पुत्रकेन सं० वीजा लाच्छी पु० अमपाल श्रीवंत रत्नपाल खीमपाल युते श्रेयोर्थं श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्र० अं० गच्छे श्रीभावसंग (?) सूरि।

(११३३)

सं० १५६८ वर्षे माघ सु० ४ गुरौ प्रा० दो० कर्मा भा० करणू पुत्र अखाकेन भा० हर्षू भ्रा० दो० अदा भा० अनपमदे पु० दो० सिवा सहसा स० प्र० कु० युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीहेमविमलसूरिभि.॥

(११३४)

॥ संवत् १५६८ वर्षे शाके १४३३ प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्ल पुष्य ५ शुक्रे श्रीविराट्ट नगरे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय ॥ वृद्धि शाखाया सो० साभा भा० तेयु सुत सहिसा विणा ठाकर भा० वहलादे सु०। श्रीराजमांडण प्रतिष्ठितं श्रीधर्मरत्नसूरिभि· श्रीसुपारिस्वनाथ बिंबं मंगलार्थं ॥

(११३५) ।५।

सं० १५७१ वर्षे आषाढ़ सुदि २श्रीउपकेश गच्छे। बापणा गोत्रे। सा० राजा पु० वीरम भा० विमलादे पु० महिपाकेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीकक्कसूरिभिः।

(११३६)

सं० १५७२ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ ठ। र (?) भारद्वाज गोत्रे उ० ज्ञा० सा० भीमा भा० धन्नी पु० मेरा भा० शीतू श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रियोर्थं श्रीजीरापल्ली गच्छे भ० श्रीदेवरत्नसूरिभि.॥

(११३७)

॥ सं० १५७२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ शनौ प्रा० लाबा सा० साधर भा० सूरमदे पु० मोकल हेमा हीरादि स० श्रीआदिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा भ० श्रीविद्यासागरसूरीणां शिष्य श्रीश्रीलक्ष्मीतिलकसूरि मुपदेशेन साधर पुण्यार्थं।

रंगमण्डप का गुम्बज और उसकी चित्रकला
त्रैलोक्यदीपक प्रासाद, भांडासर
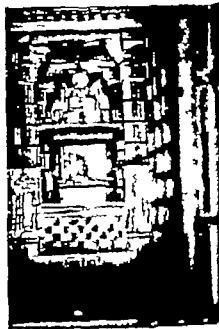
भांडासरजी का गर्भगृह

त्रैलोक्यदीपक प्रासाद का अगली स्तंभ

भांडासर शिखर से नगर के विहंगम दृश्य

त्रैलोक्यदीपक प्रासाद का भीतरी भाग
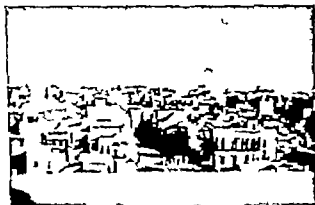
(११४५)

सं० १५६४ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे उप०सा० गोसल भा० सूदी पु० सोनाकेन भा० वाहड़दे सहि० आत्म श्रेयसे श्रीआदिनाथ बिं० का० प्र० मल्लाहडीय गच्छे श्रीनाणचंद्रसूरिभि. ॥

(११४६)

सं० १५६६ फागुण वदि १ उ० खटवड गोत्रे सा० ऊदा भा० उदय श्री पु० खीमा भा० खीमसिरी द्वि० भा० लाछी सहितेन निज पितृ महा पुण्यार्थे श्रीचंद्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिभि. ॥

(११४७)

संवत् १५ वर्षे मा० व० १३ रवौ व्य० माडण भा श्रीश्रेयासनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीसोमसुदरसूरि ।

(११४८)

॥ सं० माणिकदे लखमाई खेमाइ प्रमुख परिवार युतेन श्रीविमलनाथ बिंबं स्व श्रेयोर्थं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

(११४९)

नाथादि चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्रतिष्ठितः श्रीतपा गच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥

(११५०)

सं० ६६ माह सु० ६ सोमे आमजसेन भ्रातृ सीधू श्रेयोर्थं शाति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीभुवनचंद्रसूरिभि. ।

(११५१)

२७ फागुण वदि ३ समतु ८७ आ० सुसठि कुरसी बिंबं भरावत नाणउर गच्छे सिद्धिसेनसूरि ।

(११५२)

॥ सं० १६०२ वर्षे मग० सु० ६ म्या ना० मंत्रि राणा भार्या लीलादेव्या श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खर० श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि ॥

(११५६)

श्रीपार्श्वनाथजी

स० १६३६ मिती माह सुदि ५

(११६०)

सिद्धचक्र यंत्रपर

स० १८७४ मिते कार्त्तिक वदि ३ दिने भाणजी तिलोकचंदेन श्रीसिद्धचक्र यं-कारित श्रेयोर्थ ॥

(११६१)

सर्वतोभद्र यंत्रपर

स० १८८६ मिती माह सुदि १ दिने सर्वतोभद्र यन्त्र लिखित पं० मोत्रराज मुनि इदं ॥

पाषाण प्रतिमा लेखाः

(११६२)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघेभट्टारक
श्रीबराज पापरीवाल .. नित्यंप्रणमति।

(११६३)

प्रति। सं। यु। भ। श्रीजिन सौभाग्यसूरिभि·

(११६४)

स० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघभट्टारक सरकनराजी पापरीवाल मत्य प्रणमत।

श्रीसुमतिनाथजी (भांडासरजी) का मन्दिर

शिलापट्ट पर

(११६५)

१ संवत् १५७१ वर्षे आसो
२ सुदि २ रवौ राजाधिराज
३ श्रीलूणकरण जी विजय राज्ये
४ साह भांडा प्रासाद नाम त्रैलो
५ क्यदीपक कराषितं सूत्र०
६ गोदा कारित

भाडासर शिखर से नगर के विहगम दृश्य
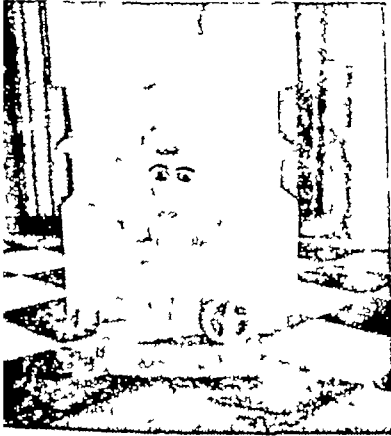
जगती की कला-समृद्धि (भाडासर)

ोक्यदीपक प्रासाद, भाडासर के निर्माता भाडाशाह

जगती की कला-समृद्धि (भाडासर)

३ तके ॥ १ ॥ श्रीराठौड़ नभोर्क सन्निभ महात्विक्ख्यात कीर्त्तिस्फुरत् । श्रीमत्सूरतसिंहकस्य समवस्थाने—

४ न क्ष्मापतौ भुवि । तत्पट्टे जनपालनैक निपुण प्राप्तात् प्रतापाक्रमस्तस्मिन् राज्ञि अपि प्रताप महिम श्री—

५ रत्नसिंहाभिधः ॥२॥ अत्रे सूरिवरा बृहत्खरतरा श्रीजैनचन्द्राह्वया क्ष्मायास्ते त्रिदिवं गताः नि

६ जगुणैस्सद्धर्मसंदेशका सत्यज्ञोत्पल बोधनैक किरणैस्सत्साधु संसेविते श्रीमज्जैनजिनह-

७ र्षसूरि मुनिपैर्भट्टारकैर्गण्यते ॥ ३ ॥ कोविदोपासितं रम्यं कामाक्शः नवार्हतैः प्रतिष्ठितं

८ स्तूपं नंदतादुभुजात्क्षितौ ॥ ४ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥ श्रीमद्बृहत्खरतरगच्छीय संविग्नोपा

९ ध्याय श्रीक्षमाकल्याण गणीनां शिष्य प० धर्मानंद मुनैरुपदेशात । श्रीर्भूयात् सर्वेषां ॥

पाषाण प्रतिमादिलेखाः

॥ गर्भगृह ॥

(१९७३)

मूलनायक श्रीसीमंधरस्वामी

१ संम्वत् १८८७ वर्षे आषाढ़ शुक्ला १० दिने धार पार्श्वे श्रीसीमंधरस्वामि जि

२ न बिंबं श्रीसंघेन कारित श्रीमद्बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक

३ युग्प्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि पट्टे श्रीजिनहर्षसूरिभिः

(११७४)

श्रीपार्श्वनाथजी

१ ॥ संवत् १८८७ मिते आषाढ़ शुक्ल १० दिने श्रीपार्श्वनाथ जि बिंबं बृहत्

२ खरतर भट्टारक श्रीसंघेन कारितं च अ । यु । प्र । सार्वभौम भट्टारक श्रीजि

३ नचन्द्रसूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री जिनहर्ष सूरिभिः प्रतिष्ठितं च ॥ श्री ॥

(११७५)

श्रीशान्तिनाथ जी

१ ॥ संवत् १८८७ मिते आषाढ़ शुक्ल १० दिने धार्द्रो श्रीशांतिनाथ जि

२ न बिंबं श्रीसंघेन कारित प्रतिष्ठितं च बृहत्खरतरगच्छ भट्टारक

३ जं० यु० प्र सार्वभौम श्रीजिनचंद्रसूरि प श्रीजिनहर्षसूरिभिः

श्री चिन्तामणिजी के मन्दिर के अन्तर्गत

श्रीशान्तिनाथजी का मन्दिर

धातु-प्रतिमाओंके लेख

X (११५६)

मूलनायक श्रीपार्श्वनाथजी

१ ॥ ६० ॥ संवत १५४६ वर्ष ज्येष्ठ वदि १ दिने गुरुवारे उपकेशवंशे वर्द्धमान वोहरा शाखाया दोसी गौत्रौ सा० वीधू भार्या कश्मीरदे ।

२ ॥ पुत्र साह तेजसी भार्या श्रा० हासलदे तत्पुत्र सा० गजानंद भार्या .. .. पुत्री श्रा० लक्ष्मी तस्यापुण्यार्थं सा० सिरा मोकल सा०

३ ॥ झाझादि सपरिकरे श्रीपार्श्वनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छेश श्रीजिनचन्द्रसूरिपट्टे श्रीजिनसमुद्रसूरिभि

(११५७)

श्री श्रेयासनाथादि पचतीर्थी

संवत् १५३३ व र्षवैशाख सुदि ६ शुक्रे श्रीमाल ज्ञातीय पितृ हीरा मातृ जीजी सु० वाह भार्या शीतू श्रेयसे मातृ रामत्या श्री श्रेयासनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि· ॥ वीरमगामवास्तव्यः ॥ श्री ॥

(११५८) नाटय|१५१|बीकानेर

श्रीचन्द्रप्रभादि पचतीर्थी

सं० १५८३ वर्ष ज्येष्ठ सुदि ६ शुक्रे। दोसी जावा भा० लीलू पु० ऊगा भा० अकिवदे आवकेन भा० अहकारदे पु० तेजा सहितेन पितृ-निमित्तं श्रीचंद्रप्रभ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि. ॥ सीरोही नगरे ॥

(११६५)

।। श्रीजिनचन्द्रसूरि पा । श्रीसंघ का ।

(११६६) 152

कुएड पर

।। श्री नेमनाथाय नमः ।।

१ ।। श्रीबीकानेर तथा पूव बंगाला तथा कामरू देश
२ आसाम का श्री सघ के पास प्रेरणा करके रूपी-
३ या भेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बना
४ या सुश्रावक पुण्यप्रभाविक देव गुरुभक्ति
५ कारक गुरुदेव के भक्त चोरडीया गोत्रे सीपाणी
६ चुनीलाल रावतमलाणी सिरदारमल का पो
७ ता सिंघीयां की गुवाड़ में वसंता मायसिंघ मेघ
८ राज कोठारी चोपड़ा मकसुदाबाद अजीम
९ गञ्ज वाले का गुमास्ता और कुड के ऊपर दाद इ
१० फेला बखतावरचंद सेठी बनाया। सं० १९२४
११ शाके १७८९ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे भाद्रव
१२ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ सोमवासरे ।।

धातु प्रतिमादि के लेख

(११६७) 152

स० १४३१ वैशाख सु० ११ सामे श्रीनाहर गोत्रे सा० श्रीराजा पुत्रेण सा० भीमसिंहेन सा० पद्मस्य बिं० का० प्र० बृहद्गच्छे श्रीमुनिशेखरसूरि पट्टे श्रीतिलकसूरि शिष्यैः श्रीभद्रेश्वरसूरिभिः

(११६८)

सं० १५०१ व । मा० सु० ६ पत्तन वा० प्रा० वृ ज्ञा० केन जयकरण भा० मानी बहुना श्रीपद्मप्रभ बिं० का० प्र० तपागच्छ श्रीविजयदेवसूरिभिः ।।

(११६९)

स० १६६७ फा० सु० ८ दौलताबाद वा० पृ० ऊकेश सा० कल्याण ना० श्री नमि बिं० का० प्र० तपाग

(११६६)

मूलनायक चौमुखजी के नीचे की मूर्त्ति पर

संवत १५७६ ॥ प्र

(११६७)

दुतले पर चौमुखजी के नीचे के पत्थर पर

सं० १६१६ वैसाख वदि १ विस्पतवार

धातु-प्रतिमाओ के लेख

(११६८)

शीतलनाथादि पंच-तीर्थी १५७

॥ संवत् १५६० ज्येष्ठ वदि ४ दिने। ऊकेशवंशे बोहित्थरा गो०। सं० देवरा भार्या लखमादे पुत्र सं० भऊणाकेन भार्या भरमादे। गोरादे प्रमुख परिवार युतेन। श्रीशीतलनाथ बिंब कारितं। प्रति०। श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनहंससूरिगुरुभिः

(११६९)

श्रीधर्मनाथजी

॥ सं० १९०४ वर्षे प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे ८ तिथौ श्रीधर्मजिन बिंबं प्रति जं। यु। प्र। भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि वृहत्खरतर। कारि। सू। श्रीकेसरीचंदजी स्वश्रेयोर्थं श्रीबीकानेर नगर व्य०

(११७०)

नवपद यंत्र पर

सं० १८६१ मि। माघ सुदि पंचम्या ॥ श्रीसिद्धचक्र यंत्र। बाफणा श्रीगौडीदासजी पुत्र टिकमलेन कारिता प्र० च० उ० श्रीक्षमाकल्याण गणिभि।

(११७१)

यंत्र-मूर्त्ति पर

सुमतिनाथ जी सं० १९०४ जेठ वद ८

श्रीसीमंधरस्वामी का मन्दिर (भांडासरजी)

शिलापट्ट प्रशस्ति

(११७२)

१ वर्षे शैल घना घनेभ वसुधा संख्ये शुचावर्त्मने। पक्षे सौम्य सुवासरेहि दशमी तिथ्याजिनौ को

२ मुदा। श्रीसीमंधर स्वामिन. सुरुचिरं श्रीविक्रमे पत्तने। श्रीसंघेन सुकारित वरतरं जीयात्चिरंभू।

क्षमाकल्याणजी की देहरी में

श्रीक्षमाकल्याणजी की मूर्ति पर

(११८२)

ध वारे। उपाध्यायजी श्री १०६ श्रीक्षमाकल्याणजित् गणिना मूर्ति श्रीसंघेन का०

चरणपादुकाओं के लेख

(११८३)

आर्या श्रीविनयश्री कस्या पादुके श्रीसंघेन कारिते प्रतिष्ठापिते च। सं० १८६६

(११८४)

आर्या श्रीकेसरश्री कस्य पादुके श्रीसंघेन कारिते प्रतिष्ठिते च। सं० १८६६

(११८५)

आर्या श्रीखुसालश्री कस्य पादुके श्रीसंघेन कारिते प्रतिष्ठिते च सं० ८६६

आलों में पादुकाओं पर

(११८६)

३ पादुकाओं पर

सं० १८८७ मि० आषाढ़ सुदि१० दिने बुधवारे संविग्नपक्षीय आर्या विनेश्री। श्रीसुगालश्रीजी सौभाग्यश्रीकस्या पादन्यासा कारिता प्र। र्भ। यु० भ० श्रीजिनहर्षसूरिभि श्रीबृहत्खरतरगच्छे।

(११८७)

पादुका पर

आर्या वोसरश्री कस्य पादुका

(११८८)

पादुकात्रय पर

॥ सं० १८६० वर्षे मि। मागशीर्ष कृष्णैकादश्यां। पा। प्रतिष्ठि॥

भा० श्रीअमृतधर्मगणि॥ श्रीगौतमस्वामीगणधरात्॥ व श्रीक्षमाकल्याणगणि।

(११८९)

पादुकात्रय पर

॥ सं० १८६० वर्षे। मि। मिगसर वदी ११। पा। का।

॥ भाजिनभक्तिसूरि ॥ श्रीपुंडरीकगणधरान् ॥ श्रीप्रीतसागरगणिः।

गर्भगृह के दाहिनी ओर देहरी में

(११७६)

श्रीपार्श्वनाथजी

संवत् १८६ (३) व। शा० १७५८ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे शुक्ल पक्षे १० तिथौ बुधवासरे श्रीपाली नगर वास्तव्य समस्त संघ समुदायकेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का। तपा गच्छे भ० श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिभि. प्रतिः ॥

(११७७)

श्रीमुनिसुव्रतजी

सं० १८८७ व। आषाढ शु० १० श्रीमुनिसुव्रत बिंबं बा। चूनी कारितं प्रतिष्ठितं जं० यु० प्र० श्रीनिहर्षसूरिभि·।

(११७८)

सं० १८८७ आषाढ शु० १० श्रीधर्मनाथ बिंबं बा

गर्भगृह के बाँयीं ओर की देहरी में

(११७६)

श्रीआदिनाथजी

१ ॥ सं० १८६३ व॥ माघ सित १० बुधे श्रीपालीनगर वास्तव्य समस्तसंघ समुदायेन श्रीआदि-
२ नाथ बिंबं कारापितं भ। श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ श्रीतपागच्छे ॥ श्री शुभं ॥

(११८०)

श्रीपार्श्वनाथजी

॥ सं० १८८७ रा। मि। आषा। सु। १० श्रीपार्श्वनाथ बिंबं से। रायमल्लेन कारितं प्रतिष्ठितं भ० श्रीनिहर्षसूरिभि. ॥

(११८१)

श्रीपार्श्वनाथजी

॥ सं० १८८७ व। मि। आषा। सु १० श्रीपार्श्वनाथ बिंबं

(११६५)

॥ श्रीजिनदत्तसूरि पा। श्रीसंघ का।

(११६६) १५२

कुएंड पर

॥ श्री नेमनाथाय नम ॥

१ ॥ श्रीबीकानेर तथा पूर्व बंगाला तथा कामरू देश
२ आसाम का श्री संघ के पास प्रेरणा करके रूपी
३ या भेला करके कुंड तथा आगोर की नहर बना
४ या सुश्रावक पुण्यप्रभाविक देव गुरुभक्ति
५ कारक गुरुदेव के भक्त चोरड़ीया गोत्रे सीपाणी
६ चुनीलाल रावतमलाणी सिरदारमल का पो
७ ता सिंघीयों की गुवाड़ में वर्सता मायसिंघ मेघ
८ राज कोठारी चोपड़ा मकसुदावाद अजीम
६ गंज वाले का गुमास्ता और कुंड के ऊपर दाद इ
१० केला बखतावरचंद सेठी बनाया। सं० १६७४
११ शाके १७८६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे भाद्रव
१२ मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ सोमवासरे ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(११६७) १५२

सं० १४३६ वैशाख सु० १३ सोमे श्रीनाहर गोत्रे सा० श्रीराजा पुत्रेण सा० भीमसिंहेन सा० पार्श्व बिं० का० प्र० बृहद्गच्छे श्रीमुनिशेखरसूरि पट्टे श्रीतिलकसूरि शिष्यै श्रीभद्रेश्वरसूरिभि

(११६८)

सं० १७०१ व। मा० सु० ६ पत्तन वा० प्रा० वृ० ज्ञा० वेन जयकरण भा० नानीं बहुला श्रीपार्श्व बिं० का० प्र० तपागच्छे श्रीविजयदेवसूरिभि ॥

(११६६)

स० १६६७ फा० सु० ५ वीजापाद वा० वृ० ऊकेश सा० कल्याण ना० श्री ममि बिं० का० प्र० तपाग
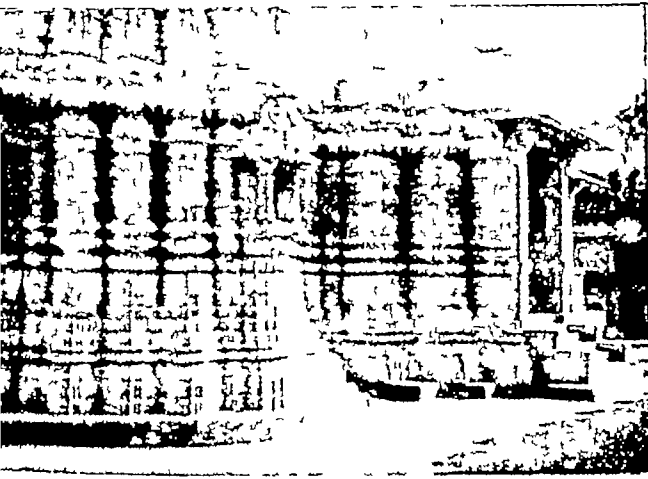
श्री नमिनाथ जिनालय (पृष्ठ भाग से)
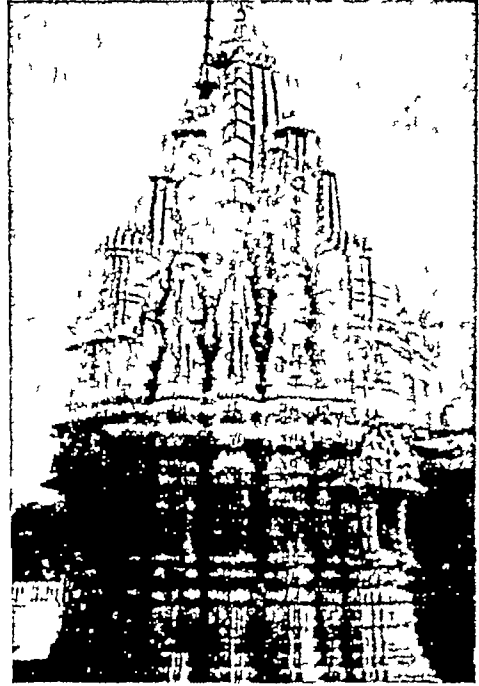
कलामय शिखर श्री नमिनाथ जिनालय
श्री नमिनाथ जिनालय परिचय प्र० पृ० ३०

श्री नमिनाथ जिनालय का बाहरी प्रवेशद्वार

श्री नमिनाथ जिनालय

श्री नमिनाथजी का शिखर

विश्वविश्रुत मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र बच्छावत
परिचय प्र पृ ८४
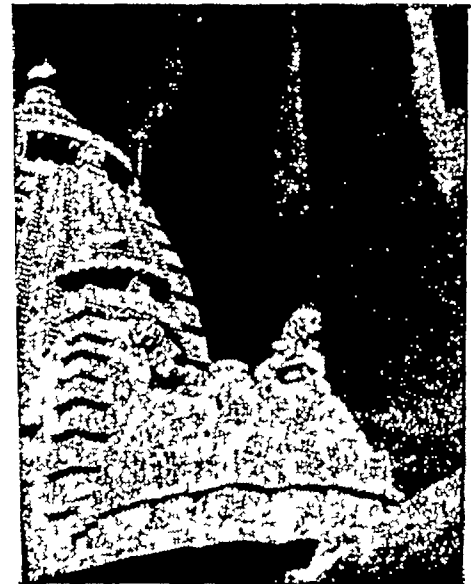
श्री चिन्तामणिजी
खेल मंडप का मधु-छत्र

प्रवेशद्वार
श्री नमिनाथ जिनालय बीकानेर

श्री भांडासरजी से नगर का दृश्य

धातु प्रतिमाओं के लेख

(११६०)

श्रीसंभवनाथादि पचतीर्थी

सं० १५४८ वर्षे प्राग्वाट श्रे० गोगन भा० राणी सुत वरसिंग भा० वीवू नाम्न्या भ्रातृ अमा नरसिंघ लोलादि कुटुंव युतया श्रीसंभव विंवं का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीइन्द्रनंदिसूरिभि.। पत्तना।

(११६१)

श्रीपद्मप्रभादि पचतीर्थी

सं० १५३३ वर्षे मार्ग्ग सुदि ६ उपकेश ज्ञातीयछोहरिया गोत्रे सा० समुधर पुत्रेण। सा० लालुकेन पु० वीझा भाडा वोहित्तादि युतेन। श्रीपद्मप्रभ विंवं का० प्र० तपा भ० श्रीहेमसमुद्रसूरि पट्टे श्रीहेमरत्नसूरिभि.। छ ॥ श्री ॥

(११६२)

ताम्र के यत्र पर

सं० १६३५ रा फाल्गुन सित ३ सोमे प्रतिष्ठितम् शुभं धारकस्य ताराचंद स (सुखं)

श्रीनमिनाथजी का मन्दिर

(लक्ष्मीनारायण पार्क)

पाषाण-प्रतिमाओं के लेख

(११६३)

मूलनायकजी

१ ॥ ६० ॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने गुरौ
भार्या वाल्हादे पुत्र मं० कर्मसी भार्या कउतिगदे
२ पुत्र राजा भार्या रयणादे पुत्र मं० पिथा म०
रमदे मं० जगमाल मं० मानसिंह प्रमुख
३ परिवार युतेन म० पिथाकेन स्वपिताम
प्रतिष्ठितं च वृ० ख० गच्छे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभि

(११६४)

॥ श्रीगौतमस्वामी पा। श्रीसंघ का।

चित्रविभूत मन्त्रीश्वर कर्मचन्द्र बच्छावत
परिचय प्र पृ ८४

श्री चिन्तामणिजी
खेल मंडप का मधु-छत्र
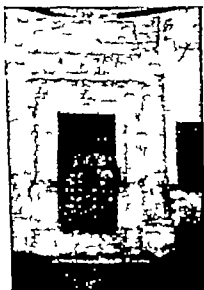
प्रवेशद्वार
श्री नमिनाथ जिनालय, बीकानेर

श्री भाण्डासरजी से नगर का दृश्य
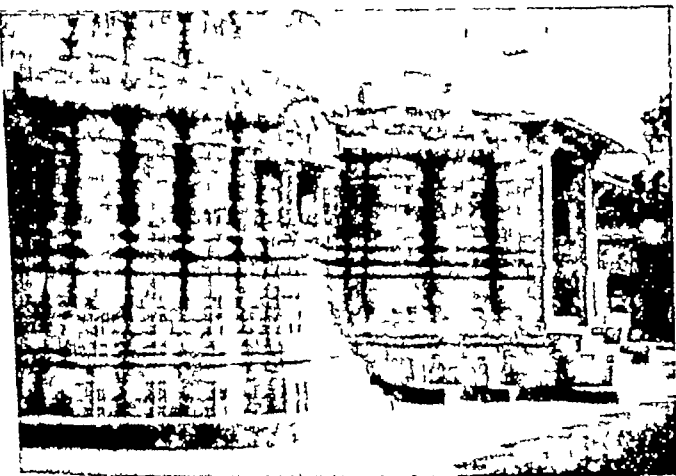
श्री नमिनाथ जिनालय (पृष्ठ भाग से)
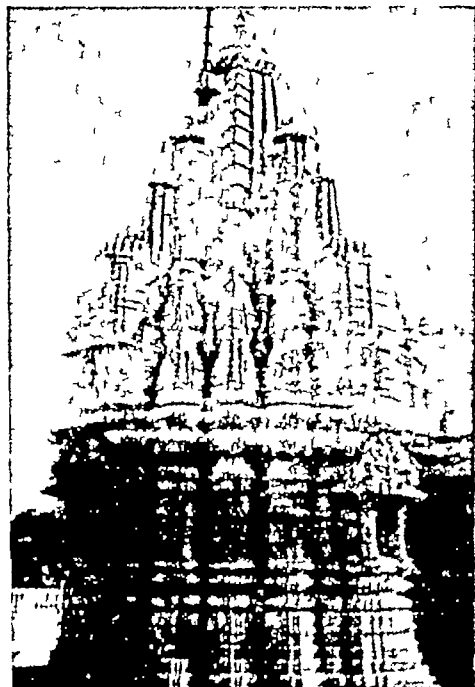
कलामय शिखर श्री नमिनाथ जिनालय
श्री नमिनाथ जिनालय परिचय प्र० पृ० ३०

श्री नमिनाथ जिनालय का बाहरी प्रवेशद्वार

श्री नमिनाथ जिनालय
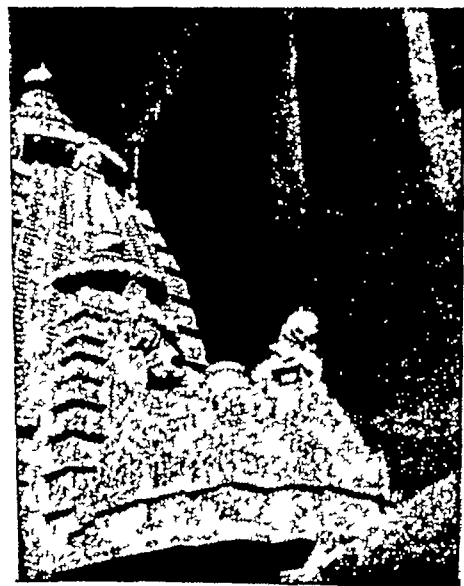
श्री नमिनाथजी का शिखर

श्रीमहावीर स्वामी का मन्दिर (वैदों का चौक)

मूलमन्दिर के लेख

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२०५) १५५

श्रीसुविधिनाथादि चौबीसी

संवत् १४८६ वर्षे मार्गशिर वदि ५ उपकेश ज्ञातीय श्रेष्ठि गोत्रे सा० देल्हा पुत्र केल्हण भा० सल्लखण दे पुत्र पोपा भ्रातृ त्रिभुवण भार्या लखमादे पुत्र सावूल सामंत। मेहा। मूला। पूना पूर्वज नि० १० सावूकेन श्री सुविधिजिनादिचतुर्विंशति पट्ट का० आत्म श्रेय से श्री उपकेश गच्छे। कक्कु० प्रतिष्ठित श्रीसिद्धसूरिभिः।

(१२०६)

श्रीपार्श्वनाथ चौबीसी

संवत् १३४१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ गुरौ ब० मोवाकेन ठ० अरिसींह श्रेयोर्थं श्रीपार्श्वनाथ प्रतिमा कारापिता बील्हू व। जयता। पाता।

(१२०७)

श्रीअरनाथजी १५५

सं० १५०५ वर्षे पोष सुदि १५ सुराणा गोत्रे स० सिखर भा० सिरियादे पु श्रीपालेन भा० सोमलदे पु० देवदत्त श्रीवंतादि सकु (टुं) बेन श्री अरनाथ बिं० का० प्र० श्री धर्मघोष। गच्छे श्रीविजयचन्द्रसूरि पट्टे भ० श्री पद्मशेखरसूरिभि श्री॥

(१२०८)

श्री अभिनन्दनजी पञ्चतीर्थी

सं० १५१८ वर्षे वैशाख सुदि १३ रवौ श्रीमाल-ज्ञातीय मं० गहिला भार्या भाल्हू पुत्र हापा केन पितृ मातृ श्रेयसे श्री अभिनन्दन पञ्चतीर्थी कारितं प्र० पिप्पलगच्छ त्रिभवीया श्री धर्मसुन्दरसूरि पट्टे श्रीधर्मसागरसूरिभि।

(१२००)

संवत् १७०७ वर्ष मसजर धनराफुलत्र सरापि आगमतण

(१२०१)

तेज बाईना श्रीसुविधि विं० का० प्र० च० तपा गच्छे सं० ६७

(१२०२)

सं० १६७१ वर्ष ललवाणी गोत्रे नगू० करसीत० श्रीनमि

(१२०३)

सं० १७०१ व रि० सु० ६ श्रा ० दोणीत। भा० श्रीवासुपूज्य बिं० का० प्र० श्रीविजयदेवसूरि तपा गच्छे।

(१२०४)

A संवत् १५१० मार्ग सुदि १० रव श्री मू० संघ श्रीजिनचंद्रदेवा सा० कील्ह पुत्र बीम्फा० माधव० लला० प्रण०

B श्रीजिनकुशलसूरीणा पादुका।

(१२१६)

श्री आदिनाथजी

सं० १४७२ वर्षे फागुन सुदि ६ शु० श्री ऊकेश गच्छे श्रेष्ठ गोत्रीय सा० देवा भा० वूल्हे पुत्र सा० समधर सीधर पिता माता श्रे० श्रीआदिनाथ बिंबं कारा० प्रति० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

(१२१७)

श्री चंद्रप्रभ स्वामी

सं० १४८६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ६ नवलक्षा गोत्रे सा। सोहा पुत्रेण सा। श्रीजाकेन स्व पितृन्य चोल्हा श्रेयोर्थं श्री चन्द्रप्रभ बिंब कारित। प्र० श्रीपद्मचन्द्र सूरिभिः ॥

(१२१८)

सं० १४९२ वर्षे ज्ये० सु० ११ प्राग्वाट सा० भीमा भा० कमी पुत्र सा० वाछाकेन भा० देऊ प्रमुख कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंब कारित प्र० तपागच्छनायक श्री सोमसुन्दरसूरिभिः ।

(१२१९)

सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि १ गुरौ उपकेश ज्ञातौ तातहड़ गोत्रे भारा सवाने सा० चाहड़ भा० धाणादे पु० सोमा मांजा भा० माणिकदे पु० पोपा जोधा आपादि युतेन पितृ श्रेय श्री सुमतिनाथ बिंब कारित श्री उपके० ग० श्री ककसूरि पट्टे श्रीदेवगुप्त सूरिभिः ॥

(१२२०)

अष्ट दल कमल की मध्य प्रतिमा पर

सं० १५५१ व०   प्र-गोपाल।

(१२२१)

सं० १५०६ वर्षे का० सुदि १३ गुरौ ऊकेश वंशे डाकुलिया गोत्रे सा० जिणदे सुत सा० रवा भार्या सारू पुत्र सा० केशव भार्या रंगा रुक्मिणि पुत्र जेठा मण्डलिक रणधीरादि परिवारेण श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री खरतर श्री जिनभद्रसूरि युगप्रवरेण।

(१२२२)

॥ सं० १५०६ वर्षे माघ वदि ८ उसायम ज्ञातीय। नाहर गोत्रे सा० जेल्हा पुत्र रवा पुत्र आजादिना आत्म श्रेयसे श्री संभवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मानंद सूरिभिः।

(१२०९)

श्री सीमंधर स्वामी

संवत् १५३४ वर्षे माह सुदि ५ दिने समाणा वासि ऊकेश ज्ञातीय सा० कर्मा सुत लाहा तत्पुत्र साधारणेन श्री सीमंधर स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः॥

(१२१०)

श्रीपार्श्वनाथजी

संवत् १४४९ वर्षे वैशाख सुदि ६ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय पितृ ऊदल मातृ धाधलदेवि श्रेय-से सुत सा० धर्माकेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारिता श्री देवचन्द्रसूरि पट्टे श्री पासचन्द्र सूरीणामुपदेशेन।

(१२११) 155

श्री सुमतिनाथजी

॥ संवत् १५७४ वर्षे माघ वदि १३ दिने श्री नाणावाल गच्छे ओसवाल ज्ञातीय राय कोठारी गोत्रे सा० गोगा भार्या नाहली सुत सलखा भा० सलखणदे पुत्र श्रीकर्ण सरवणादि स्व कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठि (त) म् श्री शातिसागरसूरिभि· ॥ श्री ॥ प्रमिलजगीन जा का वेडीआ । (१)

(१२१२)

श्री शान्तिनाथजी सपरिकर

सं० १२८५ ज्येष्ठ सुदि ३ रवौ पितृ श्रे० मोढा भ्रातृ बीरा श्रेयोर्थं आत्मपुण्यार्थं श्रेष्ठि सोमाकेन सभार्येण श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीरत्नप्रभसूरि शिष्येण

(१२१३) नाटा | 155 | बीका

सं० १५१० वर्षे मिगसर सुदि १० रवौ ओसवाल-ज्ञातीय खावही गोत्रे सा० कुमरा भा० कुमरश्री पु० सा० कडुआकेन आत्म पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कृष्णर्षीय श्री जयसिंह सूरि अन्वये श्री कमलचन्द्र सूरिभि ।

(१२१४) 155

॥६०॥ संवत् १३८० माघ सु० ६ सोमे ओसवाल-ज्ञाती ब्रह्म गोत्रीय साह ईशरेण स्व पितृ सा० थेहड तथा मातृ माल्हाही श्रेयार्थं श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारी श्री श्री तिलक सूरिभि ॥

(१२१५) 155

सं० १५१९ वर्षे माघ वदि ० ६ शनौ श्री ऊएस वंशे गाधी गोत्रे सा० धाधा भा० धाधल-दे पु० कांसा सुश्रावकेण भा० हास लदे तेजी पुत्र पारस देवराज सहितेन श्री अंचल गच्छ श्री जयकेशरसूरीणामुपदेशेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं श्री कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन॥

(१२०६)

श्री सीमधर स्वामी

संवत् १५३४ वर्षे माह सुदि ५ दिने समाणा वासि ऊकेश ज्ञातीय सा० कर्मा सुत लाहा तत्पुत्र साधारणेन श्री सीमंधर स्वामी बिंपं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहित सूरिभिः ॥

(१२१०)

श्रीपार्श्वनाथजी

संवत् १४४६ वर्षे वैशाख सुदि ६ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय पितृ ऊदल मातृ धाधलदेवि श्रेयसे सुत सा० धर्माकेन श्री पार्श्वनाथ पञ्चतीर्थी कारिता श्री देवचन्द्रसूरि पट्टे श्री पासचन्द्र सूरीणामुपदेशेन ।

(१२११) 155

श्री सुमतिनाथजी

॥ संवत् १५७४ वर्षे माघ वदि १३ दिने श्री नाणावाल गच्छे ओसवाल ज्ञातीय राय कोठारी गोत्रे सा० गोगा भार्या नाहली सुत सलखा भा० सलखणदे पुत्र श्रीकर्ण सरवणादि स्व कुटुम्ब युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठि (त) म् श्री शातिसागरसूरिभिः ॥ श्री ॥ प्रमिलजगीन जा का वेडीआ । (१)

(१२१२)

श्री शान्तिनाथजी सपरिकर

सं० १२८५ ज्येष्ट सुदि ३ रवौ पितृ श्रे० मोढ़ा भ्रातृ बीरा श्रेयोर्थं आत्मपुण्यार्थं श्रेष्ठि सोमाकेन सभार्येण श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीरत्नप्रभसूरि शिष्येण

(१२१३) नाटा | 155 | बीका

सं० १५१० वर्षे मिगसर सुदि १० रवौ ओसवाल-ज्ञातीय खावही गोत्रे सा० कुमरा भा० कुमरश्री पु० सा० कडुआकेन आत्म पुण्यार्थे श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री कृष्णर्षीय श्री जयसिंह सूरि अन्वये श्री कमलचन्द्र सूरिभिः ।

(१२१४) 155

॥६०॥ संवत् १३८० माघ सु० ६ सोमे ओसवाल-ज्ञाती ब्रह्म गोत्रीय साह ईशरेण स्व पितृ सा० थेहड़ तथा मातृ माल्हाही श्रेयार्थं श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मलधारी श्री श्री तिलक सूरिभि ॥

(१२१५) 155

सं० १५१६ वर्षे माघ वदि ० ६शनौ श्री ऊएस वंशे गाधी गोत्रे सा० धाधा भा० धाधलदे पु० कांसा सुश्रावकेण भा० हांस लदे तेजी पुत्र पारस देवराज सहितेन श्री अंचल गच्छ श्री जयकेशरसूरीणामुपदेशेन स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं श्री कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन ॥

सप्यमय मूलनायक प्रतिमा बैदों का महावीरजी

श्री गिरनारजी तीर्थपट बैदों का महावीर

) का शिलालेख (लेखाङ्क १११३)

शिखर का दृश्य (बैदों का महावीर
परिचय प्र पृ ११
(लेखाङ्क १२ २ से ११८१)

(१२२३) 157
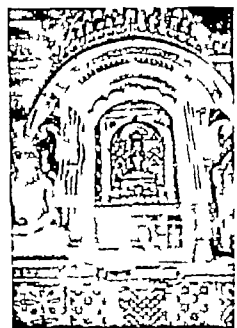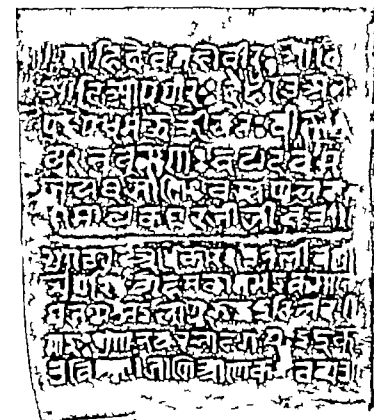
सं० १५३२ वर्षे ४ शनिवारे श्री उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे वैद्य शाखाया मं० माडा भार्या ऊमादे पु० भारमल्ल मातृ पु० नि० आ० श्रे० श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री ऊपकेश गच्छे ककुदाचार्य सं० भ० श्री देवगुप्तसूरिभिः।

(१२२४)

सं० १४८० वर्षे माघ बदि ५ गुरु हुब (ड) ज्ञाती धामी प्रीमलदे भार्या मीमाल सु० कर्ण सामंत भा० धारु भरतार श्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिं० प्र० श्री सिंघदत्तसूरिः

(१२२५)

सं० १५४३ वर्षे वैशाख वदि तिथौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० हेदा भा० श्रा० मेल्ह सुत जीवा भार्या सलखू सुत गांगा श्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुमतिसाधुसूरिभि श्रीतपा गच्छे॥

(१२२६) 157

सं० १५२७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ बुधे उप० ज्ञातीय दंधू गोष्ठिक व्यव मं० मोहण भा० मोहणदे पुत्र मं० रूपा भा० रामादे सरूपदे सहितेन आत्म श्रेयोरथ। शीतलनाथ बिंबं का० प्र० श्री चैत्रगच्छ भ० श्री सोमकीर्ति सूरि ॥

(१२२७)

स० १५१८ वर्षे माघ सु० २ शनौ जाऊड़िया गोत्रे सा। राघव पुत्र सं० सहजा तत्पुत्रेण सा। वैणेकेन पुत्र वीरदेवादि युतेन श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्री हेमहंससूरि पट्टे श्री हेमसमुद्रसूरिभि·

(१२२८)

सं० १५१० वर्षे माघ सुदि १२ शुक्र दिने श्री माल ज्ञातीय टाक गोत्रे सा० अर्जुन पुत्र सा० चारा तत्पुत्र सा० रेंडा तेन निज श्रेयोर्थं श्री शातिनाथ बिंब का० प्र० श्री जिनतिलक सूरिभि· श्री खरतर गच्छे॥

(१२२९)

श्री धर्मनाथादि चौवीसी

सं० १५७६ वर्षे वैशाख वदि १ तिथौ रविवारे श्री ओसवाल ज्ञातीय वयद गोत्रे मं० त्रिभुणा पु० सामंत भा० सुहडादे पु० गोपा देपाभार्या। स्व पूर्वज निमित्तं श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री ऊकेश गच्छे कुकदाचार्य संताने भ० सिद्धसूरि पट्टे भ० श्री कक्कसूरिभि ॥१॥

४ पित। बीकानेर वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां समस्त श्री संघेन श्री महावीर देव पट्टानुपट्टाविच्छिन्न परंपरायात् श्री उद्योतन सू
५ रि श्री वर्द्धमान सूरि वसति मार्ग प्रकाशक यावत् श्री जिनवल्लभसूरि श्री जिनकुशलसूरि श्री जिनराजसूरि श्री जिन माणिक्य सूरि यावत्
६ श्री जिनलाभ सूरि श्री जिनचंद्रसूरि श्री जिन हर्षसूरि बृहत् खरतर भट्टारक गच्छराज। यु। प्र। श्री जिनसौभाग्य सूरिभि प्रतिष्ठित॥

(१२३७)
श्री शीतलनाथस्वामी 160

सं० १६८४ वर्षे माघ सु० १० सोमे ओसवाल गोत्रे स० हर्षा पुत्र सामीदास भार्या सहजदे श्री शीतलनाथ प्रतिष्ठित तपागच्छ श्री विजय देव सूरिभि

(१२३८)

सं० १६३१ व। मि। वै। सु ११ ति। श्री वासुपूज्य जिन बिंब प्र। वृ। ख। भ। श्री जिन हंस सूरिभि कारित बीकानेरे॥

(१२३९)

श्री आदिनाथ बिंबं। स० १५७० वर्षे माघ सुदि

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२४०)
श्री मुनिसुव्रतनामादि चौवीसी 160

॥ संवत् १५०६ वर्षे माघ वदि ५ रवौ ओसवाल ज्ञातीय माहर गोत्रे सा० हांसा भार्या हेमादे पु० पुहसीह धनराज इत्यादि कुटुम्बेन निज पितृ पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रतनाथ। बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मार्णव सूरिभिः

(१२४१)

संवत् १६८५ वर्षे वैशाख सुदि १५ दिने महिमपुर वास्तव्य वृद्ध प्राग्वाट ज्ञातीय सा० सुखजी भार्या बालाम मा का० श्री धर्मनाथ बिंब प्र० व० तपा गच्छे भट्टा श्री विजयदेव सू० शि० पं० विजयचन्द्र न परिवृत्ते॥ श्रः॥

(१२४२)
श्री वासुपूज्यस्वामी

श्री वासुपूज्य सा० धमा भा० धपाइ सु० भरथम

(१२४३)
श्री सुमित्रत स्वामी

मुनि सुव्रत श्री विजय सेनसूरि

(१२४४)

॥ संवत १५१७ वर्षे माघ वदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छ श्री कुकुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञा० चिचट गोत्रे स० दादू पु० श्रीवंत पु० सुरजन पु० सोभा भा० सोभलदे पु० सिघा भा० सूरमदे युतेन मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः

(१२४५)

॥ सं० १५१७ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय दो० फाचिउ भा० हर्पू सुत सीवर भार्या अमकू आत्म श्रेयोर्थं श्री वासु पूज्य बिंबं कारापितं वृद्ध तपा गच्छे भ० श्री जिनरत्न सूरिभि प्रतिष्ठित ॥ श्री ॥

(१२४६)

कलिकुण्ड यंत्र पर

संवत १५३१ वर्षे फागुन सुदि ५ श्री मूल संघे भ० श्री जिनचंद्र श्री सिंहकीर्ति देवा प्रतिष्ठितं ।। आ० आगमसिरि क्षुल्लकी कमी सहित श्री कलिकुण्ड यंत्र कारापितं ॥ श्री कल्याणं भूयात् ॥

(१२४७)

सर्वतोभद्र यंत्र पर

स० १६१२ वर्षे मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चम्या ज्ञवारे सुश्रावक श्रेष्ठ गोत्रे वंश मु । धनसुखदासजी तत्पुत्री बाई जडाव संज्ञकया करापितं प्र। उपकेश गच्छे भ० श्री देवगुप्तसूरिणा श्री रस्तु ॥ सर्वतोभद्र नामक यंत्रमिदं ।

(१२४८)

धातु के यंत्र पर

स० १८२० ना वर्षे शाके १६८६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे बसत पञ्चमी शुक्ल पक्षे भौम वासरे सुश्राविका गणेश बाई प्रतिष्ठिते उद्यापने ॥

मन्दिर के पीछे दक्षिण की ओर देहरी में

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२४९)

श्री शांतिनाथजी

॥६०॥ संवत् १५२८ वर्षे वैसाख वदि ६ सोमवार । नाइलवाल गोत्रे सं० छाजभ संताने सं० खीमा पुत्र सा० धीरदेव तत्पुत्र सा० देवचन्द्र भार्या हरखू पुत्र रूपचन्द्रेण भार्या गूजरही युतेन स्व पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छे भ० श्री हेमहंस सूरि पट्टे श्री हेमसमुद्र सूरिभि ॥
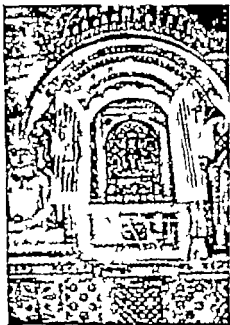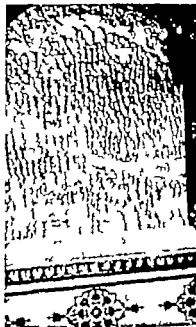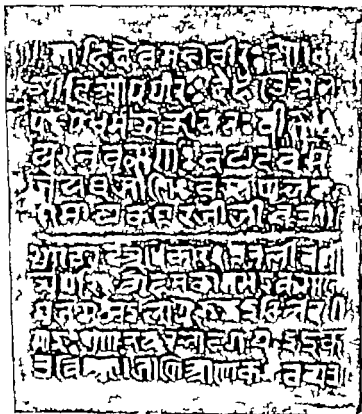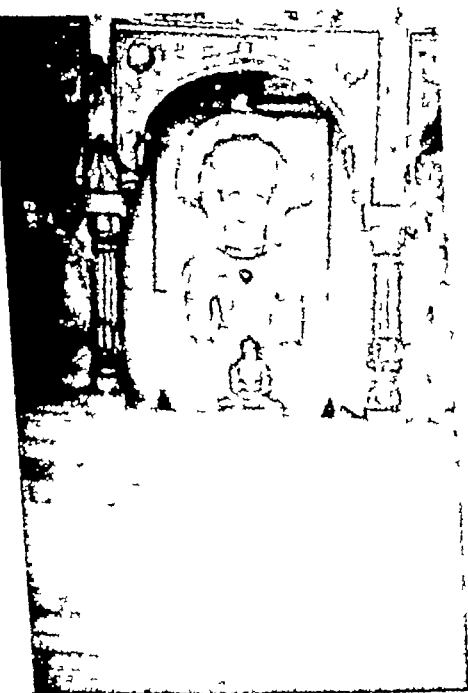
सहस्रफणा पार्श्वनाथ (वैदो का महावीरजी)

पच कल्याणक पट (वैदो का मह
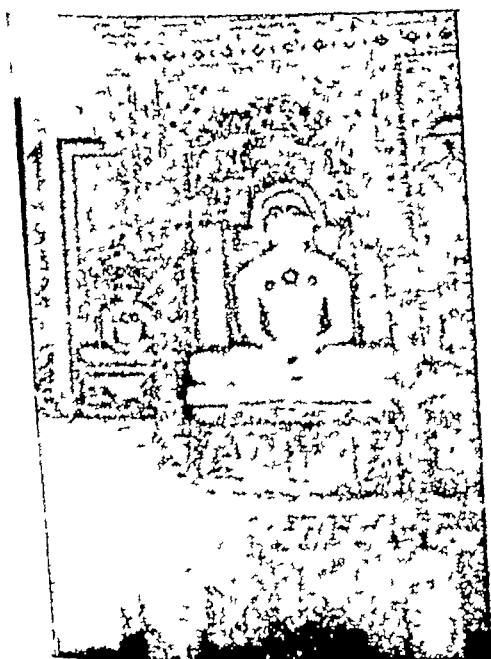
जागलकूप का शातिनाथ परिकर महावीर
जिनालय (डागोमें) लेखाङ्क १५४३

सव से वडी धातु-प्र
वैदो के महावीरजी की

(१२५०)

श्री धर्मनाथजी

स १८७ ज्ये० ब ११ ऊकेश ज्ञा० मांडा भा झाहू पु० ओजा जापाभ्यां भा० नामलदे वल्ही पितृव्य समरा अर्जुन भारमल प्रमुख कुटुम्ब युताभ्यां पितु श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री सूरिभिः वराहड़ि ग्रामे ॥

(१२५१) १६७

श्री शीतलनाथजी

स० १५२१ वर्षे आषाढ़ सुदि १० गुरौ श्री ऊकेश ज्ञातौ सुराणा गोत्रे सा० शिखर भा० खाखी पुत्र सा० भारमल्लेन पितु श्रेयोर्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित धर्मघोष गच्छे श्री पद्मानन्दसूरिभि ॥

(१२५२)

श्री सुमतिनाथजी चावीसी १६७

॥ स० १५२५ वर्षे फागुण सुदि ७ शनौ ऊपकेश ज्ञातीय श्री नाहर गोत्रे सा० झाटा मासहा संताने सा० देवराज पुत्र सा० खाखा भार्या....पुत्र सं० सुक्यसेन भार्या सूवा पुत्र स करमा सहितेन स्व पुण्याय श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठित श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे म० श्री जिनोदय सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१२५३)

श्री पद्मप्रभ स्वामी

॥ सं० १५५१ वर्षे वै० सु० १३ गुरौ प्रा० सा० महोपा भा० मिमिथि पुत्र सा लोलाकेन भा० रानू भ्रातृ फामा प्रमुख कुटुंब य (यु) तेन श्री पद्मप्रभ बिंब का० प्रतिष्ठित श्री तपा गच्छ नायक श्री सोमसुन्दरसूरि संताने गच्छ नायक श्री हेमविमल सूरिभिः श्री कमल कलश सूरि युक्तैः ॥

(१२५४)

श्री मुनिसुव्रत स्वामी

सवत् १५५८ वर्षे माह वदि २ मालोव ग्राम वासी प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० पदा भा० रामदेव दे पु० कमाकेन भार्या कस्मदे पु० जेसा हरदादि युतेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः ।

(१२५०)

श्री धर्मनाथजी

सं० १५२७ वर्षे० व ११ ऊकेश ज्ञा० भीखा भा काबू पु० खोखा आत्माभ्यां भा० नामल्दे वच्छी पितृव्य अमरा अर्जुन भारमल प्रमुख कुटुम्ब युताभ्यां पितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभिः वराहडिया गामे ॥

(१२५१) 167

श्री शीतलनाथजी

सं० १५२१ वर्षे आषाढ़ सुदि १० गुरौ श्री ऊपकेश ज्ञातौ सुराणा गोत्रे सा० सिखर भा० काकी पुत्र सा० भारमलेन पितुः श्रेयोर्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित धर्मघोष गच्छे श्री पद्माणंदसूरिभिः ॥

(१२५२)

श्री सुमतिनाथजी चौबीसी 167

॥ सं० १५२५ वर्षे फागुण सुदि ७ शनौ उपकेश ज्ञातीय श्री नाहर गोत्रे सा० जाल्हा मल्हा सताने सा० देवराज पुत्र सा० काला भार्या पुत्र सं० सुल्हणेन भार्या सूर्ली पुत्र स करमा सहितेन स्व पुण्याय श्री सुमतिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारितः प्रतिष्ठितं श्री रुद्रपल्लीय गच्छे श्री जिनराज सूरि पट्टे भ० श्री जिनोदय सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१२५३)

श्री पद्मप्रभ स्वामी

॥ सं० १५५१ वर्षे वै० सु० ११ गुरौ प्रा० सा० महीया भा० भिमिणि पुत्र सा० तोल्हाकेन भा० खेतू भ्रातृ फामा प्रमुख कुटुंब य (यु) तेन श्री पद्मप्रभ बिंब का० प्रतिष्ठित श्री तपा गच्छ नायक श्री सोमसुन्दरसूरि संताने गच्छ नायक श्री हेमविमल सूरिभि श्री कमल कलश सूरि युतै ॥

(१२५४)

श्री मुनिसुव्रत स्वामी

संवत् १५५४ वर्षे माह वदि २ भाऊीव ग्राम वासी प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० पदा भा० रान्हण दे पु० वेलाकेन भार्या कस्तूरदे पु० भेसा हीरादि युतेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं प्र० तपागच्छे श्री हेम विमल सूरिभिः ।

(१२४४)

॥ संवत् १५१७ वर्ष माघ वदि ५ दिने श्री उपकेशगच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने उपकेश ज्ञा० चिचट गोत्रे स० दादू पु० श्रीवंत पु० सुरजन पु० सोभा भा० सोभलदे पु० सिंघा भा० सूरमदे युतेन मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्क सूरिभिः

(१२४५)

॥ सं० १५१७ वर्ष वैशाख सुदि ३ सोमे श्रीमाल ज्ञातीय दो० फाबिड भा० हर्षू सुत सीधर भार्या अमकू आत्म श्रेयोर्थं श्री वासु पूज्य बिंबं कारापितं वृद्ध तपा गच्छे भ० श्री जिनरत्न सूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१२४६)

कलिकुण्ड यंत्र पर

संवत् १५३१ वर्षे फागुन सुदि ५ श्री मूल संघे भ० श्री जिनचंद्र श्री सिंहकीर्ति देवा प्रतिष्ठितं ॥ आ० आगमसिरि क्षुल्लकी रूमी सहित श्री कलिकुण्ड यंत्र कारापितं ॥ श्री कल्याणं भूयात् ॥

(१२४७)

सर्वतोभद्र यंत्र पर

स० १६१२ वर्षे मार्गशीर्ष कृष्ण पञ्चम्या भृवारे सुश्रावक श्रेष्ठ गोत्रे वैद्य मु। धनसुखदासजी तत्पुत्री बाई जड़ाव संज्ञकया करापितं प्र। उपकेश गच्छे भ० श्री देवगुप्तसूरिणा श्री रस्तु ॥ सर्वतोभद्र नामक यंत्रमिदं।

(१२४८)

धातु के यंत्र पर

सं० १८२० ना वर्षे शाके १६८६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वसत पञ्चमी शुक्ल पक्षे भौम वासरे सुश्राविका गणेश बाई प्रतिष्ठिते उद्यापने ॥

मन्दिर के पीछे दक्षिण की ओर देहरी में

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२४९)

श्री शांतिनाथजी

॥६०॥ संवत् १५२८ वर्षे वैसाख वदि ६ सोमवार। नाहलवाल गोत्रे सं० छाजभ संताने सं० खीमा पुत्र सा० धीरदेव तत्पुत्र सा० देवचन्द्र भार्या हरखू पुत्र रूपचन्द्रेण भार्या गूजरही युतेन स्व पितृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छे भ० श्री हेमहंस सूरि पट्टे श्री हेमसमुद्र सूरिभि ॥

(१२६०)

अष्टदल कमल मध्यस्थ श्री पार्श्व नाथजी

सा० झाला केन० पार्श्व बिंब का०

(१२६१)

श्री सुविधिनाथजी

स० १७६८ वै० सु० ६ सा० मगल जी भार्या राही सुविधि बिंब कारित ॥

(१२६२)

श्री शान्तिनाथजी

समत् १ —दि १३ गुरु ओसवाल गोत्रे सा० परमार्णद सस्य भार्या केसर दे पुत्र सा० करमसी किसनदास केशवजी वर्धमानदास पदारथ श्री शांतिनाथ बिंब प्रतिष्ठित भट्टारक श्री नेमिचन्द्र सूरि। महाराजा श्री सरूपसिंह विराज्यत कारापितं मध्ये ॥

(१२६३)

स० १७५५ ज्येष्ठ सुदि ६ श्री पा० दुरगा दे कराइ

(१२६)

स० १५८२ रत्नाइ कारा

मूल मन्दिर से पीछे की देहरी में

पाषाण प्रतिमादि क लेख

१२६५

पंचकल्याणक पट्टपर

(१) समत् १६०८ वर्षे शाके १७ ० माघ शुक्ल ८ तिथौ हिमांशुवासरे ओसवंश वृद्ध शाखायां वैद्य मुहता समस्त श्री संघ समास्तेन श्री नेमि जिन
(२) न स्य पंचकल्याणकानां स्वरूप कारापित प्रतिष्ठितश्च श्री मधुपकेशगच्छ भट्टारक श्री देवगुप्तसूरिभिः ॥

(१२६६)

गणधर पादुकाओं पर

(१) सवत् १६०८ वर्षे माघ शुक्ल पंचम्यां ८ तिथौ चन्द्रवासरे ऊकेश वंश वृद्ध शाखायां श्रेष्ठगोत्रे वै

(१२५५)

श्री शान्तिनाथ जी

सं० वर्षे १५०५ आषाढ सुदि ६ रवौ उपकेश ज्ञातौ हरियड गोत्रे सा० देपा भा० देल्हणदे पु० राजा भा० राजलदे पु० हरपाल युतेन जीवत स्वामि प्रभु श्री श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसागर सूरि पट्टे श्री गुण समुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ सगीयाणा नगरे।

(१२५६)

श्री संभवनाथजी 163

सं० १५५५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ बुधवारे बहरा गोत्रे उपकेश ज्ञातौ सं० रूदा पु० सं० हीरा भा० पाल्हू पु० मोकलेन भा० मोहणदे पु० अज्ञा विज्ञा ऊदा स० स्वपू० श्री संभव बिंबं का० प्र० श्री उपकेश गच्छे कुकुदा चार्य संताने श्री देवगुप्त सूरिभिः विक्रमपुरे ॥

(१२५७)

श्री सुविधिनाथजी 163

सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि २ श्री ऊकेश वंशे श्री दरडा गोत्रे सा० दूल्हा भार्या हस्तू पुत्र सा० मूलाकेन भा० माणिकदे भ्रातृ सा० रणवीर सा० पीमा पुत्र सा० पोमा सा० कुंभादि परिवार युतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्र सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभि ॥

(१२५८)

श्री आदिनाथजी 163

सं० १३५४ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे बोहिथिरा गोत्रे सा० तेजा भा० वर्जू पुत्र सा० माडा सुश्रावकेण भार्या माणिक दे पु० ऊदा भा० उत्तमदे पुत्र सधारणादि परिवार युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचन्द्र सूरिभि प्रतिष्ठित ॥

(१२५९)

अष्टदल कमल पर 163

सं० १६६४ वर्षे फाल्गुन शुक्ल पश्चमी गुरौ विक्रम नगर वास्तव्य । श्री ओसवाल ज्ञातीय फसला। गोत्रीय । सा० हीरा। तत्पुत्र सा० मोकल । तत्पुत्र अज्ञा । तत्पुत्र दत्तू। तत्पुत्र सा० अमीपाल भार्या अमोलिकदे पुत्र रत्नेन सा० लाखाकेन। भार्या लखमादे। लाछलदे पुत्र सा० चन्द्रसेन। पूनसी सा० पद्मसी प्रमुख पुत्र पौत्रादि परिवार सहितेन श्री पार्श्व बिंबं अष्ट-दल कमल संपुट सहित कारितं प्रतिष्ठितं श्री शत्रुंजय महातीर्थे। श्री बृहत् खरतर गणाधीश श्री जिनमणिक्य सूरि पट्टालंकरक। श्री पातिसाहि प्रति बोधक युग प्रधान श्री जिनचन्द्र सूरि ज्यमानं चिरं नंदतु आचन्द्रार्कं ॥

(१२७२)

श्री कुंथुनाथजी

स्वस्ति श्री ॥ संवत् १५६३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ शुभ दिने सौमे उत्तराषाढा नक्षत्रे शुभ नन्दि परे (?) श्री सुराणा गोत्रे सा० सीका धर्मपत्नी भा० नाथी श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारापित प्र० भ० श्री सिद्धिसूरिभिः

मूल मन्दिर से निकलते बांयें हाथ की ओर देहरी में

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२७३)

स० १४८८ फागुन वदि १ दिने श्रीमाल वंसे बंग (? ग) गोत्रे ठ० नापा भा० धारली त्सुप्रै ठ० धापा धीरा पेढ़ पितपाखे श्री नेमि बिंबं कारापितं खरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि गणधरैः प्रतिष्ठित ॥

(१२७४)

श्री कुन्थुनाथजी सपरिकर

स० १४२१ प्राग्वाट ज्ञा० मह० धणपाल भा० सिंगारदे पुत्र गोवा मेघाभ्यां पित्रो श्रे० श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठित रुद्रपल्लीय गच्छे श्री गुणचन्द्र सूरिभिः

(१२७५)

स० १३८५ वर्षे फागुन सुदि ८ श्री उपकेश गच्छे श्री कुंकुदाचार्य संताने श्रुवणाग गोत्रे सा भायपा हरदेवटी पु० सा० देढ पिता श्रेयसे श्री महावीर बिंबं का० प्र० श्री कक्कसूरिभिः

(१२७६)

सं० १५०३ वर्षे आषाढ़ सुदि गुरौ दिने उकेश न्याति भ्रामल्ल गोत्रे सं० साम भा० जासू पु० धमा० भा० धामलदे पु० देदा भा० देवलदे । लखमण कुशाला स० श्री सम्भवनाथ बिंबं कारा० प्र० पल्ली० श्री यशोदेवसूरिभि ॥

(१२७७)

स० १५२२ वर्षे माह सु० ६ शनौ प्राग्वाट ज्ञातीय मं० धापा भा० मांकू सु० मनाकेन भा० मचकू सु० वद्धमान गंगदास नारद आसधर नरपति लखमण सहितेन आत्म श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंब कारित प्र० श्री तपापक्षे भट्टारक श्री जिनरत्न सूरिभिः सहूआला वास्तव्य ॥

(१२७८)

स० १४५८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० तिथौ शुक्रे पापेडी गोत्र सा० पाहड़ भा० नाकू पित्रो श्रयसे कीनाकेन श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्र० मलधारि श्री मतिसागर सूरिभिः ॥

(२) वद्य मुहता समस्ते श्री संघेन श्री पार्श्वनाथस्य गणधराणा पादाब्जा कारापिता। प्रतिष्ठिता श्रीम

(३) दुपकेश गच्छे युगप्रधान भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभि ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु । श्री।

(१२६७) 165

सिद्धचक्रमंडल शाश्वतजिनचरण सह

॥ सं० १६०५ वर्षे माघ शुक्ल ५ पंचम्यां तिथौ चन्द्रवासरे उएश वंशे वृद्ध शाखाया श्रेष्ट गोत्रे वद्य मुहता समस्त श्री संघेन श्री सिद्धचक्रस्य मंडल कारापितं। प्रतिष्ठितं श्री मदुपकेश गच्छे युगप्रधान भट्टारक श्री देवगुप्त सूरिभि

(१२६८) 165

गणधर पादुकाओं पर

सं० १६०५ रा माघ शुक्ल ५ चन्द्रवासरे उएश वंशे वृद्ध शाखाया श्रेष्ट गोत्रे वैद्य मु। समस्त श्री संघेन श्री आदिनाथ वर्द्धमान जिनेन्द्रयो गणधराणा पादाब्जा कारापिता प्रतिष्ठित। श्रीमदुपकेश गच्छे भ। श्री देवगुप्त सूरिभि श्रीरस्तु ॥

(१२६६) 165

श्री गिरनार तीर्थ पट पर

॥ संवत् १६०५ वर्षे माघ शुक्ल ५ तिथौ विधुवासरे उएश वंशे वृद्ध शाखाया वैद्य मुं। समस्त श्री संघ सहितेन। श्री गिरनार तीरथस्य स्वरूपः कारापित प्रतिष्ठितश्च श्रीमदुपकेश गच्छे भट्टारक श्री देवगुप्त सूरीश्वरैः ॥

(१२७०)

श्री गौतमस्वामी की प्रतिमा पर

वि ॥ सं० ॥ १६४५ मिती मार्गशीर्ष शुक्ला १० भृगुवासरे श्री गौतमस्वामी मूर्त्ति श्री संघेन कारापित

धातु प्रतिमा लेखाः

(१२७१) 165

श्री आदिनाथजी

॥ संवत् १५५१ वर्षे माह वदि २ सोमे उपकेश ज्ञातीय लटवड़ गोत्रे सा० मोल्हा भा० माणिकदे पु० सा० टोहा भार्या वारादे पुत्र गोरा भा० लाछ ... पा युतेन आत्म पुण्यार्थे आदिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं मलधार गच्छे भ० गुणकीर्त्ति सूरिभि

(१२८८)

धातु के यंत्र पर

२० १८२० रा वष शाके १६८८ (१५) प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुक्ल पक्षे माह मास पंचमी तिथौ सोमवासरे शुभाधिका गुलाल बाई प्रतिष्ठितं स्थापने ॥

(१२८६) -

दुरितारि विजय यंत्र पर

स० १८७६ मि। चै। सु। १५ दिने पं० ज्ञानानंद मुनि प्रतिष्ठित ॥ श्री दुरितारि विजय यंत्रोयं अपर नाम सर्वतोभद्र। चब सु० हुकमचंदकस्य सदा कल्याण सुखकारको भूयात् श्री इन्दोर नगरे॥ पं० महिमाभक्ति मुनि लिखित श्री रस्तु लेखक पूजकयो ॥

पाषाण प्रतिमा लेख

(१२६०)

संखेश्वर पार्श्वनाथजी

सुबे श्री बीकानेर श्री शंखेश्वर प्रतिष्ठित च

मूल मन्दिर से निकलते दाहिनी ओर देहरी में धातु प्रतिमाओं के लेख

(१२६१)

श्री पार्श्वनाथजी

(A) ॥ संवत् १५२७ वर्षे वैशाख वदि ११ सुभे श्री मूलसंघे भ० श्री सकल कीर्तिस्तत्प० भ० श्री भुवनकीर्ति उपदेशात् हु० सुभ गोत्रे व्य० माहव भार्या मनकू सुत आसा भार्या राजू। भ्रात सूरा भार्या शिवा गोमती भ्रात भार्या सहितयरे सुत भरमा कारापित श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र नित्यं प्रणमति ॥

(B) श्रीमूल संघे भ० श्री भुवनकीर्ति व्यव० आसा सूरा शिवा नित्य प्रणमति

(१२६२)

सिंहासन पर

॥ ६० ॥ संवत् १७२७ वर्षे श्रावण मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया तिथौ भृगुवारे श्री विजय गच्छे श्री पूज्य श्री कल्याणसागर सूरि तत्पट्टे श्रीपूज्य श्री सुमतिसागर सूरिभिः श्रीजयपुरवरे महाराजा राजा श्री रामसिंघ विजयराज्ये श्री संघेन सिंघासन कारापितः श्री महावीरस्य ॥ लि। खेत ऋषि आत्मार्थ ॥ सघ समस्त श्रेयकारा ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याण मस्तु शुभं भूयात् ॥ सोरी गणेश सूत्रकार कसारा मानजी सुत परताप कृत पदमराजा ॥

(१२७९)

सं० १५०७ वर्षे फा० ब० ३ बुध नवलक्ष शाखा सा० रतना पु० पाचा पु० जिणदत्तेन फामण पु० पार्श्व श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री जिनसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१२८०)

सं० १५७२ वर्षे सा० राजा० भा० गुरादे पु० सा० भोजराज उदिराज भोश्र वच्छराज श्री खरतरगच्छ श्रीजिनहंससूरि प्रतिष्ठितं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं पुण्यार्थं

(१२८१)

॥ संवत् १५०८ वैशाख सु०५ उपकेश गच्छे सूरुआ गोत्रे सा० अमरा पुत्री रूअड आत्म पुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत बिं० प्रति० श्री कक्कसूरिभि· ॥

(१२८२)

सं० १५३२ (१३) वर्षे फ० ६ हंसार कोट वासि प्राग्वाट मं० बाघा भा० गांगी पुत्र सं० सधाकेन भा० टमकू० पुत्र समधर कुभा राणादि युतेन श्री कुथु बिंबं का० प्र० श्री रत्नशेखर सूरि पट्ट तपागच्छेश श्री लक्ष्मीसागर सूरिभि· श्री रस्तु ॥

(१२८३)

स० १५२४ वर्षे माग० वदि ५ सोमे प्रा० ज्ञातीय व्यव० सोमा भा० चापलदे पु० मोल्हा भा० माणिकदे पु० पेथा० धना जेसिंघ धमसी युतेन स्वश्रेयसे श्री मल्लिनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री विजयप्रभ सूरिभि

(१२८४)

सं० १५०५ वर्षे कस रालाट। गोत्रे सा० कपूरा भार्या वीसल संभवनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं , जिनभद्रसूरिभिः

(१२८५)

सं० १५?८ मार्गसिर वदि १२ लिगा गोत्रे सा० सायर पु० सीहा भा० राणी पु० बीभा खेवपालाभ्यां श्री सुमतिनाथ बिंबं भ्रातृ पुण्यार्थ कारितं प्रतिष्ठितं श्री सूरिभि

(१२८६)

१३३६ मू० संघे वारू पीरोहत देव।

(१२८७)

सं० १५५१ मूल

(११०१) ५६२, (बीकानेर) १७०

॥ सं० १५२८ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ तीज दिने बुधवारे ॥ श्रीतपगच्छ गोत्रे सा० बोहिथ पद्म भा लाछी पुत्र कजू भा० रूपी आत्म श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री कक्कसूरिभि

(११०२)

सं० १५०४ वर्षे मार्गसिर सु० ६ सोमे उपकेश ज्ञातीय बोहरिया गो० सा० बोहिथ भा० सुहमी पु० सा० फलधू आत्म पु० श्री शीतलनाथ बिंब का० प्र० श्री पूर्णचन्द्र पू० भ० श्री सागरचन्द्र सूरिभि

(११०३) १७०

॥ सं० १५२६ वर्षे वैशाख व० ६ श्री उपकेश ज्ञातौ काला गोत्रे सा० मूला भा० श्री० माऊ नरपति पु० नगराज सा० अपमल मात पितृ श्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारित श्री अंचल गच्छे प्रतिष्ठितं श्री जयकेशर सूरिभिः गा० ७

(११०४) १७०

सं० १५११ वर्षे माघ वदि ६ गुरौ उप० सुहरा गोत्रे सा० सु गा भा० देवलदे पु० सिंघा भा० सूरमदे पुत्र मोखा युतेन स्वश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० पूर्णिमा पराख्य० श्री जयभद्र सूरिभिः ॥ छ ॥

(११०५)

सं० १५४० व० वैशाख सुदि १० बुधे श्री काष्ठा संघे भ० श्री सोमकीर्ति प्र० मङ्गेरा ज्ञा० कामिक गोत्रे सा० ठाकुरसी भा० रूखी पुत्र योधा प्रणमति ॥

(११०६)

सं० १७०१ मा० सु० ६ पत्तन वा० सा० मंगल सु० सा० रत्नजीना० श्री शांति बिं० का० प्र० भ० श्री विजयदेव सूरिभिस्तपा गच्छे ॥

(११०७)

संवत् ११२१ व० मो क योमे। श्रीमाली ज्ञा० ज० हीरविजय सूरि) प्रतिष्ठितं

(११०८)

सं० १७१० वै० सु० ६ रवौ श्री विजयदेवसूरि प्र

(११०९)

सं० ११८२ श्री काष्ठा संघे भ० विजयसेन अग्रवाल मीतल (मीतल) गोत्रे रावदास प्रणमति

(१११०)

को। माहेश म श्री जिनराज ।

(१२६३)

॥ सं० १५२१ वर्षे वैशाख सु० १३ सोमे उपकेश ज्ञा० लोढा गोत्रे सा० वील्हा भा० रोहिणी पु० वुहरा भा० लखमश्री पु० सादाकेन भा० शृंगार दे पु० उदयकर्ण युतेन मातृ पितृ श्रेयसे श्री आदिनाथ विं० का० प्र० तपा गच्छे श्री हेमसमुद्रसूरिभिः

(१२६४)

संवत् १५४२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ शनौ भ० श्री जिनचंद्र सभ० श्री ज्ञानभूषण सा० ऊहड्ड भा० रा० नारायण

(१२६५)

सं० १५०४ वर्षे मार्गशिर सु० ६ सोमे उपकेश ज्ञातीय छोहरिया गो० सा० वोहित्थ भा० वुहश्री पु० सा० फलहू आत्म पु० श्री शीतलनाथ विंवं का० प्र० श्री वृहद्गच्छे पू० भ० श्री सागर-चन्द्र सूरिभिः

(१२६६)

॥ संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे अमरा पुत्र श्रे० छाडाकेन भार्या सिद्धि पुत्र श्रे० झाझण सामलल सरजण अरजुनादि परिवार युतेन श्री श्रेयास विंवं कारिता प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्र (सूरिभिः)

(१२६७)

संवत् १५२८ वर्षे आषाढ़ सु० २ गुरौ श्रीमाली वंशे सा० फाफण भा० भीमिणि तत्पुत्र सा० मोकल सुश्रावकेण भा० वहिकू परिवार सहितेन स्वश्रेयार्थं श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्र सूरिभि. ॥

(१२६८)

सं० १५३४ वर्षे माह सुदि ६ शनौ ऊके० मूंदो० गो० साढ़ा भा० नेतू पु० ध आभा महिया भा० कान्ह पु० गंगा भा० लिक्ष्मी पु० चांपा भा० चापलदे पित्रौ श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभ विंबं का० प्रति० श्री वृहद्गच्छे श्री वीरचन्द्रसूरि पट्टे श्रीधनप्रभसूरिभि. ॥

(१२६६)

सं० १४८६ वैशाख सु० १० कोरंट गच्छे ऊ० ज्ञातौ सा० लाहड पु० देवराज भा० लूणी पु० दशरथेन पित्रौ श्रेयसे श्री शीतल विंवं का० प्रति० श्रीनन्नसूरि पट्टे श्री कक्कसूरिभिः

(१३००)

सं० १४७६ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे बलडिया गोत्रे सा० छाहड संताने सा० ऊदा भा० वीरिणी पुत्रेण संघपति साल्हा पु० मोलू श्रेयसे श्री शांतिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री मलधारि श्री विद्यासागर सूरिभि. ॥

(१३१७)
श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४८५ वर्षे मागसिर वदि २ श्री ऊप० वीरोलिया गोत्रे सा० हरपति पु० जयता भा० जयणी पु० हापाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशो देव सूरिभिः

(१३१८)
श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५०६ फा० सु० ६ ऊ० ज्ञा० से विवाडेचा गो० सा० वीरम भा० कर्पू पु० देल्हाकेन भा० मानिकि पु० तोल्हा ऊधरण मेघा स० श्री संभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः

(१३१९)
सपरिकर श्री शांतिनाथजी

सं० १२६६ (?) फागुण सुदि ६ सोमे मे० नयणा भा० नयणादेवि पुत्रेन (?) श्री शांति नाथ बिंबं श्री जिनसिंह सूरिणामुपदेशेन कारिता

(१३२०)
श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

स० १५०४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ३ सोमे उप ज्ञा० वाकड़िया गोत्रे सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे पु० मोहा भा० आसल दे पु० पुत्र आसेन आत्मा श्रे० से श्री सुविधिनाथ बिंब का० प्र० वृहद्गच्छे भ० श्री धर्मचन्द्र सूरि पट्टे भ० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१३२१)
श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

॥६०॥ सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने ऊकेश वंशे सखवाल गोत्रे सा० कोचर सूनु हीरा पुत्र सा० सिहरा भार्या पु० सा० ठाकुर देपा राजपुत्रेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारि० प्रति० खरतर गच्छाधीश श्री जिनभद्र सूरि युगप्रधानवरैः

(१३२२)
सपरिकर श्री सुमतिनाथजी

स० १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ ऊकेश ज्ञा० भ० नीमा भा० भागल पुत्रेण साह भीसल्लन श्री सुमतिनाथ बिंब मातृ पितृ श्रे० का० श्री प्रभाकर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं च ॥

(१३११)

१६६१ शीतल ' ' बीतल दे।

(१३१२)

श्री अम्बिकामूर्त्ति पर

सं० १३८१ वैशाख व० ५ श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्यैः श्री जिनकुशलसूरिभि रंबिका प्रतिष्ठिता॥

शिलापट्ट पर

(१३१३)

(1) माहिदेवः महावीर' आदि
(2) आदि आप पीरः देहरउ अनू
(3) परूपधम क्रुकी यत. बीकान
(4) यर नव राण' वयद वस
(5) जेयं यजाणि व स्तपाल
(6) कसमाय कपूर जी जीवउ.
(7) गुरेटाट अधिकारः पूतली वणी
(8) अपारः अहम कामभ इकसाल
(9) पूज मजइ लायक हुइतिलव ॥
(10) माइः गुण नयरन्नावगयः इद्रक
(11) उ विमाण जाणि आणकम ठव्यउ

भण्डागारस्थ धातु प्रतिमाओं के लेख

(१३१४)

श्री सुमतिनाथादि पचतीर्थी

सं० १४८५ वर्षे माघ वदि १४ बुधे नवलखा गोत्रे स० लोला सुतेन स० रामाकेन निज भ्रातृ भीखा श्रेयो निमित्तं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री हेमहंस सूरिभिः

(१३१५)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५२५ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उपकेश ज्ञा० गोष्ठिक गोत्रे सा० देदा भा० देऊ पु० धीणा भा० धारलदे पु० केल्हा देवराज शिवराज सीहाकेन समस्त सकुटुंब पुण्यार्थं श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णिमा पक्षीय भ० श्री जयप्रभ सूरि पट्टे भ० श्री जयभद्र सूरिभि'

(१३१६)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी

१४६३ वै० सु० ३ प्रा० ताणा वासी व्य० जाणा सुत भीमाकेन भ्रातृ खीमा अजा श्रेयसे सुमति बिंबं का० प्र० श्री सोमसुन्दर सूरिभि

(१३२६)

श्री पार्श्वनाथजी २ काउसग्गियासह

स० ११०४ अषाढ़ सु० ६ बि केन साथ

(१३३०) 174

श्री कुंथुनाथादि पंचतीर्थी

सं १५०० वर्षे मार्ग व० २ ऊपकेश ज्ञातौ सुचिंतित गोत्रे सा० सहजा भा० मील्हा पु० साह साधुकेन पित्रो श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंब का० प्रति० श्री ऊपके० ककुदाचा० श्री ककसूरिभि

(१३३१)

सपरिकर श्री पार्श्वनाथ

सं० १३६२ वर्षे फागुण वदि ५ श्री पल्लिवाल—गच्छे से० पूरदेव पु० गजा भा० गहड पारस बिंब प्रतिष्ठित श्री सूरि

(१३३२)

श्री पार्श्वनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १३१६ वर्षे माह वदि ४ रवौ अममति भाविकया पु० छीत सहितया स्वश्रेयसे पार्श्व बिंबं कारित प्रतिष्ठितं जयदेव सूरिभिः

(१३३३)

श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

स० १५६८ वर्षे माह सुदि ५ दिने प्रा० सा० सायर पुत्र सा० फालू भा० भापू पुत्र सा० वीरसेन भा० वील्हणदे पुत्र मोका भाखर युतेन श्री संभव बिंबं कारितं प्र० श्री जयकल्याण सूरिभिः

(१३३४)

सपरिकर

सं० १४५४ (?) वर्षे माह गोत्रे सा० आम्हा पुत्र सा० धाल्हाकेन पित्रो श्रेयसे श्री बिंबं कारितं प्र० म० श्री मतिसागर सूरिभिः

(१३३५)

सपरिकर श्री नेमिनाथजी

॥ स० १२८८ माघ सु० ६ सोमे निवृत्ति गच्छे मे चौहरि सुत यसहडेन देल्हादि पितर श्रेयसे नेमिनाथ कारितं प्र० श्री शीलचन्द्र सूरिभिः

(१३११)

१६६१ शीतल वीतल दे।

(१३१२)

श्री अम्बिकामूर्त्ति पर

सं० १३८१ वैशाख व० ५ श्री जिनचन्द्रसूरि शिष्यैः श्री जिनकुशलसूरिभि रंविका प्रतिष्ठिता॥

शिलापट्ट पर

(१३१३)

(1) माहिदेवः महावीरः आदि
(2) आदि आप पीरः देहरउ अनू
(3) परूपधम कुकी यत. बीकान
(4) यर नव राण' वयद वस
(5) जेयं यजाणि. व स्तपाल
(6) कसमाय कपूर जी जीवउ
(7) गुरेटाट अधिकारः पूतली वणी
(8) अपार. अहम कामभ इकसाल
(9) पूज मजइ लायक हुइतिलव ॥
(10) माइः गुण नयरन्नावगयः इद्रक
(11) उ विमाण जाणि आणकम ठव्यउ

भाण्डागारस्थ धातु प्रतिमाओं के लेख

(१३१४)

श्री सुमतिनाथादि पचतीर्थी

सं० १४८५ वर्षे माघ वदि १४ बुधे नवलखा गोत्रे स० लोला सुतेन स० रामाकेन निज भ्रातृ भीखा श्रेयो निमित्तं श्री सुमतिनाथ विंवं कारितं प्र० श्री हेमहंस सूरिभिः

(१३१५)

श्री आदिनाथादि पचतीर्थी

॥ सं० १५२५ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे उपकेश ज्ञा० गोष्ठिक गोत्रे सा० देदा भा० देऊ पु० धीणा भा० धारलदे पु० केल्हा देवराज शिवराज सीहाकेन समस्त सकुटुंब पुण्यार्थं श्रेयसे श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णिमा पक्षीय भ० श्री जयप्रभ सूरि पट्टे भ० श्री जयभद्र सूरिभिः

(१३१६)

श्री सुमतिनाथादि पचतीर्थी

१४६३ वै० सु० ३ प्रा० ताणा वासी व्य० जाणा सुत भीमाकेन भ्रातृ खीमा अजा श्रेयसे सुमति विंवं का० प्र० श्री सोमसुन्दर सूरिभिः

(१३१७)
श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४८५ वर्ष मागसिर वदि २ श्री ऊप० वीरोळिया गोत्रे सा० इरपचि पु० जयता भा० अचयणी पु० हापाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशो देव सूरिभि:

(१३१८)
श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५०६ फा० सु० ६ ऊ० ज्ञा० से मिवाड़ेचा गो० सा० वीरम भा० कर्णू पु० देल्हाकेन भा० माणिकि पु० तोल्हा छम्परण सेषा स० श्री सभवनाथ बिंबं का० प्र० श्री संडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः

(१३१९)
सपरिकर श्री शांतिनाथजी

सं० १३६६ (?) फागुण सुदि ६ सोमे श्रे० नयणा भा० नयणादेवि पुत्रेन (?) श्री शांति नाथ बिंब श्री जिनसिंह सूरिणामुपदेशेन कारिता

(१३२०)
श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १५०४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ३ सोमे उप ज्ञा० वोकड़िया गोत्रे सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे पु० मांडा भा० आसल दे पु० पुत्र आतेन आत्मा श्रे० से श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० बृहद्गच्छे भ० श्री धर्मचन्द्र सूरि पट्टे भ० श्री मलयचन्द्र सूरिभि ॥ श्री ॥

(१३२१)
श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

॥६०॥ सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सु० २ दिने ऊकेश वशे संखवाल गोत्रे सा० कोचर सुत हीरा पुत्र सा० मिहरा भ्रातेन पु० सा० छाजा देफा राजसुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारि० प्रति० खरतर गच्छाधीश श्री जिनभद्र सूरि युगप्रधानवरे.

(१३२२)
सपरिकर श्री सुमतिनाथजी

सं १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ ऊकेश ज्ञा० भ० नींपा भा० भागल पुत्रेण साह पीसलेन श्री सुमतिनाथ बिंब मातृ पितृ श्रे० का० श्री प्रभाकर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठित च ॥

(१३२३)

श्री धर्मनाथादि पचतीर्थी

॥ सं० १५०८ वर्षे आषाढ़ वदि २ सोमे श्री नाहर गोत्रे सा० कूपा भार्या चिणखू पुत्र डालूकेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोप गच्छे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः

(१३२४)

सपरिकर पार्श्वनाथ जी

सं० १२२७ आषाढ़ सुदि १० ठ० आभडेन निज भार्या शीत निमित्तं प्रतिमा कारिता (प्र०) हरिभद्र सूरिभिः

(१३२५)

सपरिकर श्री शांतिनाथजी

संवत् १४६३ (?) वर्षे शु० श्रे० पल्हूया भा० वारू सुतया श्रे० देपाल राणी सुत पोपा भार्यया लाखू श्रे० पोपासुत सोमा खेनू भुणादि युतया श्री शांति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पक्षे श्री सोमसुन्दर सूरिभि·

(१३२६)

शांतिनाथादि पचतीर्थी

सं० १५०६ पोष वदि २ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० जेसा भार्या जसमादे सु० कडुया भा० २ कील्हणदे द्वि० करमा देव्या स्वश्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं आगम गच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामु० प्र० श्री सूरिभिः

(१३२७)

श्री संभवनाथादि पचतीर्थी

सं० १४६६ वर्षे माह सुदि १० शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० मउठा भार्या करणी पितृ श्रयोर्थं मातृ श्रेयसे सुत लखमणकेन संभवनाथ पंचतीर्थिका श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं

(१३२८)

श्री शांतिनाथादि पचतीर्थी

सं० १४२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री सुचिंतित गोत्रीय सा० महीपति भा० भीमादी पुत्र हीराकेन आत्म श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ २४

(१३१७)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४८५ वर्षे मागसिर वदि २ श्री उप० सीरोळिया गोत्रे सा० हरपति पु० नयता भा० नयणी पु० हापाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे श्री यशो देव सूरिभिः

(१३१८)

श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५०६ फा० सु० ६ ब० ज्ञा० से विवाडेचा गो० सा० धीरम भा० फर्मू पु० देल्हाकेन भा० माणिकि पु० घोल्हा ऊधरण श्रेया स० श्री संभवनाथ बिंब का० प्र० श्री सडेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः

(१३१९)

सपरिकर श्री शांतिनाथजी

सं० ११६६ (?) फागुण सुदि ६ सोमे श्रे० नयणा भा० नयणादेवि सुतेन (?) श्री शांति नाथ बिंबं श्री जिनसिंह सूरिणामुपदेशेन कारिता

(१३२०)

श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

स० १५०४ वर्षे ज्येष्ठ वदि ३ सोमे उप ज्ञा० चोकडिया गोत्रे सा० पाल्हा भा० पाल्हणदे पु० मांडा भा० मासल दे पु० पुत्र वाछेन आत्म श्रे से श्री सुविधिनाथ बिंब का० प्र० बृहद्गच्छे भ० श्री धर्मचन्द्र सूरि पट्टे भ० श्री मलयचन्द्र सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१३२१)

श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

॥६०॥ सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ट सु० २ दिने ऊकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० कोचर भूलू हीरा पुत्र सा० सिहरा भार्द्देन पु० सा० छाछा देवा राजलसुतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारि० प्रति० खरतर गच्छाधीश श्री जिनभद्र सूरि युगप्रधानवरैः

(१३२२)

सपरिकर श्री सुमतिनाथजी

सं १४०८ वैशाख सुदि ५ गुरौ ऊकेश ज्ञा० भ० नीवा भा० भामाल पुत्रेण साह बीसलेन श्री सुमतिनाथ बिंबं मातृ पितृ श्रे० का० श्री प्रभाकर सूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं च ॥

(१३३६)

श्री पद्मप्रभादि पचतीर्थी

सं० १४८३ फा० व० ११ श्री संडेर गच्छे तेलहरा गो० सा० धास्सी पु० धणसी भा० बापू पु० खेता पद्माभ्या श्री पद्म बिंबं पूर्वज श्रेयसे का० प्र० श्री शांति सूरिभिः

(१३३७)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५२८ वर्षे चै० व० ५ सो० उसवाल ज्ञातीय वीराणेचा गोत्रे सा० तोल्हा पुत्रेण सा० सहदेवेन भा० सुहागदे पु० डूंगर जिनदेव युतेन स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरु प्रभसूरि भ० श्री राजरत्न सूरिभिः

(१३३८)

श्री चन्द्रप्रभादि पचतीर्थी

संवत् १४६५ वर्षे पोष वदि १ शनौ मृगशिर नक्षत्रे श्रीमाल ज्ञातीय प्राडगीया गोत्रे सा० धनपति भार्या रूपिणी पु० वयराकेन आत्म पुण्यार्थं श्री चन्द्र प्रभ बिंबं कारितं श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः

(१३३९)

श्री संभवनाथादि पचतीर्थी

॥ सं० १४६४ वर्षे माह सु० ११ गु० श्री संडेर गच्छे ऊ० ज्ञा० धारणुद्रा गो० सा० रायसी पु० गिर पु० वीसल भा० सारू पु० धन्नाकेन भा० हर्षू पु० तोला स० स्व पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिं० का० प्र० श्री शांतिसूरिभि.

(१३४०)

श्री शातिनाथादि पचतीर्थी

सं० १४५२ वर्षे सुदि ५ गुरौ ऊ० ज्ञा० समरदा भार्या क्षीमणि पु० छाडाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री शातिनाथ बिंबं कारितं श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्कसूरिभि·

(१३४१)

श्री धर्मनाथादि पचतीर्थी

॥६०॥ स० १४६६ वर्षे काती सुदि १५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० मोढा भा० हमीरदे पु० चउहथ भा० चाहिणी दे पु० राऊल स० आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० चित्रका तिलक सूरिभि.

(१३४२)

श्री कुंथुनाथादि पंचतीर्थी 176

स० १५०६ वर्षे माघ सुदि १० ऊकेश साहू गोत्रे सा० कालू भा० सारू मातिपक्ष्या पु० सा० सांवा रांगा युतया श्री कुंथुनाथ० का० प्र० खरत (? खरतर) श्री जिनसागरसूरि (भि)

(१३४३)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी 176

स० १४८८ वर्षे मार्ग सुदि ५ गुरु उपकेशवंशे छोहा गोत्रे सा० फलू भा० पाल्हणदे पु० वाछकेन मातृ पितृ भ्रातृ वाछू पुण्यार्थं आत्मश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंब का प्र० श्री कृष्णर्षि गच्छे श्री जयचन्द्र सूरिभिः

(१३४४)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

स १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ शनौ प्रा० व्यव । देवा भा० सीती पुत्र भोजा मीका भा० माणकदे साहि० स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिं० कारितं प्र० कच्छोलीवाल गच्छ पूर्णिमा प० भ० श्री गुणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥

(१३४५)

श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

सं० १४६५ वैशाख सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० आसाभार्या पूनादे पुत्र पूना भार्या सुहागदे पित्रो श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० कारितं प्र० श्री ब्रह्माणगच्छे श्री धर्म्मदेवसूरि पट्टे श्री धर्मसिंह सूरिभिः

(१३४६)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १५७० ज्ये० सु० ४ बुधे उपकेश ज्ञा० सा० सहजा भा० सहिजल—देम्या पुत्र सोना साचड़ शोभदायां पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० श्री उपकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ श्री० ॥

(१३४७)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४७२ व० फागुण वदि १ सु श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे भट्टारिक श्री पद्मनंदि हुंबड़ ज्ञाती गोत्र खरेसरा म० धणसी भार्या सीधू सुत सहिसा अइता भार्या अइतश्री आदिनाथ

(१३२३)

श्री धर्मनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५०८ वर्षे आषाढ़ वदि २ सोमे श्री नाहर गोत्रे सा० कूपा भार्या चिणखू पुत्र डालूकेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री विजयचंद्र सूरि पट्टे श्री साधुरत्न सूरिभिः

(१३२४)

सपरिकर पार्श्वनाथ जी

सं० १२२७ आषाढ सुदि १० ठ० आभडेन निज भार्या शीत निमित्तं प्रतिमा कारिता (प्र०) हरिभद्र सूरिभि.

(१३२५)

सपरिकर श्री शांतिनाथजी

संवत् १४९३ (?) वर्षे शु० श्रे० पल्हूया भा० वारू सुतया श्रे० देपाल राणी सुत पोपा भार्यया लाखू श्रे० पोपासुत सोमा खेनू भुंणादि युतया श्री शांति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा पक्षे श्री सोमसुन्दर सूरिभिः

(१३२६)

शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १५०६ पोष वदि २ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० जेसा भार्या जसमादे सु० कडुया भा० २ कील्हणदे द्वि० करमा देव्या स्वश्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं आगम गच्छे श्री हेमरत्न सूरीणामु० प्र० श्री सूरिभिः

(१३२७)

श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४९९ वषे माह सुदि १० शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० मउठा भार्या करणी पितृ श्रयोर्थं मातृ श्रेयसे सुत लखमणकेन संभवनाथ पंचतीर्थिका श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणसमुद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं

(१३२८)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १५ शुक्रे श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री सुचिंतित गोत्रीय सा० महीपति भा० भीमाही पुत्र हीराकेन आत्म श्रे० श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ २४

(१३२६)

श्री पार्श्वनाथजी २ काउसग्गियासह

स० ११०४ अषाढ़ सु० ६ बि केन साव

(१३३०) 174

श्री कुंथुनाथादि पंचतीर्थी

स १५०० वर्षे मार्ग ब० २ ऊपकेश ज्ञातौ सुचिंतित गोत्रे सा० सहजा भा० मील्हा पु० साह साधुकेन पित्रो श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्री ऊपके० ककुदाचा० श्री कक्कसूरिभिः

(१३३१)

सपरिकर श्री पार्श्वनाथ

स० १३६२ वर्षे फागुण वदि ५ श्री मंडेरकी—गच्छे से० पूरदेव पु० गजरा भा० गहक पार्श्व बिंबं प्रतिष्ठितं श्री सूरिः

(१३३२)

श्री पार्श्वनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १३१६ वर्षे माह वदि ४ रवौ छक्कमणि भाविकया पु० वीर सहितया स्वश्रेयसे पार्श्व बिंबं कारित प्रतिष्ठित जयदेव सूरिभिः

(१३३३)

श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

स० १५१८ वर्षे माह सुदि ५ दिने भा० सा० सायर पुत्र सा० काल्हा भा० आपू पुत्र सा० वीरसेन भा० वील्हणदे पुत्र भोजा भाखर युतेन श्री संभव बिंबं कारित प्र० श्री जयकल्याण सूरिभिः

(१३३४)

सपरिकर

सं० १४५४ (?) वर्षे माह गोत्रे सा० आल्हा पुत्र सा० भास्हाकेन पित्रो श्रेयसे श्री बिंबं कारितं प्र० म० श्री मतिसागर सूरिभिः

(१३३५)

सपरिकर श्री नमिनाथजी

॥ स० १२८८ माघ सु० ६ सोमे निवृत्ति गच्छे में पौदहि सुत पसहदेन देल्हादि पितर श्रेयसे नेमिनाथ कारित प्र० श्री शीलचन्द्र सूरिभिः

(१३४८)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १४६८ वर्षे फागुण क्रु० १० बुधे श्री उस वंशे मिवक यामा (?) र: सं० पहराज पुण्यार्थं सा० पदा पूना पीथाकैः श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं

(१३४६)

श्री पार्श्वनाथजी सपरिकर

संवत् १३०२ वर्षे माघ वदि ६ शनौ तीपक वावाये० गाजू नाम्ना आत्म श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिता:

(१३५०)

सपरिकर श्री शातिनाथजी

सं० १४४६ (?) वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उप० सा० मूजाल सा० माल्हण दे पुत्र लाखाकेन पितृ पितृव्य रणसी वीरा निमित्तं श्री शातिनाथ बिंबं प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयप्रभ सूरिभिः

(१३५१)

सपरिकर श्री अनन्तनाथ 177

सं० १४६५ ज्येष्ट सु० १४ बु० साखुला गौत्रे सा० छाजल पु० मला भा० मेल्हा दे पु० देदाकेन पितृ पुण्यार्थं श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्म शेखरसूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः

(१३५२) 177

सपरिकर श्री शातिनाथजी

॥६०॥ संवत् १३७७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ वैद्य शाखायां सा० दूसल पुत्रिकया तिल्ही श्राविकया स्वश्रेयसे श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभिः

X (१३५३)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी 177

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ उसवाल ज्ञातीत वाहर गोत्रे स० तेजा पु० सं० वच्छराज भा० खिल्हयदे पु० सं० कालू माडण सुर्जन भ्रातृ सुत लोला लाखा जसा मेघाभ्या श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं धर्म्म० श्री साधुरत्नसूरिभि. ॥ श्री ॥

(१३५४)

पचतीर्थी

सं० १३४३ वर्षे . . . हेम . . . कारितं प्र० श्रीसूरिभि

(१३४२)

श्री कुंथुनाथादि पंचतीर्थी 176

सं० १५०६ वर्षे माघ सुदि १० ऊकेश साह गोत्रे सा० कालू भा० सारू भाविकया पु० सा० तोला रांगा युतया श्री कुंथुनाथ० का० प्र० धरव (? खरतर) श्री जिनसागरसूरि (भिः)

(१३४३)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी 176

सं० १४८८ वर्षे मार्ग सुदि ५ गुरु उपकेशज्ञातौ छाजहड़ गोत्रे सा० फम्मू भा० पाल्हणदे पु० वाघूकेन मातृ पितृ भ्रातृ घाछू पुण्यार्थं आत्मश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री कृष्णर्षि गच्छे श्री नयचन्द्र सूरिभिः

(१३४४)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ शनौ प्रा० ज्ञा० । वेपा भा० सोवी पुत्र मोखा मीका भा० भावलदे साहि० स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिं० कारित प्र० कच्छोलीवाल गच्छ पूर्णिमा प० भ० श्री गुणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥

(१३४५)

श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

सं० १४६५ वैशाख सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० आसाभार्या पूनादे पुत्र पूना भार्या सुहागदे पित्रो श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० कारित प्र० श्री धर्मघोषगच्छे श्री धर्मदेवसूरि पट्टे श्री धर्मसिंह सूरिभिः

(१३४६)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४७० ज्ये० सु० ४ बुधे उपकेश ज्ञा० सा० सहजा भा० सहिजल—देव्या पुत्र सोना साधड़ सोमदत्त पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंब का० श्री उपकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ श्री० ॥

(१३४७)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४७२ व० फागुण वदि १ सु श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे भट्टारिक श्री पद्मनंदि डुंगर ज्ञाती गोत्र कर्मेश्वरा भ० धणसी भार्या कीलू सुत सहिजा जइता भार्या जइतलदे श्री आदिनाथ

(१३३६) 175

श्री पद्मप्रभादि पंचतीर्थी

सं० १४८३ फा० व० ११ श्री संडेर गच्छे तेलहरा गो० सा० धास्सी पु० धणसी भा० बापू पु० खेता पद्माभ्या श्री पद्म बिंबं पूर्वज श्रेयसे का० प्र० श्री शांति सूरिभिः

(१३३७)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५२८ वर्षे चै० व० ५ सो० उसवाल ज्ञातीय वीराणेचा गोत्रे सा० तोल्हा पुत्रेण सा० सहदेवेन भा० सुहागदे पु० डूंगर जिनदेव युतेन स्वपुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वृहद्गच्छे श्री मेरु प्रभसूरि भ० श्री राजरत्न सूरिभिः

(१३३८)

श्री चन्द्रप्रभादि पंचतीर्थी

संवत् १४६५ वर्षे पोष वदि १ शनौ मृगशिर नक्षत्रे श्रीमाल ज्ञातीय प्राडगीया गोत्रे सा० धनपति भार्या रूपिणी पु० वयराकेन आत्म पुण्यार्थ श्री चन्द्र प्रभ बिंबं कारितं श्री धर्म्मघोष गच्छे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभिः

(१३३९)

श्री संभवनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १४६४ वर्षे माह सु० ११ गु० श्री संडेर गच्छे ऊ० ज्ञा० धारणद्रा गो० सा० रायसी पु० .गिर पु० वीसल भा० सारू पु० धन्नाकेन भा० हर्षू पु० तोला स० स्व पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिं० का० प्र० श्री शांतिसूरिभिः

(१३४०)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४५२ वर्षे सुदि ५ गुरौ ऊ० ज्ञा० समरदा भार्या क्षीमणि पु० हाडाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्री सिद्धाचार्य संताने प्रतिष्ठितं श्री कक्कसूरिभिः

(१३४१)

श्री धर्मनाथादि पंचतीर्थी

॥६०॥ सं० १४६६ वर्षे काती सुदि १५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० सा० मोढा भा० हमीरदे पु० चउहथ भा० चाहिणी दे पु० राऊल स० आत्मश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० चित्रका तिलक सूरिभिः

(१३४२)

श्री कुंथुनाथादि पंचतीर्थी 176

सं० १५०६ वर्षे माघ सुदि १० ऊकेश साह गोत्रे सा० फालू भा० सारू भाविकया पु० सा० वांवा रांगा युतया श्री कुंथुनाथ० का० प्र० वरत (? खरतर) श्री जिनसागरसूरि (भिः)

(१३४३)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी 176

सं० १४८८ वर्षे मार्गं सुदि ५ गुरु उपकेशवंशे छोडा गोत्रे सा० फलू भा० पाल्हणदे पु० वापूकेन मातृ पितृ भ्रातृ वालू पुण्यार्थं आत्मश्रेयोर्थं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री कृष्णर्षि गच्छे श्री नयचन्द्र सूरिभिः

(१३४४)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

सं १५१६ वर्षे ज्येष्ठ सु० ३ शनौ प्रा० ज्ञाच। देवा भा० सीती पुत्र भोजा भीखा भा० माघल्दे साहि० स्व श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिं० कारितं प्र० कच्छोलीवाल गच्छ पूर्णिमा प० भ० श्री गुणसागर सूरीणामुपदेशेन ॥

(१३४५)

श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

सं० १४१५ वैशाख सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० आसाभार्या पूनादे पुत्र पूना भार्या सुहागदे पित्रो श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिं० कारितं प्र० श्री ब्रह्मगच्छे श्री धर्म्मदेवसूरि पट्टे श्री धर्मसिंह सूरिभिः

(१३४६)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४७० ज्ये० सु० ४ बुधे उपकेश ज्ञा० सा० सहणा भा० सहिजल—देम्मा पुत्र सोमा साचड़ ब्रोभटाद्यै पितृ मातृ श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० श्री उपकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥ श्री० ॥

(१३४७)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

सं० १४७२ व० फागुण वदि १ सु श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे भट्टारिक श्री पद्मनंदि हुंबड ज्ञाती गोत्र खरेथरा भ० धणसी भार्या धीधू सुत धाहिजा आहला भार्या आल्हणदे श्री आदिनाथ

(१३४८)

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १४६८ वर्षे फागुण कृ० १० बुधे श्री उस वंशे मिवक यामा (?) रः सं० पहराज पुण्यार्थं सा० पदा पूना पीथाकैः श्री आदिनाथ विंवं का० प्रतिष्ठितं

(१३४६)

श्री पार्श्वनाथजी सपरिकर

संवत् १३०२ वर्षे माघ वदि ६ शनौ तीपक वावाये० गाजू नाम्ना आत्म श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ प्रतिमा कारिताः

(१३५०)

सपरिकर श्री शातिनाथजी

सं० १४४६ (?) वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उप० सा० मूजाल सा० माल्हण दे पुत्र लाखाकेन पितृ पितृव्य रणसी वीरा निमित्तं श्री शातिनाथ विंवं प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयप्रभ सूरिभिः

(१३५१)

सपरिकर श्री अनन्तनाथ 177

सं० १४६५ ज्येष्ट सु० १४ बु० साखुला गौत्रे सा० छाजल पु० मला भा० मेल्हा दे पु० देदाकेन पितृ पुण्यार्थं श्री अनंतनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्म शेखरसूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभि

(१३५२) 177

सपरिकर श्री शातिनाथजी

॥६०॥ संवत् १३७७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ वैद्य शाखायां सा० दूसल पुत्रिकया तिल्ही श्राविकया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंवं कारितं प्रति० श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभिः

X (१३५३)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी 177

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ उसवाल ज्ञातीत वाहर गोत्रे स० तेजा पु० सं० वच्छराज भा० खिल्हयदे पु० सं० कालू माडण सुर्जन भ्रातृ सुत लोला लाखा जसा मेघाभ्या श्री सुमतिनाथ विंवं कारापितं प्रतिष्ठितं धर्म्म० श्री साधुरत्नसूरिभि. ॥ श्री ॥

(१३५४)

पचतीर्थी

सं० १३४३ वर्षे · हेम ·· · कारितं प्र० श्रीसूरिभिः

(१३५५)

श्री महावीर सपरिकर

सं० १५ श्री महावीर बिंब का० प्रति०
श्री धर्मदेव सूरिभि

(१३५६)

श्री मुनिसुव्रत पंचतीर्थी

सं १५१० वर्षे माघ सुदि ५ शुक्रे श्री ब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञातीय पट्टसूत्रीया महिया भा० सूहेसरि पुत्र मोकल भा० रूपी पुत्र म्हाल्हाकेन पुत्री श्रेयसे मुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारित प्रतिष्ठितं भ० पजून सूरिभि

(१३५७)

श्री पार्श्वनाथ सपरिकर

॥६०॥ सं० १३४६ वैशाख सुदि ७ श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री जिनप्रबोधसूरि शिष्यैः श्री जिन चन्द्र सूरिभिः प्रतिष्ठितं कारितं रा जीवा सुतेन सा० भुवण श्रावकेन स्व श्रेयोर्थं आम्र- द्राके मंगवाए

(१३५८) १७८

सपरिकर धर्मनाथजी

॥ संवत् १४८५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १३ सोमे उसवाल ज्ञातीय लटकड़ गोत्रे सा० अमरा पु० नीबा भा० मेघी पु० कूठिल श्रावक कूठिल पु० खेता सावकाभ्यां श्री धर्मनाथ बिंबं कारापित प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखर सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१३५९)

सं० १४२१ (?) वर्षे फागुण वदि पु० रामेन भा० सोनल सहितेन पित श्रेयसे श्री शांति बिंबं का० प्र० श्री गुणप्रभ सूरिभिः

(१३६०)

सं० १५०१ ज्येष्ठ वदि १२ सोमे ऊप० ज्ञा० स० मेसा भा० असमा दे पु० कान्हा रता रामा कान्हा भा० रमाणी स० पितृ मातृ श्रे० श्री नमिनाथ बिं० का० प्र० श्री बृहद्गच्छे श्री नरचन्द्र सूरि पट्टे श्री वीरचन्द्र सूरिभिः ॥ १४ ॥

(१३६१) १७८

॥ सं० १५०६ वर्षे मा० सु० १० ऊकेश ज्ञा० वरणाऊरा बहुरा गो० सा० राजा भा० रत्नमादे पु० सेवा भा० सेवलदे पु० सेता स० श्री वासुपूज्य बिं० का० प्र० श्री सण्डेर गच्छे श्री शांति सूरिभिः

(१३६२)

॥ सं० १५१० व० फागुण सुदि ११ शनौ श्री श्रीमालीय ज्ञा०
.... 'वीवा भा० चाहिणदेवि नि० श्र० खीदा चापा चूहथ पाचा सहितेन श्री धर्मनाथ पंचतीर्थी कारितं प्र० श्री भावडार गच्छे श्री कालिकाचार्य सं० पू० श्री वीरसूरि पुरन्दरैः मोरीपा वास्तव्यः ॥

(१३६३)

सपरिकर श्री महावीर स्वामी

सं० १३७१ वैशाख सु० ७ श्र० वेला भार्या नीमल पु० देवसीहेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री महावीर विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि. ॥

(१३६४)

सपरिकर श्री अनन्तनाथजी

सं० १४७३ (?) फागुण सुदि १५ सोमे ऊकेश ज्ञा० श्रे० विजपाल भा० नामल पु० खेतसीहेन पित्रो निमित्तं श्री अनन्तनाथ विंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे सिद्धाचार्य सं० श्री सिद्धसूरिभिः

(१३६५)

सपरिकर

१ संवत् १३२३ वर्षे माघ सुदि ७ श्री नाणकीय गच्छे व्य० देपसा पुत्र जगधरेण प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री धनेश्वरसूरिभि

(१३६६)

श्री पार्श्वनाथादि पंचतीर्थी

सं० ११७३ आषाढ वदि ४ सोमे चाहिड म

(१३६७)

सं० १३१४ वैशाख सुदि ५ ऊकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने आहड भार्या राजीकया स्व श्रेयोर्थं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभि

(१३६८) 179

॥ सं० १५६६ वर्षे वैशाख सुदि ७ वहरा गोत्रे मोहण शाखायां मं० खेमा पु० नयणा भार्या नारिंगदे पु० मं० उरजा भार्या उत्तिमदे पु० सिघा योद्धा सिघ पु० प्रतापसी युतेन श्री अजितनाथ विंबं आत्मपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं चैत्रावाल गच्छे भ० श्री भुवन कीर्तिसूरिभि·

(१३६९)

॥ सं० १५२३ वर्षे। फाल्गुन सुदि १४ सोमे श्रीमूल संघे सेनगणे भ० श्री जयसेन तदाम्नाये आर्जिका धर्मश्री आत्म कर्म क्षयार्थं चतुर्विंशतिका प्रणमति ॥ प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री सिंहकीर्ति देवा ॥ श्री ८ ।

(१३७०)

ॐ ह्रीं श्री पंचार्हं कलिकुण्ड दंड स्वामिन्

(१३७१)

संवत् १३२७ माह सुदि मा सुत वेना पकना पदमचन्द्र करापितं श्री मूलसंघ नित्यं प्रणमति

(१३७२)

॥ संवत् १५८१ वर्षे माघ वदि० २ सोमदिने ऊपकेश ज्ञातीय वणागिया गोत्रे सं० ओबा भा० भावलदे पु० सं० महिपा भा० माणिकदे सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंब कारापितं श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्री कमलप्रभसूरि तत्पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः

(१३७३)

षोडश कारण यंत्र

सं० १६११ वर्षे वैशाख वदि २ दिने श्री मूल संघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री अमरकीर्ति देवा तत्पट्टे आचार्य श्री रत्नकीर्ति देवोपदेशात् अग्रोत-कान्वये गर्ग गोत्रे साधु श्री हरिपाल भार्या पोमो तया पुत्रा चत्वारि प्रथम पुत्र साह श्री लक्ष्मी-दास भार्या जसोदा तयोः पुराणा भार्या मोहनदे तयो पुत्रो चिरजीव समा हरखा नसीहो सा० हरिपाल द्वितीय पुत्र सा० श्री अगर सत्र अथा केसरिदे षोडशकारण यंत्र नित्य प्रणमति ॥ समा हासना० म गोवि कान्हर मा० गंगोवा ।

(१३७४)

॥ संवत् १५०८ वैशाख सु० ५ ऊपकेश गच्छे सुरुआ गोत्रे सा० अमरा पुत्री रूमाई आत्म पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिं० प्रति० श्रीकक्कसूरिभिः

(१३७५)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमगच्छ ज्ञातीय वराहड़िया गोत्रे सा० अमर सुत मस्ता० माहदेन भार्या माल्हणदेव्या स्व श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्री तद्० श्रीरत्न

(१३४८)

श्री आदिनाथादि पचतीर्थी

॥ सं० १४६८ वर्षे फागुण कु० १० बुधे श्री उस वंशे मिवक यामा (?) र: सं० पद्मराज पुण्यार्थं सा० पदा पूना पीथाकैः श्री आदिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं

(१३४६)

श्री पार्श्वनाथजी सपरिकर

संवत् १३०२ वर्ष माघ वदि ६ शनौ तीपक वावाये० गाजू नाम्ना आत्म श्रेयोर्थं श्री पार्श्व-नाथ प्रतिमा कारिता,

(१३५०)

सपरिकर श्री शातिनाथजी

सं० १४४६ (?) वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे उप० सा० मूजाल सा० माल्हण दे पुत्र लाखा-केन पितृ पितृव्य रणसी वीरा निमित्तं श्री शातिनाथ बिंबं प्र० पूर्णिमा पक्षे श्री जयप्रभ सूरिभिः

(१३५१)

सपरिकर श्री अनन्तनाथ 177

सं० १४६५ ज्येष्ट सु० १४ बु० साखुला गोत्रे सा० छाजल पु० मला भा० मेल्हा दे पु० देदाकेन पितृ पुण्यार्थं श्री अनंतनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोप गच्छे श्री पद्म शेखरसूरि पट्टे भ० श्री विजयचन्द्र सूरिभि.

(१३५२) 177

सपरिकर श्री शातिनाथजी

॥६०॥ संवत् १३७७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ वैद्य शाखायां सा० दूसल पुत्रिकया तिल्ही श्राविकया स्वश्रेयसे श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभिः

X (१३५३)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी 177

॥ सं० १५१३ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ गुरौ उसवाल ज्ञातीत वाहर गोत्रे स० तेजा पु० सं० वच्छ-राज भा० खिल्हयदे पु० सं० कालू माडण सुर्जन भ्रातृ सुत लोला लाखा जसा मेघाभ्या श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं धर्म्म० श्री साधुरत्नसूरिभि. ॥ श्री ॥

(१३५४)

पचतीर्थी

सं० १३४३ वर्षे · हेम · ·· · कारितं प्र० श्रीसूरिभिः

(१३६९)

॥ सं० १५२३ वर्षे। फाल्गुन सुदि १४ भौमे श्रीमूल सघे सेनगणे भ० श्री जयसेन तदाम्नाये आर्यिका धर्मश्री आत्म कर्म क्षयार्थं चतुर्विंशतिका प्रणमति ॥ प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री सिंहकीर्ति देवा ॥ श्री ४।

(१३७०)

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व कलिकुण्ड दंड स्वामिन्

(१३७१)

संवत् १३२७ माह सुदि मा सुत धेना पकना पद्मसर्वत्र करापित श्री मूलसंघ नित्यं प्रणमति

(१३७२)

॥ संवत् १५०१ वर्षे माघ वदि० २ सोमदिने उपकेश ज्ञातीय वणागिया गोत्रे सं० भोजा भा० भावलदे पु० सं० महिपा भा० माणिकदे सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारापित श्रीधर्म घोष गच्छे भ० श्री कमलप्रभसूरि तत्पट्टे प्रतिष्ठितं श्री पुण्यवर्द्धन सूरिभिः

(१३७३)

षोडश कारण यंत्र

सं० १६१३ वर्षे वैशाख वदि २ दिने श्री मूल संघे सरस्वती गच्छे बलात्कार गणे श्री कुंद कुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री अभयनंदि देवा तत्पट्टे आचार्य श्री रत्नकीर्ति देवोपदेशात् अग्रोत-कान्वये गर्ग गोत्रे साधु श्री हरिपाल भार्या पोमो तया पुत्रा चत्वारि प्रथम पुत्र साह श्री लक्ष्मी-दास भार्या जसोदा तया पुत्रा भार्या मोहनदे तयो पुत्रो चिरंजीव समा हरसा नसीहो सा० हरिपाल द्वितीय पुत्र सा० श्री अगर सत्र अथा केसरिदे षोडशकारण यंत्र नित्य प्रणमति ॥ स्वमा हासना० भगोति कान्हर भा० गगोदा।

(१३७४)

॥ संवत् १५०८ वैशाख सु० ५ उपकेश गच्छे सूरूआ गोत्रे सा० अमरा पुत्री लखाई आत्म पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिं० प्रति० श्री कक्कसूरिभिः

(१३७५)

श्री सुमतिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १४६६ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्रीमाल ज्ञातीय वरहड़िया गोत्रे सा० अमर सुत वस्ता० नाहरेन भार्या माल्हणदेव्या स्व श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिं० का० प्र० श्री रुद्र० श्रीरत्न प्रभसूरिभिः

(१३६२)

॥ सं० १५१० व० फागुण सुदि ११ शनौ श्री श्रीमालीय ज्ञा० .... · वीबा भा० चाहिणदेवि नि० श्र० खीदा चापा चूहध पाचा सहितेन श्री धर्मनाथ पंचतीर्थी कारितं प्र० श्री भावडार गच्छे श्री कालिकाचार्य सं० पू० श्री वीरसूरि पुरन्दरैः मोरीषा वास्तव्यः ॥:

(१३६३)

सपरिकर श्री महावीर स्वामी

सं० १३७१ वैशाख सु० ७ श्र० वेला भार्या नीमल पु० देवसीहेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

(१३६४)

सपरिकर श्री अनन्तनाथजी

सं० १४७३ (१) फागुण सुदि १५ सोमे ऊकेश ज्ञा० श्रे० विजपाल भा० नामल पु० खेतसीहेन पित्रो निमित्तं श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे सिद्धाचार्य सं० श्री सिद्धसूरिभिः

(१३६५)

सपरिकर

१ संवत् १३२३ वर्षे माघ सुदि ७ श्री नाणकीय गच्छे व्य० देपसा पुत्र जगधरेण प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री धनेश्वरसूरिभि.

(१३६६)

श्री पार्श्वनाथादि पचतीर्थी

सं० ११७३ आषाढ वदि ४ सोमे चाहिड म .

(१३६७)

सं० १३१४ वैशाख सुदि ५ ऊकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने आहड़ भार्या राजीकया स्व श्रेयोर्थं का० प्र० श्रीकक्कसूरिभि.

(१३६८) 17

॥ सं० १५६६ वर्षे वैशाख सुदि ७ वहरा गोत्रे मोहण शाखायां मं० खेमा पु० नयणा भार्या नारिंगदे पु० मं० उरजा भार्या उत्तिमदे पु० सिंघा योद्धा सिंघ पु० प्रतापसी युतेन श्री अजितनाथ बिंबं आत्मपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं चैत्रावाल गच्छे भ० श्री भुवन कीर्तिसूरिभिः

श्री वासुपूज्यजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा के लेख

(गर्भगृह)

(१३८२)

श्री पार्श्वनाथजी

संवत् ११५५ व ।। मटद वि ५ सपे श्री देवसेन सङ्घपर्ई फामरा व वासुसा मोगवोन कारितं संघारकट गृहे कैवं जिनाश्चर्यमिति

(१३८३)

श्री पार्श्वनाथजी

संवत् ११५५ व ।। मटद वि ५ सपे श्री देवसेन संघपर्ई फामस व वासुसा ओयवोन कारितं संघारकट गृहे केवं जिनाश्चमिति

(१३८४)

चार पादुकाओं पर

स० १८५० मि० ज्येष्ठ सुदि ६ तिथौ श्री बृहत्खरतर गच्छेश श्री जिनचन्द्रसूरि विजय राज्ये श्री बीकानेर वास्तव्य श्री युगप्रधान गुरु पादन्यास कारिता प्रतिष्ठापिताश्च श्री ।। श्री जिनदत्त सूरीणां । श्री जिनकुशल सूरिणां । श्री जिनचन्द्रसूरीणां । श्री जिनसिंह सूरिणा ।।

दाहिनी ओर देहरी में

(१३८५)

सं० १९०५ रा वर्षे मि । वैशाख सुदि १५ तिथौ गुरुवासरे श्री बीकानेर नगरे श्री वासुपूज्य जिन बिंबं प्रतिष्ठितं च बृहत्खरतर भट्टारक गच्छेश जं० यु० प्र० । श्री जिनहर्षसूरि तत्पट्टालंकार जं । यु । प्र । भ । श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः कारा । श्रा । को० श्री मदनचंदजी सपरिवार सुखेन स्वश्रेयसे ।।

बांयी ओर देहरी में

(१३८६)

श्री शीतलनाथजी

सम्वत् १९०४ वर्षे प्रथम ज्येष्ठ कृष्ण पक्षे ८ तिथौ शनिवासरे श्री शीतलजिन बिंबं प्रतिष्ठितं बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे जं । यु । प्र । भ । श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः समस्त श्री संघेन स्वश्रेयोर्थं

(१३६२)

॥ सं० १५१० व० फागुण सुदि ११ शनौ श्री श्रीमालीय ज्ञा० ·· ··· ·· · · · वीवा भा० चाहिणदेवि नि० श्र० खीदा चापा चूहध पाचा सहितेन श्री धर्मनाथ पंचतीर्थी कारितं प्र० श्री भावडार गच्छे श्री कालिकाचार्य सं० पू० श्री वीरसूरि पुरन्दरैः मोरीषा वास्तव्यः ॥:

(१३६३)

सपरिकर श्री महावीर स्वामी

सं० १३७१ वैशाख सु० ७ श्र० वेला भार्या नीमल पु० देवसीहेन पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री महावीर बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥

(१३६४)

सपरिकर श्री अनन्तनाथजी

सं० १४७३ (?) फागुण सुदि १५ सोमे ऊकेश ज्ञा० श्रे० विजपाल भा० नामल पु० खेतसीहेन पित्रो निमित्तं श्री अनन्तनाथ बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे सिद्धाचार्य सं० श्री सिद्धसूरिभिः

(१३६५)

सपरिकर

१ संवत् १३२३ वर्षे माघ सुदि ७ श्री नाणकीय गच्छे व्य० देपसा पुत्र जगधरेण प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता श्री धनेश्वरसूरिभि.

(१३६६)

श्री पार्श्वनाथादि पचतीर्थी

सं० ११७३ आषाढ वदि ४ सोमे चाहिड म

(१३६७)

सं० १३१४ बैशाख सुदि ५ ऊकेश गच्छे श्री सिद्धाचार्य संताने आहड़ भार्या राजीकया स्व श्रेयोर्थं का० प्र० श्रीककसूरिभि·

(१३६८) 17

॥ सं० १५६६ वर्षे वैशाख सुदि ७ वहरा गोत्रे मोहण शाखायां मं० खेमा पु० नयणा भार्या नारिंगदे पु० मं० उरजा भार्या उत्तिमदे पु० सिंघा योद्धा सिंघ पु० प्रतापसी युतेन श्री अजितनाथ बिंबं आत्मपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं चैत्रावाल गच्छे भ० श्री भुवन कीर्तिसूरिभिः

(१३६३)

श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथजी

सं १६०१ व० ज्येष्ठ सु० ८ श्री अञ्चल गच्छे वा० वेकुराज ग० शि० उपा० श्री पुण्यलब्धि शि० श्री भानुलब्धि उपाध्याये स्वपूजन श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ

(१३६४)

सं० १६३४ श्री मूलसंघे ।

(१३६५)

स० १६६३ वर्षे आषाढ़ सुदि ३ रवौ श्री सीरोही नगर वास्तव्य हरिणगो त्रपस ज्ञातीय सा० भवसी भार्या लीलादे पु० वोला मा० वारादे पु० भीवंत सदारग स० वोला स्वपुण्यार्थं श्री पद्मप्रभ बिंबं प्र० श्री पल्लीवाल गच्छे भ० श्री महेश्वर सूरिभि ॥

(१३६६)

सं० १५४६ वर्षे फा० व० १० रवौ प्राग्वाट सं० साफा भा० सूरिमदे पु० ठापरा सा० तारादि पुत्र सूरादि कु० यु० स्वश्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं का० प्र० तपा पक्षे श्री गच्छराज श्री सुमति साधु सूरिभि ॥ श्री ॥

(१३६७)

धातु के यंत्र पर

लि । पं । भाग्यचद सं० १८४२ व । मिति आसोज सुदि पञ्चम्यां ॥ इ सेठ लोवसी

(१३६८)

यंत्र पर

सं० १८६१ म० आ । सु । ७

(१३७६)

सं० १५२७ ज्ये० व० ११ उपकेश व्य० भाडा भा० लाछू पु० जोजा जाणाभ्यां भा० नामलदे वल्ही पितृव्य अमरा अर्जुन भारमल प्रमुख कुटुंब युताभ्या पितुः श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः वराहलि ग्रामे ॥

(१३७७)

सं० १५१० वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ गुरु श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्यव० लींपा भा० रूदी निमित्तं सुत पोपटकेन श्री संभवनाथ रत्नमय पंचतीर्थी बिंबं कारितं प्र० श्री श्री वीरप्रभसूरि पट्टे श्री कमलप्रभसूरिणामुप० प्रतिष्ठितं ॥

(१३७८)

श्री सुमतिनाथादि पचतीर्थी

सं० १५३४ वर्षे आषाढ सुदि १ गुरौ वारे वावेल गोत्रे सा० चाचा संताने सा० रूपात्मज सा० सिंघा भार्या जयसंघही पुत्र तेजा पुन पाल युतेन स्व पुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं कृष्णर्षि गच्छे श्रीनयचंद्रसूरि पट्टे श्री जइचंद्रसूरि

(१३७९)

सं० १४२८ वर्षे वैशाख वदि मं० केस सा० कुरपाल भा० लाछी पुत्र गांगकेन पित्रो श्रे० श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्री आमदेवसूरिभिः

(१३८०)

श्रीपार्श्वनाथजी (ताम्रमय)

सं० १४१३ वर्षे जेठ सुदि ६

(१३८१)

श्री पार्श्वनाथजी

सं० १३४९ मू० संघे
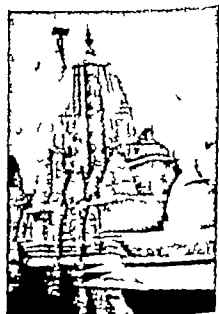
(१३८७)

सं० १५४८ का वेशाख सुदि ३ ... ..भट्टारक श्री

(१३८८)

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी

सं० १५४८ वरखे वेसाख सुदि ३ श्री मूल संघे भट्टारक जी श्री चन्द्रप्रभ

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१३८९)

मूलनायकजी श्री वासुपूज्यादि चौवीशी

सं० १५७३ वर्षे फाल्गुन वदि २ रवौ प्राग्वाट जातीय महं० वाघा भार्या गागी पुत्र मं० लाधा भार्या माणिक दे पुत्र सं० कर्मसीकेन भार्या रा० कसमीर दे पुत्र अढमल्ल गढमल्लादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य विंवं चतुर्विंशति पट्ट युतं कारितं प्रतिष्ठितं तप गच्छे श्री सोमसुन्दर सूरि संताने श्री कमल कलश सूरि पट्टे श्री जयकल्याण सूरिभिः श्री रस्तु ॥

(१३९०) 183

श्री पार्श्वनाथजी

सं० १४५६ वर्षे माघ सुदि १३ शनौ उप० छाजहड़ गोत्रे सा धांधा पु० भोजा भा० पद्मसिरि पु० मलयसी भा० सूहव पु० मना भा० देवल पु० रत्ताकेन आत्म श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंवं कारितं पल्लीवाल गच्छे प्रतिष्ठितं श्री शातिसूरिभिः ॥

(१३९१)

श्री सुपार्श्वनाथजी 187

सं० १६२२ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवारे उपकेश वंशे राखेचा गोत्रे साह आपू तत्पुत्र साह भाडाकेन पुत्र सा० नींवा माडू मेखा । हेमराज धनू । श्री सुपार्श्व विंवं कारापितं श्री खरतर गच्छे श्री जिन माणिक्य सूरि पट्टाधिप श्री जिनचन्द्र सूरिभि प्रतिष्ठितं शुभमस्तु ।

(१३९२)

श्री शान्तिनाथजी

सं० १४५७ वैशाख सुदि २ शनौ उपकेश ज्ञा० भरहट गो० व्य० देसल भा० देसलदे पु० भादा मादा हादाकैः भ्रातृ देदा श्रे० श्री शांति बिं० का० उपकेश ग० ककुदाचार्य सं० प्र० श्री देवगुप्त सूरिभिः ॥

(१४००)

श्री अजितनाथजी

१ श्री विक्रमनगरे महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह जी विजयराज्ये

२ बा० जयमा का० प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री पंचनदी पतिसाधके श्री सलेमसाहि प्रतिबोधके श्री

३ जिनमाणिक्यसूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री श्री श्री जिनचन्द्रसूरिभि शिष्य आचार्य श्री जिनसिंह

४ सूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान गणि प्रमुख साधु सघ युतै पूज्यमान

(१४०१)

श्री सुपार्श्वनाथ जी

श्री खरतर गच्छे।। राजाधिराज श्री रायसिंह जी राज्ये। बा० रंगादे कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्ट प्रभाकर युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभि शिष्य आचार्य श्री जिनसिंहसूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान गणि साधु युतै. चिरनंदतु ॥

(१४०२)

श्री अजितनाथजी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्री अमरसर। वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय बखरा गोत्रे सा० अचलदास पुत्र सा० मानसिंघ भार्या सुपियारदे नाम्निकया पुत्र रूपचंदास सहितया अचलदास पुत्री मोतां सहितया च श्री श्री अजित बिंबं कारितं प्रति० श्री गुरूपदेशादेव यावजीव पाण्मासिक जीवामारि प्रवर्त्तके श्री दिल्लीपति सुरत्राणेन प्र० श्री खरतर गच्छे श्री अकबर साहि दत्त युगप्रधान विरुदे साहिदत्तापाढीयाष्टान्हिकामारि स्तम्भ तीर्थीय जलचर जीव रक्षण यश प्रकरे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभि आ० श्री जिनसिंह सूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान प्र० सा० संघ युतैः

(१४०३)

श्री सुपार्श्वनाथजी

स० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्री विक्रमनगरे राजाधिराज राजा श्री रायसिंह श्री राज्ये श्री खरतर गच्छ दिल्लीपति सुरत्राण श्री महकम्बर साहि प्रदत्त युगप्रधान विरुद प्रवरैः सन्तुष्ट साहि दत्तापाढीयाष्टान्हिका सत्का सदमारि स्तम्भ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव सरक्षण सजात यश प्रकरैः लोष्ट मंत्रादि प्रभाव प्रसाधित पंचनदीपति यक्ष निकरैः श्री शत्रुंजय कर मोचकैः सदुपदेश प्रतिबोधित श्री सलेम शाहि प्र० श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठितं कारितं च बा० मन्त्री कान्हा भार्या कुसुम्भदे श्राविकया। श्री सुपार्श्व बिंब चिरं नन्दतु ॥

श्री चिन्तामणिजी के मूलनायक प्रतिष्ठापक
दादा श्री जिनकुशलसूरि मूर्ति (स० १४८६ मालपुरा)

श्री ऋषभदेव जिनालय के शिखर गुम्बज

मूलनायक श्री ऋषभदेवजी
(सं० १६६२ श्री जिनचन्द्रसूरि प्रतिष्ठित)

युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिजी मूर्ति
सं० १६८६ श्री जिनराजसूरिजी प्रतिष्ठित ऋषभदेव जिनालय

श्री ऋषभदेव जिनालय का शिखर

श्रीऋषभदेवजी का मन्दिर (नाहटों की गुवाड़)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१३६६)

मूलनायक श्री ऋषभदेवजी

१ ॥ संवत् १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने। श्री विक्रमनगरे ॥ महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह जी विजयराज्ये।

२ श्री विक्रमनगर वास्तव्य खरतर सकल श्री संघेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुरुपदेशादेव यावज्जीव षाण्मासिक जीवामारि प्रवर्त्तक सकल जैन

३ सम्मत श्री शत्रुंजयादि महातीर्थ कर मोचन स्वदेश परदेश शुल्क जीजियादि कर निवर्त्तन दिल्लीपति सुरत्राण श्री अकबर साहि प्रदत्त युगप्रधान विरुदाधारैः संतुष्ट साहि दत्ताषाढीया सदमारि स्तंभ-

४ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव जात संरक्षण समुद्भूतप्रभूत यश संभारै· वितथ तया साहिराज समक्षं निराकृत कुमति कृतोत्सूत्रासत्यवचनमय प्रवचनपरीक्षादि शास्त्र व्याख्यान विचारैः विशिष्टः स्वेष्ट मंत्रादि प्रभा-

५ व प्रसाधित पंचद्वीपति सोमराजादि यक्ष परिवारैः श्री शासनाधीश्वर वर्द्धमान स्वामी पट्ट प्रभाकर पंचम गणधर श्री सुधर्म्म स्वामी प्रमुख युगप्रधानाचार्याविच्छिन्न परंपरायात् श्री चन्द्रकुलाभरण। दुर्लभराज मुखो-

६ पलब्ध खरतर विरुद श्री जिनेश्वरसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि नवांगीवृत्तिकारक स्तंभनक पार्श्व-नाथ प्रतिमाविर्भावक श्रीअभयदेवसूरि श्रीजिनवल्लभसूरि श्रीजिनदत्तसूरि पट्टानुक्रम-समागत सुगृहितनामधेय श्री श्री श्री-

७ जिन माणिक्यसूरि पट्ट प्रभाकरै· सदुपदेशादादि मएव प्रतिबोधित सलेम साहि प्रदत्त जीया-भय धर्म प्रकरैः। सुविहित चक्रचूड़ामणि युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि पुरंदरै। शिष्य श्री मदाचाय जिनसिंहसूरि ॥ श्री-

८ समयराजोपाध्याय वा० हंसप्रमोद गणि ॥ . .सुमतिकल्लोल गणि वा० पुण्यप्रधान गणि... सुमतिसागर प्रमुख सकल साधु संघ सपरिकरै श्री आदिनाथ विंवं।

(१४००)

श्री अजितनाथजी

१ श्री विक्रमनगरे महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह श्री विजयराज्ये
२ भा० जयमा का० प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री पंचनदी पतिसाधकै श्री सलमसाहि प्रतिबोधकैः श्री
३ जिनमाणिक्यसूरि पट्टप्रभाकर युगप्रधान श्री श्री श्री जिनचन्द्रसूरिभिः शिष्य आचार्य श्री जिनसिंह
४ सूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान गणि प्रमुख साधु सघ युतैः पूज्यमान

(१४०१)

श्री सुपार्श्वनाथ जी

श्री खरतर गच्छे ॥ राजाधिराज श्री रायसिंह जी राज्ये। भा० रगादे कारित प्रतिष्ठित श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्ट प्रभाकर युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः शिष्य आचार्य श्री जिनसिंहसूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान गणि साधु युतैः चिरनंदतु ॥

(१४०२)

श्री अजितनाथजी

स० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्री अमरसर। वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय वखहरा गोत्र सा० अचलदास पुत्र सा० थानसिंघ भार्या सुपियारदे नामिकया पुत्र रूपचंदास सहितया अचलदास पुत्री मोलां सहितया च श्री श्री अजित बिंब कारितं प्रति० श्री गुरुपरंपरागत यावज्जीव षाण्मासिक जीवामारि प्रवर्त्तकै श्री दिल्लीपति सुरत्राणेन प्र० श्री खरतर गच्छ श्री अकबर साहि दत्त युगप्रधान बिरुदं साहिसपापाडीयाऽष्टान्हिकामारि स्तम्भ तीर्थीय जलचर जीव रक्षण यश प्रकरैः श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः आ० श्री जिनसिंह सूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान प्र० सा० सघ युतैः

(१४०३)

श्री सुपार्श्वनाथजी

स० १६६८ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्री विक्रमनगरे राजाधिराज राजा श्री रायसिंह जी राज्ये श्री खरतर गच्छ दिल्लीपति सुरत्राण श्री अकबर साहि प्रदत्त युगप्रधान बिरुद प्रवरै मन्त्रुप्र साहि दत्तापाढायाष्टान्हिका सत्का सदमारि स्तम्भ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव सरक्षण संजात यश प्रकरैः स्वप्त मदारि प्रभाव प्रकाशित पचनदीपति यक्ष निकरैः श्री शत्रुंजय कृत माचरै. गच्छत्रय प्रतिबोधित श्री सलेम शाहि प्र श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठित कारित च सा० मन्त्री कान्हा भार्या कुंकुमदे श्राविकया। श्री सुपार्श्व बिंबं चिरं नन्दतु ॥

(१४०४)

श्री मुनिसुव्रत जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्री विक्रमनगरे राजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी राज्ये श्री खरतर गच्छे श्री मदकबर साहि प्रदत्त युगप्रधान विरुद प्रवरैः सन्तुष्ट साहिदत्ता पाढोयाऽष्टाह्निका सदमारि स्तंभ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव संरक्षण संजात यश प्रकरैः श्री शत्रुजयादि समस्त तीर्थकर मोचकैः श्री सलेम साहि प्रतिबोधकैः सदैन युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः प्र० का० को० माना भार्या महिमा दे श्राविकया श्री मुनिसुव्रतस्य बिंबं का० पूज्यमानं चिरं नन्दतु ॥५॥

(१४०५)

श्री वासुपूज्य जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने डा० हेमराज भार्या दाडिम दे नामिकया का० श्री वासु-पूज्य बिंबं प्र० श्री खरतर गच्छे। दिल्लीपति श्रीअकबरशाहि प्रदत्त युगप्रधान पद प्रवरैः श्री शत्रुजयादि महातीर्थ करमोचकैः श्री सलेमशाहि प्रतिबोधकैः॥ श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः।

(१४०६)

श्री शीतलनाथ जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्रे० पीथाकेन श्रे० नेतसी पासदत्त .पोमसी। पहि-राज प्र० सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभि.॥

(१४०७)

श्री महावीर स्वामी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ बो० मंत्री अमृत भार्या लाछल दे श्राविकया पुत्र भगवानदास सहितया महावीर बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(१४०८) 187

श्री चद्रप्रभ स्वामी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने गणधर गोत्रे सं० कचरा पुत्र सा० अमरसी भार्या अमरादे श्राविकया पुत्र आसकरण अमीपाल कपूर प्रमुख परिवार सहितया श्री चन्द्रप्रभ बिंबं प्रतिष्ठितं दिल्लीपति श्री अकबर साहि दत्त युगप्रधान विरुदै सदाषाढियाऽष्टान्हिकादि षणमा-सिक जीवामारि प्रवर्त्तकै श्री शत्रुंजयादि तीर्थ कर मोचकै पञ्च नदी साधकै श्री खरतर गच्छे राजा श्री रायसिंह राज्ये। श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभि. शिष्य आचार्य श्री जिनसिंहसूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान प्र० युतै वा० हंसप्रमोद नोति। चिरं नंदतु ॥ श्री ॥

(१४०६)
श्री मुनिसुव्रत स्वामी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने छिम्गा गोत्रे मं० सतीदास भार्या सिन्दूरदे हरखमदे श्राविकाभ्यां पुत्र रत्न सं० सूरदास सहिताभ्यां मुनिसुव्रत स्वामी बिंब कारित प्रति० अकबर साहि प्रदत्त युगप्रधान बिरुदे सं० सिंदूर दे श्रा० हरखम दे का श्री खरतर गच्छे महाराजाधिराज राजा रायसिंह जी राज्ये श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभि पूज्यमानं चिरं नंदतु । वा० पुण्यप्रधानोनोपि

(१४१०)
श्री विमलनाथ जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने को० कपूर भार्या कपूर दे श्राविकया श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे दिल्लीपति सुरत्राण श्री अकबर साहि दत्त युगप्रधान बिरुद प्रवरैः साहि दत्ताभ्या० श्री सलेम साहि प्रतिबोधकैः श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः

(१४११)
श्री सुपार्श्वनाथजी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने सा० कमा भार्या करमादे श्राविकया श्री सुपार्श्व बिंबं कारित प्रतिष्ठित दिल्लीपति श्री अकबरसाहि दत्त युगप्रधान बिरुदैः श्री शत्रुंजयादि तीर्थकर मोक्षैः सलेम साहि बो० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री *जिनचन्द्रसूरिभिः आर्य श्री जिनसिंहसूरि श्री समयराजोपाध्यायैः वा० पुण्यप्रधान प्र० मुक्तैः*

(१४१२)
श्री नेमिनाथ जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने बो० गोत्रे सिन्धु पुत्र काजण भार्या छीतमदे कारित नेमि बिंब प्र० श्री अकबर साहिदत्त युगप्रधान बिरुदे श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः वा० पुण्यप्रधानोपि ॥

(१४१३)
श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६६२ चैत्र वदि ७ दिने मं० हरसा भार्या हरखमदे श्राविकया मं० मेतसी जेतसी सपरिवार सहितया श्री पार्श्व बिंब प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्य सूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः

श्रीऋषभदेवजी का मन्दिर (नाहटों की गुवाड़)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१३६६)

मूलनायक श्री ऋषभदेवजी

१ ॥ संवत् १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने। श्री विक्रमनगरे॥ महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह जी विजयराज्ये।

२ श्री विक्रमनगर वास्तव्य खरतर सकल श्री संघेन श्री आदिनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री गुरूपदेशादेव यावज्जीव षाण्मासिक जीवामारि प्रवर्त्तक सकल जैन

३ सम्मत श्री शत्रुंजयादि महातीर्थ कर मोचन स्वदेश परदेश शुल्क जीजियादि कर निवर्त्तन दिल्लीपति सुरत्राण श्री अकबर साहि प्रदत्त युगप्रधान विरुदधारैः संतुष्ट साहि दत्ताषाढीया सदमारि स्तंभ-

४ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव जात संरक्षण समुद्भूतप्रभूत यश संभारैः वितथ तया साहिराज समक्षं निराकृत कुमति कृतोत्सूत्रासत्यवचनमय प्रवचनपरीक्षादि शास्त्र व्याख्यान विचारैः विशिष्टः स्वेष्ट मंत्रादि प्रभा-

५ व प्रसाधित पंनदीपति सोमराजादि यक्ष परिवारैः श्री शासनाधीश्वर वर्द्धमान स्वामी पट्ट प्रभाकर पंचम गणधर श्री सुधर्म्म स्वामी प्रमुख युगप्रधानाचार्याविच्छिन्न परंपरायात् श्री चन्द्रकुलाभरण। दुर्लभराज मुखो-

६ पलब्ध खरतर विरुद श्री जिनेश्वरसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि नवांगीवृत्तिकारक स्तंभनक पार्श्वनाथ प्रतिमाविर्भावक श्रीअभयदेवसूरि श्रीजिनवल्लभसूरि श्रीजिनदत्तसूरि पट्टानुक्रम-समागत सुगृहितनामधेय श्री श्री श्री-

७ जिन माणिक्यसूरि पट्ट प्रभाकरैः सदुपदेशादादि मएव प्रतिबोधित सलेम साहि प्रदत्त जीवाभय धर्म प्रकरैः। सुविहित चक्रचूडामणि युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि पुरंदरैः। शिष्य श्री मदाचार्य जिनसिंहसूरि॥ श्री-

८ समयराजोपाध्याय वा० हंसप्रमोद गणि॥. ....सुमतिकल्लोल गणि वा० पुण्यप्रधान गणि... सुमतिसागर प्रमुख सकल साधु संघ सपरिकरैः श्री आदिनाथ बिंवं।

(१४२१)

विजय सेठ विजया सेठाणी के पाषाण पादुकाओं पर

संवत् १६३१ रा वर्षे मि० । प्रथम आषाढ़ वदि ६ तिथौ सोमवासरे विजय सेठ विजय सेठाणी चरण न्यास प्रति० भ० श्रीजिनहंससूरिभिः वृ० खर। भ० गच्छे। गा। मानचंद जी कारापितं स्व श्रेयार्थे ॥

(१४२२)

श्री स्थूलिभद्र जी के चरणों पर

स० १६३१ व। मि। वै० सु ११ ति० । श्री स्थूलिभद्र जी ॥ वृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिन हंससूरिभि गा० मानचंद जी कारित श्रेयोर्थम् ॥

॥ मूल गर्भगृह के बाहर बाए तरफ आले में ॥

(१४२३)

श्री गौतम स्वामी की मूर्ति पर

१ ॥ स० १६६० फागुण वदि ७ दिने फो० ठाकुरसी भार्या ठकुराये
२ श्री गौतम गणभृद्बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं यु० श्री जिनराजसूरिभि

(१४२४)

श्री जिनसिंहसूरि के चरणों पर

संवत् (१६८६ चैत्र वदि ४ दिने युगप्रधान श्री जिनसिंहसूरिणां पादुके कारिते जयमा श्राविकया भट्टारक युगप्रधान श्री जिनराजसूरिराज

॥ मूल गर्भगृह के बाहर दाहिने तरफ आले में ॥

(१४२५)

श्री जिनचन्द्रसूरि मूर्ति पर

१ स १६८६ वर्षे चैत्र वदि ४ दिने श्री खरतर गच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री
२ जिनचन्द्रसूरीणां प्रतिमा का० जयमा श्रा० युगप्रधान श्री जिनराजसूरिराजै. ।

गर्भगृह के बाहर काउसग्ग ध्यानस्थ मूर्तियों पर

(१४२६)

श्री भरत प्रतिमा

॥ संवत् १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० भौमे उत्तराफाल्गुन्यां श्री खरतर गच्छे श्री भरत चक्रवर्ति महामुनि बिंबं कारितं समस्त श्री संघेन प्रतिष्ठितं श्री जिनराजसूरिभि

(१४०४)

श्री मुनिसुव्रत जी

सं० १६६२ वर्ष चैत्र वदि ७ दिने श्री विक्रमनगरे राजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी राज्ये श्री खरतर गच्छे श्री मदकब्बर साहि प्रदत्त युगप्रधान विरुद प्रवरैः सन्तुष्ट साहिदत्ता पाढीयाऽष्टाह्निका सदमारि स्तंभ तीर्थीय समुद्र जलचर जीव संरक्षण संजात यश प्रकरैः श्री शत्रुजयादि समस्त तीर्थकर मोचकैः श्री सलेम साहि प्रतिबोधकैः सदेन युगप्रधान श्री जिनचन्द्र सूरिभिः प्र० का० को० माना भार्या महिमा दे श्राविकया श्री मुनिसुव्रतस्य बिंबं का० पूज्यमानं चिरं नन्दतु ॥५॥

(१४०५)

श्री वासुपूज्य जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने डा० हेमराज भार्या दाडिम दे नामिकया का० श्री वासुपूज्य बिंबं प्र० श्री खरतर गच्छे। दिल्लीपति श्रीअकबरशाहि प्रदत्त युगप्रधान पद प्रवरैः श्री शत्रुजयादि महातीर्थे करमोचकैः श्री सलेमशाहि प्रतिबोधकैः॥ श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः।

(१४०६)

श्री शीतलनाथ जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने श्रे० पीथाकेन श्रे० नेतसी पासदत्त .पोमसी। पहिराज प्र० सहितेन श्री शीतल बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः॥

(१४०७)

श्री महावीर स्वामी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ बो० मंत्री अमृत भार्या लाछल दे श्राविकया पुत्र भगवानदास सहितया महावीर बिंबं कारितं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(१४०८) 187

श्री चद्रप्रभ स्वामी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने गणधर गोत्रे सं० कचरा पुत्र सा० अमरसी भार्या अमरादे श्राविकया पुत्र आसकरण अमीपाल कपूर प्रमुख परिवार सहितया श्री चन्द्रप्रभ बिंबं प्रतिष्ठितं दिल्लीपति श्री अकबर साहि दत्त युगप्रधान विरुदै सदाषाढियाऽष्टान्हिकादि षण्मासिक जीवामारि प्रवर्त्तकै श्री शत्रुंजयादि तीर्थ कर मोचकै पञ्च नदी साधकै श्री खरतर गच्छे राजा श्री रायसिंह राज्ये। श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभि शिष्य आचार्य श्री जिनसिंहसूरि श्री समयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधान प्र० युतै वा० हंसप्रमोद नोति। चिरं नंदतु ॥ श्री ॥

(१४३४)

॥ सं० १५३४ वर्षे आषाढ़ सुदि १ गुरौ सत्यक ज्ञातीया सा० मोखा भा० मायलदे सुत कू भा भा० कडधिगदे पुत्र कू गरादि आत्म पुण्याय श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० पूर्णिमा पक्षीय भ० श्री जयप्रभसूरि पट्टे श्री जयभद्रसूरिभि

(१४३५)

सं० १५०६ वैशाख सुदि ३ शनौ श्रीमाल ज्ञाती सं० वरपाल भा० खीमी सुत सं० धणकेम पित्रो श्रेयसे श्री श्री नमिनाथ बिंबं कारापित श्री पूर्णिमा पक्षेश प्रतिष्ठितं श्री साधुरत्नसूरीणा मुपदेशेन चकामा।

(१४३६) १९२

॥ सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे संखवालेचा गोत्रे कोचर सताने सोना सांगा पुत्र सा० वीरम भाहेन भार्या करमादे पुत्र पदमा पांचा सहितेन पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारि० प्रति० श्रीखरतर गच्छेश श्री जिनराजसूरि पट्टालंकार श्री जिनभद्रसूरिभिः॥

(१४३७) १९२

६० ॥ सं० १४६१ वर्षे फाल्गुन वदि १ बुधे ऊकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्रे० सम्मण संताने श्रे० नरसिंह भार्या वीरिणि। तयोः पुत्र मोखा हरिराज सहसकरण सूरा महीपति पौत्र गोधा इत्यादि कुटुंबं॥ तत्र श्रे० हरिराजेन आत्मनस्तथा भार्या मेधू आविकया पुत्री कामण कर्म प्रभृति सतति सहितायाः स्व श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारितं खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितम्॥

(१४३८)

॥ सं० १५७१ वर्षे माघ सुदि १ रवौ। राजाधिराज श्री नाभि नरेश्वर माता श्री मरुदेवा तत्पुत्र श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ श्री॥ आदिनाथ बिंबं कारितं सेवक पीरा जेसंघाभिधानेन॥ कर्म क्षयार्थं॥ मो॥ श्री शुभं भवतु॥ लहुआई वास्तव्य॥

(१४३९)

चौवीसी सह कुंथुनाथ १९२

सं० १५३६ वर्षे फागुन सुदि ३ रविवारे छि० गोत्रे सं० सीहा पुत्र सं० सिमपाल भार्ये लीम श्री मोलाही पुत्र पासदत्तेन पितृ पुण्यार्थे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्रपल्लीय गच्छे श्री देवसुन्दरसूरिभिः

(१४४०)

पार्श्व नाथ-छोटी प्रतिमा

संवत १५३७ वर्षे वैशाख सुदि १४ रवौ संडेरवाल स व त नि रा स भ छत्र बि म ल दास छि

(१४१४)

श्री सुमतिनाथ जी

सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने कूकड चो० सुरताण भार्या सुरताणदे श्राविकया पुत्र वर्द्धमान प्रमुख सहितया श्री सुमति बिंब का० प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री साहिदत्त युगप्रधान बिरुदैः । श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युग० श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(१४१५)

श्री पु डरीक स्वामी

॥ सं० १६६४ वर्षे फागुण वदि ७ दिने राखेचा गोत्रीय सा० करमचंद भार्या सजना-देव्या श्री पुण्डरीक बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनराजसूरिराजैः

(१४१६)

श्री आदिनाथ जी

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मूलसंघे भट्टारक श्री श्री श्री जिनचंद्रदेव साह जीवराज पापरीवाल .. प्रणमत सदा श्री संघ . . राज ः

(१४१७)

सं० १६६४ फागुण वदि ७ सोमे । चोपड़ा गोत्रीय मंत्रि खीमराज पुत्र नेढा (मेहा ?) भार्या जीवादेव्या पुत्ररत्न नरहरदास युतया श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिन-राजसूरिभिः

(१४१८)

श्री पार्श्वनाथ जी

॥ सं० १८८७ वर्षे आषा । सु । १० श्री पार्श्वनाथ बिंबं नाहटा हठीसिंह्रेन कारितं प्रति० यु० भ० श्री जिनहर्षसूरिभि

(१४१९)

नीले रंग की पाषाणप्रतिमा पर

सं० १९३१ वर्षे । वै । सु । ११ ति । सोमे । श्री वर्द्धमान जिन बिंबं प्र । भ । श्री जिन हंससूरिभिः । गो । ज्ञानचंद जी गृहे भार्या रूपा कारितं । बीकानेरे ।

(१४२०)

श्री सुपार्श्वनाथ जी

सं० १६६५ वर्षे मार्गशिर वदि ४ गुरुवारे खरतर गच्छे विक्रमपुरे श्रा छा श्री सुपार्श्व-नाथस्य कायोत्सर्ग सू० प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता

(१४५०)

अष्टदल कमल पर

॥ स १६६२ वर्षे । चैत्र वदि ७ दिने बुधवारे । श्री विक्रमनगरे राजाधिराज महाराज राय श्री रायसिंह जी राज्ये डागा गोत्रे स० हमीर भार्या कस्मीर दे पुत्र सं० पारसेन भ्रातृ परवत पुत्र प्रतापसी परमाणंद । पृथ्वीमल्ल परिवार युतेन श्री नमिनाथ बिंब श्रयोथं कारितं प्रतिष्ठितं । बृहत् श्री खरतर गच्छे । श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टालंकारैः श्री अकबर शाहि प्रदत्त युगप्रधान बिरुदै युगप्रधान श्री श्री श्री जिनचन्द्रसूरिभि ॥ पूज्यमानं । चिरंनंदतु ॥

(१४५१)

नमिनाथ मूर्ति (अष्टदल कमल के मध्य में)

सा० पारस नमि बिंबं प्रति० युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसू (रि)

(१४५२)

आदिनाथ पंचतीर्थी पर

A ६० ॥ सं० १६२७ वर्षे शाके १४९२ प्रवर्त्तमाने पौष मासे शुक्ल पक्षे तृतीया भृगुवासरे श्री माल ज्ञातीय वृद्ध शाखायां ठकर । रामपाल सुत ठकर सिहिसू भार्या मा । वछी पुत्र ठ । रिखम दास श्री तपा गच्छे श्री विजयदानसूरि तत्पट्टे श्री श्री ५ श्रीहीरविजयसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री आदि नाथ बिंब । शुभं भवतु ॥ श्री ॥ श्री ॥

१ ॥ बघेरवाल गच्छ सु र त ग ड टा व द न छी (भिन्नाक्षरी लेख)

(१४५३)

लघु जिन प्रतिमा

सं० १७२६ व० हरिवस ।

(१४५४)

धातु के सर्वतोभद्र यंत्रपर

सर्वतोभद्र यंत्रमिदं प्रतिष्ठितम् । उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः सं० १८७१ मिते माघ सुदि पंचम्यां श्री बीकानेर नगरे बाफणा रायचन्द्रस्य सपरिकरस्य

(१४५५)

ह्रींकार यंत्र पर

(१) श्री धरणेन्द्राय नमः सं० श्री रत्नप्रभसूरय नामिः राजा पेरावण (२) गोमुख यक्षः ॥ गौतम स्वामी ॥ जिन पादुका ॥ दापि दक्षणावर्त्त (३) पेरावण श्री पद्मावत्यै नमः श्री सर्वा नन्द सूरिः ॥ मरुदेवी ॥ श्री उपकेश गच्छे उ० श्री आणंदसुन्दर शि० उ० चारित्रराजेन (४) सा० श्री देवरत्न ॥ चक्रेश्वरी निवाम पद्मः क्षेत्रपाल भैरव्या । सं० १५१६ वर्षे माघ सु० ५ दिने प्र श्री जिनचंद्रराजसूरिभिः ॥

(१४२७)

श्री बाहुबलि प्रतिमा †

॥ संवत् १६८७ वर्ष ज्येष्ठ सुदि १० दिने भौमे उत्तराफाल्गुन्या महाराजाधिराज श्री सूर्य्यसिंह जी विजयि राज्ये श्री खरतर गच्छे श्री बाहूबलि बिंबं कारितं श्री संघेन प्रतिष्ठितं श्री जिनसिंहसूरि पट्टालंकार युगप्रधान श्री जिनराजसूरिभिराचंद्रार्कं नंदतु ॥

मूल गुंभारे में प्रभु के सन्मुख हस्तिपर

(१४२८)

माता मरुदेवी मूर्ति

सं० १६८६ वर्ष। चंवर पृष्टेऽरोहिते श्री मरुदेवी प्रतिमा कारिता चोपडा जयमा श्राविकया प्रतिष्ठिता श्री जिनराजसूरि राजै.

(१४२९)

भरत प्रतिमा

श्री भरत प्रतिमा कारिता जयमा श्रा० प्रति० श्री जिनराजसूरिभि· ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१४३०) १९।

संवत् १४८७ मार्गसर व० १ उपकेश ज्ञा० लुकड़ गोत्रीय सा० देपा भा० कमलादे पु० पाल्हाकेन भा० पाल्हणदे स्व भ्रातृ सा० रामादि कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री श्रेयास बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि.

(१४३१) १९।

संवत् १६०६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १२ दिने बुचा गोत्रीय सा० लखमण बु (? पु) त्र सीमा जयता अरजुन सीहा परिवार सहितेन पुण्यार्थे श्री कुंथनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री जिनमाणिक्य-सूरिभि· खरतर गच्छे।

(१४३२) १९।

संवत् १६३८ वर्षे माह सुदि १० दिने श्री ऊकेश वंसे। छाजहड गोत्रे सा० चापा तत्पुत्र सा० अमरसीकेन कारितं श्री अजितनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्री जिनचंद्रसूरिभि

(१४३३) १९।

॥ सं० १५०३ ज्येष्ठ सुदि ११ जाइलवाल गोत्रे। सं० खीमा पुत्रेण। सं० हमीरदेवेन स्वधर्म-पत्नी मेघी पुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं का० प्र० तपा भट्टारक श्री पूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्री हेमहंस-सूरिभि ॥ श्री

† दोनों तरफ परिकर में [illegible]

भाण्डागारस्थ खण्डितमूर्ति व चरणों के लेख

पाषाण प्रतिमा लेखा

(१४६२)

श्री शांतिनाथ जी

सं० १६६० फाल्गुण वदि ७ श्री शांति बिंबं प्र० श्री जिनराजसू०

(१४६३) 196

श्री संभवनाथ जी

सं० १६६२ चैत्र वदि ५ डागा गोत्रे सं० पदमसी भार्या प्रतापदे भाविकया पुत्र श्री पोमसी सहितया संभव बिंबं कारितं प्रति० खरतर गच्छे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः

(१४६४)

सं० १६६४ ज्येष्ठ बिंबं भरापिता गच्छे'''' 'प्र० मालदेवाम्ना म्नाये बड़वाला करापित।

(१४६५)

श्री चन्द्रप्रभ प्रतिमा

सं० १११३ वर्षे वैशाख '' च के पे दे र (?) उपाध्याय पणि'

(१४६६)

श्री चन्द्रप्रभ प्रतिमा

सं० १६०४ प्र० ज्येष्ठ वदि । चन्द्रबिंबं प्रति। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभि ॥

(१४६७)

श्री आदिनाथ जी

सं० १९११ व। मि। वै। सु। ११। ति। श्री आदि बिंबं प्र०। बृ। ख। ग। भ। श्री जिनहंससूरिभि मा। खेमचन्द जी पु। केशरीचन्द जी गृहे भार्याभ्यां कारिते ॥ श्री बीकानेर नगरे

चरणपादुकाओं के लेख

(१४६८)

सं० १७१३ वर्षे मिति माह सुदि १ दिने उपाध्याय श्री विनयमेरुणां पादुके।

(१४४१)

सं० १५२७ माघ वदि ७ लासवा० प्रग्वाट व्य० मोकल '' केन भ्रातृ गिहदु भा० राणी जहत्र प्र० कुटुंव युतेन श्री विमलनाथ बिंवं कारितं प्र० तपागच्छेश श्री रत्नशेखरसूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागरसूरि पुरंदरैः ॥

(१४४२)

सं० १४०६ वर्षे फागुन वदि २··· ···ज्ञातीय महं पदमी ··नाल्वा० गांग श्रेयसे स० आदिनाथ बिंबं कारितं प्र० मलधारि श्री राजशेखरसूरिभिः

(१४४३) 193

अजितनाथ पंचतीर्थी

सं० १५० ' वर्षे जा (?) सुदि २ दिने ऊकेश वंश लूणिया गोत्रे सा० ऊधरण भार्या माणिक दे तत्पुत्र सा० दूदा सूदा भा० पुत्र सा० तेजा सा० बीकादि परिवार सहिताभ्यां श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छ श्री जिनराजसूरि पदे श्री जिनभद्रसूरिभि·

(१४४४)

नवफणा पार्श्वनाथ

सं० १४६३ माघ सु० १० तुद (?) दिने भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति सा। विम्हेरो (?) भार्या प्योम्हिदे पुत्र थित्रभू केन

(१४४५)

आदिनाथ प्रतिमा

संवत् १७६३ वर्षे कारतग सुदि श्री ऋषभ बिंबं ऋषभ

(१४४६)

देवजी कमल सी

(१४४७)

पार्श्वनाथ प्रतिमा

लेखमन भा० भाणा

(१४४८)

पार्श्वनाथ प्रतिमा

आसधर पुत्री पनी

(१४४९)

पार्श्वनाथ प्रतिमा

भ० श्री ३ कनक। २ श्री धर्मकीर्ति ३ मदे

(१४७६)

शांतिनाथ जी

६०॥ सं० १४६३ वर्षे फा० व० १२ ऊपकेश वंशे वरड़ा शाखे सुत सा० वामर पुत्र वरड़ा कुसला द० कीहनाम्या सपरिवाराभ्यां आत्म श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं खरतर श्री जिनभद्रसूरिभिः

(१४७७) नाल्हा|1981|कु०चो|बीकाने

पार्श्वनाथ

/ सं० १३६० वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ श्री ऊपकेश गच्छे चिप्पाड़ (?) गोत्रे सा० महीधर सु० सामंत सुतैः सा० कोल्हा सा० मोल्हा कुमर मूंसादिभिः पितु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ का० प्रति० श्री कक्कुदाचार्य संताने । श्री कक्कसूरिभिः चिरं नंदतात्

(१४७८)

सं० ८५ (?) ज्येष्ठ सुदि ६ श्री भावदेवाचार्य गच्छे असा पत्न्या सूहवादिभिः भक्तया श्रेयोर्थं कारिता

(१४७९)

पार्श्वनाथ जी

सं० १३४६ वर्षे आषाढ़ वदि १ संडेर गच्छे श्री सहदा भार्या सूहव पुत्र मऊसी रावण अमरा सूहव श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीशालिसूरिभिः

(१४८०)

पार्श्वनाथ

१२६५ वर्षे पासाभार्या पदमल देव्यामर्द पाता श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं चैत्र० श्री पदमदेवसूरिभि

(१४८१)

सं० मार्ग सुदि श्री मूल भ श्री जिनचंद्र डूंगर व पणमति

(१४८२)

आदिनाथ

वर्षे ज्येष्ठ सुदि ७ शुक्रे ऊप० चापू भा० हीरादे पु० सगर सायराभ्यां पितृ पितृव्यक श्रेयसे श्री आदि (जि) न बिंबं कारित प्र० पिपलाचार्ये श्री वीरप्रभसूरिभिः

(१४५६)

अष्टाग सम्यक् दर्शन यत्र पर

सं० १७३२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ३ श्री मू० भ० सुरेन्द्रकीर्ति स्तदाम्नाये खंडेलवा० संगही नरहर दासेन प्रतिष्ठा कारिता सम्मेदसिखरे शुभं भवतु ॥

(१४५७)

चांदी के चरणों पर

दादाजी श्री जिनदत्तसूरि जी

पाण्डव देहरी के लेख

(१४५८)

स्वस्ति श्री मंगलाभ्युदय सं० १७१३ वर्षे आषाढ मा पष्ठी तिथौ ..
१ युधिष्ठिर पाडु प्र० २ श्री भीम पाण्डव मुनि प्रतिमा ३ श्री अर्जुन पाण्डव मुनि प्रतिमा ॥ ४ श्री नकुल मुनि प्रतिमा ॥ ५ श्री सहदेव मुनि प्रतिमा ॥

(१४५९)

पाषाण के चरणों पर

सं० १६६२ चैत्र वदि ७ दिने श्री धनराजोपाध्याय पादुके

(१४६०)

पाषाण के चरण

सं० १६८५ प्रमिते माघ वदि ६ दिने बुधवारे श्री खरतर गच्छे। गच्छाधीश श्री जिनराजसूरि विजयराज्ये प्रतिष्ठित हरिस ।

(१४६१)

आदीश्वर पादुका

सं० १६८६ वर्षे मारगशि शु श्री ॥ बृहत्खरतर गच्छे श्री श्री श्री आदीश्वर पादुका प्रतिष्ठित युगप्रधान श्री जिनराजसूरिभि. श्राविका जयता दे कारिते ॥

श्री ऋषभदेव जी के मन्दिर, नाहटों की गुवाड़ के

अन्तर्गत

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१४८६)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १५४५ वर्षे आषाढ़ सुदि ५ गुरौ श्री पार्श्व जिन बिंबं प्रतिष्ठित

(१४९०)

मूलनायक जी के नीचे शिलापट्ट पर

सं० १८९६ वर्षे शाके १९६४ प्रवर्त्तमाने आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे ६ गुरुवासरे स्वाति नामनि नक्षत्रे सिंघे चन्द्रे ओस वंशे वेगाणी गोत्रे सा० श्री अमीचंद जी तत्पुत्र साह श्री कीमारम्म जी तस्य भार्या चिरंजीव देव्या मूलवाम वास्तव्य मथसाणी भा याह (?) चोम मल जी तस्य पुत्री माई वनीकेन करापित श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठित खरतर गच्छाधीश्वर भ० श्री जिनलाभसूरिभिः ॥ श्री रस्तु.

(१४९१)

सं० १५४६ वर्षे वैशाख सुदि ३ .. ..

(१४९२)

श्री खरतर गच्छे क्षितिपति अक बर साहि दत्त युगप्रधान विरुदै साहि दत्तापाढीया द्यान्हिकामारि स्तंभतीर्थीय जलचर रक्षण संभाव यशः भक श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युग प्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः। वा० पुण्यप्रधानो नौति॥

(१४९३)

श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरिभिः। सं० १६६२ वर्षे चैत्र वदि ७ दिने सुरता अचला भार्या अचलादे श्राविकया पु० केसा .... ..

(१४६९)

सं० १७५६ वर्ष श्रावण वदि ५ दिने शुक्रवारे वृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनचंद्रसूरि जी शिष्य उपाध्याय श्री उदयतिलक जी गणीनां देवंगत पहुता पालीमध्ये।

(१४७०)

सं० १७५४ वर्षे आषाढ मासे कृष्ण पक्षे दशमी तिथौ शुक्रवारे वाचक श्री विजयहर्ष गणीनां पादुके स्थापिते श्री

(१४७१)

सं० १७७५ म० श्री साध्वी राजसिद्धि गणिनी पादुके कारिते श्र षण (?) श्राविकाभि श्रा दी क म र मा (?)

(१४७२)

श्री सीमधरस्वामी की मूर्ति पर

सं० १६८६ वर्षे चैत्र वदि ४ जयमा श्रा० का० श्री सीमंधर स्वामी प्रतिमा प्र० खरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि राज ।

धातुप्र-तिमाओं के लेख

(१४७३)

श्री सभवनाथ जी

सं० १४८७ मार्गशीर्ष वदि १० शुक्रे उपकेश ज्ञाति । मुरुया गोत्रे सा० पेथड़ भा० सरसो पु० पाल्हा थेल्हा ऊसा तोलाकैः पित्रोः श्रे० श्री संभव विंबं का० प्र० श्री उपकेश गच्छे श्री ककुदाचार्य संताने श्री सिद्धसूरिभिः ॥

(१४७४)

श्री सभवनाथ जी

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वंशे गणधर चोपडा गोत्रे सा० शिवा पुत्र सा० लूणा भार्या लूणादे पुत्र ठाकुरकेन भार्या धाती पुत्र कूंभा लूभादि युतेन श्री संभवनाथ विंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभि श्री जेसलमेरु

(१४७५)

श्री महावीर स्वामी

सं० १४१४ वर्षे चैत्र सुदि ११ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञाति वि वीरम भार्या सुहागदे त्रा० वीरपालान (?) जयतल श्रेयोर्थं सुत नरसिंहेन श्री महावीर विंबं श्री हर्षतिलकसूरीणा मु। प दे ते स कारितं

(१५०३) 203

सं० १५२३ वर्षे माह सुदि ६ रवौ उप० कूकड़ा गोत्रे सा० मूला भार्या माणिक दे पु० आसा भा० हरखू पु० कीहट सा० आसा आत्म पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री उपकेश गच्छे सिद्धसूरि पट्टे श्री कक्कसूरिभिः ॥

(१५०४) 20

स० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंशे साउसखा गोत्रे सा० सीहा पुत्र सा० चांपा केन भार्या चांपलदे पुत्र सा० वरसिंह सा० जयता पौत्र रायपाल आठा पापा कीपा छाजिग प्रमुख परिवार युतेन श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छेश श्रीजिनहंससूरी श्वरा ॥ श्रीरस्तु ॥

(१५०५)

स० १५२७ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्री सिद्ध शाखायां श्रीमाल ज्ञा० मंत्रि सूरा भा० रज़ू सुत महिराज केन भार्या रमादे द्वि० भार्या जीवणि सुत रामा रत्ना रूपा सहितेन पितृ मा० पि० सूरा भ्रातृ नारद स्व पूर्वज श्रेयोर्थे आत्म श्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री पिप्पल गच्छे श्रीराजदेवसूरिभि

(१५०६)

सं० १५१३ वर्षे माघ मासे ऊकेश सा० गोसल भहगलदे पुत्र सा० कुराकाकेन भा० लखमीरदे पुत्र चाचा , चापा पेमा लाखण छोलादि कु० युतेन निज श्रेयसे श्री मुनिसुव्रत बिंब का० प्र० तपा गच्छाधिराज श्री रत्नशेखरसूरिभि छूकड़ गोत्रे

(१५०७)

सं० १५२८ वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञा श्रे० सोमसी भा० कीघी सुत समरा भा० मही सुत जीवाकेन भा० लाछी सुत श्रीकादि कुटुम्ब युतेन भ्रातृ आवड़ श्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० तपा गच्छेश श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि श्री

(१५०८)

॥ ६० ॥ स० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने नाहटा गोत्रे सा० चांपा भार्या चांपल दे त्सुपुत्र सा० मोका सुश्रावकेण भार्या भरत्यादे पुत्र रूपसी प्रमुख परिवार सहितेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंब कारि । प्रति० खरतर गच्छ श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः ॥

(१५०९)

१ पं० पद्मचन्द्र श्रेयोर्थं चोरवदेव जयदेवेन प्रतिमा कारिता स० १२४१ प्रतिष्ठिता ।

(१४८३)

पार्श्वनाथ

सं० १२२३ फा० वदि भोमे मं० राकलसुतेन आम्रदेवेन स्व श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्री देवसूरिभिः

(१४८४)

चादी की चक्रेश्वरी की मूर्त्ति पर

॥ सं० १८६२ मि । फागण वदि ३ । भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्रति । गो । श्री दौलत-राम जी करापितं ॥

(१४८५)

चादी के नवपद यन्त्र पर

संवत् १८७८ वर्षे मिती फागुण वदि ५ दिने सूराणा अमरचंद्रेण सिद्धचक्र कारितं प्रतिष्ठितं च भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि. श्री उदयपुर नगरे

(१४८६)

चादी के चरणो पर

सं० १८१८ मिती वैशाख सु० ६ श्री जिनकुशलसूरि जी पादुका गुरुवारे

(१४८७)

महो श्री दानसागर जी गणीना पादुका

(१४८८)

पार्श्वनाथ जी की धातु प्रतिमा

डाँमिक साप्या

(१५१७)

सं० १७६४ मीती माह सुदि १३ मारोठ नगरे मूल म पा म छ व सरस्वती भवे पा श्री महेन्द्र का गा प त द्व र्‌ आ ग त स कीर्ति व र्ग म त पी प का छ प्र सीं ग प र्‌ त पुत्र सा० रमा संघ व बत्र दा छ त नम बखतराम सुरतराम

(१५१८) 204

सं० १५४१ वर्षे आषाढ़ सुदि २ शनौ श्री आदित्यनाग गोत्रे सा० सहसा भा० सहजलदे पु० साजण सुरजनाम्भ्यां पितृ श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रति० श्री उपकेश गच्छे भ० श्रीकक्कसूरि पट्टे श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१५१९)

सं० १७७४ माघ सित १३ रवौ सा० सुन्दर सबदासेन श्री चन्द्रप्रभ बिंब कारितं।

(१५२०)

पार्श्वनाथ श्री

घरी० मेघजी

(१५२१)

सं० १६६१ श्री पार्श्वनाथ बा० मार्या प्रति। श्री विजयाणंदसू

(१५२२)

१६६१ भा० धन बाई

(१५२३)

श्री मूल संघे भ० श्रमचन्द्रोपदेशोत्तर पं० का भ। भ। सकना देवेमा प्रणमति

(१५२४)

स० १७०६ श्री मेघासि

(१५२५)

स० १८२७। बै० सु०। १२ गुडा भास्करमेन सा० मामा ऋषभ जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठित च श्री खरतर। भ॥ श्री जिनलाभसूरि २

(१५२६)

सं० १६ म० श्री जिनचन्द्र ....

(१५२७)

सा० काम दे पा। प्र

(१४९४)

· गोत्रे सा० धर्मसी भार्या श्री संभव बिंबं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरिभि

(१४९५)

प्रतिष्ठितं युगप्रधान श्री जिनराजसूरिभि.

(१४९६)

श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं··· ···· ········ · ···· ।

(१४९७)

सं १६६२ को ···भार्या मना श्राविकयाः श्री खरतर गच्छे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः······

(१४९८)

सं० १६६२ व०······ . ······श्री खरतर गच्छे

(१४९९)

सं० १८२६ कार्त्तिक सुदि ६

(१५००)

सं० १६९० व० वदि ७ ऊ० गो० तेज··· ···· बिंबं का० प्र० श्री जिनराज···

(१५०१)

चरणों पर

सं० १६६० मि । आ । ३ श्री जिनकुशलसूरीणा चरणपादुका प्रति० श्री····· ···

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१५०२)

श्री आदिनाथ चौवीसी

सं० १४९५ ज्येo सु० १४ प्राग्वाट सं० कुंरपाल भा० कमलदे पुत्र सं० रत्ना भ्रातृ सं० धरणाकेन सं० रत्ना भा० रत्नादे पुत्र लाखा सजा सोना सालिग स्वभार्या धारलदे पुत्र जाजा जावड प्रमुख कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ चतुर्विंशतिका पट्ट कारित· प्र० तपा श्रीदेवसुन्दरसूरि शिष्य श्रीसोमसुन्दरसूरिभि. ।। श्री श्री श्री श्री ।।

(१५३२)

श्री कुंथुनाथ जी

सं० १५०० वर्षे माह सुदि ३ दिने ऊकेश वंशे बोहिथहरा गोत्रे सा० ठाकुर पुत्र सा० गोपा भा० गउरिदे पुत्र सा० गुणाकेन भा० सुगुणादे पु० सा० पचाइण सा० चापादि युतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्री जे (? जि) नहंस सूरिभि ॥ श्रीबीकानगरे। लिखितं सोनी नरसंघ कु गरसी।

(१५३३)

संवत् १४५० वर्षे माघ वदि ६ सोमे प्राग्वाट ज्ञा० मई वागण भार्या साजण दे पुत्र सोभाकेन पुत्र मह० सादा पु० देवसी जिनेसी रणसी साजण सू टादि समस्त पूर्वजानां श्रियोर्थं श्री आदिनाथ मुख्य चतुर्विंशत्यायतनं कारितं । साधुपूर्णिमा पक्षीय श्री धर्मचन्द्रसूरि पट्टे श्री धर्मतिलकसूरीणामुपदेशेन ॥

(१५३४)

संवत् १५०० वर्षे माघ व० ५ रवौ ऊकेश ज्ञातीय सुगड गोत्रे साहसा भा० मेघी सुत सा० देराजकेन भा० ममा समरथ दशरथ सुत राजण प्रमुख कुटुंब युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं रुद्रपल्लिया गच्छ श्री गुणसमुद्रसूरिभि ।

(१५३५)

सं० १५२६ वर्षे माघ सुदि ५ रवौ श्री सुराणा गोत्रे सा० खीमा भा० अमरादे पुत्र सा सुहडा भार्या सुहव श्री मातृ थापा युतेन श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० श्रीधर्मघाप (? घोष) गच्छ श्री पद्मशेखरसूरि पं० श्री पद्माणंदसूरिभिः ।

(१५३६)

श्री शीतलनाथ जी

सं० १५५८ माह वदि १ सोमे प्रा० ज्ञा० व्यव० भीमा भा० रत्नू पुत्र माइया भार्या पहपू देवर सेता सुत पदमा सप० श्रीशीतलनाथ बिंबं का० प्र० तपा गच्छनायक इन्द्रनंदिसूरिभिः कपरेमग्रास ।

(१५३७)

॥ सं० १५५६ वर्षे पो० सुदि १५ सोमवासरे पुष्य नक्षत्रे विष्कंभ योगे ऊकेशान्वायी (? यी) व सा० परबत भा० पाल्हणदेव पु० पाता ऊना के व) से पल्लीवाल गच्छ भ० श्री अजोद्यण-सूरिभिः श्री शीतलनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं ॥

(१५१०)

सं० १५२५ वैशाख सुदि ६ सोमे श्री श्री वंशे लघु स० दो० वोड़ा भा० अमकू सुत दो० नूना सुश्रावकेण भार्या नागिणी पुत्र राणा। नरवद परवत भ्रातृ कला सहितेन स्व श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रति० श्रीसूरिभिः श्री०

(१५११)

सं० १५७२ वैशाख (?) सु० ५ सोमे प्राग्वाट ज्ञातीय दो० सीधर भार्या श्रा० अमरी पुत्र दो० गमाकेन भा० पूरी द्वितीय भा० राजलदे यु० श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपा श्री जयकल्याणसूरिभि.॥

(१५१२)

॥ सं० १५०२ मार्ग वदि १० लिगा गोत्रे सा० मोल्हा जगमाल देवा सुतः। सा। शिवराज डुंगर रेडा नाथू रामा बींजाख्यै. स्व पितृ पुण्यार्थं श्री कुंथुप्रतिमा का० प्र० तपा श्रीपूर्णचन्द्रसूरि पट्टे श्री हेमहंससूरिभि :॥

(१५१३)

सं० १५१६वर्षे आषाढ सुदि ३ रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय सा० माला सुतेन सा० बाघाकेन सा० शिवा धर्मपुत्रेण भार्या वापू पुत्री जीवणि युतेन स्व श्रेयोर्थं श्री श्रेयासनाथ बिंब आगम गच्छे श्री देवरत्नसूरिणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च शुभंभवतु दुरग०॥

(१५१४)

१ सं० १२८७ वर्षे फागुण वदि ३ शुक्रे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्तिण० पट्टा नदि भा पा जा। ल्हरा ऋषि पूर्व्वाधिंया पुत्रेण नावृ (?)

(१५१५)

सं० १४६२ मार्ग वदि ४ गुरौ उ० ज्य० देल्हा भा० कामल पुत्र वीपा झांझा करभाभ्या पितृ मातृ श्रेय श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० मडाहडीय श्रीमुनिप्रभसूरिभि

(१५१६)

सं० १५३६ वर्ष माघ सु० ६ पो। म क्रक्षसावत गोत्रे सा० नाल्हा भा० महकू जीउ पु० सा० ताल्हट भा० पान्ह॥ पु० तेजा पूना भा० लखी कुटुंब युते॥ बिंबं श्रे। श्री आदिनाथ बिंबं कारितः प्रतिष्ठितं श्री संडेर गच्छे श्री सालिसूरिभिः देपालपुर॥

श्री अजितनाथजी का मन्दिर

कोचरों का चौक

पाषाण प्रतिमादि लेखा

(१५४४)

शिलापट्ट पर

१ संवत् १८५५ वर्षे शाके १७२० प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे सित प

२ क्षे पंचम्यां ५ तिथौ सोमवारे सकल पण्डित शिरोमणि । प० । श्री १०८ श्री थरा

३ वंतविजय की तशिष्य । पं० । श्री मुक्तिविजयजीगुणि उपदेशात् श्री अजित

४ नाथ स्वामिन जीर्णोद्धारं करापितं श्री तपागच्छे सूत्रधार सूर्यमल सागरसवेम

५ महाराजा श्री सूरतसिंह जी राज्ये ॥ कृत जिनालय ॥ ३ स्यां सीरोही छे ॥

जीर्णोद्धार हुवो संवत् १९६१

(१५४५)

बाह्ममण्डप के शिलापट्ट पर

१ ॥ ६० ॥ संवत् १८७४ प्रमिते वर्षे मासोत्तम मासे माघ मासे हरिणाक्षा वद

२ द्वितीयायां संवत्सरे श्री अजितनाथ जिन कस्य प्रति मंडप करापितं

३ श्रीसंवेगा पं० गुलाबविजय ग । तशिष्य प० दीपविजयोपदेशात् श्री

४ तपा गच्छे । श्री महाराजा श्री सूरतसिंह जी राज्ये सूत्रधार जयसेन कृतं श्री

(१५४६)

मूलनायक श्री अजितनाथ जी

१ संवत् १६४१ वर्षे माघ सित ३ शुभे ओसवाल ज्ञातीय गोत्रे म .. भा० अमृत दे

नाम्न्या पुत्र महाज पुत्र .. क .. मेघामिध म० मोहण मं०

२ हसी प्रमुख समस्त कुटुम्ब पुवया निजास्म श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित च

तपा गच्छे अमुक भैराम्म ह गुण त पातसाहि श्री अकबरेण गूर्जरे ..

३ .. .. पी राय व साहिब मजमम्गु ....

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(डागों की गुवाड़)

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१५२८) 205

श्री सुविधिनाथ जी

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि १० श्रीमाल वंशे फकुमलोल गोत्रे मं० शवा भा० हर्षू पुत्र मं० जीवा भार्यया तेजी श्राविकया श्री सुविधिनाथ विंबं का० स्वपुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः।

(१५२६)

श्री शान्तिनाथ जी

सं० १५६० वर्षे आषाढ सुदि ५ सोम दिने श्रीप्रभु सोमसुन्दरसूरि दि विदं हं भवति श्रीसऔतिनाथ सुप्रतिष्ठितं भवति सर्ता।

(१५३०)

श्री चन्द्रप्रभ जी

सं० १४८२ वर्षे माघ सुदि ५ सोमे उपकेश ज्ञातीय सा० रूदा भा० रूपा दे पु० ऊधरण सामल सहितेन श्री चंद्रप्रभ स्वामि विं० का० श्रीबृहद्गच्छे प्र० श्रीकमलचन्द्रसूरिभिः।

(१५३१) 205

श्री कुंथुनाथ जी

सं० १६६४ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवारे राजा श्रीरायसिंह विजयराज्ये श्रीविक्रमनगर वास्तव्य श्रीओसवाल ज्ञातीय बोहत्थरा गोत्रीय सा० वणवीर भार्या वीरमदे पुत्र हीरा भार्या हीरादे पुत्र पासा भार्या पाटमदे पुत्र तिलोकसी भार्या तारादे पुत्ररत्न लखमसीकेन अपर मातृ रंगादे पुत्र चोला सपरिवार सश्रीकेन श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छाधिराज श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टालंकार युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥ पूज्यमानं चिरं नंदतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

श्री अजितनाथजी का मन्दिर

कोचरों का चौक

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(१५४४)

शिलापट्ट पर

१ संवत् १८५५ वर्षे शाके १७२० प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे सित प

२ क्षे पंचम्यां ५ तिथौ सोमवारे सकल पण्डित शिरोमणि । प० । श्री १०८ श्री धरा

३ नवविजय जी तच्छिष्य । प० । श्री मुक्तिविजयजीगणि उपदेशात् श्री अजित

४ नाथ स्वामिन जीर्णोद्धारं करापितं श्री तपागच्छे सूत्रधार सूर्यमल सागरमलेन

५ महाराजा श्री सूरतसिंह जी राज्ये ॥ कृतं जिनालय ॥ १ स्यां सीरोह्यां छै ॥

जीर्णोद्धार हुवो संवत् १६६१

(१५४५)

सभामण्डप के शिलापट्ट पर

१ ॥ ६० ॥ संवत् १८७४ प्रमिते वर्षे मासोत्तम मासे माघ मासे हरिमासा वद

२ द्वितीयायां मदवासरे श्री अजितनाथ जिन कस्य प्रति मंडप करापितं

३ श्रीसंघेना पं० गुलालविजय ग । तच्छिष्य प० दीपविजयोपदेशात् श्री

४ तपा गच्छे । श्री महाराजा श्री सूरतसिंह जी राज्ये सूत्रधार जमसेन कृतं श्री

(१५४६)

मूलनायक श्री अजितनाथ जी

१ संवत् १६४१ वर्षे मार्ग सित २ बुधे ओसवाल ज्ञातीय गोत्रे म भा० अमृत दे

भार्य्या पुत्र महाव पुत्र क मेघाभिध म० मोहण मं०

२ वसी प्रमुख समस्त कुटुम्ब युतया निजस्य श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित च

तपा गच्छे भट्टारक मैराम्य द गुण व पातसाहि श्री अकबरेण गूर्जरे –

३ – पी राय च सामिल मंडलेषु –

(१५३८)

श्री पद्मप्रभ जी (खंडित)

सं० १५३७ ज्येष्ठ व० ७ शुक्रे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० काकट भा० रही सुत जाणाकेन भा० मानू भ्रातृ रूपादि कुटुंब युतेन पितृ श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्रीलक्ष्मीसागर

(१५३९)

श्री अम्बिका मूर्ति पर

सं० १३६०वर्षे वैशाख वदि ११ श्री पल्लीवाल ज्ञातीय पितृ अभयसिंह मातृ लाछि श्रेयसे ठ० मेघलेन अंबिका मूर्ति कारिता।

(१५४०)

सर्वतोभद्र यंत्र पर

श्री सर्वतोभद्राख्य दुरितारि विजय यंत्रमिदं का० प्र० च सं० १८६१ मिते ज्येष्ठ सुदि ७ उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभि·

(१५४१)

सर्वतोभद्र यंत्र पर

श्री सर्वतोभद्र नामकं यंत्र मिदं कारितम्। सं० १८६५ मिते कार्तिक वदि ६ प्र। उ। श्री क्षमा-कल्याण गणिभि

(१५४२)

श्री सर्वतोभद्र यत्र पर

सं० १८८८ वर्षे मिती भाद्रवा यदि २ दिने हाकम कोठारी हीरचन्द्र जी तत्पुत्र गंभीरचंद्र गृहे सर्वसिद्धि कुरु २ ॥

पाषाण प्रतिमाओं*के लेख (दाहिनी ओर की देहरी में)

(१५४३)

परिकर पर

॥ संवत् ११७६ मार्गसिर वदि ६ श्री मज्जांगल कूप दुर्ग नगरे। श्री वीरचैत्ये विधौ। श्री मच्छांति जिनस्य बिंब मतुलं भक्त्या परं कारितं। तत्रासीद्वर कीर्ति भाजनमतः श्री नाढकः श्रावक स्तत्सूनुर्गुण रत्न रोहणगिरि श्री तिल्हको विश्रुते॥ १ १० तेन तच्छुद्ध वित्तेन श्रेयोर्थं च मनोरमम्। शुक्लाख्याया निजस्वसु रात्मनो मुक्ति मिच्छता ॥ २ ॥ छ. ॥

* पाषाण प्रतिमाएं गर्भगृह मे तीन और देहरी मे भी तीन है जिन पर लेख नहीं है। यह लेख देहरी के मध्यस्थ प्रतिमा के परिकर के नीचे खुदा हुआ है।

(१५५५)

श्री धर्मनाथ जी

सं० १५२१ वर्षे मार्ग० सु० ५ गुरु उप० हर्षडीया गोत्रे सा० छाहा भा० काइलदे पु० डूगर भा० करमादे पु० वच्छा आपा पदमा आत्म पुण्य श्रे० श्री धर्मनाथ बिंबं कारि० प्रति० मलधार गच्छे श्रीगुणसुन्दरसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(१५५६)

श्री गौतम स्वामी

सं० १५२३ वर्षे वैशाख सुदि १३ गुरु मन्त्रिदलीय ज्ञा० गु वलोड़ गोत्रे सा० रतनसी भा० श्राविका राऊ तत्पुत्र सा० सूदा भा० श्राविका बाई सूहवदे केन स्वपुण्यार्थं श्री गौतमस्वामि बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनसागरसूरि पट्टे श्री जिनसुन्दरसूरि पट्टे श्री जिनहर्षसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१५५७)

श्री अजितनाथादि पञ्चतीर्थी

संवत् १५६५ वर्षे माघ सुदि १२ दिने ओसवाल ज्ञातीय। लुंकड़ गोत्रे सा० सूरा पु० हरा भा० हर्षमदे पु० धरड़ा चांपा शेपा। धरड़ा भा० धर्मादे। पु० शुभा। सेलहत समस्त श्रेयसे स्वपुण्याय श्री अजितनाथ बिंबं कारापित श्री नाणवाल गच्छे प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसेनसूरिभिः ॥ समरी वास्तव्य ॥

(१५५८)

संवत् १५१८ वर्षे वैशाख सुदि ३ शनौ व्यव काजल भा० कमलादे पुत्र छाजा भार्या चंगाई श्री मुनिसुव्रत बिंबं कारित प्र० श्री ब्रह्माणीया गच्छे श्री स्वयम्प्रभसूरिभिः ॥ शुभं भवतु ॥

(१५५९)

सं० १५६१ वर्षे फा० व० २ सोमे श्री काष्ठा संघे म० नरसघपुरा ज्ञातीय नागर गोत्रे म० रतनसी भा० छीका दे पु २ मह। राजपाल म० खूभा म० राजपाल भा० रजादे पुत्र १ म० धारा छाफू बाइजी नित्य प्रणमति म० श्री विश्वसेन प्रतिष्ठाः

(१५६०)

संवत् १५७३ वर्षे माघ वदि ७ रवौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० हेमा भार्या शाणी सुत सूरा भा० रजाई सुत श्रीरंग सहितेन स्वपितृ श्रेयसे भ्रातृ वीरा निमित्तं श्री श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं श्री नागेन्द्र गच्छे भ० श्री हेमसिंहसूरिभिः ॥ प्रतिष्ठित गुड़ काकरचा

(१५४७)

सं० १६७४ व० मा० व० १ दिने उ० . ..प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठित श्री विजयदेवसूरिभि·

(१५४८)

सं० १६७४ वर्षे माघ वदि १ दिने श्री ...... ।

(१५४६)

सं० १६७४ वर्षे माघ वदि ? दिने श्री कुथुनाथ बिंवं कारितं

(१५५०)

सं० १६०५ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ३ । ऋषभ जिन बिंवं कारापितं प्रतिष्ठितं वृहत्खरतर गच्छे श्री जिनसौभाग्यसूरिभि

(१५५१)

सं० १६३१ व। मि। वै। सु० ११ ति श्रीसंभव जिन, ...श्रीजिनहंससूरिभि·

(१५५२)

श्री हीरविजयसूरि मूर्त्ति

१ ॥ सं० १६६४ वर्षे वैशाख सित ७ दिने सप्तमी दिने । अकब्बर प्रदत्त जगद्गुरु विरुद धारका
२ ॥ भट्टारक श्री हीरविजयसूरीश्वर मूर्त्ति· रत्नसी भार्या सुपियारदे नाम्नी श्री विजया
३ ॥ कारिता प्रतिष्ठिता च तपा गच्छे भ० श्री विजयसेनसूरिभि पं० मेरुविजय प्रणमति सदा

धातु प्रतिमा लेखाः

(१५५३)

श्री आदिनाथ

॥ ६० ॥ सं० १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमवासरे ओ० ज्ञातीय नाहर गोत्रे सा० राजा भा० रमा दे पु० सा० मालाकेनात्म पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीधर्मघोष गच्छे भ० श्री नंदिवर्द्धनसूरिभिः ॥

(१५५४)

श्री श्रेयांसनाथ

सं० १५३६ फा० सुदि ३ ऊकेश वंशे कुकट शा० चोपड़ा गोत्रे सा० तोला भार्या पंजी पुत्र नाल्हा के० पुत्र देवादि परिवार युतेन श्री श्रेयांस बिंबं स्वपुण्यार्थं का० प्र० खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभि ॥

श्री विमलनाथ जी का मन्दिर
कोचरों का चौक

पत्ताण प्रतिमादि लेख संग्रह

(१५५५) 212

॥ ॐ विमलनाथाय ॥

१ संवत् १६५४ मि० माघ शुक्ला १३ शनौ पंचा-
२ ग्र शुद्धौ सकल पंडित शिरोमणि भट्टार
३ क श्री विजयमुनिचन्द्रसूरि तपा गच्छ सु
४ श्रावक कोचर समस्त पुण्यकानो बीकाने
५ र नगरे प० पू० मू० विमलनाथस्य प्रतिष्ठा कोच
६ र मनरूपसोतात्मज माणकचंद जी तस्या-
७ त्मज आसकरण जी तत्पुत्र अमीचंद हु-
८ जारीमल कारित॥

(१५५६)

मूलनायक श्रीविमलनाथ जी

१ ॥ ६० ॥ स० १६२१ ना वष शाके १७८६ प्रवर्तमाने शुभकारी माघ मासे शुक्ल पक्षे ७ दिने गुरुवारे श्री राजनगर वास्तव्य ।

२ ॥ ओसवाल ज्ञातौ वृद्ध शाखायां सेठ श्रीखुशालचंद तत्पुत्र सा० बखतचंद तत्पुत्र सा० हमाभाइ तत्पुत्र सा० खेमाभाई ।

३ स्वश्रेयार्थं ॥ श्री विमलनाथ जी जिन बिंबं कारापितं । श्री तपागच्छे भ । श्री शान्तिसागर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरस्तु ॥

(१५५७)

स० १६१२ वर्षे मिगस (र) वदि ५ बुधवार चंद्र मिर्द (?) बाई जड़ावकंवर काका मवरचन्द्राज्ञ्या कारापितं उकेश गच्छ भ० देवगुप्तसूरीणा प्रतिष्ठितं च सब बिंबं तिष्ठतु श्रीनेमिनाथ नाथस्य श्रीबीकानेर में ।

(१५६१)

श्री पार्श्वनाथ जी

उ० श्री नयसुन्दर

(१५६२)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६०० आसाढ सु० ६ प्रति । भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः कारितं नेमचंद स्वश्रेयोर्थं

(१५६३)

सं० १६८८ वर्षे फागुण सुदि ८ शनिवासरे श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्कर गणे तदाम्नाये भ० जशकीर्त्ति देवा' तत्पट्टे भ० क्षेमकीर्ति देवा तत श्री त्रिभुवनकीर्ति भ० श्री सहस्रकीर्ति तष्य शिष्यणी अर्जिका श्री प्रतापश्री कुरु-जंगल देशे सपीदों नगरे गर्ग गोत्रे चो० चूहरमल तस्य भार्या खल्ही तस्य पुत्र ८ सुखू १ मदूर दुरगू३ परंगह४ सरवण ५ पदमा ६ इन्द्रराज ७ लालचंद ८ । चो० इन्द्रराजस्य भा० ४ प्र० सुखो भार्या तस्य पुत्री दमोदरी च द्वितीय नाम गुरुमुख श्रीपरतापश्री तस्य शिष्यणी बाई धरमावती ५० राईसिंघ द्वितोय शिष्य बाई धरमावती गु० भा० पादुका करापितः कर्मक्षय निमित्त शुभं भवतु ॥

(१५६४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १५४६ भ० गुणभद्र सा० वोदा०

श्री विमलनाथ जी का मन्दिर

कोचरों का चौक

पाषाण प्रतिमादि लेख संग्रह

(१५१५) 212

॥ ॐ विमलनाथाय ॥

१ संवत् १६६४ मि० माघ शुक्ला १३ शनौ पंचा-
२ ङ्ग शुद्धौ सकल पंडित शिरोमणि भट्टार
३ क श्री विजयमुनिचन्द्रसूरि तपा गच्छ शु-
४ श्रावक कोचर समस्त पूज्यकानो बीकाने
५ र नगरे प० पू० मू० विमलनाथस्य प्रतिष्ठा कोच-
६ र मनकमसोतात्मज माणकचंद जी तस्या-
७ त्मज आसकरण श्री तत्पुत्र अमीचंद द-
८ जारीमल्ल कारित॥

(१५१६)

मूलनायक श्रीविमलनाथ जी

१ ॥ ६० ॥ सं० १९२१ ना वर्षे शाके १७८६ प्रवर्तमाने शुभकारी माघ मासे शुक्ल पक्षे ७ दिने गुरुवारे श्री राजनगर वास्तव्य ।

२ ॥ ओसवाल ज्ञाती वृद्ध शाखायां सेठ श्रीखुशालचंद तत्पुत्र सा० बखतचंद तत्पुत्र सा० हेमाभाई तत्पुत्र सा० केसाभाई ।

३ स्वश्रेयोर्थ ॥ श्री विमलनाथ जी जिन बिंबं कारापितं । श्री तपागच्छे भ । श्री शान्तिसागर सूरि प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरस्तु ॥

(१५१७)

सं० १६१७ वर्षे मिगसर (८) वदि ५ बुधवार चंद्र मिर्ध (१) वर्षे अदुमचंद्र काचरा भवरचंद्राभ्यां कारापितं उपकेश गच्छे भ० देवगुप्तसूरीणां प्रतिष्ठितं च तत् चिरं विष्ठतु श्रीजेवास नायस्य श्रीबीकानेर में

(१५६१)

श्री पार्श्वनाथ जी

उ० श्री नयसुन्दर

(१५६२)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १९०० आसाढ सु० ६ प्रति । भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः कारितं नेमचंद स्वश्रेयोर्थं

(१५६३)

सं० १६८८ वर्षे फागुण सुदि ८ शनिवासरे श्री काष्ठा संघे माथुरान्वये पुष्कर गणे तदाम्नाये भ० जशकीर्त्ति देवाः तत्पट्टे भ० क्षेमकीर्ति देवा तत श्री त्रिभुवनकीर्ति भ० श्री सहस्रकीर्ति तस्य शिष्यणी अर्जिका श्री प्रतापश्री कुरु-जंगल देशे सपीदों नगरे गर्ग गोत्रे चो० चूहरमल तस्य भार्या खल्ही तस्य पुत्र ८ सुखू १ मदूर दुरगू३ परगह४ सरवण ५ पदमा ६ इन्द्रराज ७ लालचंद ८ । चो० इन्द्रराजस्य भा० ४ प्र० सुखो भार्या तस्य पुत्री दमोदरी च द्वितीय नाम गुरुमुख श्रीपरतापश्री तस्य शिष्यणी बाई धरमावती पं० राईसिंघ द्वितोय शिष्य बाई धरमावती गु० भा० पादुका करापितः कर्मक्षय निमित्त शुभं भवतु ॥

(१५६४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १५४६ भ० गुणभद्र सा० वोदा०

(१५७८)

श्री मुनिसुव्रतादि चौबीसी

संवत् १४८५ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ रवौ भावसार ज्ञातीय भा० सोमड़ सुत सं० सूरा भा० मेघू सुत स० नापाकेन भा० फक्की सहितेन पितृ मातृ तथा पितृव्य राम श्रेयोर्थ श्रीमुनिसुव्रत स्वामिश्चतुर्विंशति पट्टः कारितः प्र० श्री पूर्णि० श्रीकमलचन्द्रसूरि पट्टे श्रीविमलचन्द्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्रावकैः ॥ शुभं ॥

(१५७९)

श्री शान्तिनाथादि चतुर्विंशति

स १४७६ वर्षे पोष वदि ४ गुरौ श्रीश्रीमाल ज्ञा पाटरी वास्तव्य पितृ सं० सिधा मातृ सिंगारदेवि सुतेन स० सलखाकेन स्व श्रयसे श्री शांतिनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारित विधिना प्रतिष्ठित कल्याणमस्तु ।

(१५८०)

संवत् १४६६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ११ रवौ श्रीश्रीपत्र वास्तव्य श्रीप्राग्वाट ज्ञातीय मं० शिवा भार्या चपाइ सुत मंत्रि सुभायक म० सहसाकेन भ्रातृ सूरा तथा स्व भा० नाकू सुत माका प्रमुख कुटुंब युतेन श्री आदिनाथ बिंब श्री आगमगच्छे श्रीपूज्य श्री सयमरत्नसूरि आचार्य श्रीविनय मेरुसूरि सदुपदेशेन कारित प्रतिष्ठित चिरंनंदतु ॥ श्री ॥

(१५८१)

स्वस्ति श्री जयाभ्युदयाश्च संवत १४८१ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे श्री नागर ज्ञातीय गांठी पतया सुत घोरारया भार्या रामूकेन श्री चन्द्रप्रभ जीवित स्वामि बिंबं निज श्रेयसे कारापित प्रतिष्ठितं श्री वृद्ध तपागच्छे श्रीरत्नसिंहसूरिभिः ।

(१५८२)

संवत १६०३ वर्षे शाके १७६८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे कृष्ण पक्षे पंचम्यां भृगुवा० श्री अहमदाबाद वास्तव्य दसा श्रीमाली ज्ञातौ सेठ मनेश्वर तत्पुत्र सेठ गरभीवदास (?) तद्भार्या तथा बाइ अभज तत्पुत्री ऊजमबाइ तेन स्वश्रेयार्थ श्री सुविधिनाथ बिंब कारापितं श्री तपागच्छे र विजयराज्ये प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१५८३)

॥ ६० ॥ सं० १५०१ वर्षे चाचिरा गात्र सा० स्कंदन भार्या चापूदे पुत्र सा० चचा भार्या नेना । सा० जयवंत म० जगमाल सा० पदमो कोडादि यु श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं श्री जिनहंससूरिभिः माह वदि ११

(१५८४)

सं १५०२ वर्षे फाल्गुन वदि ९ दिने ऊकेश वंश चन्दवार गोत्रे सा० आल्ह तत्र सा० पूना भार्या पूनाइ पुत्र सा० खामाकेन भार्या भामणा पुत्र सा० दामु प्रमुखादि सहितेन स्व पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंब कारित प्र श्री खरतर गच्छे श्रीमत् श्री जिनसागरसूरिभिः । शुभमस्तु॥

(१५६८) २१३

संवत् १६०५ वर्ष शाके १ ७० प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्ल ५ चंद्रवासरे श्रीमदुपकेश गच्छे वृद्ध शाखायां श्रेष्ठ गोत्रे वैद्य मु० समस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसनाथस्य प्रतिष्ठा कारापितं श्रीकंवला गच्छे भ। श्री देवगुप्तसूरिभि· ॥ श्री ॥

(१५६६)

शास्वत जिन पादुका

श्री ऋषभानन जी ॥ चन्द्रानन जी ॥ वारिषेण जी ॥ वर्द्धमान जी ॥ सं० १६६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरणपादुका स्थापित ॥ ४ सास्वता जिन ॥

(१५७०)

एकादश गणधर पादुके

सं० १६६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरण पादुका स्थापित श्रीवीर गणधर ११

(१५७१)

१६ सती पादुका

सं० १६६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरण पादुका स्थापितं पोडश सती नामानि।

(१५७२)

श्री हीरविजयसूरि पादुका

॥ सं० १६६५ मा० सु० ५ शनिवासरे जं० यु० प्र० भ० श्रीहीरविजयसूरीश्वरान् चरण-पादुका स्थापिता ईस मन्दर जावि वास्त जमी गज २६४ सीरोय तेजमालजी ने मेहता मानमल जी कोचर हस्ते दीवी है श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

(१५७३)

सं० १६६५ मा० सु० ५ शनिवासरे श्री पंचम गणाधीश्वर सुधर्म स्वामीनां चरणपादुका स्थापिता ईस मन्दर जी वास्त ज० ग० ६५॥=डा० दूलीचंद वा० ज० ग० १३८॥–)॥ डा० पूलमचंद चंदनमलाणी री बहु ने दीवी है श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१५७४) २१३

श्री वासुपूज्यादि चतुर्विंशति

सं० १४२२ वर्ष माह वदि १२ भोमे। ओसवाल ज्ञातीय बहुरा शाखाया व्यव० शिवा भा० श्राविका राणी पु० खेता भा० ललतादेव्या व्यव० खेतां श्रेयसे आत्म पुण्यार्थं च श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेरगच्छे भ० श्री ईसरसूरि पट्टे भट्टारक श्रीशालिभद्रसूरिभिः ॥

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

कोचरों का चौक

पाषाण प्रतिमादि लेखा

शीला पट्ट पर

(१५६२)

१ ॥६०॥ शशांक गज बिम्बमे ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी । इज्यवारमुराभाया

२ माकारि चैत्य मुत्तमम् ॥१॥ श्री विक्रमाभिधे पौरे सूर्यवंश समुद्भवे

३ राज्ये श्री रत्नसिंहस्य । भव्यानां हित काम्यया ॥२॥ पुम्मम ।

४ श्रीमत्तपा गगन बोधक सूर्यरूप विद्या विवेक विनया

५ दि गुणै रमूप । देवेन्द्रसूरि पद हीर कुलेषु जात श्री महयु

६ क्षात्र वध दीपक विष्ठस्माव ।३। पापाब्ध हंस विजया वि

७ त सिद्ध नाम सद्याभिलास रस रंजित मुक्तिकाम तस्योपदेश

८ विधिना कृत मुत्सव च चित्तामपिर्मिमल बिंब निवेशकस्य ।४।

९ मा० कोचर सिरोहिया सर्व संघेन । दयाराम सूत्रधार ।

(१५६३)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६३१ वर्षे वैशाख सुदि ११ तिथौ श्री पार्श्व जिन बिंबं प्र० श्रीजिनहंससूरिभिः कारितं श्री संघेन बीकानेरे ।

(१५६४)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूल संघे भट्टारक श्रीमाम (जिम ?) चन्द्र देवा सा० जीवराज पापरीवाल निस्यं पणमति ।

(१५६५)

श्री गौतम स्वामी

संवत १८६७ रा वर्षे शाके १७१२ प्रवर्त्तमाने शुक्ल पक्षे तिथौ पष्ठ्यां गुरु वासरे ओसवंशे को । गो० मु० मगनीराम पुत्र मनोरचंद साहमसिंह सेरसिंह पुत्र पुनमचंद गंभीरमल रामचंद्र श्री गौतम स्वामी जी रो मूरत करापितं बृहत्खरतराचार्य गच्छे भट्टारक श्री जिनोदयसूरिभिः प्रतिष्ठितं रतनसिंह जी विजय राज्ये ॥

(१५६८) २१३

संवत् १६०५ वर्षे शाके १ ७० प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्ल ५ चंद्रवासरे श्रीमदुपकेश गच्छे वृद्ध शाखायां श्रेष्ठ गोत्रे वैद्य मु० समस्त श्रीसंघेन श्री श्रेयांसनाथस्य प्रतिष्ठा कारापितं श्रीकंवला गच्छे भ। श्री देवगुप्तसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१५६९)

शास्वत जिन पादुका

श्री ऋषभानन जी ॥ चन्द्रानन जी ॥ वारिषेण जी ॥ वर्द्धमान जी ॥ सं० १९६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरणपादुका स्थापित ॥ ४ सास्वता जिन ॥

(१५७०)

एकादश गणधर पादुका

सं० १९६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरण पादुका स्थापित श्रीवीर गणधर ११

(१५७१)

१६ सती पादुका

सं० १९६५ मि० माह सुद १० रविवार ने चरण पादुका स्थापितं षोडश सती नामानि।

(१५७२)

श्री हीरविजयसूरि पादुका

॥ सं० १९६५ मा० सु० ५ शनिवासरे जं० यु० प्र० भ० श्रीहीरविजयसूरीश्वरान् चरण-पादुका स्थापिता ईस मन्दर जावि वास्त जमी गज २६४ सीरोय तेजमालजी ने मेहता मानमल जी कोचर हस्ते दीवी है श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

(१५७३)

सं० १९६५ मा० सु० ५ शनिवासरे श्री पंचम गणाधीश्वर सुधर्म स्वामीनां चरणपादुका स्थापिता ईस मन्दर जी वास्त ज० ग० ६५॥=डा० दूलीचंद वा० ज० ग० १३८॥-)। डा० पूलमचंद चंदनमलाणी री बहु ने दीवी है श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१५७४) २१३

श्री वासुपूज्यादि चतुर्विंशति

सं० १४२२ वर्षे माह वदि १२ भोमे। ओसवाल ज्ञातीय बहुरा शाखाया व्यव० शिवा भा० श्राविका राणी पु० खेता भा० ललतादेव्या व्यव० खेता श्रेयसे आत्म पुण्यार्थं च श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संडेरगच्छे भ० श्री ईसरसूरि पट्टे भट्टारक श्रीशालिभद्रसूरिभि ॥

(११०२)

संवत् १५३४ वर्षे मगसिर वदि ५ रवौ श्री आगमगार गच्छे उपकेश ज्ञातीय साह सखा गोत्र सं० मत्ता भा० वाल्हादे पु० सा० भारमल्लेन भा० रंगादे पु० सहसमल रूपा ऊदा युतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथ बिंब कारित प्र० श्रीमाणदेवसूरिभिः ॥ श्रीकुंडलनगर वास्तव्य ॥ छः ॥

(११०३)

संवत् १५२१ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ गुरौ ऊकेश ज्ञा० श्रे० पाता भा० राजू पुत्र परबतेन भा० चांपू पु० रूपा युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारित प्र० ऊ० श्री सिद्धाचार्य स० भ० श्री देवगुप्तसूरिभिः ॥

(११०४)

सं० १५३४ वर्षे फा० सु० २ प्रा० को० डुंगर भार्या पादू पुत्रस्य रूदा भा० श्रीमूनाम्न्या स्वश्रेको० वेजा जेसादि कुटुंब युतया स्वश्रेयसे श्रीसंभव बिंब का० तपागच्छे श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः श्रीरवाडक ग्रामे ॥

(११०५)

सं० १५?६ व। वैशाख वदि ४ दिने प्राग्वाट गा० ठाकुरसी भा० बाल्ही पु० सं० प्रथमाकेन भार्या सा० डाहा भा० फाऊ पु० कान्हा भोला पासराज सभादि कुटुंब युतेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा श्री सोमसुंदरसूरि शिष्य रत्नशेखरसूरिभिः श्रीमडपदुर्गे ॥

(११०६) 218

संवत् १५१८ माह सुदि ४ गुरौ कन्थड़ गोत्रे स० सहसमल भा० स० सूरमदे पु० पीपा भार्या प्रेमलदे पु० कान्हाकेन स्वपरपुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

(११०७) 218

संवत् १५०६ वर्षे माह सुदि १० मृगशिर नक्षत्रे बुगड़ गोत्रे स० रूपा सेलत० स० तरपाल पुत्र सोनपाल भार्या श्री मूजी स्वपुण्यार्थं वत्पुत्रे सिरीवंत श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित खर० ग० श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे प्रतिष्ठि श्रीलक्ष्मिसुंदरसूरिभिः ।

(११०८)

दयालय पर

सं १५२२ वर्षे माह सुदि ६ शनौ श्री प्राग्वाट ज्ञातीय श्रेष्ठि विरूआ भार्या माजी सुत सं० मांकड़केन भार्या माऊ सुत सं० अमनकेन भार्या अहिवदे सहितेन अपरा भार्या रामति निमित्तं

(१५८२)

संवत १५३० वर्षे माघ वदि २ शुक्रे श्रीश्रीमाल० श्रे० करमा भा० टबकू पुत्र भाडया भा० नाकू पुत्र जीवा साचा माला महराज श्रीराज सहितेन आत्म पुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० आगम गच्छे भ० श्रीअमररत्नसूरीणामुपदेशेन विधिना ॥ छ ॥ लाडुलि वास्तव्य ।

(१५८३)

॥ ६० ॥ सं० १५४० वर्षे मार्ग सुदि ५ ऊकेश ज्ञातीय वहुरा गोत्रे मोहणान्वये मम० खेमा सुत मंत्री अमरा भा० आपडदे पु० रामा सहितेन श्री वासपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्र गच्छे भ० श्रीसोमकीर्तिसूरि पट्टे आचार्य श्रीचारुचंद्रसूरिभिः ॥ श्री रस्तु ॥

(१५८४)

सं० १५७२ वर्षे माघ सुदि १३ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० व्य० चांपा भा० मेघू सु० भाखर भा० पदू पु० मोकल प्रमुख कुटुंब युतेन श्रीसुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र० तपापक्षे श्रीहेमविमलसूरिभि ।

(१५८५)

संवत १५८७ नप श्री अहम्मदावाद नगरे श्री श्रीमाल ज्ञातीय वु० कान्हा भा० करमादे सु० आणदकेन श्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का०

(१५८६)

सं० १८५४ माघ वदि ५ चंद्रे श्रीमाली ज्ञा० वृद्ध शा० गो हीराराव दाल (?) कचरा भा० ममाणी पृथक यंत्र भरापितं श्री राजनगरे प्रतिष्ठितं ॥

(१५८७)

स० १६०३ मा । कृ । प । ५ तिथौ भृगु । श्री राजनगरे श्रीमाली वीसा भाईचंद खेमचंद श्री अजितनाथ बिंबं करापित प्रतिष्ठितं श्री सागरगच्छे भ० श्रीशांतिसागरसूरिभिः ।

(१५८८)

सं० १६०३ वर्षे माघ वदि ५ शुक्रे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारापितं बाई माणक तपागच्छे ।

(१५८९)

सं० १६०३ माघ वदि ५ भृगौ अमदावादे ओस । वृद्ध। सेठ नगीनदास तद्भार्या वेरकोर श्रीशांतिनाथ बिंबं कारापितं श्रीशांतिसागरसूरिभि प्रतिष्ठित सागरगच्छे ।

(१५९०)

सं० १६०३ मा० व० ५शुक्रे श्रीमालि लघुशाखाया सा० अमीचंद श्रीशातिनाथ बिंबं कारापितं तपागच्छे पं० रूपविजयगणिभि

(१५९१)

साहा दमेदर कवल श्री अनंतनाथ बिंबं भरावतं सं० १६२१ मा० सुदि ७

(११०२)

संवत् १५३४ वर्षे मगसिर वदि ५ रवौ श्री मालधार गच्छे उपकेश ज्ञातीय साह सेखा गोत्र स० मदा भा० वाल्हादे पु० सा० भारमल्लेन भा० रगादे पु० सहसमल रूपा ऊदा युतेन स्वश्रेयसे श्रीसुविधिनाथ बिंब कारित प्र० श्रीमाणदेवसूरिभिः ॥ श्रीफ्लवधनगर वास्तव्य ॥ श्री ॥

(११०३)

संवत् १५०१ वर्षे आषाढ सुदि ६ गुरौ ऊकेश ज्ञा० श्रे० पाता भा० राजू पुत्र परबतेन मा० धादू पु० रूपा युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० ऊ० श्री सिद्धाचार्य सं० भ० श्री देवगुप्तसूरिभिः ॥

(११०४)

सं० १५३४ वर्षे फा० सु० ३ प्रा० श्रे० डुंगर भार्या पादू पुत्रस्य ऊदा मा० श्रीसूतान्या जेहेको० वेजा जैसादि कुटुंब युतया स्वश्रेयसे श्रीसंभव बिंबं प्र० तपागच्छे श्री श्री लक्ष्मीसागर सूरिभिः बीरवाटक ग्रामे ॥

(११०५)

सं० १५८६ व। वैशाख वदि ४ दिने प्राग्वाट गा० ठाकुरसी भा० वाल्ही पु० सं० प्रथमाकेन भ्रातृ सा० वाहा मा० फाऊ पु० कान्हा भोळा पासराज सधादि कुटुंब युतेन श्री श्रेयांस बिंबं कारित प्रतिष्ठित तपा श्री सामसुंदरसूरि शिष्य श्रीप्रशेखरसूरिभिः श्रीमंडपदुर्गे ॥

(११०६)

संवत् १५६८ माह सुदि ४ गुरौ खटपड़ गोत्रे स० सहसमल भा० स० सूरमदे पु० पोपा भार्या प्रेमलदे पु० कान्हाकेन स्वपितृपुण्यार्थं श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं का० प्र० मलधार गच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि ।

(११०७)

संवत् १५०१ वर्षे महा सुदि १० मृगशिर नक्षत्रे दुगड़ गोत्रे ठ० रूपा सन्ताने स० नरपाल पुत्र सानपाल भार्या सो मूलो स्वपुण्यार्थं स्वपुत्रे सिरोमा श्रीशांतिनाथ बिंब कारित रूद्र० ग० श्रीदेवसुंदरसूरि पट्टे प्रतिष्ठित श्रीलब्धिसुंदरसूरिभि ।

(११०८)

दरा १५ पर

सं १५२२ वर्ष माह सुदि ६ रानौ श्री माम्या- ज्ञातीय श्रेष्ठि पिरला भार्या मागी सुत सं० माण्डणेन भार्या मच्छो सुत स० अमरकेन भार्या धर्मिदे सहितेन अपरा भार्या रामति निमित्त

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१५९६)

संवत् १४६८ वर्ष माघ सुदि १० बुधे श्री अंचल गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञा० महा० सामंत भा० सामल पु० म० दूदाकेन भार्या म० दूल्हादे युक्तेन श्रीशीतलनाथ बिंबं पंचतीर्थी रूपं श्रीमेरुतुंग-सूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च श्री संघेन ॥

(१५९७)

संवत् १५६१ वर्षे दोसी गोत्रे ऊकेश वंशे स० साल्हा पुत्र आवा भार्या ऊमादे पु० हीराकेन भार्या हीरादे पुत्र तोल्हा ऊदादि परिवारयुतेन श्री अभिनंदन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरिभिः पट्टे श्रीजिनहंससूरिभि श्रेयस्तु ॥ पूजकस्य ॥ ज्येष्ठ वदि ४ दिने प्रतिष्ठितं बिंबं ॥

(१५९८)

सं० १४८५ वर्षे ज्येष्ठ वदि ११ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० ऊगा भा० जीऊ सु० कर्मण भा० कामलदेव्या स्वभर्तुं स्वश्रेयसे जीवितस्वामि श्री नमिनाथ बिंबं कारितं श्रीपूर्णिमा पक्षे श्री साधुरत्न-सूरीणामुपदेशेन प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः ॥ थोहरी वास्तव्य शुभं भवतु ॥

(१५९९)

संवत् १५७६ वर्षे श्री खरतर गच्छे लूणीया गोत्रे शाह जगसी भार्या हांसू पुत्र सीधरेण श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं भ० श्रीजिनहंससूरिभि श्रीविक्रमनगरे श्री ।

(१६००)

सं० १५२७ मा० व० ७ प्राग्वाट काचिलवासि सा० समरा भा० मेघू पुत्र रेदाकेन भार्या सहजू पु० रूपा ऊदादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० तपा श्रीरत्नशेखरसूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागरसूरि राज्ये श्रीरस्तु पूजकेभ्यः ।

(१६०१)

संवत् १४६३ वर्षे फाल्गुन सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय पा० झींफा भा० माणिकदे पुत्र देवाकेन । भा० देवलदे पुत्र वाछा युतेन आत्मश्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री साधुपूर्णिमा पक्षीय श्रीरामचंद्रसूरीणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः ॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृद्धत्तपापक्षे भट्टा० श्रीजयतिलकसूरि तत्पट्टे भट्टा० श्रीजयशेखरसूरि तत्पट्टालंकरण प्रभु० भट्टा० श्रीजिनरत्नसूरिभि ॥ श्रियोस्तु ॥ १ श्री सहुआला-वास्तव्यः ॥

(१६०६)

श्री पार्श्वनाथजी

संवत् १४६५ मार्गशिर वदि ३ गुरु दिने पारसाण गोत्रे सा० तेजादास पुत्र सा० गूजर प्रतिमा कारापिता।

(१६१०)

सं० १४६४ श्रीमालमा श्रीमाल ज्ञातीय वीरधवलेन भार्या वील्हणदे पुत्र सारंगादि युतेन श्री संभव बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभि·

(१६११)

सं० १६४१ मार्ग सु० ३ बुधे स० सोहिहा भार्या सुगणादे सुत मेहाकेन वासुपूज्यस्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपा ग० श्रीहीरविजयसूरिभि.।

(१६१२)

श्री सुमति जि तारा। माहक केन। प्र यु० चन्द्रसूरिभिः।

(१६१३)

श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं माई कसलेन ॥

(१६१४)

सं० १५६७ वैशाख सु० १० श्रीमाल सा० दीदा पु० डालण पु०

(१६१५)

सं० १७५२ वर्षे मिग० सु० ५ गुरौ वार श्रीवच्छ गोत्रे मु० लालचंद भार्या सरूपदे पुत्र म मलूकचंदेन।

(१६१६)

सं० १३५६ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ केला कारितं प्रतिष्ठितं श्रीअमरप्रभसूरिभि·।

(१६१७)

सं० १०८७ (?) वै० सु० ५ गु० सं० जिणराम प्र० नगनू पु०

(१६१८)

संवत् १५०१ वर्षे माह वदि ६ उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० सांगण पुत्र सा० मांडणेन स्वभार्या मेलादे श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं श्रीउपकेश गच्छे कुकुदाचार्य संताने प्र० श्रीककसूरिभि·।

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

कोचरों का चोक

धातु प्रतिमा का लेख

(१५३२)

मूलनायक श्री

१ संवत् १८९३ माघ सुदि १० बुध श्री सुधम बिंबं कारितं श्री सु

२ मा, बधनमल

३ बेटा मगन

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१५३४)

संवत ११५५ ज्मष्ठ (?) वदि ५

(१५३५) 2292

संवत् १८९७ रा वर्षे शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वैशाख मासे शुक्लपक्षे तिथौ पञ्चम्यां गुरुवारे विक्रमपुर वास्तव्ये कोचर गोत्रीय सु। मगनीराम पुत्र अबीरचंद सालमसिंह सेरसिंघ पतेषां पुत्र भ्रातृसमात् काव

श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीवृहत्तपापक्षे भट्टा० श्रीजयतिलकसूरि तत्पट्टे भट्टा० श्रीजयशेखरसूरि तत्पट्टालंकरण प्रभु० भट्टा० श्रीजिनरत्नसूरिभिः ॥ श्रियोरस्तु ॥ १ श्री सहुआला-वास्तव्यः ॥

(१६०९)

श्री पार्श्वनाथजी

संवत् १४६५ मार्गशिर वदि ३ गुरु दिने पारसाण गोत्रे सा० तेजादास पुत्र सा० गूजर प्रतिमा कारापिता।

(१६१०)

सं० १४६४ श्रीमालमा श्रीमाल ज्ञातीय वीरधवलेन भार्या वील्हणदे पुत्र सारंगादि युतेन श्री संभव बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभिः

(१६११)

स० १६४१ मार्ग सु० ३ बुधे सं० सोहिट्टा भार्या सुगणादे सुत मेहाकेन वासुपूज्यस्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठित तपा ग० श्रीहीरविजयसूरिभि ।

(१६१२)

श्री सुमति जि तारा। माइक केन। प्र यु० चन्द्रसूरिभिः।

(१६१३)

श्री शांतिनाथ बिंब कारापितं माई कसलेन ॥

(१६१४)

सं० १५६७ वैशाख सु० १० श्रीमाल सा० दीदा पु० डालण पु०

(१६१५)

सं० १७५२ वर्षे मिग० सु० ५ गुरौ वार श्रीवच्छ गोत्रे मु० लालचंद भार्या सरूपदे पुत्र स मलूकचंदेन।

(१६१६)

सं० १३५६ वर्षे वैशाख वदि ११ रवौ केला कारितं प्रतिष्ठितं श्रीअमरप्रभसूरिभि।

(१६१७)

सं० १०८७ (?) वै० सु० ५ गु० सं० जिणराम प्र० नगनू पु०

(१६१८) 819

सवत् १५०१ वर्षे माह वदि ६ उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे सा० सांगण पुत्र सा० मांडणेन स्वभार्या मेलादे श्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं श्रीउपकेश गच्छे कुकुदाचार्य संताने प्र० श्रीककसूरिभिः।

श्रीचन्द्रप्रभुजी का मन्दिर (बेगाणियों की गुवाड़)

शिलापट्ट पर

(१९३९)

१॥ सं। १८९३ मिते माघ। सु। ७ तिथौ राज राजेश्वर श्रीरतनसिंहजी विजयराज्ये श्रीचं
२ द्रप्रभ प्रासादोद्धार बेगाणी सर्व श्रीसंघन कारित श्रीमद्बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर
३ ज। यु। भ श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि प्रति॥

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१९४०)

संवत् १५४९ वर्षे वैशाख सुद ३ .. (दो लेख)

(१९४१)

सं० १८८७ आषाढ़ सु० १० श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं श्रा। सिरदारकुमर्या कारि। प्र। भ। श्री जिनहर्षसूरिभि श्री

(१९४२)

सं० १६३१ वर्षे मिति वैशाख मासे कृष्णतर पक्षे एकादश्यां तिथौ श्रीमहावीर जिन बिंब श्रीबृहत्खरतरगच्छे भ श्रीजिनहंससूरिभिः कारितं श्री बीकानेर॥

(१९४३)

सं० १६३१ व। मि। वै। सु। ११ दि० मानेमजिम बिंब प्र। श्रीजिनहंससूरिभि।

(१९४४)

श्री चन्द्रप्रभुजी

संवत १५४९ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेव चंदजी पापरीवाल पत्ता

(१९४५)

दादा साहब की प्रतिमा पर

संवत् १६ वर्षे मासे पक्षे तिथौ वारे ओसवाल सुराणा गोत्रीय श्रीमूलमचंद्रस्य धर्मपत्नी श्रीमती कस्तूरकुमरेण भट्टारक दादा श्री जिनकुशलसूरिभिः बिंबं कारापितं प्रतिष्ठापित च।

(१९४६)

विजय यंत्र

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१९४७)

श्रीवासुपूज्य चतुर्विंशति

सं० १४९३ वर्षे वैशाख सु० ५ बुधे सांखला गोत्रे सा० श्रीसिंह भा० वीवड़ा पु० सा० गेल्हाकेन भा० रयणादे सु० खेता टीलाविनेता युतेन स्वपुण्यार्थं श्रीवासुपूज्य प्रमुख चतुर्विंशति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीधर्मघोष गच्छे श्री मलयचंद्रसूरि शिष्य श्रीपद्मशेखरसूरि पट्टे श्री विजयचंद्रसूरिभिः॥ श्री॥ ?॥

(१६२६) 22

संवत् १५५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५६(? रवौ दूगड़ गोत्रे सा० काला भार्या रूपादे तत्पुत्र सा० रावण भार्या रत्नादे पुत्र राजा पारस कुमरपाल महीपाल युतेन स्वपुण्यार्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं कारित श्रीरुद्रपल्लीय गच्छे प्रतिष्ठित सर्व्वसूरिभ्य.।

(१६२७) 22

संवत् १६२४ वर्षे आषाढ वदि ८ नामौ छाजहड़ गोत्रे स० आसा पु० हरखचंद्रादि पुत्र पौत्र युतेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री पल्लि गच्छे भ० श्री आमदेवसूरिभि ।

(१६२८)

सं० १४२४ वर्षे आषाढ़ सुदि ६ गुरौ प० धरणा भार्या साढी पुत्र झीफाकेन पितृ मातृ श्रेयसे श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं श्रीसाधु पू० गच्छे श्रीअभयचंद्रसूरीणामुपदेशेन प्र० श्रीसूरिभि.।

(१६२९)

संवत १५८३ वर्षे माघ सु० ४ शिवौ सीरोहीवास्तव्य. प्राग्वाट ज्ञातीय सं० मोका भार्या सवीरी पुत्र सं० भामाकेन भार्या महथू कृते पुण्यार्थं श्रीशांतिनाथ बिंबं कारापितं स्वकुटुंब श्रेयसे प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्री हेमविमलसूरिभिः श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

(१६३०)

संवत् १५७५ वर्षे फागण वदि ४ गुरु ऊकेश वंशे रोहलगोत्रे सा० फमण पु० पोपट भा० माल्हणदे पु० शवराज भा० सोनलदे सु० सहसमल्ल सहितेन श्रीमुनिसुव्रत स्वामि बिंबं कारितं प्र० श्रीजाखडिया गच्छे भ० श्रीकमलचंद्रसूरि पट्टे श्रीगुणचंद्रसूरिभिः सीरोही नगर वास्तव्य देवराज निमित्तं ॥

(१६३१)

सं० १४ दिन २ काष्टासंघे अग्रोत सा० धीरदेव पुत्र तजू नित्यं प्रणमति ॥

(१६३२)

सं० १४५६ वर्षे दि १ शनौ गो० सा० मेला भा० मे — दे पु० जिन पितृमातृ पार्श्वनाथ बिंबं का भ० श्रीनय प्रभसूरि ।

श्री अजितनाथ जी का देहरासर

(सुगनजी का उपाश्रय)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(११५७)

श्री अजितनाथ जी

सं० १६०५ वर्षे मि। वैशाख सु १५ गणधर चोपड़ा कोठारी अमरचंदजी तत्पुत्र माणक च थी तद्भार्या जड़ावदे तत्पुत्र गेवरचंद श्री अजितनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्रीबृहत्खरतर गच्छे जं। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः ॥ श्री।

(११५८)

श्री सुमतिनाथ जी

सं० १६०५ वर्षे। मि। वैशाख सु० १५ सेठिया जोरावरजी तत्पुत्र छगनजी ताराचंदेन सपरिवारेण सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत् खरतरगच्छे जं। यु। प्र। भ। श्रीजिन सौभाग्यसूरिभि ॥

(११५९)

श्री सुपार्श्वनाथ जी

।७। सं० १६०५ वर्षे मि। वैशाख सुदि १५ नाहटा बसराजेन श्री सुपार्श्वनाथ बिंबं कारित। प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छे जं। यु। प्र। भ श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः।

(११६०

श्री अजितनाथ जी

॥ सं० १६३१ व। मि। वै। सु। ११ ति। श्री अजित जिन बिंबं प्र। बृ। ख। भ। श्री जिनहंससूरिभिः सूणी। हीरालाल जी सा। ना। करमचंदजी कारापित श्रीबीकानेर नगरे॥

श्री शान्तिनाथजी का देहरासर

(कोचरों का उपाश्रय)

धातु प्रतिमा का लेख

(१९३६) २२३

संवत् १५०७ वर्षे फागुण वदि २ बु० उ० पलाडेचा गोत्रे सा मूठा भा० हामी पुत्र रणसीकेन भार्या लखी सहितेन श्रीसुमति बिंबं का० प्र० पड़तपागच्छे श्री देवगुप्तसूरिपट्टे श्री ककसूरिभिः।

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(१९३७)

श्री विजयाणंदसूरि मूर्त्ति

सं० १९७२ वर्ष अक्षयतृतीयायां विक्रमपुरस्थ श्री तपागच्छसंघन गुरुभक्त्यार्थं श्रीमुनिपुङ्गव श्री लक्ष्मीविजय श्री विजयकमलसूरि मुनीश हंसविजय पन्यासा संपतविजय संसेविता तप गच्छालंकार श्रीविजयाणंदसूरीश्वराणां मूर्त्तिरियं कारिता

(१९३८)

सं० १९६४ वर्षे माघ सु० १२ दुति। भृगुवा। सवे० श्रीचंदनश्रीकस्य पादुका बगतश्रीजी उपदेशात् मु। को। लाभचंदजी करापितं श्रीमत्तपागच्छे। चौप। पं० श्री अनोपविजय जी श्री विक्रमपुरे श्रीगंगासिंहजी राज्ये ॥

(१६६७)

सं० १८८७ आषा। सु। १० श्रीमल्लि बिंब । मोला । । प्र।
श्री जिनहर्षसूरिभि ।

(१६६८)

श्री शांतिनाथ स० डाइया भा बा फतु सुता का०

(१६६९)

श्री मूल संघे बलात्कारे

(१६७०)

श्री कुंथुनाथ बिंब श्री त ११ श्राविका शता रिख श्री हीरविजयसूरिभि प्रतिष्ठि०

(१६७१)

सं० ११६१ । अजित । भट्ट ।

(१६७२)

सं० १६०५ मि । आषाढ़ व० ६ श्री । यु । भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१६७३)

ताम्र के यन्त्र पर

सं० १६३५ बैशाख सुदि ३ बार रविवार गैलड़ा गोलछा २ नम ।

श्री जिनकुशलसूरि गुरु मन्दिर

(१६७४)

दा । ।।।[illegible] मा

सं० १९८८ माघ सु० दशम्यां बुधवासरे ऊ० यु प्र० भ० श्री जिनकुशलसूरीश्वराणां मूर्त्ति बृहत्खरतरगच्छीय श्रीजिनचारित्रसूरिसामाज्ञात् उ० श्रीजयचन्द्रगणिना प्रतिष्ठिता वीरपुत्र श्री आनन्दसागरोपदेशात नाहटा जमकरण आसकरणयोश्रय्य व्ययेनकारापिता ॥

(१६७५

समाकल्याण जी की मूर्ति

(१६४८)

सं० १४२६ वर्षे वैशाख सुदि ६ रवौ श्रीमालवंशे माघलपुरीय गोत्रे सा० बीकम भार्या स० सोनिणि पु० सा० तिहुणापुगाजा तिहुणा भा० त्रिपुरादे भा० वीसल मोकल नायकैः मातृपितृ श्रे० श्रीचंद्रप्रभ बिं० । प्र० श्री ज्ञानचद्रसूरि शि० श्रीसागरचंद्रसूरिभि. श्रीधर्मघोष ग०

(१६४६)

सं० १५३५ माघ सुदि १० प्राग्वाट व्य०हरता भा० हासलदे पु० पीथाकेन भा० पोमादेप्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्री श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि सीरोही महानगरे ॥

(१६५०)

सं० १४७३ वर्षे चैत्र सुदि १५ सा० जसधवलेन सा० आंबा हीरी पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर श्रीजिनवर्द्धनसूरिभिः ।

(१६५१)

श्री चंद्रप्रभ स्वामी

सं० १८८७ आसा । सु । १० । श्रीचंद सा० अमीचंद

(१६५२)

सं० १५७६ व० फा० वदि ५ सो।

(१६५३)

वा० वीराई ।

(१६५४)

श्री पार्श्वनाथ जी चांदी की प्रतिमा

सं० १६५६ माह सुदि ५ तिथौ बाई कस्तूरी श्रीपार्श्व बिंबं प्रतिष्ठितं ।

(१६५५)

चांदीके बिंब पर

सं० १७६४ आसाढ सुद १३ प्रतिमा तैयार हुई लिखीतं सोनीथाहरु

(१६५६)

अष्टदल कमल

सं० १६५७ वर्षे । माघ सुदि । १ दशमी दिने श्री सिरोहीनगरे २ राजाधिराज महाराज राय श्रीसुर ३ त्राणविजयिराज्ये । ऊकेशवंशे । ४ वोहित्थराय गोत्रे विक्रमनगरवा५स्तव्य मं० दसू पौत्र मं० खेतसी पुत्र मं० दूदाकेनस ६ परिकरेण कमलाकार देवगृह मंडि७तं पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं च ८ श्रीवृहत्खरतरगच्छाधिप श्रीजिनमा६णिक्यसूरि पट्टालंकार दिल्लीपति

१० ११ १२ १३

— १४ वाचकसाधुसंघ युतै । पूज्यमानं व १५ चमान चिरनंदतु

लि० उ० समयराजै ॥ १६

(१६६७)

सं० १८८७ आषा । सु । १० भीमजि बिंबं । मोक्षा । । प्र ।
श्री जिनहर्षसूरिभिः ।

(१६६८)

श्री शांतिनाथ स० शाहया भा बा फदू सुता का०

(१६६९)

श्री मूल संघे बलात्कारे

(१६७०)

श्री कुंथुनाथ बिंब श्री स ११ श्राविका शाता । रित श्री हीरविजयसूरिभि प्रतिष्ठि०

(१६७१)

स० ११६१ । प्रजित । मटु ।

(१६७२)

सं० १६०५ मि । आषाढ़ ब० ६ जं । यु । भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठित ॥

(१६७३)

ताम्र के यंत्र पर 228

सं० १६३५ बैशाख सुदि ३ बार रविबार गैलड़ा गोलछा २ नमः ।

श्री जिनकुशलसूरि गुरु मन्दिर

(१६७४)

दादा साहब की प्रतिमा पर

सं० १९८८ माघ सु० दशम्यां बुधवासरे ऊ० यु० प्र भ० श्री जिनकुशलसूरीश्वराणां मूर्त्ति बृहत्खरतरगच्छीय श्रीजिनचारित्रसूरिणामादेशात् उ० श्रीजयचन्द्रगणिना प्रतिष्ठिता बीरपुत्र श्री आनन्दसागरोपदेशात् नाहटा असकरण भासकरणयोर्द्रव्य व्ययेनकारापिता ॥

(१६७५)

समाधिस्थान जी की मूर्त्ति

(१६६१)

श्री धर्मनाथ जी

सं० १६०५ वैशाख सु० १५ श्रीसंघेनकारितं श्री धर्मनाथ जी बिंबं प्रतिष्ठापितं श्री खरतर गच्छे भ। जं। यु। प्र। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१६६२)

श्री चन्द्रप्रभ जी 227

।८। सं० १६०५ वर्षे मि। वै। सु १५ गणधर चोपडा। उमेदचंदजी पु० माणकचंद तत्पु० गेवरचंदेन कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छे जं। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्य सूरिभिः ॥ श्री ॥

(१६६३)

श्री कुन्थुनाथ जी 227

सं० १६०१ वर्षे मि। वैशाख शुक्ला १५ .तिथौ। बाफणा गुमानजी तद्भार्या जेठांदे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च भ। जं। यु। प्र। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः।

(१६६४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६०५ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमा तिथौ श्री पार्श्व जिन बिंबं का। प्र। बृहत्खरतरगच्छेश जं। यु। प्र। भ श्री जिनसौभाग्यसूरिभि· ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१६६५)

श्री शीतलनाथादि चौवीसी

संवत १५३७ वर्षे वैशाख बदि २ सोमे डीसावाल ज्ञातीय रावल लू भार्या करणादे सु० राउल पर्वतेन भा० वारू सुत जीवा कीका राजा आंबा मांदि कुटुंबयुतेन श्रीशीतलनाथ चतुर्विंशति पट्टः कारित. प्रतिष्ठितः श्री तपागच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि दढीयालिः वास्तव्य· ॥

(१६६६)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १७०३ व० चैत्र व० ७ श्रा० आसबाई नाम्न्या श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० त० श्रीविजयदव (? देव) सूरिभिः।

(१६८३)

श्याम पाषाण प्रतिमा

स० १६ आषा० सुदि श्री जिनसौभाग्यसूरि

(१६८४

श्याम पाषाण प्रतिमा

श्री विमल जिन बिं। प्र। स० १६३१ वै। सु। ११॥

(१६८५)

सर्वधातु प्रतिमा

स० १९१६ वै। सु। ७ चन्द्रप्रभ बिंबं प्र। श्री जिनसौभाग्यसूरि ते श्री संघन।

१६८६)

पादुका पट्ट पर

२४ मा श्री महावीर स० २४२८ श्री विक्रम सवत १६५८ मास तिथौ आषाढ सुद ११ गुरुवासरे महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर विजयराज्ये श्री बृ। खरतर भट्टारक गच्छे॥ श्री बीकानेर नगरे। सर्वगुरुपादुके श्रीसंघेन कारापितं प्रति० जं० यु प्र भ० श्रीजिनकीर्त्ति सूरिभिः। जैनलक्ष्मी मोहनशाला स्थ लि० पया प०। मोहनलाल मु। स्वहस्ते प्र। शिष्य प० जयचंद्रादिश्रेयोर्थं॥ श्री वीरात् ६५ जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचंद्रसूरिजी पा० ६६ महोपा० श्री समयतिलकजी गणि ६७। पु। उ। श्री_अमरविजयजी गणिः। ६८ पु० उ० श्रीक्षमाकल्याणजी गणिः ६९ पु० उपा० श्रीविनयहेमजी गणि पा० ७० पु० पा० श्रीसुगुणप्रमोदजी गणि ७१ पु० पा० श्री विद्याविशालजी गणिः ७२ पू० म। उ लक्ष्मीप्रधानजी गणि पं० प्र। पा। श्रीमुक्तिकमलजी ग।

(१६८७)

तीन चरणा पर

सं० १९४३ रा मि। फा। सु। ३ दिने श्री गणधराणांचरणन्यास श्रीसंघेन कारापितं ब। यु। प्र। भ। श्री जिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

श्री शांब जी १७ श्री पुंडरीक जी १ श्री गौतमस्वामिजी २४

१६८८)

चरणों पर

दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी॥ स० १९४ रा मि। मिगसिर बदि ७ श्री जिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

(१६८९

चरणों पर

श्री जिनभद्रसूरि

श्री कुन्थुनाथ जी का मन्दिर

(रांगड़ी का चौक)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१६७६)

सं० १६३१ मि० । वै । सु । ११ ति । श्री कुंथु जिन बिं० प्र० बृ० ख० ग० भ० श्रीजिनहंस सूरिभिः दपतरी सदनमल तत्माता छोटी बाई कारापितं ॥

(१६७७)

सं० १६३१ मि० वै० सु० ११ ति । श्री श्रेयांस जिन बिं० प्र० वृ० ख० ग० भ० श्री जिनहंससूरिभिः सुराणा श्रीचंदजी तत्माता ।

(१६७८)

सं० १६३१ मि० वै० सु० ११ ति । श्रीमुनिसुव्रत बिं० प्र० वृ० । ख० । भ० । श्रीजिनहंस-सूरिभिः श्रीसंघेन कारितं ॥

(१६७६)

सं० १६०५ वर्षे मि० वैशाख सुदि १५ गो । अमरचंदजी भार्या मेदादे तत्पुत्र अगरचंदजी सपरिवारेण श्री सुविधिनाथजी बिंबं कारापितं । श्रीवृहत्खरतरगच्छे जं । यु । प्र । भ । श्री जिम-सौभाग्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं च ॥ श्री बीकानेर मध्ये ।

(१६८०)

सं० १६०५ वर्षे मि० वैशाख सु० १५ वै । मु । रत्नचंदजी तत्पुत्र गिरिधरचंदजी तद्भार्या कुनणादे तत्पुत्रकरणीदानेन श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च वृहत्खरतरगच्छे जं । यु । प्र । भ० । श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः । श्री ।

(१६८१)

श्याम पाषाण प्रतिमा

सुपार्श्व बिं । प्र । श्री जिनहंससूरि सं० १६३१ मि । वै० । सु । ११

(१६८२)

खण्डित प्रतिमा

श्री ऋषभजिन बिं० प्र । सं० १६३१ मि । वै । सु । ११

(१६६६)

सं० १४८५ प्राग्वाट व्य० छींवा भार्या कर्मा दे सुत वस्ताकेन स्वश्रेयोर्थ श्री विमलनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित तपागच्छ श्री सोमसुंदरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१६६७)

श्रीपार्श्वनाथ जी

सा० नरबद भार्या मामू पुत्र बड़ा भाता भन्नाइ पुत्र सोनपाल पुत्र गहरा (?)

(१६६८)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १५४६ मूल सघे

(१६६९)

श्री आगम गच्छे श्री कल्पवर्द्धनसूर

(१७००)

श्री पार्श्वनाथ जी

दोसीहरजी कारितं । श्री जिनधर्मसूरि

(१७०१)

श्री संभवनाथ जी

संव १६१६ वशाख सु० १० श्री समवनाथ श्री वजिदानसूरिभि वाहडा ।

(१७०२)

प स । जिणदास भा० रूपाई पू मा का० १५६६ व

(१७०३)

रजत के चरणोंपर

श्रीविमलकुशलसूरिभिः श्रीर सं० २४४५ वै० सु० ?

(१६६०)

चरणों पर

श्री जिनचंद्रसूरि-

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१६६१) 231

॥ संवत् १५२६ आसाढ़ सु० २ रवौ श्रीऊकेश ज्ञातौ श्री सूरोवा गोत्रे सं० धोधू भा० जील्ही पु० मा० मूला भा० गोरी पुत्र पौत्रादि युतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ऊकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभिः भद्रपुरे ॥

(१६६२)

संवत १५१२ वर्षे मागशिर सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितामहवीरा भा० चउलदे पुत्र नरसिंह भा० राज सु० सांडा गाथा डाहाभ्य. पि० माप भ्रातृ फांफण सर्वपूर्विज श्रे० श्रीकुंथुनाथ बिंब का० प्र० पिप्फलगच्छे श्री उदयदेवसूरिभिः ।

(१६६३)

संवत् १५७५ वर्षे फागुण वदि ४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० लाव । अड़क व्यव धना भा० धारलदे पु० परवत बीदा सहि० धारलदे पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री पूर्णिमापक्षे द्वितीय शाखायां भट्टारक श्री विद्यासागरसूरिभि । अ० श्री लक्ष्मीतिलकसूरिभि' सहितेन ॥ श्री ॥

(१६६४)

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दिने श्रीमाल ज्ञातीय धाधीया गोत्रे सा० दोदा भार्या संपूरी पुत्र सा० उदयराज भा० टीलाभ्यां श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं वृद्ध भ्रातृ सा० डालण पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री लघुखरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि । वैशाख सु० १०

(१६६५) 231

स० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश वंशे पडिहार गोत्रे सा० फम्मण भा० फपू सु० सा० सहसाकेन भा० चांदू पु० हापादि परिवारयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि ।

(१७०८)

श्री जिनकुशलसूरि मूर्त्ति 2354

वि० सं० २००२ मार्गशीर्ष शु० १० शुक्रे ओसवाल वंशे हाकिम कोठारी गोत्रीय श्रे० रावतमलजी तत्पात्मज श्रे० भैरूदानजी तस्य भार्या सुश्राविका चांदकुमारी इत्यनेन श्रीदादा गुरुदेव श्रीजिनकुशलसूरि मूर्त्ति कारापिता प्र० य० श्री खरतरगच्छाधिपति सिद्धान्तमहोदधि अ० मु० प्र० म० जैनाचार्य श्रीजिनविजयेन्द्रसूरिभि विक्रमपुरे ॥

(१७०९)

श्री गौतमस्वामी 255

वि० सं० २००२ मार्गशीर्ष शुक्ला १० शुक्रे ओसवाल हाकिम कोठारी गोत्रीय श्रे० रावतमल त्पात्मज श्रे० भैरूदानजी तस्य भार्या सुश्राविका चांदकुमारी (केन) गणधर श्री गौतमस्वामी मूर्त्तिः का० प्र० यु० खरतरगच्छाधिपति सिद्धान्त-महोदधि सं० मु० प्र० म० जैनाचार्य श्री जिन-विजयेन्द्रसूरिभि विक्रमनगरे।

(१७१०)

श्री गौतम स्वामी 256

संवत् वर्षे मासे पक्षे तिथौ वारे ओसवाल ज्ञातीय वैद गोत्रीय श्रेष्ठी नेमिचन्द्रस्य धर्मपत्नी श्रीमती मगनकु वरेण श्रीमद्गौतम स्वामी कारापितं प्रतिष्ठापितं च

(१७११)

महाशान्ति पट्ट 257

विक्रमसं० २०२ मार्गशीर्ष शुक्ला १० शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय हाकिम कोठारी श्रे० रावतमल-त्पात्मज श्री भैरूदानजी तस्य भार्या चांदकुमारी इत्यनेन श्री महाशांति पट्ट मूर्त्ति का० प्र० श्री यु० प्र० म० जैनाचार्य श्री जिनविजयेन्द्रसूरिभि विक्रमनगरे।

(१७१२)

सिद्धायिका देवी

वि० सं० २००२ मा० शु० १० शुक्रे ओ० ज्ञा० को० श्रे० रावतमलत्पात्मज श्रे० भैरूदान तस्य भार्या चांदकुमारी इत्यनेन श्रीसिद्धायिका देवी मूर्त्ति का० प्र० श्री जं यु० प्र० म० जैनाचार्य (जिन विजयेन्द्रसूरिभिः)

(१६६०)

चरणों पर

श्री जिनचंद्रसूरि-

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१६६१) 231

॥ संवत् १५२६ आसाढ़ सु० २ रवौ श्रीऊकेश ज्ञातौ श्री सूरोवा गोत्रे सं० धोधू भा० जील्ही पु० सा० मूला भा० गोरी पुत्र पौत्रादि युतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री ऊकेश गच्छे श्री कुकुदाचार्य संताने श्री कक्कसूरिभिः भद्रपुरे ॥

(१६६२)

संवत् १५१२ वर्षे मागशिर सुदि ५ गुरौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितामहवीरा भा० चउलदे पुत्र नरसिंह भा० रांज सु० सांडा गाथा डाहाभ्यः पि० माप भ्रातृ झांझण सर्वपूर्विज श्रे० श्रीकुंथुनाथ बिंब का० प्र० पिप्पलगच्छे श्री उदयदेवसूरिभिः ।

(१६६३)

संवत् १५७५ वर्षे फागुण वदि ४ गुरौ प्राग्वाट ज्ञा० लाव। अड़क व्यव धना भा० धारलदे पु० परवत बीदा महि० धारलदे पुण्यार्थं श्री शीतलनाथ बिंबं का० प्रति० श्री पूर्णिमापक्षे द्वितीय शाखायां भट्टारक श्री विद्यासागरसूरिभिः। अ० श्री लक्ष्मीतिलकसूरिभिः सहितेन ॥ श्री ॥

(१६६४)

सं० १५६७ वर्षे माघ सु० ५ दिने श्रीमाल ज्ञातीय धाधीया गोत्रे सा० दोदा भार्या संपूरी पुत्र सा० उदयराज भा० टीलाभ्या श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं वृद्ध भ्रातृ सा० डालण पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री लघुखरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि । वैशाख सु० १०

(१६६५) 231

स० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिने ऊकेश वंशे पडिहार गोत्रे सा० फम्मण भा० कपू सु० सा० सहसाकेन भा० चांदू पु० हापादि परिवारयुतेन श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्रति० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि ।

(१७१८)
श्री शान्तिनाथ जी 270

संवत् १५०६ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ७ दिने ऊकेश वंशे भणशाली गोत्रे सा० कान्हा पुत्र भोजा भार्या न भार्या मोलाल दे पुत्र घोला चोल्हा केल्हा युतेन श्री शांति बिंबं का० प्रति० श्रीखरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री श्री श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(१७१८अ)
चांदीकी प्रतिमा पर
गेनचंद श्री मोतीलाल राखेचा बीकानेर

(१७१६)
सं० १४२५ वैशाख सुदि १ गुरौ सा० माल्हण सा० लाखण पुत्र म सा
वि पुत्र रा० " " या के गने ॥

(१७२०)
सं० " " " " " फागुण सुदि ६ मे० छाछा भा० सिरादे पु० आमल श्री पार्श्व बिंब कारित प्रति० श्री पद्मदेवसूरिभिः ।

(१७२१)
रौप्य चरणों पर
स० १८०० का मिती वैशाख सुदि १२ श्री मुकाम मध्ये श्री जिनसुखसूरि पादुका

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(बोहरों की सेरी)

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(१७०४)

मूलनायक श्री महावीर स्वामी

॥ स्वस्ति श्री वि० सं० १६६४ वैशाख सुदि ७ शुक्रे तपागच्छीय श्रे० जिनदास धर्मदास। संस्यया श्रीसंघ श्रेयसे प्र० श्री महावीर स्वामि बिंबं प्र० तपागच्छाधिपति भट्टारकाचार्य श्री विजयनेमिसूरीश्वरैः श्री विजयदर्शनसूरि श्री विजयोदयसूरि श्री विजयनंदनसूरि श्रीविजय विज्ञानसूरि सहितै श्री कदंबगिरि तीर्थे। अलेखि पन्यास .... विजय ..

(१७०५)

शिलापट्टिका

वि० सं० २००२ मि० शु० १० शुक्रे ओसवाल ज्ञा० द्दा० को० गो० रावतमलस्यात्मज श्रे० भैरूदानजी तस्य भार्या चाँदकुमारी इत्यनेन श्री महावीरस्वामि प्रासाद का० प्र० जं० यु० प्र० वृ० जैनाचार्य सि० म० श्री जिनविजयेन्द्रसूरीश्वरैः विक्रमपुरे।

(१७०६)

श्री सुपार्श्वनाथ जी

स्वस्ति श्री वि० सं० १९९४ वै० सु० ७ शुक्रे बीकानेर वा० बृहदोसवाल हीरावत गोत्रीय श्रे० जीवनमल्ल स्व धर्मपत्न्या श्रीमत्या रत्नकुंवर नाम्न्या स्व श्रेयसे का० श्री सुपार्श्व जिन बिंबं प्र० शासनसम्राट तपागच्छाधिपति भट्टारकाचार्य श्री विजयनेमिसूरीश्वरै श्रीविजयदर्शनसूरि श्रीविजयोदयसूरि श्रीविजयनंदनसूरि श्रीविजयविज्ञानसूरि समन्वितैः॥ श्रीकदम्बगिरि तीर्थे द्व

(१७०७)

श्री वासुपूज्यजी

स्वस्ति श्री वि० सं० १९९४ वै०सु० ७ शुक्रे बीकानेर वा० बृहदोसवाल गोलेच्छा गोत्रीय श्रे० मूद्धकरणस्य धर्मपत्न्या श्रीमत्या प्रेमकुंवर नाम्न्या स्व श्रेयसे का० श्री वासुपूज्यस्वामि बिंबं प्र० शासनसम्राट तपागच्छाधिपति भट्टारकाचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरै श्रीविजयदर्शनसूरि श्रीविजयोदयसूरि श्रीविजयनंदनसूरि श्रीविजयविज्ञानसूरि समन्वितै ॥ श्रीकदम्बगिरि तीर्थे ॥

(१७२७)

सं० १६०५ वैशाख सु० १५ तिथौ श्री संघेन कारितं माघश्री बिंबं प्रतिष्ठापितं बृ० खरतरगच्छीय

(१७२८)

सं० १६३१ वर्षे। मि। वै। सु० ११ ति श्री धर्म जिन बिं० प्र। बृ। ख। ग। भ। श्री जिनहंससूरिभि

(१७२९)

सं० १६११ मि। वै। सु ७ ऋषभजिन बिंबं। भ।

(१७३०)

अभिनंदन जिनबिंबं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर जं। यु। प्र। भ। श्री जिन सौभाग्यसूरिभिः श्री बीकानेर

(१७३१)

सं० १६११ मि। वै। शु ४ चंद्रप्रभ बिंबं। श्री सौभाग्यसूरिभिः प्र। बाई चौथां का०। खरतर गच्छे।

(१७३२)

आदनाथ बिंबं प्र० श्री जिनहेम

(१७३३)

चरणों पर

सं० १८७१ मिती मा० सु० ११ तिथौ श्री गौतम स्वामि चरणन्यासकारितं प्रतिष्ठापितम्॥

दाहिने तरफ की दहरी में

(१७३४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १८८७ मि आषा "

(१७३५)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६११ मि० वै० सु० ७ पार्श्व जिन बिंबं

(१७३६)

सं० १६११ मि० वै० सु० ७ श्री ऋषभ जिन बिंबं प्र० जिनसौभाग्यसूरि

दूसरे तल्ले में श्री वासुपूज्य जिनालय

(१७१३)

श्री वासुपूज्य जी

सं० १६६२ . . भार्या सिन्दू

श्री खरतरगच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिन (चंद्रसूरिभिः)।

(१७१४)

पट्टिका पर

वि० सं० २००२ मि० सु० १० शुक्रे हा० को० रावतमलस्यात्मज भैरूदानस्य भार्या चांदकुमारी इत्यनेन श्रीवासुपूज्य वेदिका प्र० जं० यु० प्र० भ० बृ० जैनाचार्य सि० म० जिनविजयेन्द्रसूरि (भिः) विक्रमपुरे ॥

(१७१५) 238

श्री महावीर स्वामी

स्वस्ति श्री वि० सं० १६६४ वै० शु० ७ शुक्रे श्री बीकानेर वा० बृहदोसवाल ढढा गोत्रीय श्रे० गुणचंद्रात्मज श्रे० आणंदमलात्मज श्रे० बहादुरसिंहेन स्वश्रेयसे का० श्रीमहावीर स्वामि बिंबं प्र० शासनसम्राट तपा (गच्छा) धिपति भट्टारकाचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वरैः श्रीविजयदर्शनसूरि श्री विजयोदयसूरि श्रीविजयनंदनसूरि श्रीविजयविज्ञानसूरि समन्वितैः ॥ कदंबगिरि तीर्थे।

(१७१६) 238

श्री विमलनाथ जी

स्वस्ति श्री वि० सं० १६६४ वै० सु० ७ शुक्रे श्री बीकानेर बृहदोसवाल खजानची गोत्रे श्रे० चंद्रभाण पुत्र श्रे० मेघकरण पुत्र बुधकरण स्व श्रेयसे का० श्री विमलनाथ बिं० का० प्र० शासनसम्राट तपागच्छाधिपति भट्टारकाचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वश्वरै श्रीविजयदर्शनसूरि श्रीविजयोदयसूरि श्रीविजयनंदनसूरि श्रीविजयविज्ञानसूरि समन्वितै ॥ श्रीकदंबगिरि तीर्थे॥

धातु प्रतिमादि लेखाः

(१७१७)

सप्तफणा सपरिकर पार्श्वनाथ जी

सं० १४५२ वर्षे। ज्येष्ठ मासि। सा० मूला सुत सा० महणसिंह सुश्रावकेण पुत्र मेघादि युतेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं गृहीतं। प्रतिष्ठितं श्रीजिनोदयसूरि पट्टालंकरण श्रीजिनराज सूरिभिः श्री खरतर गच्छे॥

(१७४५)

श्री शीतलनाथ जी

संवत् १६०४ रा वर्षे प्रथम ज्येष्ठमासे। कृष्णपक्षे शनिवासरे। ८ तिथौ श्री शीतलनाथ जिन बिंब प्रतिष्ठित। जं। यु। प्र। भ०। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः बृहत्खरतर गच्छे श्रीसंघेन। श्रेयोर्थम्॥

(१७४६)

सं० १६०५ मि० वैशाख सुदि १५ दिने को। सास वीरसिंघजी भार्या "

(१७४७)

संवत् १६०४ रा वर्षे मासोत्तम प्रथम ज्येष्ठ मासे कृष्णपक्षे शनिवासरे ८ तिथौ श्री शांतिनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं जं। यु। प्र। भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः बृहत् खरतरगच्छे कारितं श्री बीकानेर वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन श्रेयोर्थम्॥

(१७४८)

सं० १६०४ रा प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे शनिवासरे ८ तिथौ श्री" " नाथ जिन बिंब प्रतिष्ठितं ज। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः बृहत्खरतर .....

(१७४९)

सुपार्श्व जिन बिंबं प्रतिष्ठितं च श्रीमद्बृहत्खरतरगच्छे भ० यु० श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः कारापितं च को। श्री पन्चिलाल जी।

(१७५०)

संवत् १६०४ रा प्रथम ज्येष्ठ मासे कृष्णपक्षे शनिवासरे। ८ तिथौ श्री सुपार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं भ। जं। यु। प्र। " "

(१७५१)

श्री मल्लिनाथ जिन बिंबं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छे भ। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः श्री बीकानेर

(१७५२)

श्री श्रेयांस जिन बिंब प्रतिष्ठितं च श्रीम दबृहत्खरतरगच्छ। जं। यु। प्र०। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः बीकानेर

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१७५३)

श्री धर्मनाथादि चौबीसी

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह वदि १ दिने गुरु पुष्ययोगे श्री ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे को० सरवण पुत्र को० जसिंघ भार्या जसमादे पुत्र को० समरा सेन भार्या होरादे पुत्र को० बीरा

श्री सुपार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(नाहटों की गुवाड़)

शिलापट्ट लेख

(१७२२)

१ संवत् १८७१ रा मिते माघ सुदि ११ तिथौ श्री वीकानेर नगरे श्री बृहत्खरतरगच्छी-
२ य श्री संघेन श्री सुपार्श्व जिन चैत्यं कारितं प्रतिष्ठापितं च जंगम युगप्रधान भट्टारक शिरोमणि श्री १०८ श्री जिनचंद्रसूरि प-
३ ट्ट प्रभाकर श्री भट्टारक श्री जिनहर्षसूरि धर्मराज्येनति। श्रेयसेस्तु सर्वेषा। सूत्रधार दयारामस्य कृतिरियं श्री॥
४ जैसे सिलावटा॥

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

गर्भगृह

(१७२३)

महाराजा श्री रायसिंह जी राज्ये श्री खरतरगच्छे। जीवादे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः शिष्य आचार्य श्रीजिनसिंहसूरि श्रीसमयराजोपाध्याय वा० पुण्यप्रधानगणि प्र० साधु संघे ..

(१७२४)

... . वं० का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरिभिः... .. .

(१७२५)

श्री खरतरगच्छे श्रीजिनमाणिक्यसूरि पट्टे युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिभिः वा० पुण्य प्रधानो नौति॥

(१७२६)

सं० १६१६ वै० सु० ७ श्री पार्श्व जिन विंबं

(१७६०)

संवत् १५८१ वर्षे माघ व० १० शुक्रे राणपुर वास्तव्य मोढ लघुशाखा प० नाका भा० रामति मानू सुत बीतास्यां भा० सोही गोमति पु० साधा भीमल आणदादि कुटुंब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं श्री निगमप्रभावक परमगुरु श्री आनंदसागरसूरिभिः प्रतिष्ठापितं ॥

(१७६१)

चांदी की सपरिकर श्री नमिनाथ जी

सं० १५११ वर्ष आसा० सु० ६ शुक्रे मागवाद् ज्ञा० मंत्रश्रिक भा० हामू सु० कर्माकेन भाद देवा ठाकुर युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारित प्रति० आगमगच्छ श्री देवरत्नसूरिभि ।

(१७६२)

संवत् १५१२ वर्षे फा० सुदि १२ दिने चो गोत्रे सा० ठाकुरसी पुत्र चा० चतुर पु० सिवेन चा० सादादि परिवार सहितेन श्री श्री अभिनंदन बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरिभिः ।

(१७६३)

संवत् १५२१ वर्षे वैशाख सुदि १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे स० बीदा भार्या बिकू दे पुत्र स० सारंग भार्या सं० स्याणी पौत्र रामणयुतेन श्रीपद्मप्रभ स्व पुण्याय कारित प्रति० श्री खरतर गच्छ श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभिः ।

(१७६४)

स० १५०६ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे गुल्ह गोत्रे सा० सलखा पुत्र सा० कुशलाकेन भा० कुतिगदे पुत्र भोजा जोला देपति हापादि युतेन स्व पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिंब का० खरतर गच्छे श्री जिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरस्तु ॥

(१७६५)

स० १५३४ वर्षे फागण सुदि ६ गुरुवा० प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सूरा भार्या सलखणदे पु० माला भा० मुक्तादे आत्मश्रेयोर्थं श्री वासुपूज्य बिंबं कारित प्रतिष्ठित पूर्णि० पक्षीय द्वितीय शाखायां कच्छोलीवाल गच्छ भ० श्री विजयप्रभसूरिणामुपदेशेन ॥

(१७६६)

सं० १५१५ वर्षे कात्तिकमध्ये वासि ऊकेश व्य० जेसिंग भार्या मर्मदे सुत मनाकेन भा० मार्दी सुत मुंजादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंबं कारित प्रतिष्ठितं कोरंटीय गच्छ भ० श्री सर्वदेवसूरिभिः ।

(१७३७)

सं॰ १६१६ मि। वै। सु। ७ श्री नेमिजिन विंवं भ

(१७३८)

सं० १६१६ मि० वै० सु० ७ श्री पार्श्वजिन विंवं

बॉयें तरफ की देहरी में

(१७३६)

सं० १६०४ रा प्रथम ज्येष्ठ मासे कृष्णपक्षे शनिवासरे ८ तिथौ श्री संभवनाथ जिन विंवं प्रतिष्ठितं जं। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः।

मंडप के आले में

(१७४०)

सं० १६१४ रा वर्षे आषाढ सुदि १०

(१७४१)

सं० १६१६ वै० सु० ७ नमि जिन

(१६४२)

श्री श्रेयास जिन विंवं प्रति। भ० श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः कारा

उपर तल्ले के लेख

(१७४३)

श्री ऋषभदेव जी

सं० १६०४ रा प्रथम ज्येष्ठमासे शुक्लेतरपक्षे शनिवासरे। ८ तिथौ। श्री रिषभदेव जिन बिंवं प्रतिष्ठितं भ०। जं। यु। प्र श्री जिनसौभाग्यसूरिभि. बृहत्खरतरगच्छे कारितं श्री बीकानेर वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन श्रेयोर्थम्॥

(२७४४)

श्री कुंथुनाथ जी

संवत् १६०४ रा वर्षे प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे शनिवासरे ८ तिथौ श्री कुंथु जिन बिंबं प्रतिष्ठितं। जं। यु। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभि बृहत्खरतरगच्छे कारित श्री बीकानेर वास्तव्य समस्त श्री संघेन

(१७१०)

संवत् १५८१ वर्षे माघ ब० १० शुक्रे राणपुर वास्तव्य मोढ लघुशाखा प० नोका भा० रामति मानू सुत बीवाम्बां भा० सोही गोमति पु० सापा श्रीवत्स भाणादि कुटुम्ब युतेन श्री नमिनाथ बिंबं श्री निगमप्रभावक परमगुरु श्री आनंदसागरसूरिभि प्रतिष्ठापित ॥

(१७११)

चांदी की सपरिकर श्री नमिनाथ जी

स० १५१६ वर्षे आसा० सु० ६ शुक्रे प्राग्वाट् व्य० मंडलिक भा० हापू सु० कर्माकेन भ्रात देवा ठाकुर युतेन श्री नमिनाथ बिंबं कारित प्रति० आगमगच्छ श्री देवरत्नसूरिभि ।

(१७१२)

संवत् १५१२ वर्षे फा० सुदि १२ दिने चो गोत्रे सा० ठाकुरसी पुत्र चा० चतुर पु० सिकेन चा० सादादि परिवार सहितेन श्री श्री अभिनंदन बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरिभि ।

(१७१३)

संवत् १५२१ वर्षे वैशाख सुदि १० दिने श्रीमाल ज्ञातीय बहुरा गोत्रे स० वीदा भार्या विमल दे पुत्र स० सारग भार्या सं० स्याणी पौत्र रामणयुतेन श्रीपद्मप्रभ स्व पुण्याय कारित प्रति० श्री खरतर गच्छ श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभि ।

(१७१४)

सं० १५०६ वर्षे माघ सु० १० ऊकेश वंशे पुगल गोत्रे सा० सखमा पुत्र सा० कुराकेन भा० कुतिगदे पुत्र भोजा बोल्हा देपति हापादि युतेन स्व पुण्यार्थं श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० खरतर गच्छ श्री जिनचन्द्रसूरि पट्टे श्री जिनसागरसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरस्तुः ॥

(१७१५)

स० १५३४ वर्षे फागण सुदि ६ गुरुवा० प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव सूरा भार्या सखमादे पु० माका भा० सुकादे आत्मश्रियोर्थ श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठित पूर्णि० पक्षीय द्वितीय शाखायां कच्छोलीवाल गच्छ भ० श्री विजयप्रभसूरिणामुपदेशेन ॥

(१७१६)

सं० १५१५ वर्षे कार्तिकमघा वासि ऊकेश व्य जेसिंग भार्या मर्मट सुत मनाकेन भा० मार्दी सुत मुंजादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंब कारित प्रतिष्ठित बोकडीय गच्छ भ० श्री मलयचन्द्रसूरिभिः ।

को जगमाल को० जयतमाल को० सिंघराज प्रमुख परिवार युतेन श्री श्रेयांस बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री बृहत्खरतर गच्छे श्री जिनहंससूरि पट्टे पूर्वाचल रा (? स) हस्रकरावतार श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः ॥ शुभं ॥

(१७५४)

॥ ६० ॥ संवत् १६२८ वर्षे फाल्गुन सुदि ७ बुधे कुमरगिरि वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखाया अंबाई गोत्रे व्य० बोडा भार्या करमादे पुत्र व्य० प खीमाकेन भार्या जीवादे पुत्र व्य० ठाकरसी पेदा हीरजी पाचा कामजी युतेन स्वश्रेयोर्थं ॥ श्री नमिनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं श्री बृहत्तपागच्छे श्री। श्री विजयदानसूरि पट्टे श्रीपूज्य श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री हीर-विजयसूरिभि. ॥ श्री ॥ आचन्द्रार्कनंद्यात ॥ श्रीरस्तु ॥

(१७५५)

॥ संवत् १५१६ वर्षे फा० सुदि १३ सोमे स्तंभतीर्थे वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० करसिंघ भार्या मनकू सुत साह कालू नाम्ना स्वश्रेयसे श्री चंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री सुविहितसूरिभिः ॥

(१७५६) ३५।

॥ संवत् १५६३ वर्षे माह सु० १५ दिने श्री ऊकेश वे (वं)शे चोपडा गोत्रे को० चउहथ भा० चापलदे पुत्र को० वच्छू भा० वारु तारु वारु पुत्र को० नींबा सुश्रावकेण भा० नवरंगद (? दे) पु० भांभण वाघा परिवार सहितेन श्री श्रेयासनाथ बिंबं कारितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्री जिनहंससूरिभिः ॥ श्रेयोसु (? स्तु) ॥ श्री ॥

(१७५७)

॥ संवत् १५५५ वर्षे वैशा सुदि ३ आमलेसर वासि लाडूआ श्रीमाली ज्ञाति श्रे० गईया भार्या रेलू नाम्न्या सुत श्रे० शाणा श्रे० वाणादि युतया स्वश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छनायक श्री हेमविमलसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१७५८) ३५ /

सं० १५९८ वर्षे वैशाख सुदि ५ गुरौ ऊकेश ज्ञातीय बुहरा गोत्रे सामलहसा भा० सूहवदे पु० जीवा सदा भार्या मुहिलालदे पु० खरहथ तमाउरेथीती कुटुंवेन कारे सूसे (?) श्री कुथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री पूर्सिमा (पूर्णिमा) गच्छे भ० श्री जिनराजसूरिभि ॥ श्री ॥

(१७५९)

संवत् १५३६ वर्षे कार्त्तिक सुदि १५ श्रीमाल ज्ञातीय सा० रेडा पुत्र जावड़ादि कुटं(ब) युतेन निज श्रेयसे श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभि. ॥ श्री ॥

(१७७५)

सं० १८८२ म० ज्येष्ठ म० ६ गुरौ धातु विहे मविधा पद्मनाम भाविजिन बिं० प्र० उ० मुक्तिसागर गणि तपागच्छे श्री।

(१७७६)

श्री वासुपूज्य बिंब प्र० तपा श्री विजयसेनसूरि ।

(१७७७)

सं० १६१० वर्षे फागुण वदि २ सोमे सा० तेजो भा० सुत आटाकेन तपागच्छे श्री विजिदानसूरि प्रतिष्ठितः

(१७७८)

श्री सुमिसुव्रत वा० शार तेजा० कमलवे

(१७७९)

सं० १६३७ वर्षे वै० व० १८ श्री मूल संघे भ० श्री गुणकीर्त्युपदेशात् प्र० असवा भा० प्रवा सु० कहूवा माकर ⋯ठा प्रणमति ।

(१७८०)

स० १५७७ वर्षे श्री शांतिनाथ का० प्रति० नाणावाल गच्छे भ० श्री शांतिसूरिभि पुर

(१७८१)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १५२६ वर्षे वैशाख सुदि ७ बुधे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सिंघकीर्ति देवा गोत्र। राम सामराजक भार्या जमवतिरि पुत्र सांवतु हस सिंह पद्म कुमर भार्या शोभा पुत्र कहुतु नित्यं प्रणमति ।

(१७८२)

सं० १५४५ वैशाख सु० ७ काष्टासंघे गुणभद्र असयभद्र

(१७८३)

चौमुख जी

स० १७६४ श्री मूलसंघे ‥

(१७८४)

श्री पार्श्वनाथ जी

श्री श्री मुबनकी ‥ वैशाख् १२३४

(१७६७)

॥ ६० ॥ संवत् १३८३ वर्षे फाल्गुन वदि नवमी दिने सोमे श्री जिनचंद्रसूरि शिष्य श्री जिनकुशलसूरिभि श्री पार्श्वनाथ विंबं प्रतिष्ठिता कारितं दो० राजा पुत्रेण दो० अरसिंहेन स्वमातृ पितृ श्रेयोर्थं ॥

(१७६८) 247

अम्बिका मस्तकोपरि जिन प्रतिमा

सवत् १४७८ वर्षे चुयडा गोत्रीय सा० भीमड पुत्र सा० समरा श्रावक रा पुत्र दवा दद सहितेन श्री अंबिकामूर्त्ति. कारिता. प्रतिष्ठिता श्री खरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनवर्द्धनसूरिभि. ।

(१७६९)

सं० १७६८ वै। सु। ११ दिने त्रा· अगर श्रीचंद्रप्रभ विंबं कारितं तपागच्छे पं० कपूरविजयेन प्र०

(१७७०)

स० १८०४ प्र। जे। व। ८ सभव विंबं। प्रति। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरिभि बृहत्खरतर गच्छे का० बीकानेर वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन श्रेयोर्थं ।

(१७७०)

सं० १६६२ (?) वर्षे वै० व० ११ शुक्रे उ० ज्ञातीय शिवराज सुत पासा भा० साढिक सुत कुअरसी भा० का दि सपरिवारे. श्री मुनिसुव्रत विंबं का० प्र० श्री बृहत्खरतर गच्छे श्री जिनचंद्र

(१७७२)

श्री सभवनाथ जी

संवत् १७१० वर्षे मागसिर मासे सित पक्षे एकादशी सोमवासरे श्री अंचलगच्छे भ० श्री कल्याणसागरसूरिणामुपदेशेन श्रा० रूपाकया श्री संभव विंबं प्रतिष्ठापितम् ॥

(१७७३)

श्री मुनिसुव्रतजी

सं० १६३४ व० फा० सुदि ८ सोमे बा० जीवी श्री मुनिसुव्रत श्रीहीरविजयसूरि प्रतिष्ठितम्॥

(१७७४)

सं० १७८५ वर्षे मार्गशीर्ष मासे शुक्लपक्षे पंचमी तिथौ रवै नातरेणी कानिबादूरी का बाई री पुनि करावते ।

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर

(नाहटों की गुवाड़)

पाषाण प्रतिमादि के लेख

(१७६४)

शिलापट्ट पर

१ ॥ श्री प नमः ॥ संवत् १८९७ वर्षे शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने मा
२ सोत्तम मासे वैशाख मासे शुक्लपक्ष पष्ठ्यां तिथौ ६ गुरुवारे बृहत्
३ खरतराचार्य गच्छीय समस्त श्रीसंघेन श्री शांतिनाथस्य प्रासादं
४ कारितम् । प्रतिष्ठितं च भट्टारक जंगम युगप्रधान भ
५ ट्टारक शिरोमणि श्री श्री १००८ श्री जिनोदयसूरिभि
६ महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि महाराज
७ श्री श्री रतनसिंह जी विजयराज्ये इति मंगलं ॥ श्र ॥
८ ज्यां लग मेरु अडिग्ग है जहां लग सूरज चंद। जहां
९ लग रहज्यो अचल यह जिनमंदिर सुखकंद ॥ १ ॥ श्री
१० ॥ श्री संघपुराः कारक पूजकानां श्रेयोस्तु सदा श्री

— गर्भगृह के लेख —

(१७६५) 9376

मूलनायक श्री शांतिनाथ जी

१ संवत् १८९७ रा वष शाके १७६२ प्रवर्तमाने मासोत्तममासे वैशाख मासे । शुक्लपक्षे तिथौ पष्ठ्यां गुरुवारे विक्रमपु

२ र वास्तव्य ओस वंशे गोलछा गोत्रीय साहजी श्री मुलतानचंद जी तद्भार्या जीवां तत्पुत्र माणकचंद तद्लघु भ्राता मिलाप

३ चंद तयो भार्यो अनुक्रमात् मघा मोती इति तयो पुत्रौ पुत्रो च आलमसिंह मोतीलालेति नामकौ एभिः श्री शांतिनाथ जिन

(१७८५)

श्रीपार्श्वनाथ जी

श्री मूलसंघे श्री भुवनकीर्त्युपदेशात् १२३४

(१७८६)

म० वग्गाकेन कारितं प्र० श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः॥

(१७८७)

· निवृत्तिगच्छे हुब आ प · कन्हड़ेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पार्श्वदत्तसूरिभिः।

(१७८८)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १७२६ सा० सहोदर

(१७८९)

स० १६६३ माघ वदि ६ त र च द

(१७९०)

चाँदी के चरणों पर

सं० १८२१ मिती वैशाख सुद २ श्री जिनकुशलसूरिजी

(१७९१)

सर्वतोभद्र यन्त्रपर

सं० १८७७ मिती मिगसर सुदि ३। का। प्र। च। उ। श्री क्षमाकल्याण जी गणिनां शिष्येण ॥ श्रीरस्तु ॥

(१७९२)

ह्रींकार पट्ट पर

सं० १८५५ आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्र यंत्र मिदं प्रतिष्ठितं वा। लालचंद्रगणिना। कारितं श्री बीकानेर वास्तव्य खजांची गोत्रे किशोरसिंघ जी तत्पुत्र रुघवायसिंघेन श्रेयोर्थं। कल्याणमस्तु।

(१७९३)

यन्त्र पर

॥ संवत् १५८१। गोत्रे तेजा श्री जिनकुशलसूरिणा श्रीकलिकुंड पार्श्वनाथ को वाई सी

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर

(नाहटों की गुवाड़)

पाषाण प्रतिमादि के लेख

(१७६४)

शिलापट पर

१ ॥ श्री प नम ॥ संवत् १८६७ वर्षे शाके १७५२ प्रवत्तमाने मा
२ सोत्तम मासे वैशाख मासे शुक्लपक्ष पष्ठ्यां तिथौ ६ गुरुवारे वृहत्
३ खरतराचार्य गच्छीय समस्त श्रीसंघेन श्री शांतिनाथस्य प्रासाद
४ कारितम् । प्रतिष्ठितं च भट्टारक जंगम युगप्रधान भ
५ ट्टारक शिरोमणि श्री श्री १००८ श्री जिनोदयसूरिभि
६ महाराजाधिराज राजराजेश्वर नरेन्द्र शिरोमणि महाराज
७ श्री श्री रत्नसिंह जी विजयराज्ये इति प्रशस्ति ॥ श्री ॥
८ ज्यों लग मेरु अडिग्ग है जहां लग सूरज चंद। तहां
९ लग राजस्यो सघल यह जिनमंदिर सुखकंद ॥ १ ॥ श्री
१० ॥ श्री सघयुक्ता कारक पूजकानां श्रेयोस्तु सर्वदं श्रीः

— गर्भगृह के लेख —

(१७६५) 9316

मूलनायक श्री शांतिनाथ जी

१ संवत् १८६७ रा वर्ष शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे वैशाख मासे। शुक्लपक्ष तिथौ
पष्ठ्यां गुरुवारे विक्रमपु
२ र वास्तव्य ओस वंशे गोलछा गोत्रीय साहजी श्री मुलतानचंद जी तद्भार्या धीसो तत्पुत्र
माणकचंद तत्पु भ्राता मिलाप
३ चंद तयो भार्या अनुक्रमात् मघां मोतां इति तयो पुत्रौ पुत्रौ च धानसिंह मोतीलालेति
नामको एभिः श्री शांतिनाथ जिन

(१७८५)

श्रीपार्श्वनाथ जी

श्री मूलसंघे श्री भुवनकीर्त्युपदेशात् १२३४

(१७८६)

म० वग्गाकेन कारितं प्र० श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः ॥

(१७८७)

निवृत्तिगच्छे हुंब आ प कन्हड़ेन श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री पार्श्वदत्तसूरिभिः ।

(१७८८)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १७२६ सा० सहोदर

(१७८९)

स० १६६३ माघ वदि ६ त र च द

(१७९०)

चाँदी के चरणों पर

सं० १८२१ मिती वैशाख सुद २ श्री जिनकुशलसूरिजी

(१७९१)

सर्वतोभद्र यत्रपर

सं० १८७७ मिती मिगसर सुदि ३ । का । प्र । च । उ । श्री क्षमाकल्याण जी गणिनां शिष्येण ॥ श्रीरस्तु ॥

(१७९२)

ह्रींकार पट्ट पर

सं० १८५५ आश्विन शुक्ल १५ दिने सिद्धचक्र यंत्र मिदं प्रतिष्ठितं वा । लालचंद्रगणिना । कारितं श्री बीकानेर वास्तव्य खजाची गोत्रे किशोरसिंघ जी तत्पुत्र रुघवायसिंघेन श्रेयोर्थं । कल्याणमस्तु ।

(१७९३)

यत्र पर

॥ संवत् १५८१ । गोत्रे तेजा श्री जिनकुशलसूरिणा श्रीकलिकुंड पार्श्वनाथ को बाई सी

४ जिनभक्तसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरत्नसिंहजी विजयराज्ये। कारक पूजकानां सदा वृद्धिरः भूयात्॥ श्री॥

(१७९९) ३५४

१ स० १८६७ वर्षे शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पञ्चमी तिथौ गुरुवारे विक्रमपुर वास्त

२ व्ये ओस वंशे गोलछा गोत्रीय सा० श्री मुलतानचंद्र तद्भार्या तीजां इत्याभिधेया तत्पुत्र

३ माणकचंद तद् लघुभ्राता मिलापचंद तयो भार्ये अनुक्रमात् मघां मोतां प्रसिद्ध

४ चंद्र

५ प्रभ जिन बिंबं कारितम् प्रतिष्ठितं च बृहदाचार्ये गच्छीय खरतर भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनोदयसूरिणा ममता तत्शिष्य दीपच

६ न्द्रोपदेशात् प्रतिष्ठा महोत्सव साह श्री मिलापचन्द्रेण महाराजाधिराज शिरोमणि श्री रतनसिंह जित् विजयराज्ये कारक

७ " "

(१८००)

श्री ऋषभदेव जी ३५५

१ स० १८६७ वर्षे शाके १७६२ प्रवत्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे पञ्चमी तिथौ गुरुवा-
रे विक्रमपुर वास्तव्ये ओस वंशे गोलेछा गोत्रीय सा० श्री मुलतानचंद तद्भार्या तीजांतत्पु

३ त्र पुत्र माणकचंद तद्लघुभ्राता मिलापचंद तयो भार्ये अनुक्रमात् मघां मोतां तयो पु-

४ त्रो च मानसिंह मोतीलालेति नामको " "

५ जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री बृहदाचार्ये गच्छीय खरतर भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनोदयसूरिणाममता तत्शिष्य दीपचं-

६ न्द्रोपदेशात् तद बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव साह माणकचन्द्रेण कारितं महाराजाधिराज शिरोमणि श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये कारक पू

७

गर्भगृह से बाँयीं ओर की दहरी में

(१८०१) ३५६

१॥ संवत् १८६७ वर्षे शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने मासे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ पञ्चमी गुरुवारे विक्रमपु

२ र वास्तव्ये ओस वंशे गोलछा गोत्रीय साहजी श्रीमुलतानचंदजी तद्भार्या तीजां तत्पुत्र मिलापचंद्र श्री कुंथुनाथ बिं

४ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित च तथा च खरतर वृहदाचार्य गच्छे भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनउदयसूरिणा
५ बिंबं प्रतिष्ठा महोत्सव साह श्री माणकचंद्रेण कारितं महाराजाधिराज
६

(१७९६) २४७
श्री शान्तिनाथ

१ ॥ सं० १८९७ वर्षे शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्यां तिथौ गुरुवारे
२ विक्रमपुर वास्तव्य ओसवंशेगोलछा गोत्रीय सा० श्रीमुलतानचंद तद्भार्या तीजा तत्पुत्र
३ माणकचंद तद्लघु भ्राता मिलापचंद्रः तयो· भार्य अनुक्रमात् मघाभोतां इति प्रसिद्धै तयो.
४
५ पृष्ठे जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च तथा च वृहत् आचार्य गच्छीय खरतर भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनोदयसूरिणा मग्रत. तत्शिष्य दीपचंद्रोप-
६ देशात् प्रतिष्ठा महोत्सव साह श्री माणकचंदेन कारितं महाराजाधिराज नरेन्द्रशिरोमणि श्रीरतनसिंह जी विजयराज्ये कारक पूजकाना सदावृद्धितरां भूयात् ।

(१७९७)

१ ॥ सं० १८९७ वर्ष शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने वैशखमासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्यां तिथौ गुरुवारे
२ विक्रमपुर वास्तव्ये ओस वंशे गोलेछा गोत्रीय सा० श्री जेठमल्ल तद्भार्या अक्खां तत्पु
३
४ (पृष्ठे, मोहनलाल तद्भार्या जेठी तत्पुत्रो जालिमचंद्रः । एभिः श्री सहस्रफणा पा

गर्भगृह से दाहिनी ओर देहरी में

(१७९८) २४७
मुनिसुव्रत स्वामी

१ ॥ संवत् १८९७ रा वर्ष शाके १७६२ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वैशाख मासे शुभे शुक्ल पक्षे तिथौ षष्ठ्यां गुरु-
२ वारे विक्रमपुर वास्तव्य ओस वंशे गोलछा गोत्रीय शाहजी श्री जेठमल्ल भार्या अखां तत्पुत्र अखैचंद श्री मुनिसु-
३ व्रत जी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च वृहत् खरतर आचार्य गच्छीय भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री

(१८०७)

श्री गौतम स्वामी की प्रतिमा पर

गणधर श्री गौतमस्वामिन प्रतिमेयं बीकानेर वास्तव्ये ओसा वंशीय गोलछा कपराणा गोत्रीय श्रेष्ठि वीजराज फतैचंद सायमचंद प्रेमराज नेमीचंद जयचंद प्रभृति सुभावक कुटुम्ब श्रेयोथ कारापितं वि० संवत् २००१ वर्षे वै० सु० १३ चं० प्र० श्री नेमीचंद्रेण प्रतिष्ठिता ॥

खण्डित मूर्त्तियों के लेख

ऊपर की ओरड़ी में

(१८०८)

स० १३४६ वै० सु० २ ... ज्ञा० सा० धनेश्वरसुत पासदेवेन स्वमार्या महिप श्री श्रेयोथ स (१) हि श्री बिंबं कृा० प्रति० स० श्री चंद्रसूरिभि ।

(१८९)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ मगलवार स पापरीवाल नालो प मा म त भ भुमराज राणा सीसा भरा भट्टारक श्री श्री सहस्र

(१८१०)

स० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ जीवराज पापरीवाल

(१८११)

स० १५०६ स ... पु० श्रेयोस बिंब कारिता०

(१८१२)

(A) श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी

( ) संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ मगलवार भट्टारक

गुम्भारा में

) १८१३)

० १५२४ वर्षे मार्ग शीर्ष वदि १२

पुत्र सा० बीषा भार्यकेन्न स्वपितु पुण्याय श्री शांतिनाथ बिंबं का०

प्र० श्री जिनचंद्रसूरिभि

३ बं कारितं च तथा बृहत् खरतर आचार्य गच्छीय भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनोदयसूरिभिः प्रतिष्ठितं

४ श्री रतनसिंघजी विजै राज्ये कारक पूजकानां सदा वृद्धि भूयात् ॥ श्री ॥

(१८०२) २४९

(A) सं० १६४२ का मिति आषाढ वद १३ दिने श्री गोलछा धनाणी गोत्रे श्रावक बाघमल जी भार्या मघी कुमार तस्य पुण्य हेतवे ॥

(B) १ श्री वीर विक्रमादित्य राज्यात् संव्वति १६२० रा शाके १७७४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे शुभे मीगसर कृष्ण

२ पक्षे (स) प्तम्यां तिथौ चंद्रवासरे श्री वृहत्खरतराचार्य गच्छे का० श्रीसंघकेन कारापितं श्रीमदादिजिन बिंबं प्रतिष्ठितं

३ जं० यु० प्रधान भट्टारक श्रीजिनहेमसूरिभिः श्री विक्रमाख्येपुरे श्री सरदारसिंहजी

(१८०३)

१ सं० १६४२ का मिति आषाढ़ वद १३ दिने श्री गोलछाधनाणी गोत्रे श्रा-

२ वक करणीदानजी भार्या नवलकुंवार श्री पार्श्व जिन बिंबं स्थापितं त ..

३ ......ख हेतवे । श्री जिनहेमसूरिणा धर्म राज्ये ।

गुरु मन्दिर के लेख

(१८०४) २४९

श्री गौतम स्वामीकी प्रतिमा

सं० १६६७ वैशाख वद १० बुधवासरे प्रतिष्ठा कारापितं गोलछा कचराणी फतैचंद सुत सालमचंद पेमराज श्री गौतमस्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री १००८ श्री जिनसिद्धसूरि जी बृहत्खरतराचार्य गच्छे । महाराज गगासिंहजी विजयराज्ये । बीकानेर मध्ये श्रीशान्तिजिनालये.

(१८०५)

श्रीजिनसागरसूरि के चरणों पर

श्री खरतराचार्य गच्छे भट्टारक श्री जिनसागरसूरिवराणा पादुके । श्रीरस्तु.

(१८०६)

सं० १८६७ वर्षे शाके १७६२ प्र। वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्या तिथौ गुरुवारे श्रीवृहदाचार्य गच्छीय भ। श्री युक्तसूरि पदस्थित जं। यु। दादाजी श्रीजिनचंद्रसूरि पादुके प्रतिष्ठिते च जं। यु। श्री १०८ श्री जिनोदयसूरिभिः कारिते च पं० दीपचंद्र। चनसुख। हीमतराम। अमीचंद। तत अनुक्रमात् धर्मचंद। हरखचंद। हीरालाल पन्नालाल। चुन्नीलाल तच्छिष्य तनसुखदासेन महाराजाधिराज शिरोमणि श्री १०८ श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये श्रीरस्तु ॥

(१८१९)

श्री श्रेयांसनाथ जी

॥ सं १५१६ वर्षे प्राग्वाट सा० महणसी सुत सा० देपाल भा० पदमिणि सुत पदमण भार्या कपराद स्वश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्री सोमसुंदरसूरि शिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरि श्री श्री उदयनंदिसूरिभि मंडप महादुर्गे ॥

(१८२०)

श्री श्रेयांसनाथ जी

॥ स० १५५६ वर्षे आसाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातीय नाग गोत्रे सा० विजा भा० रूपी पु० नादा भा० अमकदे स्वकुटुंब पुत्रपौत्रादि युतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री नाणकीय गच्छे श्री धनेश्वरसूरि पट्टे भ० श्री महेन्द्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१८२१)

संवत १५८० वर्षे ॥ शाके १४५२ प्रवर्त्तमाने पोष वदि ६ रवौ श्रीवृद्धतपा पक्षे । भ । श्रीविजयरत्नसूरि भ० श्री श्री श्री धर्मरत्नसूरीश पट्टालंकरण शिष्य भ० श्रीविद्यामंडनसूरिभि । स्वगण श्रेयसे ॥ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं श्रीपूज्य भ० श्रीविद्यामंडनसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(१८२२)

संव १६६६ वर्षे माह सुद ६ दिने रविवारे मालहा वैवू वस्तुपुत्र छाजचंद गुणचंद नारायणचंद अबीरचंद उदमचंद प्रमुख भ्रातृभि श्री (ध)मनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं श्री बृहत्खरतरगच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री जिनराजसूरिभि शि० ब० श्रीराजसोमाभिधानैः

(१८२३)

सं० १५०६ वर्षे का० सु० १३ ऊकेश वंशे रीहड़ गोत्रे वच्छा मा० माढ सुत सा० खेमकेन भार्या सोनारदे पुत्र मालो वस्ता ईसर प्रमुख परिवार युतेन श्री श्रेयांस बिंबं का० श्री० खरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥

(१८२४)

सं० १५३४ व० मा० सु० ६ श० श्री मा० सा० बूढा भा० वाल्हणदे पु० सा० पता सूराकेo निजकुटुंब पूर्वज श्रेय० श्री सुमतिनाथ बिंब कारा०प्रति० श्री पू० प्रथम शा० श्री ज्ञानसुंदर सूरीणामुपदेशेन ॥

३ वं कारितं च तथा बृहत् खरतर आचार्य गच्छीय भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरि पदस्थित श्री जिनोदयसूरिभिः प्रतिष्ठितं

४ श्री रतनसिंघजी विजै राज्ये कारक पूजकानां सदा वृद्धि भूयात् ॥ श्री ॥

(१८०२) २५७

(A) सं० १६४२ का मिति आषाढ वद १३ दिने श्री गोलछा धनाणी गोत्रे श्रावक बाघमल्ल जी भार्या मघी कुमार तस्य पुण्य हेतवे ॥

(B) १ श्री वीर विक्रमादित्य राज्यात् संव्वति १६२० रा शाके १७७४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे शुभे मीगसर कृष्ण

२ पक्षे (स) प्तम्यां तिथौ चंद्रवासरे श्री वृहत्खरतराचार्य गच्छे का० श्रीसंघकेन कारापितं श्रीमदादिजिन बिंबं प्रतिष्ठितं

३ जं० यु० प्रधान भट्टारक श्रीजिनहेमसूरिभि. श्री विक्रमाख्येपुरे श्री सरदारसिंहजी

(१८०३)

१ सं० १६४२ का मिति आषाढ़ वद १३ दिने श्री गोलछाधनाणी गोत्रे श्रा-

२ वक करणीदानजी भार्या नवलकुंवार श्री पार्श्व जिन बिंबंस्थापितं त

३ ''''स्य हेतवे। श्री जिनहेमसूरिणां धर्म राज्ये।

गुरु मन्दिर के लेख

(१८०४) २५७

श्री गौतम स्वामीकी प्रतिमा

सं० १६६७ वैशाख वद १० बुधवासरे प्रतिष्ठा कारापितं गोलछा कचराणी फतैचंद सुत सालमचंद पेमराज श्री गौतमस्वामि बिंबं प्रतिष्ठितं भट्टारक श्री १००८ श्री जिनसिद्धसूरि जी वृहत्खरतराचार्य गच्छे। महाराज गगासिंहजी विजयराज्ये। बीकानेर मध्ये श्रीशान्तिजिनालये

(१८०५)

श्रीजिनसागरसूरि के चरणों पर

श्री खरतराचार्य गच्छे भट्टारक श्री जिनसागरसूरिवराणां पादुके। श्रीरस्तु.

(१८०६)

सं० १८६७ वर्षे शाके १७६२ प्र। वैशाख मासे शुक्ल पक्षे षष्ठ्या तिथौ गुरुवारे श्रीवृहदाचार्य गच्छीय भ। श्री युक्तसूरि पदस्थित जं। यु। दादाजी श्रीजिनचंद्रसूरि पादुके प्रतिष्ठिते च जं। यु। श्री १०८ श्री जिनोदयसूरिभिः कारिते च पं० दीपचंद्र। चनसुख। हीमतराम। अमीचंद। तत अनुक्रमात् धर्मचंद। हरखचंद। हीरालाल पन्नालाल। चुन्नीलाल तच्छिष्य तनसुखदासेन महा-राजाधिराज शिरोमणि श्री १०८ श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये श्रीरस्तु॥

(१८१९)

श्री श्रेयांसनाथ जी

॥ सं १५११ वर्षे प्राग्वाट सा० महणसी सुत सा० वेपड भा० पदमिणि सुत पदमण भार्या रूपराइ स्वश्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री सोमसुंदरसूरि शिष्य श्री श्री रत्नशेखर सूरि श्री श्री उदयनंदिसूरिभिः मडप महादुर्गे ॥

(१८२०)

श्री श्रेयांसनाथ जी

॥ सं० १५५६ वर्षे आसाढ सुदि १० बुधे ओसवाल ज्ञातीय नाग गोत्रे सा० विजा भा० रूपी पु० नाथा भा० कालक्के स्वकुटुंब पुत्रपौत्रादि युतेन श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री नाणकीय गच्छे श्री धनेश्वरसूरि पट्टे भ० श्री महेन्द्रसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१८२१)

संवत १५८७ वर्षे ॥ शाके १४५२ प्रवर्त्तमाने पोष वदि ६ रवौ श्रीवृद्धतपा पक्षे । भ । श्रीविजयरत्नसूरि भ० श्री श्री श्री धर्मरत्नसूरीश पट्टालंकरण शिष्य भ० श्रीविद्यामंडनसूरिभिः स्वगम श्रेयसे ॥ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं ॥ प्रतिष्ठितं श्रीपूज्य भ० श्रीविद्यामंडनसूरिभिः ॥ श्रीरस्तु ॥

(१८२२)

संवत १६६६ वर्षे माह सुद ६ दिने रविवारे मालहा देवू तत्पुत्र कानचंद गुलालचंद नारायणचंद अमीरचंद उत्तमचंद प्रमुख भ्रातृभिः श्री (ध) र्मनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्री वृहत्खरतरगच्छाधीश्वर युगप्रधान श्री जिनराजसूरिभिः शि० उ० श्रीराजसोमाभिधानैः

(१८२३)

सं० १५०६ वर्षे का० सु० १३ ऊकेश वंशे रीहड गोत्रे वच्छा भा० वाह सुत सा० जेठाकेन भार्या सीतादे पुत्र माछो धमा ईसर प्रमुख परिवार युतेन श्री श्रेयांस बिंबं का० श्री० खरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१८२४)

सं० १५३४ व० मा० सु० ६ श० श्री मा० सा० बूढा भा० वईजलदे पु० सा० पदा सुराके० निजकुटुंब पूर्वज श्रेय० श्री सुमतिनाथ बिंबं कारा०प्रति० श्री पू० प्रथम शा० श्री ज्ञानसुंदर सूरीणामुपदेशेन ॥

(१८१४)

सं १५२४ वर्षे मार्गसिर वदि १२ दिने श्री ऊकेश वंशे सा श्री शांतिनाथ बिंबं का० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि शिष्य श्री जिनचंद्रसूरिभिः सा० नगराज का० प्रति०

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१८१५)

श्री सुविधिनाथादि चौवीसी

॥ सं० ॥ १५२३ वर्षे मार्ग सुदि ६ शुक्रे उपकेश सुराणा गोत्रे सा॰ समधर भार्या सूहवदे पुत्र मं० मूला भार्या माणिकदे पुत्र सा० वीरधवल सुदयवच्छ सिद्धपाल माणिकादि समस्त कुटुंब युतेन श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्रीपद्मशेखरसूरि पट्टे भट्टारक श्री पद्माणंदसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१८१६)

श्री शांतिनाथादि चौवीसी

॥ ६० ॥ संवत् १५५६ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ शुक्रे श्री श्री वंशे मं। महिराज भा। लंगी पुत्र मं। नारद सुश्रावकेण। पूरी वृद्ध भ्रातृ मं० महीया भा० रंगी पुत्र मं० जिणदास प्रमुख समस्त कुटुंब सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री अंचल गच्छेश श्री सिद्धान्तसागरसूरीणामुपदेशेन श्री शांतिनाथ मूलनायक चतुर्विंशति पट्टः का० प्र० श्रीसंघेन श्री गोमंडल नगरे ॥

(१८१७)

श्री नमिनाथ जी

॥ संवत् १५३६ वर्षे फा० सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे पारिक्ष गोत्रे। प० महिराज भार्या महिगलदे पु० प० कोचर। लींबा। आका। गजा। तेजादि सहितेन श्रेयोर्थं श्री नमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि. ॥ श्री ॥

(१८१८)

श्री नमिनाथादि चौवीसी

॥ संवत् १५३२ वर्षे वैशाख वदि १० शुक्रे श्री श्रीमाल ज्ञा० गामी जेसा भा० जसमादे सुत सूरा वाघा कर्मसीकेन भार्या कामलदे सुत नागा आत्म श्रेयोर्थं श्री नमिनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारितं प्रतिष्ठितं श्री चैत्र गच्छे धारणपद्रीय भट्टारक श्री सोमदेवसूरिभि मूंजिगपुरे।

(१८३१)

सं० १५०९ वर्षे मार्ग सु० ६ श्री उपकेशगच्छे । सुकुया गोत्रे सा० गिरराज पु० राजा भा० होराई पु० आमा । सूराभ्यां श्री कुन्थुनाथ का० प्रति० श्री कक्कसूरिभि ॥

(१८३२)

सं० १५४२ वर्षे माघ सुदि १० सुराणा गोत्रे साणं सूत्र भार्या सा० सूजदे पुत्र सा० मांगण्न स्वपित्रो श्रे० श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्म ~(घोष?) श्रीसागरचंद्रसूरिभि ॥

(१८३३)

खण्डित परिकर की पंचतीर्थी

सं० १४६३ श्रा । छन श्री शांति बिं० का० प्र० ऊकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० देवगुप्तसूरिभि ॥

(१८३४)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ५ छौकड़ गोत्रे । मन्त्रि शिवराजान्वये सा । गगम पुत्र ठोज पापाकेन पुत्र सभाण सहितेन पितृ मातृ पनामर्थं (? पुण्याय) श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वरसूरिभिः ॥ समस्तक (?)

(१८३५)

सं० १४८० वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ५ सोमे श्री ऊकेश ज्ञातौ डूगड़ गोत्रे सा । कुच । भार्या वाछियाही नाम्नी० गजसिंहेन भ्रातृ करा श्रेयोथ श्री श्रेयांसजिन बिंबं कारितं प्र० तपपक्षीय श्री देवसुंदरसूरि पट्टे श्री देवसुन्दरसूरिभि ॥ श्री ॥

१८३६)

सं० १५२४ वशाख सुदि ६ गुरौ उपकेश ज्ञातौ । श्रादित्यनाग गोत्रे सा० छापा पु० मेहा भा० माणिकदे पु० सा० चांपाकेन भा० चांपलदे रोहिणीयुतेन पित्रो श्रेयसे नमि बिंबं का० प्र० उपकेश ग० कुकु श्री कक्कसूरिभि ।

(१८३७)

संवत् १३६७ फागुण सुदि ३ श्रीमूलसंघे खीरोदवालान्वये सा णवड राजा सुत श्री सुखी णम ॥ प्र ॥

(१८३८)

श्री मुनिसुव्रत पंचतीर्थी

॥ सं० १५११ माग वदि १ रवौ सत्यपुरीय ऊकेश ज्ञातीय सा० नरा भा० हाही पु० सा० नोवापन भा० परमू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री श्री श्रीमुनि सुंदरसूरि पट्टे श्री श्री रत्नशेखरसूरिराजभिः ॥

(१८२५)

सं० १५३३ माघ बदि १० ऊकेश सा० जेसा भा० तेजू पुत्र सा० मांडणेन भा० हीरादे पुत्र रहिआ भ्रातृ सा० ईसर वस्तादि कुटुम्ब युतेन श्री सुमतिनाथ जिनं कारित। प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः वीजापुरे ॥ श्री ॥

(१८२६)

सं० १५३५ वर्षे मा० सु० ५ गु० हीसा० श्रे० काला भा० जइतु सु० माघाकेन भा० रूपाई सु० हासा भ्रा० हीरा माधवादि कुटुम्य श्रेयसे श्रीसंभव चिंवं का० प्र० तपागच्छे श्री श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१८२७)

संवत् १६६१ वर्षे माहा सुद ११ रवौ श्री वर्द्दानपुर वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय वृद्ध शाखीय सा० रायमल्ल भार्या सोभागदे ना कृपा स्वप्रतिष्ठाया श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्तया (? पा) गच्छे भ० श्री हीरविजयसू०त । भ । श्री विजयगे (? से) न सू० त० भ० श्री ति (? वि) जयतिलकसू० त० भ० श्री विजयानंदसूरिभिः पंडित श्री मानविजय प शिष्य प श्री भविजयगणि (?) ।

(१८२८)

सं० १५१८ वर्षे आषाढ सुदि १० बुध दिने प्रा० व्य० हीराभार्या हीमादे पु० हेमा भार्या माल्ह पु० सोमा सहित (? ते) न पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथ बिंबं कारितं श्रीसाधु पूर्णिमा पक्षीय भटारि श्री देवचंद्रसूरि उपदेशेन ॥

(१८२९) २५३

सं० १४६३ वर्षे पौष वदि १ शनौ सूराणा गोत्रे सं० हेमराज भार्या हेमादे पुत्र सं० सच्चूकेन आत्म पुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेखरसूरि पट्टे भट्टारक श्री विजयचंद्रसूरिभिः ।

(१८३०) २५३

सं० १८५७ वर्षे आषाढ वदि १० शुक्रे रेवत्यां श्री दूगड़ गोत्रे सं० रूपा पु० सा० सहसू भार्या लूणाही पु० सालिगेन पुत्र अभयराज सहितेन स्वपित्रो पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं । श्रीवृहद्गच्छे पू० श्री रत्नाकरसूरि पट्टे श्री मेरुप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१८३१)

सं० १५०१ वर्षे मार्ग सु० ६ श्री उपकेशगच्छे। सुराणा गोत्रे सा० गिरराज पु वाछा भा० हीरादे पु० जामा। सुराभ्यां श्री कुन्थुनाथ का० प्रति० श्री कक्कसूरिभि ॥

(१८३२)

स० १५५२ वर्षे माघ सुदि १० सुराणा गोत्रे सा० लूढ़ा भार्या सा० सुरूपदे पुत्र सा० चांगणेन स्वपित्रो श्रे० श्री चन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्रीधर्म (घोष?) श्रीसागरचन्द्रसूरिभि ॥

(१८३३)

सखित परिकर श्री पंचतीर्थी

स० १४६३ आ। क्षेम श्री शांति बिं० का० प्र० उपकेश गच्छे कुकुदाचार्य सं० देवगुप्तसूरिभि ॥

(१८३४)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ५ कोचर गोत्रे। मंत्रि शिवराजान्वये सा। गगम पुत्र तोल पापाकेन पुत्र सधाण सहितेन पितृ मातृ पनार्थं (? पुण्यार्थं) श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित नाणावाल गच्छे श्री धनेश्वरसूरिभि ॥ समस्तक (?)

(१८३५)

स० १४८७ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ५ सोमे श्री उपकेश ज्ञातौ बुगड़ गोत्रे सा। कुंव। भार्या वोल्हियाही नाम्नी० गजसिंहेन भ्रातृ स्वात्म श्रेयोर्थ श्री श्रेयांसजिन बिंबं कारित प्र० तपगच्छ श्री हर्षसुंदरसूरि पट्टे श्री देवसुन्दरसूरिभि ॥ श्री ॥

(१८३६)

स० १५२४ वैशाख सुदि ३ गुरौ उपकेश ज्ञातौ। आदित्यनाग गोत्रे सा० जापा पु० मेहा भा० माणिकदे पु० सा० चांपाकेन भा० चांपलदे रोहिणीयुतेन पित्रो श्रेयसे नमि बिंबं का० प्र० उपकेश ग० कक्क श्री कक्कसूरिभि।

(१८३७)

संवत् १३६७ फागुण सुदि २ श्रीमूलसंघे खंडेलवालान्वये स० णवड़ राजा सुत को दुमौ पम ॥ म ॥

(१८३८)

श्री मुनिसुव्रत पंचतीर्थी

॥ स० १५१६ माघ वदि १ रवौ सत्यपुरीय उपकेश ज्ञातीय सा० नरा भा० हांसी पु० सा० नीवाकेन भा० धरणू प्रमुख कुटुंब युतेन श्री मुनिसुव्रत बिंबं का० प्र० श्री तपागच्छे श्री श्री श्रीमुनि सुंदरसूरि पट्टे श्री श्री श्री रत्नशेखरसूरिराजेंद्रे ॥

(१८२५)

सं० १५३३ माघ बदि १० ऊकेश सा० जेसा भा० तेजू पुत्र सा० मांडणेन भा० हीरादे पुत्र रहिआ भ्रातृ सा० ईसर धरतादि कुटुम्ब युतेन श्री सुमतिनाथ जिनं कारित। प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभि बीजापुरे ॥ श्री ॥

(१८२६)

सं० १५३५ वर्षे मा० सु० ५ गु० हीसा० श्रे० काला भा० जइतु सु० वाघाकेन भा० रूपाई सु० हासा भ्रा० हीरा माधवादि कुटुम्ब श्रेयसे श्रीसंभव विंबं का० प्र० तपागच्छे श्री श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि ॥ श्री ॥

(१८२७)

संवत् १६६१ वर्षे माहा सुद ११ रवौ श्री वर्द्धनपुर वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय वृद्ध शाखीय सा० रायमल्ल भार्या सोभागदे ना कृपा स्वप्रतिष्ठाया श्री नमिनाथ विंबं कारापितं प्रतिष्ठितं च श्रीमत्तया (? पा) गच्छे भ० श्री हीरविजयसू०त। भ। श्री विजयगे (? से) न सू० त० भ० श्री ति (? वि) जयतिलकसू० त० भ० श्री विजयानंदसूरिभिः पंडित श्री मानविजय प शिष्य प श्री भविजयगणि (?)।

(१८२८)

सं० १५१८ वर्षे आषाढ सुदि १० बुध दिने प्रा० व्य० हीराभार्या हीमादे पु० हेमा भार्या माल्ह पु० सोमा सहित (? ते) न पितृ मातृ श्रेयसे श्री अजितनाथ विंबं कारितं श्रीसाधु पूर्णिमा पक्षीय भटारि श्री देवचंद्रसूरि उपदेशेन ॥

(१८२९) २५३

सं० १४६३ वर्षे पौष वदि १ शनौ सूराणा गोत्रे सं० हेमराज भार्या हेमादे पुत्र सं० सच्चूकेन आत्म पुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ विंब का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री पद्मशेखरसूरि पट्टे भट्टारक श्री विजयचंद्रसूरिभिः।

(१८३०) २५३

सं० १८५७ वर्षे आषाढ वदि १० शुक्रे रेवत्यां श्री दूगड़ गोत्रे सं० रूपा पु० सा० सहसू भार्या लूणाही पु० सालिगेन पुत्र अभयराज सहितेन स्वपित्रो पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं। श्रीवृहद्गच्छे पू० श्री रत्नाकरसूरि पट्टे श्री मेरुप्रभसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(१८४८)

पार्श्वनाथ जी

संवत् १८४६

(१८४६)

पार्श्वनाथ जी

संवत् १८०७ चैत्र

(१८५०)

शांतिनाथ जी

स १६०६ महिरबाई श्री शांति सु०

(१८५१)

सं० १०१८ ग म स र

(१८५२)

श्री पार्श्वनाथजी

माघ सु० ५ श्री विजयसेने सूरिभि ।

(१८५३)

सा० अपइ केन कारितं

(१८५४)

धातुमंत्रस्थ प्रतिमा

स १६६६ सिंधुड़ सा० गापीनाम्न पेमड़ा सुत पणराजेन का० प्र०

(१८५५)

मंत्रराज र

इदं मत्रराज प्रभावात् गोलछा मानीदेव रे मृद्धि वृद्धि पुत्र कलत्र सुख कुशल शुभमवतु ।

(१८५६)

रजत के नवपद यन्त्र पर

सेठ बखतावरचदजी कारापित से०बखतावर कारापितं मि० व० जे० वदि १६२२ ॥

~~~~~~
~~~~~~

(१८३९)

श्री शान्तिनाथ चौमुखी जी

सं० १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ दिने दधीलिया वास्तव्य सा० लाला भा० कपूरा श्रीशांतिनाथ बिंबं कारापितं तपा गच्छे भ० श्री विजयदेवसूरि पादे पं० विनयविमलगणिभिः।

(१८४०)

संवत् १६०५ वर्षे फागण वदि ३ गुरुपदे श्री सतवास वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० अभराज भा० रंगा बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तप गच्छे श्री विजयदानसूरिभि. ॥

(१८४१)

श्री वासुपूज्य बिं० प्र० तपा श्री विजयसेनसूरिभिः आ० अ० वा०

(१८४२)

श्री शीतलनाथ पचतीर्थी

संवत् १५६५ वरषे महराजा। रणा देसथना पूना रणमल श्री शीतलनाथ।

(१८४३)

॥ ६०॥ संवत् १५०६ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ६ दिने श्री ऊकेश वंशे साहूसखा गोत्रे सा०सखा भार्या खेडी तत्पुत्र सा० डूगर श्रावकेण पुत्र सा० धासायरादि परिवार सहितेन निज पुण्याथ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि राजभि. ॥

(१८४४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६७६ मूलसंघे भ० रत्नचंद्रोपदेशात् सीखण्पभामाणिक मा० पाचली सुतपदास्थ भार्या दसा सुत नोवा हेमा रत्ना प्रणमति।

(१८४५)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६६७ म ॥ ११ ॥ रायकुंअरि।

(१८४६)

सपरिकर पार्श्व प्र०

सं० १५८३ वर्षे को० ढोमा भा० रंगादे पु० को चांगा पु० उदकर्ण।

(१८४७)

काउसग्गिया जी

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री मूलसंघे वादलजोत शिष्य जीवा अगीकरापित।

(१८६४)

स। १६१२ शा १७०० मिगसर मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे बिक्रमपुर वास्तव्य मुकीम मोतीलाल श्री शांति जिन बिंबं कारापित बृ। ख। भा। जं श्री हेमसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ श्री सिरदारसिंघ - - - - (श्री विजयराज्ये)

(१८६५)

सं १६०५ वर्षे मि। वैशाख सुदि १५ दिने उका सा। मेलदान श्री शांतिनाथ बिंब कारापित प्रतिष्ठित च। जं। यु। ... श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि

(१८६६)

स० १६१२ शा० १७०० मिगसर मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे श्रीबिक्रमपुर वास्तव्य मुकीम मोतीलाल श्री वासुपूज्यजी जिन बिंबं कारापित बृ। ख। भा। जं। श्रीजिन हेमसूरिभि प्रतिष्ठितं श्री सिरदारसिंघजी विजयराज्ये।

(१८६७)

सं० १६१६ मि०। वै। सु। ७ श्री अरनाथ जिन बिंबं भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः प्र। बाई महँकुमर कारा० श्री बृहत्खरतर गच्छे ॥

(१८६८)

स० १६३१। मि। वै शुक्ल ११ ति। श्रीमहावीर जिन बिंब प्र० बृ० ख० भ० श्री जिनहंस सूरिभि नानगा हीरालालजी गृहे भार्या जिड़ाव का० बीकानेर।

(१८६९)

सं० १८८३ वर्षे मि० माघ सुदि पंचम्यां श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठितं श्री ऋषभदेव जिन बिंब ॥ श्रीवरकाणा नगरे ॥ श्री ॥

(१८७०)

माणिभद्र यक्ष प्रतिमा

रत्नाकारि चन्द्रे प्रसमे सितायें माद्रे सित पक्षि गुरौ च मे श्री।

श्री मणपासिचक येन बिंबं प्रतिष्ठित संघगणे समेरु ॥ श्री माणिभद्रस्य

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१८७१)

चौबीसी जी

स। १६३१ व। मि। वै। सु। ११ ति। चौवीसीजो। प्र। बृ। ख। ग। भ। श्रीजिनहंस सूरिभि कारितं बाई नवली श्रेयोर्थम् ॥

(१८३९)

श्री शान्तिनाथ चौमुखी जी

सं० १६८७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १ दिने दधीलिया वास्तव्य सा० लाला भा० कपूरा श्रीशांति-नाथ बिंबं कारापितं तपा गच्छे भ० श्री विजयदेवसूरि पादे पं० विनयविमलगणिभिः।

(१८४०)

संवत् १६०५ वर्षे फागण वदि ३ गुरुपदे श्री सतवास वास्तव्य ओसवाल ज्ञातीय सा० अभराज भा० रंगा बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तप गच्छे श्री विजयदानसूरिभिः॥

(१८४१)

श्री वासुपूज्य बिं० प्र० तपा श्री विजयसेनसूरिभिः आ० अ० वा०

(१८४२)

श्री शीतलनाथ पचतीर्थी

संवत् १५६५ वरषे महराजा। रणा देसथना पूना रणमल श्री शीतलनाथ।

(१८४३) २५५

॥ द०॥ संवत् १५०६ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ६ दिने श्री ऊकेश वंशे साहूसखा गोत्रे सा०सखा भार्या खेढी तत्पुत्र सा० डूगर श्रावकेण पुत्र सा० धासायरादि परिवार सहितेन निज पुण्यार्थ श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च श्री खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि राजभिः॥

(१८४४)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६७६ मूलसंघे भ० रत्नचंद्रोपदेशात् सीखप्पभामाणिक मा० पाचली सुतपदारथ भार्या दमा सुत नोवा हेमा रत्ना प्रणमति।

(१८४५)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६६७ म ॥ ११ ॥ रायकुंअरि।

(१८४६)

सपरिकर पार्श्व प्र०

सं० १५८३ वर्षे को० ढोमा भा० रंगादे पु० को चांगा पु० उदकर्ण।

(१८४७)

काउसग्गिया जी

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सु० ५ श्री मूलसंघे वादलजोत शिष्य जीया अगीकरापित।

(१८६४)

सं। १९१२ शा १७७७ मिगसर मासे कृष्णपक्षे पचम्यां तिथौ बुद्धवारे विक्रमपुर वास्त मुकीम मोतीलाल श्री शांति जिन बिंबं कारापितं बृ। ख। आ। जं श्री हेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सिरदारसिंघ ~ ~~~ ~ (जी विजयराज्ये)

(१८६५)

सं १९०५ वर्षे मि। वैशाख सुदि १५ दिने वद्धा सा। भैरुदान श्री शांतिनाथ बिं कारापितं प्रतिष्ठितं च। जं। यु। " श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः

(१८६६)

सं० १९१२ शा० १७७७ मिगसर मासे कृष्णपक्षे पंचम्यां तिथौ बुधवारे श्रीविक्रम: वास्तव्य मुकीम मोतीलाल श्री वासुपूज्यजी जिन बिंबं कारापितं बृ। ख। आ। जं। श्रीजिन हेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री सिरदारसिंघजी विजयराज्ये।

(१८६७)

सं० १९१९ मि०। वै। सु। ७ श्री अरनाथ जिन बिंब प्र। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः प्र बाई महेश्वर कारा० श्री बृहत्खरतर गच्छे ॥

(१८६८)

सं० १९३१। मि। वै शुक्ल ११ ति। श्रीमहावीर जिन बिंबं प्र० बृ० ख० भ० श्री जिनहंस सूरिभिः नानगा हीरालालजी गृहे भार्या सिणगार का० बीकानेर।

(१८६९)

सं० १८८३ वर्षे मि० माघ सुदि पचम्यां श्रीविजयजिनेन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ऋषभदे जिन बिंब ॥ श्रीवरकाणा नगरे ॥ श्री ॥

(१८७०)

माणिभद्र यक्ष प्रतिमा

रत्नाकारि चंद्रे प्रसमे द्वितीये माघे सित पक्षे गुरौ च ये श्री।
श्री मच्चपाशिवक येन बिंबं प्रतिष्ठित तपगणे समेत ॥ श्री माणिभद्रस्य

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१८७१)

चौबीसी जी

सं। १९३१ व। मि। वै। सु। ११ ति। चौवीसीजी। प्र। बृ। ख। ग। भ। श्रीजिनहंस सूरिभिः कारितं बाई नवली श्रेयोर्थम् ॥

श्री पद्मप्रभु जी का मन्दिर

(पन्नी बाई का उपाश्रय)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(१८५७)

सं० । १८८३ व ।माघ सु० ५ वीमैवान समस्त सं । भ । वरकाणा नगरे श्री मल्लि बिंबं भ । श्री विजयजिनेन्द्रसूरिभिः । प्र । श्री तपा गच्छे ।

(१८५८)

सं । १८८३ रा माघ सु ५ गुरौ वीभैवा समस्त सं । श्रीऋषभाकान(? नन) श्री श्री विजय-जिनेन्द्रसूरिभिः प्रति । श्री वरकाणा नगरे ॥

(१८५६)

सं० १६०४ रा प्र । ज्येष्ठ कृष्णपक्षे ८ तिथौ श्री धरमजिन बिंबं । प्रति । बृहत्खरतर गच्छे जं । यु । प्र । भ ।श्री जिनसौभाग्यसूरिभि· वृहत्ख । का । वो । हिंदूमलजिद्भार्या कनना बाई स्व श्रेयोर्थं ।

(१८६०)

सं । १६३१ मिते वैशा । शुक्लैकादश्यां ति । श्री मल्लिनाथ बिंबं प्रति । वृ । भ । श्री जिन-हंससूरिभिः कारितं च गो । कोदूमल भार्या अणंदकुमरिकया श्री बीकानेरे ॥

(१८६१)

सं० १६१६ मि । वै । सु । ७ श्री ऋषभ जिन बिंबं भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्र । गो । सा । गंभीरचंदेन का । श्री वृहत्खरतर गच्छे ॥

(१८६२)

सं । १६१६ मि । वैशाख सुदि ७ दिने श्री सुमतिजिन बिंबं भ । श्री जिनसौभाग्यसूरिभि· प्र । पा । सा । भैरूदानजी करापितं च वृहत्खरतरगच्छे

(१८६३)

सं० १६०४ मि । प्र । ज्येष्ठ कृष्ण ८ तिथौ श्री बि । प्रति वृहत्खरतर गच्छे जं । यु । प्र । भ । श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः का० ताराचंदजिद्भार्या स्वश्रेयोर्थं ।

(१८७८)

सं० १५८१ वर्षे वैशाख सुदि ९ सोमे ऊ० ज्ञातीय सा० नरपाल भा० लखमी पु० धीरा भा० होरादे का० मातृ लखमी निमित्त स्वश्रेयोर्थं श्री धर्मनाथ बिंब का० स्वश्रेयसे प्र० श्रीजिनहंससूरि

(१८७९)

स० १५२० वर्षे वै० व० ८ गुरौ ऊ० ज्ञा० पा० वाछाकेन भा० वील्हणदे द्वि० रंगादे सुतेन तथा पु० वोगा पहिराज सहितेन मा० वील्हणदे निमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंब। श्रीछाव पू० पक्षे श्रीपुण्यचन्द्रसूरि उपदेशेन विधिना श्रीसूरिभि ॥

(१८८०)

सं० १५२२ का० व० १ प्राग्वाट मं० माटा भा० रामू पुत्र मं० धीणा सा० धमी नाम्ना देघर चादि कु० युतेन स्वश्रेयसे श्रीशीतल बिंब का० प्र० तपा श्रीसोमसुंदरसूरि संताने श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभिः ॥ अहमदावाद वास्तव्य ॥

(१८८१)

स० १५७१व० माघ वदि १३बुधे प्राग्वाट ज्ञा० व्य० माइल भा० हांसी पु० लेखा भावराम्यं भ्रातृ गला निमित्तं श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० कच्छोलीवाल गच्छे श्री सर्वाणंदसूरिणा ॥

(१८८२)

श्री सहस्रफणा पार्श्वनाथ जी

॥ सं० । १९०४ म० ज्येष्ठ व । ८

(१८८३)

संवत् १६४६ जेठ सुदि ६ कठरी हरखा म० जेहरगदे श्रीचंद्रप्रभ सम प्रतष्ककसिवाया

(१८८४)

संवत् १८४६ पारसजी जिनें प्पर्ट में माखी देसाल सवोपचद ॥

(१८८५)

स० १९०४ म० ज्येष्ट। व। ८। प्रति म० श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः खरतरग

(१८८६)

नवपद यंत्र पर

स० १८६४ आषाढ सुद ५ मविज्ञवं पं। वीपविजयेन श्रीतपागच्छे करापितं श्रीरुचिन।

(१८८७)

सवत् १५१८ वेशा १० गुरौ ज्ञा प्र श्री ..
भट्टारक श्रीकमलकलशः श्रमो (ख) कान्वये गोइल गोत्रे सा० रामू मा० भरमी पु०..
पं० का सा० बोहो मोजा तेन सम्यक्त्व यंत्र प्रतिष्ठापितं .. ।

(१८७२)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १४८३ वर्षे मार्ग वदि ७ दिने डीसावाल ज्ञातीय व्य० चापा भार्या संसारदे तत्सुता गांगी नाम्न्या सुत समधर माधव शिवदास सूरा युतया स्वश्रेयोर्थं श्री पार्श्व जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छनायक श्री सोमसुंदरसूरिभिः ॥

(१८७३)

श्री नमिनाथजी

सं० १५०८ ज्येष्ठ सु० ७ बुधे प्राग्वाट वंशे लघु सन्ताने मं० रतनसी भार्या सरसति पु० मं० जोगा सुश्रावकेण भा० राणी पुत्र पथा। पाल्हा। पौत्र मेघा। कुंदा। धणपति पूरा सहितेन श्री अंचल गच्छेश श्रीजयकेसरसूरिणामुपदेशेन स्वश्रेयसे श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ॥

(१८७४) २५९

श्री आदिनाथ जी

सं० १५२८ वर्षे आषाढ सुदि २ दिने ऊकेश वंशे राका गोत्रे श्रे० नरसिंह भा० धीरणि पुत्र श्रे० हरिराजेन भा० मघाई पु० श्रे० जीवा श्रे० जिणदास श्रे० जगमाल श्रे० जयवंत पुत्री सा० माणकाई प्रमुख परिवार युतेन श्री आदिनाथ बिंबं पुण्यार्थं कारयामासे प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री श्री श्री जिनभद्रसूरिपट्टे श्री श्री श्री जिनचंद्रसूरिभि ॥

(१८७५)

संवत् १४९२ वर्षे वैशाख वदि १० गुरु श्रीमूलसंघे सरस्वती गच्छे नंदिसंघे० बलात्कार गणे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवान् तत्पट्टे श्री शुभचंद्रदेवान्। तत्भ्राता श्रीसकलकीर्तिउपदेशात् हुबड़ न्याति ऊत्रेश्वर गोत्रे ठा० लीबा भा० फह० श्री पार्श्वनाथ नित्यं प्रणमति सं० तेजा टोईआ ठाकरसी हीरादेवा मूडली वास्त० प्रतिष्ठिता ॥

(१८७६) २५९

सं० १५२५ वर्षे मार्गसिर सुदि ३ शुक्रवासरे गोखरूगोत्रे सा० खिमराज भा० खेनू पु० नाथैं भग्नी नाथी आत्मपुण्यार्थे श्री मुनिसुव्रतस्वामि बिंबं कारापितं श्रृणस्वि (?) तपागच्छे प्रतिष्ठित श्री जयत्पिपसूरिभिः (?) ॥

(१८७७)

सं० १५२४ वर्षे वै० सु० ३ सोमे श्री श्रीमा० ज्ञा० व्य० गंधू भा० लाछ सु० भोलाकेन भा० लखाई पु० हरपति पासचंद श्रीपति प्रभृ० कुटुंब युतेन स्वगोत्र श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं श्री पू० श्रीपुण्यरत्नसूरीणामुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठितं च विधिना स्तंभे।

(१८९३)

श्री शांतिनाथ जी

॥ सं० १४९६ फागुण वदि ६ बुधे ऊकेश ज्ञातीय मं० जगसी भा० मनाइ पुत्र्या श्रा० रोहिणी नाम्न्या स्व० जिणदेवाख्य स्वभर्तृ निमित्तं श्रीशांतिनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं श्री कोरंट गच्छे श्रीककसूरि पट्टे श्रीसावदेवसूरि ॥

(१८९४)

श्री धर्मनाथ जी

संवत् १४९७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि २ सोमे प्राग्वा (ट) व्यव० वइरा भार्या वरजू पु० छुटा स० आत्मश्रेयोर्थ श्रीधर्मनाथ बिं कारितं । प्रतिष्ठित श्री मद्धा श्रीमुनिप्रभसूरिभिः ॥

(१८९५)

श्री कुन्थुनाथ जी

सं०१५०६ वर्षे मार्ग सुदि ७ ऊकेश वंशे गा (धा) शाखायां सा० पूना सुत सा० सहसाकेन पुत्र ईसर महिराजण गिरराज भाला पांचा महिया प्रमुख परिवारेण स्वश्रेयार्थ श्रीकुंथुनाथ बिंब का० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ श्री ॥

(१८९६)

श्री संभवनाथ जी

संवत् १५१० वर्षे माघ सुदि ५ दिने श्री ऊपकेशगच्छे । कुकदाचार्यसंताने भाद्र गोत्रे सा० साधा पु० सा० सारंग भा० वइही पु० सोमधर भा० मेठी पु० खेता खेडायुतेन आत्मश्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिं० का प्रति० श्रीककसूरिभि

(१८९७)

श्री आदिनाथ जी

स० १५१८ वर्षे माघ सु० ५ बुधे ऊकेश शुभ गोत्रे श्रे० आसधर पुत्र श्रे० पूना भार्या पूनी पुत्र सो० करमण्येन भार्या कर्मादे धमपुत्र सो० समरा भार्या साजणदे सुत देवादि कुटुंब युतेन श्री प्रथम तीर्थंकर बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्रीसूरिभिः । श्री सिद्धपुर वास्तव्य ॥

(१८९८)

श्री कुंथुनाथ जी

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सु० २ वहड गोत्रे सा० सीधर पुत्र गुरपतिना भा० भारमदे पु० सहसा युतेन भार्या संसारदे पुत्र करमसी पहराज युतेन श्रीकुंथुनाथ बिंबं निज पुण्यार्थं कारि० प्र० भामराज (? श्रीसवाल) गच्छे श्रीरंगगुप्तसूरिभिः ।

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(आसाणियों का चौक)

पाषाण प्रतिमा का लेख

(१८८८)

श्री मुनिसुव्रत स्वामी

संवत् १६७४ वर्षे माघ व० १ दिने श्री श्रीमुनिसुव्रत स्वामि

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१८८९)

श्री शीतलनाथ जी

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दि० श्रीऊकेश वंश दोसी सा० भादा पुत्र सा० धणदत्त श्रावकेण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुख परिवार युतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचंद्रसूरिभि. ।

(१८९०)

पीतल के सिंहासन पर

स० १३६० आषाढ सु० ८ सुराणा गुणधर सुत थिरदेव भार्या द्रेही पुत्र सा० पदाकेन सा० पद्मलदेवि पुत्र सूरा साल्हा स्वश्रेयार्थं मल्लिनाथ का० प्रति० श्रीधर्मघोषसूरि पट्टे श्रीअमरप्रभसूरि-शिष्य श्री ज्ञानचंद्रसूरिभिः

(१८९१)

श्री पार्श्वनाथजी

सं० १६१६ वर्षे श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(१८९२)

छोटी प्रतिमा पर

श्रीमूलसंघे भट्टारक शुभचंद्र तच्छिष्या बाई डाही नित्यं प्रणमति ॥

श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(आसाणियों का चौक)

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१६०६)

श्री संभवनाथ जी

सं० १५३२ वर्षे फागुण सु ... ... श्री सम्भवनाथ बिंब श्रीसंडेरगच्छे भट्टारिक श्रीसालसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

(१६०७) 264

॥ सं० १५०८ व० वै० सु० ५ दिने सोम ओसवाल ज्ञातीय सुचिंती गोत्रे सा० मन्ना भार्या अमरी पु० वोल्हेकेन स्वपूर्वज राजा पुण्यार्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं का० उप० प्र० श्रीककसूरिभिः ॥

(१६०८) 264

सं० १५३४ वर्षे मार्गा वि ५ सोमे श्रीउपकेश बाभ गोत्रे । सा० वच्छा भा० मीरिणि पु० सा० सच्चू भा० कमलादे मात पित पु० श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारापितं श्रीमलधर ग० प्र० श्री गुणनिधानसूरिभिः ॥

(१६०९)

सं० १५३६ वर्षे फागु सु० २ रवौ ओसवाल वासी गोत्रे सा० पदमा भार्या प्रेमलदे पु० मोक्षा भा० भावलदे पु० देवराजयुतेन स्वपुण्यार्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारापितं प्र० ज्ञानकीय गच्छ श्री धनेश्वरसूरिभिः ॥ सीरोही शुभं ॥

(१६१०)

संवत् १५३६ वर्षे फाग सु० ३ दिने छजेरा ... ... रा गोत्रे सा० चूल्हा पुण्यार्थं पुत्र सा० मलयराजेन भातृ श्री ...युतेन श्रीनेमिनाथ बिंबं का० प्र० श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः ॥ श्री

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(आसाणियों का चौक)

पाषाण प्रतिमा का लेख

(१८८८)

श्री मुनिसुव्रत स्वामी

संवत् १६७४ वर्षे माघ ब० १ दिने श्री   श्रीमुनिसुव्रत स्वामि

धातु प्रतिमाओं के लेख

(१८८९)

श्री शीतलनाथ जी

सं० १५३४ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दि० श्रीऊकेश वंश दोसी सा० भादा पुत्र सा० धणदत्त श्रावकेण पुत्र सा० वच्छराज प्रमुख परिवार युतेन श्री शीतल बिंबं मातृ अपू पुण्यार्थं कारितं प्र० खरतर श्री जिनचंद्रसूरिभिः।

(१८९०)

पीतल के सिंहासन पर

स० १३६० आषाढ सु० ८ सुराणा गुण्धर सुत थिरदेव भार्या द्रेही पुत्र सा० पदाकेन सा० पद्मलदेवि पुत्र सूरा साल्हा   स्वश्रेयार्थं मल्लिनाथ का० प्रति० श्रीधर्मघोषसूरि पट्टे श्रीअमरप्रभसूरि-शिष्य श्री ज्ञानचंद्रसूरिभिः

(१८९१)

श्री पार्श्वनाथजी

सं० १६१६ वर्षे श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचंद्रसूरिभि.

(१८९२)

छोटा प्रतिमा पर

श्रीमूलसंधे भट्टारक शुभचंद्र तच्छिष्या बाई डाही नित्यं प्रणमति ॥

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(गोगा दरवाजा)

पार्श्वनाथ पार्क

पाषाण प्रतिमादि लेखा

(१६१८)

शिलापट्ट पर

१ ॥ सं० १८८६ मिती माघ शुक्ल पंचम्यां श्री
२ गौड़ी पार्श्वनाथ प्रासादोद्धार श्री सं
३ घेन द्वादश सहस्र प्रमितेन द्रविणेन का-
४ रितः महाराजाधिराज श्री श्री रतन-
५ सिंहजी विजयिराज्ये । श्रीमद्बृहत्खर
६ तर गच्छाधीश्वराणां जं० यु० प्र० भट्टारक
७ श्री जिनहर्षसूरीश्वराणामुपदेशात् ॥

(१६१६)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १७२३ वर्षे म० ताराचंद पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्षसूरिभिः खरतर गच्छे आयपक्षीय ॥

(१६२०)

संवत् १६०५ वर्षे मि वैशाख ... ... श्रीकुंथुनाथ जिन बिं। का। प्रति। बृहत् खरतर गच्छे ... ...श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः का। सा। श्री ... ...

(१६२१)

सं० १६३१ वर्षे मि। वैशा। सु ११। ति। श्री आदिनाथ जिन ... ...ष्ठितं श्रीखरतर गच्छ श्रीजिनहंससूरिभिः

(१८९९)

श्री पार्श्वनाथ जी

॥ ६० ॥ सं० १५३६ वर्षे वैशाख सुदि ४ शुक्रे उ० ज्ञातीय प्राह्मेचा गोत्रे व्य० चाटा भा० धर्म्मिणि पु० गागा भा० स्यापुरि सहितेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० भावड़गच्छे श्रीभाव देवसूरिभिः ॥ श्री ॥

(१९००)

संवत् १५४६ वर्षे वशाख सु० ५ बुधे काष्टासंघे भट्टारक श्री देव तस्याम्नाये सा० भ्रमर भा। सिरि पुत्र विमलनाथ वेमसिरि पुत्र कर्मक्षय निमित्तं प्रतिष्ठाकारितं प्रतिष्ठितं।

(१९०१)

श्री विमलनाथ चतुर्विंशति प्रतिमा

॥ संवत् १५६१ वर्षे माह सुदि ५ दिने शुक्रे हुबड़ ज्ञातीय श्रे० विजपाल भा० हीरू सु० श्रे० पदमाकेन भा० चांपू सु० खोना भा० रखी सु० कमसी प्रमुख परिवार परिवृतेन स्वश्रेयोर्थं श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्रीलक्ष्मीसागरसूरि तत्पट्टे श्रीसुमतिसाधुसूरि तत्पट्टे सांप्रत विद्यमान परमगुरु श्रीहेमविमलसूरिभि. ॥ वीचावेडा वास्तव्य ॥

(१९०२)

सं० १५८७ वर्ष बैशाख वदि ७ श्री ओसवंशे छजलाणी गोत्रे। पीरोजपुर स्थाने। सा० धनू भार्या सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत दीपचंद उधरणादि कुटुंब युतेन श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं। प्रतिष्ठितं

(१९०३)

॥ संवत् १५९६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमवारे आदित्यनाग गोत्रे चोरवेड्या शाखायां सा० पासा पुत्र ऊदा भार्या ऊमादे पु० कामा रायमल देवदत्त ऊदा पुण्यार्थं शातिनाथ बिंबं कारापितं उपपल० सिद्धसूरिभिः प्रति०।

(१९०४)

संवत् १६२७ वर्षे पोष वदि ३ दिने साह छाजड़ गोत्रे साह चापसी भार्या नारंगदे पु० श्री वासुपूज बिंबं कारापतं प्रतिष्ठितं श्रीहीरविजयसूरिभि. ॥

(१९०५)

चादी के नवपद यत्र पर

स० १९७४ शा० १८३९ नभ मास आश्वन शुभ शुक्लपक्ष २ सरावग बावणचंद

श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(गोगा दरवाजा)

पार्श्वनाथ पार्क

पाषाण प्रतिमादि लेखा

(१६१८)

शिलापट्ट पर

१ ॥ सं० १८८६ मिती माघ शुक्ल पंचम्यां श्री
२ गौड़ी पार्श्वनाथ प्रासादोद्धार श्री सं-
३ घेन द्वादश सहस्र प्रमितेन द्रविणेन का
४ रित महाराजाधिराज श्री श्री रतन
५ सिंहजी विजयिराज्ये । श्रीमद्वृहत्खर
६ तर गच्छाधीश्वराणां जं० यु० प्र० भट्टारक
७ श्री जिनहर्षसूरीश्वराणामुपदेशात् ॥

(१६१६)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

स० १५२३ वर्षे भ० तारार्चद पार्श्वनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीजिनहर्षसूरिभिः खरतर गच्छे आद्यपक्षीय ॥

(१६२०)

संवत् १६०५ वर्षे मि० वैशाख .... श्रीकुंथुनाथ जिन बिं। का। प्रति। वृहत खरतर गच्छे .... श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः का। सा। श्री....... ....

(१६२१)

स० १६३१ वर्षे मि। वैशा। सु ११। ति। श्री आदिनाथ जिन .... ष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभि

(१६११)

संव० १६५५ वर्षे चैत्र सु० १३ प्र० सिधसू०

(१६१२)

श्री पार्श्वनाथ जी

संवत् १५६३ श्रीमूलसंघे मंडलाचार्य श्रीधर्मनं आम्न्याये सा० रणमल मागाणी भा० रैणादे नित्यं प्रणमति

(१६१३)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १८६३

(१६१४)

सिद्धचक्र यंत्र पर

सं० १८५३ वर्षे वैशाख मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ६ सिद्धचक्र यंत्र प्रतिष्ठितं वा० लालचंद्र गणिना वृहत्खरतरगच्छे कारितं वीकानेर वास्तव्य वांठीया गोत्रे नथमल मोतीचंद्रेण श्रेयोर्थं ॥

(१६१५)

ताम्र के यंत्र पर

सं० १८१६ वर्षे आसन सुदि १५ समेताद्रि उपनटे प्रतिष्ठितं कर्म निर्जरार्थे

(१६१६)

ताम्र के यंत्र पर

सं० १८१६ वर्षे आसन सुदि १५ समेताद्रि उपनटे प्रतिष्ठितं कर्म निर्जरार्थे

(१६१७)

सं० १५५२ वर्षे फा० सु० ६ शनौ ओस० ज्ञातीय सा० मुज भा० मुजादे पु० सा० परवत भा० अमरादे सा० पर्वत श्रेयोर्थं श्री विमलनाथ बिंबं कारितं प्र० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरि।

(१६३०)

संवत् १५१५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ शुभ दिने श्रीमालवंशे भांडिया गोत्रे सा० महणा भा० नानिगी पु० आमा जाटा खेमपाल प्रमुखै मात्श्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंब कारित प्रतिष्ठितं खरतर गच्छ श्री जिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(१६३१)

सं० १५५६ व० शा० १४२४ प्र० माह वदि ४ सोमे काश्यप गोत्रे वडसखा श्री श्रीमाली ज्ञा० म मोजा भा० रूपिणि पुत्र कान्ह भा० कामलदे पु० रतरसाव कुटुंब सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्रीनमिनाथ बिंब कारापितं प्रति० श्री पूर्णिमापक्षीय श्रीसूरिभिः ॥ भावीयां ग्राम वास्त

(१६३२)

संवत् १५०५ वर्षे आषाढ वदि ७ रवौ प्रा० व्य० सेजा भा० वेल्हम पुत्र ऊदाकेन भार्या अनुपमदे पुत्र कोना गोइ द परिवारयुतेन श्रीवासुपूज्य बिंब कारितं प्र० श्री तपागच्छे गच्छनायक श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः

(१६३३)

स० १४१५ श्री ऊकेश ज्ञा गोत्र सा० महया पुत्र छाजा भा० मापदेवाही पु० सा० काजाकेन आत्मश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ बिं० का० प्र० श्रीवृद्धपक्षीय गच्छे श्रीगुणचंद्रसूरिभिः

(१६३४)२६४

संवत् १५२४ वर्षे मार्गसिर वदि १० दिने ऊकेश वंशे कुकड गोत्रे चोपड़ा सा० ठाकुरसी भार्या ऊमदे पुत्र सा० तुहा भार्या तारादे पुत्र जिणा वीदा वस्ता प्र० पुत्र परिवार सहितेन श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिन — चन्द्रसूरिभिः ॥

(१६३५)२६४

स १५१३ व० सु० ३ व० प्रा० ओछत्रवाल गोत्रे सा० राजा भार्या रयणादे पुत्र सवाकेन भा० खेतलदे पुत्र वरसिंघ साल्हा वसा यु० श्री शांतिनाथ रि भ्रा० हेल्हानिक प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री महीतिलकसूरिभिः ॥

(१६३६)

सं० १४२१ वर्षे माघ व० ११ सोमे वडाळपी वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय पितृ पूना मातृ रणादे श्रेयोर्थ आगमिक श्री अभयसिंहसूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंब सुत सामल सोभाम्यां कारित प्रतिष्ठि मासूरिभिः ॥

(१९२२)

सं० १८८७ मि। आषाढ़ सुदि १० दिने श्रीजिनहर्षसूरिभिः ... ...कारितं॥

(१९२३)

सं० १९१६। मि। वै। सु ७ सुपार्श्व जिन बिंबं भ० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः प्र० का। सा

(१९२४)

सं० १९१६ मि० वै० सु० ७ सुमति जिन बिंबं भ० श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः प्र।
भैरूदान ... ...

(१९२५)

सं० १८७१ मिती वैशाख सुदि १० दिने गुरुवारे श्रीसंघेन चिन्तामणियक्षमूर्त्तिः कारिता। प्रतिष्ठितं च उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभि.

धातु प्रतिमा लेखाः

(१९२६)

संवत् १६१६ वर्षे वैशाख वदि ६ दिनौ। ओसवाल ज्ञातीय राखेचा गोत्रे म० हीरा भार्या हासू भा० हीरादे पुत्र देवदत्त भा० देवलदे सुत उदयसिंघ रायसिंघ कुटुंब युतेन म० देवदत्तेन श्रीवासुपूज्य चतुर्विंशति पट्टः कारापितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥श्री॥

(१९२७)

सं० १६२८वर्षे वैशाख सुदि ११ दिने श्रीपत्तन वास्तव्य श्री श्री प्राग्वाट गनातीय प० परवत भा० वा० घावरी सुतचीरा भा० वा० मंगाई सुत जीवराज॥ सुत जीवराज भ्रातृ लक्ष्मीधरा भार्या टयू। सुत देऊ लक्खाप्रमुख कुटुंब युतेन श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारित. प्रतिष्ठितं च तपागच्छेश श्रीआणंदविमलसूरि तत्पट्टे श्री विजयदानसूरि तत्पट्टे श्रीहीरविजयसूरि शिष्य महोपाध्याय श्री कल्याणविजय गणिभि

(१९२८)

सं० १५४८ वैशाख सु० ५ मूलसंघे सेणगण पक्षरगणे भटा सोमसेण सष्य राजसेण तपदे खंडेलवालान्वये गगळल गोत्रे सा० उभाला भार्या

(१९२९)

सं० १५१२ ष० फा० सु० १२ बु उप० ज्ञा० सुंधर गो० मं० लाखा भा० लाखणदे पु० पूंजा भ्रा० काजाकेन स्वपितरे नि० श्रीनमि बिं० का० प्र० को० ग० श्री सर्वदेवसूरिभिः

(१६३०)

संवत् १५११ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ४ शुभ दिने श्रीमालवंशे भांडिया गोत्रे सा० महणा भ नानिगी पु० आमा जाटा खेमपाल प्रमुखै मातृश्रेयसे श्रीवासुपूज्य बिंबं कारितं प्रतिष्ठि खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि: ॥

(१६३१)

स० १५५६ व० शा० १४२४ प्र० माह वदि ४ सोमे काश्यप गोत्रे वडसखा श्री श्रीमाल ज्ञा० म भोजा भा० रूपिणि पुत्र कान्ह भा० कामलदे पु० रत्नसाव कुटुंब सहितेन आत्मपुण्यार्थं श्रीनमिनाथ बिंब कारापितं प्रति० श्री पूर्णिमापक्षीय श्रीसूरिभि: ॥ भाखीयाँ ग्राम वास्त

(१६३२)

संवत् १५७५ वर्षे आषाढ वदि ७ रवौ मा० व्य० सेवा भा० पेल्हन पुत्र ऊदाकेन भार्या अनुपमदे पुत्र कीना गोइ द परिवारयुतेन श्रीवासुपूज्य बिंब कारितं प्र० श्री तपागच्छे गच्छनायक श्री जयकल्याणसूरिभिः

(१६३३)

स० १४१५ श्री ऊकेश ज्ञा गोत्र सा० मइया पुत्र लाला भा० मामदेवही पु० सा० काजाकेन आत्मश्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ बिं० का० प्र० श्रीरुद्रपक्षीय गच्छे श्रीगुणचंद्रसूरिभिः

(१६३४)२६८

संवत् १५२४ वर्षे मार्गसिर वदि १० दिने ऊकेश वंशे कुकड गोत्रे चोपड़ा सा० ठाकुरसी भार्या ऊमदे पुत्र सा० तुला भार्या तारादे पुत्र जिणा बीदा वस्ता प्र० पुत्र परिवार सहितेन श्रेयोर्थं श्रीवासुपूज्य बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिन — चंद्रसूरिभि: ॥

(१६३५)२६४

सं १५१३ व० शु० ३ प० ज्ञा० ओसवाल गोत्रे सा० राजा भार्या रयणादे पुत्र लोधाकेन भा० सेवलदे पुत्र वरसिंघ लाल्हा यजा यु० श्री शांतिनाथ बिं प्रा० देस्थानिक प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री महीतिलकसूरिभि: ॥

(१६३६)

स० १४२१ वर्षे माघ व० ११ सोमे वडालयो वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञातीय पित पूना मात रयणादे श्रेयोर्थं आगमिक श्री अभयसिंहसूरिणामुपदेशेन श्री आदिनाथ बिंब सुत सामल सोमाभ्यां कारितं प्रतिष्ठि श्रीसूरिभि: ॥

(१६३७)

संव १५०५ वर्षे वैशाख सुदि ६ श्री उपकेश ज्ञातौ कुर्कट गोत्रे सा० धेना भार्या पूनी पु० खेमू भार्या सूहव पुत्र नगराज सहितेन मातृ पितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० श्री उपकेश गच्छे श्रीकुकुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीकक्कसूरिभिः

(१६३८)

संवत् १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे प्रा० ज्ञा० व्यव गेदा भार्या सूहविदे सुत रत्नेन स्वकीय पूर्वज निमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्र० साधुपूर्णिमा पक्षीय भ० श्री अभयचंद्रसूरीणा मुपदेशेन

(१६३६)

सं० १३७० व० चैत्र बदि ५ शुक्रे पितृ पद्मसीह तथा भ्रातृ तिहुणा श्रेयसे गयपालेन श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनदेवसूरिभिः

(१६४०)

सं० १८००ब · सु० १० गुरौ श्रीशातिनाथ बिंबं कारित० श्रीसूरि

(१६४१)

१७८५ सा० कुसालेन श्री धर्मनाथ बिंबं का०

(१६४२)

सं० १६१८ वर्षे मार्गसिर वदि ५ दिने सोमवारे चोपड़ा गोत्रे मं० कुमला आसकरण रणधीर सहसकरण सपरिवारेण श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः

(१६४३)

अजितनाथ श्रीमूलसंघे खरहथ प्रणमति

(१६४४)

सं० १६७० व० वै० सु० २ श्री श्रीमा० ज्ञा० सा० हंसराज भा० बाई पुत्री आस बाई प्र० कुटुंब यु० पार्श्वनाथ बिं० का० प्रत० श्री विजयरेन (? सेन)

(१६४५)

सं० १५०३ भ० श्रीजिन र व द्र द व ज्ञ साला० गूलेपी यु० आवा कारितं

(१६४६)

श्री आदिनाथ श्री हीरविजयसूरि प्रतिष्ठितं श्राविका

(१६४७)

सं० १३८६ मार्ग वदि ४ शनौ नादेचा गोत्रे हेमासुत सा० तूहड़ेन हरिया भ्रातृ पुत्रादि युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभव् बिं का० प्र० श्रीगुणभद्रसूरिभि

(१६४८) 270

संवत् १५७० वर्षे माह सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे बोहिथिरा गोत्र मं० बेसड पुत्र मं० देवराज भार्या कमलादे पुत्र मं० दसू भार्या वूल्हादे पुत्र मं० रूपाकेन भार्या बोरां पुत्र म० सयवत्त म० श्रीवंतादि युतेन श्रीचन्द्रप्रभस्वामि बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिन समुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिगुरुभिः बीकानेर नगरे प्रतिष्ठितं ॥ लिखित सोनी देवा का हा ॥

(१६४९) 270

संवत् १५७० वर्षे माह सुदि दिने श्रीऊकेश वंशे बोहिथरा गोत्रे मं० देवराज पुत्र मं० दशरथ भार्या वूल्हादे पुत्र म० जोगाकेन श्री बीकानगरे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभिः

(१६५०) 270

सं० १५८६ वर्षे मार्गशीर्ष सुद ७ सोमे ऊकेश वंशे श्री बोहित्थरा गोत्रे मं० देवराज पुत्र मं० दशरथ पु० मंत्री जोगा सुश्रावकेण पु० मं० पंचायण युतेन आत्मश्रेय परयेत पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरि पट्टे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(१६५१)

रजत की आदिनाथ प्रतिमा पर

स० १८६७ वर्षे वैशाख कृष्णेतर　　　वरा (?) गुरुवारे　　　ओस वंशे बाहणाणी श्री ग्रामीय नेमसी टीकमसी तत्पुत्र चौथमल तत्पुत्र चाहचंद्रेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं　　　(? खरतरा) चार्ये गच्छीय श्रीजिनोदयसूरिभिः

(१६५२)

स्त्री मूर्ति पर

स० १९७८ वर्षे पौष व० १ गुरौ गंधक्ष्य मासे ठ० माया भा० ठ० छक्सी श्रेयोर्थ ठ० पुत्र केशवेन समस्त कुटुंब सहितेन रूपरिका कारापिता

(१६५३)

गर्भेश मन्त्र यन्त्र पर

सर्वतोभद्र यन्त्र मिद कारितं प्रतिष्ठितं च व० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः सं १८७१ मिते ज्येष्ठ वदि २ दिने

(१६३७)

संव १५०५ वर्षे वैशाख सुदि ६ श्री उपकेश ज्ञातौ कुकंट गोत्रे सा० धेना भार्या पूनी पु० खेमू भार्या सूहव पुत्र नगराज सहितेन मातृ पितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिबं का० श्री उपकेश गच्छे श्रीकुकुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीकक्कसूरिभिः

(१६३८)

संवत् १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे प्रा० ज्ञा० व्यव गेदा भार्या सूहविदे सुत रत्नेन स्वकीय पूर्वज निमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्र० साधुपूर्णिमा पक्षीय भ० श्री अभयचंद्रसूरीणा मुपदेशेन

(१६३९)

सं० १३७० व० चैत्र बदि ५ शुक्रे पितृ पद्मसीह तथा भ्रातृ तिहुणा श्रेयसे गयपालेन श्री शातिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनदेवसूरिभिः

(१६४०)

सं० १८००व ··सु० १० गुरौ श्रीशातिनाथ बिंबं कारित० श्रीसूरि

(१६४१)

१७८५ सा० कुसालेन श्री धर्मनाथ बिंबं का०

(१६४२)

सं० १६१८ वर्षे मार्गसिर वदि ५ दिने सोमवारे चोपडा गोत्रे मं० कुमला आसकरण रणधीर सहसकरण सपरिवारेण श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभि.

(१६४३)

अजितनाथ श्रीमूलसंघे खरहथ प्रणमति

(१६४४)

सं० १६७० व० वै० सु० २ श्री श्रीमा० ज्ञा० सा० हंसराज भा० बाई पुत्री आस बाई प्र० कुटुंब यु० पार्श्वनाथ बिं० का० प्रत० श्री विजयरेन (? सेन)

(१६४५)

सं० १५०३ भ० श्रीजिन र य द्र द व ज्ञ साला० मूलेपी यु० श्रावा कारितं

(१६४६)

श्री आदिनाथ श्री हीरविजयसूरि प्रतिष्ठितं श्राविका

(१६४७)

सं० १३८६ मार्ग वदि ४ शनौ नादेचा गोत्रे हेमासुत सा० तूहडेन हरिया भ्रातृ पुत्रादि युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभव बिं का० प्र० श्रीगुणभद्रसूरिभिः

(१६४८) 270

संवत् १५७० वर्षे माह सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे बोहित्थिरा गोत्र मं० जेसल पुत्र मं० देवराज भार्या रूसमादे पुत्र मं० वसू भार्या दूल्हादे पुत्र मं० रूपाकेन भार्या बोरी पुत्र मं० जयवंत मं० श्रीवंतादि युतेन श्रीचंद्रप्रभस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिन समुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिगुरुभिः बीकानेर नगरे प्रतिष्ठितं ॥ लिखितं सोनी देवा का ग्रा: ॥

(१६४९) 270

संवत् १५७० वर्षे माह सुदि दिने श्रीऊकेश वंशे बोहित्थरा गोत्रे मं० देवराज पुत्र मं० दशरथ भार्या दूल्हादे पुत्र मं० जोगाकेन श्री बीकानगरे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभिः

(१६५० 270

सं० १५-१ वर्षे मार्गशीर्ष सुद ७ सोमे ऊकेश वंशे श्री बोहित्थरा गोत्रे मं० देवराज पुत्र मं० दशरथ पु० मंत्री जोगा सुश्रावकेण पु० मं० पंचायण युतेन भ्रातृव्य परबत पुण्यार्थं श्रीसुमतिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनहंससूरि पट्टे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः

(१६५१)

रजत की आदिनाथ प्रतिमा पर

सं० १८८७ वर्षे वैशाख कृष्णेतर दश (?) गुरुवारे ओस वंश श्रारणाणी श्रावक ज्ञातीय नेणसी टीकमसी तत्पुत्र श्रीऋषभदेव तत्पुत्र ताराचंद्रेन श्रीआदिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित (? खरतरा) चार्य गच्छीय श्रीजिनोदयसूरिभिः

(१६५२)

दंपी मूर्ति पर

सं० १२७८ वर्षे पौष व० १ गुरौ गंधलख ग्रामे ठ० बाघा भा० ठ० लाछी श्रेयोर्थ ठ० पुत्र जेसहणेन समस्त कुटुंब सहितेन रूपरिका कारापिता

(१६५३)

सर्वतो भद्र यन्त्र पर

सर्वतोभद्र यंत्र सिद्ध कारितं प्रतिष्ठितं च उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः सं० १८७१ मिते ज्येष्ठ वदि २ दिने।

(१६३७)

संव १५०५ वर्षे वैशाख सुदि ६ श्री उपकेश ज्ञातौ कुर्कट गोत्रे सा० धेना भार्या पूनी पु० खेमू भार्या सूहव पुत्र नगराज सहितेन मातृ पितृ श्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० श्री उपकेश गच्छे श्रीकुकुदाचार्य संताने प्रतिष्ठितं भ० श्रीकक्कसूरिभिः

(१६३८)

संवत् १४६६ वर्षे वैशाख सुदि ३ सोमे प्रा० ज्ञा० व्यव गेदा भार्या सूहविदे सुत रत्नेन स्वकीय पूर्वज निमित्तं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्र० साधुपूर्णिमा पक्षीय भ० श्री अभयचंद्रसूरीणा मुपदेशेन

(१६३९)

सं० १३७० व० चैत्र बदि ५ शुक्रे पितृ पदमसीह तथा भ्रातृ तिहुणा श्रेयसे गयपालेन श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनदेवसूरिभि·

(१६४०)

सं० १८००व ·· सु० १० गुरौ श्रीशांतिनाथ बिंबं कारित० श्रीसूरि

(१६४१)

१७८५ सा० कुसालेन श्री धर्मनाथ बिंबं का०

(१६४२)

सं० १६१८ वर्षे मार्गसिर वदि ५ दिने सोमवारे चोपड़ा गोत्रे मं० क्षुमला आसकरण रणधीर सहसकरण सपरिवारेण श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं स्वश्रेयोर्थं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः

(१६४३)

अजितनाथ श्रीमूलसंघे खरहथ प्रणमति

(१६४४)

सं० १६७० व० वै० सु० २ श्री श्रीमा० ज्ञा० सा० हंसराज भा० बाई पुत्री आस बाई प्र० कुटुंब यु० पार्श्वनाथ बिं० का० प्रत० श्री विजयरेन (? सेन)

(१६४५)

सं० १५०३ भ० श्रीजिन र व द्र द व ज्ञ साला० गूनेपी यु० श्रावा कारितं

(१६४६)

श्री आदिनाथ श्री हीरविजयसूरि प्रतिष्ठितं श्राविका

(१६४७)

सं० १३८९ मार्ग बदि ४ शनौ नादेचा गोत्रे हेमासुत सा० तूहड़ेन हरिया भ्रातृ पुत्रादि युतेन स्वपितुः श्रेयसे श्रीचंद्रप्रभब् बिं का० प्र० श्रीगुणभद्रसूरिभि

(१६६०)

सं० १३७१ श्री बृहद्गच्छे मं० आहड़ भा० बसुमति पु० शरणसिंह सहितेन खेतसिंह भार्या छजमसिरि पुत्र रत्नड़ युतेन मातृ श्रेयसे आदिनाथ का० प्र० श्रीअमरप्रभसूरिभिः ।

(१६६१)

संवत् १५१२ वर्षे फा० सु० १२ दिने श्रेष्ठि गोत्रे सा० पाता भार्या पाल्हणदे तत्पुत्र मं० सहजपाल मं० साल्हिग भावकेन भार्या संसारदे तत्पुत्र मं० सदारंग परिवार युतेन श्री वासुपूज्य बिंबं कारितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितम् ॥

श्री सम्मेतशिखर जी का मन्दिर

(श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी के अन्तर्गत)

पाषाण प्रतिमादि लेखा

(१६६२)

शिलापट्ट पर

१ सं० १८८६ वर्षे शा । १७५४ मिते माघ शुक्ल ६ बुधे राजराजेश्वर म

२ हाराजशिरोमणि श्रीरत्नसिंह जी विजयराज्ये से । गो । सा । चाक्षचंद्र पु-

३ त्र केशरीचंद्र पुत्र अमीचंद चतुर्भुज रायभाण करमचंद रावत म

४ गल भातृ युतेन विक्रमपुरे श्रीसम्मेतशिखरस्य विंशति जिनचरण

५ न्यास प्रासादः कारित प्र० बृहत्खरतर गच्छेश भ० यु० भ० श्रीजिनहर्षसूरिभि ॥

(१६६३)

मूलनायक जी

सं० १८८७ वर्षे आषाढ - श्री सांवलिया पार्श्वनाथ बिंबं का । खरतर

(१६६४)

सं० १६०५ मि० वैशाख सुद १५ श्री आदिनाथ बिंबं से । अमीचंदजी सपरिवारेण कारित

गुरु पादुका मन्दिर के लेख

(१६६५)

पट्टावली पट्ट (८० पादुका)

॥ संवत् १८६६ मिते वैशाख सुदि ७ दिने श्री बीकानेर नगरे श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर भट्टारक श्रीमत् श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टालंकार भ । श्री जिनहर्षसूरि सद्धर्मराज्ये सकल श्रीसंघेन सह श्रीमद् देव गुरूणांचरणन्यासा कारिता प्रतिष्ठित च उ० श्रीक्षमाकल्याणगणिभि श्रयोर्थं ॥

(१६५४)

सर्वतोभद्र यन्त्र पर

श्रीसर्वतोभद्र यंत्रमिदं कारितं प्रतिष्ठितं च सं० १८७२ मिते ज्येष्ठ बदि द्वितीया दिने उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः बीकानेर नगरे ॥

(१६५५)

सं० १८७७ मिती मिगसिर सुद ३। का। प्र। च। उ। श्रीक्षमाकल्याण गणिना शिष्येण श्रीरस्तु।

श्री आदिनाथ जी का मन्दिर
(गौड़ी पार्श्वनाथजी के अन्तर्गत)

(१६५६) 271

शिलापट्ट पर

सं० १६२३ रा मिती फाल्गुण वदि ७ सप्तम्यां ... श्रीबृहत्खरतर ... धान श्रीजिनहंससूरिजी विजयराज्ये उ। म। श्री देवचंद दानसागर गणीजी उपदेशात् सुराणा गोत्रीय सुश्रावक धर्मचंद्र ... वी सेठीया गोत्रीय गंगारामस्यांगजा सुश्राविका लाभकंवर वाई श्रीऋषभदेव महाराजस्य जिन बिंबं स्थापितम् स्वस्यकल्याणाय

(१६५७)

मूलनायक श्री आदिनाथजी

संवत् १४६१ वै (?) सु० २

धातु प्रतिमा लेखाः

(१६५८) 271

सं० १५०१ वर्षे माघ वदि ६ बुधे उपकेश ज्ञातीय छाजहड़ मं० जूवि (ठि) ल भार्या जयतलदेवी तयो पुत्र मं० जसवीरेण भार्या लखमादेवी सहितेन श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनधर्म्मसूरिभिः प्रतिष्ठितं

(१६५६)

सं० १४६५ व० ज्येष्ठ सु० १४ ओस वंशे सा० वहजा भार्या वहजलदे पुत्र सा० वीराकेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकीर्त्तिसूरि उपदेशेन श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं ॥

श्रीमद् ज्ञानसारजीके प्रति बीकानेर नरेश सूरतसिंह
का खास रुक्का

श्रीमद् ज्ञानसारजी की हस्तलिपि

श्री सम्मेत-शिखर पट (चौड़ी पार्श्वनाथजी)

(१९५४)

सर्वतोभद्र यंत्र पर

श्रीसर्वतोभद्र यंत्रमिदं कारितं प्रतिष्ठितं च सं० १८७२ मिते ज्येष्ठ बदि द्वितीया दिने उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः बीकानेर नगरे ॥

(१९५५)

सं० १८७७ मिती मिगसिर सुद ३ । का । प्र । च । उ । श्रीक्षमाकल्याण गणिना शिष्येण श्रीरस्तु ।

श्री आदिनाथ जी का मन्दिर
(गौड़ी पार्श्वनाथजी के अन्तर्गत)

(१९५६) 271

शिलापट्ट पर

सं० १९२३ रा मिती फाल्गुण बदि ७ सप्तम्यां · श्रीबृहत्खरतर ·· ' धान श्रीजिनहंससूरिजी विजयराज्ये उ । म । श्री देवचंद दानसागर गणीजी उपदेशात् सुराणा गोत्रीय सुश्रावक धर्मचंद्र ····वी सेठीया गोत्रीय गंगारामस्यांगजा सुश्राविका लाभकंवर बाई श्रीऋषभदेव महाराजस्य जिन बिंबं स्थापितम् स्वस्यकल्याणाय

(१९५७)

मूलनायक श्री आदिनाथजी

संवत् १४६१ वै (?) सु० २

धातु प्रतिमा लेखाः

(१९५८) 271

सं० १५०१ वर्षे माघ बदि ६ बुधे उपकेश ज्ञातीय छाजहड़ मं० जूवि (ठि) ल भार्या जयतलदेवी तयो पुत्र मं० जसवीरेण भार्या लखमादेवी सहितेन श्रीअजितनाथ बिंबं कारितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनधर्म्मसूरिभि प्रतिष्ठितं

(१९५९)

सं० १४६५ व० ज्येष्ठ सु० १४ ओस वंशे सा० वहजा भार्या वहजलदे पुत्र सा० वीराकेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छे श्रीजयकीर्त्तिसूरि उपदेशेन श्रीविमलनाथ बिंबं कारितं ॥

श्री पार्श्वनाथ जी का-सेठू जी का मन्दिर

(पार्श्वनाथ पार्क, गोगा दरवाजा)

पाषाण प्रतिमादि लेख

(१६७५)

शिलालेख

१ ॥सं० १६२४ वर्षे शाके १७८६ मवर्त्तमाने

२ मासोत्तममासे शुक्लपक्षे तिथौ ११

३ इम्यां श्रीमद्बृहत्खरतर गच्छे भ० यु० प्र० भ०

४ श्री १०८ श्रीजिनहंससूरिजी सूरीश्वराम्।

५ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां उ० श्री १०८ श्र

६ मृतसुन्दर गणि तच्छिष्य वा० जयकीर्ति ग

७ णि तत्शिष्य पं० प्र० प्रतापसौभाग्य मुनिस्तद्-

८ देवासी पं। सुमतिविशाल मुनिस्तदंते

९ वासी पं० समुद्रसौम्य कारिता श्रीपार्श्वनाथ [जिनेन्द्रस्य

१० मंदिरं प्रतिष्ठितं च

दूसरे टुकड़े पर

बीकानेर पुराधीश राजराजेश्वर शिरोमणि श्रीसरदारसिंहाख्यो नृपोत्तिमपतेश्वराम्। १

(१६७६)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

सं १६१२ शा० १७७७ श्री पार्श्वजिन ... . – ..

(१६७७)

सं० १६३१ व। वैशाख सु। ११ श्रीवासुपूज्य जिन बिंबं। प्र। वृ। ख। ग। भ। श्रीजिनहंससूरिभि

(१६७८)

स० १६३१ वर्षे मि। वै। सु। ११ वि ... ... श्रीजिनहंससूरिभिः ....

...... राजश्री कारिता
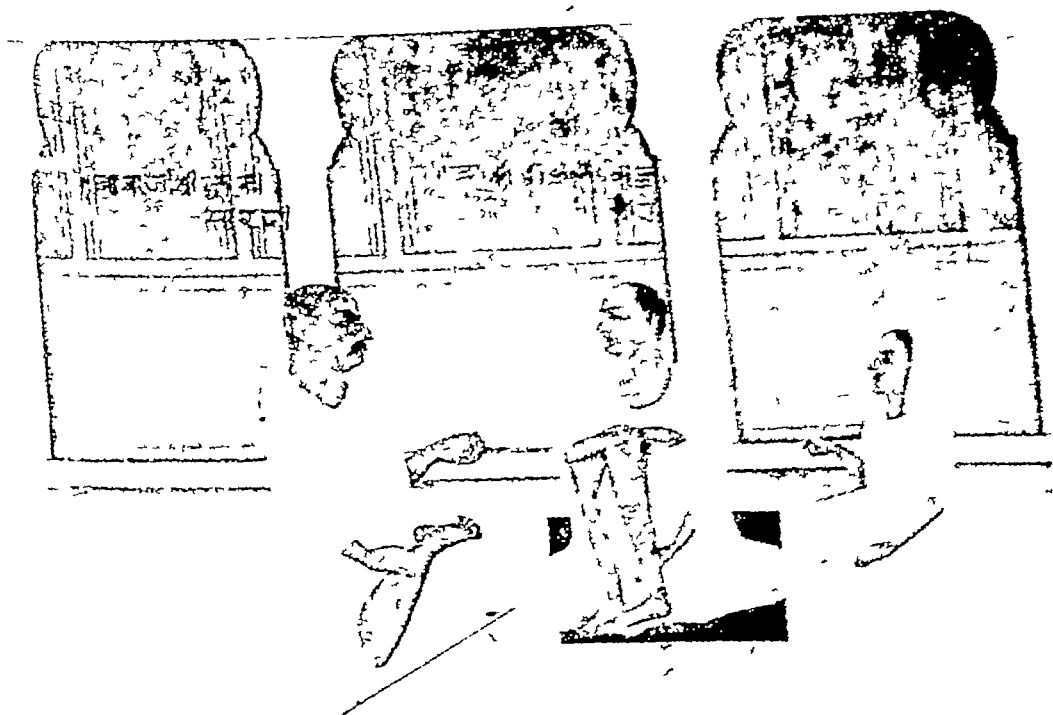
श्रीमद् ज्ञानसार जी वाचक जयकीर्त्ति एवं सांवलजी के साथ

(१९८७)

॥ सं० । १९२६ मि । का । व । ८ श्रीजिनकी । पं । प्र । श्री सुमतिविजय मुनिनां पादु । राशि । पं । युक्तिअमृतमुनि का । प्र ।

(१९८८)

सं० १९२६ रा मिती काती वदि तिथा ~ गुरुवारे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं । प्र । श्रीसमुद्रसोममुनि स्वहस्तेन श्रीमिदचरणस्थापनाकृताः ॥

(१९८९)

सं० १९२६ का मिती काती वदी ८ तिथौ गुरुवारे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं । प्र । श्रीगजविनय मुनिनां पादु । प० समुद्रसोम मुनि कारापिता प्रतिष्ठिता ॥

गुरु मन्दिर (कोचरों की बगीची)

(१९९०)

श्री पार्श्वनाथ जी

महीपापुर (होशीयारपुर) वास्तव्य वेजकौर माणिकया सं २००० वैशाख शुक्ल ६ शुक्रवासरे प्रतिष्ठिता श्रीविजयवल्लभसूरीभ्यां श्रीवल्लभसूरिभि रायकोट नगर पञ्जावदेशम

(१९९१)

श्री शान्तिनाथजी धातुमूर्त्ति

संवत् १५०१ वर्षे माह वदि ६ उपकेश ज्ञातौ मेठि गोत्रे सा० सांगण पुत्र सा० मोवण तस्य भार्या मेघावथो (से) पसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं श्री उपकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री पद्मसूरिभिः ॥

(१९९२)

श्री हेमचंद्राचार्य मूर्त्ति

ॐ अर्हनम कलिकाल सर्वज्ञ जैनाचार्य श्रीहेमचंद्रसूरीश्वरजी महाराज
अखिलमहीमण्डलाधारी प्रपञ्च परनारी सहोदर चौलुक्यचिन्तामणि परमार्हतकुमारपाल भूपाल प्रतिबोधक कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्याणामियमूर्त्ति बीकानेर श्रीसंघनकारिता प्रतिष्ठा च पंजाब देशोद्धारकाणां श्रीविजयानन्दसूरि पुंगवानांपदम्लकारै पूज्यपाद श्रीमद्विजयवल्लभसूरीश्वरैः विक्रमात् पञ्चोत्तर द्विसहस्र वर्षे मै० सु० पञ्चम्यां तिथौ शुक्रवासरे।

(१९६६)

श्रीजिनकुशलसूरि के चरणों पर

. .. .पक्षे सप्तमी दिने सोमवारे शुभयोगे श्री जिनकुशलसूरि गुरु पादुके कारापिता । शुभं भवतुः

कोने में स्थित पादुकाओं के लेख

(१९६७)

संवत् १६५४ वर्षे मगसिर सुदि २ दिने बुधवार श्रीबृहत्खरतर गच्छे वा० श्रीचारित्रमेरुगणि शिष्य पं० कनकरंग गणि दिवंगतपादुके कारा(पि)त शुभंभवतु ।

(१९६८)

संवत् १६५४ वर्षे ज्येष्ठ वदी पंचम्या पं० श्रीपद्ममंदिरगणिना पादुके कारिते श्री ॥

(१९६९)

संवत् १७०९ वर्षे मिती दु० वैशाख वदी ५ सोमवासरे पं० श्री श्री [श्रीहेमकलश तत्शिष्य पं० श्री श्री श्रीरूपाजी देवलोक प्राप्ताः ॥

(१९७०)

॥ ६० ॥ संवत् १६८७ वर्षे आसोज विजयदशम्यां दिने शनिसरवारे श्रीबृहत्खरतर गच्छे वा० श्री श्री कनकचंद्रगणि तत्शिष्य पं० श्रीदेवसिंहजी देवांगत ॥ शुभंभवतु

(१९७१)

.. ..महामंगलप्रदे कार्तिकमासे कृष्णपक्षे द्वितीया तिथौ सोमवारे श्रीमत्बृहत् श्रीखरतर गच्छे वा० श्री कनकचंद्र ... .

(१९७२)

पूज्य श्री माजी जी मु० जालमचंद जी री देवलोके .....

मथेरणों की छतरी पर

(१९७३)

सं० १७६० मिती आसाढ सुदि ९ दिने मथेण सामीदास ऊसवाला जीवत छतरी करावतं श्रीबीकानेर मध्ये ॥ श्री ॥ १ ॥ कर्त्तव्यं सूत्रधार रामचंद्र ॥ १ ॥ महाराजा श्री सुजाणसिंघजी विजयराज्ये श्री शुभंभवतुः

(१९७४)

श्रीरामजी । सं० १७५५ मिती वैशाख सुदि ३ मथेण सामीदास ऊसवाला गृहे भार्या देवलोक प्राप्त हुई तेरो छतरी सं० १७६० मिती आषाढ सुदि ९ कराई खरतरगच्छे मथेण भारमल री बेटी नवमीमी देवलोक गतं श्रीबीकानेर मध्ये ॥ १ ॥ कर्त्तव्यं सूत्रधार रामचंद्र ॥ १ ॥ महाराज सुजाणसिंह विजयराज्ये।

गुरु मन्दिर (पार्श्वचंदसूरिजी के सामने)

गंगाशहर रोड

(१९९८)

श्री जिनकुशलसूरि मूर्ति

श्री जंगम युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनकुशलसूरीश्वराणां प्रतिमामिमां श्रीजिनचारित्रसूरीश्वराणां विजयराज्ये महोपाध्याय श्री राम ऋद्धिसार गणि कारापितं च सं० १९९७

(१९९९)

श्री जिनकुशलसूरि पादुका

सं० १९९७ जे० सु० ५ श्रीजिनकुशलसूरि०

(२०००)

महो० रामलालजी की मूर्ति पर

१ ॐ सद्गुरुभ्यो नमः बृहत्खरतरगच्छाधिपति शासन प्रभाविक जंगम युगप्रधान भट्टारक व्याख्यानवाचस्पति श्री श्री श्री १०८ श्री श्रीजिनचारित्रसूरीश्वराणां।

२ शासने जैनानामुपरि प्रवर्त्तमाने बृहत्खरतरगच्छाधीश्वरक्षेमकीर्त्ति शाखायां मुनिवर्य पं० प्र० श्रीधर्मशीलगणयः तच्छिष्या: पं० प्र श्रीकुशलनिधान ग-

३ णय तच्छिष्यवर्याणां विद्वद्वर्याणांवैद्यदीपक रत्नसमुच्चय जैनदिग्विजय पताका सिद्धमूर्त्तिविवेक विलास ओसवंशमुक्तावली श्रावक

४ व्यवहारालंकार शकुनशास्त्र सामुद्रिकशास्त्र पूजामहोदधि गुणदे वस्तवमालादि सद्ग्रन्थनिर्माणनि मसत्प्रमेयनिर्णय गु

५ ण विलास चर्द्वसमुदाय पंच प्रतिक्रमणसार्थ प्रभृति ग्रन्थकर्त्तॄणां दुष्टिवादिनां वादिगज केसरीणां भावाचार्याणां महोपाध्याय श्री

६ श्री श्री १०८ श्री श्रीरामऋद्धिसारगणिवराणां रामलालजी इति प्रसिद्ध नामधेयानां मूर्त्तिरियं तच्छिष्यवर्य पं० सोमचंद्र मुनिवर्यैः प्रशिष्य पं० बालचंद्र

७ प्र मुनिवर्यैश्च कारापिता प्रतिष्ठिता च। विक्रमपुरे श्रीमन्महाराजाधिराज श्री गंगासिंह नृपति विजयराज्ये। संवत् १९९७ वर्षे जेठ सुदि ५ सोमवार

८ शिल्पकार नामगराम हीरालाल-जयपुर

(१६७६)

सं० १६०४ रा प्र । ज्ये प्रति भ० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः

धातु प्रतिमा लेखाः

(१६८०) 275

सं० १५०६ वर्षे मार्ग सुदि ६ दि ऊकेश वंशे साधु शाखाया प० जेठा भा० जसमादे पु० दूदाकेन पु० पद्मा पौत्र वस्ता युतेन श्रीआदिनाथ विंबं कारितं प्र० श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टालंकार श्रीजिनभद्रसूरिभिः शुभंभवतु

(१६८१) 275

सं० १५७६ वर्षे आपाढ सुदि १३ चोप गोत्रे सा० चो० घोला पुत्र सा० चो० पासाकेन सा० नरसिंघादियुतेन स्वभार्या श्रा० प्रेमलदे पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ विंबं का० प्र० श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभि. ॥

(१६८२)

सं० १५१८ वर्षे जेठ सुदि १० दिने श्राविका वानू निज पुण्यार्थं श्रीआदिनाथ बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः

(१६८३)

सं० १५२८ वर्षे वैशाख व० ६ चंद्रपथ गोत्रे ऊश वंश सा० सालहा भा० सिंगारदे सत्पुत्र श्रीपाल्हेन स्वश्रेयसे श्रीशांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीमलधारिगच्छे श्रीगुणसुंदरसूरिभि ।

(१६८४)

सं० १८२८ वै० १० १२ गुरौ सा । भाईदासेन शीतल जिन विंबं कारितं प्र । खरतर गच्छे श्रीजिनलाभसूरिभिः सूरत बिं०

श्रीमद् ज्ञानसार जी का समाधि-मन्दिर

पाषाण पादुका लेखाः

(१६८५)

॥ सं० १६०२ वर्षे मा । सु । ६ पं । प्र । ज्ञानसार जी पादु ।

(१६८६)

॥ सं । १६२६ मि । का । व । ८ तिथौ गुरुवारे श्री जि (न) कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं । म । श्रीसुमतिविशाल मुनिनां पादु । तच्छि । पं । समुद्रसोममुनि का । प्र० ।

(२००८) २४

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ४ बुधे श्री आदिनाथ बिंब बोहित्थरा गोत्रे मं० श्रीमसी पुत्र मं० श्रीपाल भार्या सरूपदे पुत्र जसवंत साधूक प्रमु० युतेन प्र० श्री तपागच्छे श्रीविजयसेनसूरिभिः पंडित विनयसुंदरगणि पदमति

स्तूप-पादुकादि लेख संग्रह

(२००९)

सं० १५५२ वर्षे पौष वदि १ दिने श्रीपासचंदसूरीश्वराणां पादुका श्री बीकानेर मध्ये मई० मधू तत्पुत्र मई पोमद का० शुभंभवतु ॥

(२०१०)

संवत् १८३० वर्षे शाके १७२५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे पौष मासे कृष्णपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे भट्टारक श्री १०८ श्रीविवेकचंद्रसूरिजित्कानां पादुका प्रतिष्ठिताः

(२०११)

संवत् १८३० शाके १७२५ प्रवर्त्तमाने पौष वदि १२ रानौ स्तूप प्रतिष्ठा

(२०१२)

संवत् १६०२ शाके १७६७ प्र। मासोत्तमे आषाढ मासे कृष्णपक्षे ८ अष्टम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्रीपाश्वचंद्रसूरिगच्छाधिराज भट्टारकोत्तम भट्टारक पुरन्दर भट्टारकाणां श्री १०८ श्री श्री श्री लब्धिचंद्रसूरीश्वराणां पादुके प्रतिष्ठापिता तच्छिष्य भट्टारकोत्तम भट्टारक श्रीहर्षचंद्रसूरि भिः श्रीरस्तुतराम्

(२०१३)

संवत् १८१५ वर्षे मासोत्तम श्री फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ रविवारे श्रीपूज्य श्रीकनकचन्द्रसूरीणां पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च भट्टारक श्रीशिवचंद्रसूरीश्वरैः

(२०१४)

संवत् १८१८ वर्षे मिती फाल्गुन वदि ६ रवौ भट्टारक श्री १०८ श्रीकनकचंद्रसूरिजी पादुका शुभ प्रतिष्ठिता

(२०१५)

संवत् १६११ शा। १७८१ प्र। मासोत्तमे वैशाख शुक्ले पञ्चम्यां तिथौ रविवासरे श्रीपार्श्व चंद्रसूरि गच्छे महर्षि श्रु। श्री १०८ श्रीभाग्यचंद्रजित्कानां पादुकेयं प्रतिष्ठापिता श्रु। रूपचंद्रेण

(२०१६)

श्री। संवत् १७१८ वर्षे वैशाख सुदि ७ शनिवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीपासचंद्रसूरि गच्छे भट्टारक श्रीनेमिचंद्रसूरीणां पादुका श्रीसंघेन कारापिता

(१९९३)

श्री हीरविजयसूरि मूर्त्ति

जगद्गुरु भट्टारक जैनाचार्य श्रीविजयहीरसूरीश्वर जी महाराज।

अखिल भूमंडलसंव्याप्त, सुयशसौरभाणां निखिल नरपति मस्तकमुकुटमणि भूत मुगलसम्राट अकब्बर सुरत्राण प्रदत्त स्वच्छ तपागच्छ प्राणकल्पानां जगद्गुरु विभूषितानां सकलजनपदेषु षण्मासावधि प्रवर्त्तितामारिपटहानां जगद्गुरु भट्टारकाणां श्रीहीरविजयसूरीणामियंमूर्त्तिः विक्रम सं० २००१ वै० सु० ६ शुक्रवासरे।

(१९९४)

श्री विजयानदसूरि मूर्त्तिः

चतुर्मेखलावेष्टितभूमिमंडलीय मनोज्वलगुणानां परमपुनीत श्रीसिद्धशैलोपान्ते अखिल भारतीय श्रीसंघेन वितीर्णाचार्यपदानां श्रीमद्विजयानंदसूरीश्वराणामियं भव्यमूर्त्तिः प्रतिष्ठिता च विजयवल्लभसूरिभिः बीकानेर नगरे विक्रम सं० २००१ वै० सु० ६ शुक्रवासरे।

(१९९५)

श्री पद्मावती देवी की मूर्ति पर

सं० २००१ वैशाख शुक्ला ६ श्रीपद्मावती देव्याः मूर्त्तिः स्थापिताः तपागच्छ पात जैनाचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिभिः बीकानेर नगरे।

(१९९६)

पार्श्वयक्ष की मूर्ति पर

सं० २००१ वैशाख शुक्ला ६ श्रीपार्श्वयक्षस्येयंमूर्त्ति स्थापिता श्रीमत्तपाच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीविजयवल्लभसूरिभिः॥ बीकानेर नगरे।

(१९९७क)

श्री माणिभद्रयक्ष मूर्त्तिः

सं० २००१ वैशाख शुक्ला ६ शुक्र तपागच्छाधिष्टायक श्रीमाणिभद्रयक्षस्येय मूर्त्तिस्थापिता श्री तपागच्छाधिपति जैनाचार्य श्री विजयवल्लभसूरिभिः बीकानेर नगरे।

नयी दादावाड़ी (दूगड़ों की बगीची) गंगाशहर रोड

(१९९७) 277

पंच गुरु-पादुकाओं पर

सं० १९९३ ज्येष्ठ वद ८ गुरु दिने श्रीबीकानेर नगरे ओसवाल दूगड़ मंगलचंद हड़मानमल्लेन कारापितं प्रतिष्ठितं च खरतर गच्छाधीश्वर श्रीजिनचारित्रसूरिभि

१ श्रीखरतर विरुदप्राप्त १०८० श्रीजिनेश्वरसूरि

२ श्रीमद् अभयदेवसूरि ३ दादा साहेब श्रीजिनदत्तसूरि०

४ प्रकटप्रभावी श्री जिनकुशलसूरि ५ युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरि

(२०२६)

संवत् १८६६ शाके १७३४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे शुभ शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ बुधवासर॥ साध्वी कुशलीजीकस्य पादुकास्ति साध्वी कस्तूरांकस्य पादुकास्ति॥ पादुकस्य प्रतिष्ठा विक्रमपुरे।

(२०२७)

संवत् १८६६ शाके १७३४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ मासे शुभे शुक्लपक्षे सप्तम्यां ७ तिथौ बुधवारे पादुकेयं प्रतिष्ठिता साध्वी बख्तावराकस्य पादुकास्ति विक्रमपुरे

(२०२८)

स० १६'६ शाके १७८१ म। वैशाख शुक्ल २ द्वितीयायां तिथौ बुधे पितृव्यगुरूणां श्रीजिनचन्द्र जित्कानां पादुका प्रतिष्ठापिता श्रीकृष्णचन्द्रेण श्रु। कृष्णचन्द्रस्य पादुकायं।

(२०२६)

गौतम स्वामी की प्रतिमा पर

सं० १६६२ मिगसर बदि ३ उपदेशक मुनि जगत्चंद्रजी श्रीगणधर गौतम स्वामीजी की प्रतिमा

(२०३०)

श्री भ्रातृचंद्रसूरि मूर्ति पर

स० १६६२ मि। मिगसर बदि ३ आचार्य श्रीभ्रातृचंद्रसूरिजीकी प्रतिमा मुनि श्रीजगत्चन्द्रजी महाराज के उपदेश से सेठ उदयचन्दजी मोहनलाल रामपुरियाने स्थापन की।

(२०३१)

संवत् १६६२ मिगसर बदि ३ आचार्य भट्टारक हेमचंद्रसूरीश्वरजी की चरणपादुका उपदेशक मुनि जगतचंद्रजी स्थापक सेठ उदयचंदजी मोहनलाल रामपुरिया।

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(नाहटों की बगीची)

(२०३२)

धातु की पंचतीर्थी पर

स० १५ १ ज्ये० सु० १ प्रा० ज्ञा० पीरम भा० विमलादे पु० हंसाकेन भा० हांसलदे पु रत्ना पितृ श्रेयसे श्री अभिनंदन बिंब का० प्र० श्रीसूरिमि

यति हिम्मतविजय की बगेची (गंगाशहर रोड)

(२००१)

श्री गौडीजी के चरणो पर

श्री १०८ श्री श्री श्री गौड़ीजीनाँ पादुका स्थापिता कारापिता।

(२००२)

संवत् १८५३ वर्षे शाके १७१८ प्रवर्त्तमाने माह मासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ शुक्रवारे पं० श्रीसुंदरविजयजी तत्शिष्य पं० सुमतिविजयजिद्गणिनां पादुके तत्शिष्य पं० अमृतविजयेन कारापिताः अयंपादुका स्थापिता

(२००३)

संवत् १६०२ वर्षे मिती माह सुदि १३ चंद्रवासरे पं० श्रीसिधविजयजीरा पादुका पं० सर्वसिधविजय कारापित प्रतिष्ठा श्रेयम् मंगल ॥१॥

श्री पायचंदसूरि जी (गंगाशहर रोड)

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेख

(२००४)

सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघे भट्टारक जी श्री

धातु प्रतिमा लेखाः

(२००५) 279

सं० १५७६ वर्षे श्रीखरतरगच्छे चोपड़ा गोत्रे को० सद्दणा को० हेमा को० भाड़ाकेन भार्या भरमादे पुत्र राजसी को० नान्हू प्रमुख यु० श्रीसुमतिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीजिनहंससूरिभिः॥

(२००६) 279

सं० १५८७ वर्षे वैशाख वदि ७ श्री ओसवशे छजलाणी गोत्रे। पीरोजपुर स्थाने सा० धनू भार्या सुत सा० वीरम भार्या वीरमदे सुत सा० दीपचंद ऊधरणादि कुटुंब युतेन श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं

(२००७)

सं० १६३७ वर्षे फागुण सु० १० श्रीमूलसंघे भ० गणकीर्त्युपदेशात् सा० पणमति

(२००८) २८०

सं० १५५३ वर्षे वै० सु० ४ बुधे श्री आदिनाथ बिंब वोहित्थरा गोत्रे मं० भीमसी पुत्र मं० श्रीपाल भार्या सरूपदे पुत्र असर्पत सायूल प्रमु० युतेन प्र० श्री तपागच्छे श्रीविक्रमसेनसूरिभिः पंडित विनयसुंदरगणि पणमति

स्तूप-पादुकादि लेख संग्रह

(२००६)

सं० १५५२ वर्षे पौष वदि १ दिने श्रीपासचंद्रसूरीश्वराणां पादुका श्री बीकानेर मध्ये मई० मधू तत्पुत्र मई पोमह का० शुभंभवतु ॥

(२०१०)

संवत् १८६० वर्षे शाके १७२५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे पौष मासे कृष्णपक्षे दशम्यां तिथौ गुरुवासरे भट्टारक श्री १०८ श्रीविवेकचंद्रसूरिजित्कानां पादुका प्रतिष्ठिता

(२०११)

संवत् १८६० शाके १७२५ प्रवर्त्तमाने पौष वदि १२ शनौ स्तूप प्रतिष्ठा

(२०१२)

संवत् १९०२ शाके १७६७ प्र। मासोत्तमे आषाढ मासे कृष्णपक्षे ८ अष्टम्यां तिथौ शुक्रवासरे श्रीपार्श्वचंद्रसूरिगच्छाधिराज भट्टारकोत्तम भट्टारक पुरन्दर भट्टारकाणां श्री १०८ श्री श्री श्री लब्धिचंद्रसूरीश्वराणां पादुके प्रतिष्ठापिता तच्छिष्य भट्टारकोत्तम भट्टारक श्रीहर्षचंद्रसूरि लिखि: श्रीरस्तुतराम्

(२०१३)

संवत् १९१५ वर्षे मासोत्तम श्री फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे षष्ठी तिथौ रविवारे श्रीपूज्य श्रीकनकचंद्रसूरीणां पादुका कारापिता प्रतिष्ठिता च भट्टारक श्रीशिवचंद्रसूरीश्वरैः

(२०१४)

संवत् १९१८ वर्षे मिती फाल्गुन वदि ६ रवौ भट्टारक श्री १०८ श्रीकनकचंद्रसूरिजी पादुका शुभ प्रतिष्ठिता

(२०१५)

संवत् १९३६ शा। १८०१ प्र। मासोत्तमे वैशाख शुक्ले पञ्चम्यां तिथौ रविवासरे श्रीपार्श्वचंद्रसूरि गच्छे महर्षि भ्र। श्री १०८ श्रीभाग्यचंद्रजित्कानां पादुकेयं प्रतिष्ठापिता भ्र। रूपचंद्रेण

(२०१६)

श्री। संवत् १९४८ वर्षे वैशाख सुदि ७ शनिवारे पुष्यनक्षत्रे श्रीपासचंद्रसूरि गच्छे भट्टारक श्रीनेमिचंद्रसूरीणां पादुका श्रीसंघेन कारापिता

(२०१७)

संवत् १७६८ वर्षे मिती वैशाख सुदि ७ शनिवारे भट्टारक श्रीनेमिचंद्रसूरिजी री थुंभ तिष्ठा श्रीसंघेन कारापिता

(२०१८)

पादुका युग्मपर

संवत् १८१५ वर्षे फाल्गुन वदि ६ रवौ वाचक श्री श्री रघुचंद्रजित्काना पादुका शिष्य ऋषि श्रीपनजीकस्य पादुका।

(२०१९)

संवत् १८८४ मिती जेठ सुदि ६ शुक्रवारे भट्टारक श्री १०८ श्रीकनकचंद्रसूरिजी संतानीय ० श्री वक्तचंदजीकाना पादुका तच्छिष्य श्रीसागरचंदजीकाना पादुका प्रतिष्ठिता श्रीबीकानेर नगरे

(२०२०)

श्रीलाभचंदजीकाना पादुके श्रीचैनचंद्रजित्कानां पादुके प्रतिष्ठापिते ।। सं० १९०१ शाके १७६६ प्र। भादवा बदि द्वि ४ तिथौ रविवारे

(२०२१

संवत् १८२६ वर्षे शाके १६९१ प्र। मि। चैत्र सुदि १३ भौमवारे पंडित श्री १०८ श्रीविजय-चंद्रजीकस्यो पादुका प्रतिष्ठिता

शिष्य खुशालचंद्रजीना पादुका शिष्यर्षि मलूकचंदजीनां पादुका-

(२०२२)

संवत् १८१६ वर्षे मिती वैशाख सुदि रवौ (?) उपाध्याय श्रीकरमचंद्रजीकस्य म कारापिता।

(२०२३)

संवत् १८३४ वर्षे श्रीपासचंदसूरि गच्छे उपा

श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ।।

(२०२४)

संवत् १८६३ वर्षे शाके १७२८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ गुरुवासरे पादुकेयं प्रतिष्ठिता विक्रमपुरे ।। साध्वी राजाकस्य पादुकास्ति साध्वीचेनाकस्यपादुकास्ति

(२०२५)

संवत् १९१९ शाके १७८४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे भाद्रवमासे कृष्णपक्षे १० तिथौ सा। वमेदकस्य पादुकेयं प्रतिष्ठापि।

(२०३८)

द्वार पर

आर्याजी श्रीमोतांजी शिष्यणी ढाळकवर चढापित स० १९५७

चरणपादुका, स्तूप, शाला इत्यादि के लेख

(२०३६)

स० श्री सुमतिमण्डणगणिना चरणपादुका श्रीसंघेन कारापिता स० १९१८ मिती माघ शुक्ल पंचम्यां तिथौ बुधवासरे शाके १८३३ श्रीरस्तु

२०४०)

स० १९२८ मी   ज्येष्ठ वदी २ प० प्र० धर्मानंद मुनि चरणन्यास श्रीसंघेन कारापित प्रतिष्ठापितं श्री पं० सुमतिमण्डण   प्रणमति

(२०४१)

स० १८७४ आषाढ़ शुक्ला षष्ठी उ० श्री १०८ श्रीक्षमाकल्याणजिद्गणीनां पा० श्रीसं० कारिते प्रतिष्ठापिते वा० प्राज्ञ धर्मानंद मुनि प्रणमति

(२०४२)

स० १९१८ मिती फागण सुदि ७ स   श्री अमृतचन्द्रमनिरमुनेश्चरणन्यासः कारापितः प्रतिष्ठापितश्च श्री दानसागर मुनिना श्री

(२०४३)

स० १९३१ रा मि० माघ सुदि ६ गुरुवार पं० श्री क्षमासागर मुनिनां चरण

(२०४४)

स० १९४३ रा मि० माघ सुदि १३ वार रवि पं० प्र० श्रीअभयसिंह मुनिनां पादुका पं० गुणवृत्त मुनिना कारापिता प्रतिष्ठितं च

(२०४५)

सं० १८७२ मिते आसाढ़ सु० १ श्री बृहत्खरतर श्रीसंघेन उ० श्री लब्धधर्म जिद्गणीनां चरण कमले कारिते प्रतिष्ठा

(२०४६)

सं १८७२ मि० आसाढ़ सुदि १ श्रीबृहत्खरतर श्रीसंघेन वा० राजप्रिय गणिनां चरणकमले कारिते प्रतिष्ठापिते

२०४७)

सं० १८७२ मि० आसाढ सुदि १ श्रीबृहत्खरतरसंघेन वा० क्षमाप्रमुगणिनां पादुके कारिता

श्री रेल दादाजी

दादा साहब के मन्दिर में

(२०३३)

श्री जिनदत्तसूरि मूर्ति

जं० यु० भट्टारक श्री जिनदत्तसूरि मूर्त्ति श्रीबीकानेर वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन का० प्र० श्रीजिनचारित्रसूरिभि सं० १६८७ का ज्येष्ठ सुदि ५ रविवारे श्रीसंघ श्रेयोर्थम्

(२०३४)

गुरु पादुकाओ पर

सं० १६८७ का ज्येष्ठ सुदि ५ रविवारे श्रीसंघेन का० प्र० श्रीजिनचारित्रसूरिभि· श्रीसंघ-श्रेयोर्थम् श्रीजिनदत्तसूरिजी श्रीजिनचंद्रसूरिजी श्रीजिनकुशलसूरिजी श्रीजिनभद्रसूरिजि

(२०३५)

युगप्रधान श्रीजिनचद्रसूरि के चरणो पर

सं० १६७३ वर्ष वैशाख मासे अक्षयतृतीया सोमवारे श्रीखरतरगच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरि पट्टालंकार सवाई युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरीणा पादुके श्रीविक्रमनगर वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन कारितं शुभं ॥

(२०३६)

शिलापट्ट पर

श्री रेल दादाजो का जीर्णोद्धार सं० १६८६ साल मे पन्नालालजी हीरालाल मोतीलाल चम्पालाल बांठिया कारापितं मारफत सेठिया करमचंद चलवा नारायण सुथार

गौतम स्वामी की देहरी में

(२०३७) 283

श्री गौतमस्वामी की मूर्त्तिपर

सं० १६८१ आषाढ कृष्णौ द्वादश्या तिथौ शुक्र दिने बिंबमिद लूणीया रतनलाल छगन-लालाभ्यां स्वश्रेयोऽर्थं कारितं प्रतिष्ठित च खरतरगच्छीय भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभिः बीकानेरनगरे

(२०३८)

द्वार पर

मार्याजी श्रीधीर्गाजी शिष्यणी ज्ञानकंवर धारापितं स० १९५७

चरणपादुका, स्तूप, शाला इत्यादि के लेख

(२०३९)

उ० श्री सुमतिमंडणगणिना चरणपादुका श्रीसंघेन कारापिता स० १९६८ मिती माघ शुक्ल पंचम्यां तिथौ बुधवासरे शाके १८३३ श्रीरस्तु

२०४०)

स० १६७८ मी ज्येष्ठ वदी ७ प० प्र० धर्मानंद मुनि चरणन्यास श्रीसंघेन कारापित प्रतिष्ठापित श्री प० सुमतिमंडण प्रणमति

(२०४१)

स० १८७४ आषाढ़ शुक्ला पष्ठो उ० श्री १०८ श्रीक्षमाकल्याणजिद्गणीनां पा० श्रीसं० कारिते प्रतिष्ठापितं वा० प्राज्ञ धर्मानंद मुनि प्रणमति

(२०४२)

सं० १९१८ मिती फागण सुदि ७ स श्री अमृतचन्द्रगणिमुनेश्चरणन्यासः कारापित प्रतिष्ठापितश्च श्री दानसागर मुनिना श्री

(२ ४३)

सं० १९३१ रा मि० माघ सुदि ६ गुरुवार पं० श्री क्षमासागर मुनिना चरण

(२०४४)

स० १९४३ रा मि० माघ सुदि १३ बार रवि पं० प्र० श्रीअभयसिंह मुनिना पादुका पं० गुणदत्त मुनिना कारापिता प्रतिष्ठित च

(२०४५)

सं० १८७२ मिते आसाढ़ सु० १ श्री वृहत्खरतर श्रीसंघेन उ० श्री लक्ष्मधर्म जिद्गणीनां चरणे कमले कारिते प्रतिष्ठा

(२०४६)

स १८७२ मि० आसाढ़ सुदि १ श्रीवृहत्खरतर श्रीसंघेन वा० रामप्रिय गणिनां चरणकमले कारिते प्रतिष्ठापिते

२०४७)

सं० १८७२ मि आसाढ सुदि १ श्रीवृहत्खरतरसंघेन वा०लक्ष्मीप्रमुगणिनां पादुके कारिता

(२०१७)

संवत् १७६८ वर्षे मिती वैशाख सुदि ७ शनिवारे भट्टारक श्रीनेमिचंद्रसूरिजी री थुंभ प्रतिष्ठा श्रीसंघेन कारापिता

(२०१८)

पादुका युग्मपर

संवत् १८१५ वर्षे फाल्गुन बदि ६ रवौ वाचक श्री श्री रघुचंद्रजित्काना पादुका शिष्य ऋषि श्रीपनजीकस्य पादुका।

(२०१९)

संवत् १८८४ मिती जेठ सुदि ६ शुक्रवारे भट्टारक श्री १०८ श्रीकनकचंद्रसूरिजी संतानीय पं० श्री वक्तचंदजीकाना पादुका तच्छिष्य श्रीसागरचंदजीकाना पादुका प्रतिष्ठिता श्रीबीकानेर नगरे

(२०२०)

श्रीलाभचंदजीकाना पादुके श्रीचैनचंद्रजित्कानां पादुके प्रतिष्ठापिते ॥ सं० १९०१ शाके १७६६ प्र। भादवा बदि द्वि ४ तिथौ रविवारे

(२०२१

संवत् १८२६ वर्ष शाके १६९१ प्र। मि। चैत्र सुदि १३ भौमवारे पंडित श्री १०८ श्रीविजय-चंद्रजीकस्यो पादुका प्रतिष्ठिता

शिष्य खुशालचंद्रजीना पादुका शिष्यर्षि मलूकचंदजीनां पादुका-

(२०२२)

संवत् १८१६ वर्षे मिती वैशाख सुदि रवौ (?) उपाध्याय श्रीकरमचंद्रजीकस्य म कारापिता।

(२०२३)

संवत् १८३४ वर्षे श्रीपासचंदसूरि गच्छे उपा

श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

(२०२४)

संवत् १८६३ वर्ष शाके १७२८ प्रवर्त्तमाने माघ मासे शुक्लपक्षे पंचम्या तिथौ गुरुवासरे पादुकेयं प्रतिष्ठिता विक्रमपुरे॥ साध्वी राजाकस्य पादुकास्ति साध्वीचैनाकस्यपादुकास्ति

(२०२५)

संवत् १९१९ शाके १७८४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे भाद्रवमासे कृष्णपक्षे १० तिथौ सा। वमेदकस्य पादुकेयं प्रतिष्ठापि।

(२०५७)

सं० १७६४ वर्षे मिती फागन वदि ५ रवौ श्रीविक्रमपुरे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रसूरीणां पादुके कारापितं प्रतिष्ठितं च भ० श्रीजिनविजयसूरिभिः ।

(२०५८)

स० १९२३ वर्षे मिगसर वदि १२ पु० म० ग० श्रीजिनकीर्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० बुद्धिशेखर मुनि पादुका प्रतिष्ठित

(२०५९)

सं० १६४५ मिती श्रावण सुदि ७ ज० यु० प्र० भ० श्री जिनोदयसूरीणां चबूतरा जीर्णोद्धार मकारि

(२०६०)

स० १६४५ मिती श्रावण सुदि ७ ज यु० प्र० भ० श्रीजिनहंससूरीणांचबूतरमकारि

(२०६१)

स० १६१२ वष शाके १७७७ प्र । मिगसर वदि ८ यु । भ । ज । भक्तिविलासकेन पादुका ब० विनयकल्लोल कारापितं भ० जिनहेमसूरि प्रतिष्ठितं महाराजा सिरदारसिंहजी विजयराज्ये

(२०६२)

स० १६५३ मि० चैत वदी १२ दिने श्री म । ज । माणिक्यहर्षगणीनां चत्र मकारि ।

(२०६३)

स० १८६६ रा मिती असाढ़ वदी ३ के दिने पं० प्र० तमसुखदासजीका चत्रकारि श्रीशुभ

(२०६४)

वा० पुण्यधीर मुनि पादुका

(२०६५)

सं० १८२१ वर्षे शाके १६८६ प्र । माघ मासे शुक्लपक्षे त्रयोदशी तिथौ १३ रवौ श्रीविक्रमपुरवरे भट्टारक श्रीजिनकीर्तिसूरीणां पादुके कारापिते प्रतिष्ठितं भट्टारक श्रीजिनयुक्तिसूरिभि श्रीबृहत् खरतराचार्यगच्छे

(२०६६)

स० १६३८ शाके १८०० प्रमिते माघ मासे कृष्णपक्षैकादश्यां शनिवासरे बृहत्खरतरगच्छ श्रीजिनभद्रसूरिशाखायां जं यु० प्र० भ० श्रीजिनहर्षसूरिभि तच्छिष्य पं० प्र० श्री १०८ श्रीहंस विलास गणिनां पादुका कारापिता शिष्य कीर्तिनिधानमुनिना शुभंभवतु

(२०६७)

सं० १७८६ मि सु० ४ रवौ वा० श्री दयाविनयपादु

(२०४८)

शाला में शिलापट्ट पर

सं० १९५९ शाके १८२४ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे चतुदशी १४ तिथौ गुरुवासरे अजीमगंज वास्तव्य दुधेडिया गोत्रीय बाबू बुधसिंहजी रायबहादुर बाबू विजयसिंहेनायं शाला उ० हितवल्लभजिद्गणी तस्योपरि कारापिता

(२०४९)

सं० १९५९ शाके १८२४ ज्येष्ठ सुदि १४ तिथौ गुरुवासरे श्रीजिनभद्रसूरि शाखाया म श्रीदानसागरजिद्गणि तत्शिष्य उ० श्री हितवल्लभजिद्गणिनां पादुका

(२०५०)

सं० १९३१ वर्ष माघ सुदि ६ तिथौ गुरुवारे पं० प्र० मु० श्रीदानसागरगणे चरणन्यास. हितवल्लभ मुनिना कारितं प्रतिष्ठापितं

(२०५१)

पं० प्र० जयकीर्त्ति मुनि चरणन्यास.

(२०५२)

पं० प्र० चित्रसोम मुनि चरणन्यास

(२०५३)

सं० १७८४ वर्षे वैशाख सुदि अष्टमी सोमवारे महोपाध्याय श्रीहर्षनिधान शिष्य महो० श्रीहर्षसागर पादुके प्रतिष्ठितं च ।

(२०५४)

सं० १७६२ वर्षे श्रावण वदि दिने वाणारसजी कीर्त्तिसुंदरगणि तत्शिष्य प० सामजी पादुका कारापिता

(२०५५)

सं० १९२७ मिती काती सुदि ३ गुरुवारे प० रत्नमन्दिरगणिनां पादुका कारापितं पं० हीरसौभाग्येन शुभंभवतु प्रतिष्ठितं भट्टा० श्री जिनहेमसूरि आचार्य गच्छे

(२०५६)

सं० १६७६ वर्षे ज्येष्ठ बदि ११ दिने युगप्रधान श्री ६ श्रीजिनसिंहसूरि सूरीश्वराणां पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च ।। शुभं भवतु ।

(२०७८)

स० १८०७ वर्षे मि० मार्गशिर सुदि ४ दि० पद्मकीर्तिमहो शासन

(२०७९)

स० १८८८ द्वि० वै० सु० ७ चं० यु० प्र० भ० श्री जिनहर्षसूरिभि प्र० सा० विमलसिद्धया पादुका कारिता चामृतसिद्धिमाम् ।

(२०८०)

७८ मिती आषाढ सु० ७ वृ० खरतरगच्छ वा० गुणकल्याणगणि पादुक प० प्र० मुक्तिधर्मे क

(२०८१)

स० १८३१ वर्षे मिती आश्विन शुक्ल विजयदशम्यां वा० श्री क्षमाकुशलजी गणि पादुका स्थापिता ।

(२०८२)

स० १८७७ मि० पो० सु० १५ श्रीजिनचन्द्रसूरि शाखायां पं० प्र० मेरुविजय मुनि पा०स्था०प्र०

(२०८३)

स० १६७० मागशीर्ष कृ० ७ गुरुवासरे स्वर्गप्राप्त व० मुक्तिकमलगणि

I स० १६७२ का द्वि० वै० सु० ५ म वारे भ० श्रीजिनभद्रसूरि शाखायां पूज्य महो० श्री लक्ष्मीप्रधानजी गणिवराणां शिष्य श्री मुक्तिकमल जित्प्रणोनां चरणपादुका करापिता प्रतिष्ठित च जयचंद्र रावतमल यतिभ्यां स्वश्रेयोर्थ श्रीरस्तु ।

(२०८४)

स० १६५८ मि० जे० सु० १० व० श्रीलक्ष्मीप्रधानजित्पादुक श्री । स । का । प्र+ प । श्री ।

(२०८५)

स० १६२३ का मिती पोष सुद १५ पूर्णिमास्यां तिथौ रविवासरे श्रीजिनचंद्रसूरि शाखायां श्री महिमासेन मुनिमां पादुका तच्छिष्य पं० विनयप्रधान मुनि प्रतिष्ठापित श्रीरस्तु कल्याणमस्तु शुभं भूयात्

(२०८६)

स० १६१२ रा मिती मिगसर सुदि २ बु० पं० प्र० श्री विद्याविशालजित्प्रणोनां पादुका तच्छिष्य पं० लक्ष्मीप्रधानमुनिना प्रतिष्ठापित श्रीरस्तु ।

(२०६८)

सं० १८०१ वर्ष मिती मिगसिर सुदि ५ वार स श्रीजिनचंद्रसूरि विजयराज्ये कास्य पादुका प्रतिष्ठिता करापिता।

(२०६९)

सं० १७७१ मिती मिगसर सुदि ६ पं० प्र० श्रीकुशलकमल मुनि पादुका

(२०७०)

सं० १८३७ वर्ष माह सुदि ६ तिथौ भृगुवारे श्रीसागरचंद्रसूरि शाखाया महो० श्रीपद्मकुशल जिद्गणीना पादुके कारिते प्रतिष्ठापितेचेति श्रेय.।

(२०७१)

स० १६७० मि० वै० सुद २ शुभदिने पादुका महो० श्री कल्याणनिधान गणिना प० कुशलमुनि बीकानेर मध्ये।

(२०७२)

सं० १९५३ वर्ष शाके १८१८ मि० भाद्रवपद शुक्ल दशम्या बुधवासरे पं० प्र० धर्मवल्लभ मुनिचरण न्यासः कारापित तत्शिष्य वा० नीतिकमल मुनिना श्रीरस्तु शुभंभवतु।

(२०७३)

सं० १९४४ मि० वैशा० कृ० ११ ति० चं वासरे पं० प्र० श्रीमहिमाभक्ति गणीना पादुका कारापिता प्रतिष्ठितं च पं० महिमाउदय मुनि पं० पद्मोदय मुनिभ्या

(२०७४)

सं० १९३५ शाके १८०० मि। माघ व श्रीजिनभद्रसूरि शाखाया भ० श्री जिनहर्षसूरिभि तत्शिष्य पं० प्र० हंसविलास गणि तत्शिष्य पं० प्र० श्री कीर्त्ति चरणन्यासः पं० धर्मवल्लभ मुनि कारापितं।

(२०७५)

सं० १८३५ वर्ष मि० वैशाख शुक्लैकादश्यां तिथौ पं० प्र० श्रीदेववल्लभजी गणि पादुका कारापिता श्रो०

(२०७६)

शुभ संवत् १९५७ का मिती फाल्गुन कृष्ण पंचम्या शुक्रवासरे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरिशाखाया पं० प्र० श्री हेमकीर्त्ति मुनि चरणपादुका कारापिता पं० प्र० नयभद्र मुनिना।

(२०७७)

सं० १७६४ वर्षे फाल्गुन वदि ५ रवौ श्री विक्रमपुरनगरमध्ये स्वर्ग प्राप्ताना श्री खरतराचार्य गच्छीय उ० श्रीहर्षहंसगुरूणांपादुका कारापिता प्रतिष्ठापितं च प्रशिष्य

(२०९७)

दादाजी के पास की देहरी में

सं० १६१८ वर्षे शाके १७८३ प्रवर्त्तमाने मि० फाल्गुन शुक्ले ८ अष्टम्यां तिथौ रविवासरे श्री विक्रमपुर वास्तव्य श्रीसंघेन जं० युग० भ० श्री जिनहर्षसूरीश्वर पट्टालंकार युग० भ० श्रीजिन सौभाग्यसूरीणां पादुके कारापिते प्रतिष्ठिते च श्री जं० यु० भ० श्रीजिनहंससूरिभिः श्रीबृहत्खरतर भट्टारक गच्छे समस्त श्रीसंघ सदा प्रणमति ।

(२०९८)

स १९७२ शाके १८३७ प्रवर्त्तमाने मि० द्वि० वैशाख शुक्ल तिथौ १० चन्द्रवासरे श्रीविक्रमपुर वास्तव्य श्रीसंघेन भ० यु० प्र० भ० श्रीजिनसौभाग्यसूरीश्वर पट्टालंकार जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनहंससूरिणां पादुके कारापिते प्रतिष्ठितं च श्री जं० यु० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभिः श्री बृहत्खरतर भट्टारक गच्छ समस्त श्रीसंघ सदा प्रणमति ।

(२०९९)

सं० १९७२ शाके १८३७ प्रवर्त्तमाने मि० द्वि० वैशाख शुक्ल १० तिथौ चंद्रवासरे श्री विक्रमपुर वास्तव्य श्रीसंघेन जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनहंससूरीश्वर पट्टालंकार भ० यु० प्र० भ० श्रीजिनचंद्रसूरीणां पादुके कारापिते प्रतिष्ठिते च श्री जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभिः श्रीबृहत्खरतर भट्टारक गच्छे समस्त श्रीसंघ सदा प्रणमति ।

(२१००)

सं० १९७२ वर्षे शाके १८३७ प्रवर्त्तमाने मि० द्वि० वैशाख शुक्ल १० सोमवासरे श्रीविक्रमपुर वास्तव्य श्रीसंघन जं० यु० प्र० भट्टा० श्रीजिनचंद्रसूरीश्वर पट्टालंकार जं० यु० प्र० भ० श्रीजिनकीर्त्ति सूरीणां पादुका कारापिते प्रतिष्ठिते च श्री भ० यु० प्र० भ० श्रीजिनचारित्रसूरिभि बृ० ख० भ० गच्छे समस्त श्रीसंघ सदाप्रणमति ।

शाला नं० १ के लेख

(२१०१

स १८७१ वर्ष मिती माह सुदि १३ दिने श्री वा० 'विद्याप्रियजी गणीनां पादुका स्थापिता पं० रत्ननिधान मुनिना श्रीबीकानेरे ।

२१०२)

सं० १८९१ मिते माघ सुद पंचम्यां श्री बीकानेर　　〃　　वा० श्री जयमाणिक्य　　〃
विद्याप्रिय कारित. प्रति०

(२०८७)

सं० १६२३ वर्षे मि० ब० १३ दिने वृ० ख० गच्छे श्रीजिनकोर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० दानशेखर मुनि पादुका प्रतिष्ठितं श्रेयार्थं । श्री ।

(२०८८)

सं० १७६७ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने उपा० श्रीहर्षनिधान जिद्गणिवराणा पादुके स्थापिते वा० हर्षसागरेण ।

(२०८६)

सं० १८६२ का० सु० ५ वा० श्रीकुशलकल्याणगणिना पादन्यास कारित प्रतिष्ठापितश्च ।

(२०६०)

सं० १६१४ रा मि० जे० सु० ५ दिने पं० प्र० लक्ष्मीधर्ममुनिनां पादुका स्थापितमस्ति ।

(२०६१)

सं० १६१४ रा मि० जे० सु० ५ दिने पं० प्र० प्रीतिकमलमुनिनांपादुका स्थापितमस्ति ।

(२०६२)

सं० १८४६ वर्षे आषाढ शुक्ल प्रवर श्रीविनयहेमगणिना पादुके प्रतिष्ठा श्रीस्यात् । भ० श्री जिनचंद्रसूरि शाखायां ।

(२०६३)

सं० १६४३ रा मि० फा० सु० प्र० ३ दिने पं० प्र० हितधीरजिद्मुनीनां पादुका पं० उदयपद्ममुनिनां स्थापितं श्रीरस्तु ।

(२०६४)

सं० १६५३ रा मिती ज्येष्ट वदि ५ तिथौ शनिवारे श्री जिनभद्रसूरि शाखाया पं० प्र० कपूरचंद्रजी मुनिनां पादुका स्थापितं ।

(२०६५)

सं० १८५६ वर्षे मिती श्रावण सुदि शुक्रवार श्री वृ० खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिशाखायां उ० श्री गुणसुंदरजीगणि तद्शिष्य वा० श्रीकमलसागर (?) गणिना पादुका

(२०६६) 289

श्रीमत्खरतराचार्यगच्छीय जैनाचार्य श्रीजिनसिद्धसूरीश्वरजी महाराज की चरणपादुका बीकानेर निवासी गोलछा कचराणी गोत्रीय श्रे० बीजराजजी फतैचंदजी सालमचंदजी पेमराजजी नेमीचंदजी जयचंदजी की तरफ से बनवाई विक्रम संवत २००० फा० सु० १ पं० प्र० यति श्री नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं ।

(२११०)

संवत् १७८४ वर्षे मि० वैशाख वदि १३ दिने महोपाध्याय श्रीधरमवर्द्धन जी री छतरी करापिता शिष्य प० साम

दादाजी से बाहर के लेख

(२१११)

सं० चैत्र वद २ दिने भट्टारक श्री जिनसागरसूरि पादुके कारापिते नारायण गणि ॥

(२११२)

सं० १७३२ वर्षे श्रीकल्याणविजय उपाध्याय पादुकेन

(२११३)

स० १६२५ रा मिती शाके १७-० मासोत्तममासे माघमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चन्द्रवासरे पं० मतिमंदिरकस्य शिष्य प० बुद्धिचंद्रेण पादुका कारापिता भ० श्रीजिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठित।

(२११४)

बिना पादुका के स्तूप पर

सं० १८६० शाके १७२५ माघ सुदि १२ चंद्रे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां प्रतिष्ठितं च भ० श्रीजिनहर्षसूरिभिः

(२११५

सं० १६०६ मि० आषाढ वदि ८ गुरुवासरे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० श्रीडूंगरराज मुनीनां पादुका पं० लक्ष्मीमंदिरेण प्रतिष्ठा कारितं ।

(२११६)

सं० १६३३ रा शा० १७६८ प्र० मि आषाढ सु० ५ दिने महो० श्रीधीरधर्मगणिभिःपिन्यासा

(२११७)

संवत् १६३८ रा वष मिती कार्त्तिक सुदि ११ दिने पं० प्र० श्रीहितकमलमुनि

(२०८७)

सं० १६२३ वर्षे मि० व० १३ दिने वृ० ख० गच्छे श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० दानशेखर मुनि पादुका प्रतिष्ठितं श्रेयार्थं। श्री।

(२०८८)

सं० १७६७ वर्षे आषाढ सुदि ८ दिने उपा० श्रीहर्षनिधान जिद्गणिवराणा पादुके स्थापिते वा० हर्षसागरेण।

(२०८६)

सं० १८६२ का० सु० ५ वा० श्रीकुशलकल्याणगणिना पादन्यास कारित प्रतिष्ठापितश्च।

(२०६०)

सं० १६१४ रा मि० जे० सु० ५ दिने पं० प्र० लक्ष्मीधर्ममुनिनां पादुका स्थापितमस्ति।

(२०६१)

सं० १६१४ रा मि० जे० सु० ५ दिने पं० प्र० प्रीतिकमलमुनिनांपादुका स्थापितमस्ति।

(२०६२)

सं० १८४६ वर्षे आषाढ शुक्ल प्रवर श्रीविनयहेमगणिना पादुके प्रतिष्ठा श्रीस्यात्। भ० श्री जिनचंद्रसूरि शाखायां।

(२०६३)

सं० १६४३ रा मि० फा० सु० प्र० ३ दिने पं० प्र० हितधीरजिद्मुनीनां पादुका पं० उदयपद्ममुनिनां स्थापितं श्रीरस्तु।

(२०६४)

सं० १६५३ रा मिती ज्येष्ट वदि ५ तिथौ शनिवारे श्री जिनभद्रसूरि शाखाया पं० प्र० कपूरचंद्रजी मुनिनां पादुका स्थापितं।

(२०६५)

सं० १८५६ वर्षे मिती श्रावण सुदि शुक्रवार श्री वृ० खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिशाखायां उ० श्री गुणसुदरजीगणि तत्शिष्य वा० श्रीकमलसागर (? गणिनां पादुका

(२०६६) 289

श्रीमत्खरतराचार्यगच्छीय जैनाचार्य श्रीजिनसिद्धसूरीश्वरजी महाराज की चरणपादुका बीकानेर निवासी गोलछा कचराणी गोत्रीय श्रे० बीजराजजी फतैचंदजी सालमचंदजी पेमराजजी नेमीचंदजी जयचंदजी की तरफ से बनवाई विक्रम संवत २००० फा० सु० १ पं० प्र० यति श्री नेमिचंद्रेण प्रतिष्ठितं।

(२११०)

संवत् १७८४ वर्षे मि० वैशाख वदि १३ दिने महोपाध्याय श्रीधरमवर्द्धन जी री छतरी करापिता शिष्य प० साम

दादाजी से बाहर के लेख

(२१११)

सं० चैत्र वद २ दिने भट्टारक श्री जिनसागरसूरि पादुके कारापिते नारायण गणि ॥

(२११२)

सं० १७३२ वर्षे श्रीकल्याणविजय उपाध्याय पादुकेम

(२११३)

स० १८२५ रा मिती शाके १७०० मासोत्तममासे माघमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चन्द्रवासरे उ० मतिमंदिरकस्य शिष्य प० वृद्धिचन्द्रेण पादुका कारापिता भ० श्रीजिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठित।

(२११४)

बिना पादुका के स्तूप पर

स० १८६० शाके १७२५ माघ सुदि १२ चन्द्रे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां प्रतिष्ठिते च भ० श्रीजिनहर्षसूरिभिः

(२११५

स० १६०६ मि० आषाढ वदि ८ गुरुवासरे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० श्रीउदयरत्न मुनीनां पादुका पं० अक्षमामंदिरेण प्रतिष्ठा कारितं ।

(२११६)

सं० १६३३ रा शा० १७६८ प्र० मि० आषाढ सु० ५ दिने महो० श्रीधीरधर्मगणिभिर्विन्यास

(२११७)

संवत् १६३८ रा वष मिती कार्त्तिक सुदि ११ दिने पं० प्र० श्रीहितकमलमुनि

(२१०३)

सं० १८६१ वर्ष चैत्र वदि ६ गुरौ श्री विक्रमपुरे पं० प्र० श्री १०६ श्रीसत्य (राज ?) श्री गणिनां पृष्ठे पं० भावविजे पं० ज्ञाननिधानमुनिना पादुका ।

शाला नं० २ के लेख

(२१०४)

सं० १८५८ वर्षे पो: बुदि पंचमी भ। श्री १०८ श्रीजिनहर्षसूरिजी राज्ये श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां वाचक श्री १०८ श्री जिनजय जी गणि शिष्योपाध्याय श्री १०६ श्रीक्षमामाणिक्य-जिद्गणिना पृष्ठे पुण्यार्थेयं शाला वाचक विद्याहेमेन कारिता श्रीबृहत्खरतरगच्छे।

(२१०५)

सं० १८५८ रा तिथौ श्री श्रीजिनहर्षसूरि शिष्य वा० विद्याहेम गणिना कारापिता।

(२१०६)

सं० १८७१ वर्षे शाके १७३६ प्रवर्त्तमाने वैशाख सुदि ८ दिने श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि श्री विद्याहेमजिद्गणिनां पादुका कारिता प्रतिष्ठितं च श्रीमयाप्रमोदगणि पं० उदयरत्नगणि श्री बीकानेर नगरे।

(२१०७)

सं० १८७८ मिती मिगसर सुदि २ तिथौ श्रीजिनकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां वा० मयाप्रमोद-जीगणि पादुका प्रतिष्ठिता।

(२१०८)

सं० १६०६ मि० आषाढ वदी ८ वासरे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० श्रीलब्धिविलासमुनीना पादुका पं० दानशेखरेण प्रतिष्ठा कारिता

कुण्ड के पास छतरी के स्तम्भों पर

(२१०६)

सं० १७८४ वर्षे वैशाख वदि १३ दिने महोपाध्याय श्रीधरमसी जी री छतरी प० शान्तिसोमेन कारापिता छत्री छ थंभी सदा २७ लागा पाखाण इलाख श्रीकु सिरपाव दीना विजणाने।

प्रवर्तनी श्रीस्वर्णश्रीजी के स्तूप पर

(२१२८)

सं० १९९० पौष कृ० ८ रविवार दिने बृहत्खरतरगच्छे पूज्य श्रीसुखसागरजी म० के गुणानुयायिनी प्रवर्तिनी जी सा० श्रीपुण्यश्रीजी म० की पट्टधारिणी प्र० श्रीसुवर्णश्रीजी महाराजके चरण बीकानेर मध्ये श्रीसंघेन कारापितम्। जन्म वि० सं० १९२७ ज्येष्ठ कृ० ११ अहमदनगर। दीक्षा सं० १९४१ मिगसर सु० ५ नागौर, स्वर्ग सं० १९८९ माघ कृ० १ शुक्रवार दिने

(२१२९)
फर्श पर

यह मार्बल फर्श श्री बीकानेर निवासी कुशालचन्दजी गोलछा के नाम स्मरणार्थ इनके सुपुत्र मगनमलजी अमोलकचंदजी धमेन्दजी गोलछे ने सं० १९९०।

(२१३०)
श्रीजिनसौभाग्यसूरि छत्री [सं० १९१८ की, सेत्रावा २०१७] पर

बंगली सुभावक दुगड़ सा० कोठारी श्री सुजाणमलजी तत्पुत्र चांदमलजी हजारीमलजी मोतीलालजी ॥ केसरीचंदजी कारापितं ॥ शुभंभवतु ॥

साध्वियों की चरणपादुकाओं के लेख

(२११८)

साध्वीजी श्री श्री १००८ मुन श्रीजी महाराज

२११६

सं० १६३३ रा मि० आषा। सुदि ७ संवेगी लक्ष्मी श्री पृष्टे शि० नवलश्रीचरणस्थापना का०

(२१२०)

सं० १६५१ शाके १८१६ मिते माघ शुक्ल पचम्यां गुरुवारे आर्या नवलश्रीणांचरणन्यास. प्रशिष्यणी आर्या यतनश्री प्रतिष्ठापित श्रीरस्तुः

(२१२१)

सं० १६४८ रा मिती माघ शुक्ल ५ बुधवासरे आर्या श्रीरतनश्री कस्यचरण पादुका कारापित आर्याजतनश्रीया शुभं।

(२१२२)

श्रीमती गुरुणीजी महाराज विवेकश्रीजी महाराज सं० १-७४ श्रावण वद

(२१२३)

सं० १६८१ मिती फाल्गुन कृष्णपक्ष तिथौ ११ वार गुरुवार दिने साध्वी श्री जतनश्रीजी का पादुका कारिता समस्त श्रीसंघेन बीकानेर श्रीरस्तु शुभं सं० १६७५ साल सतोतरका वार सोमवार (?)

(२१२४)

स० १६८१ मिती फाल्गुनमासे कृ० पक्षे तिथौ वार दिने साध्वीजी श्रीजयवंत श्रीजी का पादुका सा० श्रीमदनचंदजी किशनचंदजी भुगडी कारापिता श्री

(२१२५)

ॐ श्रीमती साध्वीजी उमेदश्रीजी के स्वर्गवास सं० १६८८ का वैशाख वदि ७ वार बृहस्पति को हुआ उसकी चरणपादुका—

(२१२६)

सं० १६७० रा मिती माह कृ० ३ वार विरपतवार साध्वीप्रमश्री जी महाराज रा चरण पधराया छै।

(२१२७)

सं० १६७५ वै० सु० १ गीवायां चमणजी अभुजी कस्तुराजी रामी इद पादुका ३ अंदर रामी माहर शुभं।

(२१३९)

॥ श्री गणेशाय नम ॥ अथ शुभसंवत्सरे श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् १७६१ वर्षे सावण सुदि १ सोमवारे मघा नक्षत्रे अत्र दिने ... सकल समस्त रात्रि प्रथम प्रहर समये श्री मकुपकेश गच्छे वाणारस श्री श्री आर्य्यंतकल्याणजी तच्छिष्य पं०। श्री श्री अमीपालजी तच्छिष्य पं० श्री खेतसीजी देवयशादिवंगत ॥ श्री शुभं भवतु । वस्ता हेसाकेन कृत ॥

(२१४०)

॥ श्रीगुरवे नमः ॥ संवत् १७८३ आसोज सुदि ११ तिथौ भट्टारक श्री १०८ श्रीसिद्धसूरिजी दिवगतः ॥

(२१४१)

स० १८०७ वर्षे शा० १६७२ प्र। आषाढ शुक्ला १५ तिथौ रविवासरे श्रीमकुपकेशगच्छे पूज्य भट्टारक श्री १०८ कक्कसूरय दिवंगता।

(२१४२)

श्री गणेशाय नम। संवद्वाणान्तरेभेन्दु प्रमिते १८०५ वर्षे शाके १६७० प्रवर्त्तमाने पौषासित द्वितीय तृतीयां रविवार पूज्य भट्टारक श्रीसिद्धसूरिणामंतेवासी पंडित श्रीक्षमासुन्दरा दिवं गम्य

(२१४३)

— ॥ ६० ॥ श्री गुरुभ्यो नम ॥ संवन्नागाग्निकरिभू १८३८ वर्षे शाके रामान्तरिक्षौभिष गोत्र भाद्रपदे नेमे नोखे कुजू दिग्यामकवारे। पं० प्र० श्रीक्षमासुंदराणां शिष्य श्रीवाचनाचार्य वयसुंदरा स्व० जमगु ? (जम्मु)

(२१४४)

॥ सं० १८४६ वष शा १७११ प्रवर्त्त० चैत्र मासे कृष्णपक्षे तृतीया तिथौ बुधवारे श्रीमकुपकेश गच्छे पूज्य भट्टारक श्री १०८ श्रीदेवगुप्तसूरयः दिवंगता

(२१४५)

॥ स० १८६० वष शाके १७२५ प्र ॥ मासोत्तममासे चैत्रमास कृष्णपक्षे ८म्यां तिथौ रविवारे मकुपकेशगच्छे पं। प्र श्रीवसतसुंदरजी दिवगता ॥

(२१४६)

॥ सं० १८९० वर्षे शा० १७५५ प्र ॥ माघमासे शुक्लपक्षे द्वितीय पञ्चम्यां तिथौ शनिवारे श्रीमदोपकेशगच्छ पूज्य भु० भ० श्री १०८ श्रीसिद्धसूरय दिवगता ॥

साध्वियों की चरणपादुकाओं के लेख

(२११८)

साध्वीजी श्री श्री १००८ मुन श्रीजी महाराज

२११६

सं० १६३३ रा मि० आषा। सुदि ७ संवेगी लक्ष्मी श्री पृष्टे शि० नवलश्रीचरणस्थापना का०

(२१२०)

सं० १६५१ शाके १८१६ मिते माघ शुक्ल पंचम्या गुरुवारे आर्या नवलश्रीणाचरणन्यास प्रशिष्यणी आर्या यतनश्री प्रतिष्ठापित श्रीरस्तु

(२१२१)

सं० १६४८ रा मिती माघ शुक्ल ५ बुधवासरे आर्या श्रीरतनश्री कस्यचरण पादुका कारापित आर्याजतनश्रीया शुभं।

(२१२२)

श्रीमती गुरुणीजी महाराज विवेकश्रीजी महाराज सं० १. ७४ श्रावण वद

(२१२३)

सं० १६८१ मिती फाल्गुन कृष्णपक्ष तिथौ ११ वार गुरुवार दिने साध्वी श्री जतनश्रीजी का पादुका कारिता समस्त श्रीसंघेन बीकानेर श्रीरस्तु शुभं सं० १६७५ साल सतोतरका वार सोमवार (?)

(२१२४)

सं० १६८१ मिती फाल्गुनमासे कृ० पक्षे तिथौ वार दिने साध्वीजी श्रीजयवंत श्रीजी का पादुका सा० श्रीमदनचंदजी किशनचंदजी भुगडी कारापिता श्री

(२१२५)

ॐ श्रीमती साध्वीजी उमेदश्रीजी के स्वर्गवास सं० १६८८ का वैशाख वदि ७ वार बृहस्पति को हुआ उसकी चरणपादुका—

(२१२६)

सं० १६७० रा मिती माह कृ० ३ वार बिस्पतवार साध्वीप्रमश्री जी महाराज रा चरण पधराया छै।

(२१२७)

सं० १६७५ वै० सु० १ गीवायां चमणजी अभुजी कस्तुराजी रामी इद पादुका ३ अंदर रामी बाहर शुभं।

श्री गंगा गोल्डन जुबिली म्युजियम (बीकानेर)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२१५२)

श्री महावीर स्वामी

( ) + ॥ सं० १५०१ अक्षयतृतीयां भ श्रीमुनीश्वरसूरि पुण्याय का० देवभद्रगणेन ॥ शुभंभवतु ॥

( ) १ ॥६०॥ संवत् १५०१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तृतीयायां श्रीभद्रनगरे श्रीवृद्ध गच्छे देवाचार्य संताने श्रीजिनरत्नसूरि श्री मुनिशेखरसूरि श्री तिलकसूरि श्री भद्रेश्वरसूरि तत्पट्टो—

२ दयरोजविनमणि। वादीन्द्रचक्रचूडामणि शिष्य जन चिन्तामणि भ० श्री मुनीश्वरसूरि पुण्यार्थं वा। देवभद्रगणि श्री महावीर बिंब कारित। भ० श्रीरत्नप्रभसूरि प

३ ट्टे श्री महेन्द्रसूरिभि चिरनन्दात् शुभम्

(२१५३)

श्री संभवनाथ जी

( ) वा० देवभद्रगणिना बिंबं कारित ॥

( ) १ ॥६०॥ स्वस्ति श्री संवत् १५०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ तृतीयायां वृहद्गच्छे श्रीदेवाचार्य संताने श्री मुनीश्वरसूरिवादीन्द्रचक्र चूडामणि राजाश्लोक कला

२ प्रकाश नभोमणि पर शिष्य वाचनाचार्य देवभद्रगणिवरेण श्री संभवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरत्नप्रभसूरिपट्टे श्री महेन्द्रसूरिभि शुभं भवतु ॥

(२१५४)

श्री अजितनाथ जी

१ संवत् १५०१ वर्षे वैशाख शुक्ल २ सोमे

२ रोहिणी नक्षत्रे भवडु गोत्रे। सं० गे-

३ हा संताने सा० सखा पुत्र सा० केल्हा

४ ण भार्या श्राविका हेमी नाम्न्या स्वप

५ ति पुण्याय श्री अजितनाथ बिंब कारि

६ तं प्रतिष्ठितं श्री वृहद्गच्छे श्री देवाचार्य सं-

७ ताने। श्रीरत्नप्रभसूरिपट्टे महेन्द्रसूरिभिः।

+ १ सफाचाके लेख प्रतिमा के सामने व (13 वाले पीछे खुदे हैं।

श्री उपकेश (कंवला) गच्छ की बगीची

जस्सूसर दरवाजा

(२१३१)

॥ संवत् १५६६ वर्षे चैत्र सुदि १ श्रीऊकेश गच्छे ग० श्रीदेवसागर दिवंगत·

(२१३२)

॥ संवत् १६३६ वर्ष वैशाख सुदि १५ दिने श्रीउपकेश गच्छे वा। श्रीसोम (?) कलश शिष्य वाणारस श्री वस्ता दिवंगतः। शुभंभूयात्। कल्याणमस्तु ॥

(२१३३)

संवत् १६६३ वर्षे प्रथम चैत्र सुदि ८ दिने शुक्रवारे श्री उपकेश गच्छे वा। श्रीविनयसमुद्र शिष्य अचलसमुद्र दिवंगतः शुभंभवतु कल्याणमस्तु.

(२१३४)

॥ संवत् १६६३ वर्षे माह वदि ६ दिने सोमवारे श्रीउपकेशगच्छे वा। श्रीवस्ता शिष्य ग० श्री तिहुणा दिवंगतः श्री ॥ शुभं भवतु· ॥

(२१३५)

॥ संवत् १६६४ वर्ष वैशाख सुदि ११ दिने सोमवारे श्री उपकेशगच्छे ग० श्री तिहुणा शिष्य ग० श्री राणा दिवंगतः शुभं भवतुः ॥

(२१३६)

॥ संवत १६८६ वर्षे शाके १५५४ प्रवर्त्तमाने भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ्यां तिथौ गुरुवारे श्रीउपकेशगच्छे रत्नकलश भट्टारक श्रीदेवगुप्तसूरि तत्पट्टे भट्टारक श्रीसिद्धसूरि दिवंगत.। श्रीरस्तुः।

(२१३७)

सं० ५ वर्षे। चैत्रमासे शुक्लपक्षे त्रयोदशम्यां तिथौ सोमवारे। श्रीविक्रमनगरे। उपकेशगच्छे। वा० श्री श्रीदयाकलशजी। शि० वा० श्रीआणंदकलश

(२१३८)

श्री गणेशाय नम ॥ संवत् १७४० वर्षे चैत्र बदि ८ तिथौ बुधे। वा० श्री भावमज्जजी शिष्य वा० श्रीबीकाजी शिष्य वाणारस श्री ६ देवकलशजी देवगति प्रातिः ॥ शुभंभवतु ॥१॥ श्री श्री

श्री गंगा गोल्डन जुबिली म्युजियम (बीकानेर)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२१५२)

श्री महावीर स्वामी

( ) + ॥ सं० १५०१ अक्षयतृतीयां भ श्रीमुनीश्वरसूरि पुण्याय का० देवभद्रगण्येन ॥ शुभंभवतु ॥

( ) १ ॥६०॥ संवत् १५०१ वर्षे वैशाख सुदि अक्षय तृतीयायां श्रीमद्नगरे श्रीवृद्ध गच्छे देवाचार्य संताने श्रीजिनचन्द्रसूरि श्री मुनिशेखरसूरि श्री तिलकसूरि श्री भद्रेश्वरसूरि तत्पट्टो—

२ दयशैलदिनमणि। वादीन्द्रचक्रचूडामणि शिष्य जन चिन्तामणि भ० श्री मुनीश्वरसूरि पुण्यार्थं वा। देवभद्रगणि श्री महावीर बिंब कारितं। प्र० श्रीरत्नप्रभसूरि प

३ ट्टे श्री महेन्द्रसूरिभि: चिर नंदात् शुभम्

(२१५३)

श्री संभवनाथ जी

( ) वा० देवभद्रगणिना बिंबं कारित ॥

( ) १ ॥६०॥ स्वस्ति श्री संवत् १५०१ वर्षे वैशाख सुदि ३ तृतीयायां वृहद्गच्छे श्रीदेवाचार्य संताने श्री मुनीश्वरसूरिवादीन्द्रचक्र चूडामणि राजाधिराज कृता

२ प्रकाश नभोमणि वर शिष्य वाचनाचार्य देवभद्रगणिवरेण श्री संभवनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं ॥ श्रीरत्नप्रभसूरिपट्टे श्री महेन्द्रसूरिभि: शुभं भवतु ॥

(२१५४) २९६

श्री अजितनाथ जी

१ संवत् १५०१ वर्षे वैशाख शुक्ल २ सोमे

२ रोहिणी नक्षत्रे लक्षद्द गोत्रे। सं० गे-

३ हा सताने सा० सधा पुत्र सा० केल्हा

४ ण भार्या श्राविका हेमी नाम्न्या स्वप

५ ति पुण्याय श्री अजितनाथ बिंब कारि

६ तं प्रतिष्ठितं श्री वृहद्गच्छे श्री देवाचार्य स-

७ ताने। श्रीरत्नप्रभसूरिपट्टे महेन्द्रसूरिभि:।

\+ १ संख्याबाले लेख प्रतिमा के सामने व (B वाले पीछे खुदे हैं।

(२१४७)

श्रीउपकेशगच्छे युगप्रधानभट्टारक श्रीकक्कसूरयस्तच्छिष्य भट्टारक श्रीसिद्धसूरयस्तदन्तेवासिनः श्रीक्षमासुन्दर पाठकास्तच्छिष्या श्रीजयसुंदरास्तच्छिष्य महोपाध्याय श्रीमतिसुंदराणा चरणद्वंद्व प्रतिष्ठापितम् ॥ श्री ॥

(२१४८)

स्तूप प्रशस्ति

श्रीसत्यिका ॥

चन्द्राङ्क धृति मानेब्दे (१८६१) मार्गमासि सिते दले। एकादश्या गुरौवारे नगरे विक्रमाह्वये । १ । श्रीपार्श्वनाथजिनचंद्रपरंपराया श्रीरत्नकाति गुरुरित्यभवत्पृथिव्या । ऊकेशनाम्नि नगरे किलतेत तेने धर्मोपदेशकरणादुपकेश वंश । २ । तस्यान्वये कतिपया शुसखावभूयुर्लोके-सुरासुरनरैरुपराव्यमानाः । तेवश्रिया प्रवरजंगमकल्पवृक्ष श्रीदेवगुप्त इति सूरिवरोवभूव । ३ । तत्पट्टपूर्वे धरणीधरमास्थितोभूत् श्रीकक्कसूरि रथसूरिगुणोपपन्न. । तस्याभवन्निखिल सिद्धिधरो विनेय श्रीसिद्धसूरि रिह तत्पदसत्प्रतिष्ठ । ४ । शिष्यस्तस्य बभूव पाठकवरो नाम्ना क्षमासुन्दरः जाड्य क्षत्र विदारणैक तरणिर्नृणापदार्चाशुपाम् । ख्यात श्याम सरस्वतीत्यमिहश्रीमान्धरित्री तले । तच्छिष्यो जयसुदरोयतिगुणैर्विख्यातनामाऽभवत् । ५ । तच्छिष्यामतिसुदरा मतिप्रभा मान्यो महापाठका । ऊकेशाह्वयगच्छनायक कृपाप्राप्तप्रभावोदया. । विद्यासिद्धिसमुज्ज्वलैर्गुणगणै

(२१४६)

॥ सं० । १९१५ वर्षे शाके १७८० प्रवर्त्तमाने शुक्लपक्षे ५ म्या तिथौ सोमवारे मदुपकेश गच्छे पं० प्र० । श्री आणंदसुदरजी दिवगताः ।

(२१५०)

मासोत्तममासे कृष्णपक्षे २ तिथौ गुरुवारे मदुपकेशगच्छे पं० । प्र श्री १०५

(२१५१)

संवत् १९१८ वर्षे शाके १७८३ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ मा वदि १० म्यौ तिथौ सोमवासरे पं । प्र । श्री १०५ श्री उपाध्यायजी श्री आणंदसुदरजी तच्छिष्य प० खूबसुदरेण •गुरुभक्त्यर्थं अस्य शाला कारापिता ॥ शुभं भवतु ॥

(२११०)

श्री संभवनाथ जी

संवत् १६७७ व० अक्षय ३ दि० सा० वाच्छादेनाम्न्या पु० लक्ष्मणसुतया श्रीसंभवनाथ बिंबं का० प्र० व । भ । श्री विजयदेवसूरिभि

(२१११) ३00

१ ।। सं० १६६४ वष फाल्गु वदि ६ दिने श्रीऊकेश वंशे वैद गोत्रे मं० सहसमल पुत्र
२ सहजा भ्रेयोर्थं कारित शीयकेन श्रीसुविधिनाथ बिंब कारितं प्र० श्रीसिद्धसूरिभिः

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२११२)

श्री आदिनाथ जी

सं० १४२२ वैशाख सुदि ६ श्री आदिनाथ बिंबं सा० गयधरपुत्रेण सा० प्रथमसीहेन स्वभुवर्कैन स्वपुण्यार्थं कारित प्रतिष्ठित श्रीजिनोदयसूरिभिः ।

(२११३)

श्री चन्द्रप्रभादि पंचतीर्थी

वदि १ दिने ऊकेश वंशे सा० हेमाकेन पुत्र हमाभिधानादिपरिवारयुतेन श्रीचन्द्र प्रभस्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभि ।।

(२११४)

नवपद यंत्र बिंब पर

१००० बिंब स्तवत् १६३३ माघ सु १० का। राजा धनपतसिंह बाहुरेण प्र० सर्वसूरि बंगदेशे ।
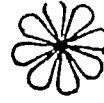
(२१५५) २९१

श्री महावीर स्वामी

१ सवत् १५२१ वर्षे मार्ग० वदि १२ दिने ऊ० बुथडा गोत्रे सा० तोला पुत्र
२ स्वपुण्यार्थं श्रीमहावीर बिंबं कारितं प्र । श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ।

(२१५६)

१ संवत् १५२४ वर्षे . . म दे पु
२ . सराज . . . . शिष्य श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(२१५७) नाहटा २९१ बीकानेर

श्री आदिनाथ जी

१ ।। संवत् १५०० वर्षे मार्गशिर वदि
२ २ शनौ ओसवाल ज्ञातीय श्री नाह-
३ र गोत्रे सा० मोहिल सुत सं० नयणा
४ तद्भार्या सं० फुता नाम्न्या स्वभर्त्तु. पु-
५ ण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्र-
६ तिष्ठितं श्री रत्नप्रभसूरिपट्टे ।।
७ श्री महेन्द्रसूरिभिः श्रेयसे भवतु ।।
८ श्री बृहद्गच्छे ।। श्री ।।

(२१५८) २९१

१ सवत् १५७३ वर्षे आषाढ सु० ६ दिने । उसिवालन्यातीय चौंपट गोत्रे । सा० देवराज पु० दशरथ
२ कवच ? ऊदपिता कारापिता पुण्याथ श्री मिनाथ बिंब कारापित प्रति० श्रीधर्म्म-गोखगच्छे भ० श्री सूरिभि । सह ।। श्री ।।

(२१५९)

संवत् १५४८ भट्टारक देव शाहाजी राज सकसद

ऊ दा स र

श्री सुपार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२१७०)

मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथ जी

संवत् १६११ वर्षे। शाके १७६१ मि० मासोत्तममासे माघमासे कृष्णेतरपक्षे एकादश्यां तिथौ सोमवासरे। श्रीसुपार्श्वनाथजिनबिंब प्रतिष्ठितं। श्रीमद्बृहत्खरतरगच्छे। जं। यु। भट्टारक श्रीजिनहंससूरिभिः श्रीबीकानेरवास्तव्य समस्त श्रीसंघेन कारितं ॥ श्रेयोर्थम् शुभंभवतु ॥ श्रीरस्तु ॥

(२१७१)

दाहिनी ओर श्री धर्मनाथजी

श्रीधर्मनाथ जिन बिंबं। प्रतिष्ठितं बृहत्खरतरगच्छेश जं। यु। प्र। भ श्रीजिनहर्षसूरि पट्टालंकार। ज। यु। प्र। भ श्री जिन… … … …

(२१७२)

बायें तरफ श्री पार्श्वनाथजी

सं० १६११ व। मि। वैसाख सुदि ५ तिथौ। श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं प्र। श्रीजिनहंस सूरिभिः श्रीसंघेन कारितं। बीकानेर…

(२१७३)

दक्षिण क आले में श्री पार्श्वनाथजी

सं० १९२० शा १७७७ (?) प्र। मा। मिगसरमासे कृष्णपक्षे तिथौ ५ गुरुवारे। श्रीपार्श्वप्रभु बिंब प्रतिष्ठित श्रीखरतराचार्यगच्छे जं। यु। प्र। भट्टारक श्रीजिनक्षेमसूरिभिः।

(२१७४)

पादुका पर

श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि

पादुकी प्रवर्तीनी पर

(२१७५)

श्री अनन्तनाथजी

सं० १५२८ वैशाख वदि ५ दिने ऊकेश वंशे काकरिया गोत्रे सा० पूना भा० होली भाविकया। छापा पापा पदमा धमन्या करमा देवराज आशा प्रमुख पौत्रादि परिवारयुतया स्वपुण्यार्थं श्री अनंतनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिन चंद्रसूरिभिः ॥

शिवबाड़ी

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२१६५)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १९३१ व । वै० सु ११ ति । श्रीपार्श्वजिनबिंबं प्र० वृहत्खरतरगच्छे । भ । श्रीजिनहंस-सूरिभिः ·· ल गृहे भार्या चुन्नी का ।

(२१६६)

श्री कुन्थुनाथ जी

सं० १९३१ व । वै० सु । ११ ति । श्रीकुंथुजिन बि । प्र । भ । श्री जिनहंससूरिभिः भैरूदान

(२१६७)

श्री धर्मनाथ जी

सं० १९३१ वर्षे मि । वै । सु । ११ ति । श्रीधर्मजिन बि । प्र । वृ । ख । ग । भ । श्रीजिन हंससूरिभिः । को । ल

(२१६८) 301

दादाजी के चरणों पर

श्री सीवाडीरे मंदिरजी सं० १९३८ साल में हुयो जिण में श्री दादाजी रा पगलिया चक्रेश्वरीजी संसकरणजी सावणसुखा रै अठै सुं पधराया

धातु पञ्चतीर्थी का लेख

(२१६९)

संवत् १५०८ वर्षे वै० सु० ३ प्रा० ज्ञातीय मं० गुणपाल भार्या भरमा पुत्र फीकाकेन भार्या कील्हणदे सुत सिवा देवादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्रीमुनिसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ।

भीनासर

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेखाः

(२१८३)

॥ सं० ११८१ माघ सु० ५ गुरौ प्राग्वाट ज्ञातीय स० दीपचंद भार्या दीपादे पुत्र सा० अबीरचंद अमीचंद श्रीसहस्रफणा पार्श्वनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठितं खरतर गणाधीस्वर श्री जिनदत्तसूरिभि ।

(२१८४)

सं० १६११ मि। वै। सु। ७ श्रीमुनिसुव्रत बिंबं मार्ग।

(२१८५)

सं० १६११ मि। वै। सु। ७ अजित जिन बिंबं

(२१८६)

॥ संवत् १६१४ रा। वर्षे। मि। आसाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्रीमहावीर जिन बिंबं प्रतिष्ठितं। भ० श्री जिन

(२१८७)

स० १६११ मि। वै। सु। ७ श्री शांतिनाथ बिंब भ। श्री जिन

(२१८८)

॥ संवत् १६१४ रा वर्षे मिति आसाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्री मुनिसुव्रत जिन बिंबं प्रति०

(२१८६)

सं० १६११ मि। वै। सु। ७ श्रीविमल जिन बिंबं भ

(२१९०

सं० १६११ मि। वै। सु। ७ श्री मल्लि जिन बिंबं भ।

(२१९१)

सं० १६११ मि। वै। सु। ७ श्रीनेमि जिन बिंबं भ।

शिवबाड़ी

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२१६५)

श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १६३१ व। वै० सु ११ ति। श्रीपार्श्वजिनबिंबं प्र० वृहत्खरतरगच्छे। भ। श्रीजिनहंस-सूरिभि ल गृहे भार्या चुन्नी का।

(२१६६)

श्री कुन्थुनाथ जी

सं० १६३१ व। वै० सु। ११ वि। श्रीकुंथुजिन बिं। प्र। भ। श्री जिनहंससूरिभिः भैरूदान

(२१६७)

श्री धर्मनाथ जी

सं० १६३१ वर्षे मि। वै। सु। ११ ति। श्रीधर्मजिन बिं। प्र। वृ। ख। ग। भ। श्रीजिन हंससूरिभिः। को। ल

(२१६८) 301

दादाजी के चरणों पर

श्री सीबाड़ीरे मंदिरजी सं० १६३८ साल में होयो जिण मे श्री दादाजी रा पगलिया चक्रेश्वरीजी संसकरणजी सावणसुखा रै अठै सुं पधराया

धातु पञ्चतीर्थी का लेख

(२१६९)

संवत् १५०८ वर्षे वै० सु० ३ प्रा० ज्ञातीय मं० गुणपाल भार्या भरमा पुत्र फीकाकेन भार्या कील्हणदे सुत सिवा देवादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छेश श्रीमुनिसुंदरसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभि।

उ द रा म स र

श्री दादाजी का मन्दिर

(२१९९)

शिलालेख

सं० १८९३ मिते। प्र। आषाढ़ सुदि १० तिथौ महाराजाधिराज श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये। दा। श्री जिनदत्तसूरीश्वराणां स्तम्भोद्धार श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश जं। यु०। भ। भट्टारक श्री जिनहर्षसूरीश्वराणामुपदेशात् श्री जेसलमेर वास्तव्य संघ मुख्य बा। महावरमलजी सवाईरामजी मगनीरामजी जोरावरमलजी प्रतापचन्दजी दानमलजी सपरिवारेण कारित जं। यु। प्र। भ। श्री जिनसौभाग्यसूरीश्वराणां विजयराज्ये श्रेयोभवतु ॥ श्री ॥

(२२००)

श्रीजिनदत्तसूरिजी के चरणों पर

संवत् १७२१ मिगसर सुदि तिथौ बुधवारे श्रीजिनदत्तसूरीणां पादुके (कारा ?) पितं श्री विक्रमपुर वास्तव्य समस्त श्री खरतर संघेन ॥

(२२०१)

पादुका की भमी पर

संवत् १९०७ मिते भाद्रवा सुदि १५ दिने भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरि विजयराज्ये जं। यु। श्रीजिनदत्तसूरीणां पादन्यास का। सुश्रावक खजानची चच्छराजजी श्रेयोर्थम् ॥

शालाओं के लेख

(२२०२)

जं० भ० श्री जिनलाभसूरि प्रपौत्रेण पं। सुखसागरेण स्याला कारिता सं। १८८६ वर्षे वैशाख सुदि ५

(२२०३)

सं० १८८६ मि। वै। सु ५ भा। सा। दानसिंह असूराइ कन स्याला कारिता।

(२२०४) [handwritten annotation]

सं० १८८६ मिती फा० सु० ५ सेठिया श्री कसरीचंदेन इयं शाला कारिता।

(२२०५)

जीर्णोद्धार पर

संवत् १८९३ मिते प्र। आषाढ़ सुदि १० तिथौ शुक्रवारे बाफणा गोत्रीय संघ मुख्य श्री महावरमलजी सपरिवारेण जीर्णोद्धार कारित।

गंगाशहर

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेखाः

(२१७६)

सं० १६०६ वर्षे माघ कृष्णा

(२१७७) ३०३

संवत् १९०५ मि। वैशाख सुदि १५ बाफणा हिन्दूमलजी सपरिवारेण श्रेयासनाथ बिंब कारिता प्रतिष्ठितंश्च

(२१७८)

सं० १९३१ व। मि। वै। सु। ११ ति। श्री

(२१७९)

दादा साहब के चरणों पर

श्री गंगाशहर के मन्दिरजी मे श्रीऋषभदेवजी महाराज की प्रतिमाजी व दादाजी रा पगलिया चक्रेश्वरीजी सेंसकरणजी सावणसुखा पधराया सं० १९७० जेठ वदि ८

धातु की पंचतीर्थी का लेख

(२१८०)

स० १५७८ वर्षे माघ वदि ८ रवौ डाभिलावासि प्राग्वा० ज्ञा० मं० सोमा भा० हीरू सुत मं० वच्छाकेन भा० वल्हादे सुत लहू आदि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभवनाथ बिंबं कारितं प्रति० तपागच्छे श्रीहेमविमलसूरिभि ।

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर (रामनिवास)

(२१८१)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १९०५ मि। वैशाख सुदि १५ श्रीसंघेन श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठापितं च श्री खरतर गणाधीश्वर जंगम युगप्रधान भट्टारक श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः।

(२१८२)

संभवनाथादि धातुपंचतीर्थी

सं० १५२४ वर्षे मार्ग व० ५ सोमे कोलर वा० प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० सादा भार्या सूहवदे सुत व्य० बीढाकेन भार्या वीरिणि पुत्र केल्हादि कुटुंबयुतेन स्वश्रेयसे श्रीसंभव बिंबं कारितं प्र० तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः

देशनोक

(१) श्री संभवनाथजी का मन्दिर (आंचलियों का बास)

पाषाण प्रतिमादि लेखा

(२२१२)

शिलापट्ट पर

॥ श्री सिद्धचक्राय नमः श्री करणीजी महाराज ॥ सं० १८।६१ मिती माघ सुदि पंचम्यां चन्द्रे श्री देशनोक श्रीसंघेन श्री पार्श्वनाथ देवगृह कारितं प्रतिष्ठापितम् महाराजाधिराज श्री सूरतसिंह जी विजयिराज्ये बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर। भट्टारक। श्री जिनचन्द्रसूरि पट्टालंकार भ० श्री जिनहर्षसूरि धर्मराज्ये प्रतिष्ठिता च उ० श्री क्षमाकल्याण गणिभिः वा० श्रीकुशलकल्याण गणिना सुपदेशात् चैत्यमिदं समजनि श्रीरस्तुस्सर्वेषां वा० श्रीआनन्दचन्द्रेन उद्यम कारक॥

(२२१३)

श्री संभवनाथजी

सं० १८६० मिते वैसाख सुदि ७ गुरौ बाफणा गोत्रीय। सा। गौड़ीदास तत्पुत्र परमानं दन श्री संभव जिन बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं च भ। श्री जिनहर्षसूरिभिः

(२२१४)

संवत् १५८२ वर्षे माह सुदि ५ श्री मूल संघ (?) भ० भ० च सूरि ओसवालान्वये भाबड़ा गोत्रे सा० छोडा रतना भार्याह र

(२२१५)

दादा साहब के चरणों पर

श्री जिनदत्तसूरि। श्री जिनकुशलसूरि॥

(२२१६)

चरणों पर

सं० १८६१ मिते माघ सुदि पंचम्यां चन्द्र
चरण न्यासः कारितं वा। कुशलकल्याण गणिना का।

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२१९२)

चौवीसी

स० १५०३ वर्षे माघ वदि ५ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० पद्मा भार्या पोमादे सुत व्य० वासहा के फत्ताकेन भार्या झबकू जइतू आसा सुत व्य० देवराज सहितेन मातृ पित्रौ श्रेयसे श्रीसुविधिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट का० श्रीपिप्पलगच्छे श्रीसोमचन्द्रसूरि पट्टे श्रीउदयदेवसूरिभिः प्रतिष्ठिता।

(२१९३) 305

स० १५७६ वर्षे श्री खरतर गच्छे बोहित्थरा गोत्र साह० जाणा भार्या सक्ता दे पुत्र सा० अमराकेन भार्या उछरंगदे सुत कीकादि युतेन श्री आदिनाथ विंबं कारित प्रतिष्ठितं श्रीजिनहंस-सूरिभि ॥ माह वदि ११ दिने ॥

(२१९४)

रौप्य नवपद यत्र

मु० सालमचदजी कोचर

श्री महावीर सेनीटोरियम (राष्ट्रीय सड़क—उदरामसर धोरों में)

श्री श्वेताम्बर जैन मन्दिर

(२१९५)

मूलनायकजी

९० सवत् ११ (१५) ४५ उ ॥ मोटदेदि ॥ (वदि ५) यम अवदादसा श्री भोगावे (?)

(२१९६)

धातु पचतीर्थी

स०॰ ॰ ॰व व १२ सोमे उ० भ० गोत्रे सा० सालिग भा० राजलदे पु० सा० जेसा श्रावकेण श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभि॰

(२१९७)

दादा साहब के चरणों पर

स० २००५ मि। जे। सु १० जं। यु० प्रधान भट्टारक गुरुदेव दत्तसूरि चर्ण पादुका भीखनचन्दजी गिडिया प्रतिष्ठा करापितं।

(२१९८)

चरणों पर

सं० २००५ मि। जे। सु १० खरतर गच्छाधिपति परमपूज्य गुरुदेव श्री सुखसागरजी मा० सा० के चर्णपादुका श्री भीखनचन्दजी गिडीया प्रतिष्ठा करापित।

(२२२३)

सं० १६७१ वै सु० ५ सोमे अमरसेनि प्रणमति ।

(२२२४)

सं० १६९७ व ॥ व ज्य शेन भावषेयी सु० सह० सी० मीखिकजी नाम्नी श्री पासुपूज्य विं० का० तपा—

(२२२५)

संवत् १७०६ म० पद्मकीर्त्तुपदेशात् अभिनंदन बिंब हरदास नित्य प्रणमति ।

(२२२६)

श्रीमूल संघे

सिद्धचक्रजी के यन्त्रों पर

(२२२७)

सं० १८५२ पौष सुदि ४ दिने बृहस्पतिवासरे । श्री सिद्धचक्र यन्त्र मिदं । प्रतिष्ठितं । सवाई जयनगर मध्ये । वा । अभयचन्द्र गणिना । बृहत्खरतर गच्छे । कारितं । बीकानेर वास्तव्य । सारंगाणी गोत्रे । बरड़ा । धरमसी । तत्पुत्र कपूरचन्द्रेण श्रेयोर्थं ।

(२२२८)

सं० १८६८ मिते वैशाख सुदि १२ दिने श्री बीकानेर वास्तव्य वैद मुहता सवाईरामेण श्री सिद्धचक्र यन्त्रं कारितं प्रतिष्ठितं च पाठक श्री क्षमाकल्याण गणिभि ॥ श्रेयोथ ॥

(२२२९)

संवत् १८७८ मिति काती सुदि ५ दिने श्री बीकानेर वास्तव्य वैद मुहता सवाईरामजी श्री सिद्धचक्र यन्त्र । कारितं प्रतिष्ठितं ॥ उ । श्री श्री क्षमाकल्याणजी गणिनां । माज्ञ । धर्मानन्द मुनि ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ छ ॥

(२) श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

(भूरों का आसणी वास)

(२२३०)

शिलालेख

भ । श्री जिनहर्षसूरिजिद्विजय राज्ये ॥ सं १८३१ मि । मा सु । ५ पं० अमयविलास मुन-सुमदशादेण शाखा श्रीसिंघेन कारिता ।

श्री कुन्थुनाथजी का मन्दिर

(२२०६)

दादाजी के चरणों पर

शुभ सवत् १९८८ का माघ सुदि १० ज्ञवारे जं० यु० प्र० भ० श्री जिनकुशलसूरि चरण-कमल कारित उदरामसर वास्तव्य वोह० हजारीमलादिभि प्रति। महो० श्री लक्ष्मीप्रधान गणि पौत्र शिष्य उ० जयेन्दुभि

(२२०७)

यक्ष बिब पर

सवत् १९८८ श्री गन्धर्व यक्ष मूर्ति माघ सुदि दशम्या।

(२२०८)

शासनदेवी की मूर्त्ति पर

सवत् १९८८ का श्री वलादेवी मूर्त्ति १७ माघ सुदि १०।

धातुप्रतिमादि लेखाः

(२२०९)

मूलनायक श्री कुन्थुनाथजी

स० १५५६ वर्षे वशाख सुदि ११ शुक्रे उ० ज्ञा० सा० काह्ना भा० कील्हू पु० गागा सागाकेन भा० बोघी पु० राजा हीरा तथा गागा भा० मोही पु० माडण सहितेन भ्रातृ गांगा निमित्त श्री कुन्थुनाथ बिंबं का० प्र० श्रीसूरिभि

(२२१०)

श्री कुन्थुनाथजी

संवत् १६८५ वर्षे आ० सहजबाई कारितं श्रीकुन्थुनाथ बिंब प्रतिष्ठित श्रीविजयाणद-सूरिभि।

(२२११) 307

धातु के यत्र पर

शुभ स० १९८४ का० चैत्र सुदि १५ वार रवि पूनमचन्द कोठारी भार्यया कारितं प्रतिष्ठित च उ० जयचन्द्र गणिभि

(२२३७)

सं० १५९३ वर्ष आषाढ सुदि ४ दिन गुरुवारे आदित्यनाग गोत्रे सा० पासा भा० पासळदे पुत्र सा० ऊदा भा० ऊमादे पु ३ सा० कर्मसी सा० रायमल सा० रूपदत्त। कमसी भा० कामलदे पु० सा० पहिराज। सा० आसा। कमसी आत्मपुण्यार्थ श्री श्री शीतलनाथ बिंबं कारापितं। श्री तपपक्ष गच्छे। भ०। श्रीसिद्धसूरिभिः प्रतिष्ठितं। श्री नागपुर।

(२२३८)

॥ ६० ॥ सं० १६३६ व। फा० सु० १० गुरौ सीरोही वास्तव्य प्राग्वंशीय वृ० रायमल भा रंगादे पु० वु० मना भा० मक्तदे दे पु० हांसा हीरा सरताणादि कुटुम्बेन श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं तपागच्छाधिराज श्री हीरविजयसूरिभिः।

(२२३९)

श्री मू——[ल सं] घ या सूरा—

(२२४०)

सिद्धचक्र यन्त्र पर

॥ संवत् १८५२ पोस सुदि ४ दिन वृहस्पतिवासर। श्री सिद्धचक्र यन्त्र मिदं। प्रतिष्ठितं। पं। लालचन्द्र गणिना। सवाई जयनगर मध्ये कारितं। बीकानेर वास्तव्य। कोठारी सरूपचन्द्रेण श्रेयोर्थ ॥

[२२४१]

दादा साहब के पाषाणमय पादुका पर

॥ संम्व। १८९१। मिति। आषाढ सु। पंचकर्मी श्रीजिनदत्तसूरि श्रीजिनकुशलसूरि पादु। श्री संघ। का। प्र। भ। जं। श्री जिनहर्षसूरिभिः।

[२२४२]

कल्याणपट्ट पर

॥ सं १८९० मिते आषाढ सुदि १३ वारे शनौ देशणोक बड़े वास वास्तव्य श्री संघेन। पं। आनन्दवल्लभ गणेरूपदेशादसौ पट्ट कारित श्री बृहत्खरतर गच्छे ॥

(३) श्री केशरियानाथजी का मन्दिर

(लौंका गच्छ उपाश्रय)

(२२४३)

॥ सं ॥ १६ ॥ ६ ॥ वर्षे माघ कृष्ण ५ रवौ साहु० पाता भार्या० उदसवाक सुत भी० वृद्धा ब आत्मज भ० वाम्की नाम्ना सु श्री रिषभदेव

धातु प्रतिमादि लेखाः

(२२१७)

श्री सुविधिनाथादि चौवीसी

सं० १५०८ वर्षे चैत्र वदि ८ बुधे प्राग्वाट जातीय व्यव० राजा भार्या राजलदे सुत भरमा-केन भार्या भ्रीमलदे कर्मा भार्याकेन कामलदे। पूर्वज निमित्त श्रीसु(वि)धिनाथ चतुर्विंशतिपट्ट कारित प्रतिष्ठित मड्डाहड़ीय गच्छे श्रीहीरानन्दसूरि पट्टे गुणसागरसूरिभि । श्रीकिरंवाडग्रामे ।

(२२१८)

श्री वासुपूज्यादि चौवीसी

॥ संवत् १५९ (?) वर्षे श्रीमाल वंशे नाचण गोत्र सा० मालदे भार्या सरसति तत्पुत्र सा० अभयराजेन स्वमातृ पुण्यार्थं मूलनायक श्री वासुपूज्योपेत चतुर्विंशति पट्ट का० प्र० श्रीजिनभद्र-सूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभि । खरतर गच्छे ॥

(२२१९)

स० १५१३ वर्षे वै० ब० २सोमे उसवाल म० सूरा भा० सपूरी सुत पर्वत अर्जुनभ्या भा० दूसी सुत गागा हर्षा हरदास वडआ गणपति प्रमुख कुटुम्ब युताभ्या गागा श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंब का० प्र० तपा श्रीसोमसुन्दरसूरि पट्टे श्रीमुनिसुन्दरसूरि तत्पट्टे श्रीरत्नशेखरसूरिभि वृद्धनगरे।

(२२२०)

श्री नमिनाथादि पचतीर्थी

स० १५३५ वर्षे मा० सु० ५ गु० डीसा० श्रे० जूठा भार्या अमकू सुत म० भोजाकेन भ्रा० बहूया स्वभार्या मचकू सुत नाथादि कुटुम्ब श्रेयसे श्री नमि० बिं० का० प्र० तपागच्छे श्री श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि भ्रा० पानाश्रेयसे।

(२२२१)

श्री ऋषभदेवजी आदि पचतीर्थी

॥६०॥स० १५६३ वर्षे माघ सुदि १५ दिने ऊकेश वंशे साहूशाखा गोत्रे सा० सारंग पुत्र सा० धन्ना भार्या धाधलदे पुत्र सा० हर्षा सुश्रावकेण भा सोहागदे पुत्र सा० नानिग सा० राजादि युतेन श्री ऋषभबिंबं कारितं। प्रतिष्ठित। श्री खरतरगच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिन-हससूरिभि ॥ श्री ॥

(२२२२)

श्री पार्श्वनाथ जी

स० १६७७ वर्षे फा० सु० ८ सोमे उ० ज्ञा० सोधनजी केन पारसनाथ बिंब का० प्र० तपा श्रीविजयदेवसूरिभि ।

[२२५१]

॥ दादाजी मणिधारक श्री जिनचंद्रसूरिजी। पा। उ। मो। प्र।

[२२५२]

धातुके शिलापट्ट पर

॥ उं। यु। प्र। भ। श्री श्री १००८ श्री जिनसौभाग्यसूरि विजै राज्ये सं० १८९४ आषाढ़ सुद १ शनिवासरे श्री जिनभद्रसूरि शाखायां पं। प्र। श्री सुगुणप्रमोद मुनि पुण्ये हर्ष शाला पं। पिनैचंद पं। मनसुख मुनिभ्यां कारापिता ॥ श्रीरस्तु ॥

[२२५३]

चरणों पर

पं। प्र श्रीहाथीरामजी गणि चरण युगलं । सं। १८९४ आषा। सु १

जां ग लू

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

(२२५४)

शिलापट्ट पर

॥ सं० १८९० मि। काती व १२ दिन म ॥ उं। यु। श्री जिनहर्षसूरिरु। श्री सिं। का।

(२२५५)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी

॥ सं। १८८७ मि। आषा। सु १० -

(२२५६)

बाबा साहब के चरणों पर

॥ १८८७ मि। आषा। सु १० दि। श्री जिनकुशलसूरीणां पादुका म। उं०। यु। श्री जिनहर्षसूरिभिः प्र।

धातु प्रतिमा लेखाः

× (२२५७)

श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

सं १५८१ व० पोस सु० ५ गु० श्री नाणावाल गच्छ भजपरा (?) उसभ गात्र सा० भीमा भा० वाल्ह पु० तजा पच्चा माना तजा भा। जजउ पु० मका कमा रतना नेना कमा सरा सा० वगाकन पितृ पुण्यार्थ श्री सुविधिनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं भ० श्रीसिद्धसेनसूरि ठिभा कम्या पाम ? (?)

(२२३१)

शिलालेख

॥ भ । श्री जिनकीर्तिसूरि महाराज तत् समये महाराज गंगासिंह राजराजेश्वर । सं० १९६५ मि । चै । सु ५ देशनोक अथूणेवास जीर्णोद्धार चन्द्रसोम मुनि तच्छिष्य धर्मदत्त मुने रुपदेशात् कारित. सागरचन्द्रसूरि शाखायां छिला ग्राम वास्तव्य भूरा लक्ष्मीचंद चादमल उद्यम कारक ताभ्या कुण्डः कारित संघ श्रेयोर्थं ॥ ह्रीं ॥

(२२३२)

मूलनायकजी

श्री शान्तिनाथजी

धातु प्रतिमादि लेखाः

(२२३३)

ऋषभदेवजी की बड़ी प्रतिमा पर

स० १९१६ मि । वैशाख सुदि ७ दिने श्री ऋषभ जिन बिंबं । भ । जं । यु । प्र । श्री जिनसौभाग्यसूरिभि: प्र । श्री देशणोक आथमणा वास वास्तव्य श्री सघेन कारापित च श्री मद्वृहत्खरतर गच्छे श्री विक्रमप्पर मध्ये ॥ श्री ॥

(२२३४)

आदिनाथादि चौवीसी

॥ ६० ॥ संवत् १६१५ वर्षे शाके १४८० प्र० माघ मासे । शुक्ल पक्षे । षष्ट्या तिथौ । शनिवासरे । श्री श्रीमालजातीय । श्रे० कडूआ भा० कामलदे । पु० धरणा ॥ खीमा २ भा० लखमादे । आत्मश्रेयोऽर्थं श्री आदिनाथ बिंब कारत । श्री पिप्पल गच्छे । भ० श्रीपद्मतिलकसूरि । तत्पट्टे । श्री धर्मसागरसूरीणामुपदेशेन । प्रतिष्ठितं ॥ दसाडा वास्तव्य ॥ शुभंभवतु ॥ १ ॥

(२२३५)

स० १४८३ प्राग्वाट ज्ञातीय म० माडणेन भा० भाऊ पुत्र देवराजादि कुटुम्ब युतेन स्वपुत्री देऊश्रेयसे श्री श्री श्री वासुपूज्य बिंबं का० प्र० श्री तपा गच्छे श्री सोमसुन्दरसूरिभि: ॥ श्री ॥

(२२३६)

सं० १५०१ वर्षे वैशाख वदि ५ दिने रवौ प्राग्वाट ज्ञातीय व्य० झगड़ा भार्या मेघादे पुत्र व्य० ऊधरणेन भार्या कामलदे पुत्र झाझण तेल्हादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंब का० प्र० तपा श्री सोमसुन्दरसूरि शिष्य श्री श्री श्रीमुनिसुन्दरसूरिभि: ॥ श्री ॥

(२२६४)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी

सं० १८३१ फा० सित ७ तिथौ श्री गौड़ीपार्श्वनाथ जिन बिंबं भ० श्री जिनलाभसूरिभि प्रतिष्ठितं । वा० नयविजय गणि शिष्य पं० सुखरत्न शिष्य दयावर्द्धन कारापितं वेगलसर मध्ये ।

(२२६५)

दादा श्री जिनदत्तसूरि पादुका पर

सं० १८३१ फा० सुद ७ श्री जिनदत्तसूरि पादुके

(२२६६)

श्री जिनकुशलसूरिजी के चरणों पर

सं० १८३१ फा० सुद ७ श्री जिनकुशलसूरि जी पादुके

(२२६७)

पं० नयविजय पादुका

(२२६८)

पं० सुखरत्न पादुका

(२२६९)

श्री हीरविजयसूरि मूर्ति पर

श्री नोखामंडी नगरे वि० सं० १९९८ वैशाख कृष्णा ६ गुरुवासर मुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक तथा गच्छाधिराज जैनाचार्य श्री विजयहीरसूरीश्वराणामियं मूर्त्ति श्रीसंघेन कारिता आचार्य श्रीमद्

(२२७०)

श्रीविजयानन्दसूरिजी की मूर्ति पर

श्री नोखामंडी नगरे वि० सं० १९९८ वैशाख कृष्णा ६ गुरुवासर युगप्रधान न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य श्री मद्विजयानन्द (आत्मारामजी) सूरीश्वराणामियं मूर्त्ति श्रीसंघेन कारिता आचार्य श्री मद्विजयलक्ष्मणसूरिभिः ।

(२२७१)

पार्श्वयक्ष मूर्त्ति पर

इयं मूर्त्ति पार्श्व यक्षस्य नोखामंडी (बीकानेर) श्री संघेन कारिता प्रतिष्ठिता च तपागच्छाधिपति जैनाचार्य श्री विजयलक्ष्मणसूरीश्वरैः सं० १९९७ माघ शुक्ल १४ चन्द्रवासर ।

धातु प्रतिमा लेखाः

(२२४४)

संवत् १३४५ वर्षे माघ सुदि १२ गुरौ श्री पल्लीवाल गच्छीय साधु वरदा भार्या पदमिणि पुत्र साधु छाहड़ेन स्वकीय यो' मातृपित्रौ श्रेयसे श्रीशांतिनाथ का० प्रति० श्री महेश्वरसूरिभि. ।

(२२४५)

॥ ६० ॥ सं० १५१२ वर्षे आषाढ़ सुदि ७ रविवारे। हस्त नक्षत्रे। लोढागोत्रे सा० वयरसीह भार्या धामो पु० धणसिंहेन। स्वमातु पुण्यार्थं। श्री आदिनाथ बिंबं कारितं। प्र० श्री रुद्र० भ० श्री देवसुन्दरसूरि पट्टे। भ० श्री सोमसुन्दरसूरिभि' ॥।

(२२४६)

॥ संवत् १५१६ वर्षे चैत्र वदि ४ दिने ऊकेश वंशे श्रेष्ठि गोत्रे श्रीस्तंभतीर्थ वास्तव्य श्रेष्ठिदेल्हा भार्या देल्हणदे पु० श्रे० नरदवेन भार्या सपूरी पुत्र श्रीमल्ल जगपालादि परिवार युतेन स्वश्रेयसे श्रीमुनिसुव्रत बिंबं कारितं श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि प्रतिष्ठितं ॥ श्री खरतर गच्छे ॥

(२२४७)

सं० १५७६ वर्षे श्री काष्टा संघे।

(२२४८)

श्री पार्श्वनाथ जी

संवत् १६७१ वर्षे १३ · ·····प्रणमति

(२२४९)

ताम्रपत्र पर पादुकाएँ

श्री जिनदत्तसूरिजी पादुके। श्री जिनकुशलसूरिजी पादुके। श्री जिनचंद्रसूरिजी। श्री जिनसिंहसूरि पादुके।

(४) दादाबाड़ी

(स्टेशन रोड पर)

(२२५०)

पादुका-त्रय पर

युगप्रधान दादाजी महाराज ॥ श्री जिनदत्तसूरिजी ॥ श्री ॥ श्री अभयदेवसूरिजी ॥ श्री ॥ श्रीजिनकुशलसूरिजी ॥ खरतर जैनाचार्य पादुके श्रीसंघेन कारा० श्री वीर सं० २४३५ सं १९६५ मिती जेठ सु। १३ ॥ श्री देशणोक नगरे उ। श्री मोहनलाल गणि प्रतिष्ठिता स्थापिता च ॥

(२२७७)

श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १५१५ वर्षे वैशाख सुदि १३ प्रा० ज्ञातीय व्य० महीया भा० साधू सुत हादा पोषद भाया सश्री आत्मश्रेयोथ श्रीसुविधिनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभि माल्हणपाडा वास्तव्य ॥

(२२७८)

सिद्धचक्र के यन्त्र पर

संवत १८३८ ना वर्षे वैशाख वदि १२ वार गुरौ पोरवाड़ ज्ञातीय श्राविका पुण्य प्रभाविका बाई जेठरली सिद्धचक्र करापिता शुभं भूयात् ॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामी का मन्दिर

(२२७९)

मूलनायकजी

श्री वीर विक्रमादित्य राज्यात् संवत् १९०८ शाके १७७३ प्रवर्त्तमान मासोत्तम मासे फाल्गुन वदि ५ तिथौ सौमवारे बृहत्खरतराचार्य गच्छेश - भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभि प्रतिष्ठितं रा० श्री सरदारसिंह विजयराज्ये ॥

(२२८०)

संवत् १५२३ वर्षे वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञा० दोसी जयता भार्या मानू सुत करणाकेन भा० मचकू सुत जसवंतादि कुटुम्ब युतेन स्वमातृ पक्ष वृद्ध पिता वयरसी श्रेयार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबंकारितं प्रति० तपा गच्छ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभि वडगाम वास्तव्य शुभं भवतु ॥श्री ॥

(२२८१)

सं० १५३४ वर्ष आषाढ़ सुदि १ गुरौवार श्री परछच्छ गोत्रे सं० कमण संतान सा० पणपाल्हारमल सा० सिधा भाया सिंगारदे पुत्र सडा चिताइदे पुत्रा युतेन स्वपुण्यार्थ श्रीकुन्थुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं बृहद्गच्छीय श्रीमहेन्द्रप्रभसूरिपट्टे श्रीराजरत्नसूरिभि ।

(२२८२)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १५९४ वर्ष ज्येष्ठ सुदि ५ सामु ऊकेश वंशे प (प ?) इराड़ गोत्र सा० श्रीपति भा० मयूरदे पुत्र सा० श्रीवत्स सा० श्रीराज मध्य सा० श्रीवत्स पुत्रेण सा० धनराजेन भ्रातृ सा० अरा रामा सहितेन भाया धारलदे युतेन श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छ श्रीसौभाग्यहर्षसूरि ।

(२२५८)

धातु के यन्त्र पर

॥ सं १८८५ मि। आसो सुदि ५ दिने श्री सिद्धचक्रस्य यंत्रं भ। श्री जिनहर्षसूरिभिः प्रतिष्ठितं जांगलू वास्तव्य पा। अजैराजजी तत्पुत्र तिलोकचदेन कारितं श्रेयोर्थं।

पांचू

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

धातु प्रतिमा लेखाः

(२२५९)

स० १४९५ वर्षे फागुण वदि ९ रवौ श्री ज्ञान गच्छे काच गोत्रे उपकेश ज्ञातीय साह मोहण भा० मोहिणदे पुत्र वाला भार्या विमलादे आत्म श्रेयोर्थं श्री चंद्रप्रभ स्वामि बिंवं कारितं। प्रतिष्ठित श्री शांतिसूरिभि

(२२६०)

संवत १५४८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ६ शुक्रे जगड़ारूवाड ज्ञातीय सं० दी ज्ञाला० (दीडाला०) राजपुत्र स० चा कान्हा सं० फत्ता भा० गाल्हा पुत्र अंबिकावी स्वश्रेयोर्थं बिंवकारितं प्रतिष्ठितं श्री ज्ञानभूषण देवै ।

(२२६१)

स० १३२६ वर्षे माघ वदि १ रवौ श्री श्रीमाल ज्ञातीय मं० वुल्दे श्रीहक पुत्र देदा श्रेयार्थं पित्तलमय श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री परमाणंदसूरिभि ॥

(२२६५)

गुरु पादुका पर

सवत १९६० श्री जिनदत्तसूरिजी

नोखा मंडी

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा-प्रशस्ति-पादुकादि लेखाः

(२२६३)

शिलालेख

ॐ ॥ श्री बीकानेर राज्ये नोखामडी नगरे वि० सं० १९९७ माघ शुक्ल चतुर्दश्या चन्द्रवारे शुभलग्ने भगवतु श्री पार्श्वनाथस्य प्रतिमा तपागच्छाधिराज युगप्रधान कल्प जैनाचार्य श्रीमद् विजयानंदसूरीश्वर पट्टालंकार सूरिचक्र चूड़ामणि श्री विजयकमलसूरीश्वर पट्ट विभूषके सार्वभौम श्री विजयलब्धिसूरीश्वर पट्ट प्रभावके विजयलक्ष्मणसूरिवर्य्यै प्रतिष्ठापिता ॥

(२२७७)

श्री सुविधिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १५१५ वर्ष वैशाख सुदि १३ मा० ज्ञातीय व्य० महीया भा० साधू सुत दादा पोपट भार्या सखी आत्मश्रेयोर्थ श्रीसुविधिनाथ बिंब का० प्रतिष्ठितं तपागच्छे श्रीरत्नशेखरसूरिभिः माहमवाढा वास्तव्य ॥

(२२७८)

सिद्धचक्र के यन्त्र पर

संवत १८२८ ना वर्ष वैशाख वदि १२ वार गुरौ पोरवाड ज्ञातीय श्राविका पुण्य प्रभाविका बाई जेठरखी सिद्धचक्र कारापिता शुभं भूयात् ॥

श्री मुनिसुव्रत स्वामी का मन्दिर

(२२७९)

मूलनायकजी

श्री वीर विक्रमादित्य राज्यात संवत् १९०८ शाके १७७३ प्रवर्त्तमान मासोत्तम मासे फाल्गुन वदि ५ तिथौ भौमवारे बृहत्खरतराचार्य गच्छेश - भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं रा० श्री सरदारसिंह विजयराज्ये ॥

(२२८०)

संवत् १५२३ वर्ष वैशाख सुदि ३ प्राग्वाट ज्ञा० दोसी जयता भार्या मानू सुत करणाकेन भा० मचहू सुत अस्यंगादि कुटुम्ब युतेन स्वमातृ पक्ष वृद्ध पिता पयरसी श्रेयार्थं श्री मुनिसुव्रत स्वामि बिंबंकारितं प्रति० तपा गच्छ श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः वडगाम वास्तव्य शुभं भवतु ॥श्री ॥

(२२८१)

सं० १५३४ वर्ष आषाढ सुदि १ गुरौवारे श्री वरलच्छ गोत्रे सं० कर्मण संतान सा० वणपाला मत्र सा० सिधा भार्या सिंगारदे पुत्र खता चितादेव पुत्रा युतेन स्वपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृद्धगच्छीय श्रीमरुप्रभसूरिपट्टे श्रीरायरत्नसूरिभिः ।

× (२२८२)

श्री शांतिनाथादि पंचतीर्थी

संवत् १५९४ वर्ष ज्येष्ठ सुदि ५ सागु ऊकश वंश य (पु ?) इराड़ गोत्र सा० श्रीपति भा० सपूरदे पुत्र सा० श्रीवच सा० श्रीराज मध्ये सा० श्रीवच पुत्रेण सा धनराजेन भ्रातृ सा० अस्ता रामा सहितेन भाया धारलदे युतेन श्रीशांतिनाथ बिंबं का० प्र० तपागच्छ प्राता भाग्याहपसूरि ।

(२२७२)

पद्मावती देवी

मूर्त्तिरियं श्री पद्मावती देव्या नोखामंडी (बीकानेर) श्री सघेन कारिता प्रतिष्ठिता च तपो गच्छाधिपति जैनाचार्य श्री विजयलक्ष्मणसूरीश्वरै. सवत् ...

(२२७३) ३१७

धातु की पचतीर्थी पर

स० १५३५ वर्षे माघ सुदि ५ गुरु ओस० तेलहरा गोत्र सा० हीरा भा० गागी पु० विल्हा भार्या वस्ती पुत्र कर्मा युतेन स्व पुण्यार्थं श्रीविमलनाथ बिंबका० प्रतिष्ठित ज्ञानकी गच्छे श्रीरूनेश्वर सूरिभि ।

ना ल

श्री पद्मप्रभुजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२२७४)

मूलनायक श्री पद्मप्रभुजी

सवत् १४५७ वर्षे बैशाख सुदि ७ श्री मूलसंघे भटारकजी श्री धरमचन्दर साह बखतराम पाटणी नित्य प्रणमति ...

(२२७५)

पार्श्वनाथजी

सवत् १९१४ रा वर्षे मिती अषाढ सुदि १० तिथौ बुधवासरे श्री पारसनाथ जिन... श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः श्री मद्बृहत्खरतर गच्छे ॥

धातु प्रतिमादि लेखाः

(२२७६)

शान्तिनाथादि पचतीर्थी

सवत् १४६६ वर्षे माघ सुदि ५ शुक्र दिने प्राग्वाट जातीय व्यव० साह्रा भार्या करमादेवि पु० हरिया मला वीसल मा० रूदीतया स्वभर्तृ श्रेयसे श्रीशान्तिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठित श्रीसूरिभि ।

चौमुख स्तूप के लेख

(२२८७)

पं सकलचंद्रजी के चरणों पर

" ""वष ""सुदि ३ दिने शनौसिद्धियोगे श्री जिनचंद्रसूरि शिष्यमुख्य पं० सकल चरण पादुका श्रीखरतरगच्छाधीश्वर युगप्रधान प्रभुश्री जिनचंद्रसूरिभि प्रतिष्ठितं रीहड़ जयमंद लूणाभ्यां कारिते

(२२८८)

महो समयसुन्दरजी के चरणों पर

संवत् १७०१ वष फागुण सुदि ४ सोमे श्री समयसुन्दर महोपाध्याय पादुके कारित श्री संघेन प्रतिष्ठितं हर्षनंदन ह्रींनम

शालाओंमें स्थापित चरणपादुकाओं के लेख

(२२८९)

संवत् १९१७ का मिती फाल्गुन शुक्ल तृतीयायां गुरुवार श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० श्रीहेमकीर्त्ति मुनीनां चरणन्यासः कारिता पं० प्र० नयभद्र मुनिना ।

(२२९०)

संवत् १९३६ शाक सं० १८०१ शनिवासरे रा मिगसर वद १ श्री जिनभद्रसूरि शाखायां भट्टारक श्री जिनहर्षसूरिभि तच्छिष्य पं० प्र० श्री हंसविलासजी गणिनां इदं चरणन्यास उ। कल्याणनिधान गणि पं० प्र० विवेकलब्धि मुनि पं० प्र० श्री धमवल्लभ मुनि कारापिता प्रतिष्ठिता श्री जिनचंद्रसूरिभि शुभंभूयात ।

(२२९१)

संवत् १९५७ मिती मि० सु० १० श्री बीकानेर मध्य पु० उ० श्रीलक्ष्मीप्रधानजी गणि पादुका स्था० उ० श्रीमुक्तिकमल गणि ॥

(२२९२)

पादुकात्रय पर

॥ संवत् १९४२ रा मिती फा । शु । म । तृतीया दिन श्री गुरूणां चरणन्यास पं० उदयचंद्र मुनिना स्थापितं प्रतिष्ठितंच ॥ पं० प्र० श्री हितधीर जिद्मुनि । उ० श्री सुमतिशेखरजिद्गणि । पं० प्र० श्रीचारित्रअमृतजिद्मुनि श्रीरस्तु ॥

(२२९३)

संवत् १९३६ । मि । मि० व १ वा० १० श्री रामचन्द्रजिद्गणि तच्छिष्य पं० प्र० १०८ श्रीसुगररामजी मुनि पादुक शि० उ० श्री सुमतिशेखर गणि स्थापितं ॥ शुभंभूयात् ।

(२२८३)

सिद्धचक्र के यन्त्र पर

सवत १८४३ मिते आश्विन शुक्ल पूर्णिमास्यां शनौ सिद्धचक्रयन्त्र कारित ॥ श्रीमद्विक्रमपुरे ॥

दादा श्री जिनकुशलसूरिजी का मन्दिर

(२२८४)

जीर्णोद्धार लेख

दधदतुल्यशो युगप्रधान खरतरगच्छ वराच्छ रत्नराशि । जिनकुशल सुनामधेय धन्यो व्यतनुत नालपुरेऽत्र भावुकानि ॥ १ ॥ रावे शुक्ले दशम्या रस नव नव भू वत्सरे विक्रमस्य । कोठारी रावतस्यात्मज इह मतिमानोश वशावतश । श्री भैरू दाननामा सममथ विविधे नान्या जीर्णोद्धरेण तत्पादाम्भोजयुग्मो परिद्दपद् मलच्छत् मेतचकार ॥ २ ॥ श्री पूज्य जिनचारित्रसूरिवर्योपदेशत प्रतिष्ठा लभता मेवाथिरता मचलाचले ॥ ३ ॥ श्री मज्जिन हरिसागरसूरीणा समुर्वरित कीर्तिना । समागति. सहशिष्यैर्व्यधादिह विधान साफल्यम् ॥ ४ ॥

(२२८५)

ॐ अर्हं नम

श्री दादा गुरुदेव मन्दिर जीर्णोद्धार प्रशस्तिका

ॐ अर्हंनम । जंगम युगप्रधान वृहद् भट्टारक खरतरगच्छाधिराज दादाजी श्री श्री १००८ श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज के चरणारविन्दों पर श्रीपूज्यजी श्रीजिनचारित्रसूरीश्वरजी महाराज के सदुपदेश से नाल ग्राम मे सगमर्मर की सुन्दर छत्री अन्य आवश्यक जीर्णोद्धार के साथ बीकानेर निवासी स्व० सेठ श्री रावतमलजी हाकिम कोठारी के सुपुत्र धर्मप्रेमी सेठ भैरोंदानजी महोदय ने भक्तिपूर्वक वनवाने का श्रेय प्राप्त किया मिती वै० शु० १० भृगुवार सं० १९९६ को बडे समारोह के साथ ध्वजदड कलशादि का प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न किया। इस सुअवसर में जनाचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज की समुपस्थिति अपने विद्वान शिष्यों के साथ विशेष वर्णनीय थी।

[२२८६]

स्तम्भ पर जीर्णोद्धार लेख

॥ सव्वत् १८८२ मिते कार्त्तिक सु १५। भ। जं। यु। भ। श्री जिनहर्षसूरिजी विजयराज्ये सद्गुरु स्थानके श्रीसघेन व---

तदन्वये महो श्री माणिक्यमूर्त्ति गणिस्तच्छिष्य पं० भावहर्ष गणि तच्छिष्य उ। श्री अमरविमल गणिस्त। उ। श्री अमृतसुन्दर गणिस्त। वा० महिमहेमस्त। पं० कांतिरत्न गणिना कारितेयं।

(२३००)

सं॥ १८७९ मि। आषाढ वदि १० भौम वं। भ। श्री जिनहर्षसूरिभिः श्री कीर्त्तिरत्न सूरि शा। उ। श्री अमृतसुन्दर गणीनां पादुके प्र। तत्पौत्रेण पं० कुशलेन कारिते च।

(२३०१)

॥ संवत् १९७९ मि। माघ शुक्ल ७ पं। प्र। अमृतसार मुनीनां पादुका चिरंं प्यारेलाल स्थापिता कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ श्री ॥

(२३०२)

॥ सं० १९२३ रा वर्ष शाके १७८८ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी तिथौ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं। प्र। श्री दानविशाल जी पादुका प्रतिष्ठिता।

(२३०३)

सं। १९२३ वर्ष शाके १७८८ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी तिथौ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं। प्र। श्री अभयविलासजी मुनि पादुका प्रतिष्ठितं ॥

(२३०४)

॥ सं। १८८१ मि। फाल्गुन व। ५ सोमवारे। भ। श्रीजिनहर्षसूरिभिः श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि शा। उ। श्रीअमृतसुन्दरजिद्गणयस्तदंतेवासी वा। श्रीजयकीर्त्तिजिद्गणीनां पादुका प्रतिष्ठि।

(२३०५)

सं। १८७९ मि। शु। व। १० वं। भ। श्री जिनहर्षसूरिभिः वा। महिमाहेम गणीनां पादुका प्रतिष्ठित। तच्छिष्येण पं। कांतिरत्नेन श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शा। कारिते।

(२३०६)

शिलापट्ट पर

॥ श्री ॥ क्षेमकीर्त्ति शाखायां। उपाध्याय श्री रामलाल गणिना स्वआत्मार्था जीर्णोद्धार करापिता सं। १९७७ माघ शुक्ल ५।

गढ़ से बाहरवर्ती शाला में

(२३०७)

चरणपादुका पर

सं १८८८ व। मि। ज्ये। सु। १ बुधे वं। यु। भ। श्री जिनहर्षसूरिभिः वा। रूपविजय गणीनां पादुका प्र। कारित च पं। कल्याणसागरेण।

(२२८३)

सिद्धचक्र के यन्त्र पर

संवत १८४३ मिते आश्विन शुक्ल पूर्णिमास्या शनौ सिद्धचक्रयन्त्र कारितं ॥ श्रीमद्विक्रमपुरे ॥

दादा श्री जिनकुशलसूरिजी का मन्दिर

(२२८४)

जीर्णोद्धार लेख

दधदतुल्यशो युगप्रधान खरतरगच्छ वराच्छ रत्नराशि । जिनकुशल सुनामधेय धन्यो व्यतनुत नालपुरेऽत्र भावुकानि ॥ १ ॥ राधे शुक्ले दशम्या रस नव नव भू वत्सरे विक्रमस्य । कोठारी रावतस्यात्मज इह मतिमानोश वंशावतंश । श्री भैरू दाननामा सममथ विविधे नान्या जीर्णोद्धरेण तत्पादाम्भोजयुग्मो परिदपद् मलच्छत् मेतचकार ॥ २ ॥ श्री पूज्य जिनचारित्रसूरिवर्योपदेशत प्रतिष्ठा लभता मेषास्थिरता मचलाचले ॥ ३ ॥ श्री मज्जिन हरिसागरसूरीणा समुर्वरित कीर्तिना । समागति सहशिष्यैर्व्यधादिह विधान साफल्यम् ॥ ४ ॥

(२२८५)

ॐ अर्हं नम

श्री दादा गुरुदेव मन्दिर जीर्णोद्धार प्रशस्तिका

ॐ अर्हंनम । जंगम युगप्रधान वृहद् भट्टारक खरतरगच्छाधिराज दादाजी श्री श्री १००८ श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी महाराज के चरणारविन्दों पर श्रीपूज्यजी श्रीजिनचारित्रसूरीश्वरजी महाराज के सदुपदेश से नाल ग्राम में सगमर्मर की सुन्दर छत्री अन्य आवश्यक जीर्णोद्धार के साथ बीकानेर निवासी स्व० सेठ श्री रावतमलजी हाकिम कोठारी के सुपुत्र धर्मप्रेमी सेठ भैरोंदानजी महोदय ने भक्तिपूर्वक बनवाने का श्रेय प्राप्त किया मिती वै० शु० १० भृगुवार स० १९९६ को बडे समारोह के साथ ध्वजदड कलशादि का प्रतिष्ठोत्सव सम्पन्न किया। इस सुअवसर मे जनाचार्य श्री जिनहरिसागरसूरीश्वरजी महाराज की समुपस्थिति अपने विद्वान शिष्यों के साथ विशेप वर्णनीय थी।

[२२८६]

स्तम्भ पर जीर्णोद्धार लेख

॥ सव्वत् १८८२ मिते कार्त्तिक सु १५। भ। जं। यु। भ। श्री जिनहर्षसूरिजी विजयराज्ये सद्गुरु स्थानके श्रीसघेन कारितं।

तदन्वये महो श्री माणिक्यमूर्त्ति गणिस्तच्छिष्य पं० माधवर्ष गणि तच्छिष्य उ। श्री अमरविमल गणिस्त। उ। श्री अमृतसुन्दर गणिस्त। वा० महिमहेमस्त। पं० कांतिरत्न गणिना कारितेयं।

(२३००)

सं ॥ १८७९ मि। आषाढ़ वदि १० भौमे जं। भ। श्री जिनहर्षसूरिभि श्री कीर्त्तिरत्न सूरि शा। उ। श्री अमृतसुन्दर गणीनां पादुके प्र। तत्पौत्रेण पं० कुशलेन कारिते च।

(२३०१)

॥ संवत् १९७९ मि। माघ शुक्ल ७ पं। प्र। अमृतसार मुनीनां पादुका चिरु प्यारेलाल स्थापिता कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां शुभं भवतु कल्याणमस्तु ॥ श्री ॥

(२३०२)

॥ सं० १९२३ रा वर्ष शाके १७८८ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी तिथौ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं। प्र। श्री दानविशाल जी पादुका प्रतिष्ठिता।

(२३०३)

सं। १९२३ वर्षे शाके १७८८ प्रवर्त्तमान वैशाख मासे शुक्ल पक्षे अष्टमी तिथौ श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं। प्र। श्री अभयविलासजी मुनि पादुका प्रतिष्ठितं ॥

(२३०४)

॥ सं। १८८१ मि। फाल्गुन व। ५ सोमवारे। भ। श्रीजिनहर्षसूरिभि श्रीकीर्त्तिरत्न सूरि शा। उ। श्रीअमृतसुन्दरजिद्गणयस्तदन्तेवासी वा। श्रीजयकीर्त्तिजिद्गणीनां पादुका प्रतिष्ठि।

(२३०५)

सं। १८७९ मि। शु। व। १० जं। भ। श्री जिनहर्षसूरिभि वा। महिमाहेम गणीनां पादुके प्रतिष्ठिते। तच्छिष्येण पं। कांतिरत्नेन श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शा। कारिते।

(२३०६)

शिलापट्ट पर

॥ श्री ॥ क्षेमकीर्त्ति शाखायां। उपाध्याय श्री रामलाल गणिना स्वशालाया जीर्णोद्धार करापिता सं। १९७७ माघ शुक्ल ५।

गढ़ से बाहरवर्त्ती शाला में

(२३०७)

चरणपादुका पर

सं १८८८ व। मि। ज्ये। सु। १ बुधे जं। यु। भ। श्री जिनहर्षसूरिभि वा। रूपविजय गणीनां पादुका प्र। कारिते च पं। कल्याणसागरेण।

(२२९४)

सं० । १९४३ मि । फा । सु । प्र । ३ दि । सा । मानलच्छीनां पादुका सा० कनकलच्छीना स्थापिता—

(२२९५)

शिलापट्ट पर

सं । १९३५ रा मि । मा । सु । ५ चंद्रवारे वृ । खरतरगच्छीय उ । श्री लक्ष्मीप्रधान गणिना क्रीणित भावेनेयं शाला कारापिता ।

(२२९६)

पादुका युगल पर

॥ सं । १९३३ रा मि । मि । व । ३ तिथौ श्री कीर्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० श्रीकल्याण सागर जिन्मुनीना पा । तच्छिप । हितकमल मुनि का । प्र । पं । प्र । श्रीकल्याणसागर जिन्मुनिः-तच्छि । पं । प्र० कीर्त्तिधर्म मुनीना चरणन्यास ॥ श्रीरस्तु

(२२९७)

सवत् १८४९ वर्पे मिती वैशाख वदि १४ शुक्रे श्रीकीर्तिरत्नसूरिसंताने उपाध्याय श्री अमर विजय गणयो दिवंगतास्तेषा पादुके कारिते श्री गडालय मध्ये ॥ संवन्निधि जलधि वसु चंद्रप्रमिते चैत्र कृष्ण द्वादश्यां सूर्यतनय वासरे । जं । यु । प्र । श्री जिनचंद्रसूरि सूरीश्वरै श्री उ । अमर विजय‥ मिमे पादुके‥‥‥

(२२९८)

सं० १९०७ वर्षे मि । मि । वा १३ गुरुवारे श्री कीर्त्तिरत्नसूरि शाखायां पं० प्र० कातिरत्न मुनीना पादुके कारापिते प्रतिष्ठितेच श्री ॥

(२२९९) 321

॥ सं० । १४६३ मध्ये शंखवाल गोत्रीय डेल्हकस्य दीपाख्येन पित्रा संबन्ध कृत तत विवाहार्थं दूलहो गत तत्र राडद्रह नगर पार्श्वस्थायां स्थल्या एको निज सेवक केनचिद् कारणेन मृतो दृष्ट तत् स्वरूपं दृष्ट्वा तस्य चित्ते वैराग्य समुत्पन्ना सर्व संसार स्वरूपमनित्यं ज्ञात्वा भ । श्री जिनवर्द्धनसूरि पार्श्वे चारित्र ललौ कीर्तिराज नाम प्रदत्तं तत शास्त्रविशारदो जात महत्तप कृत्वा भव्य जीवान् प्रतिबोधयामास तत भ । श्री जिनभद्रसूरय स्तं पदस्थ योग्यं ज्ञात्वा दुग स । १४९७ मि । मा । सु १० ति । सूरि पदवीं च दत्त्वा श्री कीर्त्तिरत्नसूरिनामानां चक्रुस्तेभ्य शाखेषा निर्गता ततो मद्देवा न । सं १५२५ मि । वै । व ५ ति । २५ दिन यावदनशनं प्रपाल्य स्वर्गं गता । तेषां पादुके स० १८७९ मि । आ । व १० जं । यु । भ श्रीजिनहर्षसूरिभि प्रतिष्ठिते

(२३१४)

सं० १९६४ वर्षे शाके १८२९ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ मार्त्तण्डवासरे चंदणश्री पदस्य सा। नवलश्रीनां पादुका स्वजीवनावस्थायां नवलश्रियौस्य चरणयोस्थापितं कारितं च तया वैकुण्ठवासि—गुरुणी—इचरा—गुरुणी—चरणौ विराजमानौ कर्पिता च प्रतिष्ठाकारिता श्री मद्बृहत्खरतराचार्य गच्छाधीश यं। यु। प्रधानभट्टारक श्री श्री १००८ श्री श्री जिनसिद्धसूरी श्वराणां विजयराज्ये। श्री नालमध्ये महाराजाधिराज श्रीमद् गंगासिंह—राजमान श्रीरस्तु ॥ श्री ॥

(२३१५)

संवत् १८९२ रा शाके १७५७ प्र। पौष मासे शुक्ल पक्षे ७ तिथौ भौमवारे यं। यु। भ। श्रीजिनउदयसूरिभि सा। इन्द्रभ्यसमाजाया—पादुका प्रतिष्ठिता सा। येनस्माक कारापिता महाराजाधिराज श्रीरतनसिंहजी विजयराज्ये ॥

(२३१६)

संवत् १९०१ रा शाके १७६६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मास माघमास शुक्लपक्षे दशम्यां तिथौ रविवासरे भट्टारक यंगम युगप्रधान १०८ श्री श्री जिनउदयसूरीश्वराणां पादुका उं। यु। भट्टारक श्री श्री जिनहेमसूरिजिभिः प्रतिष्ठितं खरतर बृहदाचार्य गच्छे श्री विक्रमपुर मध्ये श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये शुभंभवतु ॥ श्री ॥

मजडू

श्रीनेमिनाथजी का मन्दिर (बेगानियों का वास)

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२३१७)

सप्तफणा सपरिकर पार्श्व प्रतिमा

(A)। संवत् १०२१ श्रिमर्त कुश चैत्य स्नात्र प्रतिमा'

(B)। पुन प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छ नायक श्री जिनहंससूरिभि या। सा नस्ता पुत्र रामा खेमा पुण्याढ्य काला मासर

(२३१८)

श्री वासुपूज्यादि पंचतीर्थी

॥ सं। १७६१ वर्षे व सु० ७ गुरौ पत्तन वास्तव्य श्री प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखायां दो। लखमीदास सुत दो पद्मि भा। राजबाई सुत दो। सुन्दर नाम्ना स्व श्रेयसे श्री वासुपूज्य बिंब

श्री जिनचारित्रसूरि मन्दिर

(२३०८)

वीकानेर निवासी श्रीमान् दानवीर स्वर्गीय सेठ भागचन्द जी कचराणी गोलछा के सुपुत्र दीपचन्द जी इनकी धर्मपत्नी आभादेवी ने १७ हजार रु० की लागत से वनवा कर नाल ग्राम मे आषाढ़ कृष्णा ११ रविवार सं० २००७ को प्रतिष्ठा करवाई।

(२३०९)

सं० २००७ आषाढ कृ० एकादश्या रवौ कचराणी गोलछा श्रेष्ठि दीपचन्द्रेण जं० यु० प्र० भ० व्या० वा० श्रीजिनचारित्रसूरीश्वर पादुके कारितं जं० यु० प्र० भ० सि० म० व्या० वा० श्री जिनविजयेन्द्रसूरीश्वरैः प्रतिष्ठापिते च।

खरतराचार्य गच्छीय स्थानस्थ शालाओं के लेख

(२३१०)

संवत् १९०२ शाके १७६७ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ बुधवासरे पं। लब्धिधीर गणीना पादुका वा० हर्षरंग गणि कारापित रत्नसिंह जी विजय-राज्ये श्रीरस्तु विक्रमपुर मध्ये। भ० श्री जिनहेमसूरि जिद्भिः प्रतिष्ठितम्॥

(२३११)

संवत् १९२४ वर्षे शाके १७८९ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे माघ मासे शुभे शुक्ल पक्षे सप्तम्या भृगुवासरे जं। युगप्रधान भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं सा। ज्ञानमाला पादुका। कारापितं सा। चनणश्री श्रीवृहत्खरतराचार्य गच्छे श्री विक्रमपुर मध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु॥

(२३१२)

सं० १९३० वर्षे शाके १७९५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ नवम्यां चन्द्रवासरे सा० धेनमाला शिष्यणी गुमानसिरी तत्शिष्यणी ज्ञानसिरि शिष्यणी चन्दन सिरी स्वहर्षतं स्वपादुका कारायितं श्री वीकानेर मध्ये श्री वृहत्खरतराचार्य गच्छे यं। युगप्रधान भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्रीरस्तु कल्याणमस्तु महाराजाधिराज महाराज नरेन्द्र शिरोमणि बहादुर डूंगरसिंह जी विजयराज्ये।

(२३१३)

॥ सं०।१९१२ शाके १७७७ प्रवर्त्तमाने मिगसर वदि पंचम्यां बुधवारे पं। चेतविशाल पादुका शिष्य प। धर्मचन्द्रेण कारापिते। श्री॥ श्री वृहत्खरतर आचार्य गच्छे। श्री महाराजाधिराज श्री सिरदारसिंहजी विजयराज्ये॥

(२३२५)

स्वामवर्ण चन्द्रप्रभ जी

सं० १९३१ मि० मा० । स

धातु प्रतिमा लेखाः

(२३२६)

पंच तीर्थी

संवत् १५८५ (? १५९४) वर्षे ज्ये० सु० ६ रु० सा० कर्मसी भा० कमादि पुत्र ऊदा भा० भाल्हणदे भाय्या श्री वासुपूज्य बिंबं प्र० कृष्णर्षि गच्छे श्री जयशेखरसूरिभिः ॥

(२३२७)

ताम्र यंत्र पर उत्कीर्ण

। श्री गौतम स्वामी सं० १९६१ द० सोनार नथू ।

(२३२८)

१६८१ मा । सु ११ विजयचन्द ना । रंगुरे पुत्र ॥ सूरजीवा । श्री अजितनाथ बिंब का । प्र । म । श्री विजयानन्दसूरि ।

ना पा स र

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेख

(२३२९)

संवत् १५७५ वर्षे फागुण सुदि ४ गुरु—म सा० छुडाउन्नए—प्र मा ठ ०
श्री बिंबं कारापितं

चरण पादुका लेखाः

(२३३०)

आदिनाथ स्वामी

संवत् १८९२ मि । भा । सु । ७ राजराजेश्वर श्री रतनसिंह जी विजयराज्ये श्री आदिनाथ पा । श्री संघेन का । बृ । ख । ग । । श्रीजिनसौभाग्यसूरिभिः । प्र ।

श्री जिनचारित्रसूरि मन्दिर

(२३०८)

बीकानेर निवासी श्रीमान् दानवीर स्वर्गीय सेठ भागचन्द जी कचराणी गोलछा के सुपुत्र दीपचन्द जी इनकी धर्मपत्नी आभादेवी ने १७ हजार रु० की लागत से बनवा कर नाल ग्राम में आषाढ़ कृष्णा ११ रविवार सं० २००७ को प्रतिष्ठा करवाई।

(२३०९)

सं० २००७ आषाढ़ कृ० एकादश्यां रवौ कचराणी गोलछा श्रेष्ठि दीपचन्द्रेण जं० यु० प्र० भ० व्या० वा० श्रीजिनचारित्रसूरीश्वर पादुके कारितं जं० यु० प्र० भ० सि० म० व्या० वा० श्री जिनविजयेन्द्रसूरीश्वरै प्रतिष्ठापिते च।

खरतराचार्य गच्छीय स्थानस्थ शालाओं के लेख

(२३१०)

सवत् १९०५ शाके १७६७ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदश्या तिथौ बुधवासरे पं। लब्धिधीर गणीनां पादुका वा० हर्षरंग गणि कारापितं रत्नसिंह जी विजय-राज्ये श्रीरस्तु विक्रमपुर मध्ये। भ० श्री जिनहेमसूरि जिद्भिः प्रतिष्ठितम्॥

(२३११)

संवत् १९२४ वर्षे शाके १७८९ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे माघ मासे शुभे शुक्ल पक्षे सप्तम्यां भृगुवासरे जं। युगप्रधान भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठितं सा। ज्ञानमाला पादुका। कारापितं सा। चनणश्री श्रीवृहत्खरतराचार्य गच्छे श्री विक्रमपुर मध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु॥

(२३१२)

सं० १९३० वर्षे शाके १७९५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे तिथौ नवम्यां चन्द्रवासरे सा० धेनमाला शिष्यणी गुमानसिरी तत्शिष्यणी ज्ञानसिरि शिष्यणी चन्दन सिरी स्वहर्षतं स्वपादुका कारायितं श्री बीकानेर मध्ये श्री वृहत्खरतराचार्य गच्छे यं। युगप्रधान भट्टारक श्री जिनहेमसूरिभिः प्रतिष्ठित श्रीरस्तु कल्याणमस्तु महाराजाधिराज महाराज नरेन्द्र शिरोमणि बहादुर डूंगरसिंह जी विजयराज्ये।

(२३१३)

॥ सं० ।१९१२ शाके १७७७ प्रवर्त्तमाने मिगसर वदि पंचम्यां बुधवारे पं। चेतविशाल पादुका शिष्य प। धर्मचन्द्रेण कारापिते। श्री॥ श्री वृहत्खरतर आचार्य गच्छे। श्री महाराजाधिराज श्री सिरदारसिंहजी विजयराज्ये॥

(२३३८)

- - श्री ज्ञातीय गोत्रीय भा० कपूर कारितं - श्री हीरविजयसूरि पट्टे कल्याणविजयगणि।

धातुप्रतिमाओं के लेख

(२३३९)

संवत् १५२१ वर्षे अषाढ़ सुदि ९ गुरौ ऊकेश ज्ञातीय मे० पाता भार्या राजू पुत्र भाखर भार्या नाथी युतेन स्वश्रेयसे श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति० ऊकेश सिद्धाचार्य संताने भ० श्री देवगुप्तसूरिभिः आसीना ग्रामे।

(२३४०)

संवत् १६९१ वर्षे भाद्रवा सुदि ५ श्री वैद गोत्रे महं करमसी पुत्र महं किसनदास भार्या किसनादे प्रमुख कुटुंब युताभ्यां श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं भट्टारक श्री कक्कसूरिभिः प्रतिष्ठितं यो बाफणे

(२३४१)

॥६०॥ संवत् १५३४ वर्षे मागसर वदि १२ दिने उपकेश ज्ञातौ भाद्रि गोत्रे मं० बोहिथ पुत्र पासा भार्या पासलदे पु० धन्ना भा० श्री उपकेशगच्छे श्री कुकुदाचार्य संतान श्री कक्कसूरि पट्टे प्रतिष्ठितं श्री देवगुप्तसूरिभिः।

(२३४२)

संवत् १५२८ वर्षे वैशाख स० २ सनि रोहागा ऊयसस वंश दुगड़ गो० नरसिंहवर्धमान नगराज सत्रदेवरदासमाधमये (?) आदिनाथ कारितं रुद्रपल्लीयगच्छे स० श्री गुणसुंदरसूरिभिः

(२३४३)

सं० १५३१ वर्ष ज्ये० सु० २ श० नागर ज्ञातीय वृद्ध सं० पा० साल्हिग भार्या वाल्ही सुत चेला गजाभ्यां चेला भा० रूपिणि सुत आसधर अखा गेला भा० गोगलदे प्रमुख कुटुंब युताभ्यां श्री श्रेयांसनाथ बिंबं का० प्र० श्री अंचलगच्छे श्री जयकेसरसूरिभिः श्री वृद्धनगरवास्तव्य॥

(२३४४)

सं० १४८७ वर्षे आषाढ़ वदि ८ रवौ श्री कोरंटगच्छे पोसालीया गो० उप० ज्ञा० सा० खेता भा० गुजरद पु० उसाकेन आत्म श्रे० श्री पद्मप्रभ बिं० का० प्र० श्री कक्कसूरिभिः

(२३४५)

सं० १४६८ वर्षे वैशाख वदि २ गुरौ प्रा० श्रे० कमसी भार्या प्रीमल पुत्र लाखाकेन भ्रातृ मान्हा निमित्तं श्री शांतिनाथ बिंबं का० प्र पू० श्री पद्माकरसूरिभिः।

कारापितं प्रतिष्ठितं तपा गच्छे भ० श्रीविजयदेवसूरिपट्टे आ० श्रीविजयसिंहसूरि भ। श्री विजयप्रभसूरि पट्टे संविज्ञ पक्षीय भ० श्री ज्ञानविमलसूरिभिः।

(२३१९)

श्री धर्मनाथ जी

सं० १६२६ व० फा० सु० ८ श्री धरमनाथ वा टीद।

(२३२०)

ताम्र का ह्रींकारयन्त्र

सारंगाणी उदैमल्लजी धारकस्य वछित प्रदो भव।

चरण पादुकाओं के लेख।

(२३२१)

पादुका युग्म पर

॥ ६० ॥ स०। १९७२ (?) का मि फाल्गुनसित पक्षे २ द्वितीयाया तिथौ शुक्रवासरे झझू वास्तव्य समस्त श्री संवस्य श्रेयार्थं श्री उ। सुमतिशेखर गणिभिः प्रतिष्ठितं॥ दादाजी श्री जिनदत्तसूरि जी ❀ दादा जी श्री जिनकुशलसूरि जी॥

(२३२२)

चरणों पर

॥ सं० १९०४ मि० फा० सु० २ पं०। प्र० श्री १०८ श्री सदारंग जी मुनिचरण पादुका कारापितम्।

श्री नेमिनाथ जी का मन्दिर (सेठियों का वास)

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२३२३)

श्री नेमिनाथ जी

॥ सं० १९१० मी मिगसर वदि ५ प्रतिष्ठित गुरुवसर भट्टा श्री जिनहेमसूरिभिः श्री वृहत्खरतर आचारज गच्छे नेमिनाथ जिन विंवं॥

(२३२४)

श्री चन्द्रप्रभु जी

॥ सं १५५४ मा० सु० ५ ओ० मं० गो० वि० पा० श्री चंद्रप्रभ विं० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे भ० श्री पुण्यर्द्धन (वर्द्धन ?) सूरिभि॥

(२३५४)

सं० १५२२ माघ सु० ३ बुध सा० स भाखा संघ भार्या लासमन्नेळ मसु (?)

(२३५५)

शासनदेवी की मूर्ति

श्री शासनदेवीजी की प्रतिमा बनाई सेठ पदमचन्द प्रतिष्ठितं उ० जयचन्द गणि संवत् १९९४ कार्तिक सुदि ५।

र त न ग ढ

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

(२३५६)

श्री चन्द्रप्रभजी

संवत् १७४८ वर्ष वैशाख सुदि

(२३५७)

श्री ऋषभदेवजी

संवत् १५४८ वर्षे सुद

दा दा वा डी

(२३५८)

श्री जिनकुशलसूरि

सं० १८६६ वर्षे शाके १७३१ प्रवर्त्तमान माघ मास कृष्ण पक्षे पंचम्यां तिथौ गुरुवारे श्री जिनकुशलसूरीणां श्री संघेन पादुका प्रतिष्ठापितं कि० उत्तमचन्द ।

(२३५९)

छोटे चरणोंपर

श्री जिनदत्तसूरि ।

(२३३१)

सवत् १७३७ वर्षे चैत्र वदि १ श्रीजिनदत्तसूरि पादुके श्री जिनकुशलसूरि पादुके।

(२३३२)

सवत् १७३७ वर्षे चैत्र वदि १ सेठ सा० अचलदास पादुके ॥

धातु प्रतिमा लेखाः

(२३३३) 327

श्री सुविधिनाथादि पचतीर्थी

सवत १५३६ वर्षे वै० गुरौ ९ उस० ममए गोत्रे सा० सीहा भा० सुहागदे पुत्र तेला भा० रूअड पु० जीवा २ पूरा प्र० रहा सा० चणकू पु० तेजा स्वपुण्यार्थं श्रीसुविधिनाथ विंव का० प्र० श्रीपल्लीवाल गच्छे भ० श्रीउजोअणसूरिभि.

(२३३४)

श्री शीतलनाथ जी

संवत् १६१९ वर्षे श्री श्री शीतलनाथ। वा० पूरा दे ·· ··

(२३३५)

द्वार पर जीर्णोद्धार लेख

संवत् १९५६ साल का मिती चैत्र सुदि ४ गांव नापासर श्री शातिनाथ जी के मंदिर का जीर्णोद्धार श्री हितवल्लभजी महाराज गणिके उपदेश से मरामत वा धरमसाला श्री संघ वीकानेर वाला के मदत से वणा है मारफत खवास विसेसर वीजराज मैणा (।) कारीगर चूनगर इलाही वगस थाणेंदार महमद अली जी।

रा ज ल दे स र

श्री आदिनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२३३६)

मूलनायक जी श्री आदिनाथ जी

संवत् १४९२ (?) वर्षे वइसाख सुदि ५ गुरुवारे श्री आदीश्वर विंबं

(२३३७)

सवत् १५५१ वर्षे माघ वदि २ सिंचटगो० देसलान्वये भो० संघराजु पु० सकतूकेन श्री सहिजलदे पु० श्री हंसवा (?पा) लयुतेन श्री चन्द्रप्रभ प्र० उप० गच्छे श्री देवगुप्तसूरिभि।

(२३६६)

संवत् १९०३ शाके १७६८ प्रवर्त्तमाने माघ व .... श्री शान्तिसागर सूरि

[२३६७]

सं० १४३३ वर्षे वैशाख सुदि ९

[२३६८]

सं० १५१०

[२३६९]

सं० १८५२ शा० १३१७ प्रवर्त्तमा० माघ सु० ४ तिथौ गुरुवा० माल्हि पटण ज्ञाति प्रतिष्ठितं ।

[२३७०]

सं० १५०८ शक १३७३ प्रवर्त्तमाने माधव मास शुक्ल पक्षे ३ तिथौ सौम्यवार् कांचिन्पुर पत्तन गोवेचा ज्ञातीय माणक

[२३७१]

संवत १७१० शाके १५७५ प्र० पोष सुदि ७ भिनडा (मा ?) ल पत्तने बिंबं प्रतिष्ठितं श्री कल्याणचन्द्रसूरिभिः

धातु प्रतिमा-लेख

[२३७२] 337

श्री शान्तिनाथ पंचतीर्थी

संवत् १५८२ वर्षे वैशाख सुदि ७ गुरुवार श्री ऊकेश वंशे बोथिरा गोत्रे परवत पुण्यार्थ मं० हसू पुत्र मं० रूपा जोग्य नीवार्थे श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं ।

[२३७३]

पाली में पद्मासन वीर बिम्ब पर

वीरात् २४४१ ना पोष वदि ५ वार बुध

श्री मन्दिरजी के दोनों ओर दादासाहब की विशाल छत्रीयों पर

[२३७४]

श्री जिनदत्तसूरिजी के चरण

श्री खरतर गच्छ शृङ्गारहार जंगम युगप्रधान चारित्र चूडामणि बृहद्भट्टारक गच्छे भट्टारक दादाजी श्री श्रीजिनदत्तसूरीश्वर पादुका प्रतिष्ठितं सं० १९३३ वर्षे मासोत्तम मासे शुभ माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ तृतीयायां ॥

(२३४६)

सं० १४५४ व० आषा० सु० ५ गुरौ उपकेश ज्ञा० सा० भाखर भा० आल्हू पु० करमेन पित्रोः श्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं का० प्रतिष्ठितं मडाहडीय गच्छे श्री मुनिप्रभ सूरिभिः ।

(२३४७) ३२९

स० १४९३ माघ सुदि ८ शनौ उसवाल ज्ञातीय परीक्षि आमा सुतेन परीक्षि दू० माकल मातृ अणपमदेवि श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबंकारितं प्रतिष्ठित श्री चैत्य गच्छे श्री धणदेवसूरि पट्टे पद्मदेवसूरिभिः ।

(२३४८) ३२९

॥६०॥ सं० १३६ (०?) श्री उपकेश ग० श्रीककुदाचार्य सन्ताने तातहड गो० सा० टासर भार्या जउणी जत भा० सिरपति केल्हउ उहड प्रभृति स्वमातु श्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्रीदेवगुप्तसूरि श्रीसिद्धसूरिभिः ।

(२३४९)

॥ संवत् १५३४ वर्षे वैशाख सुदि ४ दिने श्री ऊकेश वंशे छत्रधर गोत्रे सा० हापा भार्या हासल दे पुत्र सा० पद्माकेन भार्या प्रेमलदे पुत्र सा० गज्जा सा० नरपाल प्रमुख परिकर युतेन श्री सम्भवनाथ बिंबंकारितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिपट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरि पट्टे श्री जिनसमुद्रसूरिभि॰ प्रतिष्ठिता ॥ श्री ॥

(२३५०)

सं० १५१९ वर्षे फा० सु० ९ नलकछ वासि प्राग्वाट सा० देपाल भा० देल्हणदे पुत्र हापाकेन भा० धर्मिणि पुत्र गोपा महपति झाझणादि कुटम्ब युतेन श्री शान्ति बिम्बं का० प्रति० तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभि॰ ॥ श्रेयसे ॥

(२३५१) ३२९

संवत् १५२९ वर्षे वैशाख वदि ६ दि० श्री उपकेश ज्ञातौ चंडालिया गो० सा० मेहा भा० माणिकदे पुं डूगर भा० करमादे पु० श्रीवन्त श्रीचन्द आत्म श्रे० पद्मप्रभ बिंबंकारितं श्री मलधार गच्छे प्रतिष्ठितं श्री गुणसुन्दरसूरिभि॰ ।

(२३५२)

सं० १५२५ वर्षे माघ सुदि ५ बुधे प्रा० ज्ञातौ व्यव सागा पु० चाहड भा० चाहिणदे पु० आल्हा छाछा जेता तिहुणा भोजा सहितेन श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णिमा० कछोलीवाल गच्छे श्री विजयप्रभसूरिभि ॥

(२३५३) ३२९

खण्डित पञ्चतीर्थी

· माघ वदि ५ दिने श्री उपकेश ग० श्री कक्कुदाचार्य सन्ताने श्री उपके० आदित्यनाग गोत्रे स्सए वीरम भा० सीतादे ··

(२३९३)

श्री चन्द्रप्रभजी

सं० १६८३ जे० सु० ३ चंद्रप्रभु स्त्र। जिनसीयरास्य केतु प्रामता सा० ठेबागञ्जन स्त

(२३९४)

श्रीशान्तिनाथजी

सं० १७७३ व० माघ सुदि ६ घेदे श्री रासरवाइ शांतिनाथ बिंबं कारापितं प्र। मंतसूरि

(२३९५)

श्री चन्द्रप्रभ जी

संवत् १६०८ सा० नाहू

(२३९६)

श्री नमिनाथ जी

सं० १३९७ श्री नमिनाथ क० प्र० खरत ग० श्री जिनसिंह पू

(२३९७)

श्री ''नाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनचन्द्रसूरिभिः।

(२३९८)

भट्टारक शान्तिनाथ

दादाबाडी

(२३९९)

श्री जिनसुखसूरिजी के चरणों पर

सं० १९११ शाके १७७६ प्रवत्तमान मि। आषाढ व ५ तिथौ श्री सिरदार शहर श्रीसंघेन। श्रीजिनसुखसूरिणां पादुके कारिते। प्रतिष्ठापितं च ॥ प्रतिष्ठितं च। जं। यु। भ। श्रीजिन सौभाग्यसूरिभिः। श्री बृहत्खरतर भट्टारक गच्छे। श्रेयोर्थं। श्रीरस्तु दिन दिन॥

(२४००)

सं० १९११ वर्षे मिती आषाढ कृष्ण पंचम्यां गुरुवारे। यु। ज। श्रीजिनसुखसूरिशा। उ। श्री १०८ श्री शांतिसमुद्र गणीनां पादुका २ कारिता। १। जयमविजमुनिना सपरिवारेण प्रतिष्ठापिता॥ श्री॥

बी दा स र

श्रीचन्द्रप्रभु स्वामीका देहरासर (खरतरगच्छ उपाश्रय)

(२३६०)

मूलनायकजी

संवत १५ स ४८ सानासा (?) सुदी ३ श्री·····भट्टारकश्वर जी·····

धातुप्रतिमाओं के लेख

(२३६१)

सं० १८२६ वै० सु० ६ प्रतिष्ठिता.

(२३६२)

सं० १५९३ जेठ सुदी ३ श्री मूलसंघे भ० श्री धर्मचन्द्र वालसाका गोत्रे सा० चूहड़ सदुपदेशात्।

दादासाहब के चरणों पर

(२३६३)

सं० १९०३ वर्षे शाके १७६८ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे फागुण मासे तिथौ ५ श्री। पादुका प्रतिष्ठितं। जं। यु। दादा श्रीजिनदत्तसूरिभिः दादा श्रीजिनकुशलसूरिभिः २ सूरीश्वरान्।

सु जा न ग ढ़

श्री पनैचदजी सिंघो कारित

श्रीपार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२३६४)

मूलनायक जी की अगी पर

कानमल भोपालमल केसरीमल बाधरमल लोढा सुजानगढ़ संवत् १९९२ माघ बदि १३।

(२३६५)

संव १५०८ शाके १३७३ वर्षे माधव सु० ३ तिथौ सौम्यवा कांचिन्पुर पत ३ प्रतिष्ठितं।

(२४०७)

चांदी के धर्मद्वार द्वार पर

बीकानेर निवासी श्रीमान् सेठ शिखरचन्द जी चेवरचन्द जी रामपुरिये ने चेवरचन्द जी के विवाह में बनाये सं० १९८५

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२४०८)

सं० १५१७ वर्ष माघ सु० ५ शुक्र भावसार छाडा भार्या हेमू सुत भ्रा० परबतेन भा० राजू सुत सहसादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयसे श्री विमलनाथ बिंबं श्री आगम गच्छे श्री देवरत्नसूरिणा मुपदेशेन कारितं प्रतिष्ठापितंच श्रीक्षेत्रे ॥

(२४०९)

॥ सं० १५१० वर्षे आषाढ सुदि २ गुरौ श्री सोनी गोत्रे सा० मूग संताने सा० मिखू पुत्र सा० काल्हू भार्या कमलसिरि पुत्र पूना । सा० काल्हूकेन आत्म पुण्यार्थं श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं श्रीवृहद्गच्छे भ० श्री महेन्द्रसूरिभिः ॥

(२४१०)

॥ सं० १५०२ वर्षे फा० सु० ३ रवौ प्राग्वाट ज्ञा० साह करमा भा० कुतिगदे पु० सा० पोछा भा० वछू चोला भ्रातमूणा स० स्वश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० पूर्णि० कच्छोलीवाल गच्छे भ० श्री विद्यासागरसूरिणामुपदेशेन ॥

(२४११) २३७

॥ सं० १५०७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० रवौ वंश नाहर गोत्र सा० हेमा० विजयचन्द्रसूरि पट्टे भ० श्री धर्ममूर्त्तिसूरिभिः ॥

(२४१२)

संवत् १५६९ वर्षे फाल्गुन सुदि २ सोमे श्रीश्रीमाल ज्ञातीय मं० मना भा० पांची सुत रामा भा० रमादे सुत सवा स्वपितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंबं का० नागेन्द्र गच्छे पाटणेचा श्री हेमरत्नसूरिभिः प्रतिष्ठितं छोलीआणा ग्रामे ।

(२४१३) २३८

॥ सं० १५५५ वर्षे माह सु० २ गुरौ उपकेश ज्ञा० श्रेष्ठि गोत्रे साह आसा भा० रूसदे पु० जड़ता भा० जीवादे पुत्र चांदा युतेन पित्रो श्रेयसे श्री श्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं मड़ाहड़ गच्छे रत्नपुरीय भ० श्रीकमलचन्द्रसूरिभिः ॥

(२४१४)

॥ संवत् १७५१ वर्षे आषाढ वदि ५ दिने शनिवासरे श्री खरतर गच्छे श्री सागरचन्द्र सूरि संतान वा० श्री हेमहर्ष गणि तच्छिष्य पंडित प्रवर अभयमाणिक्य गणिभिः कारापितं ।

[२३७५]

श्री जिनकुशलसूरिजी

स० १९३३ वर्षे मसोत्तम मासे शुभे माघ मासे शुक्ल पक्षे तिथौ ३ श्री तृतीयायां। श्री खरतर गच्छ शृङ्गार हार जगम युगप्रधान चारित्र चूडामणिजी वृहत्भट्टारक गच्छे भट्टारक दादाजी श्री जिनकुशलसूरीश्वरजी पादुका प्रतिष्टितं

[२३७६]

सं० १५१३ श्री काष्टा संघे भटेवर ज्ञातीय सा० खेता भा० गागी पुत्र तिल्हू नित्यं प्रणमति ।

[२३७७]

पचतीर्थी

स० १४९१ माघ सुदि ५ बुध उक्केश नाणगे गोत्रे सं० झादा भा० जइतलदे पुत्र सावकेन सुविधिनाथ विंव कारापितं आत्मश्रेयसे श्री उप० कुकुदाचार्य प्रतिष्ठितं श्री सिद्धसूरिभि ।

दा दा वा ड़ी

चरणपादुकाओं के लेख

[२३७८]

श्री जिनकुशलसूरिजी

॥ सं० १८९९ प्र० शा० १७६४ प्र० मिती वैशाख सुदि १० गुरुवारे श्री सूर्योदय वेलाया घृष लग्न मध्ये दादाजी श्री १०८ श्री जिनकुशलसूरिजी सूरीश्वरान् चरणकमलमिदं प्रतिष्ठितं ॥

[२३७९]

॥ सं० १८९९ प्र० शा० १७६४ प्र० मिती वैशाख सुदि १० गुरु दिने श्री वृ० खरतर गच्छे श्री कीर्तिरत्नसूरि शाखाया उ। श्री श्री भावविजय जी गणिकस्य चरण पादुका प्रतिष्ठितं ।

स र दा र श ह र

श्री पार्श्वनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२३८०)

बाहर दरवाजे पर शिलालेख

श्री देरोजी ॥ सं० १८९७ वर्षे मि० फागुण सुदि ५ शुक्रवारे साहजी श्री माणकचन्दजी कारापितं सूराणा लि० पं० प्र० विजैचन्द खरतर गच्छे उसतो बधू अमेद कारीगर चेजगारै मुलतान ऊभीयै जे रौ काम कीयो। शुभं भवतु ।

(२४२२)

सं० १८९१ मिते माघ शु० ५ बृहत्खरतर। भ। जं। श्री सागरचन्द्र० शाखायां वा० श्री चारित्रप्रमोद गणि पादु० कारि० पं० कीर्तिसमुद्र मुनि प्रतिष्ठितं च। भ। जं। भ० श्रीजिन हर्षसूरिभि ॥ २ ॥

पूर्व की ओर शाला के लेख

(२४२३)

श्री सं० १९४० शाके १८०५ मि० ज्ये० शु० १२ गु० पं। प्र। श्री श्री १०८ आणंदसोमजी प्र ॥

(२४२४)

पं० प्र०खेमसमुद्धान मुनि।

उत्तर की ओर शाला के लेख

(२४२५)

संवत् १९३३ मि० माघ सुदि ५ पं० प्र० श्रीगुणप्रमोदजी मु। पं० प्र० राजशेखरजी मुनि।

(२४२६)

पं० प्र० कीर्त्तिसमुद्र मुनि। पं० प्र० श्री ज्ञानानन्द जी मुनि।

(२४२७)

सं० १९३३ मिति माघ सुदि ५ गुरुवासरे श्री बृहत्खरतर गच्छे पं० प्र० श्रीयशराजजी मुनिना पादुके श्री पूज पं० आणंदसोमेन कारितं प्रतिष्ठितं च। भ। जं। भ। श्रीजिनहंससूरिभि शुभं ॥

रा ज ग ढ (सा र्दू ल पु र)

श्री सुपार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेखाः

२४२८

मूलनायक जी

ॐ संवत् १८५५ वर्ष—सा। श्री देवराज वो ¹ देव इमे मभव—कुमारस्य श्रादात्कारिता छपावदे थे.

२४२९

ॐ संवत् ११५५ व। सटदाद ५ सप्तै श्री देवराज संघे मूडपभ अपदावुसा दीन कारवं कारीव संभारयाद सपा जिवा भरक।

(२३८६)

श्री शान्तिनाथादि पञ्चतीर्थी

सं० १५२७ वर्षे माह सुदि ९ बुधे उपकेश ज्ञातो भद्र गोत्रे। सा० थाहरू पु० सु० पीथा भा० ऊदी पु० लीलाकेन भा० ललतादे पु० जेसा सोना युतेन स्व पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथबिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री उपकेश गच्छे। कुक्कदाचार्य संताने। श्री कक्कसूरीणामाज्ञया तेषां पट्टस्था।

(२३८७)

श्री सुमतिनाथादि पञ्चतीर्थी

संवत् १६०८ वर्षे चैत्र सुदि १३ दिने। ऊकेश वंशे साउंसखा गोत्रे सा० कुंपा पुत्र साह वस्ता भार्या श्रा० वाह्लादे पुत्र सा० जगमाल सा० धनराज प्रमुख परिवार युतेन श्री सुमतिनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः।

(२३८८)

चादी के पाटे पर

चैनरूप सम्पतराम, सिरदारशहर सं० १९८७

गोलछों का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेखा:

(२३८९)

संवत् १९२० का। मि। फा० सु० ७ तिथौ श्री अभिनन्दन जिन बिंबं प्र० भ० श्री जिनहंससूरिभिः।

(२३९०)

संवत १५४८ वर्ष माघ सुदि ३ श्री मूलसंघ भट्टारकजी ······ देवसाह जीवराज

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२३९१)

श्री सुविधिनाथादि पचतीर्थी

संवत् १५१९ वर्षे माघ बदि ९ शनौ श्री ऊकेश वंशे वडहिरा गोत्रे श्रे० कर्म्मसी भा० हासू पु० तेजा सुश्रावेण भार्या सह० पुत्रादि सकुटंब श्री अञ्चलगच्छेश्वर श्री जयकेसरसूरि सूरीणामुपदेशेन मातृ पितृ श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारितं प्रति·····

(२३९२)

श्री सुविधिनाथादि पञ्चतीर्थी

संवत् १५८७ वर्षे वैशाख बदि ७ सोमे ऊकेश वशे रीहड गोत्रे सा० कुरा भा० श्रा० भन्वी पु० सा० धना। मेधा पितृ मातृ पुण्यार्थं श्री सुविधिनाथ बिंबं कारापितं श्री खरतर ग० प्रतिष्ठि (तं) श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः

कमलमणजी गणि पं० गोपीजी मुनि पं० हीरोजी पं० प्र० केवलजी मुनि पं० प्र० खिमलाभ मुनि पं० प्र० अबीरजी मुनि पं० प्र० गुलाबजी वा० सुखजी ठा० १ पं० हिमतु मुनि पं० गुमान श्री राइसरीयो पं० सोमो पं० रुपजो पं० सुखानन्द पं० धनोजी चिरं सदासुख चि० धींगो ठाण ४१ साधु सर्व पं० प्र० कवरमल मुनि महाराज के साथ आदमी प्यादल रथ १ चपरासी हलकारे राजरो पौरो १ छड़ी छड़ीदार सेवग सुगणो चांदी रीछड़ी १ सेवग वारीदार चौधूजी चिरघो नाइ २ नवलो मुख्यानो दरजी तिनसस संवत् १९२० दीक्षा महोच्छव साधु २ योने मि वै० सुद १० दिन भई बणारस पं० नि० वै० सु० १२ राजगढ़ में समासण ७ मिठाई ४ सीर री ३ खुदीयास में १ मि० असाढ वदी १ दिने रिणी नै विहार कर्यो सतरभेदी पूजा हुई मि० वै० व० २ नव अंगी ७ पं० प्र० श्रीमनीरामजी पं० गुजमानी ११ भेद भई वेगार ऊंठ २५ ।

रि णी (ता रा न ग र)

श्री शीतलनाथजी का मन्दिर

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२४३९)

मूलनायकजी श्री शीतलनाथजी

दव धर्मोयं श्राद्ध ! घवेन साजण सुत सम्वत् १०५८ वैशाख सुदि २

(२४४०)

॥ संवत् १५७२ वर्षे फागण वदि ३ बुध उकेश वंशे ब्यव० फाबर भा० सूव द सुत भांखर भार्या देवणि सुत जीवा पाल्हा राजा समस्त कुटुम्ब युतेन श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं पिंपदणीक गच्छे श्रीसूरिभि धंधली गामे वास्त ॥ बभूसल्लेमाकरा मामे ?

(२४४१)

सं० १५३० वर्ष फागुण वदि १३ सोमे उ० ज्ञा० सा० पमोका भा० मापलदे पु० कुम्भा भा० छाजलदे आत्म पुण्यार्थ धर्मनाथ बिं० का० प्र० चमाणीय गच्छे भ० श्री उदयप्रभसूरि पट्टे राजसुन्दरसूरि ।

×(२४४२)

सम्वत् १११७ वर्षे माघ सुदि १२ श्री कोरंट गच्छे उपकेस ज्ञा० काजपमार साखायां रामा भा० रमाई पु० राणा भा० रूपाई पु सुरजनेन स्वश्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिंबं कारितं । प्रतिष्ठितं श्री ककसूरि पट्टे श्री सावदेवसूरिभि घरीवा नगर वास्तव्य ।

चूरू

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२४०१)

मूलनायक जी

संवत् १६८७ वैशाख शुक्ला ३.. ... ...

..श्री विजयसेनसूरिपट्टालंकार जहागीर तपाविरुद धारक भट्टारक विजयदेवसूरिभिः आचार्य श्री विजयसिंहसूरि . सुपरैकारितं ।

(२४०२)

सं० १९०५ वर्षे वैशाख मासे । शुक्ल पक्षे । चंद्रप्रभजिन बिंबं (बी) कानेर वास्तव्य कारापित । प्रतिष्ठित वृहत्खरतर गच्छे भ० श्री जिनसौभाग्यसूरिभि ।

(२४०३)

स० १९०५ वर्षे वैशाख मासे पूर्णिमास्यां तिथौ श्री मुनिसुव्रतजिन बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं वृहत्खरतरगच्छेश जं० यु० प्र० भ० श्री जिनसौभाग्यसूरिभि ।

(२४०४)

आलेमें चरणपादुका

संवत् १८।५० मिते वैशाख शुक्ल ३ भृगुवासरे वृहत्खरतर गच्छे भ० जं० यु० भ० श्रीजिन-कुशलसूरिपादुका चूरू श्रीसघेन कारिता प्रतिष्ठितं च भ० जं० भ० श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ।

(२४०५)

आलेमें चरणों पर

सवत् १९१० मिते माघ सुदि ५ गुरु दिने श्रीजिनदत्तसूरिजी पादुका का० उदयभक्ति गणिना । प्र० वृहत्खरतर गच्छ जं० यु० भ० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि ।

(२४०६)

शिलालेख

अस्यदेवालयस्य जीर्णोद्धार कारापिता प० प्र० श्रीमन्तो यतिवरा ऋद्धकरण नामधेया महोदया सन्ति ।। यह धार्मिक महान् कार्य आपके ही प्रयत्न से हुआ है यह जीर्णोद्धार सं० १९८१ से प्रारंभ होकर स० १९८६ तक समाप्त हुआ है ।

(२४४९)

सं० १५३१ वर्ष मार्ग सुदी ५ सोमे श्री श्रीमाली ज्ञातीय व्य० सूंस भार्या संसारदे सुतव्य० नेमा भा० अमरी सुत जीवादि कुटुंब युतेन निजश्रेयसे श्री मुनिसुव्रत स्वामी बिंबका० प्रति० म० श्री रत्नशेखरसूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः अजाहरा वास्तव्येन।

(२४५०) ३४५

सं० १५०७ ज्येष्ठ सुदी ९ रवौ श्री संडेरगच्छे ऊ० ज्ञातीय गूगलिआ गोत्रे सा० रामा० भा० रुपिणि पु० महिराज जगमालाभ्यां पूर्वज आपकृत निमित्तं श्री शांति बिंबं का प्र० श्री शांति सूरिभिः।

(२४५१) ३४५

सं १४६६ माघ वदी १२ ऊकेश वंश नवलखा गोत्रे सा० नीबा पुत्रेण सा० वास्तणविहा भा० महिराजगा- नाथ बिंबकारित प्र० तपा पक्षे पूर्णचंद्रसूरि पट्टे श्री श्रीसुन्दरसूरिभिः।

(२४५२)

सं० १४५६ व० माह सु० ११ वल्पत्तु वागाडे स्वस० रामड़ आपड़ भा० कर्पूं पुत्र पिरापाल भा० चाहिणीदेव्या सहितेन भ्रात जगमाल पुत्र हीना निमित्तं श्री आदिनाथ बिंबं का० पू० प० रामसेनीय प्रति श्री धर्मदे (१ ष) व सूरिभिः।

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२४५३)

सं० १५१२ वर्ष पौष सुदी १ श्रीमाल ज्ञातीय सा० जगसीह ...चन्द्रप्रभ

(२४५४)

१३ चमुरका - पुत्रचमु

(२४५५)

श्रेयांस- सा---धरसिंघ कारितं।

(२४५६)

सं० १८८१ वर्षे वैशाख सुदी २ सोमे उपकेश सं० कांटिकये पु० स्याम- पो० जयकरदेह ब्रस-

(२४५७)

॥ ६० ॥ संवत् १२०४ वैशाख सुदी १३ श्री माथुर संघ धराय श्री अनंतकीर्ति मत्त मेहव खोहट वाताकडद प्रभृतय प्रणमति ॥ छ ॥

(२४५८)

पद्मावती की मूर्ति पर

संवत् १०६५ वया पदाकद्रनि कारिता ॥

(२४१५)

स० १८२६ वै० सु० ६ मूल संघे भ० सुरेन्द्रकीर्ति स० नन्दलाल म गोत्र कासवारामस्य भाना .

(२४१६)

सं० १६५१ माह सुदि १ श्री चंद्र कारितं.. ... णी गोत्रे सा ....स

दादा साहब की बगीची

पाषाण पादुकाओं के लेख

(२४१७)

मध्यमण्डप मे श्री जिनकुशलसूरि

सं० १८५० मिते माघ शुक्ला ५ श्रीजिनकुशलसूरि पादुके कारिते वा० चारित्रप्रमोद गणिना प्रतिष्ठिते च ॥ श्री वृहत्खरतर गच्छे। भ। जं। यु। भ। श्री जिनचन्द्रसूरिभिः।

(२४१८)

दक्षिणपार्श्वमंडपमे श्री जिनदत्तसूरि

॥ संवत् १८५१ वर्षे वैशाख सुदि ३ तिथौ शुक्र श्रीमत् श्री जिनदत्तसूरि सुगुरुणा चरणाबुजे सकलसंघेन विन्यसिते प्रतिष्ठिते च। भ। श्रीजिनचन्द्रसूरिभि श्री चूरू नगरमध्ये शुभ भवतुतरामिति ॥

(२४१९)

वाम पार्श्व वाले मंडपमें

सवत् १९४० वर्षे शाके १८०५ मिती वैशाख मासे शुक्ल पक्षे ३ तृतीयाया तिथौ बुधवासरे भ। य। दादाजी श्रीजिनचन्द्रसूरिजी चरणपादुका भ। श्रीजिनचन्द्रसूरिभि प्रतिष्ठित श्रीसघेन कारापिता ॥

पश्चिम तरफ की शाला के लेख

(२४२०)

स० १८९१ मिते माघ शु० ५ वृहत्खरतर गच्छे भ। ज। श्रीसागरचन्द्र शाखाया। प०। प्र०। श्रीचन्द्रविजय मुनि पादु० कारि० पं० गुणप्रमोद मुनि प्रतिष्ठिते च भ। ज। भ। श्रीजिनहर्षसूरिभि ॥ २ ॥

(२४२१)

सं० १८६५ मिते माघ शु० ५ वृहत्खरतर भ। जं। श्री सागरचन्द्र० शाखाया उ। श्री जयराज गणि पादु० कारि० वा। चारित्रप्रमोद गणि प्रतिष्ठिते च ज। यु। भ। श्रीजिनहर्ष सूरिभि ॥ २ ॥

श्री शुद्ध समकित का धापक खरतर गच्छ मुकुटमणि जं० यु० प्र० भट्टारक श्री श्री जिनसौभाग्य सूरि जी महाराज रिणी पधार्या ५ दिन पधार्यां श्रावकां घणे हगाम सुं सामेळो कीयो। बीकानेर साधु साथे था० श्री चन्द जी गणि ठा० ५ पं० प्र० श्री भीमजी मुनि ठा० २ पं० प्र० श्रीज्ञानानंदजी मुनि ठा० ४ पं० प्र० श्रीकुशलजी मुनि ठा० २ पं० प्र० श्री कस्तूरजी मुनि ठा० ३ पं० प्र० श्रीहंसराजजी गणि ठा० ३ पं० प्र० श्रीदेवचंदजी मुनि ठा० २ पं० प्र० श्री माण जी मुनि ठा० २ प० प्र० श्री खेमजी मुनि ठा० १ पं० प्र० श्री - जी मुनि पं० प्र० श्री

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, रिणी (तारानगर)

(२४६७)

श्री वीर सं० २४६९ श्री विक्रम सं० १९९९ जठ मासे कृष्ण पक्षे तिथौ ७ गुरुवासरे श्री बीकानेर राज्ये तारानगरे (रिणी) श्री दिगम्बर जैन धर्मपरायण श्रावक वंशोद्भव श्री अग्रवाल श्री रावतमल जी तस्यात्मज श्रीराम जी तस्यात्मज श्री कुन्दनमल जी प्रबचाल श्री प्रतिष्ठितं श्री श्री १००८ पार्श्वनाथ जी भगवान श्री कुन्दकुन्दाम्नायानुसारेण ॥

नौ ह र

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमादि लेखाः

(२४६८)

शिलापट्ट पर

ॐ संवत् १०८४ फाल्गुन सुदि १३ रवौ सर्वमृ वाहडकेन करापित ॥ सूत्रधार गोहर यशाइच सुखेन ॥ ९

(२४६९)

संवत १६९० वैशाख सुदि ५ मई कुहाड जसवराय रै बेटै बिठीचंद प्रतिष्ठा कराई नौहर मध्ये।

(२४७०)

सं १२२० मग (?) सदि २ ।

(२४७१)

सं० १५४४.

२४३०

सवत् ११५५ उ। मट वदि ५ श्री देवसेन संघ देचे इसे मअव दादासा जो भोग वोन कारित सवार सेवा जितावलि।

२४३१

दादासाहेब के चरणों पर

॥ दादाजी श्रीजिनकुशलसूरि जी री पादुका ॥ सवत १८६७ श्री राजगढ मध्ये मिती वैशाख सुदि ३ वार अदीत।

२४३२

पादुका श्री १०८ श्री पाइचन्द ..संवत् १८७१ जेठ सुदि ५ –

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२४३३)

स० १७६२ मगसिर सुदि १० दिने वृहत्खरतर गच्छे क्षेम शाखाया सत्यरत्नजी शि० कानजी।

(२४३४)

स० १५७३ माघ सुदि ६ चन्द्र सा० नाथाकेन वर कम विंव का भ० देवरत्नसूरि।

(२४३५)

श्री धर्मनाथजी दो विंव।

(२४३६)

स० ... माघ सुदि १२ गुरौ साधु नरघा भार्या हावा सुत उदल प्रण।

(२४३७)

श्री मूल सघ ...

(२४३८) ३४१

मन्दिर में भमती से निकलते दीवाल पर लिखित

स १९१९ रा मिती मिगसर सुदि ३ दिने। जं० यु० प्र० भट्टारक वृहत्खरतर गच्छे वर्त्तमान भ। श्री जिनहंससूरिवरा सपरिकरा श्री बीकानेर सुं विहारी ग्रामानुग्राम वंदावी। श्री सरदारशहर वडोपल हनुमानगढ टीवी खडियाला राणिया सरसा नौहर भादरा राजगढ श्री जी महाराज पधार्या सवत् १९२० रा मि बैसा० सुद ६ श्री संघहाकमकोचर मुँहत श्री फतेचन्दजी काळूरामजी वडेहगाम सुं नगारो नीसाण घोडा प्रमुख इसदी आदि देकर सामेले कीयो श्री साधु साथे विहार में वा० नन्दरामजी गणि प० प्र० चिमनीरामजी आदेशे प० प्र० देवराजजी मुनि प० प्र० आसकरणजी मुनि प० प्र० रुघजी मुनि राजसुखजी प० प्र०

(२४८१)

सं० १४४९ वर्ष वैशाख सुद शुक्र १२ विल्हिश्रावक छाहड़ भार्या धाहरादि पु० आमू भा० मनु पु रायणजी रमा द श्रेयोर्थ श्री पार्श्वनाथ बिंबं का० प्र० वृह ग श्री अभयदेवसूरि

(२४८२)

सं० १५०४ वर्षे वै० सु० ३ बु पोरवाड़ ज्ञातीय व्य० जसा भा० जिसमादे पुत्र सुहडसख भार्या सुहवादे सहितेन आत्म श्रेयसे श्री कुंथुनाथ बिं० का० प्र० भीनमाल भ० श्रीवीरदेवसूरि पट्टे भ० श्री अमरप्रभसूरि

(२४८३)

संवत् १२९२ वर्षे आषाढ़ व० ग० सुमतिनाथ बिंबं प्र० मड्डाहरा गच्छ स० श्री दयाहरसूरिभि

(२४८४)

सं० १५१९ वर्ष आसाढ़ व० १ मंत्रिदलीय कांण्या गोत्रे ठ. नागराज सु० ठ० छजुका धर्मिणि सु० सं० श्री अचलदास भार्या वीरसिधि सु स वीरसेन भावश्रेयसे श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र श्री खरतर श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभि ॥ श्री ॥

(२४८) ३५४८

संवत् १४९१ वर्ष ज्येष्ठ सु १२ सोमे ऊसवाल ज्ञातीय सुराणा गोत्रे सा साजुन मातमठि पु० संसारचंद्रकेन आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारितं प्र श्री धर्मघोष गच्छे श्री वि

(२४८६) नाहटा ३५४८ नौ...

सं० १५१ वष वैशाख सु सासुला गोत्रे सा० विजुणा भा० सीतादे पु भा० गोरीव आत्मश्रेयसे श्रीकुंथुनाथ बिंब का प्र श्रीधर्मघोष गच्छे श्रीपद्माणंदसूरि पट्टे भ श्रीपद्माणंद सूरिभि

(२४८७)

सं० १५२८ वर्ष श्री पार्श्वनाथ बिंब प्रतिष्ठितं श्रीजिनभद्रसूरि पट्ट श्री जिनचंद्रसूरिभि श्री खरतर गच्छे।

(२४८८)

सं १५१६ वर्ष फागुण सु० २ गुरुवार श्री संडेर गच्छे व पाल्हु हासी सुत दीपणा पु सा नरसींह भा मानु पु पथ मो भवगाइ पु० हासा भामर मा पु. हर्षसु कुक्षि तस्य पूर्वजान श्री श्रेयांस बिंबं का० श्री यशोभद्रसूरि संतान श्री श्री

(२४८९)

सं० १५५९ माघ सुदि ११ ककमवड़ माहाराज सु. सु. मोखराज नातम पुण्यार्थ श्री पार्श्वनाथ बिंब कृ० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरिभि

(२४४३) 343

स० १५५५ वर्षे चैत्र सुदि ११ सोमवासरे श्री जाहड़ गोत्रे सा० धेनड पुत्र सं० पदा भार्या पदमसिरि पु० सं० देवा भार्या दूलहदे पु० नमराकेन भार्या सुहागदे पु० सोनपाल नयणा श्रीवन्त प्रमुख युतेन श्री शान्तिनाथ बिंब मातृ पुण्यार्थं श्री शान्तिनाथ बिंब का० प्र० श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मानन्दसूरि प० भ० श्री नंदिवर्द्धनसूरिभिः ॥ श्री ॥

(२४४४) 343

सं० १५५० वर्षे आषाढ वदि ८ शुक्रे उपकेश ज्ञातौ श्रेष्ठि गोत्रे मं० दशरथ भा० दूलहदे पु० मं० सत्थवाहेण भा० रयणादे पु० मं० शुभकर श्री श्रीमल्ल सागा पौत्र हरिराज सहितेन पित्रो श्रेयसे पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं उपकेश गच्छे ककुदाचार्य सन्ताने देवगुप्तसूरिभि ।

(२४४५)

सं० १५४७ वर्षे माघ सु० रवौ मंडपे श्री मालज्ञातीय सं० ऊदा भार्या हर्षू पु० सं० खामा भा० पूजी पु० स० जगसी भा० मांऊं पु० सं० गोल्हा भार्यासामा पु० सं० मेघा पुत्री राणी लघु भ्रातृ सं० राजा भा० सागू पु० सं० हीरा भा० रमाई स० लालादि कुटब युतेन निज श्रेयसे बिंबं कारयिता विहरमान श्री श्री सूरप्रभ बिंब कारित । प्रतिष्ठितं श्री श्री तपा गच्छे सोमसुन्दरसूरि श्री श्री श्री लक्ष्मीसागरसूरि पट्टे श्री सुमतिसाधुसूरिभिः रनात् ?

(२४४६)

शान्तिनाथादि चौवीसी

सं० १५५४ वर्षे वृद्ध शाखाया प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० मेरा भा० बूल्ही पु० व्य० हीराकेन भा० जसू पु० कमा केल्हा सालिगदे समस्त पुत्र पौत्र कुटुम्ब युतेन स्व पुण्यार्थं जिन मुख्य श्री शान्तिनाथ चतुर्विंशति पट्ट कारित तपा पक्षे भ० श्री सुमतिसागरसूरि प० भ० श्री हेमविमल-सूरिभि प्रतिष्ठितं ।

(२४४७) 343

॥ संवत् १५२४ ज्येष्ठ सुदि ६ ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे सा० मलयसी पुत्र सा० फफण सुश्रावकेण भार्या पूरी पुत्र सा० मेहा प्रमुख परिवार युतेन श्री शीतलनाथ बिंबंका० प्र० श्री खरतरजिनचद्रसूरिभि ॥

(२४४८)

श्री अभिनन्दनादि चतुर्विंशति

सवत् १५१६ वर्षे पौष वदि ४ गुरौ ईडर वास्तव्य हुंवड ज्ञातीय दो० सारंग भा० जइतू सु० दो० शवा नाम्ना भा० अमकू सु० जूठादि कुटुम्ब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री अभिनन्दननाथ चतुर्विंशति पट्टकारितः श्री वृहत्तपापक्षे श्री श्रीरत्नसिंहसूरिभि प्रतिष्ठित ।

(२४९५) 350

सं० १५१३ वर्षे चैत्र वदि ११ गुरौ ओसवाल ज्ञातीय नाहर गोत्रे सं० सजा पु० सं० पच्छराज भा० पल्हिणदे पु० कान्हू गांगण सज्जन भ्रातृ सुत लोला जाधा जयसिंघाभ्यां श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री धर्मघोष गच्छे श्रीसाधुरत्नसूरिभिः ॥ श्री ॥

(२४९६) 350

संवत् १४६९ वष माघ सुदि ६ दिन श्रेष्ठि ज्ञातीय सा० जाल्हण पुत्र सा० कुन्तचंद्रेण श्री पार्श्वनाथ बिं० कारितं प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्रसूरिभिः

(२४९७)

सं० १४६१ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० शुक्रे प्रा० व्य० काला भा० सूची पु० धरणा झांझा साजण महणाकेन करमादे निमित्तं श्री संभवनाथ बिं० का० प्र० मल्ल० श्री मुनिप्रभसूरिभिः

(२४९८)

सं० १५४९ वष ज्ये० सु० ५ सोमे श्री हुंबड ज्ञातीय तोलाहर आसा भा० धनाई सु० समधर मा० हांसा सुतेन पितृ आसा श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ स्वामी बिंब कारितं प्र० श्री वृद्धतपा पक्ष श्री उदयसागरसूरिभिः ॥ श्री गिरिपुरे

(२४९९)

संयमरत्नसूरि सदुपदेशात् मांक कारितं

(२५००) 350

संवत् १५८७ वर्षे वैशाख सुदि ७ दिने रविवारे। ऊकेश वंशे गणधर गोत्र सा. चांपा भार्या चांपलदे पुत्र सा बीका सा ऊदा बीदाभ्यां सुतेन सुभापकेण सपरिवारेण श्री विमलनाथ बिंब कारितं स्वश्रेयोर्थं श्री खरतर गच्छे श्री जिनहंससूरि पट्टे श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥ शुभंभवतु ॥ छः ॥

(२५०१)

संवत् १७६८ वर्षे वैशाख सुदि ५ बुधे श्री शांतिनाथ बिंबं सा० लखजीसुत सा० मदनजी कारापितं श्री तपागच्छे प्रतिष्ठितं।

(२५०२)

सं० १६१७ वर्षे मा० बादाजी कारितं।

(२५०३)

सं० १५६१ वर्षे म० तेजा पूजनाय।

(२५ ४)

सं० १५७० वर्षे मा० वदि १३ बुधे प्राग्वाट ज्ञातीय लघुसाखानक व्य० राजा भार्या हार्

चरण पादुकाओं के लेख

(२४५९)

संवत् १७८० वर्षे शाके १६४५ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे १० तिथौ शनिवारे भट्टारक श्रीजिनसुखसूरिजी देवलोकं गत' तेषा पादुके श्री रेणी मध्ये भट्टारक श्रीजिनभक्ति-सूरिभि प्रतिष्ठितं शुभंभूयात्। माह सुदि ६ तिथौ।

(२४६०)

सवत् १६५२ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ५ दिने श्री श्री श्री जिनकुशलसूरि पादुके कारित'।

(२४६१)

स० १७७६ वर्षे पौष वदि ६ दिने महोपाध्याय श्री सुखलाभ गणयो दिवं प्राप्तास्तेषा पदन्यास। खरतरे ·।

(२४६२)

संवत् १६७२ वर्षे मगसिर सुदि पाचिम दिने वा० गजसार गणि तच्छिष्य पं० हेमधर्म्म गणि पादुके प्रतिष्ठिते। श्रेयोभवतु। कल्याण श्री॥

दा दा वा ड़ि

चरण-पादुकाओं के लेख

श्री जिनदत्तसूरि जी

(२४६३)

स० १८९८ मि० आषाढ सुदि ५ बुधवारे दादाजी श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणां पादन्यास श्री रिणीनगर वास्तव्य श्रीसंघेन का० प्र० श्री ज० श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि।

(२४६४)

सवत् १८२५ मिती फागण वदि ६ दिने शनिवासरे श्री वृहत्खरतर गच्छे श्री कीर्त्तिरत्न-सूरि सताने महो० माणिक्यमूर्त्ति जी गणि पादुका श्री रिणी प्र० · ····।

(२४६५)

स० १९१४ वर्षे मिती ज्येष्ठ शुक्ला ५ शुक्रवार वा० श्रीगुणनंदनजी गणिना पादुका तत्शिष्य प० मतिशेखर मुनि प्रतिष्ठित।

खरतर गच्छ उपाश्रय में काष्ठ पट्टिका पर

(२४६६)

स० १८ अनोपसहर सुं परम पूज्य परमाराध्य सुगुरु शिरोमणि श्री गच्छ सिणगारक कलियुग गौतमावतार खरतर गच्छ महा श्री जिन शासन दिनकरान एकविध

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२५१२)

सं० १५६३ वर्ष माह सुदि १५ दिन चोपड़ा गोत्रे सं० तोल्हा भा० चीलू नाम्ना पुत्र रत्ना पासा धत्ता श्रीचंद सहितेन स्वश्रेयोर्थं श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभिः।

(२५१३)

सं० १४९१ वर्ष फाल्गुन मासे वदि रवौ ओसवाल वंशे नाहर गोत्रे सा० हेमा भार्या सुलक्षत (?) पुत्र सं० रूपाकेन श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रति। श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखरसूरि पट्टे भ० श्रीविजयचंद्रसूरि ...।

(२५१४)

सं० १५१३ वर्षे वैशाख सुदि १० बुध श्रीउपकेश ज्ञातीय श्रेष्ठि दिवड़ भार्या अमकू सुत मूलाकेन भार्या सूहवदे सुतेन पितृव्य नाथा निमित्तं स्वश्रेयसे श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रति। श्रीसाधुपूर्णिमा पक्षे श्रीपुण्यचंद्रसूरिणामुपदेशेन विधिना श्रावक शुभंभवतु कल्याणमस्तु।

(२५१५)

सं० १८२० वर्ष माघ सुदि ४ अक्षयसरे भ० श्रीजिनलाभसूरिजी प्र० श्री न० वसित ? हीरानंद कारापितम्।

म हा ज न

श्री चन्द्रप्रभु जी का मन्दिर

(२५१६)

शिलापट्ट पर

संवत् १८८१ वर्ष फाल्गुन कृष्ण पक्ष निर्धाया तिथौ शनिवार श्री महाजन ग्राम श्री खरतर गच्छ जंगम युगप्रधान भट्टारक श्री १ ५ श्री जिनचन्द्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनहर्षसूरि विद्यमान राज्ञ श्री ठाकुरां वरीसालजी कंवर श्री अमरसिंहजी विजयिराज्ये श्रीसागरचन्द्रसूरि संतानीय वाचनाचार्य श्रीसुमतिधीरजी गणि तच्छिष्य पं उदयरंग मुनि उपदेशात् सकल श्रीसंघ। श्री चन्द्रप्रभ स्वामी चैत्य कारितं प्रतिष्ठितं च। श्री कल्याणमस्तु॥

(२५१७)

दादाजी के चरणों पर

॥ सं० १८०८ वर्ष वैशाख सुदि ७ दिन गुरुवार श्री जिनकुशल सूरीश्वर पादुकायं प्रतिष्ठितं उपाध्याय श्री मतिकीर्ति गणिभिः कारितं श्री महाजन संघेन।

(२४७२)

सं० १७५२ .... उपाध्याय श्री कनककुमार गणिना पादुके कृते स्थापित

(२४७३)

सवत् १८०८ वर्षे मिती मिगसर सुदि ६ सोमवारे महोपाध्याय श्री ५ श्री श्री गुणसुन्दर-गणिना पादुका श्री नवहर मध्ये देवगता ॥ श्री ॥

(२४७४)

वनारस अमरचद जी स० १८६२ मिती आसोज सुदि ४

(२४७५)

श्री १०८ सु इंद्रभाण जी सवत् १९०३ का० सुदि १३ ।

धातु प्रतिमा लेखा :

(२४७६)

सं० १५०१ वर्षे फा० व० ५ दिने प्राग्वाटव्य० दूला भार्या सलखणादे सुत वरसाकेन भार्या नारिगदे पुत्र गोपादि कुटुंव युतेन निज श्रेयोर्थं श्री शाति विंवं का० प्र० तपा पक्षे श्री सोम-सुन्दरसूरिपट्टे श्री मुनिसुन्दरसूरिभि ।

(२४७७)

स० १५२९ वर्षे माघ सुदि ६ ऊकेश समाणा वासी सा० वना पु० सा० सोहिल पुत्र सा० समधरेण निज श्रेयसे आश्वसेनि जिन त्रिंत्रं कारितं प्रतिष्ठितं श्री तप गच्छनायक श्री सोमसुन्दर-सूरि पट्टे श्री लक्ष्मीसागरसूरिराजाधिराजे । श्री श्री श्री ।

(२४७८)

सं० १५०६ वर्षे वैशाख सु० ६ शुक्रे श्री श्रीमाल जातीय श्र० शिवराज भा० घघातिजामा २। श्रा० जाला भा० श्रीराणीना स्व श्रेयोर्थं श्री सुविधिनाथ विंवं श्री पूर्णिमा पक्षे श्री गुण-समुद्रसूरिणामुपदेशेन कारित प्रतिष्ठितं नव विधिना ।

(२४७९)

स० १६२४ भवाने ? सभवनाथ विंवं का० प्र० हीरविजयसूरिभि ।

(२४८०)

स० १५३० वर्षे पोष सुदि १५ सोमे । श्री मूल संघे भ० श्री जवकीर्तिस्त पदमावती पोरुवाड़ संहा विजय पाने भा० लोढि सुत भूलणा भाडणा भोछी तारण स श्री पत्र ।

हनुमानगढ

श्री शान्तिनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२५२६)

सपरिकर मूलनायक जी

॥६०॥ सं० १४८९ वर्षे माग० सुदि ११ गुरौ रवस्यां । श्री तातहड़ गोत्रे सा० (भा ?) पुत्र गम्भार गोसलमीधर भषा गोसल भक्त घुडु साल्हिग सारंग संघणी (? श्री) प्रभृति तत्र साधु श्री शान्तिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं वृहद् (च्छे) श्री मत्रेश्वरसूरि (?)

(२५२७)

संवत् १५६६ वर्षे आश्विन सुदि ४ भौमवासरे श्री वृहद्गच्छे श्री प्रानास—(?) संतति म । श्री मुनिशेषसूरि शिष्य पा० न्यानप्रभ श्री आदिनाथ बिंबं सा पुत्र सा० वरगाच्य अभ्यमतेन सीयात्रसे रोवेन ?॥ श्री ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२५२८)

श्री शान्तिनाथादि चौबीसी

सं० १५०६ वर्षे मा० सुदि १० दिने श्रीमाल सं० जइता भा० पूजी पुत्र भीमा मा० धर्मिणि नाम्न्या श्रीशान्ति बिंबं कारितं प्र तपा श्रीजयचन्द्रसूरि शिष्य श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥छ॥

(२५२९)

श्री नमिनाथादि चौबीसी

सं० १५ ७ ज्ये ब० ६ गुरौ मा० व्य० अभयपाल भा० अहिवदे पुत्र व्य आका मा० बाटमदे चांपू पुत्र व्य० देल्हा गूठा साता सीमाके भा० रमति मरमादे सोनलदे छीलादे पुत्र धीरपाल छोहट धीरदासादि युतै श्री नमिनाथ चतुर्विंशति पट्ट का० प्र तपा श्रीसोमसुन्दरसूरि शिष्य गच्छनायक श्रीरत्नशेखरसूरिभिः ॥श्रीरस्तु॥श्री॥

(२५३०) ८५४

॥१ ॥ सं १५३४ वर्षे मार्गसिर वदि ६ सोमे ऊसवाल ज्ञातीय आयरी गोत्रे लुणगर संतान सा० धडसी मा वील्हदे पु अमरा मा० जेसलदे पु० रणमल्ल सूहव युतेन आत्मपुण्यार्थं श्रीकुंथुनाथ बिंबं कारितं । श्रीऊसवाल गच्छे कुकदाचार्य संताने श्रीकक्कसूरि पट्टे प्रति० श्रीदेवगुप्तसूरिभिः ॥छ॥

भा द्र ा

श्री जैन श्वे० मन्दिर

(२४९०)

श्री पार्श्वनाथजी

स० ११३० ज्येष्ठ सुदि ६ तिथौ .. .. ..

(२४९१)

स० १७५७ वर्षे वशाख सुदि . .. .

लू ण क र ण स र

श्री आदिनाथजी का मन्दिर

(२४९२)

शिलापट्ट पर

॥ समत् १९०१ विरषे मिति प्रथम श्रावण वदि १४ दिने मन्दिर करापितं सावसुखा सुजाणमल जी बुचा ठाकुरसी बाफणा महिसिंघ गोलछा फूसाराम बो। हीरानंद गुरां श्रीवा। दयाचद री चौमास मध्ये करापित उपदेशात् करापित बगसा इमामबगस कृतं अस्ति वारअदीतवार ॥

(२४९३)

मूलनायक श्री सुपार्श्वनाथजी

स० १५४८ वर्षे

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२४९४)

स० १४९९ वर्षे फागुण वदि २ गुरौ श्री वहुरा गोत्रे श्री श्रीमाली जातीय स० झगड़ा भा० रूपादे सु० णाल्हा भा० सूहवदे सु० कउझमाला धठसी सहणा आत्मश्रेयसे श्रीचद्रप्रभु विं० का० श्रीकालिकाचार्य सताने प्र० श्रीवीरसूरिभि श्री ॥

बी का ने र

श्री बृहत् ज्ञानभण्डार (बड़ा उपासरा)

(२५३८)

शिलापट्ट पर

श्री महोपाध्याय दानसागरादि पुस्तकभण्डार शिलापट्ट सं० १९५९ चै (?) सु। १ (?) १ भण्डार के सब ग्रन्थों का एक बड़ा सूचीपत्र है, जिसको सब कोई देख सकते हैं ॥ २ यदि कोई घर ले जाकर पुस्तक देखना चाहे तो पुस्तक का कुछ ही अंश दिया जावे पुरी पुस्तक किसी को नहीं दी जावेगी और दिये हुए पत्र पीछे आने पर दूसरे दिये जा सकेंगे। ३ भण्डार से पुस्तक परिचित पुरुषों को ही दी जावेगी ले जाने वाला ७ दिन से अधिक अपने पास पुस्तक नहीं रख सकेगा ॥ ४ ॥ नकल उतारना चाहे तो यहाँ ही उतार सकता है पुस्तक को हिफाजत से रक्खे। ५ यदि ले जाने वाला और लिखने वाला बिगाड़ दे तो कीमत उससे ली जावेगी और ग्रन्थ भी उसको नहीं दिया जावेगा ॥ ६ ॥ ग्रन्थ देन के समय या लेने के समय रजिस्टर में लिखा जायगा ॥ ७ ॥ ग्रन्थ देने-लेने का अधिकार संरक्षक को ही होगा। यह ज्ञानभण्डार उ। श्री हितवल्लभगणि स्थापित ॥

धातु प्रतिमाओं के लेख ॥

(२५३९)

श्री चन्द्रप्रभादि पञ्चतीर्थी

॥ सं० १५७३ वर्षे वैशा० सु० ६ सोमे अहम्मदनगर वास्तव्य श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व० ममगल भा० माणकदे सु० व० धनदत्तकेन भा० कलवादे सु० लाला लटकण जोधा प्रमु० कुटुंब युतेन स्व श्रेयसे श्री चन्द्रप्रभु स्वामि बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री वृद्ध तपा पक्षे श्रीलब्धिसागरसूरि पट्टे श्रीधनरत्नसूरि महा० श्रीसौभाग्यसागरसूरिभिः ॥

(२५४०) 856

श्री आदिनाथादि पंचतीर्थी

॥ सं० १५२४ वर्षे मा वा वद २ सोम फू० भ गोत्रे सा० साल्हिग भा० राजलदे पु० सा० भेसिंघ श्रावकेण श्रीआदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः।

उ० श्रीजयचन्द्रजी के ज्ञानभण्डार में

(२५४१)

अष्टदलकमलाकार

अथ शुभ संवत्सरेऽस्मिन नृपति श्री विक्रमादित्य राज्यात् १८९५ वर्षे मासोत्तम मासे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे पंचम्यां तिथौ चन्द्रवासरे रेवती नक्षत्रे श्री बृहत् खरतर गच्छाधीश युग-प्रधान भट्टारक श्री श्री श्री जिनसौभाग्यसूरिभिः विजयराज्ये श्री सागरचन्द्रसूरि शाखायां पं। प्र। श्री चतुरनिधान जी तशिष्य पं०। प्र। श्रीचन्दजी तस्य शिष्य पं० ईश्वरसिंहेन आत्म पुण्यार्थ अष्टदलकमल कारापितं श्री विक्रमनगर मध्ये। श्री शुभ। श्री पातसाहजी रतनसिंहजीराज्ये।

सुत विजा भार्या विजलदे सुत रामा भार्या रमादे पौत्र भामा भार्या मरघदे भ्रातृ ताउआ कुटुंब युतेन राज्ये श्रीपार्श्वनाथ बिंबं कारापितं तपागच्छाधिराज श्रीहेमविमलसूरिभि' प्रतिष्ठितं। मोहनपुरे

पाषाण निर्मित पादुकाओं के लेख

(२५०५)

दादा साहब के चरणों पर

दादाजी श्री ज । यु । प्र श्री जिनदत्तसूरिजी, श्री जिनकुशलसूरिजी सूरीश्वराणां चरणन्यास' । संवत् १९३६ रा शाके १८८१ प्र० मिती फाल्गुन शुक्ला तृतीया तिथौ श्री कीर्त्तिरत्न-सूरि शाखाया प० प्र० सदाकमल मुनि कारापिता प्रति ।

(२५०६)

सं० १७९२ वर्षे मिती भादवा वदि ७ दिने वा० श्रीराजलाभजी गणि तच्छिष्य वा० श्रीराजसुन्दरजी गणिनां चरणपादुका प्रतिष्ठिता ।

(२५०७)

संवत १८६७ वर्ष शाके १७३२ प्रवर्त्तमाने मासोत्तमे आषाढ मासे कृष्ण पंचम्यां श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखाया वा० श्रीमहिमारुचि जीकाना पादुके प्रतिष्ठिते। शुभ भवतु तराम्

(२५०८)

संवत् १७११ वर्ष ज्येष्ठ सुदि ३ तिथौ गुरुवासरे भ० श्रीजिनराजसूरि शिष्य वा० मानविजय शिष्य वा० कमल गणिना पादुके ।

(२५०९)

संवत् १७१ (सुत ९, प्रतिष्ठित) वैशाख वदि १० बुधे वा० श्रीजयरत्न गणि चरण पादुका प्रतिष्ठिता ।

कालू

श्री चन्द्रप्रभु जी का मन्दिर

(२५१०)

सं० ११५५ उ ।। उ० द द दिस से श्री देवसेन सघे.... .. ... ।

(२५११)

दादा साहब के चरणों पर

स० १८६५ वैशाख वदि ७ रवौ श्री कालूपुरे भ० श्री जिनहर्षसूरि प्रतिष्ठितौ ?

श्रीजिनदत्तसूरि २ भ० श्री जिनकुशलसूरि ।

लुंका गच्छ का उपाश्रय (सुराणों की गुवाड़)

(२५४६)

२ स्वस्ति श्रीमद्धिसुद्धि जयोमांगल्यमभ्युदयपास्तु ॥ सं० १८८७ शाके १७५२ प्रवर्त्तमान मासोत्तम मासे माघव मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां गुरुवारे श्रवण नक्षत्रे आयुष्मान् योगे श्री मन्नृपति शिरोमणि महाराजाधिराज श्री १०८ श्री रतनसिंहजी विजयराज्ये श्री वृहद् नागोरी लुंका गच्छे पूज्याचार्य शिरोमणि पूज्याचार्यजी श्री १०८ श्रीलक्ष्मीचन्द्रजित्सूरिभिः महर्षि श्री रामचन्द्रजी महर्षि श्री उमेदमलजी महर्षि श्रीपरमानन्दजी प्रमुख ठाणे ११ श्रीसंघ सहिते पौषधशाला कारिता वरक्षाण मानूजी सुत कासवकेन कृत साधवेर तिष्टतु । यावन्मेरु महीपीठे यावचन्द्र दिवाकरौ । तावन्नंदतु शालेयं सश्रीकात् दिनं शुभम् ॥ श्रीरस्तु ॥

श्री जिनकृपाचन्द्रसूरि उपाश्रय (रांगड़ी का चौक)

(२५४७)

अथ शुभाब्दे १९२४ शाके १७८९ चैतम्मिते ज्येष्ट मासे शुक्ल पक्षे पञ्चमी तिथौ गुरुवासरे । श्री मद्वृहत्खरतर गच्छे । जं यु । भ । प्र । श्री जिनसौभाग्यसूरीश्वराणामाज्ञया श्री । कीर्तिरत्नसूरि शाखायां च । श्रीअमृतसुन्दर गणि तच्छिष्य वा । श्री जयकीर्ति गणि तच्छिष्य पं० प्र० प्रतापसौभाग्य मुनि तदन्तेवासिना पं० प्र० सुमतिविशाल मुनिनाऽयंशुभोपाश्रयः कारित पं० समुद्रसोमादि हेतवे ॥ बीकानेर पुराधीश राजेश्वर शिरोमणि श्री सरदारसिंहास्यो नृपो विजयते तराम् १ यावन्मेरुर्महीमध्ये यावद्वरे शशि भास्करौ । तावत्साध्वाश्रमश्चेषस्थिरं तिष्टतु सर्व्वदा २ । कारीगर सूत्रधार । श्रीरामा । श्री

यति अनोपचन्द्र जी का उपाश्रय (रांगड़ी का चौक)

(२५४८)

॥ सं० १८७९ मि । मै । सु । ३ । महाराजाधिराज महाराज श्रीगजसिंहजी महाराजाधिराज महाराज श्रीसूरतसिंहजी शरीर सुखाय मियं वसुधा । श्री कीर्तिरत्नसूरि शाखायां व । श्री अमरविमलजी गणि व । श्रीअमृतसुन्दरजित्तम्य वचा ते कारित

रामपुरियों का उपाश्रय (रामपुरियों की गुवाड़)

(२५४९)

चरण-पादुकाओं पर

श्रीमद्वृहत्तपागच्छीय युगप्रधान श्री श्री १००८ श्रीपार्श्वचन्द्रसूरिजी का चरण पादुका । श्री मद्वृहत्तपागच्छीय भट्टारक श्री श्री १० ८ श्रीभातृचन्द्रसूरिजी का यह चरण-पादुका । वीर सं० २४५३ वर्षे मिती आषाढ़ शुक्ला ९ दिने प्रतिष्ठापिते इमे चरणपादुके ओसवाल वंशे रामपुरिया गोत्रे मेघराजजी सुत अभयचन्द्रेण स्वद्रव्येण स्वपर कल्याणार्थं इमं द्वे चरण पादुके कारापिते प्रतिष्ठापिते च ॥

सूरतगढ़

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(२५२०)

मूलनायक श्री पार्श्वनाथजी

स० १९१५ माघ सुदि। २ शनौ श्री पार्श्व जिन बिंबं भ० श्री जिन सौभाग्यसूरिभि. प्र। ढिघ सा। लालचदेन का। खरतर गच्छे।

(२५२१)

लकड़ी की पटरी पर

सं० १९१९ रा वर्षे शाके १७८४ प्रवर्त्तमाने वशाख सुदि सप्तम्यां ७ तिथौ इन्दुवारे तद्दिने श्री सूरतगढ वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन श्री पार्श्वनाथ चैत्य करापितं भ। जं। यु। प्र। श्री जिन-हससूरिभि प्रतिष्ठितं पं। प्र। लाभशेखर पं। राजसोम उपदेशात्॥

(२५२२)

श्री पद्मप्रभादि पञ्चतीर्थी

॥ सवत् १५४० वर्षे वैशाख सुदि १० बुधे श्री ब्रह्माण गच्छे श्रीमाल ज्ञातीय श्रेष्ठि रावा भार्या श्रीयादे सुत सीमाकेन भार्या भावलदे महितेन सु० जीवा युतेन स्वपूर्वज श्रेयार्थ श्री पद्मप्रभ बिंब कारापितं प्रतिष्ठितं श्रीबुद्धिसागरसूरिभि बदहद्र वास्तव्य ॥

(२५२३)

संवत् १५६६ वर्षे माघ वदि २ रवौ श्री पिप्पल गच्छे पं० वीरचद्र शिष्य पं० कीर्त्तिराजेन श्री पार्श्व बिंबं कारापित प्र० श्रीगुणप्रभसूरिभि ॥

(२५२४)

पाषाण के चरणों पर

। सं० १९१७ मि। फा। ब। ८ दिने भ। श्रीजिनकुशलसूरि पादुके सूरतगढ़ वास्तव्य समस्त श्रीसंघेन का। जं। यु। प्र। भ। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि प्र।

(२५२५)

सं० १९१७ मि। फागण वदि ८ दिने श्रीबृहत्खरतर गच्छे श्रीकीर्त्तिरत्नसूरि शाखाया पं। प्र। लाभशेखर मुनिना पादुके। भ। जं। यु। प्र। श्रीजिनसौभाग्यसूरिभि. प्र।

महोपाध्याय रामलालजी के उपाश्रय का लेख

(२५५३)

॥ ॐ । ह्रीं । श्रीं । नमः ॥

॥ ब्रह्मा विष्णु शिव शक्ति आदि स्वरूप श्री ऋषभ वीतरागाय नमः दादासाहिब श्री जिनकुशलसूरि संतानीय क्षेमधाड़ शाखायां श्री साधुजी महाराज पं। प्र। श्रीधर्मशील मुनि तच्छिष्य पं। प्र। श्री हेमप्रिय मुनि पं। प्र। कुशलनिधान मुनि तच्छिष्य पं। प्र। श्री युक्ति वारिध रामलाल ऋद्धिसार मुनिना ओसवाल माहेश्वरी अग्रवाल ब्राह्मणादि- समस्त बीकानेर वास्तव्य प्रजा के कुष्ट भगंदरादि अनेक कष्ट मिटाय कर ये विद्याशाला तथा ज्ञानशाला स्थापना करी है, इसमें सर्व मतों के पुस्तक का भण्डार स्थापन करा है, इसमें ऐसा नियम किया गया है कि पुस्तक तथा विद्याशाला कोई लेवेगा या बेचेगा सो सर्व शक्तिमान परमेश्वर से गुनहगार होगा ऐसा सपूतों की मालकी एक गद्दीधर को रहेगी अगर कपूताई करेगा दीक्षा लजावेगा तदारक पंच तथा कमेटी करेगी सं । १९५४ वै । शु । ५

उपकेश गच्छ का उपाश्रय

(२५५४)

श्री गणाधिपतये नमः । संवत १७९५ वर्ष वैशाख सुदी ३ तिथौ गुरुवार श्री मच्छ्री उपकेश गच्छे भट्टारक श्रीदेवगुप्तसूरि । शिष्य भामसुन्दरजी तत्शिष्य पण्डित श्रीकल्याण सुन्दरजी लब्धिसुन्दरेण पौषधशाला कारापितं ॥ श्रीरस्तु ॥

नापूसर उपाश्रय लेख

(२५५५)

॥ संवत् १८११ वर्ष मागसिर मासे कृष्ण पक्षे १ तिथौ शनिवारे पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रे एन्द्र योग वणिजकरणे एवं पञ्चांग शुद्धौ बृहत्खरतर गच्छे भट्टारक श्री १०५ श्री श्री जिनलाभसूरि जी विजयराज्ये क्षेमकीर्त्ति शाखायां महोपाध्याय श्री १०५ श्रीरत्नशेखरजी गणि शिष्य मुख्य पं। प्र। रूपचन्दजी गणि भ्रातृ पंडित प्र दीपकुशलजी भ्रातृ पं। प्र। महिमामूर्त्तिजी गणि लघु भ्रातृ पं। प्र। लक्ष्मीसुख तत्शिष्य पा० हस्तरत्न गणि भ्रातृ पण्डित ऋद्धिरत्न भ्रातृ पण्डित ज्ञानकल्लोल भ्रातृ पण्डित मुनिकल्लोल तत्शिष्य पण्डित मुन्निसेन भ्रातृ पण्डित महिमाराज सहितेन वा० हस्तरत्न गणि उद्योपमन नवीनाशाला कारापिता नापूसर मध्ये। पारख सवसीजी तत् भ्रातृ नथमलजी हिमतसंघजी लालचन्दजी सूरजमलजी दौलतसंघजी सग्रवदानजी पदम-संघ जी भवानीसंघ सहाय्य सा- संघ आग्रह पं। प्र। महिमामूर्ति गणि पुण्याय प्र (पौषधशाला) कारापिता। उ० ५५ (?) लागा (हस्तलिखित पत्र से)

(२५३१) 355

स० १५३३ वर्षे मार्ग सुदि ६ शुक्रे ऊकेश ज्ञातीय बहुरा गोत्रे सा० साजण भा० घेली पु० सा० जेसा भा० जसमादे पु० सा० फमण पेथा। जेला। सोनादि भ्रातृ युतेन फमणेन भा० पाल्हणदे सहितेन श्री आदिनाथ बिंबं का प्र० श्री हर्षसुन्दरसूरिभि ॥

(२५३२)

श्री पार्श्वनाथादि पचतीर्थी 355

स० १५४९ वर्षे वै० सु० ९ रवौ उसवाल बुहरा गोत्रे सहनण भा० नायकदे पुत्र गया भार्या जीवादे पुत्र नाथादि युतेन स्व पुण्यार्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारापितं प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्रसूरिभिः धाडीवा। ज्येष्ठ वदि १ दिने

(२५३३)

श्री कुंथुनाथादि पचतीर्थी 355

सं० १५५९ वर्षे मागसिर वदि ५ सुचिंती गोत्रे धमाणी शाखाया सा० तोल्हा भा० तोल्ह-सिरि पुत्र सा० हासा भा० हांसलदे पुत्र साडाकेन भा० सक्रतादे युतेन स्वपुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंब का० प्र० श्री उपकेशगच्छे श्रीदेवगुप्तसूरिभिः। नागपुर वास्तव्य।

(२५३४)

श्री अजितनाथादि पचतीर्थी 355

सवत् १५९५ वर्षे माघ वदि २ बु० उस० डागी गोत्रे सा० रूपा भार्या जीऊ पुत्र भीमा देवा छाछा देवा भार्या हीरू पुत्र आत्म पुण्यार्थं श्री अजितनाथ बिंबं कारापितं कनरसा (?कृष्णर्षि) गच्छे भ० श्रीजेसघसूरिभि। प्रतिष्ठिता शुभंभवतु। मादडी वास्तव्य ॥

(२५३५)

श्री चन्द्रप्रभादि पचतीर्थी 355

सं० १४७८ वर्षे वैशाख सु० ३ शुक्रे उसिवाल ज्ञातीय लोढा गोत्रे सा० डाहा भार्या गेलाही पु० सा० खल्ह भार्या खेताही पु० वीरधवल निमित्तं लघु भात्रि सा० वीरदेवेण श्रीचन्द्रप्रभ स्वामि बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं रुद्रपल्लीय गच्छे भट्टारिक श्रीहर्षसुन्दरसूरिभिः।

(२५३६)

श्री आदिनाथादि पचतीर्थी

स० १५४२ वैशाख सु० ९ श्री ऊकेश वंशे। झोटि गोत्रे। सा० नानिग भा० वयजी पु० सहजा सावण मेवा स्तिद्र (?)पाल युतेन स्व पुण्यार्थं श्री आदिनाथ बिंबं का। प्रतिष्ठित श्री चैत्र गच्छे। भ० श्रीसोमकीर्त्तिसूरिभि

(२५३७)

सं० १४९९ सा ... क . सातप्रभा . श्रयसे श्री अरिनाथ (?) बिंबं कारितं प्र० श्री . - सूरिभि

(२५६०)

गोगा दरवाजा के बाहर

श्री गणेशायनम आथरमशाला साधु संतना—रस या मुसाफिर आ कारे ठारै यौ वास्त। ।मु। आसकरणजी कोचर आ धर्मशाला बनाईहै सं० १९५० मिती आषाढ़ प्रथम सुद २ गुरुवारे।

(२५६१)

बीदासर की बारी के बाहर

केशरीचन्द\मुकनचन्द (बोंठिया) की तरफ से धरमानन्दजी के उपासरे को भेंट।

(२५६२)

लौंका गच्छ की बगेची

॥ श्री ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ संवत् १८७६ शा० १७४१ प्रवर्त्तमान मासोत्तम मासे माघ मासे शुक्ल पक्षे २ द्वितीयायां सोमवारे घट्या २५ धनिष्ठाभे घट्या ५५ सिद्धयोगे घट्या २० कौलवकरणे एवं पंचांग शुद्धे दिन। श्री बृहद्भागपुरीय लुंका गच्छे। पूज्याचार्य श्री १०८ लक्ष्मीचन्द्रजी विजयराज्ये। अमरसोत शाखायां पूज्य महर्षि श्री उदयचंद्रजी तच्छिष्य पूज्य महर्षि श्री राजसीजी तच्छिष्य पूज्य महर्षि श्री वीरचंद्रजितां पादुका शिष्यर्षि मोतीचंदजित् परमानन्दजिद्भ्यां प्रतिष्ठिता। श्री मन्नृपति पति श्री सूरतसिंहजी विजयराज्ये। छत्रिकेयं वरस्याण कासमकेन कृतासाधिरं तिष्ठतु॥ श्रीरस्तुः॥ कल्याणमस्तु॥

(२५६३)

॥ श्री ॥ श्री गणेशायनमः संवत् १८७६ शाके १७४१ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे माघ मासे शुक्ल पक्षे द्वितीयायां सोमवारे घट्या २५ धनिष्ठाभे घट्या ५५ सिद्धयोगे घट्या २० कौलवकरणे एवं पंचांग शुद्धे दिने श्री बृहद्भागपुरीय लुंका गच्छे पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री लक्ष्मीचंद्रजी विजयराज्ये अमरसोत शाखायां पूज्य महर्षि श्री स्वामीदासजी तत्शिष्य पूज्य महर्षि श्री पुण्यसीजी तच्छिष्य पूज्य महर्षि श्री उदयचन्द्रजी तच्छिष्य पूज्य महर्षि श्री राजसीजी कानां पादुका पौत्रशिष्यर्षि मोतीचन्द्रजित् परमानन्द जिद्भ्यां प्रतिष्ठिता श्री मन्नृपतिपति श्री सूरतसिंहजी विजयराज्ये॥ छत्रिकेयं कासम दरमानकेन कृता साचिरं तिष्ठतु॥ श्रीरस्तु॥

(२५६४)

श्री संवत् १८७७ शाके १७४२ प्रवर्त्तमान मिती माघ शुक्ल ११ सोमवार मृगशिर नक्षत्रे पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री जीवणदास जितां पादुका प्रतिष्ठिता पूज्याचार्य श्री लक्ष्मीचन्द्रजिति राज्ये चेयं महर्षि मोतीचंद जित् परमानंद जिद्भ्यां कारिता।

उपाश्रयों के शिलालेख

वड़ा उपाश्रय (रांगड़ी का चौक)

(२५४२)

उदय हुवै चिदु भान इल मेरु मही ध्रम धाम।
तां लग ध्रमशाला रतन अचल रहौ अभिराम ॥ १ ॥

खरतराचार्य ग० उपाश्रय (नाहटों की गुवाड़)

(२५४३)

स्वस्ति श्री संवत् १८४५ वर्षे शाके १७१० प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे भाद्रवमासे कृष्ण पक्षे जन्माष्टमी तिथौ रविवासरे महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री सूरतसिंहजी विजयराज्ये भट्टारक श्री १०८ श्री जिनचंद्रसूरिजी विजयराज्ये उपाध्यायजी श्री ५ श्रीजसवन्तजी गणि वा० पद्मसोम प० मल्लूकचन्द्र मुपदेशात् श्री बीकानेरी वृहत्खरतराचार्य गच्छीय समस्त श्रीसंघेन पौषधशाला कारापितं कृत्वा च उस्ता असमान विरामेन। श्रीरस्तु.।

सीपानियों का उपाश्रय (सिंघीयों का चौक)

(२५४४)

स० १८४६ वर्षे मिती माघ सित पूर्णिमा तिथौ २५ पं० श्री १०८ श्रीजसवन्तविजयजी तत सुशिष्य पंडित ऋद्धिविजय गणि उपदेशात् समस्त सीपानी सघेन उपाश्रय कारापितं ठाणै ११ चौमासा रह्या सवाई शुभकरण सूत्रधारेण कृतं ॥

लुंका गच्छ का उपाश्रय (सुराणों की गुवाड़)

(२५४५)

१ स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धिर्जयो मागल्योभ्युदय चास्तु ॥ सं० १८९५ शाके १७६० प्रवर्त्तमाने मासोत्तममासे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्यां गुरुवारे स्वाति नक्षत्रे गंड योगे श्री मन्नृपति शिरोमणि महाराजाधिराज श्री १०८ श्री रत्नसिंह जी विजय राज्ये ॥ श्रीमद् वृहद् नागोरी लुंका गच्छे पूज्याचार्य शिरोमणि पूज्याचार्य जी श्री १०८ श्रीलक्ष्मीचन्द्रजित्सूरिभि महर्षि मानमलजी महर्षि भागचन्दजी महर्षि टीकमचन्दजी प्रमुख ठाणै १९ श्रीसंघ सहितेन पौषधशाला कारिता दरकाणा कासवकेन कृत साचचिर तिष्टतु। श्रीरस्तु ॥

फूलचंदाणी वस्तुत्रस बादरमलेन स्वहस्ते कारापिता विधिपूर्वक महामहोत्सवे प्रतिष्ठाकारितं माता मूर्ति प्रतिष्ठा पश्चात् समस्त सुराणा भाइपानां समर्पितं । देवी पूजनं कुरु । सैसाणी माता राय करज्योघुस सहाय । बादरमलो बीनवे, चोवरसण महामाय ।।१।। दस्कत मुनिश्री १०८ श्री कसरी चंद्रेण शुभंभवतु कल्याणमस्तु

(२५७१)

हाकिम सुराणों की बगेची

श्री गणेशाय नमः ।। संवत् १८६१ वर्षे शाके १७२६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे शुभ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथौ द्वितीयायां २ रविवासरे घट्य १६।४४ उत्तरा भद्र पक्ष नक्षत्रे घट्य २०।४९ शुभ माना पयोगे घट्य । ४।६ । एवं पंचांग शुद्धौ सुराणा साहजी श्री मलूकचंदजी वस्तुत्रेण श्री कस्तूरचंदजी करम छत्रिका पादुका स्थापिता प्रतिष्ठापिता चिरंतिष्ठतु ।

सती स्मारक लेखाः

(२५७२)

संवत् १५५७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ९ बृहस्पतिवार श्री मातासती माणिक द दवलोके गत शुभं भवतु कल्याणमस्तु ।। [१]

(२५७३) ३६४

।। ६० ।। स्वस्ति श्री ऋद्धिवृद्धि हर्षा मंगलाभ्युदयश्च ।। संवत् १६६९ वर्षे वैशाख सुदि १४ शुक्रवारे श्री वैदगोत्रे मं। त्रिभुवन पुत्र मं। सावूल पुत्र मं। लाखण पुत्र मं। साधारण पुत्र मं। दीसा पुत्र मं० थिवरा पुत्र मं० रत्ना पुत्र मंत्री सिघियावास भार्या सुजाणद सती दवलोकेगत शुभंभवतु लिखतं मयेन महेस सूत्रधार माईदास उरा कवे।। कल्याणमस्तु ।। श्रीरस्तु ।।

(२५७४) ३६५

श्री गणेशाय नमः स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धिजयो मंगलाभ्युदयश्च ।। संवत् १७५२ वर्षे शाके १६१७ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे षष्ठी ६ तिथौ भौमवार श्रीबीकानयर वैद गोत्रे मंत्री श्री ऋपमदासजी तत्पुत्र गिरधरदास सती दवलोक गता बोथरा गोत्रे साह गोपालदास वत्पुत्री मृगासती दवगति प्राप्ति शुभं भवतु कल्याणकारक सार कृत श्री ।। श्री ।। [२]

---

१ उदों की बारी के बाहर-सुराणों बेरों समशानों के बीच।

२ १ उदों की बारी के बाहर-बेरों के समशानों के पास।

दानशेखर उपासरा (रांगड़ी का चौक)

(२५५०)

(१) पृथवी तल माहे प्रगट' वडा नगर वीकांण ।
(२) सुरतसींह महाराजजुः राज करै सुविहाण ॥१॥
(३) गुणी क्षमामाणिक्य गणि' पाठक पुण्यप्रधान ।
(४) वाचक विद्याहेम गणि सुप्रत सुख संस्थान ॥२॥
(५) सय अठार गुणसट्ठ में महिरवान महाराज ।
(६) नव्य वनाय उपासरो दियो सदा थित काज ॥३॥

उ० जयचन्द्र जी के उपाश्रय का लेख

(२५५१)

श्री गणेशाय नम

घर यति लक्ष्मीचन्द जी रो छै ॥ स० १८२२ आषाढ़ वदि १० वि

(२५५२)

॥ श्री वीर स० । २४२१ विक्रम सवत् १९५१ आश्विन शुक्ल पक्षे विजयदशम्यां श्री विक्रमपुरवरे श्री महाराजाधिराज गंगासिंहजी बहादुर विजयराज्ये चतुर्विंशतितम जगदीश्वर जैन दिवाकर पुरुषोत्तम श्री महावीर स्वामी के ६५ पाटे कौटिक गच्छ चन्द्रकुल वज्रशाखा श्री वृहत् खरतर विरुदधारक श्री जैनाचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वरजी के अंतेवासी विद्यानिधान पूज्य पाठक श्री उदयतिलकजी गणि तच्छिष्य पूज्य पा० । श्री अमरविजयजी गणि त । पु । श्री लाभकुशल जी गणि त । पु । श्री विनयहेम जी गणि ।त। पू । सुगुण प्रमोद जी गणि त । पू । श्री विद्याविशाल जी गणि । त । पू । पाठक वर्त्तमान श्रीलक्ष्मीप्रधानजी गणि उपदेशात् त । पं० मोहनलाल अपर नाम मुक्तिकमल मुनिना तत्वदीपक मोहन मण्डली सर्व सघस्य ज्ञान वृद्ध्यर्थं श्री जैन लक्ष्मीमोहनशाला नामकं इदं पुस्तकालयः कारापितं ॥ दूहा ॥ जब लग मेरु अडिग है, जब लग शशि अरु सूर । तब लग या शाला सदा रहजो गुण भरपूर ॥१॥ हमारा सर्व्व मकान भण्डार किया पुस्तकादिक को कोई काले कुशिष्य वेच सकै नहीं ।

१८५१ वर्षे शाके १७१६ प्रवर्त्तमाने आश्विन मासे कृष्ण पक्षे तिथि अमा बुधे घटी ७।१ उत्तरा नक्षत्रे घटी ६।१२ शुभयोग घटी ४।११ किंस्तुघ्न करणे एवं पंचांग शुद्धौ ओसवंशे ज्ञाती सुराणा मैहक गोत साह सूरतेन जी पुत्र साहिबसिंघ तत्पुत्र कानजीकेन सह धर्मपत्न्या महासती बाई नाम्न्य साह मुहणोत गंगाराम पुत्र्या सहगमनं कृत्व सूत्रधार शुभकरण कृत्व ॥[१]

(२५८१)

श्री गणेशायनम' अभिप्सितार्थ सिद्धयर्थ पूजितोय' सुरासुरे सर्व विघ्नच्छिदस तस्मै गणाधिपतये नम' ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री राजराजेश्वर शिरोमणि महाराजाधिराज महाराज श्री १०८ श्री सूरतसिंह जी विजयराज्ये अथ शुभ संवत् १८६६ वर्ष शाके १७३१ प्रवर्त्तमान मासोत्तम मासे ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे पूर्णिमायां सोमवासर घटी १६।३२ अनुराधा मेष १६।३० सिद्धयोग घ० ३३ बवकरणे एवं पंचांगशुद्धि दिनिक्रमाणी सुराणा गोत्रे साहमेघराजजी तत्पुत्र साह सबलसिंघजी त वधु सवलादेव्या ज्येष्ठपुत्र चेनरूपस्य पृष्टे अष्ट वासरानन्तर मातसती जाव तस्माश्च निज पुत्र पौत्रादिभि छत्रिकेयं कारिता ॥[१]

(२५८२)

संवत् १७३१ वर्षे शाके १५९६ प्रवर्त्तमाने महामांगल्यप्रद। आसाढ़ मासे शुक्ल पक्षे एकादश्यां तिथौ ११ भृगुवासरे। श्री विक्रमनगर मध्ये श्री बहरा गोत्रे श्री कोचर शाखायां मह श्रीमाजरसीजी पुत्र मह श्रीमानसंघजी पुत्र म० पारस देवगत तद्भार्या महती पाटमदे महासती जात संघवी श्रीदुर्जनमल पुत्री हीरा प्रीति सतोह महासती जात ॥ शुभंभवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥[११]

(२५८३)

सिद्ध श्री गणेशाय नम' ॥ संवत् १७४० वर्ष शाके १६०५ प्रवर्त्तमान महामांगल्यप्रद वैशाख मासे शुक्ल पक्षे त्रयोदशी तिथौ शनिवारे स्वाव नक्षत्रे शुभयोगे ओसवाल ज्ञातीय बोथरा गोत्रे शाह ताराचन्द तत्पुत्र ईसरदास भार्या महासती अमोलकदे देवलोक प्राप्ता' शुभं भवतु ॥

(२५८४)

॥ सिद्ध श्री गणेशायनम' ॥ संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्त्तमान महा मांगल्य प्रदायक आषाढ मासे कृष्ण पक्षे द्वादशी तिथौ १२ शनिवासर कृत्तिका नक्षत्रे नराइणा मध्ये सिंघवीजी श्रीविजयमलजी देवलोके प्राप्ता तठा पछे असाढ सु० २ गुरुवारे पुष्यनक्षत्रे श्री

१, १ सतीयों की बारी बाहर—सुराणों के श्मशानों में।
११ श्मशान से गंगाशहर के मार्ग में यति हिम्मतविजय जी की बगीची।
१२ बेगा के कुएं के पीछे

धर्मशालाओं के लेख

स्वधर्मीशाला (रांगड़ी का चौक)

(२५५६)

शिलापट्ट पर

॥ महोला रांगड़ी ॥ श्री जैन श्वेताम्बर साधर्मीशाला. ॥

॥ श्री जिनवीर सं। २४२८ विक्रम स। १९५८ मि। आषाढ शुक्ल चतुर्थी दिने श्री बीकानेर मध्ये महाराजा श्रीगंगासिंहजी वहादुर विजयराज्ये श्री वृहत्खरतर भट्टारक गच्छे श्री पूज्य महाराज श्रीजिनकीर्तिसूरिजी सूरीश्वराणामुपदेशात् महोपाध्याय श्रीदानसागरजी गणि. तत्शिष्य उ। श्रीहितवल्लभजी गणि धर्मवृद्धि के तथा स्वपर कल्याण के अर्थ पं। प्र। श्रीखेतसीजी का शिष्य पडित श्रीचन्दजी यति के पास से क्रीत भावे यह उपासरा लेकर इसमें सर्व संघ के सन्मुख पूजन उच्छव करके इसका नाम जैन श्वेताम्बरी साधर्मीशाला स्थापित किया इस खाते उ० श्रीमोहनलालजी गणि के शिष्य पं० जयचन्द्रजी मुनिवर की प्रेरणा से कलकत्ता मुर्शिदाबाद वाले श्रीसंघने पण अच्छी मदत दीनी है और श्रीसंघ मदत देते रहेंगे इसकी कुंची कवजा वडे उपासरे के ज्ञानभंडार मे सदेव कायम रहसी इसमें सदैव जैन श्वेताम्बर यात्री आवेगे सो उतरते रहेगे सही ॥ सु ॥ दसकत ॥ वंशी महातमारा ॥

(२५५७) 361

॥ श्री ॥ श्री गुरुभ्यो नम. ॥ श्री वीर स० २४३१ विक्रम स०। १९६१ मिति श्रावण सुद २ शनिवार दिने श्री बीकानेर साधर्मीशाला मध्ये सावणसुखा गोत्रे श्रीहीरचन्दजी तत्पुत्र पनालालजी काळूरामजी तत्पुत्र सुगनचन्दजी भैरूदानजी बंगले वालाने जैन सेतंबरियों के जात्री ठेरसी ये तीबारी बनवा के प्रतिष्ठित करी है ॥ श्रीरस्तु शुभंभूयात् ॥

(२५५८)

चरणपादुकाओं पर

॥ शुभ स। १९८१ का आ० कृष्ण ११ साधर्मीशाला उपदेशक उ। श्रीहितवल्लभ गणीश्वराणापादुका कारित ॥ श्रीरस्तु नित्यं ॥

(२५५९)

कोचरों के मन्दिर के पास

ओं यह धर्मशाला रायबहादुर शाह मेहरचन्दजी कोचर की यादगार मे पुत्र कृपाचन्द कोचर ने बणाई ॥ इसमे कुड १ सेठ बहादुरमल जी अभैराज जी कोचर ने वणाया ॥ सम्वत् १९७७ सन् १९२० ईस्वी मारफत मेत्र सोहनलाल कोचर सं० १९७७

(२५८९) ३६८

॥ ६० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ संवत् १७२५ वर्षे शाके १५९० प्र० मांगल्यप्रद वैशाख वदि १३ तिथौ भौमवारे अत्र दिने पूर्व मेवाड़ देशे आवर नगरे पश्चात् सांप्रतं ठठेठर। ओसवाल बहुरा अभोरा गोत्रे मांडलीया सा॥ श्री यसवाजी पु० सा० कल्याणजी पु० सा० श्रीवीरजी पु० सा० श्री सुखमल देवलोके गत श्री बीकानेर नगरे तस्य भार्या श्री सोभागदजी। सूराणा गोत्रे॥ सा० परमदास की पु० सा० वसूजी तत्पुत्री पीहर नाम बाई सज्ञनी भरतार साह महासती थावा॥ राठ सवारस्थाप इसा सावि मास॥ शुभंभवतु॥ कल्याणमस्तु॥ [18]

(२५९०)

सिद्धि श्री गणेशाय नमः संवत् १७४२ वर्षे मिति फागुण सुदि ६ दिन मालु गोत्रे साह वृधीचन्द भारजा जगीशारे महगा सती देवलोके प्राप्ता शुभंभवतु॥ [19]

(२५९१) ३६८

॥ ६० ॥ १६८७ वर्ष आषाढ़ प्रथम सुदि १३ दिने थावरवारे बहुरा गोत्रे॥ साह नगा भार्या नामकदे तत् देवा भार्या वाल्हमदे तत्पुत्र कपूर भा। कपूरदे पुत्र दीपचन्द भा। दुरगादे सती साह मेहाकुल र पारख नी वनी। [2]

(२५९२)

श्री गणेशाय नमः

॥ ६० ॥ स्वस्ति श्री गणेशकुलदेव्या प्रसादात्॥ स्वस्ति श्री राजराजेश्वर शिरोमणि महाराजाधिराज श्री सूरतसिंघजी विजयराज्ये आसीत् शुभ संवत्सरे श्री मन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात्॥ संवत् १८६० वर्षे शाके १७२५ प्रवर्त्तमाने महामांगल्यप्रद मासोत्तम श्रावण मासे शुभ पक्षे तिथौ ८ अष्टम्यां बुधवासरे घटी १३ पल ४७ स्वाति नक्षत्र घटी २२ पल ५९ शुभ नाम्नि योग घटी ४२ पल २४ एवं पंचांग शुद्धौ अत्र दिने शुभ वेलायां तस्य वंशोद्भव छाजेड़ ज्ञातौ साहजी श्री मस्तकचन्द जी तत्पुत्र अनोपचन्दजी तस्यात्मज सरूपचन्दजी देवलोके गत श्री हैदराबाद मध्ये तत्पुष्टे संवत् १८६० मिति आश्विन वदि १४ बुधवार रै दिन सुधमपणी गंगा नारत्रिय गारा। न सहगमन कृत॥ बेगाणी साहजी किनीरामजी की बेटी देवलोक गत महासती हुयी श्री बीकानेर मध्ये तदुपर संवत् १८७२ वर्षे मिति आषाढ़ सुदि २ द्वितियायां अदितवार पुष्य नक्षत्र शुभ वेलायां छाजेड़ साह जी सूरतरामजी वंशमे छत्रिका प्रतिष्ठा कारिता तदुपरन्तेन फलेन

[18] गोगा दरवाजा के बाहर—श्री पार्श्वनाथ जी के मन्दिर के पीछे

[19] गोगा दरवाजा के बाहर—बड़ों की साल के पास

[2] गोगा दरवाजा के बाहर—छाजेड़ों की बगीची में बिना स्थापित समकरमर की देवली

(२५६५)

श्री संवत् १८९९ शाके १७६४ मितिमार्ग मासे कृष्ण पक्षे १ प्रतिपदायां अमरसोत शाखायां आर्यांजी श्री जसूजिता पादुका पौतृका आर्या उमा प्रतिष्ठिता: ।

(२५६६)

श्री संवत् १८९९ शाके १७६४ मिती मिर्ग मासे कृष्ण पक्षे १ प्रतिपदाया अमरसोत शाखायां आर्यांजी श्री अमरां जितां पादुकां प्रपौत्रिका आर्या उमा प्रतिष्ठिता श्रीरस्तु ।

(२५६७)

॥ श्री संवत् १८९९ शाके १७६४ प्रवर्त्तमाने मिती मार्ग मासे कृष्ण प्रतिपदाया अमरसोत शाखाया आर्यांजी श्री उमेदाजित् पादुका शिष्यणी उमा प्रतिष्ठित ॥

(२५६८)

श्री ॥ संवत १८९९ शाके १७६४ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे मार्ग मासे कृष्ण पक्षे १ प्रतिपदाया शनिवारे श्रीबृहन्नागपुरीय लुंका गच्छे पूज्याचार्य श्री १०८ श्रीलब्धिचंद्रजी विजयराज्ये अमरसोत शाखाया पूज्य ६ महर्षि श्रीपरमानन्दजित श्री १८९४ मिति वैशाख शुक्ल नवम्यां देवगत तेपा अस्मिन् शुभदिने पादुका' शिष्यर्षि टीकमचंद सुजाणमल्लाभ्या प्रतिष्ठिता ॥ श्रीरस्तु ॥

महादेव जी के मन्दिर में

(२५६९)

श्री ऋषभदेव चरणाभ्योनम ॥ स० १८५२ मिती फाल्गुन सुदि १२ सोमवारे मु० श्रीप्रतापमल्जी केन प्रतिष्ठा कृता❀

श्री सुसाणी माता का मन्दिर (सुराणों का बगेची)

(२५७०) 363

शिलापट्ट पर

स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जयोमागल्योदयोश्चेतु श्री विक्रमनृपे कृतौ सवत् १९६१ शाके १८२६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे फाल्गुनमासे धवल पक्षे ३ तृतीया दिने घटी २२।३४ गुरुवासरे रेवती नक्षत्रे घटी १३।४९ ब्रह्मयोग घटी ४।३४ गणकरण घटी २२।३४ श्री महाराजाधिराज श्री १००८ गंगासिंहजी विजयराज्ये सेसाणी माता रौ इद मन्दिर सुराणा जुहारमल चुनीलाल

❀ यह लेख वेद प्रतापमलजी के कुएँ के पास उन्हीं के बनवाये हुए महादेवजी के मन्दिर में श्रीऋषभदेव भगवान के चरणों पर है। कुएँ के गोवर्द्धन पर ४८ पक्ति का लेख महाराजा सूरतसिंह के समय का है जो घिस गया है।

(२५९८)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ संवत १७८३ वर्षे शाके १६४८ प्रवर्त्तमाने महामांगल्य प्रद यदि आसाढ मासे शुक्ल पक्षे अमावस्यां तिथौ शुक्रवासरे रोहिणी नक्षत्रे श्री बीकानेर मध्ये [illegible] श्री श्री सुकनदास जी देवलोक प्राप्त। पतिव्रता महासुखदे जी चिता प्रवेश कृत्वा देवलोक [illegible] संवत् १७८४ वर्षे शाके १६४९ प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ मासे शुक्ल पक्षे १२ त्रयोदशी तिथौ रवि[illegible] स्वाति नक्षत्रे शुभवेलायां छत्री प्रतिष्ठा कारापितं ॥ श्री [२७]

को ड म दे स र

(२५९९)

सती स्मारक पर

॥ स्वस्ति श्री ऋद्धि वृद्धि जयो मंगलाभ्युदयश्च । संवत् १५२९ वर्षे। शाके १३९४ प्रवर्त्तमाने महा मांगल्यप्रद माघ मासे शुक्ल पक्षे। पंचम्यां तिथौ सोमवारे श्री कोडमदेसर मध्ये श्री पहुरा गोत्र। साह रूदा पुत्र साह कृपा देवलोके प्राप्ति। श्री (? प० श्री) ति स्नेह भर्तार सत्य जात ॥ तद्भार्या नाम कउडिगदे माहं सती ॥ शुभं भवतु ॥ श्री ॥ [२८]

मो टा स सो

(२६००)

जमरासे तालाब पर पीले पाषाण की खड़ी हुई देवली पर

॥ संवत् १६६४ वर्षे आसाढ मासे कृष्ण पक्षे ७ दिने गुरुवारे छं (? छु) कड गोत्रे साह भुणा पुत्र रायसंघ लिखमीदास माता रंगा दे साह पीथा पुत्री अंठी भार्यमी देवलोके प्रापता शुभं भवतु कल्याणमस्तु (? स्तुः) ॥ [२९]

(२६०१)

मो र खा णा

संवत् १७२३ वर्षे मिती [illegible] दि २ वार सोमः मोरखाणा गाम—बोथरा गोत्रे [illegible] स० माटी। मंत्री नीबाजी पुत्र मंत्रि [illegible]जी देवलोक परापत त भरजा [illegible] मोरखेडमा साह पदम पुत्री मामा सती जाता श्री (शु) भं भवतु कल्याणमस्तु श्री ॥ [१]

---

२७ खेत के कुँए के पास लाल पत्थर की ८ स्तंभों वाली भग्न छत्री में पीले पत्थर की देवली पर डॉ एल पी टेसीटोरी की छाप से।

२८ यह लेख डॉ एल० पी टेसीटोरी साहब के कागज से प्राप्त हुआ है।

२९ यह लेख भी डॉ टेसीटोरी की ली हुई छाप से उद्धृत किया गया है।

१ मोरखाणे गांव के कुँए के पश्चिम पीली देवली पर (डॉ टेसीटोरी साहब की छाप से।)

(२५७५)

महाराजाधिराज महाराज श्रीकर्णसिंह जी विजयराज्ये ॥ ६० ॥ संवत् १६९६ वर्षे शाके १५६१ प्रवर्त्तमाने महामांगलिक चैत्रमासे शुक्ल पक्षे ४ तिथौ ··न वासरे अश्विनी नक्षत्रे धूत गोत्रे गगाजल पवित्रे स । मानसिंह पुत्र ··देवीदास भार्या दाडिमदे देवंगत श्री शुभ भवतु ॥ [४]

(२५७६)

महाराजाधिराज महाराज श्रीकर्णसिंह जी राज्ये ॥ ६० ॥ सवत् १७०७ वर्षे चैत्र सुदि १२ दिने चोरवेडिया गो साह धनराज पुत्र रामसह तत्पुत्र सा० छुनार पुत्र मानसिंह देवंगत तस्या भार्या सती महिमादे देवलोके गत श्री बोथरा गोत्रे साह दुर्जनमल पुत्री हाश्री देवंगत सूत्रधार नाथा कृता ॥ [५]

(२५७७)

श्री गणेशायनमः ॥ सवत् १७७७ वर्षे शाके १६४२ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम माघ मासे शुक्ल पक्षे बीज तिथौ मुहत्ता श्रीभारमलजी भार्या विमलादेजी देवलोके गत शुभंभवतु श्री ॥ [६]

(२५७८) 365

श्री गणेशायनम. ॥ संवत १७०५ वर्षे ज्येष्ठ वदि ७ दिने गुरुवारे श्रीविक्रमनगर मध्ये राखेचा गोत्रे पूगलिया शाखायां साह तेजसीह पुत्र नारायणदास भार्या नवलादे सस्नेह अथ देवगति । वुचा गोत्रे रूप पुत्री नाम चीना उभयोकुल श्रेयष्कारिणी महासती जाता. श्रीरस्तु श्री शुभं भवतु ॥ [७]

(२५७९)

श्री गणेशाय नम ॥ अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितोय सुरासुरै । सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नम ...श्री विक्रमादित्य राज्यात् सवत १७६४ वर्षे श्री शालिवाहन राज्यात् १६२९ प्रवर्त्तमाने महामांगल्यप्रद . मार्गशीर्ष मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां ७ तिथौ अत्र दिने सघवी मलूकचद्र जी तत्पुत्र आसकरण स्त्री महिम दिवंगत पृष्टे सती कारिता ॥ श्री शुभंभूयात् श्री कारीगर जुरादेव कृता ॥ [८]

(२५८०) 365

श्री गणेश कुलदेव्या प्रसादात् अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितोय सुरासुरै. सर्व विघ्नंछिदे तस्मै गणाधिपतये नम ॥ १ ॥ अथ शुभ सवत्सरे श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत

४, ५, ७ ८, उस्तों की बारी के बाहर-सुराणों के श्मशानों के पास ।

६ उस्तो की बारी के बाहर-सुराणो की बगीची ।

१६ सहसमल पुत्र मांडण। पुत्र पेता पीमा। सं० नास्हा पुत्र सं० सीहमल पुत्र पीथा सं० नरवघ पुत्र मोकला—

१७ दि सहितेन। सं० षाहडेन प्रतिष्ठा कारिता सपरिकरेण श्री पद्मानन्दसूरि तत्पट्टे भ० श्री नंदिवर्द्धनसूरीश्वरेभ्य।

(२६०३)

ॐ सं० १२२९ श्री० वेल्पा सुसाणेपि चैत्ये संमाती सेहलाकोट आगती मोक्षमार्गेपि जावजीव दृषि आराहित।

जूझारादि के लेख

(२६०४)

माहटों की बगीची के सामने

॥ ७० ॥ अबीरचंद आ मुकीम श्री मोमिया जी सुधा संवत् १७४७ चोकी पंचायती जणामव बोथरा मुकीमां री श्री बीकानेर।

(२६०५)

सुराणों की बगीची में

संवत् १८०४ वर्षे मिती वैशाख सुदि ११ वार अदीत वैद गोत्रे मास श्री कुमार अमर देवल

(२६०६)

श्री करजन जी कोचर की चौकी पर

॥ श्री ॐ श्री ॥ इस चोतरे की चरणपादुका पूज श्री ५ दादाजी मु। श्री श्री करजन जी कोचर की है। कि जो सं० १६८४ में देवलोक हुए। इस चौतरे का आखिरी जीर्णोद्धार सं० १९९६ मिती सु० श्रावण सुदि ७ वार सोमवार को कोचरा की पंचायती से कराया गया ॥ श्री ॥ ७० ॥ श्री ॥

(२६०७)

करजन जी के चरणों पर

श्री ॥ ७० ॥ श्री ॥ चरणपादुका दादाजी मुं। श्री श्रीकरजनजी कोचर।

(२६०८)

डागों की साल में मूर्त्ति पर

संवत् १८४० वर्षे मिती कार्त्तिक सुदी पंचम्यां तिथौ। मंगलवासरे। श्री बीकानेर नगरे। बुहरा गोत्रे। साह श्रीत्रिलोकसीजी तद्भार्या शीलालंकारधारिणी। पतिव्रता श्री वनसुखदेवी भर्तृसहगमनेन परलोकगमगमत्। तया पृष्टे पुत्र पदमसीजी। धरमसी। अमरसी। टीकमसी। तेन इदं शालमरत्नं कारापितम् त पृष्टे श्रीसंघ समक्षेन सहिरसारिणी कृता॥

वीकानेर खबरि आई तद गोलेछी पतिव्रता पीवसुखदेजी चिताप्रवेश कृता देवलोके प्राप्ता संवत् १७५३ वर्षे शाके १६१८ प्रवर्त्तमाने आसाढ मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदशी तिथौ १३ बुधवासरे घटी २० रोहिणी नक्षत्रे घटी २१ गंज नाम जोगे घटी ३२ शुभ वेलाया छत्री प्रतिष्ठा करापिता शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तुः ॥ [13]

(२५८५)

श्री गणेशाय नमः ॥ संवत् १७६४ वर्षे शाके १६३० प्रवर्त्तमाने महामांगल्य प्रदायके ज्येष्ठ मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदशी १३ तिथौ शुक्रवासरे अश्विनी नक्षत्रे आउवा मध्ये सिंघवीजी श्री हणूतमल जी देवलोक प्राप्ता तठा पछे ज्येष्ठ सुदि ४ चतुर्थी तिथौ बुधवासरे पुनर्वसु नक्षत्रे श्री वीकानेर खबरि आई तद घोडावत पतिव्रता सौभागदेजी चिताप्रवेश कृता । देवलोक प्राप्त । संवत् १७६७ वर्षे शाके १६३२ प्रवर्त्तमाने आषाढ़ मासे शुक्ल पक्षे चतुर्थी ४ तिथौ सोमवासरे अश्लेषा नक्षत्रे शुभ वेलाया छत्री प्रतिष्ठा कारायितम् ॥[14]

(२५८६)

श्री रामजी

श्री गणेशाय नम संवत् १८१० वर्षे शाके १६७५ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे श्रावण मासे किसन पक्षे एकादशी तिथौ ११ गुरुवारे घटी‥ घटी ६० रै धृतनाम योग घटी ६५ रे‥राखेचा गोत्रे साह श्री चन्दजी देवलोक हुवा मासती जगीशादे मासती पीहरो सासरो दोयइ … ॥[15]

(२५८७)

॥ ६० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ संवत् १७२७ वर्षे ज्येष्ठ वदि ९ तिथौ चोपड़ा कूकड़ गोत्रे कोठारी कस्तूरमल पुत्र उत्तमचन्द भार्या ऊमादे सती देवलोके गत ।[16]

(२५८८) 367

श्री गणेशायनम ॥ सवत् १७०५ वर्षे मगसिर वदि ७ दिने शनिवासरे पुष्य नक्षत्रे बोथरा गोत्रे साहकपूर तत्पुत्र उत्तमचन्द देवोगत' तत् भार्या गोत्रराका जात नाम कान्हा सती देवोगत ॥ शुभ भवतु ॥ क्णिमस्तु महाराजाधिराज महाराज श्रीकर्णसिंहजी विजयराज्ये श्री वीकानेर नगरे ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ [17]

१३, १४ जेल के कुएँ के पास विशाल छत्रियों में ।

१५ गगाशहर रोड, पायचदसूरिजी के पीछे स्मशानों में ।

१६ गोगा दरवाजा के बाहर—कोठारियों की बगीचे में ।

१७ गोगा दरवाजा के बाहर—श्री गौड़ी पार्श्वनाथ जी के बगीचे में ।

वादेजी श्री जिनकुशलसूरि जी री पादुका छे विणांरी पूजा हुवे छे सु समी बीघा ७५० अक्षरे बीघा साढी सातसौ डोरी बीसरी चढाई छै सो तणाय तणोळाय रे छारळी गाँवे नाल सु आयुणवे पासे री सांसण तांबापत्र कर दीधी छै सु दादेजी री पादुकांवारी पूजा टैहळ बंदगी करसी सु जमी वाहसी ओढसी वा मुकाते दसी वैरो हासल लेसी म्हांरो पूत पोतो पाळीया जासी सं० १८७३ मिति बैशाख सुदि ९ वार सोमवार श्लोक ॥ स्वदत्तं परदत्तां वा ये हरंति वसुंधरा । ते नरा नरकं यांति यावचन्द्र दिवाकरो ॥ १ ॥ स्वदत्त परदत्तं वा य पायंति वसुन्धरा । ते नरा स्वर्गं यांति यावचन्द्र दिवाकरो ॥ [१] ॥

(२११६)

श्री लक्ष्मीनारायण जी

॥ सही स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा श्री श्री श्री १०८ श्री सूरतसिंघ जी महाराज कुमार श्री रतनसिंघ जी वचनात् श्री जी साहबां रे डुस्मणां ने मांदगी थाई सु श्री परमेश्वर जी री क्रिपा सु वणारस यतलचन्द्र जी मे जस आसी सुंपाडी कियो वैरी खुसी ऊप श्री दरबार कृपाकर रोज १८० ॥), अक्षर रुपीयो आधो आकरों श्री मांडवी री गोळक में कर दीयो छे सु ओ वा इयांरो चेळो पूत पोतो नु सांसण तांबापत्र कर दीयो छे सु पासी म्हांरो पूत पोतो हुसी सु पाळीयां जासी फरर न पड़सी लखक छे सांमत १८९४ मिति फागुण वदि ७ मुकाम पाय तखत श्री बीकानेर कोट दसकत ऽ ऽ ऽ ऽ[२]

(२११७)

श्री परमेसर जी सत्य छे

श्री गुरुजी मनोहर जी

श्री रामजी सही

सिध श्री ठाकुरां राज श्री सवाईसिंघ जी कंमर मानसिंह जी लिखतु तथा आकगा ? कंवला गच्छ रा उपासरे चढाई पुनारथ दीनी तिणरी किमत पुठाक तो बागरमैंने पेसर्वा बीवनी बाबू कुंका गच्छ रो उपासरो ने बांधी बाबू सु ॥ माना री हाट ने निकाळ राजपैय लिका आकगा पुनारथ दीनी छे अथ स्वदत्तं परदत्तं अहळोपते वसुंधरा ते नरा नरक जावते यावत चन्द्र दिवा करा संवत १८९६ रा जेठ वदि ८ लिखतं सा मोहणदास गोगवास ।[३]

१—यह ताम्रपत्र १४×७ इञ्च के साइज का बीकानेर का बड़े उपाश्रय के भंडार में सुरक्षित है ।

२—यह १०×७॥ इञ्च का १४ पंक्ति वाला ताम्रशासन बीकानेर के बड़े उपाश्रयस्थ ज्ञानभण्डार में सुरक्षित है ।

३—यह ११॥×९ इञ्च का ताम्रशासन कंवला गच्छ के उपाश्रय में था ।

छाजेड़ साहजी सरूपचन्दजी सगमनयो परिलोके सद्गतरस्तु ।। यावद्गंगादयो नद्यां यावत् चन्द्रांक तारकः ।। तावत देवली छत्रिका पृथिव्यामधितिष्टतु ।। १ ।। श्रीरस्तुः ।। कल्याणमस्तु. ।शुभंभवतु।। सूत्रधार उसता हसनजी पुत्र अमर ।। वधुसेन ।। श्री कल्याणमस्तु ।।[२१]

(२५९३) 369

श्री गणेशाय नमः ।। संवत् १७३७ वर्षे शाके १६०२ प्रवर्त्तमाने फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे नवमी तिथौ भृगुवारे नाहटा लूणा पुत्र मनहर पुत्र केशरीचन्द..मा सती श्री केशरदे बाई देवगत शुभंभवतु ।।[२२]

(२५९४)

श्री गणेशायनमः स्वस्ति श्री नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् १७२४ वर्षे शाके १५९० प्रवर्त्तमाने महामांगल्यप्रद मार्गसिर मासे कृष्ण पक्षे षष्ठी स्तिथौ सोमवासरे ।। महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री ५ कर्णसिंहजी महाराज श्रीअनूपसिंह विजयराज्ये ।। नाहटा गोत्रे साह देवकर्ण तत्पुत्र पासदत्त सती मह देवलोके गता राजावल गोत्रे लुंदा पुत्री महासती वीरादेवी नाम ।। शुभं भवतु ।। श्री श्री ।।[२३]

(२५९५) 369

श्री गणेशायनमः ।। अभिप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितोय. सुरासुरै सर्व विघ्नच्छिदेत्तस्मै श्री गणाधिपतये नम ।। १ ।। अथ शुभ संवत्सरे श्रीमन्नृपति विक्रमादित्य राज्यात् संवत् १८५१ वर्षे शाके १७१६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे मधु मासे कृष्ण पक्षे तिथौ दशम्या सोमवासरे घटी ११ ।। उत्तराषाढा नक्षत्र घटी ३३ परयतम योग घटी २४ ववकर्ण एवं पंचाग शुद्धौ अत्र दिने सूर्योदयात् घटी २८।७ तत् समये शुभ वेलाया ज्ञातौ दसराणी गोत्र मुँहताजी श्री गिरधारी लाल जी वैकुण्ठ प्राप्ति सत् गति भाज्या सपतनी सहत कावड़त चत्ररो वच्छराज जी वेटी सत् गति प्राप्ति हुई दसराणी गिरधारीलाल सागे सती नाम श्री चतरो सती वैकुण्ठ गति ।। सैहर महेसैने दै सतलोक प्रसहुआ शुभंभवतु ।।[२४]

(२५९६)

सं० १६८८ वर (षे) सावण वदि १४ सती पदमसीरी[२५]

(२५९७)

सं० १७१३ रा आसोज वदि ४ सती देवकरण री छै[२६]

---

२१ गोगा दरवाजा के बाहर—छाजेड़ों की बगेची में छत्री में

२२ गोगा दरवाजा के बाहर—नाहटों के स्मशानों में

२३ रेलदादाजी में पो के पास थी जो अब नाहटों की बगेची में है।

२४ घड़सीसर व नागणेची देवी के बीच जगल में।

२५, २६ श्री दानमल जी नाहटा की कोटड़ी में स्तम पर।

(२६२६)

मातृपट्ट का पर

संवत् १४७२ वर्षे चैत्र सुदि १५ दिने ऊकेश वंशे डागा गोत्रा पुत्रेण सा० मेहाकेन स्वभार्या सनखत पुण्यार्थं श्रीचतुर्विंशति तीर्थंकर मातृपट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्रीखरतर गच्छालंकार श्रीजिनराजसूरि पट्टाभरणे श्रीजिनवर्द्धनसूरिभिः साम्यमूरिमिमावपूरिभिः ॥

(२६२७)

संवत् १४७२ वर्षे सा० तेजसी सुतेन क० देवीसिंहेन पुत्र वच्छराज जसादादि सहितेन कारिता देवगृहिका पचरा- न

(२६२८)

सं० १४७३ वर्षे डागा कुंरपाळ पुत्र सावाकेन स्वभार्या सूहवदे पुण्यार्थ कारिता पौत्र वरसींह।

(२६२९)

परिकर पर

सं० १५१२ वर्षे श्रावण सुदि ९ श्रीमांगकेन सं० पारसेन भावर बयरा सहिते परिकरकारितं।

(२६३०)

सं० १४७३ वर्षे डागा महणापुत्रो केन भार्या गंगादे पुण्यार्थ ।

(२६३१)

सं० १४७३ वर्षे सा० रत्ना पुत्रेण सा० आपमल्ल भावकेण पुत्र पेथा भीमा जटा सहितेन भार्या कमलादे पुण्यार्थं कारितेयं ।[श्री ॥

(२६३२)

सं० १४७३ वर्षे सा० धमा पुत्र स० अमर मोकसिंह सुश्रावकाभ्यां देवगृहिका कारिता

(२६३३)

परिकर पर

सं० १४७३ वर्षे श्री जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री संभव परिकरः सा० पारस सुश्रावकेण निज मातृ...दे पुण्यार्थं।

(२६३४)

सं० १४७३ वर्षे श्रीकार खेता पुत्र सं० आसा सं० नासा सुश्रावकाभ्यां स्वपुण्यार्थं कारिता देवगृहिका।

क्ष्याद १९११।

श्री सुसाणी माताजी का मन्दिर, मोरखाणा

(२६०२) 371

शिलापट्ट पर

१ ॥ॐ॥ श्री सुसाण कुलदेव्यै नमः ॥ मूलाधार निरोध बुद्ध फणिनी कंदादि मदानिले (ऽ) नाक्रम्य ग्रहराज मंड—

२ लधिया प्रागपश्चिमातं गता । तत्राप्युज्वल चद्रमंडल गलत्पीयूप पानोल्लसत् कैवल्यानुभव्या सदास्तु जगदानं—

३ दाय योगेश्वरी ॥१॥ या देवेन्द्र नरेद्र वदित पदा या भद्रता दायिनी । या देवी किल कल्पवृक्ष समता नृणां दधा—

४ ·· लौ । या रूपं सुर चित्तहारि नितरा देहेस दा बिभ्रती । सा सूराणा स वंश सौख्य जननी भूयात्प्रवृद्धिक—

५ री ॥२॥ तत्रैः किं किल किं सुमत्र जपनै. किं भेपजैर्वा वरैः । किं देवेन्द्र नरेन्द्र सेवनय किं साधुभि. किं धनै । ए—

६ काया भुवि सर्व कारणमयी ज्ञात्वेति भो ईश्वरी । तस्याध्यायत पाद पंकज युगं तद्ध्यान लीनाशया ॥३॥ श्री भूरिद्धिम—

७ सूरी रसमय समयांभोनिधे पारदृश्वा । विश्वेषा शश्वदाशा सुरतरू सदृश स्त्याजित प्राणि हिंसा । सम्यग्दृष्टि ......

८ मनणु गुणगणां गोत्रदेवीं गरिष्ठां । कृत्वा सूराण वंशे जिनमत निरता यां च कारात्म-शक्त्या ॥४॥ तद् यात्रा महता महेन—

९ विधिवद्विज्ञो विधायाखिले निर्गो मार्गण चातक प्रण गुणः सभारटंक छटः । जातः क्षेत्र फले ग्रहिर्मरुधरा धारा—

१० धरः ख्यातिमान् सघेश शिवराज इत्ययमहो चित्रं न गर्जिध्वज ॥ ५ ॥ तत्पुत्र सच्चरित्रे वचन रचनया भूमिराज ।

११ समाजालंकारः स्फार सारो विहित निजहितो हेमराजो महौजा. । चंग प्रोत्तुंग शृङ्गं भुवि भवन मिदं देवयानो प—

१२ मानं । गोत्राधिष्टातृ देव्या प्रसमर किरणं कारयामास भक्त्या ॥ ६ ॥ संवत् १५७३ वर्षे ज्येष्ठ मासे सित पक्षे पूर्णिमा—

१३ स्यां शुक्रेऽनुराधायां षीमकर्णे श्री सूराण वंशे सं० गोसल तत्पुत्र सं० शिवराज तत्पुत्र सं० हेमराज तद्भार्या सं० हेमश्री त—

१४ त्पुत्र सं० धजा सं० काजा सं० नाल्हा सं० नरदेव सं० पूजा भार्या प्रतापदे पुत्र सं० चाहड भा० पाटमदे पुत्र सं० रणधीर ।

१५ सं० नाथू सं० देवा सं० रणधीर पुत्र देवीदास सं० काजा भार्या कउतिगदे पुत्र सं० सहमल सं० रणमल ।

पट्टावली पट्टक, लौद्रवाजी जेसलमेर
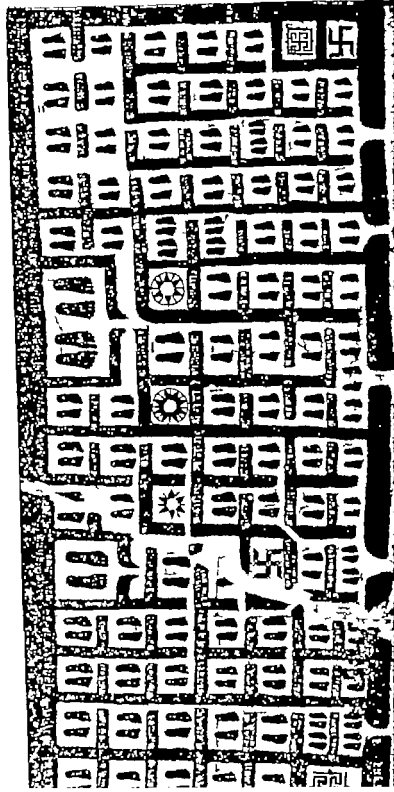
(श्री विजयसिंहजी नाहर के सौजन्यसे)

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (बीकानेर)

(२६०९)

उत्तम क्षांति माद्यन्ते ब्रह्मचर्ज सुलक्षणे स्थापयेद शधी धर्म मुत्तमं जिन भाषितं ॥ १ ॥ सवत् १५६२ वर्षे फागुण वदि १३ शुक्रवासरे श्री काष्टा संघे माथुरान्वये पुष्कर गणे भ० श्री कुमारसेण देवा तत्पट्टे भ० श्री हेमचन्द्र देवा तत्पट्टे भ० श्री पद्मनंदि देवा. तदम्नाये अग्रोतकान्वये मीतन गोत्र नसीरवादिया सा० वील्हा तद्भार्या वील्ही तयो पुत्रौ प्रथम चौ० भीखनुभाद्भ्राता चौ० आदू भीखन भायातद्भार्या जउणी द्वितीय चात्र तया. पुत्रध महणा वभूनूणा पृथ्वीमल्ल आदू पुत्र आढा माना तेने इदं दत्रा लाक्षणिक यंत्र ॥

(२६१०)

सवत् १६६० वर्षे फागुण वदि ५ गुरुवारे चित्रा नक्षत्रे श्री मूल संघे भ० श्री प्रभाचन्द्र देवा स्त० भ० श्री चन्द्रकीर्त्तिम्नाय खडेलवाल गोत्रे पाटणी सा० विजा तस्य पुत्र छज्जू टाहा जीवा छज्जू पुत्र सीहमल्ल हेमा खेमास्ता हेतं ॥

(२६११)

सवत १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मूल स० भट्टारक जी श्री भा० (? जि) नु० चन्द्रदेव साह जीवराज पापरीवाल नित्य प्रणमति सहर मडस श्री राजसी सघ

(२६१२)

संवत् १९२६ मिती वैशाख सुदि ६......माधोपुर भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति घट (?) संघही मदलाल नित्यं प्रणमति

(२६१३)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव साह श्री जीवराज पापरीवाल नित्यं प्रणमति ..

(२६१४)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मूल सघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देवा साह श्री जीवराज पापरीवाल नित्यं प्रणमति...

ताम्र-शासन लेखाः

(२६१५)

१ श्री लक्ष्मीनारायण जी

॥ राम सही ॥

॥ स्वस्ति श्री राजराजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा शिरोमणि महाराजा जी श्री सूरत सिंहजी महाराज कुंवार श्री रतनसिंह जी वचनात् श्री जी साहबा परसन होय गाँव नाल में

(२६६८)

परिकर पर

संवत १५०६ वर्ष श्री जिनभद्रसूरि सद्गुरुपदेशेन सा० रतना पुत्र सा० साजण सा० मूला संसारचन्द्र श्रावकैः परिकरः कारितः स्थापितश्च वा० रत्नमूर्ति गणिना।

(२६६९)

सं० १४७३ वर्षे दरडा हरपाल पुत्र आसाकेन पुत्रपासा मांडणादि पौत्र कारितं।

(२६७०)

सं० १४७३ वर्षे दरडा हरपाल पुत्र कान्हडेन पुत्र भारमल पौत्र भुजबलादि युतेन कारिता। ७४ श्री शांतिनाथ।

(२६७१)

१४७३ चो० भुजा पुत्र मोखरा पुत्र देवदत्त तेजाभार्या पुत्र रूपा जिणदास भाता युतेन का। श्री शान्तिनाथ

(२६७२)

सं० १४७३ वर्ष सा० समरापुत्र देया सगतीह सत्ता तोला मेला श्रावकैः पुण्यार्थं देवकुलिका कारिता शुभमस्तु।

(२६७३)

संवत १४७३ वर्षे प्राग्वाट ऊदापुत्र साजण स्वभार्या अवणाद पुण्यार्थं देवगृहिका कारितं।

(२६७४)

सभामण्डप बाँई ओर परिकर पर

सं० १४९१ वर्ष श्री खरतरगच्छ जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री नमिनाथ सिंहासनं कारितं सा० सं० सिवराज सा० महिराज सा० लोल सा० लाखमादि।

(२६७५)

सभामण्डप में पादु काओं पर

॥ ६० ॥ संवत् १५८७ मार्गसिर वदि दिन श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टालंकार श्री श्री जिनहंससूरीश्वराणां पादुके वाचनाचार्य श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठितं कारितं च सा० नगा भार्या राजू पुत्र श्रीचंद सुश्रावकेण॥

(२६७६)

भाव ... स्थपितृ मातृ श्री जिनपद्मसूरि गुरुभिः।

जेसलमेर

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(२६१८)

देवगृहिकाओं के द्वार पर

संवत् १४७३ वर्षे चो० दीता सुतैः कर्मण पाउ ठाकुरसी जेठा शिवराज ... राज पाल्हा— श्रावकैः कारिता।

(२६१९)

संवत् १४७३ वर्षे चो० कीता पुत्र लखा रामदेवाभ्यां कारिता देवग्रहिका।

(२६२०)

सवत् १४९३ वर्षे श्रेष्ठि मम्मणपुत्रेण श्रेष्ठि जयसिंहेन स्वपुण्यार्थं कारिता देव (गृहिका)।

(२६२१)

सवत् १४७३ वर्षे सा० पेथड़ पुत्र सचाकेन कारिता गणधर नयणा सुत सालिगेन चार्द्वा कारिता देवगृहिका माता राजी पुण्यार्थं।

(२६२२)

सवत् १४७३ वर्षे सं कीहड सं० देवदत्त उषभदत्त धाधा कान्हा जीवं जगमाल सं० कपूरी माल्हणदे करमी प्रमुख परिवारेण स्वपुण्यार्थं देवगृहिका कारिता।

(२६२३)

(परिकर पर दोनों तरफ)

(क) ॥ ६० ॥ संवत् १४७९ वर्षे श्री खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरि पट्टालंकार भट्टारक श्री श्रीजिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितम्। डागा सा० आल्हा कारित श्री आदिनाथस्य परिकर

(ख) श्री जिनभद्रसूरि राजोपदेशात् डा० सा० मोहण पुत्र सा० नाथू सा० देवाभ्यां सा० कन्ना सुत सा० नगा सा० नाल्हा चाचा सा० मंडलिक पुत्र काजा सा० कूडा पुत्र सा० वीदा जिणदास भादा प्रभृति श्राद्धैः ।

(२६२४)

संवत् १४७३ वर्षे सा० सीहा पुत्रेण सा० सोमा श्रावकेण कारिता।

(२६२५)

सवत् १४७३ डागा भोजा सुत मदा श्रावकेण निज भार्या मीणल दे पुण्यार्थं देहरिका

(२६४६)

स्थाही से लिखा

सं० १४७३ वर्षे गो० गुणिया पुत्र धना नउला को (ला) प्रमुख परिवार युतेन पुण्यार्थ देवगृहिका कारिता ।

(२६४७)

संवत् १४७३ वर्षे सा० सूंढासुत रामसिंहेन पुत्र गुणराज वस्ता सहितेन कारिता ।

(२६४८)

संवत् १४७३ वर्षे सारंग पुत्र जइता मेसा राणा श्रावकै निजमातृ पूनादे जइता भार्या जासलदे पुण्यार्थं कारिता ।

(२६४९)

संवत् १४७३ वर्षे सा० पासा पुत्र जयाकेन स्वपुण्यार्थं देवगृहिका कारिता ।

(२६५०)

सं० १४७३ वर्षे सा० सूहडा पुत्र....सं० जिणदत्त रत्नपाल कल्हिणेन कारिता देवगृहि ॥

(२६५१)

सं० १४७३ साधुशाखीय जठू नमा हेमा श्रावकै नमा कलत्र नामलदे पुण्यार्थं कारिता ।

(२६५२)

सं० १४७३ वर्षे परी० साहड पुत्र सीहाकेन पुत्र समधर भीका नरपद सहितेन मातृपितृ पुण्यार्थं शांतिनाथ देवगृहि कारिता ।

(२६५३)

सं० १४७३ वर्षे .र पुत्रो मेघ ..परिवार सहितै मि० गूजर मातृ रामी भगिनी भरमी पुण्यार्थ ।

(२६५४)

परिकर पर

सं० १४७३ वर्षे चैत्र सुदि १५ दिन सा० सोम- .स्व पितृव्य ।

(२६५५)

संवत् १४७३ वर्षे प० सामल पोला फूरा करणा लाला श्रावकै पितृ सुहडा मातृ सिंगारदे पुण्यार्थं श्रादिनाथ देवगृहि कारापिता ।

(२६५६)

सं० १४७३ वर्षे प पूना भार्या पूरी श्राविकया निज पुण्यार्थं देवगृहि गृहिता फ० १००) स्वयंमं कारितं ।
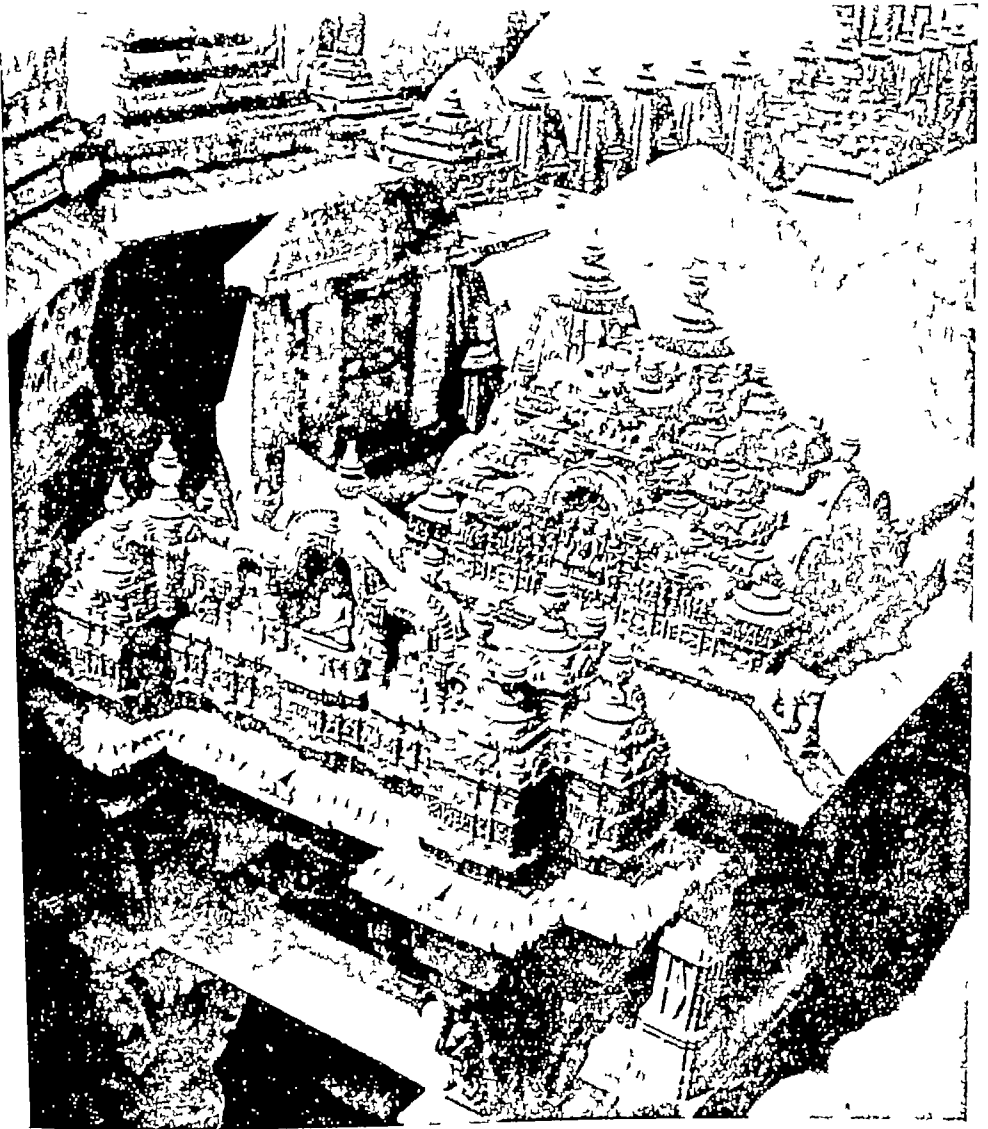
श्री पार्श्वनाथ जिनालय, (विहंगमदृश्य) जेसलमेर

(२६६८)

परिकर पर

संवत् १५०६ वर्षे श्री जिनभद्रसूरि सद्गुरुपदेशेन सा० रतना पुत्र सा० सारंग सा० मूला संसारचन्द्र श्रावकै परिकरः कारित: स्थापितश्च वा० रत्नमूर्त्ति गणिना।

(२६६९)

सं० १४७३ वर्षे बुरहा हरपाल पुत्र आसाकेन पुत्रपाल्हा मांडणादि पौत्र कारित।

(२६७०)

सं० १४७१ वर्षे बुरहा हरपाल पुत्र कान्हडेन पुत्र मारमल्ल पौत्र भुजबलादि युतेन कारिता। ७४ श्री शांतिनाथ।

(२६७१)

१४७३ चो० मुञ्जा पुत्र सोलूसा पुत्र देयदत्त तेजाभ्यां पुत्र रूपा जिणदास भाडा युतेन का। श्री शान्तिनाथ

(२६७२)

सं० १४७३ वर्षे सा० समरापुत्र देपा जगसीह सला तोला मेला श्रावकै पुण्यार्थं देवकुलिका कारिता शुभंभवतु।

(२६७३)

संवत् १४७३ वर्षे भाण्डशाट ऊदापुत्र साल्हरेण स्वभार्या अवणाई पुण्यार्थं देवगृहिका कारित।

(२६७४)

समामण्डप बांई ओर परिकर पर

सं० १४९३ वर्षे श्री खरतरगच्छे जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री नमिनाथ सिंहासनं कारितं सा० सं० सिवराज सा० महिराज सा० लोल सा० लाखणाद्यै।

(२६७५)

सभामण्डप में पादुकाओं पर

॥ ६० ॥ संवत् १५८७ मार्गशिर वदि दिने श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टालंकार श्री श्री जिनहंससूरीश्वराणां पादुके तच्छिष्यै श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठिते कारिते च चो० तेजा भार्या राजू पुत्र श्रीवंत सुश्रावकेण॥

(२६७६)

श्रावकः स्थापित्र मात्र श्री जिनवर्द्धनसूरि गुरुभिः।

(२६३५)

सं० १४७३ वर्षे मं० देल्हापुत्र मं० हापू पुत्र मं० पाल्हा मन्त्री चउंडाभ्यां सपरिवाराभ्यां देवगृहिका कारिता।

(२६३६)

स० १४७३ वर्षे मं० देल्हा पुत्र मं० हापू पुत्र मं० चउंडा सुश्रावकाभ्यां सपरिकराभ्यां स्वपुण्यार्थं कारिता देवगृहिका।

(२६३७)

स्याही से लिखा

संवत् १४७३ वर्षे भ० झांझण सुत गुणराज वीकम काल्हू कम्मा स्वपुण्यार्थं—।

(२६३८)

संवत् १४७३ वर्षे भ लोहट भं० जैसा पासा वटउद ऊदाभ्या जीवा पुण्यार्थं च कारिता देवगृहिका।

(२६३९)

स्याही से लिखा

संवत् १४७३ वर्षे भ० तीहुणा पुत्र देल्हा कुशला सुश्रावकाभ्यां पु० मांडण सिवराज कलिताभ्या कारिता।

(२६४०)

सं० १४७३ वर्षे भ० मूला पुत्र भ० भीमा सुश्रावकेण स्वपुण्यार्थं देवगृहिका कारिता।

(२६४१)

स० १४७३ वर्षे भ० मूला (पुत्र) भ० देवराज सुश्रावकेण देवगृहिका कारिता।

(२६४२)

प्रतिमा पर

भ० दूदाकारितं प्रतिष्ठित श्री जिनभद्रसूरिभिः।

(२६४३)

प्रतिमा पर

भ० हरा का० प्रतिष्ठितं च जिनभद्रसूरिभिः।

(२६४४)

प्रतिमा पर

दूदा कारितं प्रतिष्ठित च श्री जिनभद्रसूरिभि।

(२६४५)

सवत् १४७३ वर्षे गो० वाहडपुत्र माम सारंगाभ्यां पुत्र महिराज जटा- सीहा साइर जसधवल सुताभ्यां स्वमातृ हीरादे पुण्यार्थं कारिता।

(२६६८)

परिकर पर

संवत् १५०६ वर्षे श्री जिनभद्रसूरि सद्गुरुपदेशेन सा० रतना पुत्र सा० सारंग सा० मूला संसारचन्द्र श्रावकै परिकरः कारितः स्थापितश्च षा० रत्नमूर्ति गणिना।

(२६६९)

सं० १४७३ वर्षे दूरडा हरपाल पुत्र आसाकेन पुत्रपास्हा मांडणादि पौत्र कारित।

(६७०)

सं० १४७३ वर्षे दूरडा हरपाल पुत्र कान्हडेन पुत्र भारमल पौत्र भुवणपालादि युतेन कारिता। ७४ श्री शांतिनाथ।

(२६७१)

१४७३ चो० मुरूमा पुत्र मोकरा पुत्र देवदत्त तत्भार्या पुत्र रूपा जिणदास भाडा युतेन का। श्री शान्तिनाथ

(२६७२)

सं० १४७३ वर्षे सा० समरापुत्र देया सगसीह सखा तोला मेला श्रावकै पुण्यार्थं देवकुलिका कारिता धुर्मंमस्तु।

(२६७३)

संवत् १४७३ वर्षे प्राग्वाट ऊदापुत्र सा० झरेण स्वभार्या नयणादे पुण्यार्थं देवगृहिका कारित।

(२६७४)

सभामण्डप बाँई ओर परिकर पर

सं० १४९२ वर्षे श्री खरतरगच्छे जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री नमिनाथ सिंहासनं कारितं चो० सं० सिवराज सा० महिराज सा० लोला सा० लाखणाद्यैः।

(२६७५)

सभामण्डप में पादुकाओं पर

॥ ६० ॥ संवत् १५८७ मार्गशिर वदि दिन श्री खरतरगच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टालंकार श्री श्री जिनहंससूरीश्वराणां पादुका तच्छिष्यै श्रीजिनमाणिक्यसूरिभिः प्रतिष्ठिता कारिते च षा० गजा भार्या राजू पुत्र श्रीचंद सुश्रावकेण॥

(२६७६)

श्रावक स्वपितृ मातृ श्री जिनवर्द्धनसूरि गुरुभिः।

(२६७७)

संवत् १६१२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ४ दिने शनिवारे ।। रवि योगे श्री जिनमाणिक्यसूरिणा पादुके कारिते चो० थिराख्येन सपरिकरेण प्रतिष्ठिते च श्री जिनचंद्रसूरिभि' शुभमस्तु श्री ।।

(२६७८)

प्रतिमा पर

...पितृ मातृ झावा खीमि . वर्द्धनसूरिभिः ।

(२६७९) 381

पादुकाओं पर

सं० १५९५ वर्षे माह...द ६ दिने शुक्रवारे श्री जेसलमेरू ..चोपडा गोत्री सं लाखण पौत्र सं० पूनसी सं० समंताभ्या पुत्र सं० सिद्धा सं० पादा सं० हेमा सं० सिरा सं० खेमा प्रमुख युताभ्यां श्री आदिनाथ . मडापितं श्री'शत्रुंजयोपरि ।

(२६८०)

संवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ सोमे श्राविका मूजी श्राविका सपूरी श्रा० फाल्हू श्रा० रतनाई पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य चतुर्मुख बिंबं कारतं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनहर्षसूरिभि ।

(२६८१)

धातु पचतीर्थी 381

स० १५७५ वर्षे आसोज सुदि ९ दिने ऊकेश वशे गोलवछा गोत्रे सा० वीरम भार्या सा० धनी पुत्र सा०वैरा चोला सूजादि पुत्र पौत्रादि परिवृत्तेन श्रेयोर्थं श्री शातिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठित श्री जिनहससूरिभि ।

(२६८२)

पीले पाषाण की मूर्ति पर (चौक मे)

सवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने (म) डा० पुत्र नाथूकेन समातृ वीरमती पुण्यार्थं पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्री जिनचन्द्रसूरिभिः ।

(२६८३)

म० गाजडभार्या खेमाइ भरावित

(२६८४)

स० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने सखवाल गोत्रे सा० जेठा पुत्र सं० मेहा गुणदत्त चापादि परिवार स० स्वमातृ जसमादे पुण्यार्थं श्री सुमति बिंबं कारित...खरतरगच्छ श्री जिनचं

(२६८५)

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने ऊकेशवंशे संखवाल गोत्रे सा० केल्हा भार्यया केल्हणदे श्राविकया—स धना पता माल्हादि परिवार सहितया श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री जिनचंद्रसूरिभिः श्री कीर्त्तिरत्नसूरि प्रमुख परिवार सहितैः

(२६८६)

संवत १५१८ ज्येष्ठ वदि ४ दिन संखवाल गोत्रे सा० बेठा पुत्री (सं० महगु) पुण्यार्थ श्री शांतिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतरगच्छे श्री जिनचंद्रसूरिभिः श्री कीर्त्तिरत्नसूरि प्रमुख परिवार सहितैः

(२६८७)

सा केल्हा पुत्र धना भार्या कारितं श्री शीतलनाथ

श्री संभवनाथजी का मंदिर

(२६८८)

मूर्त्तिपर

श्रीसत्यपुरे मं० आसाकस्य

(२६८९)

२४जिनपट्टिका

सं० १४९७ वर्षे मार्ग वदि ऊकेश वंशे बापणा गोत्र सा० पुत्रेण ठाकुरसी मात क पासाकाळ " पेथादि युतेन

(२६९०)

सं० १५१८ वर्षे मिति वैसाखसुदि १० दिने गुन्न गोत्रे सा० खिण पुत्र सं० सुखराम—पुत्र—सहितेन श्री वासपूज बिम्ब कारितं प्र० श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(२६९१)

श्री खरतर गच्छे श्री जिनसमुद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री पार्श्वनाथ बिम्ब परिकर कारि साहितन सं० १५०५ वर्षे ज्येष्ठ

(२६९२)

४ संयुक्त स्फटिक प्रतिमा के सिंहासन पर

॥ ६० ॥ संवत १४८४ वर्षे बैसाख वदि पंचमी दिने फूकड़ा गोत्रीय म० पाता पु० सा० महीपाल तत्पु० सा० भा० सीधी तदंगज सा० मीर—सुभावका पुत्र सा० वीरम सा दूल्हा पौत्र धर्मसीहादि परिवार युतेन बिंबं चार युत श्री प्रासाद कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर श्री जिनराजसूरि पट्टे श्रीजिनभद्रसूरिभिः ॥

(२६५७)

सं० १४७३ परी० गूजरपुत्र पदमसिंहेन नरपाल हापा सुरपति सहितेन निज भार्या पदमलदे पुण्यार्थं कारितः।

(२६५८)

परिकर पर

सं० १४७३ वर्षे चैत्र सुदि १५ दिने साधु शाखीय सा० ...सा० जइरा मातृ रामी पुण्यार्थं देव बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं···श्री जिनवर्द्धन ।

(२६५९)

सवत् १४७३ वर्षे भंडारी चापा पुत्रेण भ० घडसीकेन स्वमातृ वाल्ही पुण्यार्थं कारिता च देवगृहिका।

(२६६०)

स० १४७३ भण० मूलदेव पुत्र ऊदा सूरा वीसा जेसल मेहाकै तन्मध्य पौत्र जड्डता पूनाभ्या मूलदेव ऊदा सूरा पुण्यार्थं कारिता।

(२६६१)

स० १४७३ वर्षे भंडारी सोनाकेन स्वपितृ हरिया पुण्यार्थं च श्री देवगृहिका कारिता।

(२६६२)

स्याही से

सवत् १४७३ वर्षे चइत्र सुदि १५ दिने वाघचार। सा० वीला सुत गुणियादेहरा पन्यारथ।

(२६६३)

सवत १४७३ चैत्र सुदि १५ रूपा साइर राऊल साधा सहजा पिता ज० हरीया नरिया डागसिंह सुत पुण्यार्थं।

(२६६४)

स० १४७३ वर्षे चैत्र सुदि १५ सा० सूरा पुत्रसा (रत) तेन आना पुत्र सजणं अजित मूला पुण्यार्थं।

(२६६५)

१४७३ मथूडा गोत्रीय सा० झाझणपुत्र मागट पुत्री सिरियादे कारिता देवगृहिका।

(२६६६)

से० जल्हणपुत्र नीमा साधलधू श्रावक। पुत्र भारेहादि सहितै सं० १४७३ देहरि कारापिता।

(२६६७)

सवत् १४७३ मीनी नाथू भार्या धर्मिणी श्राविकया पुत्र सारंग सहितया कारिता ७४ श्री अजितनाथ।

(२७०१)

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ रंग मंडलीकादि परिवार सहि सहसा भावण सं० महिराज पुण्यार्थं सूत्रधार सांगण घटितं ।

(२७०२) ३८४

त्रिभूमिया चौमुख पर

A विक्रम संवत् १५१८ वर्षे श्री जेसलमेर महादुर्गे राउल श्री चाचिगदेव विजयि राज्ये ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्र सा० हेमा पुत्र पूना तत्पुत्र दीता तत्पुत्र पांचा तत्पुत्र सं० सिवराज सं० महिराज सं० लोला तद् बांधवेन सं० -

B सूहवदे सुत्र सं० थिरा सं० महिराज भाया महिगलद पुत्र सहसा साजण सं० लोला भाया लीलादे पुत्र सं० सहजपाल रत्नपाल सं० लाखण भाया लखमादे पुत्र सिखरा समरा माला मोला सोढा कउंरा पौत्र ऊधा श्रीवत्स सारंग सद्दा श्रीकरणं उगमसी सदारंग भारमल्लसालिग सुरजन मंडलिक पारस प्रमुख परिवार सहितेन वा० कमलराज गणिवराणां सदुपदेशेन मातृ रूपी पुण्यार्थ श्री कल्याण त्रय ।

C श्रीसुमति बिंबानि कारितानि प्रतिष्ठितानि श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचंद्रसूरिभिः । वा० कमलराज गणिवराणां शिष्य वा० उत्तमलाभ गणि प्रणमति ।

(२७०३) ३८४

पादुका लेख—

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने ऊकेश वंशे कूकड़ा गोत्रे चोपड़ा शाखाया सा० पांचा पुत्र सं० सिवराज महिराज पुत्र लोला बांधवेन सं० लाखण सुश्रावकेण पुत्र सिखरा समरा माला महणा सहणा कउंरा पौत्र श्रीकरण जयकरण प्रमुख परिवार सहितेन श्री आदिनाथ पादौकारे यो प्रतिष्ठिता श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभिः ॥

(२७०४)

प्रतिमा पर

सा० सहसा साजण भावकाभ्यां महिगल पुण्यार्थ

(२७०५)

पंचतीर्थी

सं० १४८५ वर्षे माघवाद व्य० गुणपाल भार्या सखी पुत्र व्य० महिदा गलामी भार्या श्रीयादे पुत्र चाचादि युताभ्यां पूर्वज श्रेयोर्थं श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभिः

श्री शान्तिनाथ जी का मन्दिर

(२७०६)

गर्भगृह

सं० १९२८ मि० माघ सुदि १३ प्र० जं० यु० प्र भ श्री जिनमुक्तिसूरिभिः बृहत्खरतर गच्छे कारापिते श्री जे (पाषाण प्रतिमा-पर्यो में सभा)

(२६७७)

संवत् १६१२ वर्षे कार्त्तिक सुदी ४ दिने शनिवारे ॥ रवि योगे श्री जिनमाणिक्यसूरिणां पादुके कारिते चो० थिराख्येन सपरिकरेण प्रतिष्ठिते च श्री जिनचंद्रसूरिभिः शुभमस्तु श्री ॥

(२६७८)

प्रतिमा पर

...पितृ मातृ झावा खीमि... वर्द्धनसूरिभिः ।

(२६७९) 381

पादुकाओं पर

स० १५९५ वर्षे माह...द ६ दिने शुक्रवारे श्री जेसलमेरू ...चोपडा गोत्री सं लाखण पौत्र सं० पूनसी सं० समंताभ्या पुत्र सं० सिद्धा सं० पादा सं० हेमा सं० सिरा सं० खेमा प्रमुख युताभ्यां श्री आदिनाथ.. मंडापितं श्री शत्रुंजयोपरि ।

(२६८०)

सवत् १५२७ वर्षे ज्येष्ठ सुदि ८ सोमे श्राविका मूजी श्राविका सपूरी श्रा० फाल्हू श्रा० रतनाई पुण्यार्थं श्री वासुपूज्य चतुर्मुख बिंबं कारतं प्र० श्री खरतर गच्छे श्री जिनहर्षसूरिभि ।

(२६८१)

धातु पचतीर्थी 381

स० १५७५ वर्षे आसोज सुदि ९ दिने ऊकेश वशे गोलवछा गोत्रे सा० वीरम भार्या सा० धनी पुत्र सा०वैरा चोला सूजादि पुत्र पौत्रादि परिवृत्तेन श्रेयोर्थं श्री शातिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्री जिनहंससूरिभि ।

(२६८२)

पीले पाषाण की मूर्त्ति पर (चौक मे)

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने (म) डा० पुत्र नाथूकेन समातृ वीरमती पुण्यार्थं पार्श्वनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठित श्री जिनचन्द्रसूरिभि ।

(२६८३)

म० गाजडभार्या खेमाइ भरावित

(२६८४)

स० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने संखवाल गोत्रे सा० जेठा पुत्र स० मेहा गुणदत्त चापादि परिवार स० स्वमातृ जसमादे पुण्यार्थं श्री सुमति बिंब कारित...खरतरगच्छ श्री जिनच

(२७१५) ३८६

सं० १५३६ फा० सु० ३ उकेस वंशे श्रे० रांका गोत्रे श्रे० रूपा- - पुण्या- नेहिणि ...प्र० श्रीजिनचंद्रसूरिभि

(२७१६)

सा० माणिक सिवदत्त श्री शीतलनाथ

(२७१७) ३८६

सं० १५७८ आषाढ़ सुदि ९ ऊकेश वंशे परीखि गोत्रे सा० धीरा पुण्यार्थं पुत्र प० राजा पौत्र- श्रेन कारितं। पा० गुणराज कारित शिवराज सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभि

(२७१८)

अमरी पुण्यार्थं श्री अजितनाथ

(२७१९)

संवत् १९२८ का मि० माघ सुदि १३ गुरौ श्री मुनिसुव्रत बिंबं श्री० जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमुक्तिसूरिभि कारापितं च....

(२७२०)

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिन सं० मास्हा भार्या माणकदे पुत्र म० नाथू भावकेण पुत्र डूंगर सुरजा प्रमुख परिवार सहितेन मातृ पुण्यार्थं आदिनाथ ...प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्र....

(२७२१) ३८६

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री बरहुडिया गोत्रे सा० खीमा पुत्र स० धरमा भार्या - सा० खीमा पु० सा० माहा० वेऊ पुत्र गलमल धरमा नाम्ना निजभार्या 'पुण्यार्थं श्री महावीर बिंबं कारितं श्री बृहद्गच्छे श्री रत्नाकरसूरि पट्टे श्रीमेरुप्रभसूरिभि

(२७२२)

सं० १५८२ वर्षे फागुण वदि ९ दिने सोमवारे श्री सुपार्श्व बिंबं कारितं सं० मान्हा पुत्ररत्न सं० पूनसीकेन पुत्रादि परिवार युतेन प्रति०

(२७२३) ३८६

संवत् १५८० वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री चतुर्विंशति जिन पट्टिका ऊकेश वंशे चोपड़ा गोत्रे संघवी कुंरपाल भार्या माणिक्या कतिगदेव्या पुत्र सं० भोजा सं० ममणा सं० नरपति पुत्र पौत्रादि युतया कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनहंससूरिभि प्रतिष्ठिता

(२७२४)

सं० १५३६ फागुण सुदि ३ सं० धारम पुत्र सं० समरा भा० मेघाइ पुण्यार्थं चतुर्विंशति जिन पट्ट का। प्र। खरतर गच्छे श्री जिनचंद्रसूरिभि

(२६९३)

सं० १४९७ वर्षे श्रीजिनभद्रसूरि प्र० सा० रिणधी कारित श्रीपार्श्वनाथ सिंहासन ।

(२६९४)

संवत् १४९७ वर्षे श्री जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं, नथ बिंबस्य परिकर' कारित सा० नेता पुत्र सा० रूपा सुश्रावकेण ॥

(२६९५)

संवत् १५०६ वर्षे श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि विजयराज्ये श्री नेमिनाथ तोरण कारितं। सा० आपमल्ल पुत्र सा० पेथा तत्पुत्र सा० आमराज तत्पुत्र सा० खेता सा० पाताभ्याम् निज मातृ गेली श्राविका पुण्यार्थं ।

(२६९६)

संवत् १४९७ वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ बिंब परिकर कारित सा० अजा सुत सं० मेरा भार्यया नारंगी श्राविकया वा० रत्नमूर्त्ति गणिना मुप ।

(२६९७) 383

तोरण पर

सवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिणा प्रसादेन श्री कीर्त्तिरत्न-सूरिणा आदेशेन गणधर गोत्रे सा० नाथू भार्या धतृ पुत्र सा० पासड सं० सच्चा सं० पासड भार्या प्रेमलदे पुत्र सं० श्रीचंद श्रावकेण भार्या जीवादे पुत्र सधारण धीरा भगिनी विमलीपूरी प्रमुख परिवार सहितेन वा० कमलराज गणिवराणा सदुपदेशेन श्रीवासुपूज्य विबं तोरणं कारितं प्रतिष्ठितम् च श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभि ॥ उत्तमलाभ गणि प्रणमति ।

(२६९८)

परिकर

स० १४९७ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितम् सा० पासड सं वासुपूज्यस्य परिकर कारित' सा० पासडे पुत्र सा०—(जीचंद्र) श्रा—पुत्र सधारण सहितेन वा० रत्नमूर्त्ति गणिना मुपदेशात् शुभभूयात्

(२६९९)

स० १५३६ फाल्गुन सुदि २ दिने श्री खरतर गच्छे

(२७००)

सपरिकर मूर्त्ति

स० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि—दिने फोफलया गोत्रे सा० पुत्र द दत्त धणदत्त कारिता सला प्रतिष्ठिता श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिणचद्रसूरिभि ।

(२७१५) ३८६

सं० १५३६ फा० सु० ३ ऊकेश वंशे भे० रांका गोत्रे भे० सुमा- - पुण्या- -हिमि...प्र० श्रीजिनचंद्रसूरिभि

(२७१६)

सा० माणिक सिवदत्त श्री शीतलनाथ

(२७१७) ३८६

सं० १५७८ आषाढ़ सुदि ९ ऊकेश वंशे परीक्षि गोत्रे सा० धीरा पुण्यार्थं पुत्र प० राजा पौत्र ओन कारितं। पा० गुणराज कारित शिवराज सहितेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं प्रतिष्ठितं श्री जिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभि

(२७१८)

अमरी पुण्यार्थं श्री अजितनाथ

(२७१९)

संवत् १९२८ का मि० माघ सुदि १२ गुरौ श्री मुनिसुव्रत बिंबं श्री० जं० यु० प्र० भ० श्री जिनमुक्तिसूरिभि: कारापितं च...

(२७२०)

संवत १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिन सं० मास्हा भार्या माणकदे पुत्र स० नापू भावदेव पुत्र डूंगर सुरजा प्रमुख परिवार सहितेन मातृ पुण्यार्थं आदिनाथ.. प्रतिष्ठितं श्रीजिनचंद्र...

(२७२१) ३८६

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री बरहुडिया गोत्रे सा० सीमा पुत्र स० धरमा भार्या - सा० सीमा पु० सा० माडा० देऊ पुत्र गडमल धरमा नाम्ना निजभार्या पुण्यार्थं श्री महावीर बिंबं कारितं श्री बृहद्गच्छे श्री रत्नाकरसूरि पट्टे श्रीमेरुप्रभसूरिभि:

(२७२२)

सं० १५८२ वर्षे फागुण वदि ९ दिने सोमवारे श्री सुपार्श्व बिंबं कारितं सं० मास्हा पुत्ररत्न सं० पूनसीकेन पुत्रादि परिवार युतेन प्रति०

(२७२३) ३८६

संवत् १५८० वर्षे फागुण सुदि ३ दिन श्री चतुर्विंशति जिन पट्टिका ऊकेश वंश चोपड़ा गोत्रे संघवी कुंरपाल भार्या श्राविकया कउतिगदेव्या पुत्र सं० भोजा सं० सखमा सं० नरपति पुत्र पौत्रादि युतया कारिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनहंससूरिभि: प्रतिष्ठिता

(२७२४)

सं० १५३६ फागुण सुदि ३ सं० आसम पुत्र सं० समरा भा० सपाई पुण्यार्थं चतुर्विंशति जिन पट्ट का। प्र। खरतर गच्छ श्री जिनचंद्रसूरिभि:

(२६९३)

स० १४९७ वर्षे श्रीजिनभद्रसूरि प्र० सा० रिणवी कारितं श्रीपार्श्वनाथ सिंहासन ।

(२६९४)

सवत् १४९७ वर्षे श्री जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं ' नथ विंवस्य परिकर कारित सा० नेता पुत्र सा० रूपा सुश्रावकेण ॥

(२६९५)

संवत् १५०६ वर्षे श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि विजयराज्ये श्री नेमिनाथ तोरण कारित । सा० आपमल्ल पुत्र सा० पेथा तत्पुत्र सा० आमराज तत्पुत्र सा० खेता सा० पाताभ्याम निज मातृ गेली श्राविका पुण्यार्थं ।

(२६९६)

संवत् १४९७ वर्षे श्रीखरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितं श्री शांतिनाथ विंव परिकर कारित सा० अजा सुत सं० मेरा भार्यया नारंगी श्राविकया वा० रत्नमूर्त्ति गणिना मुप ।

(२६९७)

तोरण पर

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ श्री खरतरगच्छे श्री जिनभद्रसूरिणा प्रसादेन श्री कीर्त्तिरत्न-सूरिणा आदेशेन गणधर गोत्रे सा० नाथू भार्या धतृ पुत्र सा० पासड सं० सचा स० पासड भार्या प्रेमलदे पुत्र सं० श्रीचंद श्रावकेण भार्या जीवादे पुत्र सधारण धीरा भगिनी विमलीपूरी परूसै प्रमुख परिवार सहितेन वा० कमलराज गणिवराणा सदुपदेशेन श्रीवासुपूज्य विबं तोरणं कारित प्रतिष्ठितम् च श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचद्रसूरिभि ॥ उत्तमलाभ गणि प्रणमति ।

(२६९८)

परिकर

स० १४९७ वर्षे श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि प्रतिष्ठितम् सा० पासड सं वासुपूज्यस्य परिकर कारितः सा० पासडे पुत्र सा०—(जीचंद्र) श्रा—पुत्र सधारण सहितेन वा० रत्नमूर्त्ति गणिना मुपदेशात् शुभभूयात्

(२६९९)

स० १५३६ फाल्गुन सुदि २ दिने श्री खरतर गच्छे

(२७००)

सपरिकर मूर्ति

स० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि—दिने फोफलया गोत्रे सा० 'पुत्र द दत्त वणदत्त कारिता मला प्रतिष्ठिता श्री खरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पदे श्री जिणचद्रसूरिभि ।

(२७३२)

बाई गंगादे पुण्यार्थे बाई मेघादे—

(२७३३) 388

चतुर्विंशति जिन पट्टिका

संवत् १५७६ वर्षे फागुण वदि ९ दिने श्री ऊकेश वंशे परीक्ष गोत्रे प० डूंगरसी पुत्र गांगा भार्या गंगादे पु० प० नोडा राजसी आंबा पौत्र माळादि परिवार सहितायो श्राविका गंगादेव्या चतुर्विंशति जिनादिका पूर्ण्यत्र स० श्रीअपाळ भार्या श्रीजळ्ह पुत्र भ० जगमाळ पौत्र साह म० सहसमळादि परिवार सहितया भा० श्रीअलदेव्यां पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता खरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभि सौभाग्यसूरिभि ।

(२७३४)

विहरमान जिन पट्टिका

संवत् १५८० वर्षे आषाढ सुदि द्वादशी दिन बुधवारे प० डूंगरसी प० गांगा प० नोडा पुत्र राजसी पुत्र आंबा मास्हा भा० गंगादे पुण्यार्थ पट्टि कारिता खरतर गच्छ ।

(२७३५)

सहस्रफणा पार्श्वनाथ

सं० १९६४ मिति फागुण वदि २ सं० । पा० चांदमल के० म० वृद्धिचंद्र ।

(२७३६)

चतुर्विंशति जिन पट्टिका

श्रीमाल वंशे रांगी गोत्रे सा० मास्हा संतानी फेरू ऊगर पुत्र घोषण संजई गूजर जाती ।

(२७३७) 388

चतुर्विंशतिजिन मातृ पट्टिका

सं० १५७६ वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे भणसाली गोत्रे श्री चोपड़ा गोत्रे । म० जाडा भार्या कपू पुत्र म० जीवट पौत्र म० नगराजादि परिवार सहितेन अपरंच श्री चोपड़ा गोत्रे आवर भार्या भा० भारमल पुत्र सं० सूटर सं० बरसीहादि परिवार सहितेनभा० कपू श्रा० मूलकदेव्या कारित प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनसमुद्रसूरि पट्टे श्रीजिनहंससूरिभि सौभाग्यसूरिभि ।

(२७३८)

चौभूमिये पर तोरण पर

सं० १९३६ वर्ष सावण सु- ......सुभं भवतु श्री जिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचन्द्र सूरि विजयराज्ये वा० कमलराज गणि पं० उत्तमलाभ गणि हेमध्वज गणि शिवशेखर रामम देवान गुरु ग्र पन्दत । सूत्रधार देवदास श्री ॥

(२७०७)

पंचतीर्थी

संवत् १६२५ वर्षे ज्येष्ठ सुदि १० दिने ऊकेश वशे व्रावडा गोत्रे मं० चणराज तत्पुत्र सा० चांपसी तत्पुत्र सा० सुरताण वर्द्धमान सा० धारसी भार्या कोडिमदेव्या श्री शान्तिनाथ विंवं कारापितं... पुण्यार्थं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः

(२७०८)

सभामण्डप में

संवत १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने छाजड़ गोत्रे.........

(२७०९)

संवत् १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ दिने श्री आदिनाथ ....

(२७१०)

पचतीर्थी

संवत् १५३४ वर्षे चैत्र वदि १० रवौ श्री ओएस वंशे। सा० ठाकुर भा० रणादे पुत्र सा० सहिदे सुश्रावकेण भार्या सूरमदे पुत्र लाखण भ्रातृ सा० जेसा वीकम सहितेन स्व श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ विंवं करितं प्रतिष्ठितं श्री पूर्णिमापक्षे श्रीसूरिभिः

(२७११)

पचतीर्थी

सं० १५३६ फागुण सु० ३ ऊकेश वंशे परीक्ष गोत्रे सा० मूला भा० अमरीपुत्र सा० मलाकेन भा० हरषू पुत्र मेरा देसलादि परिवार युतेन श्री सुविधिनाथ विंबं का० प्र० खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि

श्री अष्टापद जी का मन्दिर

(२७१२)

संवत १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वशे कूकड़ा चोपड़ा गोत्रे सा० पाँचा भार्या रू...पुत्र सं० लाखण ....सिखराकेन सं० समरा सं० . सुहणा .. भार्या सवीर...

(२७१३)

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने ऊकेश वंशे संखवाल गोत्रे सं० पेथा भार्या पूनादे पुत्र आसराज पुण्यार्थं पुत्र सं० खेताकेन ..वीदा सा० नो.. परिवारयुत ..

(२७१४)

सं १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंश श्री संखवाल गोत्रे सं० आसराज पुत्र स०खेता केन .

(२७४६)

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख वदि ८ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० हापा भा० रूपी सुत रत्नाकेन भा० रानू सुत पेथादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री कुंथुनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारापितं प्रतिष्ठितं । तपा गच्छेश श्री सोमसुन्दरसूरि शिष्य श्री रत्नशेखरसूरिभिः शुभं भवतु ।

(२७४७) ३९०

संवत् १५२० वष मार्गशिर सुदि ९ दिने नाहर गोत्रे सा० सुरता संतान सा० पच्छा भा० रूपमिणि पुत्र सा० मेघा आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखरसूरि पट्टे म० पद्माणंदसूरिभिः ।

(२७४८) ३९०

सं० १५३६ फा० सु० ३ दिने श्री ऊकेश वंशे कूकड चोपड़ागोत्रे सं० छाजण भा० छजमादे पु० सं० सयणाकेन भा० मेलादे द्वि० भा० माणिकदे पु० धन्ना बन्नादि युतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारि० प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभिः श्री जिनसमुद्रसूरिभिश्च ॥

(२७४९) ३९०

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ३ बुधे ऊकेश वंशे चो० वीदा पु० पांचा पुत्र आसण… केन सिखरादि सुत युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभिः

(२७५०) ३९०

सं० १५१६ वर्षे वै० व० ४ ऊकेश वंशे साधु शाखायां सं० नमा भार्या सारू सुत सा० रत्नीया सा० मेघा सा० समरा श्रावकैः स्वश्रेयसे सुमति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरि सद्गुरुभिः ॥

(२७५१)

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधवारे ऊ० ज्ञातीय सा० ईसा भार्या रूपिणी पु० धना भा० धांधलदे पितृ मातृ श्रेयार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं आसकीया भ० श्रीगुणचन्द्र सूरिभिः

(२७५२) ७५८।३९०। ..

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिने श्री उपकेश वंशे कूकडा चोपड़ा गोत्रे सं० आसण भा० अजमादे पु० सं० कुरपाल सुश्रावकेण भा० कोडमदे पु० सा० भीजराजादि परिवार युतेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः

(२७५३) ३९०

सं० १५१६ वर्षे वैशा० वदि ४ ऊकेश वंशे रीहड़ गोत्रे सं० धरण भा० धारू पु० सं० जेठाकेन भा सीतादे पु नागा ईसर मल्लिकपुत्र पौत्रादि युतेन स्वश्रेयसे पु० सं० माल्हा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्रीखरतरगच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री ।

(२७२५) 387

संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे कूकड चोपडा गोत्रे सा० पांचा भा० रूपादे पु० स० लालम भा० लखमादे पुण्यार्थं पुत्र सं० सिखरा स० समरा सं० माल्हा सं० सुहणा सं० कुरपाल सुश्रावकैः द्विपचाश जिनालये पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्रीजिन-भद्रसूरि पट्टालंकारैः श्री जिनचन्द्रसूरिराजैः तत्शिष्य श्री जिनसमुद्रसूरि सहितैः। श्री जैसलमेरु महादुर्गे। श्री देवकर्ण राज्ये।

(२७२६) 387

संवत् १५३६ वर्षे फगुण सुदि ३ दिने श्री उपकेश वंशे श्री संखवाल गोत्रे स० मनगर पु० सा० जयता भार्या किस्तूराई श्राविकया कारि। प्रतिष्ठिता च श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि प० श्रीजिनचद्रसूरिभिः

(२७२७)

पचतीर्थी

स० १५३३ वर्षे पौष वदि १० गुरु प्राग्वाट ज्ञा० गांधी हीरा भा० मेहादे पुत्र चहिताकेन भ० लाली पुत्र समरसी भार्या लाडकी प्रमुख कुटुंब युतेन स्वश्रेयोर्थं श्री नमिनाथ विंबं का प्र। तपा गच्छे श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः। वीसलनगर वास्तव्यः श्रीः

श्री चन्द्रप्रभ जिनालय

(२७२८)

सं० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४

(२७२९)

संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदि ३ मूल संघे भट्टारकजी श्रीजिनचन्द्रदेव साहजी श्री जीवराज पापड़ीवाल नित्य प्रणमत सर माया जा श्री राजा स्योसंघ शहर मुडासा।

(२७३०).

पचतीर्थी पर

सं० १५११ वै० व० ५ गुरौ ऊकेश वंशे सा० तोल्हा भा० तोलादे सुत सीहाकेन भार्या गउरी पुत्र दूल्हा देवा भ्रातृ वाहड़ भ्रातृजाया हिमादे प्रमुख परिवार सहितेन श्री वासुपूज्य विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः॥ जय भ

(२७३१) 387

संवत् १५३६ वर्षे फा० सु० ५ दिने श्री ऊकेश वंशे लिगा गोत्रे सा० सहसा भा० जीदी पुत्र आभा पु० सारु पुण्यार्थं सहसा सोभाकेन ..श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभिः श्री सम्भवनाथ।

(२७४६)

संवत् १५१२ वर्षे वैशाख वदि ८ प्राग्वाट ज्ञातीय व्यव० हापा भा० रूपी सुत रामाकेन भा० राजू सुत पेथादि कुटुंब युतेन स्वश्रेयोर्थ श्री कुंथुनाथादि चतुर्विंशति पट्ट कारापित' प्रतिष्ठित' । तपा गच्छेश श्री सोमसुन्दरसूरि शिष्य श्री रत्नशेखरसूरिभिः शुभं भवतु ।

(२७४७) ३९०

संवत् १५२० वर्षे मार्गशिर सुदि ९ दिन नाहर गोत्रे सा० जूठा संताने सा० पच्चा भा० रुक्मिणि पुत्र सा० मेघा आत्मश्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारापितं प्रतिष्ठितं श्री धर्मघोष गच्छे श्री पद्मशेखरसूरि पट्टे भ० पद्मार्णदसूरिभिः ।

(२७४८) ३९०

सं० १५३६ फा० सु० ३ दिने श्री ऊकेश वंशे फूकड चोपड़ागोत्रे सं० कालण भा० कस्मादे पु० सं० मयणाकेन भा० मेलादे द्वि० भा० माणिकदे पु० धन्ना धन्नादि युतेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारि० प्रति० श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि श्री जिनसमुद्रसूरिभिश्च ॥

(२७४९) ३९०

संवत् १४९७ वर्षे मार्गशीर्ष वदि २ बुधे ऊकेश वंशे बो० वीसा पु० पांचा पुत्र आसय -- केन सिखरादि सुत युतेन श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरिभि'

(२७५०) ३९०

सं० १५१६ वर्षे वै० व० ४ ऊकेश वंशे साधु शाखायां सं०नेमा भार्या सारू सुत सा० खीमा सा० मेघा सा० समरा भ्रातृकैः स्वश्रेयसे सुमति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरि सद्गुरुभि' ॥

(२७५१)

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधवारे ब० ज्ञातीय सा० ईना भार्या रूपिणी पु० धना भा० पांचकदे पितृ मातृ श्रेयार्थं श्रीशीतलनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं व्रावडीया म० श्रीगुणचन्द्र सूरिभि'

(२७५२) ०५८८।३९०। dfml

सं० १५६० वर्षे वैशाख सुदि ३ दिन श्री ऊपकेश वंशे फूकडा चोपड़ा गोत्रे सं० कालण भा० कस्मादे पु० सं० कुंरपाल सुश्रावकेण भा० कोडमदे पु० सा० भीवराजादि परिवार युतेन श्री धमनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभि'

(२७५३) ३९०

सं० १५१६ वर्षे वैशा० वदि ४ ऊकेश वंशे रीहड गोत्रे सं० धम्मण भा० वारू पु० सं० खेठाकेन भा० सीतादे पु० धागा ईसर प्रमुखपुत्र पौत्रादि युतेन स्वश्रेयसे पु० सं० मालहा पुण्यार्थं श्री श्रेयांस बिंबं कारितं श्रीखरतरगच्छ श्रीजिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनचंद्रसूरिभि' प्रतिष्ठित श्री ।

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२७३९) 389

सं० १५०१ (?) वर्षे माघ वदि षष्ठी बुधे श्री उपकेश वशे छाजहड़ गोत्रे मंत्री काल्हू भा० करमादे पु० म० रादे छाहड नयणा सोना नोडा पितृ मातृ श्रेयसे सुमतिनाथ बिंबं कारापितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनधर्मसूरिभिः ।

(२७४०) 389

. स० १४९१ फाल्गुन शु० १२ गुरौ उपकेश ज्ञातौ छाजहड़ गोत्रे मं० वेगड भा० कउतिगदे पु० भुणपालेन भा० हिमादे श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंव का । प्र । खरतर गच्छे श्री जिनधर्मसूरिभि ॥ शुभं ॥

(२७४१) 389

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सु० २ शनै उपकेश ज्ञाति छाजहड गोत्रे सं० झूठिल सुत महं० काल्हू भा० कर्मादे पु० मं० नोडाकेन स्वपु० श्रेयांस बिंबं का० प्र० खरतर गच्छे भ० श्रीजिनशेखरसूरि प० भ० जिन....

(२७४२)

सं० १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ प्राग्वाट ककरावासी व्य० वसता भा० वील्हणदे सुत पुजाकेन भा० सोभागिणी पुत्र पर्वत भा० लींवा युतादि कु० स्व श्रे० श्री संभव विंवं का प्र० तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

(२७४३) 389

स० १४७७ वर्षे मार्ग व० ४ रवौ वर्द्धमान शाखायां महाजनी पदीया भा० पदमल सु० मोखाकेन भा० मागलदे पु० लींवा धना सहितेन पित्रो श्रे० श्री सुमतिनाथ बिंबं का० प्र० ऊकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्धसूरिभि ।

(२७४४)

सवत् १५३५ वर्षे मार्ग सु० ६ शुक्रे श्री श्री वशे श्रे० रामाभार्या रामलदे पुत्र श्रे० नीनाकेन भा० गोमती भ्रातृ श्रे० नगा महिराज सहितेन पितुः पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छेश्वर श्रीजयकेशर सूरिणामुपदेशेन श्री श्रेयांसनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन ।

(२७४५)

सं० १५०६ मार्ग वदि ७ बुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० वरपाल भा० वील्हणदे सु० व्य० लाडण भा० मानू सु० व्य० पासाकेन भ्रा० झाझण भा० थिरपालादि सर्व कुटुम्ब सहितेन श्रीविमलनाथादि चतुर्विंशतिपट्ट स्वपितृ श्रेयोर्थं श्री पूर्णिमापक्षे श्रीवीरप्रभसूरिणामुपदेशेन कारित प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ श्री ॥

(२७६४)

स० १५१५ वर्षे मार्ग सु० १ दिने ऊकेश वंशे प० सूरा पु० भीमा सोनी पोमा पुत्रेन प० पारस श्रावकेण भार्या रोहिणी पुत्र खेता रीला परिवृतेन श्री चन्द्रप्रभ स्वामी बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्रीखरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः निजपुण्यार्थमिति ।

(२७६५)

सं० १५२७ कार्तिक सु० १३ भोमे श्री श्रीमाल० ज्ञा० श्रे० केल्हा भा० गक्ता सु० असा भा० मेघू सुत्र गणीया विरीया मेहा सहितेन पि० मा० भ्रात श्रयेर्थं श्री धर्मनाथ बिंबं का० प्र० श्री पिप्पल भ० भ० श्री अमरचंद्रसूरिभिः सिरधर ग्रामे ।

(२७६६)

ॐ श्री नागेन्द्र श्री सिद्धसेन-दिवाकराचार्य गच्छे अम्मा छुप्ताभ्यां कारिता सं० १०८६

(२७६७)

सं०   वर्षे चै० सु० ७ श्री चैत्र गच्छे श्रीमाल- कारित प्रति० श्रीधर्मदेवसूरिभिः

(२७६८)

सं० १४२७ वर्षे ज्येष्ठ ब० १ शुक्रे ऊकेश ज्ञातीय टाल्हण पुण्याय सं० नरदे० भ० श्री— प्रति० खरतर गच्छे श्री जिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनेश्वरसूरिभिः

(२७६९)

सं० १४९३ वर्षे फा० ब० १ श्री ऊकेश वंशे बहरा गोत्रे सोमण सुत भा योर्थं श्री श्रेयांस बिंबकारितं ।—प्रति श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरिभिः

(२७७०)

संवत् १८५९ वर्षे व्यव० खेतसीह पुत्राभ्यां व्यव० सीहा व्यव० सूरा सुश्रावकाभ्यां श्रीशीतलनाथ बिंबं पितृ पुण्यार्थं का० प्रति० खरतर गच्छे श्रीजिनराजसूरिभिः ।

(२७७१)

स० १५१० वर्षे फागुण सुदि ११ शनौ श्रीब्रह्माण गच्छे श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रेष्ठि देपाल भा० देवलदे पुत्र गोगा भा० गंगादे गुरदे भीखी पु० जसू टमाल नाजा हेमा गदाभिः स्व पितृ मातृ श्रेयसे नि० श्रीश्रेयांसनाथ बिंबं कारितं प्र० श्री वीरसूरि पट्टे श्रीपजनसूरिभिः । नरसाणा ग्रामे

(२७७२)

सं० १४८५ वर्षे वैशाख सुदि ३ बुधे उपकेश ज्ञातौ नपणाग गोत्रे सा० कूका पुत्र सालणेन पित्रोः श्रेयसे श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं का० प्र० श्री उपकेश गच्छे श्रीककुदाचार्य सन्तान श्रीसिद्धसूरिभिः

(२७७३)

सं० १५१७ वर्षे फागण वदि - सोमे   श्रेयसे श्री आदिनाथ बिंबं कारापितं श्री जयशेखरसूरि ।

धातु प्रतिमाओं के लेख

(२७३९) 389

स० १५०१ (?) वर्षे माघ वदि षष्ठी वुधे श्री उपकेश वशे छाजहड गोत्रे मंत्री काल्ह भा० करमादे पु० मं० रादे छाहड नयणा सोना नोडा पितृ मातृ श्रेयसे सुमतिनाथ विंवं कारापितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनधर्मसूरिभि. ।

(२७४०) 389

. सं० १४९१ फाल्गुन शु० १२ गुरौ उपकेश ज्ञातौ छाजहड़ गोत्रे मं० चेगड भा० कउतिगदे पु० भुणपालेन भा० हिमादे श्रेयोर्थं श्री अजितनाथ विंवं का । प्र । खरतर गच्छे श्री जिनधर्म-सूरिभिः ॥ शुभं ॥

(२७४१) 389

सं० १५०९ वर्षे आषाढ सु० २ शनै उपकेश ज्ञाति छाजहड गोत्रे सं० झूठिल सुत महं० काल्ह भा० कर्मादि पु० म० नोडाकेन स्वपु० श्रेयांस विंवं का० प्र० खरतर गच्छे भ० श्रीजिनशेखर-सूरि प० भ० जिन......

(२७४२)

सं० १५३५ वर्षे माघ वदि ९ शनौ प्राग्वाट ककरावासी व्य० वसता भा० वील्हणदे सुत पुजाकेन भा० सोभागिणी पुत्र पर्वत भा० लींवा युतादि कु० स्व श्रे० श्री संभव विंवं का प्र० तपा श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः ।

(२७४३) 389

सं० १४७७ वर्षे मार्ग व० ४ रवौ वर्द्धमान शाखायां महाजनी पदीया भा० पदमल सु० मोखाकेन भा० मागलदे पु० लींवा धना सहितेन पित्रो श्रे० श्री सुमतिनाथ विंवं का० प्र० ऊकेश गच्छे ककुदाचार्य संताने श्री सिद्धसूरिभि ।

(२७४४)

सवत् १५३५ वर्षे मार्ग सु० ६ शुक्रे श्री श्री वशे श्रे० रामाभार्या रामलदे पुत्र श्रे० नीनाकेन भा० गोमती भ्रातृ श्रे० नगा महिराज सहितेन पितु पुण्यार्थं श्री अंचलगच्छेश्वर श्रीजयकेशर सूरिणामुपदेशेन श्री श्रेयासनाथ विंवं कारितं प्रतिष्ठित श्रीसघेन ।

(२७४५)

सं० १५०६ मार्ग वदि ७ वुधे श्री श्रीमाल ज्ञातीय व्य० वरपाल भा० वील्हणदे सु० व्य० लाडण भा० मानू सु० व्य० पासाकेन भ्रा० झाझण भा० थिरपालादि सर्व कुटुम्ब सहितेन श्रीविमलनाथादि चतुर्विंशतिपट्ट स्वपितृ श्रेयोर्थं श्री पूर्णिमापक्षे श्रीवीरप्रभसूरिणामुपदेशेन कारितः प्रतिष्ठितं च विधिना ॥ श्री ॥

खरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरि गच्छनायकैः शिष्य श्री जिनसमुद्रसूरि श्री गुणरत्नाचार्य प्रमुख परिवार सहितै ॥ दुर्गाधिप श्री वत्सकर्म नृप राज्ये ॥ शुभंभूयात् ॥ लिखिता कमलराज मुनिना श्रेयोस्तु ॥

(२७८२) ३९४

॥ ६० ॥ संवत् १५३६ वर्ष फागुन सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे वच्छरा गोत्रे सा० सादा भा० सुहवादे सु० सा० चांपा भार्या चाही सुश्राविकया सुपुण्यार्थं सप्ततिशत जिनवरेन्द्र पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनचंद्रसूरिभिः ॥ तच्छिष्य श्री जिनसमुद्रसूरि श्री गुणरत्नाचार्य श्री समयभक्तोपाध्याय

(२७८३) ३९५

संवत् १६०३ वर्षे आषाढ शुक्ल द्वितीया दिने श्री जेसलमेर महादुर्गे राउल श्री लूणकर्ण विजयिराज्ये श्री ऊकेश वंशे पारिख गोत्रे प० वीदा भार्या श्रा० धारली सुश्राविकाया पुत्र प० भोजा प० राजा प० धीरू प० गुणराज। सवराज रंगा पासधत्त रूपमल केशा नोडा धरमदास भयरवदास प्रमुख पुत्र पौत्रादि सत् परिवार सहितया स्वपुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिनवर पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता च श्री वृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्री जिनहंससूरिपद पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः लिपिकृता पं० विजयराज मुनिना सूत्र० केसवाकेन कारिता

(२७८४)

चरणों पर

A संवत् १५३६ वर्ष फागुण सुदि ३ श्री आदिनाथ पादुका बाई गली कारिता।

B ॥ संवत् १५३६ वर्ष फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० आपमल पुत्र सा० पेथा सं० आसराज भार्या गजमदे नाम्ना पुत्र सं० खेता पुत्र सं० मीदा नोडादि युतया श्री आदिनाथ पादुकायुग्मं कारयामास प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(२७८५)

धातुमय मूलनायक प्रतिमा

१ सं० १५३६ वर्ष	न सा० मूलू सा० रत्ना पुत्र
२ सा० आपमल पुत्र	सरसती पुत्र सा० मीदा
३ सा० नोडा प्रमुख	जिनचंद्रसूरिभिः
४ श्री जिन	भवतु

सामने—सं० १५११ वर्ष फा० सु० ३ दिने श्री शांतिनाथ व जाध (?) विंबं श्री प्रताक

(२७५४)

सं० १५१० वर्षं ज्येष्ठ सुदि ५ शनौ श्री श्रीमाल ज्ञा० मंत्री वानर भा० वीकमदे सुत मेला भा० लाडी सु० धनपाल राजा वडुआ देवसी भा० सहितैः पिता पितामह निमित्तं श्री आदिनाथ पचतीर्थी बिंब का० श्री पूर्णिमापक्षे श्रीवीरप्रभसूरि पट्टे श्रीकमलप्रभसूरिणां मुपदेशेन प्रतिष्ठितं ॥१॥ मोरवाडा वास्तव्य १

(२७५५)

खण्डित पचतीर्थी

श्रीचन्द्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री विजयसेनसूरिभिः तप गच्छे

(२७५६)

खडित

.... पितृ मातृ श्रेयोर्थं श्री सुमतिनाथ बिंब का० प्र० श्री नागेन्द्र गच्छे श्री गुणदेवसूरिभिः झझाणी वास्तव्य

(२७५७)

खडित

.... नाम्न्या स्वश्रेयसे श्री शातिनाथ बिंबं कारितं श्रीरत्नसिंहसूरिभि प्रतिष्ठितं।

(२७५८)

स० १४०८ वैशाख सुदि गच्छे ककुदाचार्य संताने श्रावक हरपाल भा० रतन सहितेन पितृ श्रेयसे श्री पार्श्व बिंबं का० प्र० श्री कक्कसूरिभि

(२७५९)

संवत् ११६२ श्री वायडीय गच्छे वीरदेवेन प्र० . निमत्तं कारित।

(२७६०)

सं० १२०८ ज्येष्ठ वदि गुरौ देदंग पद्मी श्राविकाभ्यां स्वश्रेयसे प्रतिमा कारिता प्रतिष्ठिता च श्रीदेवसूरिभिः

(२७६१)

सं० १४(०) १८ वर्षे फागुण वदि २ बुद्धै ऊकेश ज्ञातीय आंचल गच्छे व्य० सोमा भा० मागल श्रेयोर्थं भ्रातृ सु० जाणाकेन श्री शान्तिनाथ कारितं प्रतिष्ठितं श्रीसूरिभिः।

(२७६२)

सं० १२४६ व० ज्येष्ठ सुदि १४ श्री शातिनाथ बिंबं दुर्घटान्वय सा० हरिचंद पुत्र भूपो स्वपूर्वज श्रेयसे प्र० श्रीदेवाचार्य सन्तानीयैः श्रीमुनिरत्नसूरिभिः

(२७६३)

स० १४९२ वर्षे आषाढ वदि १३ डीसावाल ज्ञातीय व्य० चापाकेन भा० संसारदे पुत्र आसादि युतेन पु० राजा श्रेयसे श्रीव[illegible]

खरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरि गच्छनायकैः शिष्य श्री जिनसमुद्रसूरि श्री गुणरत्नाचार्य प्रमुख परिवार सहितै ॥ दुर्गाधिप श्री देवकर्ण नृप राज्ये ॥ शुभंभूयात् ॥ लिखिता कमलराज मुनिना श्रेयोस्तु ॥

(२७८२) ३९४

॥ ६० ॥ संवत् १५३६ वर्षे फागुन सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे छाजहड़ा गोत्रे सा० सावा भा० सूहवदे सु० सा० चापा भार्या चाही सुश्राविकया सुपुण्यार्थं सप्ततिशत जिनवरेन्द्र पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनचंद्रसूरिभिः ॥ तच्छिष्य श्री जिनसमुद्रसूरि श्री गुणरत्नाचार्य श्री समयभक्तोपाध्याय

(२७८३) ३९४

संवत् १६०३ वर्षे आषाढ़ शुक्ल द्वितीया दिने श्री जेसलमेर महादुर्गे राउल श्री लूणकर्ण विजयिराज्ये श्री ऊकेश वंशे पारिख गोत्रे प० धीदा भार्या श्रा० धाल्ही सुश्राविकाया पुत्र प० भोजा प० राजा प० धीक प० गुणराज। सधराज रंगा पासदत्त रूपमल केडा नोडा धरमदास भयरयदास प्रमुख पुत्र पौत्रादि सत् परिवार सहितया स्वपुण्यार्थं श्री चतुर्विंशति जिनवर पट्टिका कारिता प्रतिष्ठिता च श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश्वर श्री जिनहंससूरिपट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनमाणिक्यसूरिभिः लिपिकृता पं० विजयराज मुनिना सूत्र० कल्याणेन कारिता

(२७८४)

चरणों पर

A संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ श्री आदिनाथ पादुका वाई गेली कारिता।

B ॥ संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वंशे संखवाल गोत्रे सा० आपमल्ल पुत्र सा० पेथा सं० आसराज भार्या गेलमदे नाम्ना पुत्र सं० खेता पुत्र सं० धीदा नोडादि सुतया श्री आदिनाथ पादुकायुग्मं कारयामास प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचंद्रसूरिभिः

(२७८५)

धातुमय मूलनायक प्रतिमा

१ सं० १५३६ वर्षे ... न सा० मूला सा० रत्ना पुत्र
२ सा० आपमल्ल पुत्र ... सरसती पुत्र सा० धीदा
३ सा० नोडा प्रमुख .... जिनचंद्रसूरिभिः
४ श्री जिन .... भवतु

सामने—सं० १५३६ वर्षे फा० सु० ३ दिन श्री आदिनाथ स जाय (?) बिंबं श्री संताक

(२७७४) 393

सं० १५६८ वर्षे मा० सुदि ४ दिने ऊकेश वंशे काकरिया गोत्रे सा० सूरा पुत्र सा० मोका भार्या तारादे पुत्र राउल भार्या रगादे पुत्र हमीरादि परिवार सहितेन श्री नमिनाथ विंवं कारापित प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभि ।

(२७७५)

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे ऊभटा वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पाचा भा० पाल्हणदे पुत्र सहिसाकेन भा० भोली भ्रातृ सांगा भेदायुतेन श्रीकुंथुनाथादि चतुर्विंशति पट्ट मातृ-पितृ श्रेयसे कारित आगम गच्छे श्री हेमरत्नसूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठिते ।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

पापाण प्रतिमा लेखाः

(२७७६)

स० १५३६ श्री पार्श्वनाथ······गुणराज

(२७७७)

परीक्षिक सा० पूंजा

(२७७८)

संवत् १५७१ वर्षे गणधर गोत्रे सा० गूजरसी भार्या पूजी पुत्र माधलभाक् श्री ···

(२७७९) 393

सवत् १५३६ वर्षे वैशाख सुदि दिने श्री ऊकेश वशे वहुरा गोत्रे सा० वमली पुत्र सहि··

(२७८०) 393

स० १५३६ फाल्गुन सु० ३ श्री ऊकेश वशे कूकड चोपडा गोत्रे सा० जोगा भा०·· पुत्र सा० खोखाकेन भा० ··लदे पुत्र देवराज हाज धीरा प्रमुख परिवार सहितेन श्री ··विं० भ० ·· प्रति०श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि.

(२७८१) 393

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे ईदा क्षत्रियान्वये श्री थुल्ल गोत्रे मं० कुंदा पुत्र मं० धीधा पुत्र मं० लखमसी मं० लाखण तत्र लखमसी पुत्र मं० पद्मा मं० वीरा तत्र मं० वीरा पुत्र जींदा मं० धीरा देवराज । डाहा । वसता । सहजा । तत्र धारा भार्या धाधलदे पु० मं० तेजा म० वीज्जा मं० गज्जा मं० साता । तत्र मं० तेजा भा० हासलदे पुण्यार्थं पु० मं० रूपसी मं० सोमसीभ्या तत्र रूपसी भा० राभलदे पु० मं० राजा पुत्री हक्की । रुक्मणी सोमसी । भा० ससारदे पुत्री रोहिणी प्रमुख परिवार सहिताभ्या श्री सत्तरिसय पट्टिका कारिता—प्रतिष्ठितं श्री

श्री ऋषभदेव जी का मन्दिर

(२७९८) ऋ्‌ ६

सं० १५३५ वर्षे फागुण सुदि ५ ऊकेश भणशाली गोत्रे मं० जसा पुत्र मं० रूपाकेन पुत्र जगमालादि परिवार सहितेन

(२७९९)

श्री सुमतिनाथ का० श्रे० हरिराजे मणकाई पुण्यार्थं सं० १५३६.

(२८००)

... ...सं० १५१८ मणशाली

(२८०१)

चौवीसजिन पट्टिका २९६

सं० १५३६ फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वंशे गणधर गोत्रे सं० सचा भार्या श्रा० सिंगारदे पुत्र सं० देवसिंघेन पुत्र सा० रिणमा सा० सुणा सा० महणा। सा० महणा पौत्र मेघराज जीवराजसहितेन भा० भा० अमरापुण्यार्थं पट्टिका कारिता खरतरगच्छे श्री जिनचन्द्रसूरिभिःप्रतिष्ठितम

(२८०२)

सा० गोरा भार्या हीरादे पुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं।

(२८०३)

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्र सूरिभिः। प्र०॥

(२८०४)

सं० १५१८ वर्ष ज्येष्ठ वदि ४ दिन साह कीहड कुलका श्रावकाभ्यां. कीबू पुण्यार्थं श्री संभवनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं

(२८०५) आदि० ३१५ कीस०

संवत् १५१८ वर्ष जेष्ठ वदि ४ दिन काकड़ गोत्रे सा० कीहड कुलका ... दि कुलाभ्यां श्री आदिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर.

(२८०६) २५६

सं० १५३६ वर्षे फा० सु० दिने श्री ऊकेश वंशे कनारिया गोत्रे सा काल्ह पु० पद्माकेन

(२७७४)

स० १५६८ वर्षे मा० सुदि ४ दिने ऊकेश वंशे काकरिया गोत्रे सा० सूरा पुत्र सा० मोका भार्या तारादे पुत्र राउल भार्या रंगादे पुत्र हमीरादि परिवार सहितेन श्री नमिनाथ बिंबं कारापितं प्र० श्री खरतर गच्छे श्रीजिनहंससूरिभि. ।

(२७७५)

सं० १५१२ वर्षे वैशाख सुदि ५ शुक्रे ऊभटा वास्तव्य श्री श्रीमाल ज्ञा० श्रे० पाचा भा० पाल्हणदे पुत्र सहिसाकेन भा० भोली भ्रातृ सागा भेदायुतेन श्रीकुंथुनाथादि चतुर्विंशति पट्ट मातृ-पितृ श्रेयसे कारित. आगम गच्छे श्री हेमरत्नसूरिणामुपदेशेन प्रतिष्ठिते ।

श्री शांतिनाथजी का मन्दिर

पाषाण प्रतिमा लेखाः

(२७७६)

स० १५३६ श्री पार्श्वनाथ······गुणराज

(२७७७)

परीक्षिक सा० पूंजा

(२७७८)

संवत् १५७१ वर्षे गणधर गोत्रे सा० गूजरसी भार्या पूजी पुत्र माधलभाक श्री

(२७७९)

संवत् १५३६ वर्षे वैशाख सुदि दिने श्री ऊकेश वशे वहुरा गोत्रे सा० 'वमली पुत्र सहि··

(२७८०)

सं० १५३६ फाल्गुन सु० ३ श्री ऊकेश वशे कूकड़ चोपडा गोत्रे सा० जोगा भा०·· पुत्र सा० खोखाकेन भा० ·लदे पुत्र देवराज ह्राज धीरा प्रमुख परिवार सहितेन श्री · विं० भ० ·· प्रति०श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि

(२७८१)

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ दिने श्री ऊकेश वंशे ईंदा क्षत्रियान्वये श्री थुल्ल गोत्रे मं० कुदा पुत्र मं० धीधा पुत्र मं० लखमसी मं० लाखण तत्र लखमसी पुत्र मं० पद्मा म० वीरा तत्र मं० वीरा पुत्र जींदा मं० धीरा देवराज । डाहा । वसता । सहजा । तत्र धारा भार्या धाधलदे पु० मं० तेजा म० वीज्जा म० गज्जा मं० साता । तत्र म० तेजा भा० हासलदे पुण्यार्थं पु० मं० रूपसी मं० सोमसीभ्या तत्र रूपसी भा० राभलदे पु० मं० राजा पुत्री हकी । रुक्मणी सोमसी । भा० ससारदे पुत्री रोहिणी प्रमुख परिवार सहिताभ्या श्री सत्तरिसय पट्टिका कारिता—प्रतिष्ठितं श्री

(२८१५)

संवत १४७९ वर्षे माघ सुदि ४ श्री ऊकेश वंशे सा० तास्हण पुत्र सा० भोजा पुत्र सा० षणरा सहितेन सा० षछाकेन भ्रातृ कर्मा पुत्र हासा घना सहसा परिवृत्तेन स्वपुण्यार्थं श्री नमिनाथ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनराजसूरि पट्टे श्री जिनभद्रसूरिभिः ।

(२८१६)

सं० १५१५ वर्षे माघ सुदि १४ श्री श्रीमाल ज्ञा० व्य० भास्कर सुत हीरा भार्या हरखसुत जगाकेन पित्रोः श्रेयसे श्रीधर्मनाथ बिंबं का। पूर्णिमा पक्षे श्रीराजतिलकसूरिणामुपदेशेन प्र० विधिना

(२८१७)

संवत् १२५७ वर्षे वैशाख वदि ५ शुक्रे लष ! नव भार्या नाग—पुत्र कडूवराज्ञ्यादिभिः ।

(२८१८)

सं० १४९६ वर्षे माघ सुदि १२ शनौ उपकेश ज्ञातीय पितामह सीहा पितामही सीमिणी पितृ कमूआ मातृ नास्ह श्रेयसे पुनपासकेन श्रेयसे श्रीपद्मप्रभ बिंबं कारितं प्र० श्रीसूरिभिः शुभं।

(२८१९)

सं० १३३२ ज्येष्ठ सुदि ८ बुधे माण्या ज्ञातीय म० पुनपाल सुत म० मयणाकेन पितृ अरिसिंह श्रेयार्थ श्री पार्श्वनाथ बिंबं कारितं ।

(२८२०)

सं० १३७३ फागण सुदि ८ दिसावाल ज्ञा० श्रे० भीमा भार्या पीसू तयोः श्रेयसे वधा भ्रातृ काचक व्यव० सुहडा मा० कामल भ्रातृ सूठिल भार्या सूहवदेवि तेषां श्रेयसे ठ० सहूकेन पंचतीर्थी कारिता प्रति० सिद्धान्तीक श्री विनोदचंद्रसूरि शिष्य श्री शुभचन्द्रसूरिभिः ।

(२८२१)

सं० १५१८ वर्षे आषाढ सुदि ३ गुरौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय व्य० वेला मा० रायू सु० अरजुनेन सुत सांडा युतेन पितृव्य हावा श्रेयसे श्री श्रेयांस बिंबं पूर्णिमा० श्रीगुणधीरसूरीणामुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठितं विधिना ।

(२८२२) ३९४

सं० १५२७ फा० सु० ४ रवौ श्री उपकेशे पचूरा ज्ञातीय सा० सादा भा० सुहडा पुत्र सा० जीवाकेन भा० जीवादे मातृ सरवण सुरा पांचा चांपा सुत पूना सहितेन भ्रातृ श्राविका शोभा श्रेयार्थ श्री अंचल गच्छेश श्रीजयकेसरसूरिणामुपदेशेन श्रीचंद्रप्रभ बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री संघेन कोटड़ा ग्रामे

(२८२३) ३९४

सं० १५०९ वर्षे मार्गशीर्ष सुदि ६ दिन ऊकेश वंशे साधु शाखायां प० जेता भा० जसमादे पुत्र सा० सदा भार्येण मा० सहजलदे पुत्र हापा धायर युतेन श्री सुमति बिंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतरगच्छे श्री जिनराजसूरि पदे श्री जिनभद्रसूरि युगप्रधरागमे । कल्याणं भवतु ।

(२७८६)

गजारूढ़ श्रावक मूर्ति पर

सवत् १५९० वर्षे पौष वदि ३ श्री आदिनाथ प्रतिमा सेवक सा० खेता पुत्र सं० .....

(२७८७)

श्वेत पाषाणमय श्राविका की मूर्ति पर

सं० १५९६ वर्षे पौष वदि १० दिने श्री आदिनाथ सेवार्थ—विमला

पाषाण प्रतिमाओं के लेखः

(२७८८)

सं० १ ३६ फा० सु० ३ दिने श्री ऊकेश वशे चोपड़ा गोत्र......भार्या श्रा० माणिकदेव्या श्री मल्लिनाथ...

(२७८९)

श्री सुविधिनाथ बिंबं का० सा० सोभूमल

(२७९०)

पीले पाषाण के सपरिकर काउसग्गिये

स० १५१८ वर्षे ज्येष्ठ वदि ४ सं० बीजा भार्यया पूरी...सपरिकर कारितः

(२७९१)

श्री खरतर गच्छे श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरिभिः प्रतिष्ठितं श्री अजितनाथ बिंबं

(२७९२)

स० १५३६ श्री विमलनाथ बिंबं श्री जिनचन्द्रसूरिभि ।

(२७९३)

श्री शातिनाथ सं० मंना सा० देथू दत्त ।

(२७९४)

सं० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ३ छाजहड़ गोत्रे मं० देवदत्त पुत्र मं० पासदत्त भार्या सोमलदेव्या पुत्र...सुरजणेन पु० सहसू पुत्रादि प० श्री ...पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ बिंबं का० प्र० श्री जिनचन्द्रसूरिभि ।

(२७९५)

सं० १९२८ मि० माह सुदि १२ ... ...

(२७९६)

श्री पार्श्वनाथ मदिर में श्वेत सपरिकर प्रतिमा

खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्री जिनचन्द्रसूरिभि ।

(२७९७)

सं० १५८० (?७) वर्षे श्री कुंथुनाथ कारितं गणधर गोत्रे सा० ठाकुरसी पुत्र ... ।

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(२८३६)

संवत १२०७ सीहमल भार्या सुगी प्रणमति ।

(२८३७)

संवत् १५७६ वर्ष मागसिर सु० ५ शुक्रे श्री श्रीमाल ।

(२८३८)

श्री मूलसंघ भ० श्री शुभचंद्र रो पट्ट

(२८३९)

सं० १६६४ वर्षे ज्ये० व० ३ रत्नासवि ।

(२८४०)

संवत् १२२६

श्री क्षमाकल्याण स्मृति शाला

(२८४१)

शिलालेख

श्री सिद्धचक्राय नमः ॥ श्री वाचनाचार्य पद प्रतिष्ठा गणीश्वरा भूरि गुणैर्वरिष्ठा । क्षमा प्रतिष्ठाऽस्खधर्म संज्ञा जयन्तु ते सद्गुरवो गुणज्ञा ॥१। गणाधिप श्री जिनभक्तिसूरि प्रशिष्य संघात सुविश्रुतानां । येषामभिहि श्री मति वृद्ध शाखे प्रकोश पंथे जनि कच्छ देशे ॥२॥ भट्टारक श्री जिनलाभसूरय श्रीयुत प्रीत्यादिम सागराश्रये भासन सदीक्षां किल तद् विनेयता सभाप्सवै मासमनिन्दीत पर्व ।३। शत्रुंजयाद्युत्तम तीर्थ यात्रयो सिद्धान्त योगोद्वहनेन हारिणा रुचिर रंग रित चेतसा पुन पवित्रितं यैर्निज जन्म जीवितं ।४। जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरो य हेम कलशै विराजित व्यधायि संघेन च पूर्वमण्डले येषां हितेषा शुपदेशत सुन्दरम् ।५। प्रभूतजन्तु प्रति-बोधकाः पुन स्वर्ग गता बीकानेर सत्पुरे । समाधिना चन्द्र शराष्ट भूमिते संवत्सरे माघ सिता-ष्टमी तिथौ ।६। स्थानांग सूत्रोक्त यथानुसारा शिक्षापदं वृषगतिषु येषां । स्तो गुणावात्म विनि-र्गमोभूत् साक्षात् सुविज्ञान भितो विदंति ।७। एवं विधाय श्री गुरव शुनिर्भरं कृपा परा सर्व जनेषु सान्मर्द । क्षमादिरूपि कल्याण प्रति स्वयं प्रमोदक प्राग ददातु स्वदर्शनम् ।८। इत्यष्टकम् ॥ संवत् १८५२ मिते पोष सुदि ५ तिथौ महाराजा श्री सूरतसिंहजी विजयि राज्ये । भ । श्रीजिनचन्द्र सूरिजी धर्मराज्ये येषांर्थ निर्मापिता क्षमाकल्याण गणिभिर्विनिशाखर धारणी उत्कीर्ण शिव दानेन सूत्रधारण हारिणी ॥१॥ग • विवेकविजयो नमति श्री गुरुम् ॥

(२८०७)

सं० १५३(६) वर्षे फा० सुदि ५ श्री खरतर श्री जिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचन्द्रसूरि प्र ॥ श्री संभवनाथ ।

(२८०८)

स० १५३६ वर्षे मिति फागुण सुदि ३ दिने ऊकेश वशे लिगा गोत्रे सा० सहसा पुत्र साह …मेहा सा० सहजपालादि परिवार युतेन भा० भरणी पुण्यार्थ श्री मल्लिनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनभद्रसूरि पट्टालंकार श्री जिनचन्द्रसूरिभि' श्री जेसलमेरु दुर्गे श्री ।

(२८०९)

स० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ भौमवासरे उसवाल जा० छाजहड गोत्रे मं० काल्हू पुत्र… भा० नामलदे तयोः पुत्रेण म० सिं ‥सरद पात समधर परि ‥पुण्यार्थं श्री कुंथुनाथ विंबं कारितं प्रतिष्ठित… .

(२८१०)

गर्भगृह में समवशरण पर

॥ ६० ॥ संवत् १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री ऊकेश वशे श्री गणधर चोपडा गोत्रे स० नथू पुत्र सा० सच्चा भार्या सिंगारदे पुत्र सं० जिणदत्त सुश्रावकेण भार्या लखाई पुत्र अमरा थावर पौत्र हीरादि युतेन श्री समवशरण कारित प्रतिष्ठितं श्री खरतर गच्छे श्री जिनेश्वरसूरि सताने श्री जिनकुशलसूरि । श्री जिनपद्मसूरि श्रीजिनलब्धिसूरि श्रीजिनराजसूरि श्रीजिनभद्रसूरि पट्टे श्रीजिनचंद्रसूरिभि श्रीजिनसमुद्रसूरि प्रमुख सहितैः श्री देवकर्ण राज्ये ।

(२८११)

मूलनायक जी

स० १५३६ वर्षे फागुण सुदि ५ दिने श्री खरतर गच्छे श्रीजिनचन्द्रसूरिभि ।

(२८१२)

गुरुमूर्त्ति पर

वी० स० २४४९ वि० सं० २४७८· सोमवासरे ज० यु० प्र० श्रीजिन

(२८१३)

चरणों पर

संवत् १९८० वै० सु० ११ शुक्रे । ज० यु० प्र० वृ० ख० गच्छेश दादासा श्रीजिनकुशलसू। पादुका स्था० सा० दुलीचंद भा० रायकुंवर स्वात्म भक्त्यर्थं प्र० पं० प्र० वृद्धिचन्द्र मु। जेसलमेरु दुर्ग

(२८१४)

संवत १९८० वै० सु० शुक्रे जं० यु० प्र० वृ० ख० गच्छेश दादासा श्रीजिन अकबर बोधक चन्द्रसू। पादुका स्था० सा० दुलीचन्द्र भा० रायकुंवर स्वात्म भक्त्यार्थ प्र० पं० प्र० वृद्धिचन्द्र मु। जेसलमेर, दुर्ग ।

श्री महावीर स्वामी का मन्दिर

(२८३६)

संवत १८०७ सीहमल भार्या धुगी प्रणमति ।

(२८३७)

संवत् १५७६ वर्ष मार्गसिर सु० १ शुक्रे श्री श्रीमाल ।

(२८३८)

श्री मूलसंघ म० श्री शुभचंद्र री पाद

(२८३९)

सं० १६६४ वर्ष ज्ये० व० २ रावासति ।

(२८४०)

संवत् १२२६

श्री अमृतधर्म स्मृति शाला

(२८४१)

शिलालेख

श्री सिद्धचक्राय नम ॥ श्री पाचनाचार्य पद प्रतिष्ठा गणीश्वरा सूरि गुणैर्वरिष्ठा । तस्य प्रतिष्ठाऽमृतधर्म संज्ञा जयन्तु ते सद्गुरवो गुणज्ञा ॥१॥ गणाधिप श्री जिनभक्तिसूरि प्रशिष्य संघाव सुविश्रुतार्थ । येषाञ्जनिहि श्री मति कृष्ण ग्रामे उकेश वंशे अति कच्छ देशे ॥२॥ भट्टारक श्री जिनलाभसूरय श्रीयुत प्रीत्यादिम सागराग्रये आसन सतीर्थी किल तत् विनयता मधाप्ययैः प्रापमनिन्दीर्त पदं ।३। शत्रुं जयाद्युत्तम तीर्थ यात्रयो सिद्धान्त योगोद्वहनेन हारिणा संविग रंगा ञ्चित चेतसा पुन पवित्रितं यैर्निज जन्म जीवितं ।४। जिनेन्द्र चैत्य प्रकरो मनोरमो वरौ च हेम कलशे विराजित व्यधायि संघेन च पूर्वमण्डले येषां हितेषा सुपदेशत स्फुटम् ।५ प्रभूतवन्तु प्रति-बोध्यप पुन स्वर्गं गता जैसलमेरु सत्पुरे । समाधिना चन्द्र शराष्ट भूमिते संवत्सरे माघ सिता ष्टमी तिथौ ।६। स्थानांग सूत्रोक्त यथानुसारा शिष्यास्त देवगतिस्तु येषां । अतो गुणावासा विनि-र्गमोभूत् साक्षात् सुविज्ञान शिवो विदंति ।७। एवं विधाय श्री गुरव सुनिर्भरं कृपा परा सर्व जनेषु साम्प्रतं । क्षमादिषि कल्याण प्रति स्वयं प्रमोदक प्राग वदतु स्वदर्शनम् ।८। इत्यष्टकम् ॥ संवत् १८५२ मिते पोप सुदि ५ तिथौ महाराजा श्री सूरतसिंहजी विजयि राज्ये । म । श्रीजिनचन्द्र सूरिजी धर्मराज्ये श्रेयार्थ निर्मापिता क्षमाकल्याण गणिभिर्लिखिताक्षर घोरणी उत्कीर्ण शिव दानेन सूत्रधारेण हारिणी ॥१॥म • विवेकविजयो नमति श्री गुरुम् ॥

(२८२४) ३९९

स० १५१३ वर्षे माघ सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय छाजहड गोत्रे मं० देवदत्त भार्या रयणादे तयो पुत्र मं० गुणदत्तेन भार्या सोनलदे सहितेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारित प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनशेखरसूरि पट्टे भ० श्री जिनधर्मसूरिभिः।

(२८२५)

सवत् १५९१ वैशाख वदि ६ शुक्रे सागवाड़ा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखाया मत्र वीसाकेन। भा० टीवूसुत म० वीरसा लीला देठा चांदा प्रमुख कुटंब युतेन स्व श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंब कारित श्री आनदविमलसूरिभिः प्रतिष्ठितं।

(२८२६)

स० १५०२ वर्ष कार्त्तिक वदि २ शनौ ऊकेश ज्ञातीय व० गोत्रे-सा० लोहड सुत सारंग भार्या सुहागदे पुत्र सादा भार्या सुहडादि स्व श्रेयार्थं श्री अचल गच्छेश श्री जयकेशरसूरिणा-मुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंब कारित प्रतिष्ठितं श्रीसघेन श्री।

(२८२७)

श्री राठौद गच्छे श्री परस्वोपागया संताने काविकया कारिता सं० ११३६।

(२८२८)

सं० १५२५ वर्षे व० सु० ७ सा० वणु सु० सा० पार।

(२८२९)

श्री सौभाग्यसुन्दरसूरि प्रतिष्ठित।

(२८३०)

स० १६२२ व० श्री पार्श्वनाथ सा० धरम सनत ज पास।

(२८३१)

श्री गौडी पार्श्वनाथ प्र०

(२८३२)

संवत् १७०६ वर्षे वैशादि ७

(२८३३)

सं० १५२२ शनौ

(२८३४)

श्री महावीर पार्श्वनाथ श्री गौतम स्वामि बिंबानि कारितानि सा० मेघजीकेन प्रतिष्ठितानि तपा श्रीविजयदेवसूरिभिः।

(२८३५)

१८८३ मिती काती वा० मगनीराम

(२८४९)

स्तूपलेखाः

१ श्री संवत् १९०१ वर्षे शाके १७६६ प्रवर्त्त। मासोत्तममासे आषाढ़ शुक्ल पक्षे सप्तमी भृगुवासरे महाराजाधिराज महारावलजी श्रीगजसिंहजी विजयराज्ये। जं।यु।प्र।भ। श्री जिनचंद्रसूरि तच्छिष्य पं। प्र। जयरत्न गणि पादुका कारापितं। श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेन्द्रसूरिभिः ॥

(२८५०)

श्री संवत् १९२८ शाके १७९३ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया चतुर्थी ४ तिथौ चंद्रवारे महाराजाधिराज महारावल श्री श्री १०८ श्री बैरीशालजी विजयराज्ये जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरिसूरिशिष्य पं० जीवरंग गणि तच्छिष्य पं। राजमंदिर मुनि पादुका कारापितं श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः

(२८५१)

श्री गणेशायनमः संवत् १९३३ शाके १७९८ प्रवर्त्तमाने फागुन सुदि ५ रविवारे श्री जिन-चंद्रसूरिजी तच्छिष्य जीवरंगजी गणि तच्छिष्य राजमंदिरजी गणि तत्शिष्य भक्तिमाणिक्य गणि उपरली श्रीसंघेन पादुका करावितं श्री जिनमुक्तिसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

(२८५२)

महाराजाधिराज श्री १०८ श्री सालिवाहन राज्ये। श्री। संवत् १९४७ मिती चैत वदि १ श्री खरतर गच्छे जं। यु। प्रधान श्रीजिनमुक्तिसूरि राज्ये पं।प्र। श्री गणेशजीरा चरणछत्री ॥ द० पं० विरधीचंद का।

(२८५३)

जंगम युगप्रधान भट्टारकेन्द्र प्रभु श्री १०८ श्री श्री श्री श्री श्री जिनचंद्रसूरिणां पादुके प्रतिष्ठितं भट्टारक शिरोमणि जं। यु। श्री जिनोदयसूरिभिः।

(२८५४)

श्यामसुन्दरजी की शाला में स्तूप पर

॥ श्री जिनायनमः ॥ सं० १८८२ रा मिती आषाढ़ सुदि ५ श्री जेसलमेर नगरे राज्ये श्री गजसिंह श्री विजयराज्ये खरतर आचारज गच्छे श्री जिनसागरसूरि शाखायां भ। जं। श्री जिन उदयसूरिजी विजयराज्ये ॥ उ। श्री १०८ श्रीसमयसुन्दरजी गणि पादुकामिदं ॥ उ। श्री आणंदचंदजी तच्छिष्य पं। प्र। श्रीचतुरभुजजी तच्छिष्य पं०। ज्ञानचंद्रेण कारापितमिदं थंभ पादुका शाखा सही २

पादुकाओं पर

(२८५५)

॥ उ ॥ श्री १०८ श्री समयसुन्दर गणि पादुका

(२८२४) ३९९

सं० १५१३ वर्षे माघ सुदि ३ शुक्रे उपकेश ज्ञातीय छाजहड गोत्रे मं० देवदत्त भार्या रयणादे तयो पुत्र म० गुणदत्तेन भार्या सोनलदे सहितेन श्री धर्मनाथ बिंबं कारित प्र० श्री खरतरगच्छे श्री जिनशेखरसूरि पट्टे भ० श्री जिनधर्मसूरिभिः ।

(२८२५)

संवत् १५९१ वैशाख वदि ६ शुक्रे सागवाडा वास्तव्य प्राग्वाट ज्ञातीय वृद्ध शाखाया मंत्र वीसाकेन। भा० टीबू सुत म० वीरसा लीला देठा चांदा प्रमुख कुटंब युतेन स्व श्रेयसे श्री सुमतिनाथ बिंबं कारित श्री आनदविमलसूरिभि प्रतिष्ठितं ।

(२८२६)

स० १५०२ वर्ष कात्तिक वदि २ शनौ ऊकेश ज्ञातीय व० गोत्रे-सा० लोहड़ सुत सारंग भार्या सुहागदे पुत्र सादा भार्या सुहडादि स्व श्रेयार्थं श्री अचल गच्छेश श्री जयकेशरसूरिणा-मुपदेशेन श्री सुमतिनाथ बिंबं कारित प्रतिष्ठित श्रीसघेन श्री ।

(२८२७)

श्री राठौद गच्छे श्री परस्योपागया संताने काविकया कारिता सं० ११३६ ।

(२८२८)

सं० १५२५ वर्षे व० सु० ७ सा० वणु सु० सा० पार ।

(२८२९)

श्री सौभाग्यसुन्दरसूरि प्रतिष्ठित ।

(२८३०)

सं० १६६२ व० श्री पार्श्वनाथ सा० धरम सनत ज पास ।

(२८३१)

श्री गौडी पार्श्वनाथ प्र०

(२८३२)

संवत् १७०६ वर्षे वैशादि ७

(२८३३)

सं० १५२२ शनौ

(२८३४)

श्री महावीर पार्श्वनाथ श्री गौतम स्वामि बिंबानि कारितानि सा० मेघजीकेन प्रतिष्ठितानि तपा श्रीविजयदेवसूरिभि ।

(२८३५)

१८८३ मिती काती वा० मगनीराम

(२८४९)

स्तूपलेखाः

१ श्री संवत् १००१ वर्ष शाके १७६६ प्रवर्त्ते। मासोत्तममासे आषाढ़ शुक्ल पक्षे सप्तमी भृगुवासरे महाराजाधिराज महाराजजी श्रीगजसिंहजी विजयराज्ये। जं। यु। प्र। भ। श्री जिनचंद्रसूरि तच्छिष्य पं। प्र। अमरहंस गणि पादुका कारापितं। श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं श्री जिनमहेन्द्रसूरिभिः॥

(२८५०)

श्री संवत् १९२८ शाके १७९३ प्रवर्त्तमाने वैशाख मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया चतुर्थी ४ तिथौ चंद्रवारे महाराजाधिराज महाराजा श्री श्री १०८ श्री वैरीशालजी विजयराज्ये जंगमयुगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरिगुरुशिष्य पं० कीर्तरंग गणि तच्छिष्य पं। राजमंदिर मुनि पादुका कारापितं श्रीसंघेन प्रतिष्ठितं श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः

(२८५१)

श्री गणेशायनमः संवत् १९३३ शाके १७९८ प्रवर्त्तमाने फागुन सुदि ५ रविवारे श्री जिनचंद्रसूरिजी तच्छिष्य कीर्तरंगजी गणि तत्शिष्य राजमंदिरजी गणि तत्शिष्य भक्तिमाणिक्य गणि उपरली श्रीसंघेन पादुका करायितं श्री जिनमुक्तिसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

(२८५२)

महाराजाधिराज श्री १०८ श्री सालिवाहन राज्ये। श्री। संवत् १९४७ मिती चैत वदि १ श्री खरतर गच्छे जं। यु। प्रधान श्रीजिनमुक्तिसूरि राज्ये पं। प्र। श्री गणेशजीरा चरणछत्री॥ व० पं० विरधीचंद का।

(२८५३)

जंगम युगप्रधान भट्टारकेन्द्र प्रभु श्री १०८ श्री श्री श्री श्री श्री जिनचंद्रसूरिणां पादुके प्रतिष्ठितं भट्टारक शिरोमणि जं। यु। श्री जिनोदयसूरिभिः।

(२८५४)

श्यामसुन्दरजी की शाला में स्तूप पर

॥ श्री जिनायनमः॥ सं० १८८२ रा मिती आषाढ सुदि ५ श्री जेसलमेर नगरे रावल श्री गजसिंह जी विजयराज्ये खरतर आचारज गच्छे श्री जिनसागरसूरि शाखायां भ। जं। श्री जिनउदयसूरिजी विजयराज्ये॥ उ। श्री १०८ श्रीसमयसुन्दरजी गणि पादुकामिदं॥ उ। श्री आणंदचंदजी तच्छिष्य पं। प्र। श्रीचतुरभुजजी तच्छिष्य पं०। ज्ञानचंद्रेण कारापितमिदं थंभ पादुका शाख सही २

पादुकाओं पर

(२८५५)

॥ उ॥ श्री १०८ श्री समयसुन्दर गणि पादुका

चरणपादुकाओं के लेख

(२८४२)

स० १८५२ मिते पोप सुदि ५ तिथौ श्रीजिनचन्द्रसूरि विजययिराज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिना पादन्यासः श्री सघेन कारितः प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमाकल्याण गणिभिः

(२८४३)

सं० १८०४ मिते ज्येष्ठ सुदि ४ तिथौ श्री कच्छ देशे माडवी विंदरे स्वर्गगतानां श्रीजिन-भक्तिसूरीणां पादन्यास सं० १८५२ मिते पोप सुदि ५ तिथौ कारितं श्री सघेन प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमाकल्याण गणिभिः

(२८४४)

॥सं । १८०८ मिते कार्तिक वदि १३ तिथौ श्री बीकानेर नगरे स्वर्ग गतानां श्री प्रीतिसागर गणिना पादन्यास' सं० १८५२ मिते पौष सुदि ५ तिथौ श्री सघेन कारितं प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमा-कल्याण गणिभि.

(२८४५)

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी नमः संवत् १७९६ वर्षे मिती माह वद ५ श्री गौडी पार्श्वनाथ ··

दादावाड़ी

(देदानसर तालाव)

(२८४६)

॥ संवत् १९३० पोष वदि १ प्रतिपदा तिथौ जं । यु।प्र।भट्टारक वृहत्खरतर गच्छाधीशः श्री श्री १०८ श्रीजिनमुक्तिसूरिभिः श्रीजेसलमेरेश रावलजी श्री वैरिशालजी विजयराज्ये श्री जिनभद्रसूरिशाखायां उ। श्री साहिबचन्द्र गणेशचरण न्यास प्रतिष्ठाकृता कारिता च तत् भ्रातृव्य तच्छिष्यसं अगरचन्द्र मेघराजादिभिः श्रीरस्तु ॥ गजधर हासम

(२८४७)

॥सं० १९३९ शाके १८०४ प्र ज्येष्ठ वदि १२ रविवार जं । यु । प्र । भ । वृहत्खरतरगच्छा-धीशै श्री श्री १०८ श्री जिनमुक्तिसूरिभि' श्री जेसलेमेरेश म । रावलजी श्रीवैरिशालजी राज्ये श्रीजिनभद्रसूरिशाखाया प० प्र० अगरचद्र मुनिचरणन्यास प्रतिष्ठा कृता कारिता च तत्भ्रातृव्य । तत्सुशिष्य पं । वृद्धिचंद्र जइतचंद्रादिभि' श्रीरस्तु । गजधर आदम ॥

(२८४८)

संवत् १९५२ रा मिती माघ शुक्ल-पूर्णमासी १५ तिथौ गुरुवारे गुराजी महाराज श्री सरूप-चंद्रजी स्वर्ग पोंहता तस्य चरणपादुका स्थापितं । दूज जेठ सुदि २ दिने ।

समयसुन्दरजीके सामने की शाला में

(२८९३)

श्री गणेशायनमः ॥ संवत् १८८१ रा वर्षे शाके १७४६ प्रवर्त्तमाने मासोत्तम मासे मिगसर मासे कृष्ण पक्षे त्रयोदशी तिथौ शुक्रवारे महाराजाधिराजा महाराजा श्री श्री गजसिंह जी विजय-राज्ये बृहत्खरतर आचारज गच्छे जंगम युगप्रधान भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरिजी तत् बृहच्छिष्य पं। प्र। श्री अमयसोम गणि संवत १८७८ रा मिति माहसुदि १२ दिने स्वग प्राप्त तदोपरि पं०। ज्ञानकल्लोलेन इयं शाला कारापिता संवत् १८८१ रा मिति मिगसिर वदि १३ दिने भट्टारक श्रीजिनउदयसूरिजी री आज्ञात पं०॥ प्र। लब्धिधीरेण प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन इयं महोत्सवो कृत सीळावटो गजधर अलीबख्शानी शाला कृता॥ यावत् जम्बुद्वीपे यावत् नक्षत्र मण्डितो मेरु यावत् चंद्रादित्यौ तावत् शाला स्थिरी भवतु १ लिपिकृता रिदं। पं। हर्षरंग मुनिभिः॥ शुभं भवतु॥ श्रीकल्याणमस्तु॥ ॥ श्री॥

(२८९४)

चरणपादुका पर

॥ सं। १८७९ व। शा। १७४४ प्र। मिति दु आसोज वदि ५ रविवारे भ। जं। श्री जिनचंद्रसूरि सुरि जी तत् शिष्य पं। अमयसोम पादुका स्थापिता॥

(२८९५)

गुरां जी श्री १०८ पं। प्र। चैनसुख जी।

(२८९६)

॥ १९४१ मिति भाद्रव सुदि ३ गुरांजी पं। प्र। श्री १०८ श्रीनिधैचंद खरतरा आचारज गच्छ रा।

(२८९७) ✻ ४०४

संवत् १६७४ वर्षे मार्गशीर्ष वदि ५ शुक्रवारे। श्री जेसलमेरौ। श्री बृहत्खरतर गच्छाधीश सवाइ युगप्रधान श्री जिनचंद्रसूरि पादुका प्रति० श्री धर्मनिधानोपाध्यायैः। गणधर गोत्रे। इरप पुत्र सा० तिलोकसीकेन पुत्र राजसी तुलसी भीमसी सहितेन प्रतिष्ठा कारिता॥ विनय पण्डित धर्मकीर्त्ति गणि वंदते गुरुपादान्। श्री ५ सुखसागर गणि पं० समयकीर्त्ति गणि पं० सदारंग मुनि प्रमुखा वन्दते पं० उदयसंघ लि०।

(२८९८)

... सूरा...रजां पादु... राज श्री जिनराजसूरि।

चरणपादुकाओं के लेख

(२८४२)

सं० १८५२ मिते पोष सुदि ५ तिथौ श्रीजिनचन्द्रसूरि विजययिराज्ये वाचनाचार्य श्री अमृतधर्म गणिनां पादन्यासः श्री सघेन कारितः प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमाकल्याण गणिभिः

(२८४३)

सं० १८०४ मिते ज्येष्ठ सुदि ४ तिथौ श्री कच्छ देशे माडवी विंदरे स्वर्गंगतानां श्रीजिन-भक्तिसूरीणां पादन्यास' स० १८५२ मिते पोप सुदि ५ तिथौ कारितं श्री सघेन प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमाकल्याण गणिभिः

(२८४४)

॥सं। १८०८ मिते कार्तिक वदि १३ तिथौ श्री बीकानेर नगरे स्वर्ग गतानां श्री प्रीतिसागर गणिना पादन्यास' सं० १८५२ मिते पौष सुदि ५ तिथौ श्री सघेन कारितं प्रतिष्ठितश्च वा० क्षमा-कल्याण गणिभि.

(२८४५)

श्री गौड़ी पार्श्वनाथजी नमः संवत् १७९६ वर्षे मिती माह वद ५ श्री गौडी पार्श्वनाथ ··

दादाबाड़ी

(देदानसर तालाव)

(२८४६)

॥ संवत् १९३० पोष वदि १ प्रतिपदा तिथौ जं। यु।प्र।भट्टारक वृहत्खरतर गच्छाधीश श्री श्री १०८ श्रीजिनमुक्तिसूरिभि' श्रीजेसलमेरेश रावलजी श्री वैरिशालजी विजयराज्ये श्री जिनभद्रसूरिशाखायां उ। श्री साहिबचन्द्र गणेशचरण न्यास प्रतिष्ठाकृता कारिता च तत् भ्रातृव्य तद्शिष्यसं अगरचन्द्र मेघराजादिभिः श्रीरस्तु. ॥ गजधर हासम

(२८४७)

॥सं० १९३९ शाके १८०४ प्र ज्येष्ठ वदि १२ रविवार जं। यु। प्र। भ। बृहत्खरतरगच्छा-धीशै श्री श्री १०८ श्री जिनमुक्तिसूरिभि श्री जेसलमेरेश म। रावलजी श्रीवैरिशालजी राज्ये श्रीजिनभद्रसूरिशाखायां पं० प्र० अगरचंद्र मुनिचरणन्यास प्रतिष्ठा कृता कारिता च तत्भ्रातृव्य। तत्सुशिष्य पं। वृद्धिचंद्र जइतचंद्रादिभि' श्रीरस्तु। गजधर आदम॥

(२८४८)

संवत् १९५२ रा मिती माघ शुक्ल पूर्णमासी १५ तिथौ गुरुवारे गुराजी महाराज श्री सरूप-चंद्रजी स्वर्ग पोंहता तस्य चरणपादुका स्थ

खरतराचार्य गच्छ उपाश्रय

(२८७५)

।। श्री गणेशाय नमः ।। संवत् १७८१ वर्ष शाके १६४६ प्रवर्तमाने मृगसिर मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी तिथौ गुरुवासरे श्री जेसलमेर नगर महाराजाधिराज महाराजा रावल श्री श्री अखैसिंह जी विजै राज्ये श्री खरतर आचार्यीया गच्छे श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये श्री जिनसागरसूरि शाखायां भा० माधवदासजी गणि शिष्य पं० नेतसी गणि शिष्य उदैमाण श्रीराजजी नेतसी ने उपासरो कराय दीधौ संवत् १७८१ रा मिती मिगसर सुदि ७ उपासरौ काम प्रारंभ्यौ पोष वदि ४ वार सोम पुष्य नक्षत्र दिने उपासरै री रांग मण्डाई संवत् १८७४ रै वैशाख वदि ७ उपासरै रो काम प्रमाण चढ्यौ उपरछाइ छड़ीवार अखौ मोहणाणी सिलावटो चिरो नथवाणी। यावज्जंबूद्वीपा यावन्नक्षत्र मण्डितो मेरु। यावच्चन्द्रादित्यौ तावत् उपाश्रय स्थिरी भवतु लिखितं पंडित उदैमाण मुनिभिः शुभंभवतु श्री संघस्य।

लौद्रवपुर तीर्थ

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(२८७६) २४०८

संवत् १६७५ प्रमिते मार्गशीर्ष सुदि १२ तिथौ गुरुवारे भणसाली श्रीमल्ल भार्या सुश्राविका चांपलदे पुत्ररत्न सा० थिरराज नाम्ना सुपुत्र हरराज वि० मेघराज युतेन श्री जिनकुशलसूरीश्वराणां मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठितास्य श्री बृहत्खरतर गच्छ राजाधिराज श्री सश्रीजिनराजसूरीश्वरैः सकल श्री साधु परिवारे ।।

(२८७७) २४०८

सं० १६७५ वर्ष मार्गशीर्ष सुदि १२ तिथौ गुरुवारे उपकेश वंश क साह श्रीमल्ल भार्या चांपलदे तत्पुत्र सा० थिरराज नाम्ना सुपुत्र हरराज सहितेन युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरीश्वराणां मूर्त्ति कारिता प्रतिष्ठि -

(२८५६)

। उ । श्री १०८ श्री आणंदचंदजी गणि पादुकामिदं ॥

(२८५७)

॥ पं० । प्र । श्री १०८ श्री चतुरभुज जी गणि पादुका मिदं ।

(२८५८)

स्तूप पर

॥ श्री जिनायनम ॥ सं । १९०३ रा मिति आसोज सुदि ७ श्री जेसलमेर नगरे राउल श्रीरणजीतसिंहजी विजेराज्ये श्री खरतर आचारज गच्छे श्रीजिनसागरसूरि शाखायां भ । यु । श्रीजिनहेमसूरिजी विजेराज्ये प । प्र । श्री १०८ श्री लालचंद्रजी गणि पादुका मिदं शिष्यं पं । हर्षचंद्रेण गुरो पादुका थुंभ कारापितमिदं ॥ सही २ ॥ द । श्रीअमरचंद रा छै ॥ श्री ॥ श्री ॥श्री ॥

(२८५९)

। पं० प्र । श्री १०८ ॥ श्री लालचंद्रजी गणि पादुका मिदं ।

(२८६०)

सं० १८४० मिते मार्गशीर्ष मासे वहुल पक्ष पंचम्यां तिथौ शुक्रवारे श्री जेसलमेरु द्रगे श्री वृहत्खरतर गच्छीय श्री संघेन भ । श्री जिनलाभसूरीणां पादुके कारिते प्रतिष्ठिते च । भ । श्री जिनचंद्रसूरिभि ॥ श्रीरस्तु ॥

(२८६१)

॥ स्वस्ति ॥ १८२५ मार्गशिरो सित पंचमी ५ सोमवारे भट्टारक श्रीजिनविजयसूरीन्द्राणा शिष्य पडित जयराज मुनि पादुके कारिते प्रतिष्ठिते भट्टारक श्री जिनचंद्रसूरिभि ।

(२८६२)

॥ ६० ॥ संवत् १८२५ वर्षे । मृगशिरो सित पचमी ५ सोमे । श्री जेसलमेरु महादुर्गे । महाराजाधिराज महारावलजी श्री मूलराजजी विजयराज्ये । कुमार श्री रायसिंघ जी जाग्रय्यौव-राज्ये । युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरि पट्टालंकार श्रीजिनविजयसूरि राजानां स्तूपे पादुका कारिते । प्रतिष्ठिते च श्री जिनयुक्तिसूरि पट्टोदया अर्क्क युगप्रधान भट्टारक श्रीजिनचंद्रसूरि शिरोमुकुटै ॥ लिखितं पण्डिताणु भीमराज मुनिना ॥ श्री सघस्य सदैवाभिनव मंगलाय यातामिति ॥ श्री ॥ श्री ॥ वहुमानकारिणां श्रेयसेस्त ॥ १ ॥

खरतराचार्य गच्छ उपाश्रय

(२८७५)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥ संवत् १७८१ वर्षे शाके १६४६ प्रवर्त्तमाने मृगसिर मासे शुक्ल पक्षे सप्तमी तिथौ गुरुवासरे श्री जेसलमेर नगर महाराजाधिराज महाराजा रावळ श्री श्री अखैसिंह जी विजै राज्ये श्री खरतर आचार्यीया गच्छे श्री जिनचंद्रसूरि विजयराज्ये श्री जिनसागरसूरि शाखायां वा० माधवदासजी गणि शिष्य पं० नेतसी गणि शिष्य अखैभाण श्रीरायचन्दजी नेतसी ने उपासरो करायु दीधौ संवत् १७८१ रा मिती मिगसर सुदि ७ उपासरौ काम झाल्यौ पोष वदि ४ वार सोम पुष्य नक्षत्र दिने उपासरै री राग मराई संवत् १८७४ रे वैशाख वदि ७ उपासरै रो काम समाप्त थइयौ कपरठाइ छत्रीवार अखौ मोहणाणी सिलावटो थिरो नथवाणी। यावच्चंद्रदिवा याचमक्षत्र मण्डितो मेरु। यावच्चन्द्राविस्यौ तावत् उपाश्रय स्थिरी भवतु लिखितं पंडित अखैभाण मुनिभिः शुभंभवतु श्री संघस्य।

लोद्रवपुर तीर्थ

श्री पार्श्वनाथ जी का मन्दिर

(२८७६) २५०६

संवत् १६७५ प्रमिते मार्गशीर्ष सुदि १२ तिथौ गुरुवारे भणसाली श्रीमल्ल भार्या सुश्राविका चांपलदे पुत्ररत्न सा० थिरराज नाम्ना सुपुत्र हरराज ति० मेघराज युतेन श्री जिनकुशलसूरीश्वराणां मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठितायच श्री बृहत्खरतर गच्छ राजाधिराज श्री भट्टारक जिनराजसूरीश्वरैः सकल श्री साधु परिवारैः ॥

(२८७७) २५०६

सं० १६७५ वर्ष मार्गशीर्ष सुदि १२ तिथौ गुरुवारे ऊपकेश वंशे ... क साह श्रीमल्ल भार्या चांपलदे तत्पुत्र सा० थिरराज नाम्ना सुपुत्र हरराज सहितेन युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरीश्वराणां मूर्त्तिः कारिता प्रतिष्ठि-

दादाबाड़ी (गड़ीसर तालाब)

(२८६९)

।। श्री सिद्धचक्राय नमः श्री मद्‌गुरुणां प्रशस्तिः। ये योगीन्द्र सुरेन्द्र सेवित पदाः शान्ता सुधर्मोपमा सद् वाणी निकुरुवरं जिनजनाः श्री मांडवी विन्दरे। प्राप्तास्सत्रिदशालय युगवराः सद्‌भूत नामान्वित। स्तेस्युः श्री जिनभक्तिसूरि गुरवस्संघस्य कामप्रदाः ।।१।। तच्छिष्य इह पाठकेन्द्रा स्सकल गुणयुता प्राप्त स्छाधुवादाः श्रीमद् बंगाल देशे सकल पुरवरै शस्त राजादिगंजे स्वर्गं प्राप्ता स्सुदेशेष्वति सुभगतर सद्‌विहारं विधाय। श्रीमन्तो धी विलास गणि पद सुमता शान्तये स्युर्जनानां ।।२।। तेषां विनेया स्सुधिया सुपाठका लक्ष्म्यादि सा राजपरागणिश्वरा' जग्मु त्रासुत्ते श्रीवर जैसलगढे पुण्याल,वंश त्रिदशलयं वरं। तच्छिष्यं पंडितातं..समीयादि गुणन्विताः श्रीधरा सत्यमूर्त्याख्या' जग्मु स्त्रैवसत्पदं।४। इति स्तुति'। सव्वति वाण रस वसु वसुधा १८६५ प्रमिते शाके १७३० प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ चंद्रवारे महाराज राउलजी श्री १०८ श्री श्रीमूलराजजी विजयिराज्ये श्री वृहत्खरतर गच्छे जं। यु। भ श्री १०८ श्रीजिनहर्षसूरिजी धर्मराज्ये विभ्रति च सति मनोहरायां धर्मशालायां श्रीमत्गुरुणा पादुका कारिताः प्रतिष्ठिताश्च पं० रामचंद्रेणेतिश्रेयः कृताश्चैषा सूत्र धारेण खुश्यालेन ।। श्री ।।

(२८७०)

स० १८५२ मिते आषाढ सुदि १० श्रीजिनदत्तसूरीणा पादन्यास श्री सघेन कारित'।

(२८७१)

सं० १८६४ रा मिति माघ सुदि ५ तिथौ पं० प्र० श्रीसत्यमूर्तिजी गणीनां चरणन्यास पं० रामचन्द्रेण स्थापिता।

(२८७२)

श्री प्रीतिविलासजी गणिना चरण पादुका मिती माघ सुदि ५ तिथौ सोमवासरे ।।श्री।।

(२८७३)

सं० १८६४ रा मिती माघ शुक्ला ५ तिथौ उ० श्री लक्ष्मीराजजी गणीनां चरणन्यास' पं० रामचद्रेण कारापित ।। श्री ।।

श्री समयसुन्दरजी का उपाश्रय

(२८७४)

चरणपादुकाओं पर

सवत् १७०५ वर्षे पोष वदि ३ गुरुवारे श्री समयसुन्दर महोपाध्यायाना पादुका प्रतिष्ठिते वादि श्री हर्षनंदन गणिभि ।

धर्मशाला

(५९८८) 408

कुम्भ पर

॥ सं० ॥ १९७६ शाके १८४१ सन् १९१९ श्रावण सुदि ८ चन्द्रवार – महाराजाधिराज महाराजा श्री १०८ श्री जयहिरसिंहजी महाराजकुमार श्री गिरधरसिंहजी श्री बृ० खरतर गच्छ वस धंश्रे बहुफण्या हजारीमल मु० परढिया रावमल श्रीडोंत्रधपुर मध्ये श्रीरणछोड़ार धर्मशाला मल रो टांका पाने कंड करापितं । हस्ताक्षर पं० प्र० वृद्धिचंद्र मुनि कारीग० मेंणू छाखूर्जा ।

दादा वाड़ी (गड़ीसर तालाब)

(२८६९)

॥ श्री सिद्धचक्राय नमः श्री मद्गुरुणां प्रशस्ति । ये योगीन्द्र सुरेन्द्र सेवित पदाः शान्ता सुधर्मोपमा सद् वाणी निकुरुवरं जिनजना. श्री मांडवी विन्दरे। प्राप्तास्सत्रिदशालय युगवराः सद्भूत नामान्वित। स्तेस्यु श्री जिनभक्तिसूरि गुरवस्सघस्य कामप्रदाः ॥१॥ तच्छिष्य इह पाठकेन्द्रा स्सकल गुणयुता प्राप्त स्छाधुवादा श्रीमद् वगाल देशे सकल पुरवरै शस्त राजादिगंजे स्वर्ग प्राप्ता स्सुदेशेप्वति सुभगतर सद्विहारं विधाय ।श्रीमन्तो धी विलास गणि पद सुमता शान्तये स्युर्जनानां ॥२॥ तेपा विनेया स्सुविया सुपाठका लक्ष्म्यादि सा राजपरागणिश्वराः जग्मु त्रायुत्ते श्रीवर जैसलगढे पुण्याल,वंश त्रिदशलयं वरं। तच्छिष्यं पंडितातं..समीयादि गुणन्विता श्रीवरा सत्यमूर्त्याल्या जग्मु स्त्रैवसत्पदं ।४। इति स्तुति । सव्वति वाण रस वसु वसुधा १८६५ प्रमिते शाके १७३० प्रवर्त्तमाने ज्येष्ठ शुक्ल पक्षे पंचमी तिथौ चंद्रवारे महाराज राउलजी श्री १०८ श्री श्रीमूलराजजी विजयिराज्ये श्री वृहत्खरतर गच्छे जं।यु। भ श्री १०८ श्रीजिनहर्षसूरिजी धर्मराज्ये विभ्रति च सति मनोहराया धर्मशालायां श्रीमत्गुरुणा पादुका कारिताः प्रतिष्ठिताश्च पं० रामचद्रेणेतिश्रेयः कृताश्चैषा सूत्र धारेण खुश्यालेन ॥ श्री ॥

(२८७०)

स० १८५२ मिते आपाढ सुदि १० श्रीजिनदत्तसूरीणा पादन्यास श्री सघेन कारित ।

(२८७१)

सं० १८६४ रा मिति माघ सुदि ५ तिथौ पं० प्र० श्रीसत्यमूर्तिजी गणीनां चरणन्यास पं० रामचन्द्रेण स्थापिता ।

(२८७२)

श्री प्रीतिविलासजी गणिना चरण पादुका मिती माघ सुदि ५ तिथौ सोमवासरे ॥श्री॥

(२८७३)

सं० १८६४ रा मिती माघ शुक्ला ५ तिथौ उ० श्री लक्ष्मीराजजी गणीनां चरणन्यास पं० रामचद्रेण कारापित ॥ श्री ॥

श्री समयसुन्दरजी का उपाश्रय

(२८७४)

चरणपादुकाओं पर

सवत् १७०५ वर्षे पोष वदि ३ गुरुवारे श्री समयसुन्दर महोपाध्यायाना पादुका प्रतिष्ठिते वादि श्री हर्षनंदन गणिभि ।

अमरसर गांव में भूमि से निकली हुई धातु प्रतिमाएँ

ऊपरकी प्रतिमाओं के पृष्ठभाग के अभिलेख

अमरसर में भूमिसे निक
नेमिनाथ व महावीर प्र

(२८७८)

संवत् १६७५ मार्गशीर्ष सुदि १२ गुरौ श्री नमिनाथ बिंबं का० भ० थाहरू भार्या कनकादे पुत्ररत्न मेघराजेन प्र० श्री जिनराजसूरिभि । श्री वृहत्खरतर गच्छ · · · · · · ·

(२८७९)

सं० १६७५ मार्गशीर्ष सुदि १२ श्री संभवनाथ बिंबं का० भ० थाहरूकेन प्र० युगप्रधान .

(२८८०)

श्री गौडी पार्श्व बिंब प्र० श्री जिनराजसूरिभिः ।

(२८८१)

॥६०॥ ॐ नमो तित्थस्स ॥ स्वस्ति श्री सुखसिद्धि रिद्धि लतिका, पाथोद पाथोभर याव-त्सगल भेद सगम मिलटल्लक्ष्मी रमा मन्दिरम् । माया बीज निविष्ट मूर्त्ति महिमा संलीन योगीव्रज । वन्दे लौद्रपुरीश मण्डन मणि श्री पार्श्वचिन्तामणि. ॥ १ ॥ शुभं भवतु । कल्याणमस्तुः ॥ श्री ॥

(२८८२)

A ॥६०॥ सप्त फणिंद सुविशाल सामी चिन्तामण दाई । माया बीजमझारि तामि त च तिनि वरि आई । वञ्छितपूरणि रेल जाणि चिन्तामणि पूठउ । कलपिवृक्ष सुरधेन सही अमृतरस वूठउ । पहवउ देव लुद्रपुर धणी थिर थापिउ मन भावसुण पुनसी तुझना सदा' परतख सुप्रसन्न पास जिण ।

B संवत् १६७३ चैत्र सुदि ५ दिने सोमवारे श्रीमाया बीजमध्ये' श्रीपार्श्व बिम्ब स्थापितं ।

(२८८३)

धातुमय प्रतिमा पर

सं० १५७५ वर्षे श्री मूलसंघे भ० श्री विजयकीर्त्ति गुरूपदेशात् गा० जोगा भा० जसदे ।

(२८८४)

दादासाहब के चरण (सिंहासन में)

श्री दादाजी श्री जिनकुशलसूरिजी सं १८१६ आसुज सुद १० वार अदत ।

(२८८५)

......गली मोतु तुभ्यां श्री शांति बिंबं का० प्र० श्रीजिनहर्षसूरि ।

(२८८६)

सं० १५४८ वशाख सुदि ३ श्रीमूलसंघ भट्टारक जी श्री जिनचंद्र ...

(२८८७)

संवत् १५४८.....श्री जिनचंद्र कनने पणमते सहर मडासा श्री राजा सीसिंह ।

(२७९७) पंचतीर्थी

श्री ककुदाचार्यीय गच्छे अमुख पुत्रेण सत्यदेवेन कारिता आजिणि निमित्त कारिता ॥

(२७९८)

श्वेत पाषाणमय महावीर प्रतिमा

६ संवत् १२९२ ज्येष्ठ सुदि ३ श्री संडिल्ल गच्छे श्री वर्द्धमानाचार्य संताने साधु देहड़ तत्पुत्र—रावराभ्यां कारिता नभ्यामूर्तिराप ॥ ६

खरतराचार्य गच्छोपाश्रये देहरासर

पाषाण प्रतिमाओं के लेख

(२७९९)

सं० १५११ वर्षे मार्ग वदि २ दिने ऊकेश वंशे कायोला गोत्रे सा० धर्म बिंबकारि श्री जिनसमुद्रसूरिभि: खरतर गच्छे।

(२८००)

सं० १५४३ वर्षे मार्ग वदि २ दिने ऊकेश वंशे भणसाली गोत्रे ......आदिपुत्रेण श्री नमिबिंबं... सूरिपट्टे श्री जिनसमुद्रसूरिभिः।

(२८०१)

सं० १५२४ मार्गसिर वदि साहण पुत्र ठाकरेण स्वपितृ श्री जिनचंद्रसूरिभि: सा० न ।

(२८०२) चरणों पर

संवत् १८२० व। शा १६८५ प्र। मिगसिर सुदि ५ शुक्रे स। श्री जिनदत्तसूरिजी पादुके॥

धातु प्रतिमादि के लेख

(२८०३) पंचतीर्थी

संवत् १४७९ वर्षे माघ वदि ४ शुक्रे नाम गोत्रे सा० नरपति संताने सा० कासदेव पुत्राभ्यां गांगा जालणाभ्यां पितृश्रेयसे श्री धर्मनाथ बिंब कारितं प्रतिष्ठितं मलधारि श्री विद्यासागरसूरिभि:।

(२८०४)

पार्श्वनाथ लघु प्रतिमा

सं० १६२१ व० फा० सु० ८ सो० श्री हीरविजयसूरि प्रतिष्ठित श्रीजी अर बाई।

(२८०५)

रजतमय ह्रींकार यन्त्र पर

संवत् १८६१ वर्ष शाके १७२६ प्रवर्त्तमाने मधुमासे सितेतर पक्षे त्रयोदश्यां तिथौ गुरुवासरे शतभिषा नक्षत्रे शुभयोगे श्रीविक्रमपुरस्थित सुश्रावक पुण्यप्रभावक मुहणोत श्रीरामदासजी कारापितं प्रतिष्ठितं भट्टारक जंगम युगप्रधान श्रीजिनचंद्रसूरिभि:। धर्मार्थे विहरापितं।

(२८०६)

रजतमय सिंहासनोपरि पादुकायां

सं १६ ६ मि। आ। सु। १५ श्रीजिनकुशलसूरीणां पादुका श्रीजिनहंससूरिभिः प्रतिष्ठितं।
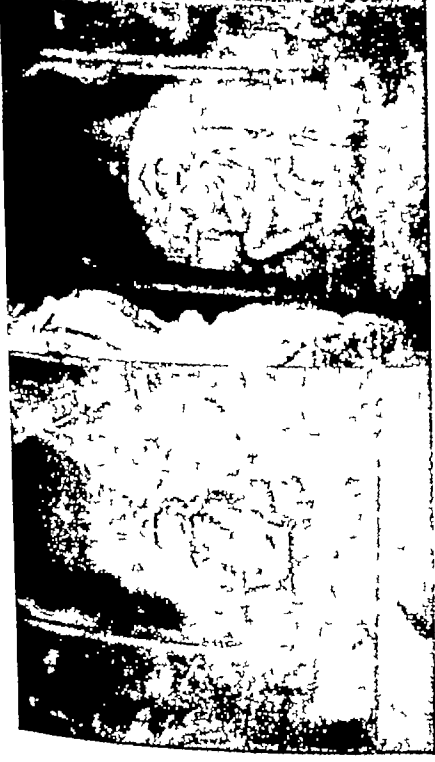
दादा श्रीजिनदत्तसूरि श्रीजिनकुशलसूरि मूर्ति (श्री चिन्तामणिजी का मदिर)

हीरविजयसूरि (अजितजिनालय)

शालिभद्र चरित्र का भित्तिचित्र महावीर जिनालय, बोहरों की सेरी

संवत्	लेखाङ्क
१२४६	२७१२
१२४८	१०२
१२५१	१ ३
१२५७	२८१७
१२५८	१ ४
१२६	१ ५
१२६२	१ ६,१ ७
१२६५	१४८
१२६६	१ ८
१२६८	१ ९
१२६९	११
१२७२	१११ ११२
१२७३	११३ ११४
१२७६	११५
१२७८	१९५२
१२७९	११६
१२८	११७ ११८
१२८१	११९
१२८२	१२ १२१
१२८३	१२२
१२८४	१२३
१२८५	१२१२
१२८६	१२४
१२८७	१५१४
१२८८	१२५,१२६ १२७ १३३५
१२९	१२८ १२९
१२९३	१३ १३१ १३२
१२९४	१३३
१२९५	१३४ १३५
१२९७	१३६ १३७
१२९८	१३८
१३ (?)	१४
१३ २	१४१ १३४९
१३ ५	१४२ १४३ १४४ १४५
१३ ६	१४६
१३ ९	१४७

संवत्	लेखाङ्क
१३११	१४८ १४९,१५ १५१
१३१२	१५२ १५३
१३१४	१५४ १३६७
१३१६	१५५
१३१९	१५६,१३३२
१३२	१५७ १६२
१३२१	१५८ १५९,१६
१३२२	१६१ १६२
१३२३	१६३ १३२३ १३६५
१३२४	१६५,१६६
१३२५	१६७
१३२६	१६८ २२६१
१३२७	१६९ १७ १७१ ११७१
१३२९	१७२
१३३	१७५,१७६,१८६
१३३ (?)	१७३ १७४
१३३१	१७८ १७८
१३३२	१७९ १८ १८१ १८३ २४१९
१३३२ (?)	१८२
१३३४	१८४ १८५
१३३६	१८७
१३३७	१८८ १८९
१३३८	१९ १९१
१३३९	१९२ १२८६
१३४	१९४
१३४१	१९५,१९६,१९७ १२ ६
१३४२	१९९
१३४३	१३५४
१३४४	१९९
१३४५	२ २ १२९४४
१३४६	२ २ १३५७ १४७९ १८ ४
१३४७	२ ३ २ ४
१३(?२)४७	२ ५
१३४९	२ ६ २ ८२ ९,१२१ २११ ११ ९
१३४९ (?)	२ ७
१३५	२१२

[सं० २०१३ मिती चैत्र शुक्ल ७ को बीकानेर से ७० मील दूरी पर स्थित अमरसर गाव (नोखा-सुजानगढ़ रोड पर) मे नोजा नामक वृद्धा जाटनी ने टीबो पर रेत सहलाते हुए जिन प्रतिमा विदित होने पर ग्राम्य जनो की सहायता से खोदकर १६ प्रतिमाएं निकालीं जिन में २ पाषाण व १४ धातुमय है इनमे १२ जिन प्रतिमाएं व दो देवियो की प्रतिमाएं हैं। इनमे १० अभिलेखोवाली है अवशिष्ट १ पाषाणमय नेमिनाथ प्रतिमा व धातु की पाच प्रतिमाओ पर कोई लेख नहीं है। इनमे दो पार्श्वनाथ प्रभु की त्रितीर्थी व एक सप्तफणा एकतीर्थी व एक चौमुख समवशरण है एक प्रतिमा देवी या किन्नरी की जो अत्यन्त सुन्दर व कमलासन पर खड़ी है। यहा उत्कीर्ण अभिलेखो की नकलें दी जा रही है। ये प्रतिमाएं अभी बीकानेर म्युजियम मे रखी गई है।]

(२७८९)

अम्बिका, नवग्रह, यक्षादि युक्त पंचतीर्थी

संवत् १०६३ चैत्र सुदि ३ तिभद्र पुत्रेण अह्नकेन मह्रा (प्र) त्तमा कारिते। देव धर्म्मम्नाय सुरुप्सुता मह्रा पिवतु

(२७९०)

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी

६ संवत् ११०४ कान० माल्हुअ सुतेन कारिता

(२७९१) त्रितीर्थी

६॥ संवत् ११२७ फाल्गुन सुदि १२ श्रीमदूकेसीय गच्छे उसभ सुतेन आम्रदेवेन कारिता

(२७९२)

चतुर्विंशति पट्टः

त् ११३६ जल्लिका श्राविकया कायभू

(२७९३)

पार्श्वनाथ पंचतीर्थी

ऐं॥ संवत् ११६० वैशाख सुदि १४ रा श्री कूर्चपुरीय गच्छे श्री मनोरथाचार्य सन्ताने उदयच्छा (१) रूपिणा कारिता।

(२७९४)

अश्वारूढ़देवी मूर्त्ति पर

सं० १११२ ० आषा सुदि ५ साढ सुत छाहरेन करापितं॥

(२७९५)

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी

मांडनियणके दुर्गराज वसतौ नित्य स्नात्र प्रतिमा दुर्गराजेन कारिता।

(२७९६)

सप्तफणा पार्श्वनाथ

६ दे धर्मोयं स णेवि श्राविकाया॥

[सं० २०१३ मिती चैत्र शुक्ल ७ को बीकानेर से ७० मील दूरी पर स्थित अमरसर गाव (नोखा-सुजानगढ रोड पर) मे नोजा नामक वृद्धा जाटनी ने टीबो पर रेत सहलाते हुए जिन प्रतिमा विदित होने पर ग्राम्य जनो की सहायता से खोदकर १६ प्रतिमाएं निकाली जिन मे २ पाषाण व १४ धातुमय हे इनमे १२ जिन प्रतिमाएं व दो देवियो की प्रतिमाएं है। इनमे १० अभिलेखोवाली हैं अवशिष्ट १ पाषाणमय नेमिनाथ प्रतिमा व धातु की पाच प्रतिमाओं पर कोई लेख नहीं है। इनमे दो पार्श्वनाथ प्रभु की त्रितीर्थी व एक सप्तफणा एकतीर्थी व एक चौमुख समवशरण है एक प्रतिमा देवी या किन्नरी की जो अत्यन्त सुन्दर व कमलासन पर खड़ी है। यहा उत्कीर्ण अभिलेखो की नकलें दी जा रही है। ये प्रतिमाएं अभी बीकानेर म्युजियम मे रखी गई है।]

(२७८९)

अम्बिका, नवग्रह, यक्षादि युक्त पंचतीर्थी

संवत् १०६३ चैत्र सुदि ३ तिभद्र पुत्रेण अह्लकेन महा (प्र) त्तमा कारिते। देव धर्म्मम्नाय सुरुप्सुता महा पिवतु

(२७९०)

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी

६ संवत् ११०४ कान० माल्हुअ सुतेन कारिता

(२७९१) त्रितीर्थी

६।। संवत् ११२७ फाल्गुन सुदि १२ श्रीमदूकेसीय गच्छे उसभ सुतेन आम्रदेवेन कारिता

(२७९२)

चतुर्विंशति पट्टः

त् ११३६ जल्लिका श्राविकया कायभू

(२७९३)

पार्श्वनाथ पंचतीर्थी

ऐं ।। संवत् ११६० वैशाख सुदि १४ रा श्री कूर्चपुरीय गच्छे श्री मनोरथाचार्य सन्ताने उदयच्छा (?) रूपिणा कारिता।

(२७९४)

अश्वारूढ़देवी मूर्त्ति पर

सं० १११२ ० आषा सुदि ५ साढ सुत छाहरेन करापितं ॥

(२७९५)

पार्श्वनाथ त्रितीर्थी

मांडनियणके दुर्गराज वसतौ नित्य स्नात्र प्रतिमा दुर्गराजेन कारिता।

(२७९६)

सप्तफणा पार्श्वनाथ

६ दे धर्मोयं स णेवि श्राविकायाः ॥

परिशिष्ट—क

संवत् की सूची

(विक्रमीय)

सवत्	लेखाङ्क
८१	६१
८५	१४७८
१०१८	१८५१
१०२०	६३
१०२१	२३१७अ
१२२(?१०२२)	५७
१०३३	६४
१०५८	२४३९
१०६५	२४५८
१०६८	६५
१०८०	६६
१०८४	२४६८
१०८६	२७६६
१०८७(?)	१६१७
११०४	१३२९
१११३	१४६५
११३०	२४९०
११३६	२८२७
११४१	६८
११४३	६९
११४५	२१९५
११५५	२९,१६३४,२४२८,२४२९,२४३०,२५१०
११५७	७०
११६२	२७५९
११६३	७१
११६६	७२
११६९	७३
११७३	१३६६
११७६	२१,१५४३
११८१	२१८३
११८८	७४
११८(?)९	७५
११९५	७६
११	६७
१२०४	२४५७
१२०८	२७६०
१२०९	७८
१२०९	७९
१२११	८०
१२१२	७७,८१
१२१३	८२
१२१७	८३
१२२०	८४,२४७०
१२२२	८५,८६
१२२३	१४८३
१२२४	८७
१२२६	८८,२८४०
१२२७	८९,९०,१३२४
१२२९	२६०३
१२३४	२१,९३,१७८४,१७८५
१२३५	९४
१२३६	९५
१२३७	९२,९६,९७
१२३९	९८,९९,१००
१२४३	१५०९
१२४४	१०१

सवत्	लेखाङ्क
१३५१	२१३,२१४,२१५,१२३०
१३५४	२१६,२१७
१३५५	१२३२
१३५६	१६१६
(१३)५७	२३०
१३५९	२१९,२२०
१३५९ (?)	२१८
१३६०	२२२
१३६० (?)	२२१
१३६(०)	२३४८
१३६१	२२३,२२४,२२५,२२६,२२७
१३६२	२२८,२२९
१३६३	२३१,२३२,१३७३
१३६४ (?)	२३३
१३६६	२३५
१३६७	२३४,२३६,२३७,२३८,१८३७
१३६८	२३९,२४०,२४१,२४२,२४३
१३६९	२४४,२४५,२४६,२४७
१३६९ (?)	१३१९
१३७०	२४८,१९३९
१३७१	२४९,२५०,१३६३,१९६०
१३७२	२५१
१३७३	२५२,२५३,२५४,२५५,२५६,२५७२५८,
	२५९,२६०,२६१,२६२,२६३२६४,२६५,
	२८२०
१३७४	२६६,२६७
१३७५	२६८,२६९
१३७६	२७०,२७१
१३७७	२७२,१३५२
१३७८	२७३,२७४,२७५,२७६,२७७,२७९२८०
१३७८ (?)	२७८
१३७९	२८१,२८२,२८३
१३८०	२८४,२८५,१२१४
१३८१	२८६,२८७,२८८,१३१२
१३८२	२८९,२९०,२९१,२९२,२९३,२९४,२९५
१३८३	२९६,२९७,१७६७

सवत्	लेखाङ्क
१३८४	२९८,२९९,३००,३०१,३०२
१३८५	३०३,३०४,३०८,३०९,१२७५
१३८६	३०५,३०६,३१०,३११,३१२,३१३,३१४
१३८७	३१७,३१८,३१९,३२०,३२१
१३८८	३२२,३२३,३२४,३२५,३२६,३२७
१३८९	३२८,३२९,३३०,३३१,३३२,३३३,
	३३४,३३५,३३६,३३७,१९४७
१३९०	३३८,३३९,३४०,३४१,३४२,३४३
१३९१	६,३४४,३४५,३४६,३४७
१३९२	३४८,३४९,३५०,३५१,१३२१
१३९३	३५२,३५३,३५४,३५५,३५६,
	३५७,३५८,३५९,३६०,३६१,३६२,
१३९४	३६३,३६४,३६५,३६६,३६७,३६८,
१३९६	३६९,३७०
१३९७	३७१,३७२,३७३,३७४
१३९८	३७५
१३९	३७६
१३	३७८,३७९,३८०,३८१
१३	३८२
१३ ६	३८३
१४००	३८६
१४०१	४००
१४०५	४०१,४०२,४०३
१४०६	४०४,४०५,४०६,४०७,४०८,४०९४१०
१४०८	४११,४१२,४१३,४१४,४१५,४१६
	४१७,४१८,४१९,४२०,१३२२,२७५८
१४०९	४२१,४२२,४२३,४२४,१४४२
१४११	४२५,४२६,४२७,४२८,४२९
१४१३	४३०,४३१,४३२,१३८०
१४१४	४३३,१४७५
१४१५	४३४,४३५,४३६,१९३३
१४१७	४३७,४३८
१४१८	४३९,४४०,२७६१
१४२०	४४१,४४२,४४३,४४४,४४५
१४२१	४४६,१२७४,१९३६
१४२२	४४७,४४८,४४९,४५०,४५१,१५७४,
	२१६२,

संवत्	लेखाङ्क
१५५९	११२९,१८२०,१९३१ २४८९,२५३३
१५६	११६८ १५२८ १५२९,२७५१ २७५२
१५६१	१ ११३ १५९७ १९ १ २५ ३
१५६२	२६ ९
१५६३	११३१ १५ ४ १७५६,२२२१ २५१२
१५६६	४ ११६८ २१३१ २५२३ २५२७
१५६७	११३२ १६१४ १६९४
१५६८	११३३ ११३४ १३३३ १६ ९,२७०४
१५६९	१४५५,२४१२
१५७	११३९,१५३२ १५३४ १९४८ १९४९, २५ ४
१५७१	११३५,११६५ १४३८ २७०८
१५७२	११३६,११३७ १२८ १५११ २८४
१५७३	१५६ २१५८ २६ २
१५७५	११३८ ११३९,११४ ११४१ १६३ १६९३ १९३२ २३२९ २६८१ २८८३
१५७६	३५,११४२,१२२९ १५८ १५९९ २ ५,२२९३ २२४७ २५३९,२७३३ २७३७ २८३७
१५७७	१७८
१५७८	२१८ २७१७
१५७९	११६६ १६५२ १९८१
१५८	११ २०२३ २०३४ २०९७
१५८१	१७६ १७९३ १८७८ २२५७ २४५६
१५८२	११४३ १२६४ २२१४ २३७२ २७२२
१५८३	११५८ १६२९,१८४६
१५८५	१५९८
१५८५(?१५९४)	२३२६
१५८६	१९५
१५८७	१५८५ १८२१ १९ २२ ६ २३९२ २५ २६७५
( )८७	११५१
१५९	११४४ २०८६
१५९१	१ २ ३८२५
१५९२	२ २४८३
१५९३	२७ २८ ३२ ३३ ३४ ३६,३७ ३८,३९ ४ ४१ ४२ ४३ ४४ ४५,११९९,१२७२ १३९५,१७५३ १९१२ २२३७ २३६२, २३८३
१५९४	११४५ २१६१ २२८२
१५९५	५,११५० १५९५,१८४२ २५३४ २६७९
( )९६	११५
१५९६	१५५९ १७ २ १९ ३ २७८७
१५९७	१६
१५९८	१७५८
१५९९	११४६,१५७०
१५९(?)	२२१८
१६	११४७ १३५५
१६ १	१३९३
१६ २	११५२
१६ ३	२७८३
१६ ५	१८४
१६ ६	१८ १४३१ २१७६,२२४३
१६ ८	२३८० २३९५
१६ ९	१८५
१६१	१७००
१६१२	२६००
१६१५	२२१४
१६१६	१२ १७ १ १८९१ १९२६
१६१७	२५ २
१६१८	१९४२
१६१९	११६७ २३३४
१६२२	२८३
१६२४	११२० २४७९
१६२५	२० ०
१६२६	११ ० २३१९
१६२७	१४५२ १९ ४
१६२८	१७५४ १९२०
१६३४	११९४ १०३१
१६३६	२१३२ २२३८
१६३०	१००९,२ ०

संवत्	लेखाङ्क
	२६४५,२६४६,२६४७,२६४८,२६४६, २६५०,२६५१,२६५२, २६५३,२६५४,२६५५,२६५६,२६५७, २६५८ २६५६,२६६०,२६६१,२६६२, २६६३,२६६४,२६६५,२६६६,२६६७, २६६६,२६७०,२६७१,२६७२,२६७३,
१४७३(?)	१२६४
१६(? ४)७३	२०
१४७४	६७२,६७३,६७४,६७५
१४७५	६७६,६७७,६७८
१४७६	६७६,६८०,६८१,६८२,६८३,६८४
१४७७	६८५,६८६,६८७,६८८,६८६,६६०, २७४३
१४७८	६६१,६६२,१७६८,२५३५
१४७८(?)	८२४
१४७६	६६३,६६४,६६५,६६६,१३००, १५७६,२६२३,२८१५
१४८०	६६७,६६८,६६६,७००,७०१,७०२ १२२४
१४८१	७०३,७०४,७०५,७०६,७०७,,७०८ १५७८
१४८२	७०६,७१०,७११,७१२,७१३,७१४, ७१५,७१६,७१७,७१८,७१६,७२० ७२१,१५३०
१४८३	७२२,७२३,७२४,७२५,७२६;१३३६, १८७२,२२३५
१४८४	२६६२
१४८५	७२७,७२८,७२६,१३१४,१३१७,१३५८, १५७५,१६६६,२७०५, २७७२
१४८६	७३०,७३१,७३२,७३३,७३४,७३५, १२०५,१२१७,१२६६
१४८७	७३६,७३७,१४३०,१४७३,१८३५, २३४४
१४८८	७, ७३८,७३६,१२७३,१३४३
१४८६	७४०,७४१,७४२,७४३,७४४,७४५, ७४६,७४७,२५२६
१४६०	७४८,७४६,७५०
१४६१	७५१,७५२,७५३,७५४,७५५,१२३१, १३५६,१६२१,१६५७,२३७७,२७४०
१४६२	७५६,७५७,७५८,७५६,७६०,७६१, ७६२,७६३,७६४,१२१८,१५१५, १८७५,२३३६,२७६३
१४६३	७६५,७६६,७६७,७६८,७६६,७७०, ७७१,१३१६,१४४४,१४३७,१४७६, १६०१,१६४७,१८२६,२३४७,२३८५, २६२०,२६७४,२७६६
१४६३ (?)	१३२५
१४६४	७७२,७७३,७७४,७७५,७७६,७७७, ७७८,७७६,७८०,१३३६,१६१०
१४६५	७८१,७८२,७८३,७८४,७८५,१३३८, १३५१,१५०२,१६५६,२२५६,२४८५ २५१३
१४६६	७८६,७८७,७८८,७८६,७६०,७६१, १८६३
१४६७	७६२,७६३,७६४,७६५,७६६,७६७, ७६८,७६६,१८६४,२६८६,२६६३, २६६४,२६६६,२६६८,२७४६
१४६८	८००,८०१,८०२,८०३,८०४,८०५, ८०६,१३४८
१४६६	८०७,८०८,८०६,८१०,८११,८१२,८१३, ८१४,१३२७,१३४१,१३७५, २२८४,२४६४,२५३७
१४	८१५,८१६,८१७,८१८,८१६,
१५००	८२१,८२२,१३३०,२१५७
१५०१	८३७,८३८,८३६,८४०,८४१,८४२, ८४३,८४४,८४५,८४६,८४७,८४८, ७४६,८५०,८५१,८५२,८५३,८५४, ८५५,८५६,८५७,१३६०,१६१८ १६५८,२०३२,२१५२,२१५३,२१५४, १६६१,२२३६,२४७६,२७३६
१५०२	८५८,८५६,८६०,८६१,८६२,८६३, १५८१,२८२६

संवत्	लेखाङ्क	संवत्	लेखाङ्क
१७४	५२ २११८ २५८३	१७९५	२५५४
१७४२	२५९	१७९६	२८४५
१७४७	२६ ४	१७९८	२ १६,२०१७
१७४८	२१५६	१८	१७२१ १९४
१७४९	५५	१८ १	२०१८
१७५१	२५८४	१८ ४	२६०५,२८४३
१७५२	१६१५,२४७२ २५७४	१८ ५	२१४२
१७५४	१४७	१८ ७	१८४९,२ ७८ २१४१
१७५५	१२६१ १९७४ २४१४	१८०८	२४७३ २८४४
१७५६	१४६९	१८१	२५८६
१७५७	२४९१	१८११	२५५५
१७६	१९७३ १९७४	१८१५	२ ११ २०१८
१७६१	२३१८	१८१६	२८८४
१७६२	२ ५४ २४३३	१८१८	२ १४
१७६३	१४४७ २११९	१८१९	१९१५,१९१६
१७६४	१६५५,२५७९ २५८५	१८२	१२४८ १२८८ २५१५
१७६७	२ ८८	१८२१	१७९ २०१५
१७६८	१२६१ १७६९ २५०१	१८२२	२५५१
१७७१	२ ६९	१८२५	२८६१ २८६२ २४६४
१७७३	२३९४ २४३४	१८२६	१४९९ २ २१ २३६१ २४१५
१७७४	१५१९	१८२७	१५२५
१७७५	१४७१	१८२८	१४८६,१९८४
१७७६	२४६१	१८२९	१४९
१७७७	२५७७	१८३१	२२६४ २२६५,२२६६
१७७८	२४	१८३४	२ ३३
१७७९	१५२४	१८३५	२ ७५
१७८	२४५९	१८३६	२०८१
१७८१	२८७५	१८३७	२ ७
१७८१	२१४ २५९८	१८३८	२१४३ २२७८
१७८४	२ ५३ २१ ९ २११	१८३९	१०
१७८५	१७७४ १९४१	१८४	२८६ २६ ८
१७८९	२ ६७	१८४१	१३९७ २२८३
१७९	११ ८	१८४५	२५४३
१७९२	२५ ६	१८४६	१८४८ २०९२ २१४४ २५४४
१७९४	१५१७ १७ ३ २ ५७२ ७७	१८४९	१८८४ २२९७

सवत्	लेखाङ्क
१५२४	४६५,१०३४,१०३५,१०३६,१०३७, १०३८,१२८३ १८१३,१८१४,१८३६, २५४०,१८७७,१९३४,२१५६,२१८२,२४४७
१५२५	१०३९,१०४०,१०४१,१०४२,१०४३, १०४४,१०४५,१२५२,१३१५, १५१०,१८७६, २३५२,२८२८
१५२६	१०४६,१०४७,१०४८,१६९१
१५२७	१०४९,१०५०,१०५१,१०५२,१०५३, १०५४,१२२६,१२५०,१२९१,१३७६, १४४१,१५०५,१६००,२३८६, २६८०,२७६५,२८२२
१५२८	१०५५,१०५६,१०५७,१०५८,१०५९, १२४९, १२९७,१३०१,१३३७, १५०७,१८७४,१९८३, २१७५, २३४२,२४८७
१५२९	१०६०,१०६१,१०६२,१०६३,१०६४, १३०३,१५३५,१७८१,२३५१,२४७७, २५९९
१५३०	१०६५,१०६६,१०६७,१५८२, २४४१, २४८०
१५३१	१०६८,१०६९,१२४६,२३४३,२४४९,
१५३२	१०७०,१०७१,१०७२,१०७३,१०७४, १०७५,१२२३,१२८२,१८१८,१९०६
१५३३	१०७६,१०७७,११५७,११९१,१८१५, १८२५,२५३१,२७२७
१५३४	३,१०७८,१०७९,१०८०,१०८१,१०८२ १०८३,१०८४,१०८५,१०८६,१०८७ १०८८,१०८९,१०९०,१२०९,१२१९, १२५८,१२९८,१३७८,१४३४,१६०२, १६०४,१७६५,१८२४,१८८९,१९०८, २२८१,२३४१,२३४९,२५३०,२७१०
१५३५	१०९१,१०९२,१०९३,१०९४,१६४९, १८२६,२२२०,२२७३, २७४२,२७४४
१५३६	१०९५,१०९६,१०९७,१०९८,१०९९, ११००,११०१,११०२,११०३,११०४, १२५७,१२९६,१४३९,१४७४, १५०८,१५१६,१५५४,१५५५,१६९५, १७५९,१८१७,१८९८,१९०९,१९१०, २३३३,२६९९,२७११,२७१२, २७१३,२७१४,२७१५,२७२१,२७२४, २७२५,२७२६,२७३१,२७३८,२७४८, २७७६,२७७९,२७८०,२७८१,२७८२, २७८३,२७८४,२७८८,२७९२,२७९४, २७९९,२८०१,२८०३,२८०६,२८०७, २८०८,२८०९,२८१०,२८११
१५३७	१४४०,१५३८,१६६५
१५३९	१८९९
१५३( )	११०५
१५४०	११०६,१३०५,१५८३,२५२२
१५४२	११०७,१२९४,२५३६
१५४३	११०९,१२२५
१५४४	२४७१
१५४५	१११०,११११,१४८९,१७८२,२४१३
१५४६	१३९६,१५१८
१५४७	१११२,१११३,२४४५
१५४८	१११४,११६२,११६४,११९०,१४१६, १५९४,१८०९,१८१०,१८१२,१८३४, १८४७,१९२८,२००४,२१५९,२२६०, २३५७,२३९०,२४९३,२६११,२६१३, २६१४,२७२९,२८८६,२८८७,
१५४९	१११५,१११६,१४९१,१५६४,१६४०, १६४४,१६९८,१९००,२४९८,२५३२
१५५०	१११६,१११७,२४४४
१५५१	१११८,१११९,११२०,११२१,१२५३, १२७१,१२८७,१३७२,२३३७
१५५२	८,११२२,१९१७,२४५३
१५५४	११२३,११२४,१२५४,२३२४,२४४९
१५५५	१२५६,१५५३,१७५७,२४४३
१५५६	११२५,११२६,१५३७,१६२६,१८१६, २२०९,२४८८
१५५७	११२७,११२८,२५७२
१५५८	१५३६

संवत्	लेखाङ्क
	१६६३ १६६४ १६८ १६७२,१७४६
	१८६५,१६२ १६६४ २१७७ २१८१
	२४०२,२४ १
१६ ७	२२०१ २२६८
१६ ८	२२७६
१६ ६	२१०८ २११५
१६१	२३२३ २४ ५
१६११	२३६६ २४
१६१२	१२४७ १५६७ १८१४ १८६६ १६७६,
	२ ६१२ ८६ २३११
१६१४	१ ४६,१७४ २०६ २ ६१ २१८६,
	२१८८ २२७५,२४१५
१६१५	२१४६
१६१६	३१ ११८५,१७२१ १७२६ १७११
	१७१७ १७१८ १७४१ १८११ १८६२,
	१८६७ १६२१ १६२४ २ १५,२ २२,
	२ २८ २१८४ २१८५,२१८७ २१८६,
	२१६ २१६१ २३२३
१६१७	२५२४ २५२५
१६१८	२ ४२,२ ६७ २१५१
१६१६	२ २५ २४१८ २५२१
१६२	२१७१ २४१८
१६२१	१५६६ १५६१
१६२२	२१८६
१६२३	१८५६ १६५६ २ ५८ २ ८५,२ ८७
	२१ २२१ १
१६२४	२२ ११६६ १६०५,२३११ २५४७
१६२५	२११३
१६२६	१६८६ १६८७ १६८८ १६८६ २६१२
१६२७	२ ५५
१६२८	२ ४ २७ ६ २०१६,२७६५ २८५
१६३	२३१२ २८४६
१६३१	१३ ५ १२३८ १४१६ १४२१ १४२२
	१४६७ १५५१ १५६३ १६४२ १६४३
	१६६ १६७६ १६७७ १६७८ १६८१
	१६८२ १६८४ १७२८ १८६ १८६८

संवत्	लेखाङ्क
	१८७१ १६२१ १६७७ १६७८ २ ४१
	२ ५० २१६५,२१६६,२१६७,२१७
	२१७२,२१७८ २३२५
१६३३	२११६,२११६ २१६४ २२६६,२३७४
	२३७५,२४२५,२४२७ २८५१
१६३५	११६२,१६७३ २ ६६ २ ७४ २२६५
१६३६	११५६ २२६ २२६३ २५ ५
१६३८	१६३८ २११७ २११८
१६३६	२८४७
१६४	१६८८ २४१६ २४२१
१६४१	२८६६
१६४२	१८ २१८ १
१६४३	११८७,२ ४४ २ ६३ २२६२,२२६४
१६४४	२ ७३
१६४५	१२७ २ ५६,२ ६
१६४७	२१८२ २८५२
१६४८	२१२१
१६५	२५६
१६५()	२५२
१६५१	२१२ २५५२
१६५२	२८४०
१६५३	२ ६२ २ ७२ २०६४
१६५४	२५५३
१६५६	[२३३५
१६५७	२ ३८ २ ७६,२२८६,२२६१
१६५८	११८६ २ ८४ २५५६
१६५६	११५४ २ ४८ २ ४६,२५१८
१६६	१५ १ २२६२
१६६१	२३२७ २५५७ २५७ २५७१
१६६४	१५६५,१६१८ २११४ २७१५
१६६५	१५६६,१५७ १५७१ १५७२,१५७३
	२२३१ २२५
१६६६	२ ६३
१६६७	१८ ४
१६६८	२ १६
१६७०	२०७१ २ ८३ २१२१ २१७६

संवत्	लेखाङ्क
१६३८	१४३२
१६४०	१५,५३
१६४१	१५४६,१६११
१६४४	१६२३
१६४६	१८८३
१६५१	२४१६
१६५२	११५३,२४६०
१६५३	२००८
१६५४	१९६७,१९६८
१६५५	१९११
१६५७	२३,१६५६
१६६०	२६१०
१६६१	१२२०,१६२४
१६६२	१३९९,१४००,१४०१,१४०२,१४०३, १४०४,१४०५,१४०६,१४०७,१४०८, १४०९,१४१०,१४११,१४१२,१४१३, १४१४,१४५०,१४५१,१४५९,१४६३, १४९२,१४९३,१४९४,१४९७,१४९८, १७१३,१७२३,१७२४,१७२५,१७७१, २००९
१६६३	२१३३,२१३४
१६६४	११५४,१२५९,१४६४,१५३१,१५५२, २१३५,२६००,२८३९
१६६९	२५७३
१६७०	१९४४
१६७१	१२०२,२२२३,२२४८
१६७२	२४६२
१६७३	२०३५,२८८२
१६७४	१२१९,१५४७,१५४८,१५४९,१८८८, २८६७
१६७५	२८७६,२८७७,२८७८,२८७९
१६७६	१८४४,२०५६
१६७७	२१६०,२२२२
१६८१	२३२८
१६८३	१३०९,२३९३
१६८४	२५,१२३७,२६०६
१६८५	१२४१,१४६०,२२१०
१६८६	१४२४,१४२५,१४२८,१४२९,१४६१, १४७२
१६८७	१४२६,१४२७,१८३९,१९७०,२४०१, २५९१
१६८८	१५६३,२५९६
१६८९	२१३६
१६९०	१४२३,१४६२,१५००,२४९९
१६९१	१३११,१५२१,१८२७,२३४०
१६९३	१७८९
१६९४	१४१५,१४१७
१६९५	१४२०
१६९६	२५७५
१६९७	११९९,१२०१,१८४५,२२२४,२३९६
१६९९	१८२२,१८५४
१७०१	११९८,१२०३,१३०६
१७०३	१६६६
१७०५	२२८८,२५७८,२५८८,२८७४
१७०६	२२२५,२८३२
१७०७	१२००,२५७६
१७०८	२५१७
१७०९	१९६९
१७१०	१७७२,२३७१
१७११	२५०८
१७१३	१४५८,१६६८,२५९७
१७१९	२५०९
१७२३	१९१९,२६०१
१७२४	२५९८
१७२५	२५८९
१७२६	१६५३,१७८८
१७२७	१२९२,२५८७
१७३०	५४
१७३१	२५८२
१७३२	१४५६,२११२
१७३५	२२००
१७३७	२३३१,२३३२,२५९३

परिशिष्ट—ख

स्थानों की सूची

संवत्	लेखाङ्क
१८५०	२४०४,२४१७
१८५१	२४१८,२५८०,२५९५
१८५२	२२२७,२२४०,२५६९,२८४१,२८४२, २८७०
१८५३	१९१४,२००२
१८५४	१५८६
१८५५	१५४६,१७९२
१८५६	२०९५,२६१७
१८५७	१८३०
१८५८	२१०४,२१०५
१८५९	२५५०
१८६०	२०१०,२०११,२११४,२१४५,२२१३, २५९२
१८६१	११७०,१५४०,२१०२,२१०३,२२१२, २२१६
१८६२	२०८९,२४७४
१८६३	१९१३,२०२४
१८६४	१८८६,२६१६,२८७१,२८७३
१८६५	१५४१,२४२१,२५११,२८६९
१८६६	१९६५,२३५८,२३६०,२५८१
१८६७	२४३१,२५०७
१८६८	२२२८
१८७१	१४५४,१७२२,१७३३,१९२५,१९५३, २१०६,२४३२
१८७२	१९५४,२०४५,२०४६,२०४७
१८७३	२६१५
१८७४	११६०,१५४५,२०४१,२८७५
१८७५	२१०१,२५९२
१८७६	२५६२,२५६३
१८७७	१७९१,१९५५,२०८२,२५६४
१८७८	१४८५,२०८०,२१०७,२२२९
१८७९	१२८९,२२९९,२३००,२३०५,२५४८, २८६४
१८८१	१५९२,२३०४,२५१६,२८६३
१८८२	१७७५,२२८६,२८५४
१८८३	१८५७,१८५८,१८६९,२८३५

सवत्	लेखाङ्क
१८८४	२०१९
१८८५	२२५८
१८८६	१९१८,२२०२,२२०३,२२०४
१८८७	११७२,११७३,११७४,११७५,११७७, ११७८,११८०,११८१,११८६,१४१८, १६४१,१६५१,१६६७,१७३४,१९२२, १९६३,२२५५,२२५६,२५४६
१८८८	१५४२,२०७९,२३०७
१८८९	११६१,१९६२
१८९०	११८८,११८९,२१४६,२२४२,२२५४
१८९१	१३९८,२१४८,२२३०,२२४१,२४२२
१८९२	१४८४,२३१५
१८९३	११७६,११७९,१६३३,१६३९,२१९९, २२०५,२३३०
१८९४	२२५२,२२५३
१८९५	' २५४१,२५४२
१८९७	१५९५,१६३५,१७९४,१७९५,१७९६, १७९७,१७९८,१७९९,१८००,१८०१, १८०६,१९५१,२३८०,२३८१
१८९८	२४६३
१८९९	११८३,११८४,११८५,२०२६,२०२७, २३७८,२३७९,२५६५,२५६६,२५६७, २५६८
१९००	१५६२
१९०१	२०२०,२३१६,२४९२,२८४९
१९०२	१९८५,२००३,२०१२,२३१०
१९०३	१५७९,१५८७,१५८८,१५९०,२३६३, २३६६,२४७५,२८५८
१९०४	११६९,११७१,१४६६,१७३९,१७४३, १७४४,१७४५,१७४७,१७४८,१७४९, १७५०,१७५१,१७५२,१७७०,१७७९, १८५९,१८६३,१८८२,१८८५,१९७९, २३२२
१९०५	१७,१२३४,१२३५,१२३६,१२६५, १२६६,१२६८,१२६९,१५५०,१५६८, १६५७,१६५८,१६५९,१६६१,१६६२,

सवत्	लेखाङ्क
१९७२	१६३७,२०८३,२०९८,२०९९,२१००, २३२१
१९७४	१९०५,२१२२
१९७५	२१२७
१९७६	२८८८
१९७७	२३०६,२५५९
१९७८	२८१२
१९७९	२३०१
१९८०	२८१३,२८१४
१९८१	२०३७,२१२३,२१२४,२४०६,२५५८
१९८४	२२११
१९८५	२४०७
१९८६	२०३६,२४०६
१९८७	२०३३,२०३४,२३८८
१९८८	१६७४,२१२५,२२०६,२२०७,२२०८
१९९०	२१२८,२१२९
१९९२	२०२९,२०३०,२०३१,२३६४
१९९३	१९९७
१९९४	१७०४,१७०६,१७०७,१७१५,१७१६, २३५५
१९९६	२२८४,२२८५,२६०६
१९९७	१९९८,१९९९,२०००,२२६३,२२७१, २२७२
१९९८	२२६९,२२७०
१९९९	२४६७
२०००	२०९६
२००१	१८०७,१९९०,१९९२,१९९३,१९९४, १९९५,१९९६,१९९७ क
२००२	१७०५,१७०८,१७०९,१७११,१७१२, १७१४
२००५	२१९७,२१९८
२००७	२३०८,२३०९

वीर संवत्

सवत्	लेखाङ्क
२४४१	२३७३
२४४५	१७०३
२४४९	२८१२
२४५३	२५४९

परिशिष्ट—ग

राजाओं की सूची

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६१२	अकबर बादशाह	१२३४ १२३५ १३९९,१४ २ १४ ३ १४ ४ १४ ५,१४ ८ १४ ९,१४१ १४११ १६६३
१७८१	अखैसिंह महारावल	२८७९
१७२४	अनूपसिंह महाराज	२५९४
१९(?४)७३	अमायसिंह	२
१७ ५	कर्णसिंह महाराजाधिराज	२५८८
१६९६	"	२५७५
१७ ७	"	२५७६
१७२४		२५९४
१९४७	गंगासिंह महाराजा	२१८२
१९५१		२५५२
१९५८		१६८६
१९५८		२५५६
१९६१		२५७
१९६४		११६८
१९६४		२११४
१९६५		२२३१
१९६७		१८ ४
१९९७		२
१८७९	गजसिंह—महाराजा	२५४८
१८८१	जैसलमेर	२८६१
१८८२	" रावल	२८९४
१९७६	गिरधरसिंह—महाराजकुमार	२८८८
१५१८	चाचिगदेव रावल	२७ २
१५९१	जयतसिंह	२८
१९७६	जवाहरसिंह—महाराजा	२८८८
१९३	डूगरसिंह	२११२
१५३६	देवकर्ण—(रावल नृप दुर्गाधिप)	२८१
१५३६	"	२७८१ २७९५

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५६१	बीकाजी—राव	१
१८५६	मानसिंहजी—कुंवर	२६१७
१८२५	मूलराजजी—महारावल	२८६२
१८५२		२८४१
१८६६		२८६९
१९ ३	रणजीतसिंह—रावल	२८६८
१८९५	रणसिंह—पातशाह	२५४१
१८६४	रतनसिंह—महाराजकुंवार	२१६६
१८७२	"	२११५
१८८६	महाराजा	१९१८
१८८७	"	११७२,२५४६
१८८९		१९६२
१८९१		१५९२
१८९२		२११५
१८९३		२१९९,२१३
१८९५		२५४५
१८९७		१५९६,१७९४ १७९६,१७९९, १८ १८ ११८ ६,२१८१
१९ १	"	२११६
१९ २		२११
१९ ५		१२३४ १२३५,१९३६
१७२७	रायसिंह—राणा	१२९२
१८२५	रायसिंह—कुमार—युवराज	२८६२
१६६२	रायसिंह—महाराजा	१३९९,१४ १४ १ १४ २ १४ ३ १४५ १७२१
१६६४		११५४ १५३
१६८३	लूणकरण रावल	२७८३
१५७१	लूणकरण—राजाधिराज	११६५
१८८१	वैरीशालजी—ठाकुर	२५१६
१९२८	वैरीशालजी—महारावल	२८४६,२८९
१५४८	स्योसंघ राजा (मुडाधा)	२७२९

सवत्	लेखाङ्क
१९७२	१६३७,२०८३,२०९८,२०९९,२१००, २३२१
१९७४	१९०५,२१२२
१९७५	२१२७
१९७६	२८८८
१९७७	२३०६,२५५९
१९७८	२८१२
१९७९	२३०१
१९८०	२८१३,२८१४
१९८१	२०३७,२१२३,२१२४,२४०६,२५५८
१९८४	२२११
१९८५	२४०७
१९८६	२०३६,२४०६
१९८७	२०३३,२०३४,२३८८
१९८८	१६७४,२१२५,२२०६,२२०७,२२०८
१९९०	२१२८,२१२९
१९९२	२०२९,२०३०,२०३१,२३६४
१९९३	१९९७
१९९४	१७०४,१७०६,१७०७,१७१५,१७१६, २३५५

सवत्	लेखाङ्क
१९९६	२२८४,२२८५,२६०६
१९९७	१९९८,१९९९,२०००,२२६३,२२७१, २२७२
१९९८	२२६९,२२७०
१९९९	२४६७
२०००	२०९६
२००१	१८०७,१९९०,१९९२,१९९३,१९९४, १९९५,१९९६,१९९७ क
२००२	१७०५,१७०८,१७०९,१७११,१७१२, १७१४
२००५	२१९७,२१९८
२००७	२३०८,२३०९

वीर संवत्

सवत्	लेखाङ्क
२४४१	२३७३
२४४५	१७०३
२४४९	२८१२
२४५३	२५४९

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१९०५	सरदारसिंह–महाराजकुवर	१२३४,१२३५
१९०८	,, राजा	२२७९
१९१२	,,	१८६४,१८६६,२०६१,२३१३
१९२०	,,	१८०२
१९२४	,,	१९७५
	सरूपसिंह–महाराज	१२६२
१६६२	सलेम (वादशाह)	१३९९,१४००,१४०३,१४०४
१८५६	सवाईसिंघ	२६१७
१७५५	सुजाणसिंह–महाराज	१९७४
१७६०	,,	१९७३
१८४५	सूरतसिंह–महाराजा	२५४३
१८५५	,,	१५४४
१८५९	सूरतसिंह–महाराजा	२५५०
१८६०	,,	२५९२
१८६१	,,	२२१२
१८६४	,,	२६१८
१८६६	,,	२५८१
१८७३	,,	२६१५
१८७४	,,	१५४५
१८७६	,,	२५६२,२५६३
१८७९	,	२५४८
१८८७	,,	११७२
१८९७	,,	२३८१
१६८७	सूर्य्यसिंह–महाराजा	१४२७

ज्ञाति गोत्र	लेखाङ्क
वहुगण	७७८
वहुरा (वहरा)	१५८३,२०६६
वापणा (वप्पणाग, वप्पणाग, वापणाग, वापणा, वाफणा, वहुफणा)	३१२,३६४,५२४,५६१, ५६२,६१७,६३५,६८३,७१०,८५६, ९७१,१०५९,११३४,११७०,११५४, १६५६,१८६३,२१७०,२२०५, २२१३,२४६२,२७७२,२८८८,
वाठिया (वाटिया)	७७७,८१२,१६१४,२५६१
वावड़ा	२००७
वावेल (वायेल)	१२७८,१३७८
वाफ्ही	७६४
वुचड़ (वुचड़)	१०६८,२१५५
वुचा	१८३१,२५७८
वेगाणी	२५६२
वोकड़िया	१३२०
वोहियरा (वोथरा,मुकीम, वोथिरा, वच्छावत,वो०, वोहियहरा)	२ ख, ३,४,५,२७,२८,३६,४२, ६१५,६६५,१००८,११६८,१२५८, १५३१,१५३३,१५८०,१९४८,१९४६ १९५०,२००८,२३७२,२३८३,२५७६, २५७८,२५८३,२६०१,
भडागरिक (भ, भडारी)	८१३,१०७६,१०९३, २५९८,२६५६,२६६१
भणसाली	११२६,१४८०,१७१८,२७३७, २१९६,२८००,२८७६,१९४३,२५४०
भरहट	१३६२
माद्र (भाद्रि,भद्र, लिगा)	१८९६,२३४१,२३८६, २६०,९००,१०१३
भाम्भ्र	५३३
भाभू	९९७
भारद्वाज	११३६
भावड़ा	२२१४
भेटोचा	११०९
भिगा	१००६
भुगड़ी	२१२४

ज्ञाति गोत्र	लेखाङ्क
मूरि	८८३
मडलेचा (मडवेचा)	८९९,१०९६,१०३५
मड़ोरा	७७४
मणिआर	५७७
मथुरा	२६६५
ममग	२३३२
महाजनी (वर्द्धमानशाखा)	५४६,२७४३
मालहाउत	७३८
माल्हू	९५७,१८९५,२५९०
मुकीम	१८६४,१८६६
मुहणोत	२५८०
मुहता	२५७७
मूल्या	१४७३
राका	७८२,१०८६,१०९७,१८७४,२७१५
राखेचा	४६५,१०७५,१३९१,१४१७,१७१८, १८२६,२५८६
राखेचा (पुगलिया शाखा०)	२५७८
राजावत	२५९४
रामपुरिया	२५४९,२४०७
रायकोठारी	१२११
रीहड़	२७५३,१८२३,२२८७,२३९२
रोटागण (रोयगण)	४४९,७०९
रोहल	१६३०
ललवाणी	१२०२
लालाणी	११६०
लिगा (मूलदेवाणी)	३००,४६५,७७६,१८०९, १२८५,१४३६,१५१२,२८७८,२१७
लूकड़ (लोकड)	७७१,९६४,१५५७,१५०६ २६०७,१८३४
लुणिया	६६५,१०८७,१४३०,१४४३,१५९६, १९३१,२०३७,२३८५,
लोढा	९२७,१२९३,१३४३,२२४५,२५३५
वरडिया	१३००,
वच्छावत	१
वडहरा (वडहिरा)	५४५,९५७,२३६१,२८२२
वढाला	७२६

ज्ञाति गोत्र	लेखाङ्क
गोष्टिक .—	
गोहिल	३६८
उर० देच्छु	६००
जगडारवाड (दिगवर)	२२६०
जैंसवाल	६६४
डीसावाल (दिसावाल)	१६६५,१८७२, २७६३,२८२०
नरसिंहपुरा	
नागर गोत्र	१५५६
नागर	५७६,७०८,१०११,१०४५,११५२, १५७८,२३४३
नाटपेरा	२६३
वाइयाण	८३६
पापरीवाल	१५६४,१८०६,१८१०, २६११,२६१३,२६१४
पल्लीवाल	२५३,१५३६
प्राग्वाट्	६,६३,१६४,१८३,२१३,२३२, २४७,२४८,२५४,२५७,२५८,२६०,२६२,२६३, २७५,२८७,२८६,३०३,३०६,३४४,३५१,३५४, ३५७,३६३,३६५,३७४,३७६,४०६,४१६,४२६, ४३१,४४१,४४२,४५३,४५४,४५६,४६४,४६६, ४८०,४८५,४८६,४६४,४६७,४६६,५०४,५०५, ५०६,५०८,५१०,५११,५१३,५१६,५२०,५२३, ५२६,५२८,५२६,५३२,५४०,५४१,५४२,५४४, ५४६,५५१,५६०,५६२,५६३,५७०,५७१,५७२, ५८३,५८५,५८६,५८७,५८८,५८६,५६८,५६६, ६०१,६१०,६१३,६१६,६१८,६२१,६२३,६२४, ६२६,६२८,६३२,६३४,६३६,६३७,६४३,६४५, ६५१,६५७,६५६,६६६,६७०,६७१,६७४,६७५, ६७८,६८१,६८५,६८६,६६०,६६७,७०२,७०४, ७०६,७१५,७१७,७१६,७२०,७२१,७२२,७५०, ७५१,७५२,७५३,७५८,७६६,७७३,७८०,७८३, ७८५,७८६,७८६,७६२,८१७,८१६,८२२,८२७, ८३०,८३७,६३२,६३४,६३६,८४३,८४६,८५०, ८७५,८७६,८७७,८७६,८८१,६८३,८६२,८६४, ८६६,८६७,८६८,६२५,६४१,६४५,६४७,६४६, ६५०,६६१,६६७,६६१,१००१,१००७,१००६, १०१४,१०१५,१०२१,१०२३,१०२५,१०२६, १०२७,१०३२,१०३३,१०४२,१०४३,१०४४, १०५१,१०५०,१०५२,१०६६,१०६७,१०६८, १०७४,१०७७,१०७८,१०७६,१०८२,१०६०, १०६४,११०१,१११०,११२०,११२१,११२२, ११३०,११३३,११३७,११३६,११४०,१२१८, १२२५,१२४१,१२५३,१२५४,१२७४,१२७७, १२८२,१२८३,१३१६,१३३३,१३४१,१३४५, १३८६,१३६६,१४४१,१४७५,१५०२,१५०७, १५११,१५१३,१५३३,१५३६,१५३८,१५७७, १५८४,१६००,१६०४,१६०५,१६०८,१६२६, १६४६,१६६३,१६६६,१७५६,१७६६,१८१६, १८२८,१८८०,१८८१,१८६४,१६२७,१६३२, १६३८,२०३२,२१६६,२१८०,२१८२,२१८३, २२१७,२२३५,२२३६,२२३८,२२७६,२२७७, २२७८,२३४५,२३५०,२३५२,२४१०,२४७६, २४८२,२४६७,२५२६,२६७३,२७०६,२७४२, २७४६,२८१६
गोत्र—	
अवाई (वृद्ध शाखा)	१७५४
ठक्कर (ठ० ठकुर)	२६०,२६६,२६७,५५३
गाधी	२७२७
दोसी	२२८०,२३१८
पचाणेचा	६८८
लघु साजानक (लघु सताने)	१८७३,२५०४

ज्ञाति गोत्र	लेखाङ्क
गोष्टिक —	
गोहिल	३६८
उर० देच्छु	६००
जगडाख्वाड (दिगवर)	२२६०
जैसवाल	६६४
डीसावाल (दिसावाल)	१६६५,१८७२, २७६३,२८२०
नरसिंहपुरा	
नागर गोत्र	१५५६
नागर	५७६,७०८,१०११,१०४५,११५२, १५७८,२३४३
नाटपेरा	२६३
वाइयाण	८३६
पापरीवाल	१५६४,१८०६,१८१०, २६११,२६१३,२६१४
पल्लीवाल	२५३,१५३६
प्राग्वाट	६,६३,१६४,१८३,२१३,२३२, २४७,२४८,२५४,२५७,२५८,२६०,२६२,२६३, २७५,२८७,२८६,३०३,३०६,३४४,३५१,३५४, ३५७,३६३,३६५,३७४,३७६,४०६,४१६,४२६, ४३१,४४१,४४२,४५३,४५४,४५६,४६४,४६६, ४८०,४८५,४८६,४६४,४६७,४६६,५०४,५०५, ५०६,५०८,५१०,५११,५१३,५१६,५२०,५२३, ५२६,५२८,५२६,५३२,५४०,५४१,५४२,५४४, ५४६,५५१,५६०,५६२,५६३,५७०,५७१,५७२, ५८३,५८५,५८६,५८७,५८८,५८६,५६८,५६६, ६०१,६१०,६१३,६१६,६१८,६२१,६२३,६२४, ६२६,६२८,६३२,६३४,६३६,६३७,६४३,६४५, ६५१,६५७,६५६,६६६,६७०,६७१,६७४,६७५, ६७८,६८१,६८५,६८६,६६०,६६७,७०२,७०४, ७०६,७१५,७१७,७१६,७२०,७२१,७२२,७५०, ७५१,७५२,७५३,७५८,७६६,७७३,७८०,७८३, ७८५,७८६,७८६,७६२,८१७,८१६,८२२,८२७, ८३०,८३७,६३२,६३४,६३६,८४३,८४६,८५०, ८७५,८७६,८७७,८७६,८८१,६८३,८६२,८६४, ८६६,८६७,८६८,६२५,६४१,६४५,६४७,६४६, ६५०,६६१,६६७,६६१,१००१,१००७,१००६, १०१४,१०१५,१०२१,१०२३,१०२५,१०२६, १०२७,१०३२,१०३३,१०४२,१०४३,१०४४, १०५१,१०५०,१०५२,१०६६,१०६७,१०६८, १०७४,१०७७,१०७८,१०७६,१०८२,१०६०, १०६४,११०१,१११०,११२०,११२१,११२२, ११३०,११३३,११३७,११३६,११४०,१२१८, १२२५,१२४१,१२५३,१२५४,१२७४,१२७७, १२८२,१२८३,१३१६,१३३३,१३४१,१३४५, १३८६,१३६६,१४४१,१४७५,१५०२,१५०७, १५११,१५१३,१५३३,१५३६,१५३८,१५७७, १५८४,१६००,१६०४,१६०५,१६०८,१६२६, १६४६,१६६३,१६६६,१७५६,१७६६,१८१६, १८२८,१८८०,१८८१,१८६४,१६२७,१६३२, १६३८,२०३२,२१६६,२१८०,२१८२,२१८३, २२१७,२२३५,२२३६,२२३८,२२७६,२२७७, २२७८,२३४५,२३५०,२३५२,२४१०,२४७६, २४८२,२४६७,२५२६,२६७३,२७०६,२७४२, २७४६,२८१६
गोत्र—	
अवाई (वृद्ध शाखा)	१७५४
ठक्कर (ठ० ठकुर)	२६०,२६६,२६७,५५३
गाधी	२७२७
दोसी	२२८०,२३१८
पचाणेचा	६८८
लघु साजानक (लघु सताने)	१८७३,२५०४

ज्ञाति गोत्र — लेखाङ्क

गोष्टिक —

गोहिल ३९८

उर० देच्छु ९००

जगडाख्याउ (दिगवर) २२६०

जंसवाल ६९४

डोसावाल (दिसावाल) १६६५,१८७२,२७६३,२८२०

नरसिंहपुरा

नागर गोत्र १५५९

नागर ५७९,७०८,१०११,१०४५,११५२,१५७८,२३४३

नाटपेरा २९३

वाइयाण ८३९

पापरीवाल १५९४,१८०६,१८१०,२६११,२६१३,२६१४

पल्लीवाल २५३,१५३९

प्राग्वाट ६,६३,१६४,१८३,२१३,२३२,२४७,२४८,२५४,२५७,२५८,२६०,२६२,२६३,२७५,२८७,२८९,३०३,३०६,३४४,३५१,३५४,३५७,३६३,३६५,३७४,३७६,४०६,४१९,४२६,४३१,४४१,४४२,४५३,४५४,४५९,४६४,४६६,४८०,४८५,४८६,४९४,४९७,४९९,५०४,५०५,५०६,५०८,५१०,५११,५१३,५१६,५२०,५२३,५२६,५२८,५२९,५३२,५४०,५४१,५४२,५४४,५४९,५५१,५६०,५६२,५६३,५७०,५७१,५७२,५८३,५८५,५८६,५८७,५८८,५८९,५९८,५९९,६०१,६१०,६१३,६१६,६१८,६२१,६२३,६२४,

ज्ञाति गोत्र — लखाङ्क

६२६,६२८,६३२,६३४,६३६,६३७,६४३,६४५,६५१,६५७,६५८,६६९,६७०,६७१,६७४,६७५,६७८,६८१,६८५,६८६,६९०,६९७,७०२,७०४,७०६,७१५,७१७,७१९,७२०,७२१,७२२,७५०,७५१,७५२,७५३,७५८,७६९,७७३,७८०,७८३,७८५,७८६,७८९,७९२,८१७,८१९,८२२,८२७,८३०,८३७,९३२,९३४,९३६,८४३,८४९,८५०,८७५,८७६,८७७,८७९,८८१,९८३,८९२,८९४,८९६,८९७,८९८,९२५,९४१,९४५,९४७,९४९,९५०,९६१,९६७,९९१,१००१,१००७,१००९,१०१४,१०१५,१०२१,१०२३,१०२५,१०२६,१०२७,१०३२,१०३३,१०४२,१०४३,१०४४,१०५१,१०५०,१०५२,१०६६,१०६७,१०६८,१०७४,१०७७,१०७८,१०७९,१०८२,१०९०,१०९४,११०१,१११०,११२०,११२१,११२२,११३०,११३३,११३७,११३९,११४०,१२१८,१२२५,१२४१,१२५३,१२५४,१२७४,१२७७,१२८२,१२८३,१३१६,१३३३,१३४१,१३४५,१३८९,१३९६,१४४१,१४७५,१५०२,१५०७,१५११,१५१३,१५३३,१५३६,१५३८,१५७७,१५८४,१६००,१६०४,१६०५,१६०८,१६२९,१६४९,१६९३,१६९६,१७५६,१७६६,१८१९,१८२८,१८८०,१८८१,१८९४,१९२७,१९३२,१९३८,२०३२,२१६९,२१८०,२१८२,२१८३,२२१७,२२३५,२२३६,२२३८,२२७६,२२७७,२२७८,२३४५,२३५०,२३५२,२४१०,२४७६,२४८२,२४९७,२५२९,२६७३,२७०६,२७४२,२७४६,२८१९

गोत्र—

श्रवाई (वृद्ध शाखा) १७५४

ठक्कर (ठ० ठकुर) २६०,२६६,२६७,५५३

गाधी २७२७

दोसी २२८०,२३१८

पचाणेचा ९८८

लघु साजानक (लघु सताने) १८७३,२५०४

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४७१	सर्वाणंदसूरि	१८८१
१४७२		६५६
१४७४		६७५
१४७७		६६
१४९३		७७
१४९४		७८
१५ ३	विद्यासागरसूरि	२४१
१५१६	गुणसागरसूरि	१ १५
१५२१	विजयप्रभसूरि	१ २३१ २७१ २६
१५२५		१ ४४ २३५२
१५३४		१७६५
१५३		१ ६६
१५३२		४९७ १ ७४
१५५१	विजयराजसूरि	११२१
	कृष्णर्षि (कमरिस) गच्छ तपापक्ष	
१४५	पुष्पप्रभसूरि	५५८
१४८३	प्रसन्नचन्द्रसूरि	७२४
१४८३	नयचन्द्रसूरि	७२४
१४८८	"	१३४१
१५१४		१३७८
१५ ५	नयशेखरसूरि	८६
१५१	कमलचन्द्रसूरि	१२११
१५३४	जयचंद्रसूरि	१५७८
१४८६	धर्मसिंहसूरि	७०४
१५ ५		८६
१५१		१२११
१५३२		१ ७५
१५६५		२५१४
१५८५	जयशेखरसूरि	२१२६
	कासहृद (कासद्र) गच्छ	
१३४६	कासहृद गच्छ	२१
१४७२	उद्योतनसूरि	६६१
	कालिकाचार्य संताने	
१४६६	वीरसूरि	२४९४

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	कोरंटक (कोरंट, कोरिंटक, कोरंटकीय गच्छ)	
१३४५		२०१
१५ ७		६१
१४ ६	कक्कसूरि	४ ८४ ६
१४११		४२७
१४१४		४३१
१४२८		४६
१४७२		६३१
१४७५		६७६
१४८		६६६
१४८६		७३१ १२६६
१४८७		२३४४
१४९६		१८९३
१५ ३	"	८६८
१५१७	"	२४४२
१५२८		१ ५६
१३७३	नन्नसूरि	२५५
१३७५		२६८
१३८२		२९३
१३८४		१ २
१३८६		३३६
१३९		३३८
१४५६		५६९
१४६५		६१४
१४८६		७३३ १२९९
१५५१		५५९
	नन्नाचार्य	१ ५६
१४९९	सावदेवसूरि	८११
१४२२	कक्कसूरि	४४८
१५१२	सर्वदेवसूरि	११२९
		११९
१४१९	सावदेवसूरि	५१७
१४९५	"	७८१
१४९६	"	१८९३
१५ ३	"	८६८

परिशिष्ट—च

आचार्यों के गच्छ और संवत की सूची

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	अंचल गच्छ	
१४१८	·ीसूरि	२०५१
१४४८	मेरुतुंगसूरि	४६७,४६८
१४५७	,,	५०६
१४६८	,,	१५८८
१४६९	,,	६४६
१४७६	जयकीर्तिसूरि	६७९
१४८९	,,	७४२
१४९५	,,	१९५९
१४९८	,,	८०२
१५०१	,,	८५५
१५०२	जयकेसरसूरि	२८२६
१५०४	,,	८८४
१५०८	,,	९२६,२८७३
१५०९	,,	९२९,९३१,९३४
१५१०	,,	९३६
१५१२	,,	९५७
१५१३	,,	९७९
१५१५	,,	९८९
१५१८	,,	१०११
१५१९	,,	१२१५,२३६१
१५२५	,,	१०४५
१५२७	,,	२८२२
१५२९	,,	१३०३
१५३१	,,	२३४३
१५३५	,,	२७४४
१५३६	,,	१५५५
१४७१	(?),,	६५५
१५५६	सिद्धान्तसागरसूरि	१८१६
१५६७	भावसग (?) सूरि	११३२
१७०१	पुण्यनन्दि उ०	१३९३
,,	भानुनन्दि उ०	१३९३
,,	·ानानगणि	१३९३
१७१०	कल्याणसागरसूरि	१७३२
	आगम गच्छ	
१४२१	अभयसिंहसूरि	१९३६
१४८८	हेमरत्न सूरि	७
१४९२	,,	७६३
१५०३	,,	८७८
१५०६	,,	१३२६
१५१२	,,	२७७५
१५२१	,,	१०२२
१५१६	देवरत्नसूरि	१५१३,१७६१
१५१७	,,	२४०८
१५३०	अमररत्नसूरि	१५८२
१५९९	सयमरगसूरि	१५७७
१५९९	विनयमेरुसूरि	१५७७
	उढव (अउढवीय, अत्रढवीय?, ओत्रवी) गच्छ	
१२९६	देववीरसूरि	१०८
१४०९	वयरसेणसूरि	४२२
१४५३	श्रीसूरि	५६२
१४४६	कमलचन्द्रसूरि	५५१
१५०२	वीरचन्द्रसूरि	८५९
	उवडवेल्य	
	माणिक्यसूरि	३४५
१३९१	वयरसेनसूरि	३४५
	उपकेश (उएस, ऊकेश, कवला) गच्छ	
१३१४	ककसूरि	१३६७
१३२७	,,	१७१

संवत्	नाम	लेखांक
		१६१४ १८८२ २१६३ २१७५,
		२२१८ २२४६,२२४६,२४८४
		२४८७ २६६७ २७ २७ २
		२७०१ २७११ २७२५,
		२७२६,२७३८ २७४८ २७५
		२७५३ २७६३ २७८ २७८१
		२७८२ २७८४ २७९१ २७९६,
		२८०१ २८ ७ २८ ८ २८१
१५१५	जिनधर्मसूरि (५)	९८६ ९८७ ९९३
		२७१४
१५१६		९९१ २२४६,२७५ २७५१
१५१८		१ १२ १६८२,२६८२ २६८४
		२६८५,२६८६,२६९ २६९७
		२७ २७ २ २७ ३ २७२
१५१९		२४८४
१५२१	"	१७११ २१५५
१५२४		४५५ १ ३६ १८११ १८१४
		२६१४ २१५६ २४४७ २५४
१५२८		१ ५८ १२२७ १८७४ २१७५ २४८७
१५३		१ ६५
१५३४		११ ८५,१ ८६,१ ८७ १ ८८
		१२५८ १८८६,२३४९
१५३५		१ २५,११ ११ २ ११ ४
		१२५७ १२६६ १४०४ १५ ८
		१५५४ १६२५ १८१७ १९९
		२०११ २०१५,२०२४ २०२५
		२०२६ २०३१ २०३८ २०४८
		२०८ २०८१ २०८२ २०८४
		२०८५ २०९२ २०९४ २०९६
		२८ १ २८ १ २८ ७ २८ ८
		२८१ २८११
		१८ ११६६,११४८ ११५६,
		२१६६,२२१८ २३६७ २७५२
१५३४	जिनसमुद्रसूरि	२३४८
१५३५		२७२५,२७४८ २७८२ २८१

संवत्	नाम	लेखांक
१५४९	जिनसमुद्रसूरि	११२६ ११२५,२२१२
		१८ ११२८ १५३२ ११६८
		१६६७ १७२१ १६४८ १६४६,
		२२२१ २६७५,२७१७ २७३७
१५५७	जिनहंससूरि	११२८
१५६		११६८ १५२८
१५६१		१६६७
१५६३		१५०४ १७२६ २२२१ २५१२
१५६६		४
१५६८		२७०४
१५७		१५३२ १६४८ १६४६
१५७२	"	१२८
१५७५		११४१ २६८१
१५७६		१५ १५८ १६९६,२ ०५
		२१९३ २७१७ २७१३
१५७८		२७१७
१५७९		१६८१
१५८	"	२७२३
१५८१		१८७८
		२७८ ५ १८ ४२,१६५ २११७
		२५ २७८३ १७५३
१५८२	जिनमाणिक्यसूरि	११४१ २१७२
१५८७		२१६२ २५ २१७५
१५८९		११५
१५९१	"	२ ४
१५९३	"	२७ २८ १२ १४ १६,१७ १८४
		४१ ४२ ४४ ४५,११६१ १७५१
		२१८३
१५९५		५
१६ २	"	११५२
१६०१		२७८३
१६ १	"	१८ १४११
१६ ८		२१८७
	"	११५४ १२५६,१६६१ १६६६,
		१४ १४ ११४ २ १४ ३
		१४ ५ १४ ६ १४ ७ १४ ८

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१३९४	पानशालि(?) सूरि	३६४
१४२०	रत्नप्रभसूरि	४४४
१३४७	सिद्धसूरि	२०४
१३५४	,,	२१७
३४६(०)	,,	२३४८
१३८५	,,	३०७
१४३२	,,	५०२
१४४०	,,	५४१
११७३	,,	१३६४
१४७६	,,	६८३
१४७७	,,	२७४३
१४८२	,,	७१२,७१३
१४८५	,,	२७७२
१४८६	,,	१२०५
१४८७	,,	१४७३
१४९१	,,	२३७७
१४९२	,,	७५६
१४९५	,,	७८२
१५२३	,,	१५०३
१५३२	,,	१०७१
१५३४	,,	१०९०
१५७६	,,	१२२९
१५९३	,,	१२७२,२२३७
१५९४	,,	२१६१
१५९६	,,	१६०३
१६८९	,,	२१३६
१७८३	,,	२१४०
१८०५	,,	२१४२
१८९०	,,	२१४६
•	,,	१७१,१८९,२१४७,२१४८
	सिद्धाचार्य स०	५०२,६२६,८७०,९२५, १०५५,१०७१,१०९०, ११०५,१३४०,१३४३, १३६४,१३६७,१६०३, २३३८

उपकेश गच्छीय यति नाम

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१६६३	अचलसमुद्र	२१३३
१७६३	अमीपाल	२१३९
१७६३	आणदकलश	२१३७,२१३९
१९१५	आणदसुन्दर	२१४९
१९१८	,,	२१५१
१८३८	उदयसुन्दर	२१४३
१७९५	कल्याणसुन्दर	२५५४
१९१८	खूबसुन्दर	२१५१
१९६३	खेतसी	२१३९
१८९१	जयसुन्दर	२१४७
१६६३	तिहुणा	२१३४
१६६४	,,	२१३५
	दयाकलश	२१३७
१५६६	देवसागर	२१३१
१७९५	भामसुन्दर मुनि	२५५४
१८९१	मतिसुन्दर	२१४७,२१४८
१६८९	रत्नकलश	२१३६
१६६४	राणा	२१३५
१७९५	लब्धिसुन्दर	२५५४
१८६०	वखतसुन्दर	२१४५
१६३८	वस्ता	२१३२
१६६३	,,	२१३४
१६६३	विनयसमुद्र	२१३३
१६३६	सोमकलश	२१३२
१८०५	क्षमासुन्दर	२१४२
	,,	२१४३,२१४७,२१४८

आवौकेशगच्छ-पूर्व नागेन्द्र गच्छ

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१४४५	कक्कसूरि	५५०

खरतपा गच्छ—उएश गच्छ

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१५०७	कक्कसूरि	१६३६
१५२८	सिद्धसेनसूरि	१०५५

कच्छोलीवाल (कच्छोइया) पूर्णिमादक्ष

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१४४६	श्रीसूरि	[illegible]

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५१७	सावदेव सूरि	२४४२
१५१८	"	१०१०
१५२३	"	१०३०
१५२८	"	१०५६
१५०७	सोमदेवसूरि	९२२

खरतर गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६९५	खरतर गच्छ	१४२०
१७३५	"	२२००
	उद्योतनसूरि	१२३४,१२३५,१२३६
	वर्द्धमानसूरि	१२३४,१२३५,१२३६
	जिनेश्वरसूरि	१३९९
	जिनचन्द्रसूरि (१)	१३९९
	अभयदेवसूरि	१३९९
	जिनवल्लभसूरि	१३९९
	जिनदत्तसूरि	१३९९
११८१	"	२१८३
	जिनपतिसूरि	१४२,१४३,१४४,१४५
१३०५	जिनेश्वरसूरि	१४२,१४३,१४४,१४५
	जिनप्रबोधसूरि	२२५,१३५७
१३४६	जिनचन्द्रसूरि (३)	२२५,१३५७
	जिनचन्द्रसूरि (३)	१३१२,१७६७
१३८०	जिनकुशलसूरि	१,२ख,
१३८१	"	१३१२
१३८३	"	१७६७
१३८४	"	२९९
	"	१४,४८२,१७९३
१४०८	जिनचन्द्रसूरि (४)	४१७
	"	४७३,२७६८
१४२२	जिनोदयसूरि	२१६२
१४२७	"	४८२
	"	१७१७,२८५३
१४३४	जिनराजसूरि (१)	५१४
१४३८	"	५३५
१४५२	"	१७१७
१४५३	"	५६१

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४५९	जिनराजसूरि	२७७०
	"	७८८,८४७,९१५,९१६,१२७३,१४३६,१४४३,१७१८,१७६२,१७६८,१८२३,१८४३,१८९५,१९८०,२३८५,२६२३,२६२६,२६९२,२७८१,२८२३,२८१५
१४७३	जिनभद्रसूरि	२६३३,२६४२,२६४३,२६४४
१४७९	"	२६२३,२८१५
१४८०	"	६९८
१४८४	"	२६९२
१४८८	"	१२७३
१४९३	"	७७१,१४३७,१४७६,२३८५,२६७४,२७६९
१४९६	"	७८८
१४९७	"	२२९९,२६९३,२६९४,२६९६,२६९८,२७४९
१४९८	"	८०१,८०५
१५०१	"	८४७
१५०२	"	८६४
१५०५	"	८९३,१२८४,२६९१
१५०६	"	२६६८,२६९५
१५०७	"	९१५,९१६,१३२१,१४३६
१५०	"	१४४३
१५०९	"	१२११,१७१८,१८२३,१८४३,१८९०,१८९५,२८२३
१५१०	"	९३५
१५१२	"	९५८,१७६२,१९९१
१५१३	"	९६३,९६६,९७०,९७१,९७२
	"	३,१८,९८४,९८६,९८७,९९३,९९९,१००८,१०१२,१०६६,१०५८,१०८५,१०८६,१०८७,१०९५,११००,११०३,११०४,१२५७,१२५८,१२९७,१४७४,१५०८,१५५४,१६९५,१७९३,१८१७,१८१४,१८७४,१९१०,१९३०,

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५१७	सावदेव सूरि	२४४२
१५१८	,,	१०१०
१५२३	,,	१०३०
१५२८	,,	१०५६
१५०७	सोमदेवसूरि	९२२

खरतर गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६९५	खरतर गच्छ	१४२०
१७३५	,,	२२००
	उद्योतनसूरि	१२३४,१२३५,१२३६
	वर्द्धमानसूरि	१२३४,१२३५,१२३६
	जिनेश्वरसूरि	१३९९
	जिनचन्द्रसूरि (१)	१३९९
	अभयदेवसूरि	१३९९
	जिनवल्लभसूरि	१३९९
	जिनदत्तसूरि	१३९९
११८१	,,	२१८३
	जिनपतिसूरि	१४२,१४३,१४४,१४५
१३०५	जिनेश्वरसूरि	१४२,१४३,१४४,१४५
	जिनप्रबोधसूरि	२२५,१३५७
१३४६	जिनचन्द्रसूरि (३)	२२५,१३५७
	जिनचन्द्रसूरि (३)	१३१२,१७६७
१३८०	जिनकुशलसूरि	१,२ख,
१३८१	,,	१३१२
१३८३	,,	१७६७
१३८४	,,	२९९
	,,	१४,४८२,१७९३
१४०८	जिनचन्द्रसूरि (४)	४१७
	,,	४७३,२७६८
१४२२	जिनोदयसूरि	२१६२
१४२७	,,	४८२
	,,	१७१७,२८५३
१४३४	जिनराजसूरि (१)	५१४
१४३८	,,	५३५
१४५२	,,	१७१७
१४५३	,,	५६१

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४५९	जिनराजसूरि	२७७०
	,,	७८८,८४७,९१५,९१६,१२७३
		१४३६,१४४३,१७१८,१७६२,
		१७६८,१८२३,१८४३,१८९५,
		१९८०,२३८५,२६२३,२६२६,
		२६९२,२७८१,२८२३,२८१५
१४७३	जिनभद्रसूरि	२६३३,२६४२,२६४३, २६४४
१४७९	,,	२६२३,२८१५
१४८०	,,	६९८
१४८४	,,	२६९२
१४८८	,,	१२७३
१४९३	,,	७७१,१४३७,१४७६,२३८५, २६७४,२७६९
		७८८
१४९६	,,	
१४९७	,,	२२९९,२६९३,२६९४,२६९६
		२६९८,२७४९
		८०१,८०५
१४९८	,,	
		८४७
१५०१	,,	
		८६४
१५०२	,,	
		८९३,१२८४,२६९१
१५०५	,,	
		२६६८,२६९५
१५०६	,,	
१५०७	,,	९१५,९१६,१३२१,१४३६
		१४४३
१५०	,,	
१५०९	,,	१२११,१७१८,१८२३,१८४३,
		१८९०,१८९५,२८२३
		९३५
१५१०	,,	
१५१२	,,	९५८,१७६२,१९९१
१५१३	,,	९६३,९६६,९७०,९७१,९७२
	,,	३,१८,९८४,९८६,९८७,९९३,
		९९९,१००८,१०१२,१०६६,१०५८
		१०८५,१०८६,१०८७,१०९५,
		११००,११०३,११०४,१२५७,
		१२५८,१२९७,१४७४,१५०८,
		१५५४,१६९५,१७६३,१८१७,
		१८१४,१८७४,१९१०,१९३०,

संवत्	नाम	लेखाङ्क
		१४०९,१४१०,१४११,१४१२,
		१४१३,१४१६,१४५०,१४६२,
		१४९३,१४९४,१४९७,१५३१,
		१६५६,१७१३,१७२३,१७२४,
		१७२५,१७८६,२०३५,२३८७,
		२६७७
१६१२	जिनचन्द्रसूरि (६)	२६७७
१६१६	"	१८९१,१९२६
१६१८	"	१९४२
१६२२	"	१३९१
१६२५	"	२७०७
१६३८	"	१८३२
१६५२	"	११५३
१६६१	"	१६२४
१६६२	"	१३९९,१४००,१४०१,१४०२
		१४०३,१४०४,१४०५,१४०६,
		१४०७,१४०८,१४०९,१४१०,
		१४११,१४१२,१४१३,१४१४,
		१४५०,१४६३,१४९३,१७१३,
		१७७१
१६६४	"	११५४,१२५९,१५३१
	"	५५,१७२३,१७२४,१७२५,
		२०३५,२२८७,२८६७
१६६२	जिनसिंहसूरि	१३९९,१४००,१४०१,
		१४०२,१४०८
.	"	१४२७,१७२३,२०५६,२३९९
१६७५	जिनराजसूरि (२)	२८७८
१६८५	"	१४६०
१६८६	"	१४२४,१४२५,१४६१,१४७२,
१६८७	"	१४२६,१४२७,१४२८,१४२९
१६९०	"	१४२३,१४६२
१६९४	"	१४१५,१४१७
१६९९	"	१८२२
..	"	१४९५,२५०८,२८६८,
		२८७६,२८८०

संवत्	नाम	लेखाङ्क
.	जिनचन्द्रसूरि (७)	२५५२
..	जिनसुखसूरि	२४००,२४५९
१७८०	जिनभक्तिसूरि	२४५९
१८०४	"	२८४३
...	"	२८४१
१८११	जिनलाभसूरि	२५५५
१८२०	"	२५१५
१८२७	"	१५२५
१८२८	"	१९८४
१८२९	"	१४९०
१८३१	"	२२६४
	"	२२०२,२८४१,२८६०
१८३९	जिनचन्द्रसूरि (८)	१०
१८४०	"	२८६०
१८४९	"	२२९७
१८५०	"	१३८४,२४१७,२४०४
१८५१	"	२४१८
१८५२	"	२८४१,२८४२
	"	११७२,११७३,११७४,
		११७५,१९३५,१७२२,२२१२,
		२५१६,२८६४,२८५९
१८५८	जिनहर्षसूरि	२१०४,२१०५
१८६०	"	२११४,२२१३
१८६१	"	२२१२,२२३०
१८६५	"	२४२१,२५११,२८६९
१८६६	"	१९६५
१८७१	"	१७२२
१८७९	"	२२९९,२३००,२३०५
१८८१	,	२३०४,२५१६
१८८२	"	२२८६
१८८५	"	२२५८
१८८६	"	१९१८
१८८७	"	११७२,११७३,११७४,११७५,
		११७७,११८०,११८६,१४१८
		१६४१,१६६७,१९२२,२२५६

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१८११	मुक्तिकल्लोल	२५५५
१८११	मुक्तिसेन	२५५५
१८११	रत्नशेखर महो	२५५५
१९५४	ऋद्धिसार (रामलालजी) मुनि	२५५१
१९७७	रामलाल गणि उ	२१ १
१९१७	रामऋद्धिसार गणि	१९१८ २०
१८११	ऋद्धिरत्न	२५५५
१८११	रूपचन्द्र गणि	२५५५
१८११	लक्ष्मीसुख	२५५५
१७६२	सत्यरत्न	२४११
१८११	हस्तरत्न गणि	२५५५
१९५४	हेमप्रिय मुनि	२५५१

लघुखरतर (जिनप्रभसूरि परंपरा)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४११	जिनचंद्रसूरि	२४११
१५१	जिनतिलकसूरि	१२२८
१५५९	जिनराजसूरि	२४८९
		११९४
१५६७	जिनचंद्रसूरि	११९४

वेगड़-खरतर शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४२५	जिनेश्वर सूरि	४७१
१४२७		२७६८
१४१८		५१८
	जिनशेखरसूरि	२७४१ २८२४
१५ ९	जिनधर्मसूरि	२७४१
१५११	"	२८२४
१४११	"	२७४
१५ १		१९५८ २७१९
१५ ४	"	८८१

पिप्पलक खरतर शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४११	जिनवर्द्धनसूरि	२२९९
१४९९	"	१४७ १४८ १५२
१४७१	" ४६,११५,११५	२१२६,२१५८
१४७८		१७६८
	"	२६७१
	जिनचंद्रसूरि	१७१८

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४९१	जिनसागरसूरि	१२११ ७५५
१४९४		७७८
१५ २		१५८१ ८११
१५ ७		१२७९
१५ ९	"	११४२,१७१४
		८२१ ९५२ १५५६,११११
१५११	जिनसुंदरसूरि	९५२
१५११		९१५,११२०
१५१५	"	९८८
	"	१५५१
१५२१	जिनहर्षसूरि	१५५१
१५२७		१ ४९,२१८
१५४२		११ ५
१५५१		१११९
१५५९	"	११५९
		११ ८

आद्यपक्षीय-खरतर शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१७११	जिनहर्षसूरि	११११

लघु खरतराचार्य शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	जिनसागरसूरि	१८ ५,२१११
१७१	जिनधर्मसूरि	५४
		५१ १७००
१७८१	जिनचंद्रसूरि	२८७१
		२ ५७
१७९४	जिनविजयसूरि	२ ५७
	"	२८११ २८१२
	जिनकीर्त्तिसूरि	२ १५
१८२१	जिनयुक्तिसूरि	२ १५
		२८१२
१८२५	जिनचंद्रसूरि	२८११ २८१२
१८४५	"	२५४१
		१७९५,१७९६,१७९८ १७९९,
		१८ ०१८ १२ १८ २८११
१८८१	जिनोदयसूरि	२८११
१८८२		२८५४

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	खरतर यति मुनि नाम	
१९३०	अगरचन्द्र मुनि	२८४६
१९३९	,,	२८४७
१९१९	अमीरजी मुनि	२४३८
१८६१	अभयविलास	२२३०
१९४३	अभयसिंह	२०४४
१८७९	अभयसोम	२८६४
१६४०	अमरमाणिक्य वाचक	१५
१९५१	अमरविजय पाठक	२५५२
१८५२	अमृतधर्म वा०	२८४१,२८४२
१९१८	अमृतवर्द्धन मुनि	२०६२
१८९०	आणंदवल्लभ गणि	२२४२
१९३३	आणंदसोम	२४२७
१९४०	,,	२४२३
१९८८	आणंदसागर जी वीरपुत्र	१६७४
१९१९	आसकरण मुनि	२४३८
१६७४	उदयसंघ	२८६७
१५१८	उत्तमलाभ गणि	२६९७,२७०२
१५३६	,,	२७३८
१९४३	उदयपद्म मुनि	२०९३,२२९२
१७५६	उदयतिलक गणि उ०	१४६९
(१९५१)	,,	२५५२
१७८१	उदयभाण	२८७५
१९१९	कचरमल मुनि	२४३८
(१७५२)	कनककुमार गणि उ०	२४७२
(१६८७)	कनकचन्द्र गणि	१९७०
(१६५४)	कनकरंग गणि	१६६७
१९५३	कपूरचन्द्र मुनि	२०९४
१५१८	कमलराज गणि	२६९७,२७०२
१५३६	,,	२७३८,२७८१
(१५९७)	कमलसंयम महो	१६
१८५६	कमलसागर गणि	२०९५
१७११	कमल (हर्ष) वा०	२५०८
१७३२	कल्याणविजय उ०	२११२
१८८८	कल्याणसागर	२३०७
१९३६	कल्याणनिधान उ०	२२९०
१९७०	कल्याणनिधान महो,	२०७१
१९३५	कीर्तिनिधान मुनि	२०६६
	कीर्तिसमुद्र मुनि	२४२६
१७६२	कीर्तिसुन्दर गणि	२०५४
(१७७१)	कुशलकमल मुनि	२०६९
१८६१	कुशलकल्याण वा०	२२१२,२२१६
(१८६२)	,,	२०८९
१९७०	कुशल मुनि	२०७१
१९१९	केवलजी मुनि	२४३८
१८५२	क्षमाकल्याण उ०	२८४१,२८४२,२८४३,२८४४
१८६१	,,	११७०,११७२,१५४०,२२१२
१८६६	,,	१९६५
१८६८	,,	२२२८
१८७०	,,	१९५५
१८७१	,,	१४५४,१९२५,१९५३
१८७२	,,	१९५४
	,,	१७९१,२०४१,२२२९
१८५९	क्षमामाणिक्य उ०	२५५०
(१९३१)	क्षमासागर मुनि	२०४३
	खेममंडन मुनि	२४२४
(१६७२)	गजसार गणि	२४६२
	गुणकल्याण वा०	२०८०
१९४३	गुणदत्त मुनि	२०४४
१९१४	गुणनन्दन गणि	२४६५
(१९३३)	गुणप्रमोद मुनि	२४२४
१५३६	गुणरत्नाचार्य	२७८१,२७८२
(१८०८)	गुणसुन्दर महो०	२४७३
(१८५६)	,,	२०९५
१९१९	गुमान मुनि	२४३८
१९१९	गुलाब जी मुनि	२४३८
१९१९	गोपी मुनि	२४३८
१९६१	ज्ञाननिधान मुनि	२१०३
१८७९	ज्ञानानन्द मुनि	१२८९
	,,	२४२६

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१९५७	,, उ०	२२९१
(१९७०-७२)	,,	२०८३
१९३०	मेघराज	२८४६
१९६५	मोहनलाल गणि	२२५०
१९५८	,,	१६८६,२५५६
(१९३३)	यशराज मुनि	२४२७
(१८)७८	युक्तिधर्म	२०८०
१८७५	रत्ननिधान	२१०१
(१९२७)	रत्नमदिर गणि	२०५५
१४९७	रत्नमूर्त्ति वा०	२६९९,२६९८
१५०६	,,	२६६८
१६९९	रत्नसोम	१८२२
१८६५	रामचद्र	२८६९
(१९३६)	,, गणि	२२९३
(१८७२)	राजप्रिय गणि वा०	२०४६
१९२८	राजमदिर मुनि	२८५०
(१७९२)	राजलाभ वा०	२५०६
(१९३३)	राजशेखर मुनि	२४२५
(१७९२)	राजसुदर वा०	२५०६
१९२०	राजसुख मुनि	२४३८
१९१९	राजसोम	२५२१
१९८१–६	ऋद्विकरणयति	२४०६
१९१९	रूपजी मुनि	२४३८
(१७०९)	रूपाजी प०	१९६९
१९१९	लछमण गणि	२४३८
१८२०	लक्ष्मीचद यति	२५५१
(१९१४)	लक्ष्मीधर्म मुनि	२०९०
१९१२	लक्ष्मीप्रधान मुनि	२०८६
१९२४	,,	२२
१९३५	,, उ०	२२९५
१९५१	,,	२५५२
...	,,	२०८३,२०८४,२२०६,२२९१
(१८७२)	लक्ष्मीप्रभ वा०	२०४७
१८६४	लक्ष्मीराज गणि	२८६९
१७०८	ललितकीर्ति उ०	२५१७

सवत्	नाम	लेखाङ्क
(१९५१)	लाभकुशल गणि	२५५२
(१८३६)	लाभकुशल गणि	२०८१
१९१९	लाभशेखर मुनि	२५२१
१८५२	लालचद्र गणि	२२२७,२२४०
१८५३	,,	१९१४
१८५५	,,	१७९२
१८३९	लावण्यकमल	१०
१६०३	विजयराज मुनि	२७८३
(१७५४)	विजयहर्ष गणि	१४७०
१८९७	विजेचद	२३८०
(१८७५)	विद्याप्रिय गणि	२१०१
(१७४९)	विद्याविजय	५५
...	विद्याविशाल	२२,२०८६,२५५२
१८५९	विद्याहेम वा०	२५५०
१८९४	विनेचद	२२५२
(१७१३)	विनयमेरु	१४६८
(१७४९)	विनयविशाल	५५
(१९५१)	विनयहेम	२५५२
१९३६	विवेकलब्धि मुनि	२२९०
१८५२	विवेकविजय	२८४१
१९७६	वृद्धिचद मुनि	२८८८
१९८०	,,	२८१३,२८१४
(१९११)	शातिसमुद्र गणि	२४००
१७८४	शातिसोम	२१०९
१९१९	शिवलाल मुनि	२४३८
१५३६	शिवशेखर गणि	२७३८
	सकलचद्र गणि	२२८७
१८६४	सत्यमूर्त्ति गणि	२८७१
(१८६१)	सत्य गणि	२१०३
१६७४	सदारग मुनि	२८६७
(१९०४)	सदारग	२३२२
१५३६	समयभक्तोपाध्याय	२७८२
१६७४	समयकीर्त्ति गणि	२८६७
१६५७	समयराजोपाध्याय	१६५६
१६६२	,,	१३९१,१४००,१४०१, १४०२,१४०८,१७२३

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५१३	साधुरत्नसूरि	११५१ २४६५
१५१७	"	१ ०४
	साधदेवसूरि	२७७
११७८	सोमचंद्रसूरि	४७७
	नाइल (नायल) गच्छ	
११	देवचंद्रसूरि	१४
		१६१
	रत्नसिंहसूरि	७१२
१४८६	पद्मानंदसूरि	७१२
	नागर गच्छ	
१४५७	प्रद्युम्नसूरि	५७६
	नागेन्द्र गच्छ	
	देवचंद्राचार्य	५८
११८५	देवाणंदसूरि	१ ८
	नागेन्द्रसूरि	४१६
१४०८	गुणाकरसूरि	४१६
	गुणदेवसूरि	२७६६
	गुणसागरसूरि	१२५५
१४९९	गुणसमुद्रसूरि	११२७
१५ ५	"	८८६ ८६१ १२५५
१४२४	रत्नाकरसूरि	४६
१५२७	विनयप्रभसूरि	१ ५१
	सोमरत्नसूरि	१ ५१
१५६६	हेमरत्नसूरि (पाटणेचा)	२४१२
१५७१	हेमसिंहसूरि	१५६
	नाणकीय (नाणक नाणग नाण नाणउर, ज्ञानकीय नाणावाल) गच्छ	
	नाण गच्छ	८१ १
११८२	नाणक गच्छ	२६४
१२ १		१२१
१५ १	नाणकीय गच्छ	८७२ ८७४
१३११	धनेश्वरसूरि	१५
१३२१	"	११६५
१३२९	धनेश्वरसूरि	११७
१४ ८		४११ ४१८
१४ ९		४२१
१४२२	"	४५०
१४२१		४५५
१४२६		४०६,४०८
१४२८		४ ९
१४३४		५१२
१४७४	"	६७२
१४८५	"	७२७
१५२१	"	१०२०
१५२२	"	१ २८
१५३५		२२७१
१५३६	"	१९ ९
१५४१		११ ९
१५४८		१८१४
१५५९	"	१८२०
१३१९	महेन्द्रसूरि	१९२
१४१६		५२१
१४५९		५९४
१४६४	"	६ ९
१४६५		६१६
१४६९		६४२
१५५९	"	१८२
१५७४	शांतिसागरसूरि	१२११
१३४७	शांतिसूरि	२ ५
१३४९	"	२११
१३५४	"	२१६
१४ ६		४२१
१४७१		६६७ ६६८
१४८७	"	७१७
१४८९	"	७४६
१४९२		७६ ७११ ७१२
१४९४	"	७७५
१४९५	"	२२५९७८४
१४९७	"	७९१

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१८७१	उदयरत्न गणि	२१०६
(१९०९)	,,	२११५
	कीर्त्तिरत्नसूरि	२२९९,२६८५,२६८६,२६९७
	कीर्त्तिराज	२२९९
१९३३	कल्याणसागर	२२९६
१८७९	कातिरत्न गणि	२२९९,२३०५
(१९०५)	,,	२२९८
१९३३	कीर्त्तिधर्म मुनि	२२९६
१८५८	क्षमामाणिक्य उ०	२१८४
१९२६	गजविनय मुनि	१९८९
१८८१	जयकीर्त्ति गणि	२३०४
(१९२४)	,,	१९७५,२५४७
१८५८	जिनजय वा०	२१०४
१९२३	दानविशाल	२३०२
१९०९	दानशेखर	२१०८
(१९२३)	,,	२०८७
१९५७	नयभद्र मुनि	२२८६,२०७६
१९२४	प्रतापसौभाग्य मुनि	१९७५,२५४७
१८९९	भावविजय उ०	२३७९
१८७९	भावहर्ष गणि	२२९९
१८७१	मयाप्रमोद	२१०६
(१८७८)	,, वा०	२१०७
१८६७	महिमारुचि	२५०७
१८७९	महिमहेम	२२९९
१८२५	माणिक्यमूर्त्ति महो०	२२९९,२४६४
१९२६	युक्तिअमृत	१९८७
१९०९	लब्धिविलास मुनि	२१०८
१९०९	लक्ष्मीमदिर	२११५
१९१७	लाभशेखर	२५२५
१९२३	वृद्धिशेखर मुनि	२०५८
१८५८	विद्याहेम वा०	२१०४,२१०५
१८७१	,,	२१०६
१९३६	सदाकमल मुनि	२५०६
१९२४	समुद्रसोम मुनि	१९७५
१९२६	,,	१९८६,१९८८,१९८९
१९२६	सुमतिजय मुनि	१९८७
१९२४	सुमतिविशाल	१९७५,२५४७
१९२६	,,	१९८६
१९३३	हितकमल मुनि	२२९६
१९३८	,,	२११७
१९५७	हेमकीर्त्ति मुनि	२०७६,२२८९

सागरचन्द्र सूरि शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१७५५	अभयमाणिक्य गणि	२४१४
१८९५	ईश्वरसिंह	२५४१
१८८१	उदयरग मुनि	२५१६
१८९१	कीर्ति समुद्र मुनि	२४२२
१८९१	गुणप्रमोद मुनि	२४२०
१८९१	चद्रविजय	२४२०
१९६५	चद्रसोम	२२३१
१८९५	चतुरनिधान	२५४१
१८६५	चारित्रप्रमोद	२४२१
(१८९१)	चारित्रप्रमोद गणि	२४२२
१८६५	जयराज गणि	२४२१
१९६५	धर्मदत्त	२२३१
१८३७	पद्मकुशल	२०७०
१८८१	सुमतिधीर गणि	२५१६
१८९५	श्रीचद	२५४१
१७५५	हेमहर्ष गणि	२४१४

क्षेमकीर्त्तिशाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१७६२	कानजी	२४३३
१९५४	कुशलनिधान	२५५३
(१९९७)	,,	२०००
१९९७	खेमचद	,,
१८११	ज्ञातकल्लोल	२५५५
१८११	दीपकुजर	२५५५
(१९९७)	धर्मशील गणि	२०००
१९५४	,,	२५५३
१९९७	बालचद मुनि	२०००
१८११	महिमाराज	२५५५
१८११	महिमामूर्ति गणि	२५५५

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१८९२	जिनउदयसूरि	२३१५
१८९७	,,	१५९५,१७९४,१७९५,१७९६, १७९७,१७९८,१७९९,१८००, १८०१,१८०६,१९५१
	,,	२०५९,२३१६
१९०१	जिनहेमसूरि	२३१६
१९०३	,,	२८५८
१९०८	,,	२२७९
१९१०	,,	२३२३
१९१२	,,	१८६४,१८६६
१९२०	,,	१८०२,१८०३,२१७३
१९२४	,,	२३१०,२३११,२३१२
१९२५	,,	२११३
१९२७	,,	२०५५
	,,	२०६०
१९६४	जिनसिद्धिसूरि	२३१४
१९६७	,,	१८०४
	,,	२०९६

यति—मुनि गण —

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१८८१	अभयसोम गणि	२८६३
,,	ज्ञानकलश	२८६३
	चेतविशाल	२३१३
१८४५	जसवत गणि उ०	२५४३
१९१२	धर्मचद्र	२३१३
२०००	नेमिचद्र यति	२०९६
१८४५	पद्मसोम	२५४३
(१९२५)	मतिमदिर	२११३
१८४५	मलूकचद्र	२५४३
१७८१	माधवदास गणि	२८७५
१८८१	लब्धिधीर गणि	२८६३
(१९०२)	,,	२३१०
१९२५	वृद्धिचद्र	२११३
१९४१	विजैचद	२८६६
(१९१२)	विनयकलश उ०	२०६१
१७९८	हृपहस गुरु	२००७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१८८१	हर्षरग	२८६३
१९०२	,,	२३१०

जिनचद्रसूरि शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	महिमासेन मुनि	२०८५
	मेरुविजय मुनि	२०८२
१९२३	विनयप्रधान	२०८५
	विनयहेम गणि	२०९२

यतिनी

संवत्	नाम	लेखाङ्क
(१८९२)	इन्द्रध्वजमाला	२३१५
(१९३०)	ज्ञानश्री	२३१२
(१९२४)	ज्ञानमाला	२३११
(१९३०)	गुमानश्री	२३१२
१९२४	चनण श्री	२३११
	जयसिद्धि	५१
१८९२	धेनमाला	२३१५
(१९३०)	धेनमाला	२३१२
(१९६४)	नवलश्री	२३१४
(१७३०)	पुष्पमाला	५४
(१७३०)	प्रेममाला	५४
	भावसिद्धि	५१
(१७३०)	विनयमाला	५४

मण्डोवरा-खरतर (जयपुर) शाखा

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१९०१	जिनमहेन्द्रसूरि	२८४९
१९२८	जिनमुक्तिसूरि	२७०६,२७१९,२८५०
१९३०	,,	२८४६
१९३३	,,	२८५१
१९३९	,,	२८४७
१९४७	,,	२८५२

खीमाण गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४९३	मेरुतुगसूरि	७९९

गूदाऊ गच्छ (उदउ, गूदाऊआ)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४३४	सिरचदसूरि	५११
१४३६	,,	५२०,५२३
१५४०	,,	५४२

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१९९४	विजयविज्ञानसूरि	१७०४ १७ १
		१७ ७ १७१५,१७१९
	विजयसेनसूरि	१८४१ २७५५
१६५३		२ ८
१६६४		१५५२
१६७		१९४४
१६८७	"	२४०१
१६९९	"	१८२७
१६८७	विजयसिंहसूरि	२४ १
१७११		२३१८
१६८१	विजयमार्वसूरि	२३२८
१६८५		२२१
१६९१		१५२१ १८२७
२		१९९
१९९४	विजयोदयसूरि	१७ ४ १७ ६
		१७ ७ १७१५,१७१९
१५८७	विद्यामंडनसूरि	१८२१
१६८७	विमलविमलगणि	१८१९
१६५३	विनयसुन्दरगणि	२ ८
१९ ३	शांतिसागरसूरि	१५८७ २३६६
१९२१		१५६६
१४६६	श्रीसुन्दरसूरि	२४५१
१५७५	श्रीसूरि	११३९
१९७२	सपतविजयपन्यास	१६३७
१९ २	शिवविजय	२ ३
१८५३	सुन्दरविजय	२ २
१५२५	सुधानन्दसूरि	१ ४२
१८५३	सुमतिविजय गणि	२ २
१९४७	सुमतिसागर	२३८२
१५५४	सुमतिसाधुसूरि	२४४६
१५४१	सुमतिसाधुसूरि	१२२५
१५४६	"	११९६
१५४७	"	२४४५
१५६१	"	१९ १
१५११	सोमदेवसूरि	९५
१५२१	"	१ २५

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४७१	सोमसुन्दरसूरि	६५४
१४७४		६७३ ६७४
१४७६		६८०
१४७७	"	६८६ ६८८
१४७९	"	६९६
१४८०		७ २
१४८१	"	७०६
१४८२		७२
१४८३		७३ १८७२,२२१५
१४८५		११९६
१४९१		७५२ ७५३ ७५४
१४९२		१२१८
१४९३	"	११९६,११२५
१४९४	"	७७२,७७३
१४९५		७८३ ७८५,१५ २
१४९६	"	७८६
१५	"	३८६,४२२
१५ १	"	८४९,८५० २२३६ २४७६
१५ ३		८७५,८७६,८७७
१५ ५		१५ ५
१५ ६		८९७
१५ ७		२५२९
१५ ९		९३२
१५११		९४३ ९४७
१५१३		९६१ ९६२ ९६७ २२१९, २७४३
१५१६		९९२ १६ ५,१८१९
१५१७	"	१० १
१५१८	"	१ ९
१५२२	"	१८८
१५२९	"	२४७७
१५४७	"	२४४५
१५६	"	१५२९
१५७३	"	११८९
१५		११४७
१५०६	सौभाग्यसागरसूरि	२५१९

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	देवाचार्य संतानीय	
१२४६	मुनिरत्नसूरि	२७६२
	धर्मघोष गच्छ	
१४६५		२४८५
१५७३		२१५८
१५५१	कमलप्रभसूरि	१३७२
१४१३	गुणभद्रसूरि	४३२
१४२६	ज्ञानचद्रसूरि	१६४८
१४१५	धर्मसूरि	४३६
१५५५	नदिवर्द्धनसूरि	१५५६,२४४३
१४८२	पद्मशेखरसूरि	७०६,७१०
१४८५	,,	१३५८
१४८७	,,	७३६
१४९३	,,	७६७,१६४७,१८२९
१४९५	,,	१३५१,२५१३
१५०३	,,	८६६
१५१२	,,	९५५,९५६,२४८६
१५२०	,,	२७४७
१५२९	,,	१०६३,१५३५
१५३३	,,	१८१५
१५०५	पद्माणदसूरि	१२०७
१५०९	,,	१२२२,१२४०
१५१२	,,	९५५,९५६,२४८६
१५१३	,,	९९९
१५१७	,,	१०००
१५२०	,,	२७४७
१५२१	,,	१२५१
१५२४	,,	१०३८
१५२९	,,	१०६३,१५३५
१५३३	,,	१८१५
१५५५	,,	२४४३
१४७७	पूर्णचद्रसूरि	६८९
१५०४	,,	८८३
१५५१	पुण्यवर्द्धनसूरि	१३७२
१५५४	,,	२३२४

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१५५६	पुण्यवर्द्धनसूरि	२१२५
१४९९	महेन्द्रसूरि	८१०
१४३२	,,	५००
१४७७	,,	६८९
१५९९	,,	११४६
१४२३	,,	४५२
१४६१	मलयचद्रसूरि	६०२
१४८२	,,	७१०
१४९३	,,	१६४७
१५०६	महीतिलकसूरि	९०१
१५१३	,,	१९३५
१४९३	विजयचद्रसूरि	१८२९,१६४७
१४९४	,,	७७४
१४९५	,,	१३३८,२५१३
१४९७	,,	७९९
१४९६	,,	७९१
१४९८	,,	८०३
१५०१	,,	८५६
१५०३	,,	८६६
१५०६	,,	९०२
१५०८	,,	१३२३
१५१७	,,	१००२
१४९३	विनयचद्रसूरि	७६६
१५०५	,,	१२०७
१४३५	वीरभद्रसूरि	५१८
१(४)२३	शालिभद्रसूरि	४५२
१४३२	,,	५००
१४१३	सर्वाणदसूरि	४३२
१४२६	सागरचद्रसूरि	१६४८
१४३०	,,	४९६
१४३४	,,	५१५
१४३८	,,	५३३
१४४२	,,	१८३२
१४६३(?)	,,	६०८
१५०६	साधुरत्नसूरि	९०२,९०३
१५०८	,,	१३२३

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५१५	पद्मसुन्दरसूरि	१२ ८
१५७१	पद्मतिलकसूरि	११४२
१६१५	पद्मतिलकसूरि	२२१४
१३८९	पद्मचन्द्रसूरि	३१२
१४८९	"	७४१
१५२१	रत्नप्रभसूरि	४८१
१५२७	रत्नदेवसूरि	१५
१३९	रत्नप्रभसूरि	३४
१४५१	राजशेखरसूरि	५७४
१३८३	विबुधप्रभसूरि	२९७
१५६१	वीरचन्द्र पं	२५२३
१४६१	वीरप्रभसूरि	५९८
१४६४		६११
१४६९		६४३
१४८२		७२१
१४९१	"	७९
१४९९		८ ८
१५ १		८५४
		८९२
		१४८२
	सोमचन्द्रसूरि	२१९२
१५ ५	हीरानन्दसूरि	८९२

प्रा० (प्राग्वाट ?) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
(१४२१)	ककसूरि	५७
१४५१	उदयानन्दसूरि	५७

पूर्णिमापक्ष (भीमपल्लीय द्वितीय शाखा)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४६५	उदयार्णवसूरि	६२
१४३३	उदयप्रभसूरि	५ ६
१४८५	कमलचन्द्रसूरि	१५७५
१५१	कमलप्रभसूरि	२७५४
१५१८	गुणधीरसूरि	२८२१
१५७६	गुणसमुद्रसूरि	२४७८
१५११	गुणसागरसूरि	९४५
१५१४	ज्ञानसुन्दरसूरि	१८२४
१५५४	चारित्रचन्द्रसूरि	११२४
१४९६	जयचन्द्रसूरि	७८९
१५०१		८४२
१५ २		१४९६
१५११	"	९४८
१५०३	जयप्रभसूरि	८७३
१५२५		१११५
१५४९		११५०
१५३४	"	१४३४
१४८९	जयभद्रसूरि	७४७
१५ ३	"	८६९,८७३
१५ ४		८८२
१५११		११ ४
१५२		१ १९
१५२५		१११५
१५३४		१४३४
१४७३	जिनभद्रसूरि	६६९
१४८१	"	७ ५
१५९८	जिनराजसूरि	१०५८
१३६८	देवेन्द्रसूरि	२४
	देवचन्द्रसूरि	५९७
१४७३		६७९
१४२९	धर्मतिलकसूरि	४९१ ४९२
	नेमिचन्द्रसूरि	६७९
१४१४	पद्माकरसूरि	२१४५
१४६१	"	६ १
१४६१	पार्श्वचन्द्रसूरि	५९७
१४९६		७८९
१५ २		८६२
१५२४	पुण्यरत्नसूरि	१८७७
१४९९	भावदेवसूरि	८ ७
१५५४	मुनिचन्द्रसूरि	११२४
	मुनितिलकसूरि	९९
१५ ७	राजतिलकसूरि	९१३
१५१५		९९ १८१६
१५२९		१ ६२

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५०४	शातिसूरि	८८५
१५७७	,,	१७८०
२७	सिद्धसेनसूरि	११५१
१२६६	सिद्धसेनाचार्य	११०
१२७२	सिद्धसेनसूरि	११२
१२९३	,,	१३१
१३७२	,,	२५१
१३७३	,,	२५९
१३७६	,,	२७०,२७१
१३७८	,,	२७८
१३८१	,,	२८६
१३८३	,,	२९६
१३८४	,,	२९८
१३८६	,,	३१४,३१५
१३८९	,,	३३१
१३९१	,,	३४६
१३९३	,,	३५९
१५११	,,	९४६
१५८१	,,	२२५७
१५९०	,,	११४४
१५९५	,,	१५५७

निगम प्रभावक

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५८१	आणदसागरसूरि	१७६०

निर्वृ ति गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
		५७
	पार्श्वदत्तसूरि	१७८७
१२८८	शीलचन्द्रसूरि	१३३५

पार्श्वचन्द्रसूरि पायचद गच्छ

(वृहन्नागपुरीयतपा)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१९१६	आलमचद्र महर्षि	२०१६
१८१५	कनकचद्रसूरि	२०१३
१८१८	,,	२०१४
	,,	२०१९
१८१६	करमचद्र उ०	२०२२
१९१६	कृष्णचद्र ऋ०	२०२८
१८२६	खुशालचन्द्र	२०२१
१७६६	चैनचद्र	२०२०
१९९२	जगत्चद्र मुनि	२०२९,२०३०,२०३१
१९१६	जिनचन्द्र	२०२८
१७९८	नेमिचद्रसूरि	२०१६,२०१७
१८१५	पनजी ऋषि	२०१८
१६६२	पासचदसूरि	२००९
१९८३	भ्रातृचद्रसूरि	२५४९
१८२६	मलूकचद्र ऋषि	२०२१
१८१५	रघुचद्र वाचक	२०१८
१९०२	लब्धिचन्द्रसूरि	२०१२
१७६६	लाभचद्र	२०२०
१८८४	वक्तचद	२०१९
१८२६	विजयचद्र	२०२१
१८६०	विवेकचद्र	२०१०
१८१५	शिवचद्रसूरि	२०१३
१८८४	सागरचद्र	२०१९
१९०२	हर्षचद्रसूरि	२०१२

यतिनी

संवत्	नाम	लेखाङ्क
(१८९९)	कस्तूरा साध्वी	२०२६
(१८९९)	कुद्धिजी ,,	२०२६
(१८६३)	चैना ,,	२०२४
(१८६३)	राजा ,,	२०२४
(१८९९)	वस्तावरा ,,	२०२७
(१९१९)	उमेद ,,	२०२५

तपा गच्छ, (वृहत्तपा, सत्यपुरीय, सागर गच्छ)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६४१		१५४६
१६९७		११९९,२२२४
१७६८		२५०१
१९०३		१५७९,१५८८
१९६४	अनोपविजय	१६३८
१८५३	अमृतविजय	२००२
१५९१	आणदविमलसूरि	२८२५
(१६२८)	,,	१९२७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	भावडार गच्छ	
	कालिकाचार्यसं०	९५४ ११६२
१४२२	जिनदेवसूरि	४५१
१४२७		४८३
११७९		२८१
११९३		३६२
१४३६	मानदेवसूरि	५२२
१४१८		५३१
१४४		५३८ ५३९
१४४९		५५६
१५१४		१६ २
१५१९	"	१८९९
१४६९	विजयसिंहसूरि	६५
१४७१		६५६
१४७६		६८४
१४८१		७ १
१४८९	वीरसूरि	७४५
१४९४		७७७
१४९९		८१२
१५१		११६२
१५१२		९५४
१५१३		९७७ ९७८
	भीमपास गच्छ (भीम्प०)	
	वीरदेवसूरि	१ १६,२४८२
१५ ४	अमरप्रभसूरि	२४८२
१५१९		१ १६
	मलाहृदीय (मलाहड़ मालाडिया रत्नपुरीय) गच्छ	
११७९		२८१
१५ ५	अमरचन्द्रसूरि	८९५
११६६	धार्मप्रभसूरि	२३५
११६७		२३७
११७१	माणदसूरि	२४९
१४२१	उदयप्रभसूरि	४६२
१५१४	कमलचन्द्रसूरि	१ ८१
१५१५	कमलचन्द्रसूरि	१ ९९
१५४५		२४११
१५४७	"	१११२
		११६
१५१२	कमलप्रभसूरि	१ ७१
१५६	गुणचन्द्रसूरि	२७५१
१५७५	"	११६
१५ १	गुणसागरसूरि	८४
१५ ८		२२१७
१५१२	धर्मेश्वरसूरि	१ ७१
१५९२	धमाहदसूरि	२४८२
	धनचन्द्रसूरि	९२
१५०७	धर्मचन्द्रसूरि	९२०
१४९२		७६८
		१ ८१ ११९
१४९८	नयचन्द्रसूरि	८ ४
१५ ४		८८६
१५ ५		८९६
१५१२	"	१ ७
१५४५		१११
१५ ९	नयचन्द्रसूरि	९१
१४८२		७१५,७१६ ७१७ ७१९
१४९२		७५८
१५९४		११४५
१४११	पासदेवसूरि	४११
१४१५	मानदेवसूरि	४१४
१४५९		५८८
१४ ६	मुनिप्रभसूरि	४ ४
१४४१		५४४
१४५४		२१४६
१४५७		५८
१४६१		२४९७
१४८		७
१४९२		१५१५
१४९७		१८९४
१४		८१७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५३५	रत्नशेखरसूरि	१०९२
१५५१	,,	१११८
१४६४	रत्नसागरसूरि	६०७
१४८१	रत्नसिंहसूरि	७०८,१५७८
१५१३	,,	९७८
१५१६	,,	२४४८
१५७६	,,	२५३९
१९०३	रूपविजय गणि	१५९०
१९७२	लक्ष्मीविजय	१६३७
१५११	लक्ष्मीसागरसूरि	९५०
१५१७	,,	१००१
१५१८	,,	१००७,१००९
१५१९	,,	१०१४
१५२१	,,	१०२१,१०२५
१५२२	,,	१८८०
१५२३	,,	१०३२,१०३३,२२८०
१५२४	,,	२१८२
१५२५	,,	१०३९,१०४१,१०४२,१०४३
१५२७	,,	१०५०,१०५२,१४४१,१६००
१५२८	,,	१५०७
१५२९	,,	२४७७
१५३०	,,	१०६७
१५३१	,,	१०६८,२४४९
१५३२	,,	१२८२
१५३३	,,	१०७७,२७२७
१५३४	,,	१०७८,१०७९,१०८२,१६०४
१५३५	,,	१०९२,१०९४,१६४९, १८२६,२२२०,२७४२
१५३७	,,	१५३८,१६६५
१५३९	,,	२३५०
१५४७	,,	२४४५
१५५१	,,	१११८
१५५२	,,	८
१५६१	,,	१९०१
१६९१	,,	१८२७
१८८३	विजयजिनेन्द्रसूरि	१८५७
१९३१	,,	१८६९
१६९१	विजयतिलकसूरि	१८२७
१९९४	विजयदर्शनसूरि	१७०४,१७०६,१७०७, १७१५,१७१६
१६०५	विजयदानसूरि	१८४०
१६१०	,,	१७७७
१६१६	,,	१७०१
१६२७	,,	१४५२
१६२८	,,	१७५४,१९२७
१६७४	विजयदेवसूरि	१५४७
१६७७	,,	२१६०,२२२२
१६८४	,,	१२३७
१६८५	,,	१२४१
१६८७	,,	१८३९,२४०१
१७०१	,,	११९८,१२०३,१३०६
१७०३	,,	१६६६
१७६१	,,	२३१८
१७९०	,,	१३०८
	,	२८३४
१८९३	विजयदेवेन्द्रसूरि	११७६,११७९
१९९४	विजयनन्दनसूरि	१७०४,१७०६, १७०७,१७११,१७१६
१९९४	विजयनेमिसूरि	१७०४,१७०६, १७०७,१७१५,१७१६
१७६१	विजयप्रभसूरि	२४१८
१९६४	विजयमुनिचन्द्रसूरि	१५६५
१५८७	विजयरत्नसूरि	१८२१
१९४७	विजयराजसूरि	२३८२
१९९७	विजयलब्धिसूरि	२२६३
	विजयलक्ष्मणसूरि	२२६३
१९९८	,,	२२७०,२२७१,२२७२,
१६८५	विजयवर्द्धन	१२४१
२०००	विजयवल्लभसूरि	१९९०
२००१	,,	१९९२,१९९४,१९९५,१९९६, १९९७

संवत्	नाम	लेखांक
१५ १	लब्धिसुन्दरसूरि	१६ ७
१५६६	विजयराजसूरि	१४५५
११२७	श्रीचन्द्रसूरि	१६६
१५५६	धर्मसूरि	१९२६
१४९७	मानसुन्दरसूरि	७९७
१५ ३		९१४
१५ ८	"	९२०
१५१२		२२४५
१५१७		१ ४
१४७८	हर्षसुन्दरसूरि	२५३५
१४८	"	६६०
		१८३५

बृहन्नागपुरीयलुंका (अमरसीतशाखा)

संवत्	नाम	लेखांक
१८७६	जयचन्द्र महर्षि	२५६२ २५६१
१८८०	उमेदमल महर्षि	२५४६
१८७७	जीवनदास आचार्य	२५६४
१८९५	भीकमचन्द महर्षि	२५४५
१८९९	"	२५६८
१८७६	परमानन्द महर्षि	२५६२ २५६१
१८७७		२५६४
१८८०	"	२५४६
१८९४		२५६८
१८९५	भागचन्द्र महर्षि	२५४५
१८७६	मोतीचन्द महर्षि	२५६२ २५६१ २५६४
१८७६	राजसी महर्षि	२५६२ २५६१
१८८०	रामचन्द महर्षि	२५४६
१८७६	लक्ष्मीचन्द्रसूरि	२५६२ २५६१
१८७७		२५६४
१८८०		२५४६
१८९५		२५४५
१८९९	सरूपचन्द्र आचार्य	२५६८
१८७६	वीरचन्द्र महर्षि	२६५२
१८७६	स्वामीदास	२५६१
१८९९	सुखानन्द	२५६८
१८९९	धनराज आर्या	२५६६

संवत्	नाम	लेखांक
१८९९	रंभा आर्या	२५६५,२५६६,२५६७
१८९९	उमेदा आर्या	२५६७
१८९९	जसूजि आर्या	२५६५

विजय गच्छ

संवत्	नाम	लेखांक
	कल्याणसागरसूरि	१२९२
१७२७	क्षेमऋषि	१२९२
१७२७	सुमतिसागरसूरि	१२९२

बृहद् गच्छ

(रामसेनीय ब्रह्माणीय सत्यपुरीय)

संवत्	नाम	लेखांक
१२२		८४
१४७९	अभयदेवसूरि	५५९,२४८१
	अजितभद्रसूरि	१८
११	अमरप्रभसूरि	१८०
१५७१		९६६
१४७९	अमरचन्द्रसूरि	५५५
१४९७		७९४
१५ ४		८०८
१५११	उदयप्रभसूरि	९६६
१४१४	कमलचन्द्रसूरि	५ ६,५१
१४८२		१५१
१५२४	कमलप्रभसूरि	१ १५
१५१४	कमलचन्द्रसूरि	१ ८
१४७२	गुणसागरसूरि	६६२
१४९२		७५९
१११४	जयचन्द्रसूरि	१८५
	जयमंगलसूरि	१ १५
	जिनरत्नसूरि	२१५२
१४१६	तिलकसूरि	११९०
	"	२१५२
१५ १	रत्नप्रभगणि	२१५२ २१५१
	देवाचार्य	२१५२ २१५१ २१५४
११४६	देवेन्द्रसूरि	२ २
१५१४	धनप्रभसूरि	१२९८
१२२०	धनेश्वरसूरि	९

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५ १		१३६
१५०७		११७
१५३४		१२६८
१३६६	वीरदेवसूरि	२४७
१४ ८	सर्वदेवसूरि	६१४
१४४	सागरचन्द्रसूरि	५४१
१४६२		७६४
१५ ४		१२६५ ११ २
१२६	हरिभद्रसूरि	१ ५

सत्यपुरीय

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६२२	अमरचन्द्रसूरि	४४७
१५४७	चारुचन्द्रसूरि	११११
१३८८	पासदेवसूरि	३२७
१५ ६	पासचन्द्रसूरि	६११
१३८८	महेन्द्रसूरि	३२७
१३८८	श्रीसूरि	३२४
१५४५	सोमसुन्दरसूरि	११११ ११११
	हेमहंससूरि	११११

भावदेवसूरि सताने (देवसूरिगच्छ)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
११६८	धर्मदेवसूरि	२४१
१३८१	पासचन्द्रसूरि	२८८
(१४)५७	धर्मदेवसूरि	५८१

वायडीय (वायड़) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
११६२	वीरदेव	२७५६
१४७२	राशिल्लसूरि	६५७

विवन्दणीक गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५७२	श्रीसूरि	२४११

श्रीमालगच्छ (श्रीश्रीमाल ?)

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१६२५		४७१
१४७८	जयदेवसूरि	६६२

सण्डेर (षण्डेर संडेरक षण्डेरकीय) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४१७	ईश्वरसूरि	४१७
१४२२		१५७४
		१ ७६

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१३३७	यशोभद्रसूरि	१८८
१४७६		६८२
१४८१		७२५
१५५६		२४८८
		८२८
१३८४	यशोदेवसूरि	१ १
१५२६		१ ४६
१४७२	शांतिसूरि	६६
१४७५		६७७
१४७६		६८२
१४८१	”	७२५,७२६,११३६
१४६४		११३६
१४६६		८६१
१५ ६		६ ७ ११६८
१५ ७		६१८ २४५
१५ ८		६२४
१५ ६		११६१
१५११		६७६
१४२२	शालिभद्रसूरि	१५७४
१५३३	”	१ ७६
१३३७	शालिसूरि	१८८
१३३८	”	१६०
१३४६		१४७६
१४३१		५ ३
१५२६	”	१ ४६
१५३५		१ ६३
१५३६	”	१५१६
११६२	श्रीसूरि	११३१
	संयमरत्नसूरि	२४६६
१५१२	शालसूरि	१६ ६
१३७१	सुमतिसूरि	२५
११८८		१२२
११८६		११
१६६२		६ ८
१६६५	”	६२५
		८२८

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५७२	लक्ष्मीतिलकसूरि	११३७
१५७५	,,	१६९३
१३६८	ललितदेवसूरि	२४०
१५२४	विजयप्रभसूरि	१२८३
१५७२	विद्यासागरसूरि	११३७
१५७५	,,	१६९३
१४८५	विमलचन्द्रसूरि	१५७५
१४६४	वीरप्रभसूरि	६१०
१५०६	,,	२७४५
१५१०	,,	२७५४
१४८१	सर्वाणंदसूरि	७०४
१५११	,,	९४५
१४८५	साधुरत्नसूरि	७२८,१५९८
१५०२	,,	८६१
१५०९	,,	१४३५
१४४७	सोमप्रभसूरि	५५३
१५१०	श्रीचद्रसूरि	९३७
१५३४	श्रीसूरि	२७१०
१५५९	,,	१९३१
१४६५	हरिभद्रसूरि	६२३

बुद्धिसागरसूरि संताने

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१२६२	पद्मप्रभ गणि शि०	१०७

ब्रह्माण (ब्रह्माणीय, बभाणिय) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१३५१		१२३०
१४०५		४०३
		५९ ८७
१५०१	उदयप्रभसूरि	८४८,८५३
१५०६	,,	९०६,९०८
१५११	,,	९५१
१५१८	,,	१५५८
१५२१	,,	१०२४
१५२८	,,	१०५७
. .	,,	२४४१
१४५९	उदयाणदसूरि	५८७,५९०

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४६२	उदयाणदसूरि	६०५
१४६६	,,	६३१
१५५२	गुणसुन्दरसूरि	११२२
१५१०	जज्जगसूरि	२७७१
१५१०	पजनसूरि	१३५६,२७७१
१४०६	बुद्धिसागरसूरि	४०६
१४२६	,,	४३५
१४५६	,,	५७२
१५४०	,,	२५२२
१२९५	माणिक्यचन्द्रसूरि	१३५
१५५०	मुणिचन्द्रसूरि	१११६
	मुणिचन्द्रसूरि	३९३
१४०८	रत्नाकरसूरि	४१५
१४१७	,,	४३८
१४२६	,,	४७७
१४२९	,,	४९३
१४३०	,,	४९५
१५३०	राजसुन्दरसूरि	२४४१
(१२९५)	वादीन्द्रदेवसूरि	१३५
	विजयसेनसूरि	४१५,४३८,४७७,४९३
१३४४	वीरसूरि	१९९
१३८९	,,	३३०
१४९०	,,	७४८
१४३२	हेमतिलकसूरि	४९८
१४३५	,,	५१९
१४५४	,,	५६५
१४५९	,,	५८७

वोकडीय (वोकड़ीवाल) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४२३	धर्म्मदेवसूरि	४६१
१४२५	,,	४७२
१५१५	मलयचन्द्रसूरि	१७६६

भावदेवाचार्य (आम्नाय) गच्छ

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१२६८	जिनदेवसूरि	१०९
१२८२	,,	१२०
१६६४	,,	१४६४

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१५०४	वीरभद्रसूरि	८८६
१५०५	,,	८९६
	शान्तिसूरि	३८७,३८८
१३८६	सर्वदेवसूरि	३११
१३८७	,,	३२१
१३९२	,,	३४८
	,,	३९२
१४३७	सोमचन्द्रसूरि	५२९
१४४५	,,	५४९
१४५९	,,	५८८,५८९
१३९३	सोमतिलकसूरि	३५६
१३७१	हेमप्रभसूरि	२४९
१३८७	,,	३२१
१५०८	,,	२२१७
	मलधारि गच्छ	
१५५१	गुणकीर्तिसूरि	१२७१
१५३४	गुणनिधानसूरि	१०८३,१०८४,१९०८
१४९८	गुणसुन्दरसूरि	८००,८०६
१५०४	,,	८८७
१५२८	,,	१९८३
१५२९	,,	२३५१
	,,	१०८३,१०८४
१४५८	मतिसागरसूरि	१२७८
१३८६	राजेश्वरसूरि	३१३
१३९२	,,	३४९
१३९३	,,	३५८
१४०९	,,	१४४२
१४१५	,,	४३५
१५६८	लक्ष्मीसागरसूरि	१६०६
१४७९	विद्यासागरसूरि	१३००
१४८८	,,	७३८
१५०४	,,	४८७
१३८०	श्रीतिलकसूरि	१२१८
१३८६	,,	३१३
	महौकर गच्छ	
१४६६	गुणप्रभसूरि	६२७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	रत्नपुरीय गच्छ	
१४५८	धणचन्द्रसूरि	५८२,५८४
१४२०	धर्मघोषसूरि	४४२
१४२४	,,	४६७
१४३५	,,	५२७
१४३९	,,	५३६
	,,	५६०
१४८६	ललितप्रभसूरि	७३१
१४५१	मोमदेवसूरि	५६०
१४५८	,,	५८२
	हरिप्रभसूरि	५३६
	राठोर गच्छ	
११३६	परस्वो पागया सताने	२८२७
	राज गच्छ	
	माणिक्यसूरि	३७६
१३९९	हेमचद्रसूरि	३७६
	रामसेनीय (देखो वृहद गच्छ)	
	रुद्रपल्लीय (रुदलिया)	
१५६९	आणदराज उ०	१४५५
१४१५	गुणचन्द्रसूरि	१९१३
१४२१	,,	१२७४
१५७०	गुणसमुद्रसूरि	१५३४
१५२८	गुणसुन्दरसूरि	२३४२
	,,	८२५
१५६९	चारित्रराज उ०	१४५५
१५०१	जिनराजसूरि	८५१
	,,	१२५२
१५२५	जिनोदयसूरि	१२५२
१४९४	जयहससूरि	७७९
	जिनहससूरि	७७६
१५६९	देवराज वाचनाचार्य	१४५५
१४८७	देवसुन्दरसूरि	१८३५
	,,	७९७,९१९,९२७,१००८, ११२६,१४३९,२२४५,१६०७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१२३४	धनेश्वरसूरि	९१
१२६०	,,	१०५
१२७३	,,	११४
१२७९	,,	११६
१२८४	,,	१२३
१४०१	धर्मचन्द्रसूरि	४००
	,	१३२०
१४०८	धर्मतिलकसूरि	४२०
१४४५	धर्म्मदेवसूरि	५४८
१४५४	,,	५६६
१४५६	,,	२४५२
१४५७	,,	५७५
	,,	१३४५
	,,	७४३
१४६५	धर्मसिंहसूरि	१३४५
१४८९	,,	७४३
१२८४	धर्मसूरि	१२३
१४७८	नरचन्द्रसूरि	६६१
१४८२	,,	७१८
१५०१	,,	१३६०
१५६६	न्यानप्रभ वा०	२५२७
१३६९	पद्मदेवसूरि	२४७
१३३८	परमान्दसूरि	१९१
१५०६	पुण्यप्रभसूरि	८९९
१५३६	,,	१०६६
१४४७	पूर्णचन्द्रसूरि	५५२
	भद्रेश्वरसूरि	३०४,३०५,३२५
१४३६	,,	११६७
१४८९	,,	२५२६
१५०१	,,	२१५२
१५०४	मलयचन्द्रसूरि	१३२०
१४२४	महेन्द्रसूरि	४६३,४६८
	,,	५०९,५१०
१५००	,,	२१५७
१५०१	,,	२१५२,२१५३,२१५४
१५०६	,,	९०५
१५०८	,,	९२३
१५१०	,,	२४०९
	मानदेवसूरि	१३९
१३३४	,,	१८५
१५६६	मुनिदेवसूरि	२५२७
१३६३	मुनिशेखरसूरि	३५२
१३८७	,,	३१९
(१४३६)	,,	११६७
(१५०१)	,,	२१५२
	मुनीश्वरसूरि	२१५२,२१५३
१४७९	,,	६९३
	,,	७३५
	मेरुप्रभसूरि	९७३,१०३१,१०३७,१३३७,२२८१,२७२१
१८५७	,,	१८३०
१३६७	यशोभद्रसूरि	२३८
१४१७	रत्नाकरसूरि	४३८
१५०६	,,	९०५
	,,	२७२१
१८५७	,,	१८३०
१४८६	रत्नप्रभसूरि	७३५
	,,	२१५२,२१५३,२१५४,२१५७
१४४७	रत्नशेखरसूरि	५५२
१५१३	राजरत्नसूरि	९७३
१५२३	,,	१०३१
१५२४	,,	१०३७
१५२८	,,	१३३७
१५३४	,,	२२८१
१४०६	रामचन्द्रसूरि	४०५
१४८०	रामदेवसूरि	७०१
१३८५	विजयसेनसूरि	३०४
१३८६	,,	३०५
१३८८	,,	३२५
१३३८	वीरचन्द्रसूरि	१९१
१४८२	,,	७१८

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	साधु पुर्णिमा गच्छ	
१४२४	अभयचन्द्रसूरि	१६२८
१४५८	,,	५८३
१४६६	,,	१९३८
१५१३	गुणचन्द्रसूरि	२५१४
१५१६	देवचन्द्रसूरि	९९८
१५१८	,,	१८२८
. .	धर्म्मचन्द्रसूरि	४६४,४९९,५०५,१५३३
१४२४	धर्मतिलकसूरि	४६४
१४३२	,,	४९९
१४२८	,,	४८५
१४३३	,,	५०५
१४५०	,,	१५३३
१४३४	धर्मतिलकसूरि	५१३
	,,	७२२,८२७
१५०७	पुण्यचन्द्रसूरि	९०९
१५०८	,,	१६२५
१५२०	,,	१८७९
१४९३	रामचन्द्रसूरि	१६०१
.	,,	१६२५
१४८३	श्रीसूरि	७२२
१४८३	हीराणदसूरि	७२२
१५१६	,,	९९८
	सिद्धसेन दिवाकराचार्य (नागेन्द्र) गच्छ	
१०८६	,,	२७६६
	सुराणा गच्छ	
१५५४	नन्दिवर्द्धनसूरि	११२३
	सैद्धान्तिक गच्छ	
१३८४	ज्ञानचन्द्रसूरि	३०१
१३८७	ज्ञानचन्द्रसूरि	३१७
१३९४	नाणचदसूरि	३६३
(१३७३)	विनोदचन्द्रसूरि	२८२०
१३७३	शुभचन्द्रसूरि	२८२०
	,,	३०१,३१७

संवत्	नाम	लेखाङ्क
	हयकपुरीय गच्छ	
१२३७	,,	९०
	हारीज गच्छ	
१५२३	महेश्वरसूरि	१०२९
	जिनमें गच्छो के नाम नहीं है	
	अजितसिंहसूरि	३८९
१३९२	अभयचद्रसूरि	३५१
१४००	,,	८१८
१४०८	,,	४१९
१४२१	अभयतिलकसूरि	४४६
१३५९	अमरचद्रसूरि	२१९
१५०१	,,	८४३
१३५६	अमरप्रभसूरि	१६१६
१३९०	,,	१८९०
१२९७	आनदसूरि	१३७
१३६७	आमदेवसूरि	२३४
१४२८	,,	१३७९
१३४२	उदयदेवसूरि	१९८
१५०६	उदयनन्दिसूरि	२५२८
१३५९	उदयप्रभसूरि	२२०
१४१८	उदयाणदसूरि	४३९
१२९०	उद्योतनसूरि	१२८,३४३
१४६५	कमलचद्रसूरि	६१५
१३६०	कमलप्रभसूरि	२२२
१३६८	,,	२४२
१५१०	,,	१३७७
१५५७	,,	११२७
१३५५	कमलाकरसूरि	१२३२
१३६१	,,	२२३
१३६४	,,	२३३
१३८९	,,	३२९
१४३३	,,	५०८
१४८९	,,	७४०
१७१०	कल्याणचद्रसूरि	२३७१

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१३९१	श्रीसूरि	६
१३९३	,,	३५४
१४११	,,	४२८
१४१२	,,	४३०
१४२१	,,	४८६,१९३६
१४३३	,,	५०४
१४४१	,,	५४५
१४६३	,,	६०३
१४६४	,,	६१२
१४६५	,,	६१३
१४६६	,,	२२७६
१४६८	,,	६३९
१४८५	,,	२७०५
१४९०	,,	७५०
१४९१	,,	७५१
१४९२	,,	२७९३
१४९४	,,	१६१०
१४९६	,,	७८७
१४९७	,,	७९२,७९६
१५०१	,,	२०३२
१५०७	,,	९२१
१५११	,,	९४९
१५१५	,,	९८३
१५१८	श्रीसूरि	१८९७,१२८५
१५२५	,,	१५१०
१५२७	,,	१२५०,१५५१
१५२९	,,	१०६१
१५३३	,,	१८२५,११५७
१५३६	,,	११०१
१५३६	,,	१७५९
१५३७	,,	१३७६
१५५१	,,	११२८
१५५६	,,	२२०९
१५८३	,,	११५८
१३९२	समतसूरि	३५०
..	सतिगणि	६२
१३११	सर्वदेवसूरि	१४८
१३९१	सर्वदेवसूरि	३४७
१३९४	,,	३६५
१५१६	मर्वसूरि	९९७
१९३३	,,	२१६४
१५१७	,,	१००६
१४१५	मर्वाणद सूरि	४३६
१४६५	,,	६२४
१४७९	,,	६९५
१५०४	,,	८७९
	,,	३७७
१३७३	मागरचद्रसूरि	२६१
१३८२	,,	२९२
१४०६	,,	४०७
१४१८	,,	४४०
१५१०	मावदेवसूरि	९३८
१३४०	,,	१९४
१४८०	सिघदत्तसूरि	१२२४
१४६६	सुमतिसूरि	६३०
१४६९	,,	६४४
१५१६	सुविहितसूरि	१७५५
१५३४	,,	१२०९
१३९३	मोमचद्रसूरि	३५७
१४३०	,,	४९४
१३८१	सोमतिलकसूरि	२८७
१३८६	,,	३०६
१४३८	मोमदत्तसूरि	५३४
१४०८	सोमदेवसूरि	४१३
१४३३	,,	५०७
१३९७	सोमसुदरसूरि	३७४
	सौभाग्यसुदरसूरि	२८२९
१४२३	हरिदेवसूरि	४६०
१३८७	हरिप्रभसूरि	३२०
१३८९	,,	३३४
१२२७	हरिभद्रसूरि	१३२४
१२७९	,,	११६

संवत्	नाम	लेखाङ्क
१४७३	पद्मनदि	२५६
१३८७	,,	३१८
१४९२	,,	१८७५
१६६०	प्रभाचद्र देवा	२६१०
१२३४	भुवनकीर्ति	१७८५
१४९९	,,	८०९
१५००	,,	८२०,८२१
१५२७	,,	१२९१
१६६३	रत्नकीर्त्ति देवा	१३७३
१६७६	रत्नचद्र	१८४४
१५४८	वादलजोत	१८४७
१५७५	विजयकीर्त्ति	२८८३
१४९२	शुभचद्र देवा	१८७५
	,,	१८९२,२८३८

सवत्	नाम	लेखाङ्क
१४९२	सकलकीर्त्ति देव	१८७५
१५२७	,,	१२९१
१२२९	सिधकीर्त्ति देवा	१७८१
१५२३	सिंहकीर्त्ति देवा	१३६६
१५३१	,,	१२४६
१८२६	सुरेन्द्रकीर्त्ति	२४१५
१९२६	,,	२६१२
१५४८	सोमसेण भ०	१९२८

जिनमें गच्छ-गण-सघ नाम नही है

सवत्	नाम	लेखाङ्क
११५५	देवसेन	२९
१२८७	ललितकीर्त्ति	१५१४
१३४१	धरमिद गुरू	१९६
१४९३	देवेन्द्रकीर्त्ति	१४४४
१५४८	ज्ञानभूपण देव	२२६०